॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

१६१

महाकविविशाखदत्तप्रणीतं

मुद्राराक्षसम्

'विमला' संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी-व्याख्या-टिप्पणी-नोट्स-प्रश्नपत्रादि-विभूषितम्

व्याख्याकारः

आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्रः

बी० ए० (आनर्स), एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत),
डिप्०-इन-एड्०, रिसर्चस्कॉलर, साहित्याचार्यः



चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

१९७२

प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण : प्रथम, वि० सं० २०२९

मूल्य [illegible]

प्रधान कार्यालय

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

गोपाल मन्दिर लेन,

पो० आ० चौखम्बा, पोस्ट बाक्स ८, वाराणसी-१

फोन : ६३१४५

THE

VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA

161

MUDRĀRĀKṢASA

OF

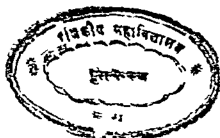
VIS'ĀKHADATTA

Edited

with the VIMALĀ Sanskrit, Hindi, English
Commentaries and Critical Notes.

By

JAGADĪŚHA CHANDRA MIŚRA
B. A. (Hons) M. A. (Sanskrit-Hindi) Dip In. Ed.
Research Scholar, Sāhityāchārya.



THE

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI-1

1972

Post Box No 69
Chowk, Varanasi-1 (India)
1972
Phone 63076

First Edition
1972
Price Rs [illegible]-00

Also can be had of
THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
Publishers & Oriental Book-Sellers
P O Chowkhamba, Post Box 8, Varanasi-1 (India)
Phone 63145

आमुख

प्राय सभी विश्वविद्यालयो के बी० ए० एम० ए०, आचार्य एव विभिन्न प्रशासनिक प्रतियोगिता की परीक्षाओ म 'मुद्राराक्षस' सामान्य रूप से पाठ्यक्रम में निर्धारित है। इस नाटक पर सस्कृत व्याख्या क अतिरिक्त अग्रेजी माध्यम स भी लिखित कई तरह की व्याख्याएँ उपलब्ध हैं पर व सभी छात्रा क लिय समान रूप से सहज बोधगम्य नहीं हैं। मुझ अपनी आचार्य एव एम० ए० की परीक्षाओ म अनुभूत कठिनाइयो से तथा मूलग्रन्थ के प्राणोन्मादी प्रभाव क सविशेष आकर्षण से हिन्दी, सस्कृत, अग्रेजी की त्रिभाषीय 'विमला' व्याख्या लिखन की प्रेरणा मिली। इस सस्करण के माध्यम से, बिना किसी की सहायता लिए भी, विभिन्न भाषाभाषी छात्र महाकवि विशाखदत्त के गभीर भावतक अनायास पहुच सकें—इस उपयोगिता की दृष्टि से प्राचीन एव नवीन शैलियो का सरल समन्वय उपस्थित करन का यह मेरा प्रयास है।

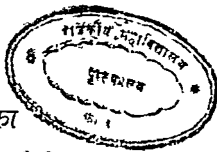
मुद्राराक्षस के इस सस्करण को वर्तमान रूप देन म मुझे अग्रेजी, हिन्दी तथा सस्कृत क कतिपय प्राप्त सस्करणो से सहायता लेनी पडी है। पाठ की दृष्टि से श्री दुण्ढिराज शास्त्री के द्वारा सम्पादित सस्करण को ही आधार बनाया गया है। टीका की सरणि क विषय म श्री एम० आर० काले, श्री शारदारञ्जन राय, डा० रमाशकर त्रिपाठी, निरूपण विद्यालङ्कार तथा प० कनकलाल ठाकुर क सस्करण अधिक एव उपयुक्त सहायक सिद्ध हुए हैं। इनके अतिरिक्त भी जिन विद्वान् लेखको एव सुधी समाक्षको की कृतियो से सहायता मिली है, मैं उनका भी हृदय से आभारी हूँ।

मेरे इस प्रयास म प्रोत्साहन देनेवालो म सुगृहीत नामधेय डा० जयमन्त मिश्र, अध्यक्ष, सस्कृत विभाग, बिहार विश्वविद्यालय एव प्रात स्मरणीय आचार्य श्री कृष्णमोहन ठाकुर अध्यक्ष रणवीर सस्कृत विद्यालय, का० हि० वि० वि० वाराणसी

का नाम सर्वोपरि है। इनके अतिरिक्त अपने ही 'आत्मस्वरूप' काशी मिथिला ग्रन्थमाला' के सुविख्यात सम्पादक, सुरभारती के अटलव्रती, तपस्वी विद्वान् आचार्यप्रवर श्री पण्डित रामचन्द्र जी झा का नाम लेकर मैं उनके कृत्यों का महत्त्व कम नहीं करना चाहता, जिनकी छत्रच्छाया मे 'भीत भीत पदे' होकर धीरे-धीरे क्रमश बढ रहा हूँ। अन्त में मैं चौखम्बा सस्थान के बन्धुद्वय श्री मोहनदास जी गुप्त एव श्री विट्ठलदासजी गुप्त के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ, जिनकी कृपा से यह ग्रन्थ इस रूप मे पाठको के सम्मुख प्रस्तुत हो सका है। सबसे अन्त मे मैं अपने ज्येष्ठ पुत्र चि० अवधेशकुमार को इस सन्दर्भ मे शुभाशीर्वाद दूँगा, जिसने अपने बी० एस सी० की तैयारी की व्यस्तता में भी इच्छा अनिच्छा पूर्वक हाथ बँटाता रहा है।

अनन्तचतुर्दशी
वि० स० २०२९

विनयावनत
जगदीशचन्द्र मिश्र



भूमिका

संस्कृत नाटक का उद्गम और विकास

काव्य या कला का मूल कारण अनुकरण है। पाश्चात्य दार्शनिक Aristotle के विचार से 'Art is imitation.' जहाँ तक काव्य में नाटक का प्रश्न है, उसमें तो अनुकरण स्पष्टतः दिखाई पड़ता है। धनञ्जय की नाट्य तथा रूपक की परिभाषाएँ इस बात को अच्छी तरह स्पष्ट कर देती हैं —

अवस्थानुकृतिर्नाट्यम् रूपकं तत्समारोपात् ॥ दश० १।७।

भारतीय काव्य शास्त्र के वेत्ताओं के लिए अरस्तू का 'अनुकरण' शब्द नया नहीं है। आचार्य भरत ने भी नाटक को 'लोक स्वभाव का अनुकरण' या 'लोकवृत्त का अनुकरण' माना है। 'लोकस्वभावानुकरणञ्च नाट्यस्य सत्वमिष्यते'—ना० शा० काव्य० मा० पृ० १२० और 'लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम्।' इन दोनों कारिकाओं में उल्लिखित स्वभाव तथा वृत्त शब्दों का प्रयोग व्यापक अर्थों में हुआ है। इसके अन्तर्गत लोकजीवन के समस्त अन्तर्बाह्य रूपों का समन्वय है। इसमें मानव के बाह्य प्रकृति के साथ उनके अन्तःप्रकृति को, उनके मानसिक भावों को भी अनुकृत करते हैं। नाटक का एकमात्र लक्ष्य पात्रों की आभ्यन्तर प्रकृति को सुन्दर तथा मार्मिक रूप में अभिव्यक्त करते हुए मानव तथा मानवेतर प्रकृति का चित्रण कर उसके द्वारा आनन्द की उत्पत्ति या रसोद्बोध करना है।

नाटक में नायकों का आंगिक, वाचिक, आहार्य तथा सात्विक इन चार प्रकार के अभिनयों द्वारा 'अवस्था' की अनुकृति की जाती है। दशरूपककार धनञ्जय की 'अवस्थानुकृति' का भी यही तात्पर्य है। इसमें चाल-ढाल वेष भूषा, आलाप प्रलाप आदि के द्वारा पात्रों की प्रत्येक अवस्था का अनुकरण इस प्रकार किया जाता है कि नटों में पात्रों की तादात्म्यापत्ति हो जाती है।

नाट्यीय सिद्धान्त के सम्बन्ध में यद्यपि पूर्वीय और पश्चिमी आचार्यों का मूलमन्तव्य वस्तुतः एक ही है, फिर भी दोनों के गन्तव्य मार्ग भिन्न हैं। दोनों ही नाटक में अनुकृति की प्रधानता स्वीकार करते हैं। फिर भी दोनों के विचारों का आरम्भ भिन्न प्रस्थान बिन्दुओं से है। अरस्तू का कवि प्लेटो द्वारा तिरस्कृत अनुकर्ता है और भारतीय आचार्य का कवि वेदवन्दित 'कविर्मनीषी परिभूस्वयम्भू' है। दोनों ही आचार्य वस्तु सत्य से अधिक दूर हैं। जब एक पाश्चात्य आचार्य अरस्तू कवि के तिरस्कार का परिहार करने के लिए प्रयत्नशील है और भारतीय आचार्य उसके प्रति रचित स्तवन को यथार्थ एवं विवेक सम्मत रूप देने के लिए। एक ने अनुकरण की हीनता का खण्डन किया है और दूसरे ने स्तवन की अतिरञ्जना का संतुलन। पर दोनों का मूल उद्देश्य आनन्द का उन्मीलन मात्र है। प्रतिमान भिन्न होते हुए भी प्राप्त लक्ष्य दोनों का एक ही है। क्योंकि नाटक भी आनन्द का साध्य न होकर उसका साधन मात्र ही तो है। नाटक अगर

अनुकृति है तो इसे देखकर मनुष्य को आह्लादित होने का कारण यह है कि उसको भावना करने में ही वह आनन्द प्राप्त करता है।

संस्कृत साहित्य में इस नाटक के लिए रूपक शब्द प्रयुक्त हुआ है। अंग्रेजी में जिस अर्थ में (Drama) शब्द का प्रयोग होता है—उसी अर्थ में संस्कृतसाहित्य में रूपक' शब्द प्रयुक्त है। अधिकतर लोग अंग्रेजी ड्रामा (Drama) का अर्थ नाटक शब्द के द्वारा ही करते हैं, किन्तु नाटक रूपक का एक भेद मात्र है। वह रूपकों के १० भेदों में से एक प्रमुख भेद मात्र है। धनंजय ने लिखा है —

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः ।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश ॥ दश० रू० १।८

भरत तथा विश्वनाथ ने रूपकों से ही सम्बद्ध १८ उपरूपकों का उल्लेख किया है। किन्तु दशरूपक में इसकी चर्चा नहीं है। केवल तृतीय प्रकाश में प्रसंगवश उपरूपक के एक प्रमुख भेद नाटिका—का वर्णन मिलता है।

अस्तु, हम कह सकते हैं कि भारत में नाटकों का उद्भव अतिप्राचीन काल से है। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार आरम्भ से ही अभिनय कला को बड़ी महत्ता रही है और प्रायः सभी आचार्यों ने उसका विवेचन किया है। फलतः भारतीय आचार्यों के मत से नाटक रसावेश से प्रेरित रूपक का एक प्रमुख भेद है, अवस्थानुकृति उसका प्रमुख धर्म है। आनन्दोपलब्धि उसका लक्ष्य है।

संस्कृत नाटक के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में स्वदेश विदेश के आलोचकों ने पर्याप्त छान-बीन की है। गंभीर गवेषणाओं के पश्चात् इन समीक्षकों ने अपने-अपने मतानुसार इस पर कतिपयवादों की स्थापना की है। इस विषयपर मुख्यतः तीनवाद प्रचलित हैं —

(क) परम्परागत वाद।
(ख) धार्मिक भावनावाद।
(ग) लौकिक लीलावाद।

प्रचलित इन तीनों मतों के आधार पर यह कहा जाता है कि नाटककार अपनी अपूर्व निर्माणक्षमता के बलपर नानाभावों की संवेदन क्षमता को एकत्र कर जीवनानुभूतियों की अभिव्यक्ति अभिनय में करता है। वह कहीं परम्परानुमोदित है, कहीं धर्म से अनुप्राणित और कहीं लौकिक लीलाओं से आकलित।

(क) परम्परागत वाद

(१) द्युलोकवाद—भारतीय परम्परा के अनुसार जैसा कि नाट्यशास्त्र में बतलाया गया है, नाटक की उत्पत्ति त्रेतायुग में ब्रह्मा के द्वारा की गयी थी। सतयुग के सुखी और सम्पन्न लोगों को किन्हीं मनोरंजन के साधनों की आवश्यकता नहीं थी। किन्तु, त्रेतायुग के आते ही समस्त संसृति में सांसारिक कष्टों का आविर्भाव हुआ। अतः देव दानव दोनों मिल कर ब्रह्मा के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि वे ऐसे वेद की रचना करें, जो सबों के द्वारा समान रूप से अनुशालित हो सके। इस पर ब्रह्मा जी ने ध्यानावस्थित होकर इन दुःखी प्राणियों के लिए नाट्यवेद को प्रकट किया। इसके लिए उन्होंने ऋग्वेद से नृत्य, सामवेद से संगीत,

यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस लेकर नाट्यकला की सृष्टि की और इसे पंचम वेद कहकर प्रसिद्ध किया —

जग्राह पाठ्यम् ऋग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥ (भरत ना० शा० १)

इतना ही नहीं इसमें भगवान शंकर ने ताण्डवनृत्य, पार्वती ने लास्यनृत्य तथा विष्णु ने चार वृत्तियों का समावेश करके पूर्ण कलात्मकता उत्पन्न कर दी। निर्माणकार्य कुशल स्थापत्यवेत्ता विश्वकर्मा ने एक सुन्दर रंगमंच निर्माण किया। उसपर सर्वप्रथम त्रिपुर दाह नाटक खेला गया। इसके बाद समुद्रमंथन इन्द्रध्वज पर्व में खेले गये थे जिनमें पुरुषों का अभिनय पुरुषों ने और स्त्रियों का अभिनय स्त्रियों ने किया था। इस कला को मर्त्यलोक तक लाने का श्रेय भरत मुनि को है। इस विवेचन से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं —

(१) चारों वेदों के सहयोग से ही नाट्यकला का निर्माण हुआ है।
(२) वैदिक काल में कोई भी नाटक नहीं खेला था।
(३) पहले नर-नारी दोनों मिलकर अभिनय करते थे।
(४) सभी नाटक धार्मिक थे तथा पर्वों पर खेले जाते थे।

(ख) धार्मिक भावनावाद

(१) मृतक-पूजावाद—डॉ० रिजवे के कथनानुसार नाटकों का उद्भव मृतात्माओं के प्रति प्रकट की हुई श्रद्धा से है। श्रद्धा प्रकट करने की यह प्रथा प्रायः विश्व के समस्त स्थानों में आरम्भ से ही प्रचलित है। समस्त धार्मिक कृत्यों के मूल में भी यही श्रद्धा काम करती है। इसी श्रद्धा का अभौतिक वस्तुओं में भी जीववाद के सिद्धान्त का एक पुनरुत्थान सा भी है। फलतः मृतात्माओं के प्रति प्रकट की गयी प्रीति के निमित्त अभिनय है। रामलीला और कृष्णलीला—इसके प्रमाण हैं। अपने पूर्वजों की प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए ही ये धार्मिक लीलायें होती हैं। इसी मृतक पूजा का विकसित रूप 'नाटक' है। विकासक्रम में ही नृत्य, गान और संवादों का इसमें समन्वय हो गया किन्तु, डॉ० रिजवे के इस मत को स्वतन्त्र विद्वानों से कहीं भी समर्थन प्राप्त नहीं हुआ।

(२) मे-पोलवाद—पाश्चात्य विद्वानों ने डा० रिजवे के इस मत का खण्डन करते हुए कहा है कि नाटक के लिए—वस्तुरचना के साथ कला गुण—आदि, नृत्य और अभिनय से युक्त पूर्णता, एकान्विति, पूर्वापरक्रम, सम्भाव्यता, कुतूहल आदि—न्यूनाधिक मात्रा में आवश्यक हैं। आवश्यक इसलिए है कि इनके बिना नाटक का कला रूप ही सम्भव नहीं हो सकता, और न्यूनाधिक मात्रा में इसलिए कि इनका अत्याधिक अभाव और इनसे उत्पन्न वस्तु-संगठन की निष्पत्ति—मृतक पूजा को आधार मान लेने पर नाटक के गम्भीर प्रभाव के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। इन आलोचकों की दृष्टि में नाटक का उत्पत्ति 'मे-पोल' (May pole) नृत्य से हुई है। पश्चिमी प्रदेशों में मई का महीना अत्यन्त आनन्दप्रद होता है। इस अवसर पर नृत्य गानादि के साथ लोग खूब उत्सव मनाते हैं। इस उत्सव की विशेषता यह होती है कि उत्सव स्थान पर सर्वप्रथम एक लम्बा बाँस गाड़ देते हैं और फिर उसके नीचे नर नारी समान भाव से नृत्य गानादि में भाग लेते हैं। भारतवर्ष में भी 'इन्द्रध्वज' का उत्सव प्रायः इसी प्रकार होता है। समाज शास्त्र प्रगति ने नाटक के इस उद्भव पर अधिक

बल दिया है। इस उत्सव की प्रक्रिया में नृत्य, गीत तथा उत्सव की कर्मकाण्डीय पद्धति-नाटक की उत्पत्ति का मूलाधार है। दूसरी बात इस उत्सव का समय करीब करीब वसन्तागम के अवसर पर ही होता है। अत उस समय प्राय विश्व की सभी जातियाँ उत्सव मनाती हैं। किन्तु इस वाद में केवल यही दोष दिखलाई देता है कि 'मे पोल' नृत्य की उचित सगति 'इन्द्रध्वज पर्व' के साथ ही नहीं बैठती है। मे पोल का समय तो वसन्त में पडता है, किन्तु 'इन्द्रध्वज पर्व' भारत में वर्षा ऋतु के अन्त (भाद्र शु० १२) में मनाया जाता है।

(४) कृष्णोपासनावाद—कई भारतीय आचार्यों ने संस्कृत नाटक के उद्भव के विषय में कृष्णोपासना को प्रमुख स्थान दिया है। उनका कहना है कि कृष्णोपासना के कई अङ्ग जैसे रथयात्रायें, नृत्य, वाद्य, सगीत एव लीलायें ऐसे उपकरण हैं जो सस्कृत नाटक की उत्पत्ति में सहायक सिद्ध हुए हैं। इस मत के पोषक विद्वानों का कहना है कि सर्वप्रथम नाटक शूरसेन प्रदेश में खेला गया है। इसमें दो मत नहीं कि कृष्णोपासना के कई अङ्ग इस प्रसग में बड महत्त्वशाली हैं। सस्कृत नाटकों में शौरसेनी प्राकृत की प्रबलता भी इसका प्रबल प्रमाण हो सकता है फिर भी इस मत में सर्वाधिक दोष यह है कि कृष्ण से सम्बन्धित नाटक ही सर्वाधिक प्राचीन है, न तो इसका कोई पुष्ट प्रमाण मिलता है और न कोई सबल तर्क ही। दूसरे कृष्ण के अतिरिक्त राम, शिव और विष्णु की लीलायें—जो कृष्ण की लीलाओं से थोडा भी कम महत्त्व पूर्ण नहीं है उसकी अवहेलना कर दी गयी है।

(ग) लौकिक लीलावाद

प्रो० हिल ब्रैंट स्टन कोनों का मत है कि भारत में पहले लोकप्रिय स्वाँग अधिक प्रचलित थे और उन स्वाँगों से ही नाटकों का प्रादुर्भाव हुआ है। इन स्वाँगों में रामायण तथा महाभारत के आख्यान मिलाकर ही नाटकों की कथावस्तु तैयार की गयी होगी। परन्तु इस मत का खण्डन डा० कीथ ने किया है। उनके मतानुसार महाभारत तथा रामायण के 'नट' शब्दों के आधार पर उस काल में नाटकों का अस्तित्व नहीं माना जा सकता। किन्तु, रामायण वा महाभारत में केवल नट शब्द का प्रयोग ही नहीं है, प्रत्युत उनमें 'नाटक' का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। रामायण के प्रारभ में ही अयोध्यावर्णन के प्रसङ्ग मे महर्षि वाल्मीकि ने बताया है कि वहाँ नाटक की मण्डलियां तथा वधूनायें थी (वधूनाटकसघैश्च सयुक्ताम्) राम के अभिषेक के समय भी लिखा है —

> नटनर्तकसघानां गायकानां च गायताम्।
> यत कर्णसुखा वाच शुश्राव जनता तत ॥

महाभारत में नट, शैलूष आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है और उसके हरिवश पर्व के ९१ से ९७ अध्याय तक तो नाटक खेले जाने का भी सकेत मिलता है। हरिवश में नाटक का सर्वाङ्गीण विकसित रूप हमें उपलब्ध होता है। किन्तु डा० कीथ हरिवश तथा महाभारत के रचनाकाल में पर्याप्त अन्तर मानते हैं। कीथ 'सस्कृतड्रामा' (परिच्छेद २ पृष्ठ २८) में हरिवश को ईसा की दूसरी या तीसरी शती से पूर्व रखने को राजी नहीं हैं।

इस सम्बन्ध में कीथ का कहना है कि नाटक के प्रचार से पूर्व स्वाँगों के भारत में प्रचलित होने का कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता, साथ ही मि० कोनों ने जिन प्रमाणों का उल्लेख किया है वे सभी महाभाष्य के समकालीन तथा उसके उपरान्त के हैं। अत उनसे स्वाँगों की प्राचीनता

सिद्ध नहीं होती। लेकिन ईसा की दूसरी शती के बहुत पहले भारत में नाटकों का अस्तित्व न माननेवाले पाश्चात्य पण्डितों के आगे वात्स्यायन का यह सूत्र प्रमाण स्वरूप उपस्थित किया जा सकता है :—'कुशीलवाश्चागन्तवः प्रेक्षणकमेषां दद्युः। द्वितीयेऽहनि तेभ्यः पूजा नियतं लभेरन्। ततो यथाश्रद्धमेषां दर्शनमुत्सर्गो वा। व्यसनोत्सवेषु चैषां परस्परस्यैककार्यता।' (का० सू० १, ४, २८—२९)

इतना ही नहीं, इससे भी पूर्व पाणिनि के अष्टाध्यायी सूत्रों में भी शिलालि तथा कृशाश्व के नटसूत्रों का उल्लेख मिलता है। 'पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः' (४।३।११०), 'कर्मन्दकृशाश्वादिनिः' (४।३।१११)। डा० कीथ प्रो० सिल्वाँ लेवी की मान्यता पर इन दोनों शब्दों में व्यक्ति मानकर इन्हें किन्हीं नाट्याचार्यों का नाम मानने से सहमत नहीं हैं। इस सन्दर्भ में प्रो० हिलब्रैंट ने जो तर्क उपस्थित किया है—उसमें अधिक बल प्रतीत होता है। उन्होंने संस्कृत नाटकों में संस्कृत के साथ प्राकृत का प्रयोग, गद्य पद्य का सम्मिश्रण, रंगशालाओं की आडम्बर शून्यता, विदूषक जैसे लोकप्रिय पात्र की समावेश के आधार पर यह सिद्ध करना चाहा है कि नाटकों की उत्पत्ति लौकिक स्रोतों से है। तथाकथित चारों तर्कों से भी उनका मत का समर्थन नहीं हो पाता है और नाटकों की उत्पत्ति की सम्बन्ध धार्मिक संस्कारों से जुड़ जाता है। किन्तु, नाटकों में विदूषक जैसे पात्र की सृष्टि की बाहुल्य महाव्रत संस्कार में शूद्र पात्र की आवश्यकता से स्पष्ट प्रतीत होता है और महाव्रत संस्कार एक धार्मिक संस्कार है। दूसरे पक्ष में ऐसा कोई उपयुक्त युक्ति नहीं मिलता जिससे यह सिद्ध होता विदूषक की उत्पत्ति किसी प्रकार लौकिक स्रोत से बैठ पाता।

(१) पुत्तलिकानृत्यवाद—जर्मनी विद्वान् डा० पिशेल ने नाटकों की उत्पत्ति कठपुतली नाच से मानी है। उन्होंने बड़े विस्तार के साथ यह बताया है कि भारत में पुत्तलिका का प्रचार बहुत पुराना रहा है। महाभारत में पुतलियों का वर्णन मिलता है। कथासरित्सागर में भी इन पुतलियों का वर्णन है। नाटक में प्रयुक्त होने वाले सूत्रधार तथा स्थापक आदि शब्द इस मत के समर्थक हैं। पिशेल ने लिखा है कि पुतलियों को नचाते समय नचानेवाला उनके डोरों को—सूत्र को—हाथ से पकड़े रहता है। इसीलिये वह 'सूत्रधार' है बाद चलकर यही नाम नाटक संचालक को भी दे दिया गया है। पिशेल के इस मत का प्रत्याख्यान यह कहते हुए डॉ० रिजवे ने कर दिया है कि नाटक की कथावस्तु, नायक, रस आदि का सूत्र में वर्णन करता है इसलिए सूत्रधार कहलाता है, न कि 'डोरे' पकड़ने के कारण। यद्यपि महाभारतादि ग्रन्थ में पुत्तलिका, पुत्रिका, दारुमयी आदि शब्दों के बहुशः प्रयोग का मिलते हैं, इनमें कुछ तथ्य नहीं प्रमाण होता है। प्रो० हिलब्रैंट के अनुसार पिशेल का इन नाटकों की उत्पत्ति इस सामान्य निर्जीव पुतले से मानना असंगत है। दूसरी बात कठपुतलियों के नाच के इतिहास पर विचार करने से भी यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि इससे बहुत ही पूर्व नाटक की उत्पत्ति का विकास हो चुका था।

(२) छायानाटकवाद—डा० पिशेल इस सन्दर्भ में एक दूसरा मत भी रखते हैं। इस मत के अनुसार वे नाटकों का विकास छायानाटक से मानते हैं। डा० कोनो भी इस मत के समर्थक हैं। प्रो० ल्यूडर्स के अनुसार संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति में छाया नाटक का बहुत बड़ा हाथ है। प्राचीन भारत में छाया द्वारा पुतले खेल दिखाने की प्रथा प्रचलित थी। इस सिद्धान्त

के अनुसार 'रूपक' शब्द की अन्वर्थकता भी सिद्ध होती है। किन्तु, डा० कीथ का कहना है कि यह वाद महाभाष्य के एक स्थल के अयथार्थ अर्थावधारण पर अवलम्बित है। संस्कृत में कुछ छाया नाटक भी पाये जाते हैं, जिनमें 'दूताङ्गद' विशेष प्रसिद्ध है। छाया नाटक में महीन पर्दे के पीछे अभिनेताओं के प्रतिबिम्बों के द्वारा अभिनय दिखाया जाता है। अतः परवर्ती छाया नाटकों के आधार पर भारतीय नाट्यकला का उदय मानना सर्वथा भ्रमपूर्ण है।

(३) संवादसूक्तवाद—नाटकों के कई तत्त्वों में से दो तत्त्व विशेष प्रमुख हैं, संवाद तथा अभिनय। संवादवाले तत्त्व को हम भारत के प्राचीनतम साहित्य—ऋग्वेद में ढूंढ सकते हैं। ऋग्वेद में लगभग १५ सूक्त ऐसे हैं, जिनमें संवाद का तत्त्व पाया जाता है। इन्द्र मरुत् संवाद (१।१६५, १।१७०), विश्वामित्र नदी संवाद (३।३३) पुरूरवा-उर्वशी संवाद (१०।९५) तथा यम यमी संवाद (१०।१०) इनमें प्रमुख हैं। इन संवादों पर सर्वप्रथम १८६९ ई० में प्रो० मैक्समूलर का ध्यान गया। उन्होंने ही इन सूक्तों को नाटकों की उत्पत्ति का मूल बताया। कुछ कालोपरान्त प्रो० लैवी ने भी इस बात का समर्थन किया तथा वान श्रोदर ने इस प्रस्ताव पर गंभीरतापूर्वक विचार किया और यह प्रमाणित करने का भी प्रयत्न किया कि सूक्तों से रहस्यपूर्ण नाटकों की सूचना मिलती है। डा० हर्टल ने एक पग और आगे बढ़कर यहाँ तक घोषणा की कि वैदिक नाटक के विकास का मूलरूप हम सुपर्णाध्याय में देखने को मिल सकता है। स्वदेश एवं विदेश के कतिपय अन्य विद्वानों का समर्थन भी इन मतों को प्राप्त है। किसी भी नाटक के ये तीन मूलतत्त्व हैं। नृत्य, गीत तथा संवाद। पहले इन संवादों के साथ नृत्य और गीत भी रहे होंगे किन्तु अब उनका स्वरूप हमें उपलब्ध नहीं है। ऋग्वेद में विवाह सूक्त के अन्तर्गत नवदम्पति के सम्मुख पुरन्ध्रियों के नृत्य करने का उल्लेख मिलता है। जहाँ तक गीतों का प्रश्न है—सारा ऋग्वेद ही भरा पड़ा है। इन संवादों के सुन्दर वार्त्तालाप को देखते हुए हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि इन सूक्तों से संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति की संभावना की जा सकती है।

(४) वैदिकानुष्ठानवाद—उपर्युक्त संवादसूक्तों के अतिरिक्त कुछ विद्वान् वैदिकानुष्ठानों में नाटकों की उत्पत्ति के बीज देखते हैं। वैदिक अनुष्ठानों में नाटक के सभी उपादान तत्त्व मिल जाते हैं। वैदिक काल में महाव्रत अनुष्ठान अधिक प्रचलित था। यह अनुष्ठान एक प्रकार का नाटक सा ही था। क्योंकि इस अनुष्ठान में कुमारियाँ अग्नि के चारों ओर नाचती थीं। शूद्र और वैश्य के प्रकाश के लिए कलह भी अभिनय का द्योतक होता था। इसके साथ ही यज्ञमण्डप में बैठे हुए यजमानों तथा याजकों के मनोविनोदार्थ वार्त्तालापमय सूक्त भी नाटक के कथोपकथनों की ओर संकेत करते हैं। कई विद्वानों का तो यहाँ तक कहना है कि नाटकों में गद्यमय संवाद महाव्रत में प्रयुक्त संवादों को देख कर ही विकसित किया गया है। यदि इस विचार को ठीक मान लें तो नाटक के सभी उपादान तत्त्व हम वैदिक अनुष्ठानों में मिल जाते हैं। आचार्य सीताराम चतुर्वेदी जी ने अपने 'अभिनव नाट्यशास्त्र' में बताया है, कि नाटक स्वतः एक यज्ञ है, अतः इसे ऋग्वेद के उन सूक्तों का आधार मानकर किसी दूसरे यज्ञ का अङ्ग कैसे माना जा सकता है। कुछ भी हो, ऋग्वेद के संवादों में नाटक के बीज मानने में कोई अनुचित नहीं है।

निष्कर्षस्वरूप हम कह सकते हैं कि नाटकों की उत्पत्ति में प्राचीन नृत्य, गीत एवं संवादों का अधिक हाथ रहा है। सभी जातियों में ये नृत्य, गीत आदि अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित थे। भारत में सभ्यता के विकास के साथ ही इन तत्त्वों का भी द्रुत विकास प्रारम्भ हो गया

और इन्हा नृत्य मार्गों का विकसित रूप आगे चलकर नाटक कहलाया, जिसमें अभिनय ने जीवन डाल दिया। इस प्रकार निःसंकोचभाव से हम कह सकते हैं कि नाटक का सर्वप्रथम विकास भारत में ही हुआ।

संस्कृत साहित्य में भास, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, भवभूति, नारायण एवं श्रीहर्ष प्रभृति उच्चकोटि के नाटककार माने जाते हैं। इनके नाटक अपने कतिपय नाटकीय विधानों के कारण विश्वसाहित्य में अपना स्वतंत्र स्थान रखते हैं। अकेले 'अभिज्ञानशाकुन्तल' ने तो विश्व में हलचल उत्पन्न कर दी है। मुद्राराक्षस का नाटकीय विधानोंकी व्याख्या विद्वान् प्रस्तुत करते रहे हैं।

मुद्राराक्षस - एक आधुनिक दृष्टिकोण

'मुद्राराक्षस' को समझने की अनेक कठिनाइयाँ रही हैं—दृश्य काव्य के रूप में नाटक के रूप में, ऐतिहासिक इतिवृत्त के रूप में, राजनीतिक रचना के रूप में, या ऐसे ही कुछ अन्य पक्षों को आधार बनाकर। पर मुद्राराक्षस को मात्र दृश्य काव्य की दृष्टि से देखना या उसके चरित्र-चित्रण की व्याख्या करना, उसमें रस की खोज करना या उसके रूपकत्व पर बल देना या उसकी राजनीति को महत्त्व देने लगना संस्कृत साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण रचना अनदेखा करने का संकेत प्रदान है।

'मुद्राराक्षस' को केवल दृश्य काव्य कहकर हम इस कृति के विशिष्ट और सम्पूर्ण विधान की मात्र उपेक्षा अधिक करते हैं। संस्कृत साहित्य की समीक्षा में यह प्रचलन है, उसका अन्य विधान के स्तर पर किसी रचना को श्रव्य काव्य या दृश्य काव्य कह देना हम उसे श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण घोषित नहीं कर सकते। दृश्य या श्रव्य काव्य होने के लिए कुछ नियम हैं, कुछ तत्त्व हैं। समीक्षा की प्रचलित पद्धति यह है कि किसी महत्त्वाकांक्षी रचना को काव्य की कसौटी पर कसा जाए, फिर कहा जाए कि काव्यत्व की दृष्टि से इसमें अमुक अमुक त्रुटियाँ हैं। यहाँ यह बड़ी सुविधा से भुला दिया जाता है कि दृश्य काव्य के सन्दर्भ में लेखक की जो त्रुटियाँ निकाली गई हैं—वह तो इस रचना का विशिष्ट विधान है, जिसे रचनाकार ने बड़ी मेहनत और अन्तर्दृष्टि के साथ विकसित किया है। अब तक दृश्य काव्य के रूप में ही इस नाटक को परखने का प्रयास किया गया है। संस्कृत नाटकों की जिन रूढ़ियों को विशाखदत्त ने तोड़ा है, उसे बलात् ठूसने का कोशिश की जाती रही है। जिस विशिष्ट विधान को मुद्राराक्षस में विशाखदत्त ने विकसित किया है, उसे लोग जानकर नजर अन्दाज कर देते हैं। विशाखदत्त के नाटक के इस अभिकल्प में नायक, नायिका और विदूषक की खोज तथा कथावस्तु के औदात्य का विश्लेषण ऐसा ही चेष्टा है।

दृश्य काव्य के रूप में 'मुद्राराक्षस' को देखकर उसमें राजनीतिक एवं कूटनीतिक कथाओं की जाच होती है और एक के तथ्य को दूसरे में खड़ा नहीं बैठाने की चेष्टा की जाती है। यहाँ भी मुद्राराक्षस के सूक्ष्म विधान की यह विशेषता नहीं समझी जाती कि इस नाटक की रचना इन दोनों स्तरों पर अवश्य चलता है। पर वे दो स्तर परस्पर एक दूसरे से संश्लिष्ट हैं, इसलिए एक विराट्ता कूटनीतिक अर्थ की सृष्टि करती है। इस दृष्टि से किसी भी चरित्र में दोनों स्तर

की संगति बैठाने का आवश्यकता ही नहीं है। ऐसा तो तब अपेक्षित था, जब दोनों स्तर दो अलग अलग प्रकृति के नाटकसूत्रों से लिये गये होते।

ऐतिहासिक इतिवृत्त या स्थूल घटनाक्रम को आलोचना का आधार मानलेने पर कुछ दूसरे प्रकार का भ्रान्तियाँ उत्पन्न होता है। इसका परिणाम यह निकलता है कि मुद्राराक्षस के चरित्रों को रामायण के चरित्रों की तरह आंका जाता है और फिर राक्षस या मलयकेतु को खल नायक की संज्ञा दी जाती है, तथा चन्द्रगुप्त, मलयकेतु और राक्षस के परम्परित त्रिकोण में चाणक्य को दुर्नीति-चालक नायक का कर्णधार कहा जाता है।

मुद्राराक्षस को चाणक्य नीति परक रचना मान कर इसका व्याख्या भी पण्डितों में पर्याप्त प्रचलित है। चाणक्य के अर्थशास्त्र का पारिभाषिक शब्दावलियों को चुनकर—इसकी व्याख्या की जाती है। इसकी अतिवादी स्थिति वहाँ पहुँचती है जहाँ इस नाटक को षड्यन्त्रों का एक जाल मान लिया जाता है। इन समीक्षकों को यह अन्दाज नहीं कि मुद्राराक्षस में जहाँ अर्थशास्त्र ने रचना को प्रभावित किया है वहाँ नाटक की प्रक्रिया अत्यन्त सूक्ष्म विवेचन शील बन गयी है। इस नाटक में अर्थशास्त्र का कोई महत्त्व तभी है जब कि पात्रों के अनुभवाय स्तर पर वह उतरे, न कि विवेचन के रूप में।

प्राय इन्हीं एकहरी दृष्टियों से संस्कृतसाहित्य के इतिहासकारों ने पिछली कई सदियों से इस अनुभवसंकुल और संश्लिष्ट रचना को समीक्षा की है। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि 'मुद्राराक्षस' को लेकर मुद्राराक्षस के समीक्षक, पाठक और सामान्य जन में कई प्रकार के विभ्रम फैले हैं। यह एक प्रकट तथ्य है कि प्रारंभ में संस्कृत पण्डितों का सहानुभूति मुद्राराक्षस के साथ कम रही है। इसलिए आश्चर्य इस बात पर नहीं होता कि आलोचकों ने विशाखदत्त और उसका श्रेष्ठ कृति 'मुद्राराक्षस' के साथ न्याय नहीं किया है, वरन् इस बात पर होता है कि अपने पूर्वाग्रहों के बावजूद वे विशाखदत्त के कृतित्व का इतनी दूरतक विश्लेषण कर सके हैं। 'संस्कृतकविदर्शन' में डा० भोलाशंकर व्यासने इसके महत्व को इस प्रकार व्यक्त किया है—' विशाखदत्त की कृति का सबसे बड़ा महत्व तो इसमें है कि उसने हर कदम पर इस बात को ध्यान में रखा है कि वह दृश्य काव्य की रचना कर रहा है, श्रव्य काव्य की नहीं, और अपनी गम्भीर प्रभावात्मकता को नाटकीय योजना द्वारा उत्पन्न करना चाहता है।" (पृ० ३५४) पर इसकी प्रभावात्मकता का अनुभव करते हुए भी 'व्यास' जी इसके आस्वादन प्रकिया को स्पष्ट और प्रशस्त नहीं कर सके हैं। इसका प्रधान कारण यह है कि दृश्य काव्य के सम्बन्ध में व्यासजी की अपनी एक दृढ आस्था है, जिससे मुद्राराक्षस का मेल नहीं खाता।

इस विशेष समस्या को लेकर डा० सत्यव्रत सिंह ने अपना 'मुद्राराक्षस' की भूमिका में व्यास जी के इस मत का अच्छा स्पष्टीकरण किया है। व्यासजी की दृष्टि में मुद्राराक्षस की नाटकीय घटनाओं की विशेषता बिना इसके दृश्य काव्यत्व को केन्द्र में रखे, सभव नहीं हो सकता। पर सिंहजी ने दिखाया है कि मुद्राराक्षस की यह विशेषता है कि यह यथार्थोन्मुख आदर्श को केन्द्र में रखकर चलता है। विवेचन के इस बिन्दु पर हमें कहना होगा कि मुद्राराक्षस की शक्ति और सम्भावना का क्षमतापूर्ण आख्यान डॉ० सिंह जी ने किया है। मुद्राराक्षस के काव्य

की भावना को उत्कृष्ट नाटकीय भावना से अलग करके दिखा सकना सिद्ध जी की सूक्ष्म साहित्यिक दृष्टि का एक बड़ा प्रमाण है। इसी प्रकार डॉ० रमाशंकर तथा निरुपमा विद्यालंकार ने अपने अपने लेखों में मुद्राराक्षस की अच्छी समीक्षा प्रस्तुत की है।

पर, इस रचना को समग्र रूप में अनुभावित करने का प्रयत्न इन समीक्षाओं में विस्तृत न हो सका। इसलिए मुद्राराक्षस की रचनात्मक दृष्टि को एक भावात्मक पकड़ने के बावजूद कृति के समग्र विधान का विश्लेषण डा० भोलाशंकर व्यास ने भी नितान्त शास्त्रव्याख्या और चलता ढंग से किया है। उनके विवेचन में मुद्राराक्षस की विशेषता का ऐतिहासिक के अन्तर्गत जो चर्चा है वह एकांगी और सपाट है। मुद्राराक्षस की अभिनेय प्रशंसा की सैद्धान्तिक चर्चा भी है, पर विश्लेषण नहीं है। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि विशाखदत्त को एक अनुभूत शास्त्र कवि मानते हुए भी, उनकी कृति का विवेचन रसवादी पद्धति के माध्यम से ही किया गया है। इस तरह मुद्राराक्षस की रचनादृष्टि का सही रूप से उद्घाटन करते हुए भी वे उसकी काव्य प्रतिभा का—जो समीक्षक के लिए मूल विचार का विषय है—विश्लेषण करने में सफल न हो सके।

विशाखदत्त के द्वारा प्राचीन कथावस्तुओं में नाटककला की दृष्टि से परिवर्तन के सन्दर्भ में श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय और श्री नानूराम व्यास ने अपना 'संस्कृत साहित्य की रूपरेखा' में लिखा है—'संस्कृत नाटककला की दृष्टि से मुद्राराक्षस में कई मौलिक नवीनताएँ भी देख पड़ती हैं। किन्तु यह मुद्राराक्षस पर नाट्यशास्त्र के नियमों को लागू करने का असफल प्रयास मात्र जान पड़ता है। (पृ० २२१-२२२)। पर यह दृष्टि तो वस्तुतः विशाखदत्त के पूर्व की इतिवृत्तात्मक पीढ़ी की है। विशाखदत्त प्राचीन कथावस्तुओं को इतिहास से लेकर—उन्हें नाटक का रूप देकर—अपने अनुभव का अविकल अंग बनाता है। इस रूप में नाटक के इतिहास का नाट्यरूपान्तरण करनेवाली विशाखदत्त की दृष्टि प्रधान और अधिक सार्थक है—इसे पाण्डेय जी स्पष्ट नहीं कर सके।

यह सच है कि ए० बी० कीथ और मैकडानल ने भी 'मुद्राराक्षस' की वैसी चिन्ता की जानी चाहिए, वैसी नहीं की। श्री कृष्णचैतन्य के साथ आचार्य बलदेव उपाध्याय का नाम संस्कृत साहित्य के प्रमुख समीक्षकों में लिया जाता है। उपाध्याय जी ने अपने 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' में बड़े मनोयोग के साथ मुद्राराक्षस का विवेचन किया है। पर उनकी सारी दृष्टि शास्त्र से इतना बँधी है कि उसके आगे वे रचना और उसके अनुभव को कुछ भी महत्त्व नहीं देते। मुद्राराक्षस के सम्बन्ध में लिखे इनके—विशाखदत्त, रचनाएँ, रचनाकाल, विशिष्टता, कथावस्तु, पात्रपरिचय, चरित्र, जैसे—सार शीर्षक शास्त्रीय पक्षों को अलग अलग लेकर चलते हैं, रचना का समग्र विवेचन नहीं होता। यही 'मुद्राराक्षस' के अध्ययन की सबसे बड़ी समस्या है।

यह अपने में सबसे बड़ी विडम्बना है कि सम्पूर्ण भारत को एकसूत्र में आबद्ध करने वाली विश्वजनीन जीवन दृष्टि का प्रतिपादन करनेवाली कृति का ऐसी खण्डित दृष्टि से अध्ययन किया जाए। आधुनिक समीक्षा प्रक्रिया में रचना के अर्थ तथा अनुभव को सातत्य और विकासशील बनाये रखने की चेष्टा है। पर, उपाध्याय जी मुद्राराक्षस के अर्थ को पुराने शास्त्रीयता के साथ नये विधान चिन्हों में बाँध देना चाहते हैं इस अर्थ में इसकी व्याख्या सर्वाधिक सन्दिग्ध है।

मुद्राराक्षस के अमित महत्त्व के कारण संस्कृत साहित्य के अनेक समीक्षकों ने इसे समझने की व्यग्रता प्रकट की है। पर, बहुतों ने इसका विधान समझने में चूक की है, जिसका मुख्य कारण इस नाटक को कूटनीति के धरातल पर समझने का आग्रह है। मुद्राराक्षस में स्थूल कूटनीतिक घटनाक्रम का महत्त्व है, पर उस स्थूल कूटनीतिक घटनाक्रम को सूक्ष्म-सशक्त प्रशासक के सबल संरक्षण में भारत के राष्ट्रीय एकीकरण की घटना से मिलाकर ही रचना के संश्लिष्ट रूप को भारत की सांस्कृतिक चेतना में ही समझा जा सकता है।

इस महत्त्वपूर्ण दृश्य काव्य की तरह 'मुद्राराक्षस' का अपना विशिष्ट विधान है। शाकुन्तल का वैशिष्ट्य मूलतः उसके विधान का वैशिष्ट्य है, जिसमें रचना की पूरी परिकल्पना उभरती है। विधान को यह धारणा कुछ-कुछ वैसी ही है, जैसी मानव-व्यक्तित्व की, अर्थात् रचना का व्यक्तित्व ही उसका विधान है। यहाँ विधान के इस रूप में वस्तुपक्ष और कलापक्ष का सन ही विभाजन विलीन हो जाता है। मुद्राराक्षस के विधान में एक बड़ी और जटिल राजनीतिक परिकल्पना का रूप उभरता है। आचार्य विष्णुगुप्त का रूप एक ओर है तो मलयकेतु और राक्षस के संयोग वियोग की प्रभविष्णुता दूसरी ओर है। इन चरित्रों की परस्पर टकराहट की पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक चेतना के राजनीतिक संघर्ष का रूप है तथा कौटिल्य की कूटनीति किस राजनीति से कैसे भिन्न और अधिक सार्थक रूप में विकसित होती है—इसका आख्यान है। उपेक्षित चन्द्रगुप्त की शक्ति से सम्मान्य नन्दों की शक्ति भिन्न है—इस अर्थ में कि वह तिरस्कृत है। चन्द्रगुप्त का बहिष्कार चाणक्य का तिरस्कार उनकी सर्जन शक्ति को चुनौती देकर विकसित करता है, और उसे सम्पूर्ण भारत को एकसूत्र में गूथ देने की शक्ति प्रदान करता है, जो विलासी नन्दशक्ति में नहीं थी। ये सारी प्रक्रियायें पेचीदा भावधाराओं में और राजनीतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप उठी हुई जटिल समस्याओं का निरूपण करना व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन के वृहद् छाया-आलोकों को उद्घाटित कर सकना, तात्पर्य यह कि जीवन के गहरे और बहुमुखी घात प्रतिघातों और विस्तृत जीवन दशाओं में पद पद पर आने वाले उद्वेलनों को चित्रित करना, उन्हें सभालना और अपनी कला में उन सबों को सजीव करना विशाखदत्त के उस संश्लिष्ट विधान का अंग बनती है, जो न दृश्य काव्य के निकट है, न राजनीति के, और न जिससे कौटिल्य के अर्थशास्त्र का आग्रह है, न चाणक्य-नीति का, वरन जिसमें युग बोध के साथ अखण्ड भारत के निर्माण के लिए भी—कूटनीति को और राजनीति को विकसित होने की पूरी स्वाधीनता और स्वायत्तता है। रचना में जीवन्त व्यक्ति जैसी यह स्वाधीनता और स्वायत्तता की स्थिति संभव हो जाना ही मुद्राराक्षस की सफलता और सार्थकता का चरम स्तर है।

'मुद्राराक्षस' की रचनादृष्टि, उसे व्यंजित करने वाली रीति नीति और उसका विधान एक सम्पृक्त रूप में विकसित हुए हैं। इसकी सही पहचान का उपक्रम ही इसके मूल्यांकन की प्रक्रिया को सार्थक बना सकता है। संस्कृत साहित्य का यह एक साहित्यिक दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि मुद्राराक्षस को लेकर संस्कृत पण्डितों में प्रारंभ से ही आत्यन्तिक धारणाएं विकसित होती रही हैं। कुछ आलोचक इसे संस्कृत की श्रेष्ठ रचना घोषित करना चाहते हैं, और ऐसे भी लोग हैं जो मानते हैं कि इसका महत्त्व इसलिए है कि यह अनेक विश्व विद्यालयों के पाठ्यक्रम में निर्धारित है। इस विभ्रम परक विवाद से ऊपर सच यह है कि इस रचना के वैशिष्ट्य को सम्पृक्त एवं खुली दृष्टि से समझा जा सकता है, धूप-दीप की दृष्टि से, अवहेलनात्मक बुद्धि से नहीं।

मुद्राराक्षस का गठन

रस का समर्थन भूमि में अविराम बहता हुआ मुद्राराक्षस की भावधारा में हमें जो मन्द-मन्द रव या मन्द मन्थर गति मिलती है, संस्कृत के अन्य नाटकों में उसका पूर्ण अभाव है। यहाँ प्रारम्भ से ही चाणक्य का जो तीक्ष्ण प्रखर सिंहगर्जन सुनाई पड़ता है, उस गर्जन का प्रतिबिम्ब देखने के लिए मन अति उत्सुक एवं एकाग्र हो जाता है, पर मुद्राराक्षस में इस तरह का रसाव या भावप्रवाह कहीं देखने को नहीं मिलता। इस नाटक में गति है, पर क्षमता नहीं है। अभिव्यक्ति है, पर अनुभूति का अभाव है। कथा है, पर कल्पनाशीलता का अभाव है। मनन है, पर हृदय नहीं है। विराम है, विश्रान्ति नहीं है। जीवन है, पर रस नहीं है। इसका कारण है—रसमर्मज्ञ की सरस भावना के रहते हुए भी, पात्रों के परिपाक की प्रभाव विडम्बना के बावजूद विशाखदत्त इस नाटक में रस को साकार नहीं रख सके। फलतः यह नाटक गम्भीर होकर भी निःस्पन्द है। प्रशान्त सागर की तरह विशाल होकर भी तरङ्गरहित है। वह [illegible] सकता है पर चमत्कार नहीं ला सकता। कारण स्पष्ट है—नाटककार को संस्कृत नाटक के नियम नियमों के पालन करने का जितना चिन्ता रहा है उतना पात्रों और दर्शकों के साथ एकता न होकर उनको पिघला देने, द्रुत देने, बहा देने का नहीं। कवि स्वयं चूँकि भावना के प्रवाह में बह नहीं सका—इसलिए उसके काव्य में बहा देने की क्षमता नहीं आ सकी। मुद्राराक्षस को हमें समझ-बूझकर पढ़ना पड़ता है। यह नाटक से अधिक काव्य और पद्य से अधिक गद्य है। चाणक्य को किस तरह राक्षस की अँगूठी मिल जाती है और वह उसी से उसे सब ओर से विवश कर अपने वश में कर लेता है। मनस्तापों के अभाव से, संघर्ष में, [illegible] भावना दृष्टि के बिना नाटक सूना-सूना लगता है।

ग्रन्थकार : विशाखदत्त

मुद्राराक्षस की प्रस्तावना में लिखा है—"आज्ञापितोऽस्मि परिषदा यथाद्य त्वया सामन्तवटेश्वरदत्तपौत्रस्य महाराजपदभाक्पृथुसूनोः कवेर्विशाखदत्तस्य कृतिरभिनवं मुद्राराक्षसं नाम नाटकं नाटयितव्यमिति।" इससे इतना ही पता चलता है कि इस नाटक के कर्ता का नाम विशाखदत्त है। वे महाराज 'पृथु' अथवा नाटक के कुछ अन्य संस्करणों के अनुसार 'महाराज भास्करदत्त' के पुत्र हैं। इनके पितामह का नाम 'सामन्त वटेश्वरदत्त' था। किन्तु विशाखदत्त कहाँ के थे? केवल नाटककार थे, कवि थे या किसी राजतन्त्र के सञ्चालक या सञ्चालकों में से कोई एक थे—इसका कुछ भी पता नहीं चलता। किन्तु 'मुद्राराक्षस' के नाटककार विशाखदत्त हैं—इसमें दो मत नहीं है। वस्तुतः भवभूति और कालिदास की तरह विशाखदत्त भी अपने व्यक्तित्व के परिचय के सम्बन्ध में उदासीन हैं। इसका कारण यह है कि हमारे पूर्वज चिन्तक सदैव से सिद्धान्त के उपासक थे न कि व्यक्ति के। व्यक्तिपरकता के इस तिरस्कार से प्रस्तुत चरितनायक विशाखदत्त भी पूर्ण प्रभावित प्रतीत होते हैं। फलतः इनकी आलोच्य कृति ही इनके व्यक्तित्व का परिचायक है।

व्यक्तित्व

विशाखदत्त मूलतः राजनीतिक होने के कारण एक शुद्ध विचारक हैं। इनके नाटक की कथावस्तु की रीढ़ की हड्डी कोई न कोई विचार तत्त्व ही है। विचार के प्रौढ़ और तर्क की

कूप पर घटनाओं और राजनीतिक समस्याओं का मिट्टी चढा देने के बाद ही विशाखदत्त की कथावस्तु का कलेवर तैयार होता है। विशाखदत्त के ये कूटनीतिक विचार विविध हैं—आकार में भी वे ज्यामिति की रेखाओं की तरह एक दूसरे को काटते, उलझते, कहीं हल्की, कहीं गहरी घुरचियाँ और गुत्थियाँ बनाते हुए फैले रहते हैं। पुन विशाखदत्त के अभ्यस्त हाथ उन्हें समेटते हुए, अभीष्ट रूप रेखा देते हुए, प्रतिपाद्य निष्कर्ष तक पहुचा लेते है। अत विशाखदत्त मूलत राजनीतिक षडयत्रों के शिल्पी हैं। पाठकों से इनकी अपेक्षा रहती है कि वे इनकी शिल्पगत विशेषताओं की अनगढता और पुन, उसके प्रतिपाद्य सुघडता की रेखा रेखा तक को समझें और समझने का क्षमता रखें। इनके व्यक्ति की सतुष्टि निर्मिति की प्रशसा में नहीं, निर्माण की प्रक्रियाओं की समझदारी में प्राप्त होती है।

आस्था की दृष्टि से नाटककार वैदिक धर्म का विश्वासी प्रतीत होता है। शिव,[1] विष्णु,[2] सूर्य,[3] एव बौद्धों के प्रति उदार विचार ही इस दृष्टिकोण के परिचायक है। उनका लक्ष्य अपनी धार्मिक आस्था को किसी पर थोपना नहीं, प्रत्युत वे सदैव इसका ध्यान रखते थे कि कहीं कोई दुखी न हो न य, किसी के प्रति भूल न हो जाय, किसी को ठेस न पहुचे। तात्पर्य यह कि स्वय उदार दृष्टि कोण के हिन्दूधर्म में विश्वास रखकर भी अन्य धर्मों के प्रति आस्थावान थे। मात्र चतुर्थ अङ्क में क्षपणक जीवसिद्धि के आगमन को अशकुन समझा है। सभवत यह भी उनका ज्योतिषज्ञान के कारण ही सभव है।

इसीलिए उनके व्यवहारों में, विचारों में आध्यात्मिक सयम, धार्मिक आस्था सासारिक व्यवहार घुल मिलकर ऐसा समन्वय उपस्थित कर देते हैं कि पाठक और पात्र, दोनों की सहानुभूति का पथ आप से आप प्रशस्त बन जाता है।

साराश यह कि विशाखदत्त का व्यक्तित्व राजनीतिक पृष्ठभूमि पर जिज्ञासा, समन्वय और बौद्धिक विवेक का केन्द्र है। जहाँ राजनीति है, वहाँ उनका कूटनीतिज्ञ विश्लेषक उभरता है, और जहाँ उनको कला की दृष्टि है, वहाँ उनका नाटककार उन्हें द्विविधा से उठाकर उन्हें विश्वासी और श्रद्धालु बना देता है—सर्वथा परिणत व्यक्तित्व में उन्हें उपस्थित करता है। सक्षेप में हम कह सकते हैं कि विशाखदत्त का व्यक्तित्व सदैव विकल्प से उठकर सकल्प में पर्यवसित है और तर्क से उठकर विश्वास में सुस्थिर है।

कृतित्व

विशाखदत्त की अन्तिम किन्तु अमर कृति मुद्राराक्षस के अतिरिक्त दो अन्य कृतियाँ भी हैं —'देवीचन्द्रगुप्तम्' और 'अभिसारिकवञ्चितकम्'। किन्तु इन दोनों ग्रन्थों का अस्तित्व केवल नाट्यदर्पण और शृङ्गार के प्रकाश के उद्धरणों में ही सुरक्षित है। ये दोनों ही कृतियाँ विशाखदत्त के कौमार्य कालीन रचनाएँ हैं। 'देवीचन्द्रगुप्तम्' का इतिवृत्त राजनीतिक है। इसमें गुप्तवशीय राजा रामगुप्त की दुर्बलता और चन्द्रगुप्त द्वितीय के प्रबल पराक्रम का बड़ा ही भव्य निदर्शन है। अपनी भीरुता के कारण रामगुप्त ने रूपसी पत्नी ध्रुवदेवी को महाशक्तिशाली शक राज को समर्पित कर देना चाहा, किन्तु अत्यन्त तेजस्वी चन्द्रगुप्त ने छद्मवेश में शकराज का वधकर 'ध्रुवदेवी' से विवाह कर लिया। यह नाटक ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। इसका

---

१ मुद्रा० १।१, १।२, ३।२०   २ मुद्रा० ७।१९   ३ मुद्रा० ४।२१

उल्लेख बाण के हर्षचरित में, राजशेखर की काव्यमीमांसा में तथा नाट्यदर्पण में प्राप्त हुआ है। 'अभिसारिकावंचितकम्' का उल्लेख अभिनव भारती एवं शृंगारप्रकाश में मिलता है। इस नाटक का कथावस्तु वत्सराज उदयन के जीवनचरित पर आधारित है। इस तथ्य का ज्ञान भी हमें पूर्वोक्त ग्रन्थों के उद्धरणों से ही प्राप्त होता है।

निवास

'मुद्राराक्षस' की कथावस्तु का केन्द्र 'पाटलिपुत्र' (पटना) है। मुख्यतः नन्दवंश राजा की यहीं राजधानी थी। विशाखदत्त इसी प्रदेश के निवासी प्रतीत होते हैं। यहाँ के भूभागों से, यहाँ की प्रथाओं से, चाल चलन से, वस्तु-व्यवहार से वे पूर्ण परिचित हैं—इसका पता नाटक में वर्णित विषयों के सन्दर्भ में स्थान-स्थान पर मिलता है। विशाखदत्त गौड़ देश की प्रथाओं से, यहाँ की सुन्दरियों के भाव-व्यवहारों से पूर्ण परिचित[1] थे। खस जाति-विशेष के सैनिकों के प्रति आकर्षण भी इसी तथ्य की पुष्टि करते[2] हैं।

[illegible]।
न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते। १।३

इस श्लोक में वर्णित मिट्टी से भी यह प्रतीत होता है कि कवि उस प्रदेश का निवासी है, जो धान की खेती के लिए प्रसिद्ध है। कुछ विद्वान इन पर मानते हैं—गौड़ प्रदेश की प्रथाओं का उल्लेख, खस जातियों का वर्णन, धान की खेती आदि की विशेषता इस बात का प्रमाण है कि विशाखदत्त पूर्वीय बिहार या बिहारप्रान्त दक्षिण किंवा उत्तर पर्वतीय बंगाल के निवासी थे।

रचना-काल

(क) अन्तःसाक्ष्य:—मुद्राराक्षस की प्रस्तावना में चन्द्रग्रहण का संकेत मिलता है। जो केवल इसलिए नहीं हो पा रहा है कि चन्द्र के साथ बुध ग्रह की स्थिति के कारण ग्रहण योग ठीक नहीं बैठता[3] है। कुछ आलोचकों के मतानुसार यह तिथि २ दिसम्बर ८६० ई० थी,[4] इस आधार पर इस नाटक की रचना नवीं सदी के उत्तरार्द्ध में मानी जा सकती है। जे० कोबी की सम्मति के अनुसार मुद्राराक्षस का अभिनय इसी अवसर पर अवन्तिवर्मा के मन्त्री शूर ने कराया था[5]। किन्तु, इस धारणा के समर्थन में कोई अन्य पुष्ट प्रमाण का अभाव रहने के कारण इसको मान्यता विद्वानों ने नहीं दी है।

मुद्राराक्षस का कथानक ऐतिहासिक है। उसका रचनाकाल निर्धारित करने के लिए तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं की समीक्षा करने पर पता चलता है कि प्राचीन काल में महाराज पृथु, भास्करदत्त अथवा सामन्त वटेश्वरदत्त के सम्बन्ध में इतिहास में कहीं कोई चर्चा नहीं है। विशाखदत्त के नाम के आगे दत्त शब्द प्रयोग एवं उनके पिता, पितामह आदि के नामों के अन्त में प्रयुक्त 'दत्त' उपाधि को देखकर कुछ विद्वानों ने यह विचार व्यक्त किया है कि इनका वंश 'दत्त' वंश था। किन्तु, इतिहास में 'दत्त' उपाधि सामन्त का कहीं भी उल्लेख नहीं पाया जाता है। डॉ० सत्यव्रत सिंह ने लिखा है कि 'इस नाटक के कथानक से सम्बद्ध

---

१. मुद्रा० ५।२३   २. मुद्रा० ५।११   ३. मुद्रा० १।६
४. Jacobi : Vienna Orient Journal.   ५. वही पृ० २१२ F. F.

सभी कल्पनायें इस नाटक के 'भरतवाक्य' पर केन्द्रित हैं।[1] वस्तुतः इस नाटक के भरतवाक्य में 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः' ही पाठ नहीं मिलता, अपितु, अवन्तिवर्मा, दन्तिवर्मा, रन्तिवर्मा, रन्तवर्मा पाठ भी मिला करता है। इन विभिन्न राजाओं के कालभेद के कारण, विशाखदत्त का कालनिर्णय भी अनिश्चयगभगत हो जाता है।

प्रथम पाठ के आधार पर प्रो० शारदा रंजन राय[2] की धारणा है कि मुद्राराक्षस में विशाखदत्त ने गुप्तसम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (३७५-४१३ ई०) का ओर संकेत किया है। वे प्रकारान्तर से अपने आश्रयदाता चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की प्रशंसा करते हैं। मुद्राराक्षस का घटना स्थल पाटलिपुत्र है। चीनी यात्री फाहियान ने पाटलिपुत्र को मगध की राजधानी बतलाया है। ह्वनसग उसे भग्नावशेष पाया[3]। इस पाठ के आधार पर कुछ विद्वान इस रचना को पाँचवीं शताब्दी के आरंभ की मानते हैं।

दूसरे पाठ 'अवन्तिवर्मा' को तैलंग महोदय प्रामाणिक मानते[4] हैं। इनके मतानुसार राजा हर्ष (६०६ ई से ६४८ ई०) के बहनोइ ग्रहवर्मा के पिता मौखरि राजा थे। इस मत के अनुसार इस नाटक की रचना ७ वीं सदी में हुई। मेकडानल,[5] तथा रैप्सन[6] इसी मत को स्वीकार करते हैं।

'दन्तिवर्मा' पाठ के आधार पर मुद्राराक्षस का रचनाकाल पल्लव राजा दन्तिवर्मा का समय ७७९-८३० ई० निश्चित किया गया है। किन्तु उस समय दक्षिण में हूणों का उपद्रव नहीं फैला था। अतः यह मत मान्य नहीं हो सका।

इसी प्रकार 'रन्तिवर्मा' या 'रन्तवर्मा' भी भ्रामक मत ही है। इन विभिन्नमतों का सामञ्जस्य केवल एक ही हो सकता है कि सर्वाधिक प्राचीन पाठ 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः' ही विशाखदत्तका अभिप्रेत था। बाद के सभी पाठ परिवर्तित कर सामयिक राजस्तुति के लिए प्रयुक्त किये गये होंगे।

मुद्राराक्षस की शैली, भारत का सीमा निर्धारण, धार्मिक कथन प्रभृति को मिलाजुलाकर यही कहा जा सकता है कि इस नाटक का मूल पाठ 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः' ही है और इसका रचनाकाल ऊपर लिखित चन्द्रगुप्त के साथ ही मेल खाता है।

विशाखदत्त का शास्त्र वैदुष्य

मुद्राराक्षस के अध्ययन मनन करने से हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि विशाखदत्त की प्रतिभा बहुमुखी थी। कवि न्यायशास्त्र[7] नाट्यशास्त्र,[8] अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र तथा ज्योतिष के धुरन्धर विद्वान् थे।[9]

विशाखदत्त की राजनीतिक पृष्ठभूमि तक पहुंचने के लिये मौर्यकालीन इतिहास के प्रारम्भिक पृष्ठों का पर्यालोचन करना पड़ेगा। सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण ई० पू० ३२६ ई० में किया

---

१ मुद्रा० by डा० सत्यव्रत सिंह, भूमिका खण्ड, पृ० १२
२ S Ray's Introduction to his edition of Mudra Rakshasa pp 9-14
३ Elphinstone's History of India P. 292.
४ *Telanga's Introduction to his edition* of Mudra Rakshasa
५ Macdonell Skt Lit P 365 ६ JRAS 1900 P 535
७. मुद्रा० ५।१० ८ मुद्रा० ४।३ ९ कृतश्रमोऽस्मि चतुष्षष्ट्यङ्गे ज्योतिःशास्त्रे।

था। सिन्ध तथा पंजाब के अनेक गणराज्यों की स्वतन्त्रता अपहृत कर सिकन्दर ने मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त का पथ प्रशस्त कर दिया। चन्द्रगुप्त मौर्य के पूर्व महापद्मनन्द यहाँ का शासक था। इनके साम्राज्य की नींव पश्चिमोत्तर सामान्त में दृढ़ करने वाला सिकन्दर था।[1] ई० पू० ३२२, के लगभग मौर्य सत्ता की स्थापना के साथ भारतीय इतिहास में एक नवीन युग का प्रवर्तन हुआ। सम्पूर्ण देश एक सुसंगठित शासनतन्त्र के अधीन ऐक्य बद्ध हुआ। भारत से जब सिकन्दर लौट गया—चन्द्रगुप्त ने अपना राजनीति के गुरु, प्रखर पण्डित चाणक्य की प्रेरणा से मगध का राज्य-सिंहासन अधिकृत कर लिया। उसने अपने अदम्य पौरुष से मौर्यसाम्राज्य की उत्तरी एवं पश्चिमोत्तरवर्ती सीमायें हिन्दूकुश तथा वर्तमान भारत की सरहद तक तथा दक्षिण में नर्मदा विन्ध्य श्रेणी को लाँघ कर, प्रायद्वीप के भीतर मैसूर तक पहुँचा दी। इस प्रकार इस समय कलिङ्ग एवं कन्नार को छोड़ कर सम्पूर्ण भारत (पाकिस्तान को लेकर) तथा आधुनिक अफगानिस्तान और बलूचिस्तान उनके साम्राज्य में समाविष्ट[2] थे। इतने बड़े अनुष्ठान को चाणक्य की नीति ने एक कठिन खेल के रूप में प्रदर्शित किया है। इसकी तुलना सर्प से की गयी है। 'ननु सकलोपायप्रहिता' (मुद्रा० अङ्क २) इसमें सर्पों का खेल दिखलाने वाला, भ्रमर, सन्यासी, ज्योतिषी, वैतालिक आदि सभी प्रकार के व्यक्ति गुप्तचर के काम में संलग्न हैं और अन्ततः वे अपने उद्देश्य में सफल हो ही जाते हैं। इससे पता चलता है कि विशाखदत्त राजनीति शास्त्र के पूर्ण पण्डित थे।

'मुद्राराक्षस' की पंक्तियों में, तत्कालीन सम्पूर्ण नाटक के पात्रों के आचरण में पदे पदे परिलक्षित होता है। नैतिक ऐश्वर्य, सौन्दर्यपरक अभिरुचियाँ, शिष्ट एवं परिष्कृत संस्कृति प्रबुद्ध लौकिक प्रज्ञा, विभिन्न विचार और वैदग्ध्य के वर्णन से यत्र तत्र आवेष्ठित हैं। राजनीतिक षड्यन्त्रों का भी इस नाटक में विशाखदत्त ने उसी प्रकार परिशमन किया है, जिस प्रकार उच्च नैतिक विचारों का सन्निवेश किया है। विशाखदत्त नैतिकता अथवा सदाचार के आदर्श से पूर्ण परिचित थे। उनके हर पात्रों के व्यक्तित्व में इन गुणों का सन्निवेश है। इनके छोटे-छोटे पात्र भी जहाँ कूटनीतिक पृष्ठाधार पर विवशतावश रूप अनैतिक आचरण करते हैं वहीं इसके लिए भी उन्हें पश्चात्ताप करना पड़ता है। मनःस्थिति की पवित्रता में निष्काम कर्मयोग की प्रधानता के आधार पर प्रतिष्ठित आध्यात्मिक अर्थवत्ता से अनुरंजित जिस उदात्त एवं कठोर आदर्श की स्थापना कालिदास या वाल्मीकि ने की है, प्रायः विशाखदत्त इस भावभूमि से अवश्य ही अपरिचित थे। अथवा उनकी प्रकृति में सन्निहित राजनीतिक शुष्कता ने इसे अस्वीकृत कर दिया। विशाखदत्त के पात्र भावात्मक अथवा कल्पनात्मक उत्साह से प्रेरित होकर नहीं, प्रत्युत बौद्धिक विश्वास से प्रेरित होकर कार्यशील हुए हैं।

विशाखदत्त के शास्त्रीय ज्ञान का सर्वोपरि विशिष्टता है उनकी बौद्धिकता। विचारों में, तत्त्व-चिन्ता में, आचार शास्त्रीय प्रश्नों में उनका अध्ययन, चिन्तन अतिगम्भीर है। चाणक्य की कूटनीति को वे व्यवहार की कसौटी पर कसते हैं। सामान्य आचारशास्त्र के ऊपर वे आचरण के एक उच्चतर आदर्श का निर्माण करते हैं। इनके आदर्श की पृष्ठभूमि बुद्धि अथवा चरित्र की दृढ़ता है। समाज एवं शासन पर वे व्यावहारिक तथा एक कुशल राजनीतिज्ञ की दृष्टि से विचार करते हैं। मुद्राराक्षस का सारा नैतिक एवं बौद्धिक वातावरण इस बात के साक्षी हैं कि विशाखदत्त का ज्ञान किसी एक शास्त्र के पल्ले में नहीं बंधा है। 'मुद्राराक्षस' के सम्पूर्ण पात्रों में यह सशक्त बुद्धिवाद

१. रायचौधुरी, पोलिटिकल हिस्ट्री, पृ० २७१।
२. महाकविकालिदास : डा० रमाशंकर तिवारी, पृ० ३७।

व्याप्त है। मुद्राराक्षस में ऐसे युग का चित्रण है जो विराट् सर्वनाशात्मक उद्वेजना एवं अशान्ति से परिपूर्ण है। सम्भवतः समाज की इस स्थिति का निरूपण करने में विशाखदत्त का आभ्यन्तर संघर्ष भी उन्हें विचलित कर रहा था। विभिन्न शास्त्रों का पाण्डित्य एक ओर उन्हें खींचता था और निसर्ग प्राप्त कवितारूपा उन्हें दूसरी ओर खींचती थी—'कर्त्ता वा नाटकानामिममनुभवति क्लेशमस्मद्विधो वा' (मुद्रा० ४।३) किन्तु विशाखदत्त की कलात्मक सजावट, राजनीतिक कल्पना तथा शब्दतति का भण्डार इस बात का प्रमाण है कि उनका पाण्डित्य, उनकी काव्य-प्रतिभा का कहीं बाधक नहीं बना।

कथावस्तु का मूलस्रोत

महाराज नन्द एवं चाणक्यसम्बन्धी कथा का स्पष्ट उल्लेख श्रीमद्भागवत एवं विष्णुपुराण में है। इन पुराणों में वर्णित वृत्तों के अनुसार आचार्य चाणक्य ने महानन्दों का विनाश कर मगधसाम्राज्य के राज्यसिंहासन पर चन्द्रगुप्त को अधिष्ठित कर दिया। इन्हीं पुराणों में यह भी लिखा है कि कौटिल्य का यह शिष्य कामन्दक ने चाणक्य की उस अभिचार क्रिया का वर्णन किया है जिसका प्रयोग उन्होंने नन्द को मारने के लिए किया था।

कौटिल्य के द्वारा नन्दवंश के सर्वनाश के बाद चन्द्रगुप्त का राज्यारोहण काल इतिहासों की मान्यता के अनुसार ई० सन् के ६२५ वर्ष पूर्व माना जाता है। उस समय से लेकर 'मुद्राराक्षस' के रचनाकाल तक के लगभग एक सहस्र वर्ष का अन्तराल प्रतीत होता है। इस अवधि में चन्द्रगुप्त एवं चाणक्य के बीच वाली कथा के सम्बन्ध में बहुविध किंवदन्तियों का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। मुद्राराक्षस के नाटककार को इन किंवदन्तियों का ज्ञान अवश्य होगा। यद्यपि नाटक की वस्तुयोजना में इन किंवदन्तियों का कुछ भी संकेत नहीं मिलता। दशरूपक में लिखा है कि शकटार के घर में छिपकर चाणक्य ने 'कृत्या' उत्पन्नकर राजा को पुत्रों सहित मार डाला। योगानन्द का मृत्यु के बाद, पूर्वनन्द का पुत्र चन्द्रगुप्त महापराक्रमी चाणक्य के द्वारा राजा बना दिया गया। इस प्रकार का संकेत बृहत्कथा में मिलता है। (दश० रू० पृ० ७४) किन्तु बृहत्कथा सम्प्रति अनुपलब्ध है। कथासरित्सागर को लोग बृहत्कथा के मूल अंश का यथार्थ रूपान्तर मानते हैं। मुद्राराक्षस का विस्तृत विवरण कथासरित्सागर में नहीं मिलता। जो कुछ भी वृत्त मिलता है उसमें राक्षस के कार्यों की कोई चर्चा नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि इस नाटक की कथावस्तु की कल्पना विशाखदत्त की निजी है। आस्थामूलक भारतीय कौटिल्यनीति के साथ स्वामिभक्तिपरक राक्षस का संघर्ष, जहां सब कुछ बुद्धि के कांटे पर तौलकर तर्क से परिष्कृत कर इस इतिवृत्त को सजाया गया है। इस आस्था के नवनिर्माण, नाटकीय गति, क्रिया और ज्ञान के बीच समुचित सामञ्जस्य की स्थापना का अभिनव प्रयास विशाखदत्त की अपनी विशेषता है।

ऐसा लगता है विशाखदत्त ने अपने नाटक में मौर्य साम्राज्य की स्थापना तथा नन्दवंश के विनाश का सारा श्रेय आचार्य विष्णुगुप्त को दिया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अरूप तत्त्व का अपनी कल्पना के बल पर रूप सिरजा है, सौन्दर्य का प्रतिमान गढ़ा है। और उसे लावण्य-जल से मङ्गल स्नान कराया है और फिर इससे सम्बन्धित सारे घटनाचक्रों की परिकल्पना कर ली है। कौटिलीय अर्थशास्त्र की राजनीति का महाप्रयोक्ता तो सर्वप्रथम राक्षस को ही नाटककार ने दिखाया है। कथासरित्सागर के वर्णन में राक्षस के चरित के सामञ्जस्य का कहीं भी आग्रह परिलक्षित नहीं होता—जैसा मुद्राराक्षस में है। चाणक्यचरित में व्यापक वस्तुनिष्ठता

के द्वारा प्राचीन इतिवृत्त का भावात्मक मधुरिमा के बीच भर दिए गए हैं। मुद्राराक्षस के विकास के इतिहास में उपर्युक्त कारणों सहितता के अतिरिक्त विशाखदत्त की अपनी बड़ी देन यहाँ राजनीति के साथ मानव के उदात्त चरित्र में रागात्मक सहज सामञ्जस्य की प्रतिष्ठा है। चाणक्य एवं विष्णुगुप्त के अद्भुत कौटिल्य चरित्र प्रधान होने के कारण मुद्राराक्षस में आकर ही नाटककार भावों में रस भर सका—अन्यथा इसमें शुष्क राजनीति का इतना अधिक प्रभाव है कि इसमें नाटक की आत्मा ढूँढ़े भी नहीं मिलती। विशाखदत्त की उर्वरा कल्पना जहाँ भावात्मक है, वहीं तत्कालीन भारत की कथा प्रगाढ़ राजनीतिकता तथा भारत राजनीति के निविड़ आच्छादन से आच्छादित है। विशाखदत्त की कल्पना से प्रसूत यह शुष्क कथा राजनीतिरस से परिपूर्ण बन ही गई है। मुद्राराक्षस का वर्णन नाटककार देशकाल की सम्पूर्णता में अपनी सार्थकता रखता है। इस नाटक में कौटिल्य की कूटनीति की बारीकी वाली चालों से तत्कालीन राजनीति के महान नायकों में मुद्रा सुन्दरी की अनोखी सृष्टि हुई है। वस्तुतः ही महाकवि विशाखदत्त की प्रतिभा अनुपम है।

संक्षिप्त कथावस्तु

मुद्राराक्षस के कथानक का केन्द्रबिन्दु नन्दवंश का महामात्य 'राक्षस' है, जिसकी चातुरी और स्वामिभक्ति से प्रभावित होकर चाणक्य चाहता है कि वह किसी प्रकार चन्द्रगुप्त का मन्त्री होना स्वीकार कर ले। कौटिल्य यह अच्छी तरह जानता है कि यदि राक्षस-जैसा राजनीति-धुरन्धर एवं स्वामिभक्त व्यक्ति चन्द्रगुप्त का मन्त्रित्व स्वीकार कर ले तो चन्द्रगुप्त का राज्य अचल हो जाय और भारत एक शक्तिशाली साम्राज्य के अधीन सुसंगठित एवं अखण्ड रूप में आ जाय। अतः इसी उद्देश्य को लेकर चाणक्य और राक्षस के बीच जो राजनैतिक चालों की चोटें चलती हैं। उन्हीं का इस नाटक के सात अंकों में रोचक चित्रण हुआ है।

प्रथम अंक में चाणक्य को अपने गुप्तचरों से पता चलता है कि कुसुमपुर में राक्षस के तीन अभिन्न अङ्ग काम कर रहे हैं—(१) क्षपणक जीवसिद्धि (जो चाणक्य का ही गुप्तचर है), (२) कायस्थ शकटदास, (३) मणिकार श्रेष्ठी चन्दनदास। इसी चन्दनदास के घर राक्षस का परिवार निहित है। चाणक्य को अपने गुप्तचर के द्वारा चन्दनदास के घर पर ही राक्षस नाम अङ्कित एक मुद्रा मिली—जिसकी सहायता से चाणक्य शकटदास से एक कूटलेख लिखवाकर मुद्रित कर देता है। यही मुद्रा या अँगूठी राक्षस के पराजय का कारण बनती है। इस नाटक के नाम का रहस्य भी इसी घटना में छिपा है।

द्वितीय अंक राक्षस की राजनीतिक बुद्धि की प्रारम्भिक पराजय का निदर्शन है। राक्षस ने अपने गुप्तचरों के द्वारा कुसुमपुर नगरी के भीतर ही चन्द्रगुप्त की हत्या की गुप्तयोजना बनाई थी। किन्तु, चाणक्य की तत्परता के कारण राक्षस की यह योजना असफल हो गयी।

तृतीय अंक में कौमुदीमहोत्सव के प्रतिषेध की नाटकीय कथा है। इसमें चन्द्रगुप्त का चाणक्य के साथ कृतक-कलह का वर्णन पाया है। चाणक्य ने जान-बूझकर राजाज्ञा का उल्लंघन कर दिया और कुछ समय के लिए राक्षस को इस संवाद से अपनी योजना फलीभूत होती दिखाई पड़ने लगी।

चतुर्थ अंक में राक्षस को अपनी योजना की सफलता का आभास मिलता है। वह पर्वतेश्वर राजकुमार मलयकेतु को नन्दों के सिंहासन पर बैठाना चाहता है। मलयकेतु अपना आभूषण उपहार में मन्त्री राक्षस को भेंट करता है।

पञ्चम अङ्क इस नाटक की गर्भसन्धि है। मुद्रित लेख और आभूषण पेटिका के साथ सिद्धार्थक पकड़ा जाता है। मलयकेतु को यह विश्वास हो जाता है कि राक्षस गुप्तरूप से चन्द्रगुप्त के साथ मिला है। इनका विरोध केवल चाणक्य से है। इसी क्रोध में वह अपने सहयोगी राजाओं की हत्या करवा देता है। इसके फलस्वरूप वह बन्दी बना लिया जाता है। इस अङ्क में चाणक्य की कूटनीति फलीभूत होती दिखाई गयी है।

षष्ठ अङ्क में राक्षस अपने मित्र चन्दनदास की टोह में पाटलिपुत्र पहुंच जाता है। यहाँ उसे चन्दनदास के प्राण संकट की सूचना एक व्यक्ति से मिलती है।

सप्तम अङ्क में चाण्डाल चन्दनदास को फांसी देने के लिए वधस्थान ले जाता है। चन्दनदास की पत्नी के आर्त्तविलाप पर उसकी सहायता के लिए राक्षस स्वयं उपस्थित हो जाता है। यहीं वह चन्द्रगुप्त का मन्त्रित्व स्वीकार करता है। इस अन्तिम अङ्क में नाटककार ने बड़ी कुशलता से कार्यान्विति का निर्वाह किया है।

मुद्राराक्षस : परम्परित दृष्टिकोण

महाकवि विशाखदत्त की अमर कृति 'मुद्राराक्षस' संस्कृत साहित्य में अपने ढंग का अकेला नाटक है। इतिहास एवं राजनीति का सुन्दर समन्वय इसकी मौलिक विशेषता है। इसमें एक ओर नन्दवंश के विनाश की काली छाया है तो दूसरी ओर चन्द्रगुप्त के राज्यारोहण की चाँदनी। कहीं राक्षस के सक्रिय विरोध के बादल हैं तो कहीं कौटिल्य की कुटिल नीति की सजगता सदर्प है। अन्त में राक्षस द्वारा चन्द्रगुप्त के प्रभुत्व की स्वीकृति है। इस नाटक में सर्वत्र साहित्य और राजनीति के विविध तत्त्वों का मणिकाञ्चन योग मिलता है। इसका कारण संभवतः विशाखदत्त का जन्म राजकुल में होना है। मुद्राराक्षस की कुछ प्रतियों के अनुसार वे महाराज भास्करदत्त के पुत्र थे और कुछ के अनुसार सामन्त वटेश्वरदत्त के पौत्र एवं महाराज पृथु के पुत्र थे।

इस नाटक के रचनाकाल के विषय में भी विद्वानों में तीव्र मतभेद है। अधिकांश विद्वान् इसे चौथी पाँचवीं शती की रचना मानते हैं, किन्तु, कुछ विद्वानों ने इसे सातवीं आठवीं शती की कृति माना है। संस्कृत साहित्य के प्रायः सभी इतिहासों में इसका विवेचन सप्रमाण उपस्थित करने की चेष्टा की गयी है।

नामकरण—दार्शनिक दृष्टि से नामों में सार्थकता का अभाव खटकता है, किन्तु, साहित्यिक दृष्टि नामों में सार्थकता मानती है। इस नामौचित्य के सम्बन्ध में 'औचित्यविचारचर्चा' में लिखा है—'नाम्ना कार्यानुरूपेण ज्ञायते गुणदोषयो' ऐसी दशा में किसी वस्तु के प्रकृत अर्थ के अनुरूप नाम चुनने में कवि की कला लक्षित होती है। प्रस्तुत अर्थ के अनुकूल नाम के सुनते ही सहृदयों के हृदय विकसित हो जाते हैं। इसी अन्वर्थकता की दृष्टि से विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' शब्द को अर्थ-गौरव के रूप में ग्रहण किया है। यह शब्द मूल पुस्तक की आत्मा की संभावनाओं को व्यक्त करता है। संभवतः इस तरह के नाम चुनने में कवि को कालिदास के 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' से भी प्रेरणा मिली हो। अस्तु—'मुद्रया परिगृहीतः राक्षसोऽत्र' यहाँ मध्यमपदलोपी बहुव्रीहि समास है, पुनः 'तदधिकृत्यकृतो ग्रन्थ' इति मुद्राराक्षसम्। यहाँ 'अधिकृत्यकृत ग्रन्थे' इस सूत्र से अणन्तरवाद नपुंसकलिङ्ग का विधान किया गया है। अतः 'मुद्राराक्षसम्' नाम की सुप्रयुक्तता स्पष्ट है। समग्र ग्रंथ में नाम की अन्वर्थक क्षमता व्याप्त है। इस नामकरण की आधारभूत घटना यह है कि अपनी ही मुद्रा को अपने विरुद्ध प्रयुक्त होते हुए देखकर राक्षस विवश हो जाता है।

कथानक—इसमें चन्द्रगुप्त के राज्यारोहण के पश्चात् चाणक्य द्वारा राक्षस को राजनीतिक चालों को विफल कर देने की प्रसिद्ध ऐतिहासिक कथा को सात अङ्कों में अत्यन्त सुचारुरूप से व्यक्त किया गया है। इस नाटक की मौलिक विशेषता यह है कि इसमें प्रणय चित्रण की स्वल्पित थिगली नहीं लगायी गयी है। सर्वत्र राजनीतिक षड्यन्त्र का, कूटनीतिक दाव पेंच का निर्वाह कथावस्तु में दृढ निर्बन्धनात्मक व्यापार से नियन्त्रित है। प्रणय की मधुरिमा, नृत्य के पद विक्षेप तथा संगीत की तान भले न सुनाई पड़े, किन्तु वस्तुयोजना इतनी सशक्त, गम्भीर एवं स्पष्ट है कि नाटकीय गत्यात्मकता कहीं भी शिथिल नहीं प्रतीत होती। नाटक की समस्त घटनाएँ एक ही लक्ष्य की ओर अभिमुख हैं।

इस नाटक की कथावस्तु की एक और मुख्य विशेषता है, नारी-पात्रों का अभाव। चन्द्रगुप्त और मलयकेतु की मनोहारी शोभायात्रा और विजया को छोड़कर, सम्पूर्ण नाटक में प्रेम और कर्तव्य की पृष्ठभूमि में, कठोर कर्तव्य और आत्मत्याग की भावना से अनुप्रेरित सेठ चन्दनदास की पत्नी, रंगमंच पर क्षणभर के लिए उपस्थित होती है। साकार करुणा की मूर्तिवती किसी नैराश्य की भावना से प्रेरित होकर नहीं, प्रत्युत नारी के सद्धर्म के निर्वाह के लिए ही। फिर भी नाटकीय व्यापार की अन्विति का जो सुगठित रूप इसमें दृष्टिगोचर होता है; वह संस्कृत साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। इसकी इसी निजी मौलिकता के कारण कुछ संस्कृत के विद्वानों का यह आक्षेप है कि इसकी कथावस्तु का सविधान संस्कृत नाटकों की परम्परा से भिन्न है। किन्तु, विशाखदत्त को संस्कृत के अन्य नाटककारों का अपेक्षा इसका ज्ञान अधिक था। क्योंकि स्वयं उन्होंने चतुर्थ अङ्क में राक्षस के मुख से यह कहवाकर स्थिति को साफ कर दिया है :—

> 'कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयंस्तस्य विस्तारमिच्छन्,
> बीजानां गर्भितानां फलमतिगहनं गूढमुद्भेदयंश्च।
> कुर्वन् बुद्ध्या विमर्शं प्रसृतमपि पुनः संहरन् कार्यजातं
> कर्ता वा नाटकानामिममनुभवति क्लेशमस्मद्विधो वा ॥' ४।३

—मेरे जैसे आदमी की अवस्था सचमुच एक नाटककार की तरह रहती है। छोटे छोटे कार्य का बीजरूप में अर्थात् मुखसन्धि में एक नाटककार सर्वप्रथम उपक्षेप करता है। फिर प्रतिमुख-सन्धि में उसका विस्तार करना चाहता है इसके बाद वह गर्भसन्धि में नाटकीय कथावस्तु के कार्य-बीजों के छिपे हुए गम्भीर फल को प्रकट करना चाहता है। फिर अपनी बुद्धि से विमर्श का रचना कर फैले हुए व्यापारों को समेट कर उपसंहार करता है।

कथानक में चाणक्य की कुटिल नीति का वर्णन होने से इसका स्वरूप यद्यपि अत्यन्त जटिल है, फिर भी विशाखदत्त ने इसे पूर्णतः सुसम्बन्धित रखने में अपनी अद्भुत क्षमता प्रदर्शित की है। इस नाटक में कार्यावस्थाओं, अर्थप्रकृतियों और सन्धियों का नाट्यशास्त्रविहित प्रयोग हुआ है, जिसका विवेचन क्रमशः द्रष्टव्य है :—

कार्यावस्थाएँ—भारतीय आचार्यों ने नाटक में कथाविकास की पाँच अवस्थायें मानी हैं। दशरूपककार धनञ्जय ने लिखा है :—

> "अवस्थाः पञ्च कार्यस्य प्रारब्धस्य फलार्थिभिः।
> आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमाः ॥" द० रू० १।१९

—फल की इच्छावाले नायकादि के द्वारा प्रारब्ध कार्य की पाँच अवस्थायें होती हैं। आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति तथा फलागम।

कार्य की ये पाँचों अवस्थायें नायक की मनोदशा की दृष्टि से कथावस्तु का मनोवैज्ञानिक विभाजन हैं। इन पाँचों के नामानुसार धनञ्जयन ने सब की अलग अलग परिभाषाएँ दी हैं। 'आरम्भ' के सम्बन्ध में उनकी परिभाषा है :—

"औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे।"

अर्थात् अत्यन्तफललाभ की उत्सुकतामात्र ही आरम्भ है।

किसी भी फल की प्राप्ति के लिए नायक में प्रबल इच्छा पायी जाती है तथा इस इच्छा के प्रति *पूर्ण उत्सुकता होती है। यह उत्सुकता मात्र ही आरम्भ है।* 'मैं इसे करूँ' मात्र इतनी-सी चेष्टा ही आरम्भ है। शर्त इतनी ही कि किसी भी नाटक का यह आरम्भ रुचिर और सुनियोजित होना चाहिए, क्योंकि नाटक की परवर्त्ती घटनाओं की सफलता इसी पर निर्भर करती है। मुद्राराक्षस में निपुणक द्वारा चाणक्य को राक्षस की मुद्रा देने तक की कथा 'प्रारम्भ' के अन्तर्गत आती है। 'प्रयत्न' के विषय में धनञ्जय का का विचार है :—

"प्रयत्नस्तु तदप्राप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः।"

अर्थात् फल की अप्राप्ति की स्थिति में उसकी उपलब्धि के लिये योजना युक्त तीव्र व्यापार या चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं।

'प्रयत्न' के अन्तर्गत नायक अपनी अभीप्सित वस्तु को प्राप्त करने के व्यापार में सलग्न रहते हैं। *'मुद्राराक्षस' में निम्नलिखित घटनाओं को प्रयत्न के अन्तर्गत* समावेश किया जा सकता है। चाणक्य द्वारा राक्षस और मलयकेतु में विग्रह कराने की चेष्टा, शकटदास को सूली देने का मिथ्या आयोजन, सिद्धार्थक द्वारा राक्षस का विश्वासपात्र बन कर उसे धोखा देना। इसी प्रकार 'प्राप्त्याशा' के सम्बन्ध में दशरूपककार का कथन है :—

"उपायापायशङ्काभ्या प्राप्त्याशाप्राप्तिसंभवः।"

—जहाँ उपाय तथा विघ्न की आशका के कारण फलप्राप्ति के विषय में कोई एकान्तिक निश्चय नहीं हो पाता, फलप्राप्ति की सम्भावना उपाय और विघ्नाश दोनों में दोलायमान रहती है, वहाँ प्राप्त्याशा नामक अवस्था होती है।

इस प्राप्त्याशा की योजना के लिए नाट्यकार ने चन्द्रगुप्त और चाणक्य के छद्म विरोध, राक्षस द्वारा कुसुमपुर पर आक्रमण की योजना आदि घटनाओं द्वारा राक्षस का उत्कर्ष वर्णित किया है, किन्तु साथ ही कूटनीतिज्ञ चाणक्य की योजनाओं का भी वर्णन हुआ है। 'नियताप्ति' के सम्बन्ध में इनका कथन है :—

"अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिः सुनिश्चिता।"

—जब विघ्न के अभाव के कारण फल की प्राप्ति निश्चित हो जाती है तो नियताप्ति नामक अवस्था होती है।

हम देख चुके हैं कि प्राप्त्याशा में फलप्राप्ति के बाद नायक का मानस सन्देह से विचलित रहता है। किन्तु नियताप्ति में प्राप्ति निश्चित हो जाती है। नायक का मन किसी एक प्राप्ति पर निश्चित सा हो जाता है और एकान्त निश्चय के बाद फलप्राप्ति भी निश्चित हो जाती है। भारतीय नाट्यशास्त्र की कसौटी पर पाश्चात्य ढग के दुखान्त नाटकों की मीमांसा करने पर 'फलप्राप्ति नहीं होगी' इस निश्चय की दशा में नियताप्ति मानी जा सकेगी। किन्तु,

नियताप्ति शब्द की व्युत्पत्ति भी पूर्वोक्त कार्यों के ही अनुरूप है। मुद्राराक्षस में चाणक्य द्वारा राक्षस और मलयकेतु में विग्रह करा देने और राक्षस की योजनाओं को विफल कर देने की घटनाएँ नियताप्ति के अन्तर्गत आती हैं। 'फलागम' के सम्बन्ध में धनञ्जय का कथन है :—

"समग्रफलसम्पत्तिः फलयोगो यथोदितः।"

—समस्त फल की प्राप्ति हो जाने पर फलागम कहलाता है।

इस लक्षण में फल के साथ 'समस्त' विशेषण प्रयुक्त हुआ है। इसका तात्पर्य यह कि जब तक फल अधूरा है तब तक उसे नियताप्ति ही कहा जायेगा। मुद्राराक्षस के छठे-सातवें अङ्कों में फलागम की सिद्धि के लिए राक्षस के आत्मसमर्पण की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा चन्द्रगुप्त के अमात्य पद की स्वीकृति का उल्लेख हुआ है। उक्त अवस्थाओं का नियमन नाटककार ने इतनी सजगता और स्वच्छता से किया है कि ऐसा बहुत कम नाटकों में मिलता है।

अर्थप्रकृतियाँ— "बीजबिन्दुपताकाख्यप्रकरीकार्यलक्षणाः।

अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एताः परिकीर्तिताः॥"

—किसी भी रूपक में बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य ये पाँच अर्थ प्रकृतियाँ हैं। अर्थप्रकृति से तात्पर्य उन तत्त्वों से है जो प्रयोजनसिद्धि के कारण होते हैं।

अर्थप्रकृतियाँ नाटकीय कथावस्तु का औपादानिक विभाजन (Physical division) हैं। इनमें से पताका (मुख्य प्रासंगिक कथा) और प्रकरी (गौण प्रासंगिक कथा) का आधिकारिक कथा के साथ सन्तुलित निर्वाह अत्यन्त आवश्यक है। मुद्राराक्षस में चाणक्य द्वारा राक्षस को अपने पक्ष में मिलाने का निश्चय कथावस्तु का 'बीज' है, जिसकी अभिव्यक्ति प्रथम अङ्क में चाणक्य की इस उक्ति में हुई है :—

"अथवा अगृहीते राक्षसे किमुत्खातं नन्दवंशस्य किंवा स्थैर्यमुत्पादितं चन्द्रगुप्तलक्ष्म्याः ... तदभियोगं प्रति निरुद्योगः स्थातुमुचितमस्माभिः।"

चाणक्य गुप्तचर प्रणिधि का मलयकेतु के आश्रय में चले जाना 'बीजन्यास' अथवा बीज का आरम्भ है। 'बिन्दु' के अन्तर्गत इन घटनाओं की गणना की जा सकती है—निपुणक द्वारा चाणक्य को राक्षस की मुद्रा देना, शकटदास से पत्र लिखवाना, चाणक्य द्वारा चन्दनदास को बन्दी बनाने की आज्ञा देना। नाटक की फलसिद्धि में सिद्धार्थक और भागुरायण द्वारा किये गये प्रयत्न 'पताका' के अन्तर्गत गण्य हैं। 'प्रकरी' का आयोजन मुद्राराक्षस के तृतीय अङ्क के अन्त में और चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में किया गया है—चाणक्य और चन्द्रगुप्त का मिथ्या कलह और राक्षस तक इसकी सूचना पहुँचाना इसका उदाहरण है। राक्षस द्वारा चन्द्रगुप्त का मन्त्रित्व स्वीकार करके आत्मसमर्पण कर देना 'कार्य' नामक अर्थप्रकृति है। अवस्थाओं के अन्तर्गत इसे फलागम हम निर्विवादरूप से स्वीकृत कर सकते हैं।

सन्धियाँ— "अर्थप्रकृतयः पञ्च पञ्चावस्था समन्विताः।
यथासंख्येन जायन्ते मुखाद्याः पञ्चसन्धयः॥
अन्तरैकार्थसम्बन्धः सन्धिरेकान्वये सति।
मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः॥" द० रू० १।२२

किसी एक प्रयोजन से परस्पर सम्बद्ध कथाशों को जब किसी दूसरे एक प्रयोजन से अन्वित किया जाय, तो वह सम्बन्ध सन्धि कहलाता है। एक ओर कथाशों का सम्बन्ध अर्थप्रकृति के रूप में कार्य से है, तो दूसरी ओर अवस्था के रूप में फलागम से दोनों को सबद्ध करने पर सन्धि हो जाता है। ये सन्धियाँ—मुख, प्रतिमुख, गर्भ अवमर्श या विमर्श तथा उपसहृति है। नाट्यशास्त्र म भरत ने यद्यपि इसका स्पष्टीकरण नहीं किया है (ना० शा० २१,३६,) किन्तु, विश्वनाथ ने अपने साहित्यदर्पण में इस मत का पुष्टि की है —

"यथासख्यमवस्थाभिराभिर्योगात्तु पञ्चभि ।
पञ्चधैवेति वृत्तस्य भागा स्यु पञ्च सन्धय ॥" सा० द० ६, ७४

इन्हीं अवस्थाओं और अर्थप्रकृतियों को ध्यान में रखते हुए आधिकारिक कथा और प्रासगिक कथाओं में समन्वय स्थापित कर इस नाटक में नाट्यसन्धियों की व्यवस्था की गयी है। चाणक्य की मुद्रा प्राप्ति तक की कथा इस सन्धि के अन्तर्गत आती है। 'प्रयत्न' और 'बिन्दु' के सहयोग से निर्मित 'प्रतिमुखसन्धि' में कथानक को फल की ओर अग्रसर करने वाले प्रत्यक्ष परोक्ष साधनों का वर्णन रहता है। मुद्राराक्ष के प्रथम अक में चाणक्य की योजना शकटदास से पत्र लिखवाकर सिद्धार्थक को कार्यसिद्धि के लिए भेजना और चन्दनदास को ब दी बनाने की प्रस्तुती इसी सन्धि के अन्तर्गत की गयी है। गर्भसन्धि अर्थात् पताका और प्राप्त्याशा के योग में 'बीज' की सफलता के सदिग्ध रहने पर और पुन उसके विकास की आशा होने का चित्रण रहता है। राक्षस की कूटनीति के फलस्वरूप चन्द्रगुप्त की राज्यलक्ष्मी का स्थिर न होना 'बीज' की अस्थिरता का सूचक है, किन्तु विराधगुप्त द्वारा राक्षस को उसके उपायों की विफलता की सूचना देने से चाणक्य नीति की विजय की पुन आशा होती है। मुद्राराक्षस के तृतीय और चतुर्थ अकों में प्रकरी और नियताप्ति के सयोग से 'विमर्शसन्धि' की योजना की गयी है। इसके अन्तर्गत सफलता के मार्ग में आने वाले विघ्नों का वर्णन रहता है। चाणक्य पक्ष में चन्द्रगुप्त और चाणक्य का विग्रह—जो मिथ्या होने पर भी सत्य में परिणत हो सकता है, और राक्षस पक्ष में भागुरायण द्वारा मलयकेतु के मन में राक्षस के प्रति सन्देह उत्पन्न करना इसके उदाहरण हैं। इस नाटक के अतिम तीन अकों में—'कार्य और फलागम' के सयोग से निर्वहण सन्धि की योजना की गयी है, जिसके अन्तर्गत घटना क्रम क्रमश उपसहार की ओर उन्मुख रहा है। राक्षस द्वारा चन्द्रगुप्त का मन्त्रित्व स्वीकार करना इस सन्धि की सफल परिणति है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मुद्राराक्षस की कथावस्तु की योजना नाट्यशास्त्रानुसार ही है।

कथागत अन्य विशेषताएँ

सस्कृत नाट्यशास्त्र के अनुसार कथावस्तु तीन प्रकार की होती है —ऐतिहासिक (प्रख्यात), काल्पनिक (उत्पाद्य) और मिश्र। अरस्तू ने भी प्राय तीन प्रकार के कथानक का सकेत किया है। दन्तकथामूलक, कल्पनामूलक और इतिहासमूलक। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि से प्रसिद्ध में पुराण, दन्तकथाओं और इतिहास का अन्तर्भाव है और उत्पाद्य कथा काल्पनिक सृष्टि होती है। नाटक के लिए अनुशासन विधि से कथानक का निश्चित विधान प्रख्यात रूप में ही होना चाहिए। उत्पाद्य त्याज्य नहीं है, किन्तु, विधान की दृष्टि से अधिक काम्य प्रसिद्ध है। क्योंकि प्रसिद्ध या ख्यात कथावस्तु में सौन्दर्य का आधान व्यवस्था पर निर्भर रहती है।

मुद्राराक्षस का कथानक ऐतिहासिक अर्थात् प्रख्यात है। इस नाटक में घटना-नियोजन और चरित्र चित्रण पर एक जैसा बल दिया गया है, अत इनमें से एक किसी को प्रमुख मानना असगत

होगा। अरस्तू ने कथावस्तु का आधारभूत गुण एकान्विति को माना है। यहाँ भी अरस्तू का तात्पर्य एकान्विति से यह नहीं है कि उसमें एक ही व्यक्ति की कथा हो। पर, एक व्यक्ति की कथा में भी अनेकता तथा अन्विति का अभाव हो सकता है। वस्तुत: कथानक के ऐक्य का अर्थ है—कार्य का ऐक्य। अर्थात् उसमें ऐसी घटनाएँ नहीं होनी चाहिए जिनमें परस्पर कोई आवश्यक या सम्भाव्य सम्बन्ध न हो। क्योंकि ऐसी वस्तु—जिनके होने और न होने से कोई प्रत्यक्ष अन्तर नहीं होता, किसी पूर्ण इकाई का महत्व अंग नहीं हो सकता। मुद्राराक्षस के कथानक का प्रत्येक प्रकरण अन्य प्रकरणों से सम्बद्ध तथा अन्त में प्रधान कार्य का उपकारक है। यही इस नाटक की अन्विति का रहस्य है। इसमें घटनानियोजन और चरित्र चित्रण पर एक जैसा बल दिया गया है। अत: इसमें किसी एक को प्रमुख मानना असंगत होगा।

प्रारम्भ में लेखक ने प्रस्तावना। नाटक के प्रारम्भ में सूत्रधारकी उक्तियाँ / में उद्घात्यक नामक भेद का प्रयोग किया है। भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार प्रस्तावना के पाँच भेद माने गये हैं। यथा-उद्घात्यक, कथोद्घात, प्रयोगातिशय, प्रवर्तक और अवगलित। इसका आरम्भ पूर्णता से भरपूर है। जिज्ञासा का परितोष पूर्णता का मूलतत्त्व है। मुद्राराक्षस की पूर्णता में जिज्ञासा की क्रमिक पूर्ति का अनिवार्यतः व्यवस्था की गया है। क्योंकि इसमें चाणक्य ने सूत्रधार द्वारा प्रयुक्त चन्द्रादि पदों का ग्रहण पक्ष में अर्थ न लेकर चन्द्रगुप्त पक्ष में अर्थ लेकर रंगमंच पर प्रवेश किया है।

कथावस्तु के दो भेद होते हैं—सूच्य और दृश्य श्रव्य। मुद्राराक्षस में सूच्य है। कथावस्तु को व्यक्त करने के लिये अर्थोपक्षेपकों में से विष्कम्भक का प्रयोग नहीं किया गया है। चूलिका अर्थात् नेपथ्य को इसके लिए प्रचुर स्थान दिया गया है और अंकास्य का योजना नहीं की गयी है। अंकावतार की योजना सातवें अंक में हुई है। क्योंकि इसमें षष्ठ अंक में प्रस्तावित कथानक को ही अवतरित किया है। पाँचवें और छठे अंकों के आरम्भ में लेखक ने प्रवेशक की योजना की है। इस योजना में विशाखदत्त ने नाटक के आस्वाद के मर्म को छू लिया है। कथा का आस्वाद कुतूहल पर आश्रित रहता है और कुतूहल का आधार है आकस्मिकता। मुद्राराक्षस की प्रत्येक घटना की आकस्मिकता के पीछे प्रच्छन्न रूप से कार्यकारण की पूर्वापरता है। इतना ही नहीं, हमको हर घटना में संयोग के साथ प्रयोजन का भी आभास मिलता है। इसके हर छिद्र में कल का अस्तित्व प्रतीत होता है। यही विरोधाभास इस कथा का रहस्य है। हमको हर अप्रत्याशित राजनीतिक घटना की आकस्मिक उपस्थिति पर इन सबकी प्रत्युत्पन्न मतिजनित चमत्कारिता से विस्मय का अनुभव करते हैं किन्तु, शीघ्र ही हमको यह प्रतीति हो जाती है कि इस आकस्मिकता के पीछे भी कौटिल्य की नीति श्रृंखला का आधार वर्त्तमान है। इसके संयोग में भी प्रयोजन विद्यमान है। इस प्रकार एक ओर तो हमारा विस्मयभाव द्विगुणित हो जाता है और दूसरी ओर औचित्य की भावना भी परितुष्ट हो जाती है। राजनीतिक धरातल पर औचित्य भावना यह सविस्मय परितोष ही वास्तव में मुद्राराक्षस का सौन्दर्य है, जिसका विशाखदत्त ने अपनी अन्तर्दर्शी प्रतिभा के द्वारा अत्यन्त निभ्रान्त रूप से उद्घाटन किया है।

प्रस्तुत नाटक में कथावस्तु की अभिव्यक्ति सर्वश्राव्य रूप में दी हुई है, अश्राव्य अर्थात् स्वगत भाषण की योजना भी व्यापकरूप में की गई है। इसके अतिरिक्त नाटककार ने 'आकाश-भाषित' की भी अनेक स्थलों में योजना की है। जनान्तिक तथा अपवारित की उक्ति भी इसी प्रकार की है। अतः यह स्पष्ट है कि मुद्राराक्षस की कथावस्तु को शास्त्रीय लक्षणों के अनुसार प्रस्तुत किया गया है और कथानक में हर दृष्टि से रोचकता का निर्वाह किया गया है।

चरित्र चित्रण

नाटक में कथावस्तु के बाद दूसरा स्थान है चरित्र चित्रण का। चरित्र चित्रण का मूल आधार है पात्रों का चारित्र्य चारित्र्य ही किसी व्यक्ति का रुचि अरुचि का प्रदर्शन करता हुआ उसके नैतिक प्रयोजन को अभिव्यक्त करता है। इस 'चारित्र्य' शब्द के वास्तविक अर्थ के विषय में पश्चिमी आलोचकों में बड़ा मतभेद रहा है[1] एक ओर बोसा के आदितत्ववेत्ताओं की धारणा है कि चारित्र्य का अर्थ 'वर्गगत सामान्य' है, अर्थात् वह केवल व्यक्ति का भद्रता अभद्रता का द्योतन करता है। उधर, प्रो० बुचर का मत है कि इसमें व्यक्ति के नैतिक गुण दोष पर अवश्य बल है, किंतु, साथ ही व्यक्तिवैशिष्ट्य का अभाव नहीं है। चरित्र का वह अतिवैयक्तिक रूप जो शेक्सपीयर या वैवर की रचनाओं में उपलब्ध होता है—अरस्तू की परिभाषा उसे छोड़ जाती है। किन्तु, अरस्तू की परिभाषा भी विशिष्ट व्यक्तित्व का द्योतन इस सम्बन्ध में अवश्य करती है—व्यक्तित्व की निविडताएँ चाहे उसमें अन्तर्भूत न हों किन्तु सरल और सामान्य भेदक विशेषताओं का उसमें अभाव नहीं है।[1] मुद्राराक्षस में घटनाजाल की भाँति चरित्र भी बहुसंख्यक हैं, किन्तु, इसकी एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इसमें स्त्री पात्र नहीं सी है। चन्दनदास की पत्नी अपवाद स्वरूप है। यद्यपि राजलक्ष्मी को अमूर्त नायिका माना जा सकता है, किन्तु यह कल्पनागत दुराग्रह का उदाहरण होगा। इसमें मुख्य रूप से चन्द्रगुप्त, चाणक्य, राक्षस और मलयकेतु का चरित्रांकन हुआ है। अन्य पात्र गौण हैं। फिर भी इन पात्रों में कोई भी निरुद्देश्य चित्रित किया हुआ नहीं दिखाई पड़ता। प्रत्येक पात्र अपने आपमें पूर्ण है और नाटक का दृष्टि से उसके चरित्र का जितना विकास अपेक्षित है, हुआ है। सभी पात्र गुण-दोषों के मिश्रण हैं। ये छोटे २ पात्र भी अपने आपमें पूर्ण सशक्त हैं। नाटक के चित्रकार की तूलिका ने इन सबों में भी समानरूप से जीवनरस भरा है। सभी अपने आप में स्पष्ट एवं यथार्थ हैं। इन पात्रों के चित्रण में विशाखदत्त की अपनी शैली है। प्रत्येक पात्र का व्यक्तित्व स्वतन्त्र है, उद्देश्य से प्रेरित है—वल्गित होकर भी कृत्रिम प्रतीत नहीं होते। इसके चरित चित्रण की एक और विशेषता यह है कि सभी पात्र इस तुलनात्मक ढग से चित्रित हुए हैं कि उनकी विशेषताएँ अपने आप स्पष्ट हो जाती हैं। चाणक्य और राक्षस—एक स्थिरचित्त, जागरूक, कठोर, नीति निपुण एवं कभी न झुकने वाला है, तो दूसरा—अस्थिरचित्त, विस्मरणशील, उदार हृदय, सज्जन और अन्त में झुक जाने वाला है। इसी प्रकार चन्द्रगुप्त और मलयकेतु, भागुरायण और सिद्धार्थक, निपुणक और विराधगुप्त, वैहिनरि और जाजलि आदि पात्रों का विरोधी किन्तु सुन्दर तुलनात्मक चित्रण है।

अगर सच पूछा जाय तो चरित चित्रण की दृष्टि से यह नाटक संस्कृत साहित्य में एकदम अकेला है। मुद्राराक्षस के चरित्रों के विकास को विशाखदत्त ने मौलिक रूप से बढ़ाने का सफल प्रयास किया है। अन्य विशेषताओं को छोड़कर यदि इस नाटक के चरित्रों पर ही सूक्ष्म पर्यालोचन किया जाय तो इसकी उपयुक्त विशिष्टता झलक उठेगी। इसके सभी पात्र द्वन्द्वरूप से चित्रित हैं। प्रत्येक पात्र के चरित्र का विकास प्रतिद्वन्द्व की पृष्ठभूमि पर विरोध और संघर्ष में हुआ है। चाणक्य और राक्षस, चन्द्रगुप्त और मलयकेतु—एक दूसरे के भयंकर प्रतिद्वन्द्वी के रूप में चित्रित हुये हैं। इनका चारित्रिक परस्पर के संघर्ष पर ही आश्रित है। यदि चाणक्य नंद वंश का भयंकर शत्रु है तो राक्षस नन्दवंश का अनन्य भक्त। चन्द्रगुप्त जिस अंश तक चाणक्य

---

१ एरिस्टोटिल्स थियरी आफ पोइट्री एण्ड फ इन आर्टस, पृ० ३१६।

का अनन्य एवं अन्तरंग है, अतः अनुराग में मलयकेतु राक्षस पर संदेह करने वाला अनुमानी है। चाणक्य और राक्षस का पारस्परिक कलह कामिनी और कांचन जैसे तुच्छ नैतिक पदार्थों के लिए नहीं होता, प्रत्युत वे दोनों ही महान् आदर्शों के लिए एक दूसरे के साथ संघर्षरत हैं। चाणक्य का आदर्श था—"एक जङ्गली हाथी के समान इस प्रकार मनमाना करने वाले, निरङ्कुश, राजविप्लव के लिए बल का आश्रय करने वाले और मैत्रीमद से उन्मत्त होकर अनिष्ट करने वाले राक्षस को बुद्धि से पकड़कर चन्द्रगुप्त की सेना में अभिनियुक्त करके ही दम लूँगा। १।२७। और नन्दभक्त राक्षस के सामने आदर्श था—"दैवः सर्वगतोऽपि शत्रुवधेनाराधित न्यायैति।"—विवेचन की स्पष्टता के लिए हम पर हम क्रमशः विचार करते हैं :—

नायक

भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार किसी भी अभिनय के कथावस्तु, नायक तथा रस ये तीन प्रमुख तत्त्व हैं। किसी भी रूपक की आलोचना इन्हीं तीन तत्त्वों के आधार पर की जाती है। पाश्चात्य पद्धति कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल, शैली तथा उद्देश्य इन छः तत्त्वों को मानती है और इन तत्त्वों के अतिरिक्त नायक को सुदीर्घ तत्त्व मानती है। भारतीय पद्धति के अनुसार कथित तीन तत्त्वों के भीतर ही पश्चिम के सभी तत्त्व समाहित हो जाते हैं। दशरूपककार धनञ्जय ने नायक के सम्बन्ध में लिखा है :—

"नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः।
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढवंशः स्थिरो युवा।" दश० २।१

तात्पर्य यह कि नेता—विनम्र, मधुर, त्यागी, चतुर एवं प्रियवादी जैसे अनेक विशेषणों से विभूषित होता है। धनञ्जय की दृष्टि में ये नायक चार प्रकार के होते हैं :—

'भेदैश्चतुर्धा ललितशान्तोदात्तोद्धतैरयम्।'

अर्थात् कोमल, शान्तचित्त एवं कलाप्रेमी नायक धीर ललित है। गम्भीर, क्षमावान्, स्थिरचित्त, अहङ्कार शून्य, विनयी एवं दृढ़व्रती नायक धीरोदात्त है। सामान्य गुणयुक्त ब्राह्मणादि नायक धीर शान्त कहाते हैं। ईर्ष्यालु, अभिमानी, चञ्चल, क्रोधी, दर्प एवं आत्मश्लाघक व्यक्ति धीरोद्धत नायक माने गये हैं। इन कतिपय गुणों के अतिरिक्त नायक की परीक्षा के लिए कुछ अन्य कसौटियाँ इस प्रकार हैं :—

(१) नायक शब्द की व्युत्पत्ति 'नी' ले जाने धातु से है, जिसका अर्थ—'ले जाना' होता है अर्थात् वह प्रमुख नाटकीय पात्र—जो नाटक की कथा के विभिन्न सूत्रों को एकसूत्रता में आबद्ध करके अन्तिम उद्देश्य तक ले जाय।

(२) वह प्रधान पात्र जिसकी उपस्थिति कथा के आदि से अन्त तक हो।

(३) अङ्गी रस का प्रधान आश्रय हो।

(४) अभिनय के समस्त क्रिया-व्यापार का प्रवर्तक हो।

(५) अभिनय के चरम फल का उपभोक्ता हो।

(६) उसके व्यक्तित्व का प्रभाव नाटक के अन्य पात्रों पर हो।

(७) जिसके व्यक्तित्व से नाटक की हर घटना सम्बद्ध हो।

अब प्रश्न उठता है कि मुद्राराक्षस का नायक कौन है। चाणक्य, चन्द्रगुप्त अथवा राक्षस— इस विषय पर विद्वान् आलोचक एकमत नहीं हैं। इन तीनों को ही नायक मानने के विषय में पक्ष विपक्ष में तर्क दिये जाते हैं। इसका कारण विशाखदत्त की अनूठी प्रतिमा है। यह कहना अनर्गल न होगा कि संस्कृत नाट्य साहित्य के विशाखदत्त अकेले कवि हैं, जिन्होंने अपने कविकर्म के प्रति अत्यन्त सचेतन रूप से प्रमाणिक रहे हैं और साथ ही जिसने युग के बदलते हुए मूल्यों को सहेजा है। इन तीनों पर हम क्रमशः विचार करते हैं —

मुद्राराक्षस का नायक : चाणक्य

'मुद्राराक्षस' में चाणक्य सर्वाधिक क्रियाशील पात्र है। इसकी विचारधारा चन्द्रगुप्त के व्यक्तित्व पर आच्छादित है। वह अपने प्रतिद्वन्द्वी राक्षस के साथ राजनीतिक घात प्रतिघात में भाग लेकर नाट्यवस्तु का पोषण करता है। इसका ना क के रंगमंच पर सर्वप्रथम नंदवंश विनाश के लिए एक दृढ़प्रतिज्ञ ब्राह्मण के रूप में उदय हुआ है। नाटक के अन्त में भी इसने राक्षस को अपने पक्ष में करके प्रतिज्ञा का सफल निर्वाह किया है। यह व्यवहारकुशल, शास्त्र ज्ञानी तथा राजनीति विशारद ब्राह्मण है। शास्त्रीय दृष्टि से यह 'धीरोदात्त' नायक है। इसके व्यक्तित्व में धीर, शान्त एवं धीरोद्धत का मिश्रण है।

"सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिक।" दश० पृ० ८०

"धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थन।" दश० २।५

यह महान् चरित विशाखदत्त की महती कल्पना है। मुद्राराक्षस की तो बात ही क्या? संस्कृत नाट्य साहित्य के प्रायः सभी नायकों में सर्वाधिक प्रभावोत्पादक यह चरित्र है। इस नाटक के सम्पूर्ण घटनाचक्र का एकमात्र नियन्ता चाणक्य ही है। अर्थशास्त्र और प्राचीन कथा परम्परा का चाणक्य भले ही एक महत्त्वाकांक्षी महाक्रोधी या महानीतिज्ञ ब्राह्मण रहा हो, किन्तु विशाखदत्त का चाणक्य निरीहता, निःस्वार्थमयता और लोकसंग्रह की महती भावना का महान् चरित है। 'निरीहाणामीशस्तृणमिव तिरस्कारविषय' (मुद्रा० ३।१६)। वह लोकोत्तर राजनीतिज्ञ है। उसकी सारी कर्तव्य बुद्धि मौर्य साम्राज्य की दृढ़ सम्पन्नता के लिए सचालित है। वह मौर्य चन्द्रगुप्त का अभेद्य कवच है। अपने आश्रितों का आधारस्तम्भ है। उसका तेजस्वी व्यक्तित्व चाणक्य के पराभव से तमतमा उठता है—"आ क एष मयि स्थिते चन्द्रमभिभवितुमिच्छति?" (मुद्रा०प्र०अङ्क)। वह भावुक और भाग्यवादी नहीं होकर परम पुरुषार्थी है। अपने अनन्यासक्त अनुचरों पर भी अखण्ड विश्वास न कर उसे अपनी प्रखर बुद्धि पर दृढ़ आस्था है —

"एका केवलमर्थसाधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका।
नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मागान्मम॥" मु० १।२६

चाणक्य की यह उक्ति ही उसके समग्र व्यक्तित्व का आकलन है। उसकी सम्मति में मूर्ख व्यक्ति ही दैव में विश्वास करते हैं—'दैवमविद्वान्स प्रमाणयन्ति' (मु० तृ० अङ्क)। कौटिल्य का अर्थशास्त्र गुप्तचरों और गूढ़ प्रणिधियों के सम्बन्ध में जिन शास्त्रीय सिद्धान्तों का उल्लेख किया है, मुद्राराक्षस साम्राज्यवाद के इन देवदूतों की व्यावहारिक रूपरेखा तैयार कर देता है। शार्ङ्गरव शिष्य रूप में, जीवसिद्धि तापस रूप में तथा सिद्धार्थक कर्मकर रूप में चाणक्य की विभिन्न भावनाओं के प्रतिरूप हैं। चाणक्य प्रतिहिंसा और प्रतिशोध का अवतार है। वह अपने शत्रुओं के अपराध को क्षणभर के लिए भी सह्य नहीं करता। प्रतिपक्षियों के नाम की चर्चा आते ही

वह क्रोध से तिलमिला उठता है। वह अपने शत्रुओं की निन्दामात्र करने में अपनी शक्ति का ह्रास नहीं करना चाहता। अपने शत्रुओं के प्रति अत्यन्त उग्र एवं क्रूर होता हुआ भी वह राक्षस के गुणों का प्रशंसक है। उसकी दृष्टि में राक्षस एक स्वामिभक्त, बुद्धिमान्, साहसी एवं सुदक्ष मन्त्री है। इसी गुणग्राहिता के कारण वह राक्षस के गुणों का प्रशंसक भी है। उसकी दक्षता को जितना चाणक्य समझता है, सम्भवतः राक्षस स्वयं भी अपने गुणों को उतना अधिक नहीं समझता। तभी तो वह कहता है—'अत एव अस्माकं त्वयि महान् यत्नः'।

चाणक्य स्पष्ट मस्तिष्कवाला, आत्मविश्वासी, दृढ़प्रतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, कठोर राजनीतिनिपुण एवं सर्वोत्तम अपने लक्ष्य तक पहुँचनेवाला व्यक्ति है। कर्तव्य की वेदी पर अपने मन की सारी मधुर भावनाओं की आहुति चढ़ानेवाला यह चरित्र इस नाटक में प्रत्यक्ष धैर्य की मूर्ति है। इसका व्यक्तित्व निरंतर आत्मनिरीक्षण में संलग्न है—'चाणक्यः खलु कौटिल्यः' (तृ० अ०)। लोकहित के लिए आत्मशुद्धि की भावना से भरा यह चरित्र एक स्वतन्त्र नायक चरित्र है। इसके नीतिकौशल की सराहना चन्द्रगुप्त के कञ्चुकी, भागुरायण, सिद्धार्थक आदि स्वपक्ष के पात्रों ने तो की ही है, परपक्ष के राक्षस, चन्दनदास आदि पात्र भी उसके बुद्धिबल से अभिभूत हैं। मुद्राराक्षस का चाणक्य बल प्रयोग की अपेक्षा हृदय परिवर्तन पर अधिक विश्वास रखता है। रक्तपात के बाद शत्रु पर विजय पाने की अपेक्षा अपने निस्वार्थ व्यक्तित्व से उसे अभिभूत करने की क्षमता रखता है। चाणक्य मूर्तिमान आत्मविश्वास है। उसका अन्तर्बल, उसकी आत्मप्रेरणा अपने आगे किसी प्रबल शक्ति की प्रतिस्पर्धा स्वीकार नहीं करती। इसके नस-नस में आत्मोत्साह की भावना भरी है। वह महामात्य राक्षस की प्रज्ञा, पराक्रमशक्ति और राजभक्ति को स्वीकार करता है, किन्तु, फिर भी उसे अपने समर्थ व्यक्तित्व का प्रतिस्पर्द्धी कभी नहीं मानता। मौर्य साम्राज्य की सुदृढ़ स्थापना, हितसाधन और पुरुषार्थ-साधन का साधक बनने का वह दृढ़ निश्चय कर चुका है :—

"चाणक्यस्त्वमपि च नैव, केवलं ते साधर्म्यं मदनुकृतेः प्रधानवैरम्" ॥ मु० ३।१२

वह शिष्यवत्सल है, अतः चन्द्रगुप्त के राज्य को निष्कण्टक बनाने की चिन्ता उसे निरन्तर रहती है। पर्वतेश्वर के प्रति विषकन्या का प्रयोग करके उसने जिस कुटिलता का परिचय दिया है, नाटक के अन्त में मलयकेतु को बन्धनमुक्त करके तथा चन्दनदास को जगत्-सेठ का पद देकर उतनी ही उदारता व्यक्त की है। यह परम्परागत कथा पुराणों का चाणक्य नहीं है। वह कौटिल्य के अर्थशास्त्र का भी चाणक्य नहीं है। यह तो 'मुद्राराक्षस' का वह चाणक्य है, जो अपने व्यक्तित्व की महत्ता स्वयं ही नहीं समझता, प्रत्युत अपने आदर्शों पर चलने के लिए अपने प्रतिपक्ष को भी दूरदर्शिता से, बुद्धि वैभव से— विवश कर देता है।

चन्द्रगुप्त को सम्राट् बना करके उसने अपने को महान् राजनीतिज्ञ होने का प्रबल प्रमाण दिया है। उसकी राजनीति दैव की गति के समान अनुल्लंघ्य है। वह गुणग्राही है, इसलिए राक्षस को चन्द्रगुप्त का मन्त्री बनाने के दृढ़ संकल्प को पूर्ण करता है। चन्द्रगुप्त को सकल समृद्धि प्रदानकर भी वह निस्पृह है और राजभवन में रहकर भी कुटी में यती का जीवन व्यतीत करता है। सहज क्रोध और आत्म प्रशंसा उसके दो सहज उल्लेखनीय दुर्गुण हैं, किन्तु एक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति में इनका भी होना उतना ही स्वाभाविक है। चाणक्य सर्वप्रथम एक कर्मानुरक्त योगी है, फिर कर्मयोगी। इसका व्यक्तित्व किसी भी राजनीतिज्ञ के लिए—किसी भी काल में—किसी भी देश में सर्वथा आदर्श एवं अनुकरणीय है।

इस नाटक में चाणक्य का चरित्र इतना अधिक सशक्त बन गया है कि वही नायक प्रतीत होता है। इसका कारण स्पष्टत उसकी अतुल प्रज्ञा,कर्मनिष्ठा एवं दृढ प्रतिज्ञा है। उसके समस्त कार्यव्यापार की पृष्ठभूमि में चन्द्रगुप्त की विरोधिनी शक्तियों को एक सूत्र में बाँधकर चन्द्रगुप्त के एकछत्र राष्ट्र की स्थापना के लिए होती है। अत वह सहज ही सामाजिकों की समवेदना प्राप्त कर लेता है। वह मेधा, त्याग तेजस्विता, दृढता एव पुरुषार्थ का प्रबल प्रतीक है। भविष्य की घटनाओं को चुनौती देकर अपने रूप ढालने का वह बाजीगर है। शरीर में जो स्थिति मेरुदण्ड की होती है, वही स्थिति मुद्राराक्षस में चाणक्य के चरित्र की है। यह चरित्र अत्यन्त घटनापूर्ण गौरवशाली है। इसका मूल उद्देश्य है—नन्दवश का मूलोच्छेद एव चन्द्रगुप्त को भारत का सार्वभौम सम्राट् बनाना। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति वह अपनी राजनीतिक प्रतिभा के बल पर करता है उसके चरित्र में दृढता, आत्मत्याग, कर्मनिष्ठा, निर्भीकता, साहस एव विद्वत्ता आदि गुण कूट कूट कर भरे पडे हैं। साम दाम आ द कूटनातिक चालों में वह पारङ्गत है और उनके प्रयोग करने में कभी भी नहीं हिचकता। साहसी होने के साथ साथ वह कठोर सिद्धान्तवादी भी है। वह विशुद्ध परिणामदर्शी है। वह सिद्धि देखता है, साधन चाहे कैसा भी हो। छल से उसने राक्षस की मुद्रा से ही राक्षस को अधिकृत कर लिया। च द्रगुप्त की रक्षा के लिए गुप्तरूप से वह पर्वतेश्वर की हत्या कराने में भी सकोच नहीं करता। वह क्रूर है, पर उसकी क्रूरता परिस्थितिजन्य है। सक्षप में हम कह सकते हैं—मुद्राराक्षस में चाणक्य का चरित्र समग्र रूप से अत्यन्त प्रभावोत्पादक, आकर्षक एव प्रतिष्ठासम्पन्न है। वह ब्राह्मण धम की साकार प्रतिमा है। निर्भीकता, स्पष्टवादिता, दृढता, कठोरता, कष्टस हिष्णुता, उद्योगशीलता आदि विशेषताएँ उसके चरित्र को गौरवपूर्ण एव महान् बना देती है। चाणक्य कूटनीति में पारगत होने पर भी शेर चीते की तरह खूंखार नहीं है। च द्रगुप्त उसका परम प्रिय है उसके साथ उसका व्यवहार पुत्र या शिष्य की तरह रूक्ष या कोमल है, अप्रिय तो किसी स्थिति में नहीं। पर चन्दनदास प्रभृति साधारण व्यक्तियों से लेकर राक्षस तक से भी उसका व्यवहार अशिष्ट या अभद्रतापूर्ण नहीं है। राजनीति के साथ-साथ यह इसकी नैतिक विशेषता है। वह इतना सूक्ष्मदर्शी या दूरदर्शी है कि राक्षस जैसे राजनीतिज्ञ को भी उसकी कूटनीति के आगे बार-बार मुँह की खानी पडती है। असफलता शब्द से तो उसे परिचय ही नहीं है। उसका एकमात्र कारण उसकी असाधारण योग्यता के अतिरिक्त उसका वैराग्यपूर्ण तपस्वी जीवन भी है। लोग मगध सम्राट् चन्द्रगुप्त के गुरु एव प्रधान सचिव की जब यह विभूति देखते हैं —

उपलशकलमेतद् भेदक गोमयाना
बटुभिरुपहृतानां बर्हिषा स्तोम एष ।
शरणमपि समिद्भि शुष्यमाणाभिराभि
र्विनमितपटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम् ॥ मु० ३।१५

तो दंग रह जाते हैं। हमारे मन वीणा के समस्त सवेदनशील तार इस दृश्य को देखकर एक झकृत हो उठते हैं। उन तारों से ऐसी करुण शान्त रागिणी फूट पडती है कि उनमें चाणक्य की सारी कूटनीति की उच्छृङ्खलता उनमें धीरे धीरे विलीन हो जाती है, जैसे हम आँख मींचकर ज्योतिश्चक्र से घिरे हुए चाणक्य को त्यागी-तपस्वी के रूप में देखकर अपना माथा झुका देते हैं। वह हमारी सारी श्रद्धा का पात्र होता है। फिर नायकत्व का प्रश्न ही क्या ?

नाटक का नायक

(१) चन्द्रगुप्त—मौर्य-सम्राट चन्द्रगुप्त भारतीय नाट्य शास्त्र की दृष्टि से 'मुद्राराक्षस' के

नायक है। वह मनस्वी एवं अदम्य उत्साही है। मौर्य साम्राज्य के भार वहन करने के लिए सदैव तत्पर रहता है और लोक-व्यवहार से पूर्ण परिचित है—"अभिज्ञः खल्वसि लोकव्यवहाराणाम्" (मु०तृ०अं०)। इसके राज्य में छल-कपट का कहीं अस्तित्व नहीं है। अपराधियों एवं विद्रोहियों के प्रति वह अत्यन्त कठोर है—"प्रकृत्यपकारिषु तीक्ष्णदण्डो राजा" (मु०प्र०अं०)। वह व्यक्तमाना-वलेप एवं प्रकृतिप्रेमी है। इसमें प्रायः नायक के सभी गुण पाये जाते हैं। धनञ्जय ने लिखा है :—

> "नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः,
> रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढवंशः स्थिरो युवा।
> बुद्ध्युत्साहस्मृतिप्रज्ञा कलामानसमन्वितः,
> शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः॥" दश० २।१

—नायक को नम्र, विनम्र, मधुरभाषी, त्यागी, चतुर एवं प्रियवादी होना चाहिए। वह लोकरञ्जक एवं पवित्र मन वाला होता है। उसे बातचीत में प्रवीण, कुलीन वंशोत्पन्न, स्थिर मन होना चाहिए। वह बुद्धि, उत्साह, प्रज्ञा, स्मृति, कला तथा मान से युक्त होता है। शूर, दृढ, तेजस्वी, शास्त्रज्ञाता तथा धार्मिक होता है। चन्द्रगुप्त में प्रायः ये सभी गुण वर्तमान हैं। सम्पूर्ण मौर्य-साम्राज्य का आधिपत्य हस्तगत कर लेने पर भी उसे थोड़ा भी अहङ्कार नहीं है। वह सर्वतोभावेन विनीत स्वभाव का है। उसके इस स्वभाव से ही विमुग्ध होकर राक्षस ने कहा है—'बाल एव हि लोकेऽस्मिन् सम्भावितमहोदयः।' (मु० ७।१२)। चन्द्रगुप्त मधुर स्वभाव का एक निरदर्शी राजा है।

चन्द्रगुप्त पूर्ण त्यागी है—वह किसी भी स्थिति में सर्वस्वत्याग के लिए तत्पर रहता है। उसके सम्मुख जो कुछ भी कार्य उपस्थित होता है, दक्षतापूर्वक उसका निर्वाह करता है। सांसारिक किसी भी वस्तु के प्रति उसका कहीं भी मोह परिलक्षित नहीं होता। प्रकृतिप्रेमी होने के कारण कौमुदीमहोत्सव के प्रति उसका सामान्य आकर्षण प्रतीत होता है। इसकी उत्पत्ति भी महाकवि प्रसूत है। इतिहासकारों का कहना है कि यह महाराज नन्द की एक दासी मुरा नामक शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। अतः यह शूद्र था। यही कारण है कि चाणक्य ने नाटक में इसे 'वृषल' नाम से ही सम्बोधित किया है। केवल एक बार नाटकान्त में ही चाणक्य ने उसे "भो राजन् चन्द्रगुप्त" ऐसा सम्बोधन किया है। इसी आधार पर कुछ आलोचक उसे शूद्रकुलोत्पन्न मानते हैं। राक्षस भी उसे कुछ इसी प्रकार समझता है :—

> "पतिं त्यक्त्वा देवं भुवनपतिमुच्चैरभिजनम्।
> गता छिद्रेण श्रीर्वृषलमविनीतेव वृषली।" मु० ६।८

किन्तु, तथ्य कुछ इसके विपरीत है। चन्द्रगुप्त अपने चाणक्य का अनुभक्त है। उसका राज्य भी नतिशासित सिद्ध है। आर्य चाणक्य स्नेहवश भी उसे 'वृषल' कह सकते हैं। कुछ आलोचक वृषल शब्द का अर्थ भी दूसरे ढंग से करते हैं। राजा वृषः वृषलः अर्थात् इस व्युत्पत्ति से वृषल का अर्थ राजराजेश्वर हो जाता है। जो कुछ भी हो इसके अतिरिक्त इसमें कतिपय अन्य भी गुण हैं—जिनके कारण इसे नाटक का नायक कहा जा सकता है।

चन्द्रगुप्त प्रजारञ्जक एक राजा है। योग्य गुरु का योग्यतम शिष्य है। इसकी प्रकृति धार्मिक है। लोकव्यवहार का यह पूर्ण ज्ञाता है। अपरिमित योद्धा है। यह अपने गुरु के निर्देशन में रहते हुए प्रत्येक कार्य को सहर्ष स्वीकार करना चाहता है। चाणक्य चन्द्रगुप्त को पाकर गर्वित है और चन्द्रगुप्त चाणक्य को पाकर निश्चिन्त है। चाणक्य मनस्वी है,—विचारशील शासक है।

इसकी प्रत्येक गतिविधि में विचारों की प्रौढ़ता एवं यौवन का उत्साह परिलक्षित है। कञ्चुकी के शब्दों में —

"सुविश्वस्यैरङ्गैः पथिषु विषमेष्वप्यचलता,
चिरं धुर्येणोढा गुरुरपि भुवो यस्य गुरुणा।
धुरं तामेवोच्चैः नववयसि वोढुं व्यवसितो
मनस्वी दम्यत्वात् स्खलति च न दुःखं वहति च ॥" मु० ३।३

विशाखदत्त ने चन्द्रगुप्त का चरित चित्रण नाटक की सहजता के अनुकूल किया है, अर्थात् उसमें साधारण जन की तरह गुण और अवगुण दोनों विद्यमान हैं। वह आरम्भ से अन्त तक केवल मौर्य सम्राट् के आदर्श का ही निर्वाह नहीं करता है। इसका चरित्र नाटकीय स्थितियों के अनुरूप गतिशील है।

कुछ आलोचकों का आक्षेप है कि विशाखदत्त ने चन्द्रगुप्त को वास्तविक मौर्य सम्राट के रूप में चित्रित नहीं किया और जो कुछ किया भी वह मौर्य सम्राट् के व्यक्तित्व के अनुरूप प्रतीत नहीं होता, अस्तु। यह निःसङ्कोच कहा जा सकता है कि विशाखदत्त का चन्द्रगुप्त भले ही मौर्य समाट् के रूप में चित्रित न हो, पर मौर्य समाट् के कुशल शासक के रूप में चन्द्रगुप्त अवश्य ही प्रतीत होता है। चाणक्य का वृषल (चन्द्रगुप्त) केवल शूद्र ही नहीं है, उसके व्यक्तित्व में राजराजेश्वर का व्यक्तित्व झाँकता है? चन्द्रगुप्त यदि वृषल अर्थात् महान् नहीं होता तो अशोक भी प्रियदर्शी कैसे हो पाता। चाणक्य का वृषल तो महान् अर्थ का ही वाचक है अथवा उसका स्नेह सूचक है। इस अभिप्राय की पुष्टि नाटक की ही इस उक्ति से स्पष्ट हो जाती है —

"नन्दैर्विमुक्तमनपेक्षितराजराजैरध्यासितं च वृषलेन वृषेण राज्ञाम्।" मु० ३।१८

इतना ही नहीं, चाणक्य ने भी सब कुछ चन्द्रगुप्त की हितकामना से ही किया है, अतः फल सिद्धि अर्थात् नन्दवंश के उन्मूलन द्वारा राज्य की प्राप्ति और राक्षस द्वारा मन्त्रित्व की स्वीकृति— चन्द्रगुप्त को ही हुई है। चाणक्य ने फलसिद्धि के लिए अपेक्षित कारणरूप सामग्री की योजना भले ही की है, किन्तु फल के प्रति आसक्ति उसके मन में नहीं है। इसके अतिरिक्त चन्द्रगुप्त का व्यक्तित्व उत्तरोत्तर विकासशील रहा है, अतः उसी को मुद्राराक्षस का नायक मानना समीचीन होगा।

(२) राक्षस—पाश्चात्य समीक्षकों ने इस नाटक के शीर्षक को ध्यान में रखते हुए राक्षस को ही नायक माना है। वह अत्यन्त वैभवशाली, प्रभावपूर्ण, यशस्वी एवं कुलीन मन्त्री है। उसके चरित में सत् के साथ कुछ असत् का भी सम्मिश्रण है। वह मूलतः सज्जन होने पर भी सर्वथा निर्दुष्ट नहीं कहा जा सकता है। उसके स्वभाव में कहीं न कहीं ऐसी कमजोरी भूल करने की प्रवृत्ति—है, जिसके कारण अपनी विपत्ति के दायित्व से वह सर्वथा मुक्त नहीं कहा जा सकता। अपने किसी न किसी स्वभाव-दोष या भूल के कारण ही वह दुर्भाग्य का शिकार बनता रहता है।

सम्पूर्ण नाटक में उसका चरित्र विरोधों के बीच ही विकसित हुआ है। उसकी भावुकता ही उसकी पराजय के कारण है। उसकी सबसे उल्लेखनीय विशेषता स्वामी के प्रति निष्ठा का निर्वाह है—पहले नन्दवंश के प्रति तदनन्तर मलयकेतु के प्रति और अन्त में आशीर्वादरूप में चन्द्रगुप्त के प्रति इसका अनेकशः प्रमाण मिलता है। इसकी इस भक्ति को देखकर ही चाणक्य कहता है— "अहो राक्षसस्य नन्दवंशे निरतिशयो भक्तिगुणः" नन्द के प्रति एकान्त निष्ठा और राक्षस की महत्त्वाकांक्षा इन दोनों को एक ही माना जा सकता है। वह कूटनीति का मर्मज्ञ है, मेधावी तथा।

दण्डविद्या में निपुण है। उसमें सैन्यसंचालन की पूरी क्षमता है। वह शूर है, वीर है—'दक्षैषा सेवनीया परतिमवस्था राक्षसस्य यात्रा' २।१४। राजनीति और षड्यंत्र की समस्याओं के विभिन्न पहलुओं के व्यापक आधार पर राक्षस का चरित्र चित्रित किया गया है।

राक्षस के पात्र वर्ग व्यक्ति नहीं हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि वह सामान्य बल-बुद्धि वाला, साधारण जन है। वर्ग का तात्पर्य है—सहज मानव भावनाओं से युक्त। इसके चरित्र के साथ पद-पद पर प्रेक्षक का तादात्म्य होता रहता है। किन्तु, वह साम्य प्रकृति का ही है, मात्रा का नहीं। इसकी विरक्ति अपने तक सीमित न रहकर व्यापक जनसमाज को प्रभावित करने में समर्थ है। वह आवेश, एवं त्वरा में आकर, अपनी प्रकृति से लाचार होकर अपने निर्णयसम्बन्धी भूल के कारण दुर्भाग्य का शिकार बन जाता है। सहज मानवीय दुर्बलता के कारण वह निर्णय लेने में भूल कर जाता है, जिससे प्रेक्षक के हृदय में स्वतः सहानुभूति का उद्रेक होने लगता है। चूंकि इसकी विपत्ति इसके दोष की अपेक्षा अनुपात से कहीं अधिक है। अतः प्रेक्षक के मन में चन्द्रगुप्त या चाणक्य की अपेक्षा इसके प्रति अधिक करुण आकर्षण उत्पन्न होता है। इसकी पराजय मात्र निर्णय-सम्बन्धी भूल के कारण ही होता है। किन्तु, इस भूल के लिए इसके कहीं स्वभाव, कहीं आवेश की प्रबलता, कहीं त्वरा की प्रवृत्ति, कहीं महत्त्वाकांक्षा और कहीं अतिशय विश्वास ही—उत्तरदायी हैं। वह अपने स्वभाव के कारण ही किसी भी अनजान या नवीन व्यक्ति पर सहसा विश्वास कर लेता है, यथा—सिद्धार्थक। उसने इसी भूल के कारण जीवसिद्धि और सिद्धार्थक जैसे व्यक्ति पर विश्वास कर अपनी पराजय को आमंत्रित कर लिया है। ये दोनों ही चाणक्य के प्रणिधि हैं और घटनाचक्र को बदल देने की सामर्थ्य रखते हैं। इन दोनों पर विश्वास करना ही उसके पतन का मूल कारण बन गया है।

राक्षस स्वार्थरहित है। उसकी एकमात्र प्रबल इच्छा है नन्दसाम्राज्य का पुनरुद्धार करना। इसीलिए उसने मलयकेतु का आश्रय ग्रहण किया है—

"—देवः स्वर्गतोऽपि शात्रववधेनाराधितः स्यादिति।" मु० २।५

राक्षस एक सच्चा मित्र है। विशाखदत्त ने इसकी मैत्रीभावना का जो चित्रण किया है वह भारतीय नाट्य साहित्य की अपूर्व देन है। अपने मित्र चन्दनदास के जीवन की रक्षा वह अपने आपको बन्धन में डालकर भी करता है। चन्दनदास उसका अभिन्न मित्र है—"द्वितीयमिव हृदयम्"। इसका सारा जीवन निराशा और दुर्भाग्य से उद्वेलित रहा है। यह पुरुषार्थी की अपेक्षा अधिक भावुक और भाग्यवादी है। फलप्राप्ति की अधीरता और विस्मरणशीलता—विशेषतः अपने सहायकों या योजनाओं का स्मरण न रहना—के फलस्वरूप ही उसे सफलता नहीं मिल सकी। स्वामी नन्द के प्रति अनन्य भक्ति एवं चन्दनदास के प्रति लोकोत्तर स्नेह उसके चरित्र के दो अविस्मरणीय गुण हैं। इसकी सबसे बड़ी निर्बलता यह है कि इसने किस गुप्तचर को किस कार्य के लिए नियुक्त किया है—यहाँ तक कि यह उनके नाम तक को भी भूल जाता है—'कस्मिन् प्रयोजने मयायं प्रहित इति प्रयोजनानां बाहुल्यान्न खलु अवधारयामि।' इस प्रकार हम देखते हैं कि राजनीति में निष्णात होते हुए भी राक्षस की पराजय होती है। किन्तु, पराजित राक्षस भी हमारे सामने महान् बना रहता है।

इतना ही नहीं राक्षस अपनी प्रभुभक्ति एवं राजनीतिक शक्ति का इतना सुन्दर स्वरूप प्रकट करता है कि चाणक्य जैसा कूटनीतिज्ञ भी उसे शाबाशी देता है :—

"गुरुभिः कल्पनाक्लेशदीर्घजागरहेतुभिः।
चिमायासितासेना वृषलस्य मतिश्च मे॥" मु० ७/८

'—यह वही राक्षस है जिसने रातो दिन जगकर, गभीर उपायों और वदिशों द्वारा बहुत बहुत दिनों तक चन्द्रगुप्त की सेना को परेशान किया, और मेरी बुद्धि के छक्के छुडाये।

चाणक्य को राक्षस पर सबसे बढकर नाज है, वह उसे सैंकडों सेनाओं से बढकर मानता है :—

"—एका केवलमर्थसाधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका।
नन्दोन्मूलनदृष्टवीजमहिमा बुद्धिस्तु मागान्मम॥"

इतना ही नहीं, जब कृत्रिम चाण्डालों द्वारा उसे राक्षस के कैद होने की खबर मिलती है तो वह खुशी से बासों उछलकर पूछता है कि बताओ, बताओ किसने ऊँची ऊँची लपटोंवाली आग को कपडे के छोर में बाँध लिया है। किसने हवा को फन्दे में फास लेने की हिम्मत की है। किसने मद-मत्त हाथियों को पछाडकर दहाडनेवाले सिंह को पिंजरे में कैद करने का साहस दिखलाया है? और वह कौनसा बाका बहादुर है जो मगरों, घडियालों से भरे समुद्र को तैरकर पार कर लिया है?

"केनोत्तुङ्गशिखाकलापकपिलो वद्धः पटान्ते शिखी,
पाशै केन सदागतेरगतिता सद्यः समासादिता।
केनानेकपदानवासित सटः सिंहोऽर्पित पञ्जरे,
भीमः केन च नैकनक्रमकरो दोर्भ्यां प्रतीर्णोऽर्णव॥" मु० ७/६

इसी एक श्लोक में राक्षस की धीरता, गम्भीरता और वीरता का परिचय मि ता है।

राक्षस के व्यक्तित्व में उसकी अपनी विशेषताएँ हैं। इसके स्वभाव में मानव स्वभाव की विभिन्न भङ्गियों का चित्रण है। मानव मन की आशा और निराशाओं के घात-प्रतिघात में राक्षस का व्यक्तित्व अपनी स्वाभाविक महत्ता के कारण अजेय दिखाई देता है। विशाखदत्त ने चाणक्य के हाथों में राक्षस की मुद्रा के पड़ जाने की, चाणक्य की मुट्ठी में राक्षस के आ जाने से जो तुलना की है—उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि राक्षस की हार उसके जीवन की एक आक स्मिक घटना है, एक अनहोनी है और राक्षस की महत्ता घटाने की अपेक्षा बढाने वाली है। अतः पाश्चात्य विद्वान अरस्तू, रिचर्ड और बूचर के सिद्धान्तों के अनुसार 'राक्षस' ही इस नाटक क नायक तथा यह नाटक दुःखान्त है।

मुद्राराक्षस का अङ्गीरस

भारतीय नाट्यशास्त्र की दृष्टि से किसी भी नाटक के मूल तत्त्वों में नेता, वस्तु और रस को परमावश्यक माना गया है। पाश्चात्य नाट्यशास्त्र में भी यद्यपि 'रस' नामक किसी वस्तु का उल्लेखन नहीं है, फिर भी कार्य और व्यापार की सक्रियता को वहाँ भी महत्त्व दिया गया है। जहाँ तक विशाखदत्त के मुद्राराक्षस का प्रश्न है—भारतीय रस सिद्धान्त की परम्परा से तो अनुप्राणित है ही—पाश्चात्य परम्परा के कार्य-व्यापार की सक्रियता का भी जान या अनजान में ही सुन्दर समन्वय हो जाता है।

मुद्राराक्षस यद्यपि एक सुखान्त नाटक है, फिर भी इसके मूल में एक करुण चेतना सुख की तह में छिपी हुई है। नाटक की पंक्ति पंक्ति में सुख दुःखात्मक भावना का समन्वित रूप हमें मिलता है। इस नाटक में वैसे तो अनेक रसों की सुन्दर योजना हुई है; किन्तु इसके अंगी रस के रूप में 'वीर रस' की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

नाटक के आदि से अन्त तक जो रस विद्यमान रहकर, अभिनय में अभिव्यक्त अन्य रसों की अपेक्षा सर्वाधिक व्याप्त हो—उसे हम अङ्गीरस कहते हैं। अङ्गीरस में मुख्यभाव की मूल-वृत्ति का प्रतिकूल नहीं रहता है। वह रस नाटक के मूल उद्देश्य या फलागम का स्वादरूप होता है, साथ ही प्रेक्षा के पश्चात् पाठक या दर्शक पर पड़नेवाले प्रभूत प्रभाव का अभिव्यञ्जक होता है। अंगी रस का सम्बन्ध अन्य रसों से करीब-करीब नहीं होता, जो सम्बन्ध स्थायी और सञ्चारी भावों का परस्पर होता है।

भारतीय नाट्यशास्त्र में वीर, शृङ्गार और करुण रसों में से किसी एक को अङ्गीरस मानने का मत है। मुद्राराक्षस में उद्देश्य के विचार से वीर रस की प्रधानता परिलक्षित होती है। इसमें चाणक्य का उद्देश्य नन्दवंश का विनाश कर चन्द्रगुप्त की सार्वभौम सत्ता की स्थापना करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति में नाटक का प्रधान चक्र संगठित हुआ है। कथावस्तु के प्रारम्भ से अन्त तक वीर रस किसी न किसी रूप में विद्यमान है। कथावस्तु की प्रधान शृङ्खला की दृष्टि से भी अंगी रस वीर ही प्रमाणित होता है। क्योंकि कथावस्तु की प्रायः सभी प्रमुख शृङ्खलाएँ नन्दवंश के विनाश से सम्बद्ध हैं। किसी भी प्रकार के उत्कर्ष का स्थायीभाव उत्साह है और उत्साह से ही वीर रस का अभिव्यक्ति होती है।

पात्र भी वीररसानुकूल हैं। चाणक्य एवं चन्द्रगुप्त इस नाटक के प्रमुख पात्र हैं। इनका मूलवृत्ति—नन्दवंश का विनाश कर चन्द्रगुप्त के एक छत्र राज्य की स्थापना है। इन भावों का प्रतिफलन भी तो वीर रस में ही सम्भव है। इस नाटक की प्रमुख घटनाएँ अधोङ्कित हैं :—

(१) नन्दवंश का विनाश,

(२) चन्द्रगुप्त के राज्य का स्थापना,

(३) राक्षस को अधिकृत करना।

इन तीनों घटनाओं का सम्बन्ध संघर्ष से है। तीनों में आश्रय चन्द्रगुप्त या चाणक्य है। आलम्बन तीन अवश्य हो जाते हैं। किसी भी प्रकार से विचार करने पर नाटक में सम्पूर्ण अव यवों के संयोग से वीररस की ही निष्पत्ति हुई है। नाटक में अन्तिम स्थल पर जो प्रभाव की अन्विति होती है, वही पूर्ण रसनिष्पत्ति का कारण बनकर चमत्कार उत्पन्न करने और लोकोत्तर काव्यात्मक आनन्द देने में सहायक बनती है। इस प्रभाव की अन्विति में मूलतः वीर रस ही प्रधान ठहरता है। इसका शास्त्रीय विवेचन इस प्रकार है :—

(१) नन्दवंश का विनाश

१—स्थायीभाव—उत्साह

२—आलम्बन—नन्द

३—आश्रय—चाणक्य या चन्द्रगुप्त

४—उद्दीपन—नन्द का अत्याचार

५—अनुभाव—चाणक्य की प्रतिज्ञा

६—सञ्चारीभाव—गर्व

वीर रस के अतिरिक्त इस नाटक में अद्भुत, रौद्र, वीभत्स शृंगार आदि अन्य रसों का भी यत्र-तत्र समावेश है। जहाँ कहीं भी विषम परिस्थिति आती है—चाणक्य की नीति ढाल बनकर उपस्थित हो जाती है। चाणक्य की प्रतिज्ञा में रौद्र रस की अभिव्यक्ति है। नन्द पर्वतेश्वर की

मृत्यु में बीभत्स रस का समावेश है। हास्य का सम्पूर्ण नाटक में अभाव है। शृंगार का विस्तृत चित्रण नहीं है, पर राजलक्ष्मी के वर्णन में शृंगार फूट पड़ा है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मुद्राराक्षस नाटक का अंगीरस वीर है, पोषकरस रौद्र और नियामक शान्त है। इस प्रकार रसयोजना की दृष्टि से भी यह नाटक सफल है।

निष्कर्ष

'नाटक का नायक कौन है?' इस नाटक के सम्बन्ध में यह ज्वलन्त प्रश्न है। संस्कृत नाट्य-शास्त्र की परम्परा सम्भवतः चन्द्रगुप्त को नायक मानना चाहे पर विशाखदत्त स्वयं चाणक्य के पक्ष में है। पाश्चात्य आलोचकों ने राक्षस के पराभव को दृष्टि में रख कर 'मुद्राराक्षस' को दुःखान्त नाटक की संज्ञा दी है। हमारी सहानुभूति भी राक्षस को उपलब्ध है, फिर भी वह नाटक के फल का भोक्ता नहीं है। अतः भारतीय दृष्टिकोण उसे नायक नहीं मान सकता। वस्तुतः नायकविषयक द्वन्द्व चन्द्रगुप्त और चाणक्य को लेकर ही है और वह द्वन्द्व भी इसलिए कि विशाखदत्त संस्कृत नाटक साहित्य के क्षेत्र में आपादमस्तक मौलिक है। इस संदर्भ में यह अत्युक्ति न होगी कि इन महाशायिक महाकवि की प्रतिभा रूढ़िग्रस्त संठियाए हुए संस्कृत नाट्य साहित्य के अकवारों में ही नहीं समा सकी है। फलतः इनका प्रत्येक पात्र चरित्र से अधिक चारित्र्य का प्रतिपादक बन गया है, जो नायकविषयक द्वन्द्व का मूल कारण है।

विशाखदत्त किसी भी चरित से सम्बन्धित वस्तु, घटना क्रिया या पात्र की समस्या के बहिः पक्ष के प्रति जितना ही उदास और पराङ्मुख प्रतीत होते हैं, अपने पात्रों के अन्तः पक्ष के प्रति वे उतना ही अधिक सचेष्ट और जागरूक प्रतीत होते हैं। उनकी तरल पिच्छल, पर सूक्ष्म दृष्टि पात्रों की बहिर्गतिविधि पर नहीं टिकती प्रत्युत उनके अन्तर में प्रविष्ट होकर उनका परिष्कार कर देती है। वे फूलों का संग्रह कर, उन्हें एक सूत्र में पिरो देने वाले माली नहीं, बल्कि उन्हें निचोड़ छानकर, इत्र तैयार करने वाले गंधी की तरह लगते हैं। उनमें राष्ट्रीयता, नाटकीयता, राजनीतिकता, युगप्रभाव, जन-जीवन, तर्क वितर्क, संघर्ष समाधान—सब हैं, पर सब एकदम सूक्ष्मरूप में, सुगन्धरूप में। इसीलिए मुद्राराक्षस में, एक जागरूक कुम्भकार की तरह उन्होंने पात्रों की कम मूर्त्तियाँ बनायी हैं, पर जो कोई भी मूर्त्ति उनकी अंगुलियों का स्पर्श पा सकी—उनमें उन्होंने एक मंत्रद्रष्टा ऋषि की तरह नयी प्राणप्रतिष्ठा कर दी है। अतः उनके सभी पात्र बोलते हैं। वे भावुक या तरंगी नहीं, शास्त्रीय विवेक की पूरी सजगता से संयुक्त विदग्ध नागरिक हैं।

विशाखदत्त इतिहास में इतिवृत्तात्मक नहीं, पुरातत्त्ववेत्ता हैं। पुराण में वाच्यार्थ के प्रतिपादक नहीं लाक्षणिकता के आग्रही हैं। यही कारण है कि मुद्राराक्षस का प्रत्येक चरित्र मानसिक एवं तर्काधिष्ठित है, अत एव सच्चे अर्थों में सभी चरित्र उनकी आत्मा के शिल्प हैं। उनमें बुद्धि का उत्कर्ष और हृदय की प्राणवत्ता—दोनों दूध और पानी की तरह घुल मिल गये हैं, और प्रज्ञा तथा प्रतिभा, इतिहास एवं कल्पना का भव्य समावेश बन गया है। चाणक्य और चन्द्रगुप्त दोनों के व्यक्तित्व में एक भी चरित ऐसा नहीं जो दर्शक या पाठक को केवल वहीं ही ले जाय, इनकी एक भी क्रिया ऐसी नहीं—जो केवल सोचने को ही बाध्य करे। पाठक को लगता है कि इन चरित्रों में कोई आवर्त्त है जो उसे नचा-नचा कर गोते लगवा देता है, इनके व्यक्तित्व में कोई ऐसी शक्ति है जो पहले वह हाथियों पर उठाये चलती है, और फिर गहरे खींचती चली जाती है। राक्षस और मलयकेतु की प्रतिद्वन्द्विता में चाणक्य एवं चन्द्रगुप्त का व्यक्तित्व ऐसा है, जो अध्ययन मनन के क्रम में प्रत्येक बार राजनीति की सीमा रेखा में नये रंग भरता चलता है। फिर भी

ऐसा लगता रहता है कि कहीं इन चरित्रों में कुछ और है जो पकड़ में नहीं आ रहा है। इन चरित्रों के चित्रक शब्दसमूह प्रत्येक बार कुछ नयी व्यंजना और भंगिमा लेकर उपस्थित होते हैं, फिर भी लगा रहता है कि कुछ और शेष है जो वे कह देना चाह रहे हों। इन दोनों चरित्रों की यही सबसे बड़ी विशेषता है, जिसके कारण वे नाटक के प्राण बन उठते हैं।

'मुद्राराक्षस' में पद पद पर राजनीतिक उथल पुथल का षड्यन्त्र, विद्रोह, विश्वासघात और विद्वेष उद्घाटन किया गया है। चाणक्य और राक्षस की राजनीतिक चालें सबलता और दुर्बलता के प्रतीक हैं। दोनों के घात प्रतिघात के दृश्य उपस्थित करने में विशाखदत्त अपनी प्रवृत्ति के अनुसार इतने सूक्ष्म और मूल तत्त्वों को उभारने का प्रयत्न करने लगते हैं कि कथानक उलट-पलट कर रह जाता है। जहाँ यह सब ऐतिहासिक रूप में उपस्थित किया गया है, वहीं नाटकीय तथ्य उलझ गये हैं।

विशाखदत्त का कलाकार मुग्ध-सा चाणक्य की नीति के सौन्दर्य पर मुग्ध है और उनका इतिहासकार मौर्यसम्राट् चन्द्रगुप्त के गौण व्यक्तित्व पर दुःखी है। उनका कलाकार जहाँ कौटिल्य नीति के उत्कर्ष से आकर्षित होकर षड्यन्त्रकारी बन गया है, वहीं उनका इतिहासकार चन्द्रगुप्त की सजग चेतना से पूर्ण संवलित होकर उन दरारों की खोज में संलग्न हो जाता है, जिनमें चन्द्रगुप्त का ऐतिहासिक व्यक्तित्व खो गया है। विशाखदत्त का चाणक्य कहीं षड्यन्त्रों का मकड़जाल फैलाकर एक ऐन्द्रजालिक बन गया है तो कहीं व्यक्तिगत प्रतिशोध की भावना से विक्षिप्त बना है, पर कहीं भी इसका व्यक्तित्व भारत की उच्च भावना का प्रत्याख्यान नहीं करता है। उसकी एकमात्र दुर्दमनीय एवं भव्य इच्छा है—नन्दवंश का विनाश कर मौर्य-साम्राज्य की स्थापना। उसका सारा व्यक्तित्व सम्पूर्ण भारत को मौर्यसम्राट् की एक छत्रच्छाया में बाँधने की भावना का निदर्शन है।

वृषल की सम्पूर्ण दुर्बलताओं के बल पर चाणक्य की कृपा—मालतीलता की तरह छाया हुई है, उसका प्रत्येक कार्यक्रम एक ऐसे मालती-कुंज के सदृश आकर्षक बन जाता है कि उसका सम्मिलित प्रभाव उसे इस नाटक का नायकत्व स्वतः समर्पित कर देता है और नायक चाणक्य के व्यक्तित्व से एक सुन्दर मोती मानो भर आने लगती है, जिसका सम्यक् विश्लेषण असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य बन जाता है। लगता है कि हम एक ऐसे व्यक्तित्व की छत्रछाया में बैठे हैं, जहाँ राजनीति की शुष्कता, करुणा की सनसनाहट देने वाली दुःखानुभूति और कला के रंगीन विविध पुष्प, सब शीर्ष पर आकर एकाकार हो गये हैं। यही है चाणक्य का गौरवोज्ज्वल व्यक्तित्व, जहाँ इतिहास एवं पुराण की संहति में सांस्कृतिक एवं राजनीतिक सौष्ठव या परिपाक का आदर्श उपस्थित किया गया है।

इतिहास प्रसिद्ध बुद्धिवाद का प्रतीक चाणक्य, वह व्यक्ति है—जो अपनी बुद्धिबल से बड़े से बड़े साम्राज्य की नींव तक हिला सकता है, जो अपनी कूटनीति के कारण देश का मानचित्र बदल सकता है, जिसकी कल्पना गहन से गहन समस्याओं का समाधान खोज लेती है—ऐसा बौद्धिक व्यक्ति ही विशाखदत्त का अभिप्रेत नायक हो सकता है।

भारतीय जीवन में चाणक्य एक आकर्षक व्यक्ति सिद्ध हुए हैं। विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में इनकी कौटिल्यनीति पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। वास्तव में यह नाटक घटनाप्रधान न होकर पात्रप्रधान है। इस नाटक में विशाखदत्त का उद्देश्य आचार्य विष्णुगुप्त की सराहना की है। चन्दनदास की उक्ति इस सदर्भ में दर्शनीय है -—'फलेन सम्पादितमस्य विकत्थितम्।' (मु० रा० पृ० ८०) उसका प्रतिपक्षी महामात्य राक्षस कहता है :—

"आकर सर्वशास्त्राणां रत्नानामिव सागर'।
गुणैर्न परितुष्यामो यस्य मत्सरिणो वयम् ॥" मु० रा० ७।७.

, विशाखदत्त ने स्वयं सिद्धार्थक के मुख से इस चरित्र की प्रशंसा की है —

जयति जयनकार्यं यावत् कृत्वा च सर्वम् ।
प्रतिहतपरपक्षा आर्यचाणक्यनीत ॥ मु० रा० ६।१

लेखक ने अपनी प्रशस्तियों के अनुरूप ही आचार्य विष्णुगुप्त का ऊँचा चरित्र खींचा है। चाणक्य इस नाटक के नायक तो हैं ही, सर्वाधिक प्रभावशाली चरित्र भी रखते हैं। चाणक्य का चरित्र अत्यन्त उज्ज्वल, स्पष्ट, आदर्श एवं अनुकरणीय है। इसका निजी स्वार्थ कहीं कुछ नहीं है। इसका तन, मन, धन सभी देश के लिए अर्पित है। यह त्याग की तो प्रतिमूर्त्ति है। यह अनासक्त योगी है। इसका गृह विभूति है —

'उपलसकलमेतद् भेदकं गोमयाना
बटुभिरुपहृतानां वर्हिषां स्तोम एष ।
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिराभि
र्विनमितपटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम् ॥" मुद्रा० ३।१५

नाटक के प्रारंभ होते ही रंगमंच पर आर्य कौटिल्य का व्यक्तित्व प्रभावोदीप्त हो उठता है। अर्थशास्त्र का चाणक्य-दैव और पौरूष के तारतम्य का चिंतन करने वाला आचार्य विष्णुगुप्त मुद्राराक्षस में चोला बदल लेता है। यहाँ उसे अपने पौरूष में अगाध आस्था है, अपने पुरुषार्थ में अटूट विश्वास है। लक्ष्यप्राप्ति के लिए अदम्य उत्साह है। इसके व्यक्तित्व में, जिसकी अभिव्यक्ति विशाखदत्त ने उसके कायिक, वाचिक तथा मानसिक व्यापारों के वर्णन द्वारा की है। इसकी प्रत्येक उक्ति में आत्मविश्वास की भावना ही स्पष्ट होती रहती है। नाटकारंभ में ही सर्वप्रथम जो उसकी कड़कती आवाज निकलती है—उसके समस्त व्यक्तित्व का आकलन कर देती है —

'आः क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्तमभिभवितुमिच्छति बलात् ।" मुद्रा० प्र० अ०

उसका अहित करना अत्यन्त क्रुद्ध सिंह के मुख से जबर्दस्ती तोड़कर दाँत निकालने के समान भयङ्कर है —

"जृम्भाविदारितमुखस्य मुखात् स्फुरन्तीम् ।
को हर्तुमिच्छति हरेः परिभूय दंष्ट्राम् ॥ मु० रा० १।८

अतः हम कह सकते हैं कि चाणक्य ही शास्त्रीय दृष्टि से इस नाटक के फल का भोक्ता है। वह अपरिग्रही है, निष्काम कर्म योगी है। चक्रवर्त्ती सम्राट् का निर्माता है, मौर्यसाम्राज्य का प्रतिष्ठापक है, सर्वप्रथम वृहद्भारत का उपस्थापक है। उसकी परिग्रहशून्यता का ही प्रभाव है कि उसके लिए मौर्यसम्राट चन्द्रगुप्त भी, शूद्र है और मौर्य है, वृषल है, तृण के समान तिरस्करणीय है। नाटककार के शब्दों में—

'निरीहाणामीशस्तृणमिव तिरस्कारविषयः ।" मुद्रा० ३।१६

✓मलयकेतु—मलयकेतु एक पर्वतीय राजकुमार है। मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त की अपेक्षा इस राजकुमार का चरित्र अधिक विकसित है। इसके पिता पर्वतक के मृत्यु में चाणक्य का हाथ है। मृत्यु विषकन्या द्वारा हुई थी। चाणक्य के द्वारा सर्वप्रथम इसके विषय में यह सूचना मिलती है कि उसने भागुरायण के द्वारा 'तुम्हारे पिता चाणक्य को मरवाया है'। ऐसा भय दिखलाकर कुसुमपुर से भगा दिया गया है। राक्षस ने यही सोचकर इसका आश्रय ग्रहण किया है कि पितृ

वध से प्रकुपित मलयकेतु इसका प्रतिशोध अवश्य लेगा। क्योंकि वह पराक्रमी है, विजिगीषु है। किन्तु, विशाखदत्त ने इस पात्र को भी सबल व्यक्तित्व प्रदान नहीं किया है। चाणक्य के प्रति चन्द्रगुप्त के मन में जैसा दृढ़ विश्वास था, वैसा विश्वास राक्षस के प्रति मलयकेतु के मन में उदित नहीं हो सका। चंचल और अविवेकी प्रकृति के होने के कारण उसने राक्षस के प्रति अविश्वास किया और चाणक्य के गुप्तचर भागुरायण को अपना विश्वस्त विचारक समझा—और, यही पराजय का मूल कारण बन गया। वह भागुरायण का वशवर्ती बन गया। राक्षस के विरुद्ध वह उसे जैसे जैसे समझाता है, वह उसे उसी प्रकार समझता है। वह अपनी बुद्धि का बिल्कुल प्रयोग नहीं करना चाहता। राक्षस की निष्कपट बातों को भी वह कपटपूर्ण समझने लगता है। सत्य में उसे असत्य की गन्ध आती है। अयथार्थ को यथार्थ मानकर ही वह तुष्ट है। हित अहित को पह-चानने की उसमें क्षमता है ही नहीं अपनी इस अविवेकिता के कारण वह सोचकर परम प्रसन्न है—"दृष्ट्या न सचिवादसत्तन्त्रोऽस्मि" (मु० च० अ०)

जिस अनुपात में चन्द्रगुप्त चाणक्य का भक्त है उसी अनुपात में मलयकेतु राक्षस पर सन्देह करता है। वह धीरोद्धत प्रकृति का शासक है। अतः महत्वाकांक्षा, अस्थिरता, अहंकार आदि प्रवृत्तियाँ उसके व्यक्तित्व में सहज प्राप्य हैं। विवेक के अभाव में वह भागुरायण के द्वारा ठगा गया है। भागुरायण ने राक्षस के विरुद्ध उसे इतना अधिक भर दिया है कि राक्षस की प्रत्येक गतिविधि में उसे दोष के ही दर्शन होते हैं। वह राक्षस की भर्त्सना करता है। उसे भला बुरा कहता है। उसका आक्रोश यहाँ तक बढ़ जाता है कि वह राक्षस को इन शब्दों में अपमानित कर देता है —

> "तात निपात्य सहबन्धुजनाश्रुतोयैः ।
> अन्वर्थकोऽपि ननु राक्षस राक्षसोऽसि । मु० रा० ५।४ ॥

वह राक्षस को नाम्ना नहीं कर्मणा भी राक्षस ही मानता है। तभी तो उसे राक्षस का इतना तिरस्कार करके भी सन्तोष जब नहीं हुआ, तब उसने कहा :—

> "चन्द्रगुप्तस्य विक्रेतुरधिकं लाभमिच्छत ।
> कल्पिता मूल्यमेतेषां क्रूरेण भवता वयम् ॥" मु० रा० ५।१७ ॥

राक्षस के लिए इससे बड़ा और आघात हो क्या हो सकता था ? उसके मुँह से केवल इतना ही निकला—"नहि पर्वतेश्वरे विषकन्या प्रयुक्तवान्"

अविवेकिता, गम्भीरता दूरदर्शिता आदि सद्गुणों के अभाव के कारण वह अपने विश्वस्त राजाओं का वध करा देता है। वह इतना भी नहीं सोच पाता कि राक्षस अपने स्वामी नन्द के क्रूर शत्रु चन्द्रगुप्त से कैसे सन्धि कर सकता है ? मलयकेतु इतना मूर्ख होगा, इसकी कल्पना भी राक्षस नहीं कर सकता था।

चतुर्थ और पञ्चम अङ्क में मलयकेतु के चरित्र का विकास जिस प्रकार हुआ है, उसका निर्वाह आगे तक नहीं किया जा सका। इसका कारण है वह राक्षस के आश्रय का उपयुक्त पात्र नहीं है। वह अदूरदर्शी है, उसने अपना ही सेना की केन्द्र बिन्दु का अपने ही हाथों विनाश कर दिया है। वह कृतघ्न है। लोगों को पहचानने में सर्वथा असमर्थ है। उसके पास समर्थ सैन्य शक्ति थी, पराक्रमी योद्धा थे, किन्तु, अपना ही अयोग्यता, अधीरता और दुर्नीति के कारण उसका उपयोग नहीं कर सका। मौर्य सम्राट् को पराजित करने की अपेक्षा अपने ही कुबुद्धि-जाल में फँस कर अपनी पराजय को आहूत कर लेता है।

अन्य पात्र—विशाखदत्त के इस मुद्राराक्षस नाटक में पात्रों की भीड तो नहीं कही जा सकती—पर जो भी पात्र ह—भादों के आकाश में रेलम रेलो करते हुए बादलों की तरह हैं। नाट्यकला की दृष्टि से इस दोष का प्रधान कारण उनका वही नाटककार है जो कौटिल्यनीति की भव्य दीवार के एक एक छिद्र का निदर्शन बडी सूक्ष्मता से करता चला जा रहा है। उसके अप्रधान पात्र हमारी किसी न किसी दुर्बलता के प्रतीक बनकर उपस्थित होते हैं, और वे अनेक हैं। सारे बिखरे अवयवों को जोडने के उपक्रम में और तथ्यपूर्ण वातावरण के निर्माण के क्रम में ये पात्र राजनीति के धरातल पर अनायास उठते चले गये ह। पर, मुद्राराक्षस का नाटककार राजनीतिक व्यामोह में फसकर कहीं छल नहीं कर पाया है।

इस नाटक में छोटे बडे कुल मिलाकर लगभग २९ चरित्रों का अपनी अपनी विशेषताओं के साथ चित्रण किया गया है। अप्रधान पात्रों में चन्दनदास, भागुरायण, सिद्धार्थक और शकटदास का चरित्र उल्लेखनीय है। विराधगुप्त, निपुणक करभक प्रभृति शेष पात्रों के चरित्रों का स्थान उतना महत्वपूर्ण नहीं है।

भागुरायण—भागुरायण गुप्त साम्राज्य का प्रमुख योद्धा और सेनापति सिंहबल का छोटा भाइ है। यह चाणक्य का अत्यन्त विश्वासपात्र गुप्तचर है। प्रथम अक की समाप्ति पर सर्वप्रथम इसकी चर्चा हम सुनते है कि यह भाग गया है। यह भाग जाना ही इसकी वह गुप्त योजना है-जिसको लेखमाला कौटिल्यनीति की लोल लहरों से लिखा जाती है। शत्रु भी इसकी योजना को सराहना करते हैं। वह स्वामिभक्ति, शूरता, साहस, धैर्य और कर्त्तव्यपरायणता का श्रेष्ठतम उदाहरण है। चाणक्य की मर्यादा का रक्षा के लिए वह सदैव चिन्तित और प्रयत्नशील रहता है।

भागुरायण उन पात्रों में है जो नाटक में थोडे समय के लिए ही हमारे सामने आते हैं और अपने कर्त्तव्य की भलक से प्रेक्षक का मन मोह लेते ह। भागुरायण रग मच पर केवल दो बार आता है। प्रथम नाटक के आरभ में उसके भाग जाने की सूचना मिलती है। भागकर यह मलयकेतु का मन्त्रीत्व स्वीकार कर लेता है। वह वीर और उत्साही तो है ही, साथ ही बडा ही आत्मविश्वासी भी है। चाणक्य की कूटनीति और अपनी बुद्धि पर उसे पूरा भरोसा है। मन्त्रीत्व स्वीकार करने के बाद कुछ दिनों तक इसका कुछ भी पता नहीं चलता है। फिर चतुर्थ एव पचम अङ्क में यह रगमच पर हमारे सामने आता है। इसका मुख्य कार्य इन्हीं दो अकों में वर्णित है। मलयकेतु उनके हाथों का पुतला है। वह जैसे चाहता है, उससे वैसा ही करवा लेता है। उसका चरित्र आदर्श गुणों का सन्निधान है। मलयकेतु को वह ठग लेता है, उसके साथ विश्वासघात करता है पर स्वेच्छा से नहीं, आर्य विष्णुगुप्त की आज्ञा से। इस विश्वासघात के लिए उसे पश्चात्ताप होता है। उसकी आत्मा उसे धिक्कार देती है —'कष्टमेवमप्यस्मासु स्नेहवान् कुमारो मलयकेतुरतिसन्धातव्य इत्यहो दुष्करम्।' उसे इस बात का कष्ट है कि वह धन के लिए आत्मा को चाणक्य के हाथों में बेच दिया है। फिर भी उसने जिस तत्परता, गम्भीरता एव स्वाभिमान के साथ अपने दायित्व का निर्वाह किया है, उसके लिए उसका चरित्र महान् है।

सिद्धार्थक—सिद्धार्थक सच्चे अर्थ में चाणक्य का गुप्तचर है। यह विश्वसनीय पात्र है। राक्षस के गुप्त प्रणिधि के रूप में प्रतिनियुक्त शकटदास की गतिविधि के परीक्षणार्थ चाणक्य ने सिद्धार्थक को प्रतिनियोजित किया था। यह सीधा सच्चा, पर कुशल गुप्तचर है। यह स्पष्टवादी एव अपने चरित्र पर विश्वास करने वाला शूरमा है। इसके जीवन में न कहीं चिन्ता है और न किसी काम में इसे भ्रम ही होता है। यह अपनी बुद्धि पर मुग्ध है, और चाणक्य की कूटनीति से घबडाता है। एक पर इसे गर्व है और दूसरी से घबडाता है। इसे अपने स्वाभिमान का सदैव

ध्यान रखता है। चाणक्य की महत्वाकांक्षा इसका सर्वस्व है। अपनी भावनाओं का हनन करके भी उसकी आज्ञा का वह पालन ईमानदारी से करता है। चाणक्य की आज्ञा का पालन वह आँखें बन्द कर करता है। सप्तम अंक में वह चाणक्य की आज्ञा से चाण्डाल के रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है— 'उद्देहि चाण्डालवेशधारिणौ भूत्वा चन्दनदासं वध्यस्थानं नयतम्" विस्तार की दृष्टि से इसका चरित्र महत्वपूर्ण नहीं है, फिर भी इसका चरित्र इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यह चाणक्य की आज्ञा का ही प्रतिमूर्ति है—"वयस्य का बापताके जीवितुकाम आर्य चाणक्यस्याज्ञाम् प्रतिकूलयति' यह सदैव अपने आदर्श चाणक्य की कार्यसिद्धि के लिए परिस्थिति के अनुकूल ढाल लेता है।

✓ चन्दनदास—इस सम्पूर्ण नाटक में सर्वाधिक मर्मस्पर्शी एवं करुण चरित्र चन्दनदास का ही है। वह धनिमान्, सहृदय, भावुक और कोमल वृत्ति का नगरसेठ है। वह मणिकार श्रेष्ठी है। जौहरियों का मणि है। वैश्य जाति का रत्न है। वह लक्ष्मी का वरद पुत्र है। कुसुम पुर का सम्पूर्ण पुष्प है। वह राक्षस का परम प्रिय मित्र है। अपने प्रवास काल में राक्षस ने अपना परिवार इसी के घर धरोहर के रूप में रख दिया था। वह प्रथम अंक के बीच में तथा सप्तम अंक में रंग मंच पर उपस्थित होता है। वह राक्षस एवं उसके परिवार के प्रति अनन्य स्नेह रखता है। उसके जीवन का यह प्रेम और श्रय उसकी व्यक्तिगत विशेषता के रूप में हमारे सामने आता है। राजनीतिक विप्लव के समय, अपना सर्वनाश के समय भी अपनी मित्रता का उसे ध्यान है। राक्षस परिवार की ओर यदि किसी का ध्यान जाता है तो प्रयत्नपूर्वक वह अत्यन्त व्यवहार कुशलता के साथ उसकी रक्षा का मार्ग ढूंढ निकालता है। चाणक्य के द्वारा राक्षस के परिवार को मांगने पर तथा नहीं सौंपने पर प्राणदण्ड की धमकी देने पर कहता है "आर्य, किं मे भय दर्शयसि सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि किं पुनरसन्तम् ।"

चन्दनदास ने राक्षस के परिवार की रक्षा करके अपनी अनन्य मित्रता का परिचय दिया है। उसका आत्मत्याग इतना प्रबल है कि धन सम्पत्ति और परिवार की चिन्ता का त्याग करने के साथ ही उसने राक्षस के हितार्थ अपने प्राणों का भी मोह छोड़ दिया है। उनका आत्म त्याग इतना प्रबल है कि चाणक्य को भी इस पर चकित रह जाना पड़ता है। इसके इस गुण की प्रशंसा चाणक्य और राक्षस एक साथ करते हैं —

"सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जन ।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना ।"

चन्दनदास के व्यक्तित्व और क्रिया में एक सच्चे मित्र की सरलता और त्याग, तरलता और कर्तव्यनिष्ठा, व्यावहारिकता और आत्मबलिदान, मर्मस्पर्शिता और सदाचारिता—साथ साथ चलता है। यह चरित्र इस नाटक का वह आदर्श है जो मित्रता के नाम पर अपने व्यवहार और त्याग के प्रति सर्वाधिक सचेत है। इसे प्रसन्नता है कि उसका विनाश वैयक्तिक दोष के कारण नहीं, बल्कि मित्र के कार्य से हो रहा है—"आर्य, अद्य मित्रकार्येण मे विनाशो न पुनः पुरुषदोषेण"। उसने अपने इस त्याग के लिए त्याग और विनाश के लिए पश्चात्ताप कभी नहीं किया। उसे तो कष्ट केवल इस बात के लिए है कि सदैव चरित्र शुद्धता की ओर ध्यान देने पर भी उसका विनाश चोरों की तरह हो रहा है। चाणक्य के कारण चन्दनदास ने जो कुछ भी किया ठीक बजाकर, अपनी मित्रता और त्याग के तराजू पर तौलकर। इसलिए कहना है कि इसका चरित्र आदर्श है, सभी क्रियाएँ रुचिकर हैं, इसके सभी विचार आकर्षक हैं, सब की स्थिति अनुकरणीय है। जीवन और जगत् के वृक्ष पर छाये रहने वाली मित्रता, उसकी

एक करुण किन्तु, मधुर झांकी देने वाले आदर्श चरित त्याग को प्रमुखता देने वाले एक मित्र का उत्कर्ष, स्वार्थ की अभिव्यक्ति में स्वत समर्पण देने वाला व्यक्तित्व, भला किस का मन नहीं मोह लेता है।

चन्दनदास नि स्वार्थ, दृढप्रतिज्ञ, मित्रत्वविशारद एव आदर्श चरितवान् है। वह राक्षस का मित्र, सहयोगी, सहायक एव अनन्य हृदय है। उसकी कर्तव्य बुद्धि स्पष्ट है, उसका आत्मविश्वास दृढ है, उसका कार्य अप्रमत्त है। सर्वतोभावेन इसका चरित्र अनुकरणीय एव आदर्श है।

छोटे-छोटे पात्र—शकटदास राक्षस का अनन्य सहयोगी है और स्वार्थरहित होकर उसकी सहायता करना चाहता है, किन्तु सिद्धार्थक द्वारा उससे लिखाए गए छलपूर्ण पत्र ने राक्षस के पराभव को सुनिश्चित कर दिया है। सक्षेप में यह कहना उचित होगा कि इन पात्रों और अन्यान्य गौण पात्रों ने अपने क्रियाकलाप से नाटक की कथावस्तु के विकास में पर्याप्त योगदान दिया है।

सक्षेप में हम कह सकते हैं कि विशाखदत्त ने अपने प्रत्येक चरित्र औचित्य पर ध्यान दिया है। यही कारण है कि विशाखदत्त का चरित्र सशक्त, गभीर एव ओजपूर्ण है। इनके छोटे छोटे पात्र भी सशक्त हैं—विरुद्धक, निपुणक, आहितुण्डिक, शकटदास प्रभृति सभी पात्र चाहे सूक्ष्म हों, किन्तु विशाखदत्त की अगुलियों ने उनमें भी जीवन रस भर दिया है। ये चरित मृच्छकटिक के चरित्र की तरह जीवन्त और जाग्रत हैं, किसी हद तक उससे भी अधिक सशक्त, अधिक स्पष्ट और अधिक यथार्थ।

एकान्विति—मुद्राराक्षस में घटनाओं और चरित्रों की समानरूपेण प्रधानता है, अत इसमें सवाद कौशल की ओर यथोचित ध्यान दिया गया है। स्पष्ट है कि ये सवाद एक ओर कथागति में सहायक रहे हैं और दूसरी ओर चरित्र व्यजना में भी इनका योग सराहनीय है। इसके नाटकीय व्यापार की गत्यात्मकता, घटनाचक्र का उतार चढाव, सभी प्रमुख पात्रों के साथ चलते हैं। इसके हर कार्यव्यापार—कनाथक की धुरी बना है, जो सच्चे अर्थ में अनेक होकर भी एक ही है। इसकी सघटना इतना सशक्त एव सुनियोजित है कि इसमें से एक को भी यदि हम थोडा भी इधर-उधर करें तो सर्वाङ्ग ही छिन्न भिन्न और अस्त व्यस्त हो जायगा। इसकी प्रत्येक घटना में परस्पर आवश्यक या सभाव्य सम्बन्ध है। इसकी इस सदर्भ में प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक अङ्क अपने आप में एकान्विति या व्यापार की दृष्टि से स्वत पूर्ण है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि प्रत्येक अङ्क स्वतन्त्र होने के नाते एक दूसरे अङ्क से अविच्छिन्न या असम्पृक्त है। खूबी तो यह है कि अपने आप में पूर्ण वे अङ्क एक दूसरे में जुडकर नाटकीय एकान्विति या व्यापार श्रृखला की निर्मिति में सहयोग देते हैं। इसकी कोई घटना या परिस्थिति ऐसी नहीं, जिसे बल पूर्वक fitın कर दिया गया हो, सभी स्वाभाविक हैं, सभी एक ही लक्ष्य की ओर अभिद्रुत हैं प्रस्तुत नाटक की वस्तु का निर्वाह बडे ध्यान से नियोजित किया गया है। इसकी व्यापारान्विति का जो सुगठित सुष्ठुरूप दिखलाई पडता है, वह अन्यत्र सस्कृत नाटकों में दुर्लभ है। विशाखदत्त ने प्रसगानुकूल कथोपकथन के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सजगता दिखलाई है। स्वगतभाषण के प्रति उनके मन में कुछ पूर्वाग्रह रहा है। मुख्य हों चाहे गौण—सभी पात्र स्वगत चिन्तन के अभ्यस्त हैं, जिससे कहीं कहीं नाट्यवस्तु में सूक्ष्मता से देखने पर कृत्रिमता प्रतीत होती है। आकाश भाषित का प्रयोग अपेक्षाकृत सीमित रूप में हुआ है। पात्रों की एक अन्य विशेषता यह है कि वे स्वगतभाषण अथवा सक्षिप्त वार्त्तालाप द्वारा एक दूसरे की प्रवृत्तियों को प्रकाश में लाते रहे हैं। विशाखदत्त ने सवादों में विशिष्टता लाने के लिए भाव मुद्राओं का भी सफल निर्वाह किया है।

'प्रविशति सचिन्तः' 'प्रविश्य विचार्य' 'सवेगमात्मगतम्' आत्मगतम् च, 'सम्यग् अवलोक्य' आदि क्रिया संकेत इसके उदाहरण हैं।

देश काल और उद्देश्य

मुद्राराक्षस नाटक में अपना स्वतन्त्र विशेषता है—यह नाटक संस्कृत नाटकों के लिए मौलिक वातावरण लेकर आता है। संस्कृत नाटकों की रोमानी परम्परा और नारी चित्रण को छोड़कर राजनीतिक षड्यन्त्रों एवं छल प्रपंचों को अपने वर्णन का विषय बनाया है। लेखक ने प्रसंगानुसार सामाजिक वातावरण का भी चित्रण किया है। चन्दनदास, शकटदास और राक्षस जैसे विश्वस्त मित्रों पर किसी भी समाज को गर्व हो सकता है। यम का चित्र दिखाकर भिक्षा मांगने, जनता का ज्योतिष में विश्वास होने और राजपुरुषों द्वारा आभूषण धारण करने का चित्रण भी देशकाल की अभिव्यक्ति में सहायक रहा है। कौमुदी महोत्सव की परम्परा का उल्लेख भी देश-कालानुरूप है। पवित्र हृदय भागुरायण, जिसे सेना के लिए अनिच्छापूर्वक कौटिल्य के आदेशानुसार मलयकेतु के साथ विश्वासघात करना पड़ता है, मालापुत्र सिद्धार्थक, जिसे धन के लिए नतग्रीव होकर न चाहते हुए भी चाण्डाल का भेष बनाना पड़ता है। सभी पात्र अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व लेकर आते हैं। तात्पर्य यह कि मुद्राराक्षस में समाज के हर स्तर का कार्यकलाप सन्निविष्ट करने की चेष्टा की गयी है। इस नाटक के अध्ययन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि उस समय चातुर्वर्ण्य में मर्यादा के अनुसार ब्राह्मणों का विशेष आदर था तथा चाण्डालादि का समाज में अत्यन्त निम्न स्थान था। समाज और जीवन के रूप में कार्य-कलाप की सत्ता अनिवार्यतः प्रतिष्ठित कर उनकी स्वानुभूति को गौण रूप दे कर देशकाल का पूरा सन्निवेश किया गया है। विशाखदत्त से पूर्व संस्कृत नाट्यचेतना आभिजात्यवादी परम्पराओं में पोषित थी। किन्तु इस कवि ने आभिजात्य वर्ग के साथ सामान्य स्तर के जनजीवन के चरित्रों का भी अपने नाटक में समावेश कर एक नया परिष्कार उपस्थित कर दिया है।

प्रस्तुत नाटक की रचना का उद्देश्य नन्दवंश के नाश द्वारा मौर्य साम्राज्य की स्थापना और चाणक्य के चरित्रोत्कर्ष का वर्णन करना है, जिसमें नाट्यकार को वांछनीय सफलता मिली है। मुद्राराक्षस में सब से बड़ी विशेषता यह है कि इसमें तात्कालिक भारतीय राजनीतिक षड्यन्त्र का एक निष्पक्ष चित्र है। कलात्मक निपुणता के उदाहरण संस्कृत के दूसरे नाटकों में भी मिल सकते हैं, पर कथा के साथ भावात्मक राजनीतिक निपुणता का विशिष्ट रूप इसी में परिलक्षित होता है। इसमें न तो अगाध भविष्य की सम्भावनाओं की झांकी प्रस्तुत की गयी है और न कोई रोमांटिक वातावरण उपस्थित किया गया है। चाणक्य की कुटिलनीति—जो है, वह वही है,—निर्मम, नग्न, कठोर, सत्य, न कुछ अधिक न कुछ कम। वहाँ विशाखदत्त चाणक्य की कुटिल नीति की तरह विस्तृत, गम्भीर बनकर अनेक पात्रों में बिखर जाते हैं, किसी एक पात्र के निर्माण में उनकी प्रतिभा नहीं अटकती—सभी पात्र अपने अपने क्षेत्र, अपनी अपनी सीमा में चाणक्यनीति के उन विविध पहलुओं के सूत्र का प्रस्तुतीकरण करते हैं, जिनकी विविधता में ही एकता है, जिनकी खण्डता में ही अखण्डता है।

इस नाटक पर कुछ आलोचकों का यह आक्षेप है कि इसमें छल प्रपंच वर्णन द्वारा किसी उल्लेखनीय आदर्श की स्थापना नहीं की गयी, किन्तु राजनीति के क्षेत्र में कूटनीति का प्रयोग क्षम्य है। वस्तुतः इस कृति में आदर्शोन्मुख यथार्थ का सुन्दर निर्वाह हुआ है।

मूलत किसी भी नाटक के उद्देश्य दो प्रकार के होते हैं। एक तो भावबोध के आवर्त्तन से उत्पन्न और दूसरा कुछ प्रभावों एवं कुछ अन्य प्रवृत्तियों के संयुक्त कारणों से प्रेरित। इन कारणों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक उथल पुथल भी होते हैं। जब कोई नाटकीयवस्तु सामान्य प्रवृत्ति या भावबोध से विकसित होती है तो उसका उद्देश्य गहरा और तात्त्विक होता है। जब वह राजनीतिक प्रवृत्तियों के संयुक्त कारणों से विकसित होता है तो वह केवल आकारात्मक मोड़ में कुछ प्रचलित रूपों का समर्थन करके समाप्त हो जाता है। यह आकारात्मक उद्देश्य, कुछ काल के लिए अतिप्रबल हो जाता है और वह ऐसा प्रभाव उत्पन्न करता है कि लगता है जैसे पूरा का पूरा क्षेत्र मूलत भावबोध के आवर्त्तन से उद्भूत है, किन्तु कालान्तर में ऐतिहासिक दूरी प्राप्त करने के बाद, जब उसका मूल्यांकन होता है तो प्रायः ऐसा लगता है कि समूचा का समूचा स्वरूप ही एक प्रकार की स्थिति से समुद्भूत है और सारा नयापन सारा आग्रह केवल मूल भावबोध के विभिन्न संभव पक्षों में से एक पक्ष का ही समर्थक है।

मुद्राराक्षस का उद्देश्य इसी द्वितीय कोटि का है। भारतीय जीवन में चाणक्य का व्यक्तित्व अति आकर्षक सिद्ध हुआ है। संस्कृत साहित्य में विशाखदत्त को अपने इस नाटकीय उद्देश्य के लिए ख्याति तो मिली ही—मुद्राराक्षस से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य के कतिपय कवि, नाटककार और लेखकों ने इस महामहिम व्यक्ति को इसी उद्देश्य की सफलता के हेतु विभिन्न रूपों में अपनी अपनी श्रद्धान्जलियाँ अर्पित की हैं। विशाखदत्त ने मौर्ययुग के भारत की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और नैतिक दशा का चित्र खींचकर आदर्शोन्मुख यथार्थ की स्थापना में सफलता प्राप्त की है। यह बात इस नाटक के कथानक एवं वर्णनों से स्पष्ट हो जाती है। विशुद्ध कूटनीतिक राजनीति के विवरण विश्लेषण को मूल उद्देश्य मानकर लिखा गया यह नाटक अपने उद्देश्य की पूर्ति में कदाचित् उपलब्ध सम्पूर्ण संस्कृत नाट्य साहित्य में अकेला है। उद्देश्य की दृष्टि से संस्कृत नाट्य साहित्य के रंग मंच पर विशाखदत्त का उदय एक असाधारण घटना है। विशाखदत्त के सजग व्यक्तित्व ने कूटनीति के सभी तत्त्वों को आत्मसात कर लिया है। इसके लिए उन्होंने अपने नाटक की कथावस्तु राजनीतिक्षेत्र से ली है। ऐतिहासिक और पौराणिक वृत्त के आधार पर लेखक ने अपने नाटक का ढाँचा खड़ा कर चाणक्यनीति का मार्मिक चित्र उपस्थित किया है। इस नाटक में राजनीति की स्वस्थ कथा और उदात्त चरित्रों से शक्ति संचय करना ही नाटककार का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति में नाटककार को यथेष्ट सफलता मिली है।

नाट्यगत अन्य विशेषताएं

मुद्राराक्षस कर्मसाधना अथवा अहर्निश कार्यतत्परता का संदेश देने वाली सफल नाट्यकृति है। इसमें वीररस के 'युद्धवीर' नामक प्रकार का भली भाँति निर्वाह हुआ है। शृंगारादि अन्य रसों का समावेश इसका कथावस्तु के अनुकूल नहीं है। इस नाटक का लक्ष्य केवल राजनीतिक षड्यत्रों का प्रतिपादन मात्र न होकर सत्त्वमय ओजोगुण का प्रकाशन भी है। अत नाट्य वृत्तियों की दृष्टि से एक ओर जहाँ इस नाटक में सत्त्वगुण प्रचरित 'सात्त्वती वृत्ति' है, वहाँ दूसरी ओर छल, कपट तथा अभिमान की सूचक 'आरभटी वृत्ति' भी है। सात्त्वती वृत्ति के अन्तर्गत नाट्यकार ने 'संघातक' नामक भेद का प्रयोग किया है। क्योंकि कौटिल्य से राक्षस का विग्रह, मित्र अथवा स्वामी के प्रति अनन्यभक्ति का फल है और वह उसे दैववशात् भी मानता है।

मुद्राराक्षस अपने नाटकीय ऐश्वर्य के लिए सुप्रसिद्ध है। रंग मंच पर अभिनीत होने की योग्यता ही इसकी सफलता का अंतिम प्रमाण नहीं है। यद्यपि इसमें विशाखदत्त की अभिनयकला का

विशिष्ट गुण स्थान स्थान पर परिलक्षित हैं, फिर भी इसकी महत्ता अद्भुत [illegible] की [illegible]
प्रक्रिया से अलंकृत होने के ही कारण है। यह नाटक शिल्प की उपलब्धियों से पूर्ण होते हुए हैं
और पाठक दर्शक बने बिना भी इन्हें देखता रहा है और देख-देखकर आनन्द का [illegible] में
मग्न हो रहा है। यही इस नाटक की चमत्कार [illegible] है।

नाटककार की शैली में रस—भावों का स्वाभाविक वातावरण [illegible] उसका रूप और
सौंदर्य [illegible] और तन्मयता [illegible] है।

नाटक मात्र प्रस्तावना में ही आरम्भ हो जाता है। प्रथम अङ्क में दो ही सूत्रधार की वचना [illegible]
के अनन्तर में [illegible] है कि [illegible] का [illegible] पड़ा है —

"आः क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्तमभिभवितुमिच्छति।"

देखो कितना ही छोटा-सा वाक्य [illegible] के साथ नाटकीय कथानक
का [illegible] में प्रवेश होता है। सच तो यह है कि प्रबन्ध में [illegible], ऐसा घटनाओं को
नाटक [illegible] नहीं ढूंढ निकाला जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि नाट्य
कला की कोई भी [illegible] विशाखदत्त से छुआ रहकर नहीं छूने पाई। अन्तर्द्वन्द्वों
का भी [illegible] मिलता है। इसके पूरे नाटकीय विशेषताओं की [illegible]
इतना [illegible] में [illegible] नहीं, [illegible] और विवेचन, [illegible] और रस की विवेचना
[illegible] है। [illegible] में महाकवि कालिदास की कृतियों को छोड़कर संस्कृत नाट्य-साहित्य
में [illegible] की [illegible] है। इसका स्थान भी
संस्कृत के अन्य नाटकों की अपेक्षा [illegible] है। संस्कृत के अन्य नाटकों की परम्परा के
विपरीत विशाखदत्त ने 'विदूषक' का इसमें बिल्कुल ही बहिष्कार कर दिया है। इतना ही नहीं
अपितु [illegible] के द्वारा स्त्री-पात्रों के लिए भी कोई स्थान सुरक्षित नहीं
रखा। चन्द्रगुप्त की [illegible] अत्यन्त [illegible] है। विषकन्या और [illegible]
की [illegible] हुई है। विशाखदत्त की एक और निजी विशेषता है कि उन्होंने नाट्य
वस्तु के [illegible] के लिए [illegible], [illegible] पात्रों का [illegible] में कल्पना की है।
[illegible] है, [illegible] का [illegible] में [illegible] है और [illegible] करने
[illegible] रहता है—इसीलिए इन्होंने [illegible] अनुकूल रहा
हो। इस नाटक का 'वृत्त' [illegible] है और पात्रों का चारित्रिक [illegible] प्राप्त होने
[illegible]। एक वाक्य में—विशाखदत्त ने इसमें
'कार्य' की एकता का निर्वाह करने में अद्भुत [illegible] प्रदान की है। [illegible]
[illegible] प्रदान किया है। [illegible] में [illegible]
राजनीति के [illegible] के द्वारा इस नाटक का अपना महत्त्व है। भाव और शिल्प की दृष्टि
से [illegible] नाटककार की [illegible] और विशेषता के दर्शन होते हैं।

अनन्तचतुर्दशी |
वि० सं० २०२९ |

विनयावनत—
—जगदीशचन्द्र मिश्र

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

चाणक्य : आचार्यविष्णुगुप्त, मौर्यसाम्राज्य का प्रतिष्ठापक, महान् राजनीतिक, प्रस्तुत नाटक का नायक।
राक्षस : नन्द साम्राज्य का महामात्य, चाणक्य का प्रतिद्वन्द्वी, नाटक का प्रतिनायक
चन्द्रगुप्त : मौर्यसाम्राज्य का संस्थापक, चाणक्य का दृढ भक्त।
मलयकेतु : महाराज पर्वतक का पुत्र, चन्द्रगुप्त का प्रतिस्पर्द्धी, राक्षस का सहायक।
चन्दनदास : राक्षस का अभिन्न मित्र, पाटलिपुत्र का नगरसेठ।
भागुरायण : मलयकेतु का कपटी मन्त्री, चाणक्य का गुप्तचर।
जीवसिद्धि : क्षपणक वेषधारी चाणक्य का गुप्तचर, राक्षस का कपटी मित्र।
सिद्धार्थक : चाणक्य का विश्वासी गुप्तचर।
सुसिसार्द्धक : चाण्डाल वेषधारी सिद्धार्थक का मित्र।
निपुणक : राक्षस की अगूठी लाकर चाणक्य को देने वाला एक गुप्तचर।
शार्ङ्गरव : चाणक्य का शिष्य गुप्तचर।
विराधगुप्त : राक्षस का गुप्तचर।
आर्य जाजलि : पर्वतीय राजकुमार मलयकेतु का कञ्चुकी।
प्रियंवदक : राक्षस का परिजन।
शकटदास : राक्षस का परम मित्र।
आर्य वैहीनरि : मौर्य साम्राज्य का कञ्चुकी।
करभक : राक्षस का गुप्तचर।
दौवारिक : राक्षस का द्वारपाल।
वेत्रधारी पुरुष : कुमार मलय केतु का परिजन।
भासुरक : कुमार मलय केतु का अनुचर।
पुरुष : चाणक्य का गुप्तचर।
बालक : चन्दनदास का पुत्र।
वैतालिक : राक्षस द्वारा प्रतिनियुक्त चारणद्वय।
सूत्रधार : नाटक का सञ्चालक।

स्त्री-पात्र

शोणोत्तरा : मौर्यसम्राट् की द्वारपालिका।
विजया : मलय केतु की द्वाररक्षिका।
कुटुम्बिनी : चन्दनदास की धर्मपत्नी।
नटी : सूत्रधार की सहायिका।

सम्मतिपत्राणि

(१) आचार्य : श्रीकृष्णमोहनठक्कुरः

प्रधानाचार्य (रणवीर संस्कृत विद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)

विशाखदत्तविरचितमन्वर्थनामोपेतं रुचिरपदावलिकलितम् अभिरामरामणीयकं मुद्राराक्षसनामकं नाटकं को न जानाति संस्कृतसमाजे। रसानुगुणपदबन्धुरमिदं नाटकं सहृदय-हृदयावर्जकमित्यत्र न कस्यापि सहृदयस्य संशीतिलेशः। अस्य पद्यार्थस्फोटनमतिकठिनम्। विविधानवद्यविद्याविद्योतितान्तःकरणो विद्वद्धौरेयवर्यो प्रतिनिलुः श्रीजगदीशचन्द्रमिश्रोऽस्मदन्तेवासी परिश्रमेण हिन्दी-संस्कृताङ्ग्लभाषासु सम्यक्तया-र्थस्फोटनं प्रत्यान्तरङ्गप्रतिपादनं च सम्यक्तया स्फुटीकृतवानिति दर्शं दर्शं कस्य सचेतसो मनः सन्तोषं नावहति। अत्र सामान्या अपरिहेयांशा मुख्यव्याख्याने क्वचित्का विशिष्टाश्च उपपत्तयो बोधसौकर्याभिप्रायैश्च विमर्शभागे समुपनिबद्धाः सन्ति। क्वचिदस्फुटार्थानि वाक्यानि पदान्तरयोगेन साधु स्फोरितानि विद्यन्ते। सरससरलानि प्रसाद-माधुर्यप्रशसनीयरमणीयानि समुच्छलद्रसप्रवाहसन्दोहतुन्दिलानि चमत्कारचञ्चुराणि सौरभसभारसंभृतानि सुमनः-पुञ्जरञ्जनानि हृदयानि पदानि व्याख्याने प्रयुक्तानि समवलोक्य चेतः प्रसीदतितमाम्। मन्ये चेहगुणोपेतमपूर्वं संस्करणमिदं सञ्जातम्। तदेतन्मनीषिनिवहेभ्योऽन्तेवासिसहस्रेभ्यो जनतासौजन्यविस्फुटितेभ्योऽपरं तोषकरं भूयात्, टीकाकारश्च स्वानुरूपं यशः प्राप्नुयाद् भूतभावनश्रीविश्वनाथकृपयेति समधिकं कामयते।

(२) श्री आनन्दनारायण शर्मा

हिन्दी विभाग : गणेशदत्त महाविद्यालय, बेगूसराय, मुंगेर

मुझे श्री जगदीशचन्द्र मिश्र संपादित सानुवाद "मुद्राराक्षस" देखने का सुयोग प्राप्त हुआ था, विशाखदत्त के मुद्राराक्षस के इससे पूर्व भी एकाधिक अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। पर यह निःसन्देह सब अनुवादों को पीछे छोड़ गया है। श्री मिश्र जी ने अपनी इस 'विमला' व्याख्या में संस्कृत पद्यों के अन्वय और शब्दार्थ के अतिरिक्त हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद तो दिए ही हैं, टिप्पणियों द्वारा विशेष प्रसङ्गों की सविस्तर व्याख्या और काव्य सौन्दर्य का निर्देश भी किया है। इतने परिश्रम और अवधान पूर्वक प्रस्तुत किए गए अनुवाद कम देखने में आते हैं। अनुवाद की भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है और वह मूल के वैशिष्ट्य को सुरक्षित रखने में पूर्णतः समर्थ है।

हिन्दी के साथ अंग्रेजी अनुवाद जोड़ देने से पुस्तक अहिन्दी-भाषियों के लिए भी उपादेय बन गई है। मैं व्याख्याकार श्री मिश्र जी को उनके श्रम और वैदुष्य के लिए हार्दिक साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि अनतिदूर भविष्य में वे इसी प्रकार संस्कृत वाङ्मय के अन्य रत्नों को भी सामान्य जनों के लिए सुलभ बनायेंगे।

(3) Dr. JAYAMANTA MISHRA

University Professor & Head, Department of Sanskrit,
Bihar University, Muzaffarpur.

At present,

Professor of Sanskrit, Indian Co-operation Mission,
Kathmandu, Nepal.

"MUDRARAKSASA" is a unique play composed with a purely political theme. Due to subtle plot construction and well-knit scenes it has got an individual stamp.

Viśakhadatta, the author of the play, being an erudite scholar, is well acquainted with the technicalities of dramaturgy, astronomy and Nyaya Vaiśesika systems. He has therefore successfully woven the political theme to gether with the technicalities of different Sastras. Hence this play requires a good commentary to explain its subtlety. Shri Jagdish Chandra Mishra has done a valuable service to meet a long-felt demand of the students and teachers interested in the subject by presenting the useful commentary "Vimalā" and rendering it into English and Hindi. Rendering is always a difficult art but Shri Mishra has achieved great success. It is hoped that Shri Mishra's present annotation would meet the demand of readers.

(4) VISHVESHVAR PRASĀD SINGH

Principal. K. S S. College, Lakhi Sarai, Monghyr

"MUDRARAKṢASA" is an unparalelled work of Viśakhadatta. It is one of the great Sanskrit dramas in seven acts based on the political intrigues of Chanakya, the minister of king Chandra Gupta of Pataliputra, to win over Rakshasa to his side, who was a former loyal minister of Nandas. The drama is full of life, action and sustained interest, and represents curious state of public morals. Viśakhadatta's diction is admirably forcible and direct.

The present work of Shri Jagdish Chandra Mishra is unique in several essentials Shri Mishra has adopted the most popular and appropriate version of the text. The English and Hindi Translation of the text is literal as well as idiomatic. The work of Shri Mishra is most useful for the scholars and students as well All these peculiarities will take the Sanskrit text easily understandable. It is hoped that the commentary will meet the long-felt desideratum of the students and the general readers alike.

हिन्दी

मुद्राराक्षस

व्याख्याकार

श्री जगदीशचन्द्र मिश्र

टीकाकर्तुर्मङ्गलम्

(१)

दीनानाथसनाथितो गुणगणैः 'श्रीकीर्तिनाथो' बुध-
स्तातो मे च 'सरस्वती' भगवती 'माता' गृहे भास्वती।
ध्यात्वा भूसुरभूषितं सुविमलं तत्पादपद्मं हृदा
मुद्राराक्षसनाटकस्य 'विमला' कुर्वे विमर्शान्विताम्॥

(२)

विशाखदत्तकृतिनः कृतौ कृतपरिश्रमः।
सचन्द्रो जगदीशोऽयं निस्तन्द्रस्तनुते मुदा॥

(३)

अन्तेवासिमिलिन्दवृन्दमहितं विद्वन्मरालाश्रितं
कीर्त्यामोदभरैर्विभासितदिशं सद्भिः शिरोभिर्धृतम्।
'गेनालाल'-सुधीपदाम्बुजमहं मूर्ध्ना समाराधयं-
स्तस्मै श्रीगुरवे समर्प्य 'विमला' नूत्नां सुधास्यन्दिनीम्॥

(४)

चन्द्रन्ति चेतसि कला ललितानि तानि
यत्पादपङ्कजरजांसि रजोहराणि।
अन्तःस्मृतान्यपि तमांसि बहिः क्षिपन्ति
तं 'कृष्णमोहन' गुरुं सततं स्मरामि॥

॥ श्रीः ॥

मुद्राराक्षसम्

सटिप्पण 'विमला' व्याख्योपेतम्

प्रथमोऽङ्कः

धन्या केयं स्थिता ते शिरसि शशिकला किं नु नामैतदस्या
नामैवास्यास्तदेतत्परिचितमपि ते विस्मृतं कस्य हेतोः ।
नारीं पृच्छामि नेन्दुं कथयतु विजया न प्रमाणं यदीन्दु-
र्देव्या निह्नोतुमिच्छोरिति सुरसरितं शाठ्यमव्याद्विभोर्वः ॥ १ ॥

विमला

अन्वयः—का इयम् धन्या ते शिरसि स्थिता ?—शशिकला । एतत् अस्या नाम नु किम् ? अस्या नाम एव । तदेतत् ते परिचितमपि कस्य हेतोः विस्मृतम् । नारीं पृच्छामि इन्दुं न—यदि इन्दुः प्रमाणं न, विजया कथयतु । इति, देव्याः सुरसरितम् निह्नोतुम् इच्छोः विभोः शाठ्यं वः अव्यात् ॥

व्याख्या—का=किंनामधेया (who is by name), इयम्=दृष्टिगोचरीभूता (this), धन्या=श्लाघ्या (blessed one), ते=तव (your) शिरसि=उत्तमाङ्गे (on head) स्थिता=विद्यमाना (resting) ।—शशिकला=चन्द्रस्य भागविशेषः (a lunar digit) । एतत्=एष (this here) अस्याः=स्त्रियः (woman's), नाम=संज्ञा (by name) नु=(अव्यय) (A particle having an interrogative force and implying some doubt) किम्=प्रश्नवाचकः (used interrogatively) अर्थात्=Is that her name ? अस्याः=मन्मस्तकालङ्कारभूतायाः, नाम एव=संज्ञा एव (That indeed is her name) तदेतत्=एष (this) ते=तव (your) परिचितमपि=विदितमपि (also familiar), कस्य हेतोः=केन हेतुना (How is), विस्मृतम्=अपरिचितमिव (Forgot) नारीम्=स्त्रियम् (to woman), पृच्छामि=ज्ञातुमिच्छामि (want to know), इन्दुम्=चन्द्रम् (to the moon) न=नहि (not)—यदि=यद्वा (if) इन्दुः=चन्द्रः (The moon), प्रमाणम्=विश्वासावहम् (believe),

न = नहि (not) विजया कथयतु = भवत्सखी विजयैव वदतु (Let Vijaya tell) इति देव्या = पार्वत्या (wife of God Shiva, born as the daughter of the Himalaya mountain) सुरसरितम् = गङ्गाम् (The Celestial river) निह्नोतुम् = गोपायितुम् (concealing), इच्छो. = अभिलषित. (anxious) विभोः = व्यापकस्य (of Lord Shiva) शाठ्यम् = चातुर्यम् (trickery) व. = युष्मान् (all of you) अव्यात् = पायात् (protect)

हिन्दी—(पार्वती) आपके सिर पर बैठी यह कौन भाग्यवती है ? (शिव)—चन्द्रकला। (पार्वती)—क्या यही उसका नाम है ? (शिव) नाम ही तो, और इसने तो तुम परिचित भी थी—पता नहीं इसे भुला कैसे गई ? (पा०) मैं इस चन्द्रमा को नहीं पूछता। उस औरत को पूछती हूँ। (शिव) औरत ! अगर तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं, तो तुम्हारी सखा विजया ही बोले। इस प्रकार देवी पार्वती के सन्देह-कटाक्षों से गङ्गा की रक्षा में आकुल भगवान् शङ्कर की चातुर्य तुम्हारी रक्षा करे॥ १॥

English —O Lord ! Who is this fortunate one resting on your head ? shashikala (a lunar digit). Is that realy her name ? That is, and you were well acquainted with it. How did you forget it ? I ask about the woman and not the moon.-If you do not believe in the moon, let Vijaya, (your attendant) tell you May the trickery of such lord Shiva, anxious to conceal the celestial river Ganga from his wife Parvati, save you

टिप्पणी—धन लब्धा इस विग्रह से यत् प्रत्यय लगाकर धन्य बना। धन्य शब्द से स्त्रीलिङ्ग में टाप् प्रत्यय कर 'धन्या' रूप का निर्माण हुआ। धन्या अर्थात् भाग्यवती। पार्वती के द्वारा गङ्गा के लिए प्रयुक्त इस विशेषण में प्रथमतः पार्वती की ईर्ष्या ही अभिव्यक्त होती है। शिव अर्द्ध नारीश्वर हैं। उनके सम्पूर्ण वामाङ्ग पर पार्वती का अधिकार है। फिर—अपने से अधिक दिव्य युवतिस्वरूप गङ्गा को पति के सिर पर अवस्थित देखकर, देवी की ईर्ष्या से जल भुन उठना भी स्वाभाविक ही है। अथवा, यहाँ 'धन्या' शब्द 'अधन्या' परक है। इसने निन्दा की अभिव्यक्ति होती है। पूज्य पति के सिर चढ़ने वाली नारी तो निन्दनीय है ही। व्यतिरेक लक्षण से इस अर्थ की स्पष्टाभिव्यक्ति है। किम्वा—'**धन्या योषिता प्रलोभिका**' इस वचन से—प्रलोभन शीला गङ्गा को अपने सिर पर चढ़ा रखा है, यह उपालम्भ भी व्यक्त होता है। देवी पार्वती अगर 'सर्वज्ञा' हैं तो ये सारे सवाद कवि-कल्पना के अतिरिक्त अर्थहीन ही हैं। **परिचितमपि ते** = 'परि' उपसर्गक 'चि' धातु से कर्म में वर्त्तमानार्थक 'क्त' प्रत्यय से (परि + चि + क्त) 'परिचितम्' बना। यहाँ 'ते' में 'क्तस्य च वर्त्तमाने' इस नियामक सूत्र के द्वारा 'अनुक्ते कर्त्तरि षष्ठी' से षष्ठी विभक्ति हुई। **कस्य हेतोः**—'निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां प्रायदर्शनम्' की नियामकता से 'हेतो' में षष्ठी विभक्ति हुई। व्याकरण के नियम से को हेतु, कं हेतुम्, केन हेतुना, कस्मै हेतवे, कस्मात् हेतो, कस्मिन् हेतौ इत्यादि प्रयोग भी चलते हैं। इसके लिए 'निमित्तादिप्रयोग तेभ्य तत्समानाधिकरणशब्देभ्यश्च' इत्यादि के सन्दर्भ में 'षष्ठी हेतुप्रयोग' और 'सर्वनाम्नस्तृतीया च' इत्यादि सूत्रों पर नागश का विवरण द्रष्टव्य है

नारीं पृच्छामि नेन्दुम्—इसमें 'प्रच्छ' धातु द्विकर्मक है। देवी ने इसका प्रयोग प्रधान कर्म के अर्थ में ही किया है। फलतः—'मैं आपसे उस औरत को पूछती हूँ न कि चन्द्रमा को'—इस अर्थ की प्रतीति है। शिवजी, इसे अप्रधान कर्म में प्रयुक्त मान कर समझते हैं कि उस नारी का नाम पूछती हूँ। 'नि' उपसर्गक 'ह्नु' धातु से तुमुन् प्रत्यय करने पर **'निह्नोतुम्'** बना। इसका अर्थ छिपाना है। इसी प्रकार 'अव'+'लिङ्' (आशिषि) धातु से रक्षा के अर्थ में 'अव्यात्' प्रयुक्त है।
मुद्राराक्षसम्—मुद्रया गृहीतं राक्षसमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः मुद्राराक्षसम्। यहाँ उक्त विग्रह में 'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' सूत्र से अण् प्रत्यय तथा '[illegible] वुन् छाश्च' सूत्र से नपुंसकान्त कर 'मुद्राराक्षसम्' बना। इसका अर्थ है—मुद्रा अर्थात् अंगूठी से राक्षस नामक व्यक्ति को पकड़ने के सम्बन्ध में एक रूपक ग्रन्थ।

प्राचीनों ने निर्विघ्नतापूर्वक ग्रन्थसमाप्ति के लिए ग्रन्थारम्भ में मङ्गल का विधान किया है। इस मङ्गल के आशीः, नमस्क्रिया और वस्तुनिर्देश रूप तीन भेद हैं। महाकवि विशाखदत्त ने इस नाटक में अपने इष्टदेवता महादेव के गुणकथनपूर्वक आशीर्वचन रूप प्रथम कोटिक मङ्गल का विधान किया है। इस मङ्गल श्लोक के प्रत्येक शब्द एवं उसके अर्थ से नाटकीय वस्तु प्रतिध्वनित होती है। मङ्गल श्लोक का उमामहेश्वर-संवाद भी नाटकीय पृष्ठाधार पर ही अवस्थित है।

नाट्य वस्तु में क्रमबद्धता, प्रभाव और क्षमता लाने के लिए—इस नाटक में नाटकीय तथ्यों के साथ माङ्गलिक बिम्बों की मनोनुकूल योजना की गई है। मुद्राराक्षस के समग्र नाटकीय तथ्यों की इस मङ्गल में स्पष्टतम अभिव्यक्ति है। कवि ने नाटकीय क्रमबद्धता और प्रभाव-क्षमता की योजना की। नान्दी पद के इन दोनों माङ्गलिक श्लोकों में विरक्त शिव में अनुरक्ति की उद्भावना कर—स्पष्ट रूप चित्र की तरह खींचा है। नाटकीय घटना प्रवाह की सहज रोचकता—वीतराग महादेव में रतिनायकत्व की योजना से ही अभिव्यक्त है। इसी प्रकार नाटकीय संवाद की योजना में रोचकता तथा उसकी पूर्ण अन्विति इस मङ्गल के उमा महेश्वर-संवाद में स्पष्ट है।

संवाद-योजना में आवश्यक विस्तार और विषयान्तर की अपेक्षा संक्षिप्तता और स्वाभाविकता पर बल दिया जाता है। इसमें मूल प्रत्यक्ष घटनाओं का विवरण पूर्ववृत्त के साथ आभासित रहता है। इस मङ्गल श्लोक के नायक योगी शिव में नाटक के वीतराग नायक चाणक्य के चरित्र का आभास मिलता है। गङ्गा और उमा के मध्य अन्य प्रेमद्वन्द्व में चाणक्य की धर्म और प्रेम की नीति का द्वन्द्व सूचित है। नाटक में घटनात्मक चेतना जितनी ही अधिक अन्तर्निहित होगी—उसमें कुतूहल और रोचकता भी उतनी ही सन्निविष्ट होगी। पार्वती की ईर्ष्या युक्त आँखों से गङ्गा को छिपाने की नाटकीय घटना में चाणक्य के द्वारा मलयकेतु की आँखों से चन्द्रगुप्त के छिपाव का स्पष्ट संकेत मिलता है। इसी प्रकार रक्षार्थ तत्पर महादेव का कौतूहल सहृदय सामाजिकों के कौतूहल का प्रतीक है। स्पष्ट है—नान्दीपाठ के ये दो श्लोक अर्थचमत्कार में ध्वनि प्रतिध्वनियों से परिपूर्ण एवं आकर्षक हैं। इसमें एक विशिष्ट तात्पर्य—चमत्कारी ध्वनि से है।

कुछ प्राचीन टीकाकार ने इसमें व्याजोक्ति अलङ्कार माना है। यह गूढाशयप्रतीति अलङ्कार है। इसमें उस रहस्य के प्रकट होने पर उसे किसी बहाने छिपाया जाता है। व्याज का अर्थ ही बहाना है। इसमें वक्ता अपनी गोपनीय बात को छिपाने के लिए ऐसी युक्ति का सहारा लेता है, जो यथार्थ नहीं होती। यहाँ शङ्कर ने 'शशिकला' रूप छद्म उक्ति के व्याज से सिरस्थित गङ्गा रूप वस्तु का गोपन किया है।

कुछ आधुनिक व्याख्याकारों ने इसमें वक्रोक्ति अलङ्कार माना है। वक्रोक्ति का अर्थ है टेढ़ा कथन। वक्ता के अन्यार्थक वाक्य का यदि श्रोता काकु या श्लेष के द्वारा अन्यार्थक कल्पना करता

है तो वहाँ वक्रोक्ति होती है। प्रस्तुत पद्य में पार्वती द्वारा प्रयुक्त शङ्कर के मस्तक स्थित नारी के प्रति जिज्ञासा का अर्थ उन्हें 'शशिकला' के रूप में प्रतीत होता है। साथ ही वक्ष्यमाण नाटकीय वस्तु की व्यञ्जना भी इससे ध्वनित होती है। अतः स्पष्टतः यहाँ वक्रोक्ति अलङ्कार है।

किन्तु, अगर मैं अपनी बात कहूँ, तो मुझे इसमें उल्टी गङ्गा बहती दिखाई देती है। इस विषमता के भीतर से मुझे व्यतिरेक की ध्वनि सुनाई पड़ती है। व्यतिरेक का अर्थ है विशेष प्रकार का अतिरेक या आधिक्य। अर्थात् गुणविशेष के कारण उपमान की अपेक्षा उपमेय में ही अधिक उत्कर्ष दिखाया गया है। दर-असल इसमें चमत्काराधान भी इसी अर्थवत्ता या उपमेयाधिक्य के कारण हुआ है। यहाँ उपमान गङ्गा से उपमेय शशिकला अपने विशिष्ट गुणों से बढ़ता प्रतीत होती है।

इसके साथ ही इसमें 'उत्प्रेक्षा' और 'अपह्नुति' नामक अलङ्कारों के अङ्गाङ्गिभाव से 'सङ्कर' की भी ध्वनि है। यहाँ उत्प्रेक्षा का स्वरूप होगा—

पहले तो बस मैं ही मैं थी। भगवान् अर्द्धनारीश्वर के आधे शरीर पर मेरा ही आधिपत्य था। वामाङ्ग पर मेरा अधिकार और पूर्ण आधिपत्य की सब कहीं चर्चा थी। सबकी श्रद्धा का मैं ही एकमात्र आधार थी। पर अब तो सारा ठाठ ही बदल गया। मेरे वे सौभाग्य के दिन सदा के लिए लद गये। अब मुझे कौन पूछे? मैंने तो आधे शरीर में ही अधिकार पाया था। यहाँ तो यह नई सुहागिन माथे पर चढ़कर ही इतरा रही है, जिसके सौन्दर्य के आगे मुझ जैसा सूरत वाली पानी भरे। लोग बैठकर अब इसी की चर्चा करेंगे। जैसे, इसी कमक से खोई-खोई सा पार्वती बिसूरने लगी हो।

और अपह्नुति इस प्रकार—

इसमें प्रकृत गङ्गा को छिपाकर अप्रकृत उपमानभूत शशिकला का स्थापन किया गया है। अर्थात् सच्ची बात को छिपाकर झूठी बात प्रकट की गई है। तभी तो यह प्रतीति है कि यह गङ्गा नहीं, शशिकला है—लोग भी तो ऐसा ही समझेंगे।

फिर दोनों में अङ्गाङ्गिभाव सङ्कर का कारण यह है कि यहाँ अपह्नुति के सहारे ही उत्प्रेक्षा खड़ी है। क्योंकि यदि लोग गङ्गा को शशि न समझें तो फिर पार्वती को गङ्गा के बिसूरने की कोई बात ही नहीं रहती। उसका मान सम्मान ज्यों का त्यों बना रह जाता है। इसलिए अपह्नुति का कल्पना उत्प्रेक्षा की जड़ जमाने में सहायता पहुँचाती है। सहायक होने के कारण ही वह अङ्ग रूप में उपस्थित होती है। झलक दिखाकर उत्प्रेक्षा के प्रधान शृङ्गार को निखार देना है। क्योंकि गङ्गा को शशिकला मान लेने की अपेक्षा, इसी कसक से पार्वती के बिसूरन रहने में अधिक चमत्कार है।

दूसरी ओर, यदि पार्वती हैरान न होती तो गङ्गा को शशिकला माने जाने का कुछ भी गौरव नहीं रह जाता। अतः दोनों अलङ्कारों की आपस की अपेक्षा स्पष्ट है। यह अपेक्षा ही यहाँ साङ्कर्य का बीज है। अतः यहाँ 'उत्प्रेक्षाऽपह्नुति' की सम्मिलित ध्वनि है।

इसमें स्रग्धरावृत्त है। मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण हैं। तथा तीन बार सात सात अक्षरों पर यति है। अतः यहाँ स्रग्धरा नामक वृत्त है। इसकी परिभाषा है —

'म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितयम्'

S S S S I S S I I I I I I S S I S S I S S
ध न्या के यं स्थि ता त शि र सि श शि क ला किं नु ना मै त द स्या ।

अपि च—

पादस्याविर्भवन्तीमवनतिमवने रक्षतः स्वैरपातैः,
सङ्कोचेनैव दोष्णां मुहुरभिनयतः सर्वलोकातिगानाम् ।
दृष्टिं लक्ष्येषु नोग्रां ज्वलनकणमुचं बध्नतो दाहभीते-
रित्याधारानुरोधात्त्रिपुरविजयिनः पातु वो दुःखनृत्यम् ॥ २ ॥

विमला

अन्वयः—आविर्भवन्तीम्, अवनेः, अवनतिम्, पादस्य, स्वैरपातैः, रक्षतः, सर्वलोकातिगानाम्, दोष्णाम्, मुहुः, सङ्कोचेनैव, अभिनयतः, दाहभीतेः, लक्ष्येषु, ज्वलनकणमुचम्, उग्रां, दृष्टिम्, न, बध्नतः, त्रिपुरविजयिनः, आधारानुरोधात्, इति, दुःखनृत्यम्, वः, पातु।

व्याख्याः—आविर्भवन्तीम् = प्रादुर्भविष्यन्तीम् (Would have manifested) अवनेः = भूमेः (of the earth) अवनतिम् = अधोगमनम् (bowing down) पादस्य = चरणयोः (of the feet) स्वैरपातैः = मन्दविक्षेपैः (by gentle steps), रक्षतः = परिहरत (avoided), सर्वलोकातिगानाम् = अतिविस्तृतानाम् (beyond all the world), दोष्णाम् = भुजानाम् (of his arms), मुहुः = प्रतिक्षणम् (every moment) सङ्कोचेनैव = संक्षेपेणैव (by the mere contraction), अभिनयतः = अङ्गविक्षेपं विदधतः (gesticulated), दाहभीतेः = नयन किरणात् जगतः दहनशङ्कात् (Through fear of a conflagration), लक्ष्येषु = दर्शनविषयेषु (on objects of his gaze), ज्वलनकणमुचम् = अग्निस्फुलिङ्गवर्षणशीलाम् (emitted sparks of fire) उग्राम् = घोराम् (fierce) दृष्टिम् = नेत्रम् (the third eye), न बध्नतः = न क्षिपतः (did not fix on), त्रिपुरविजयिन. = शिवस्य (The conqueror of the Tripura, Lord Shiva) आधारानुरोधात् = अङ्गविक्षेपणाद्याश्रयीभूतभूतलादेरधः पतनाद्यभावतात्पर्यात् (Through a regard for the arena), दुःखनृत्यम् = कष्टतोऽनुष्ठीयमाननर्तनम् (Uneasy dance), वः = युष्मान् (all of you) पातु = अवतु (protect).

हिन्दी—यही नहीं—(ताण्डवनृत्य के समय) चरणों के आघातों से यह धरती कहीं धँस न जाय,—ऐसी सम्भावना से हर क्षण बचते-बचते, भावभङ्गिमा प्रदर्शित करने में हाथों के प्रसार से कहीं लोक-लोकान्तरों का विनाश न हो जाय—अतः भुजाओं के सङ्कोच से ही नृत्य के भावों को प्रदर्शित करते हुए—अग्नि स्फुलिङ्गों या ज्वालाओं को निरन्तर उगलते रहने वाली ललाटस्थ तीसरी आँख को बिना किसी वस्तु पर टिकाते ही, अर्थात् किसी वस्तु पर तीसरी आँख पड़ते ही वह जलकर खाक न हो जाय—इस सम्भावना से बचते हुए—रङ्गमञ्च की हर सीमाओं को नज़र अन्दाज़ करते हुए—दुःख से नृत्य में निरत भगवान् त्रिपुरारी शिव का यह ताण्डवनृत्य तुम्हारी रक्षा करे।

English—Besides this—May the dance of Lord Tripurari, rendered uncomfortable due to his kindly feeling for the stage, guard you;

the victor of Tripura (Shive) who avoided the bending of the earth by gentle steps at the time of his dance, which would have made obvious itself by the wilful fall of the foot, who often gesticulated by the absoltute gesture of his arms that out reached all the world and for fear of a conflagration, did not fix his gaze on objects that emitted sparks of fire.

टिप्पणी—आविर्भवन्तीम् = आविस + भू + शतृ स्त्रियाम्, ताम्। यह शब्द अवनति की विशेषता प्रकट करता है। अत यहाँ भविष्यत् काल के लिए निश्चित आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, फिर भी—'यति' की दृष्टि से यदि यह आवश्यक ही माना जाय तो—प्रथमा सामानाधिकरण्य से 'वर्त्तमान समीपे वर्त्तमान वद्वा'—व्याकरण शास्त्र की इस नियामकता से, सामीप्यार्थक वर्तमान प्रयोग से शतृ प्रत्ययान्त लट् का विधान मान लने पर कुछ आपत्ति नहा रह जाती। 'रक्षत' का प्रयोग यहाँ परिहारार्थक है, व्यवहार में ऐसा प्रयोग विरल ही है।

स्वैरपातै = हरणम् इति हृ + घञ् से सम्पन्न रूप है। 'भावे हर। 'पात' का अर्थ यहाँ 'पदक्षप' है। स्व हर एवु 'स्वैरा' अर्थात् 'स्वव्यवस्थित तादृशा पाता अर्थात् अनिव्यवस्थित चरणक्षप। किम्वा अमरकोष में स्वैर का अर्थ 'मन्द' है—'मन्दस्वच्छन्दयो स्वैर'। इस अर्थ में 'स्वादीरेरिणो' सूत्र से वृद्धि कर करण तृतीया' से तृतीया विभक्ति का रूप सम्पन्न हुआ। सकोचेनैव—से यह प्रकट होता है लास्यरत शकर की भुजाओं का पूर्ण अभिनय सम्भव नहीं। 'करणे तृतीया' से यहाँ भी तृतीया का विधान है।

अमरकोष के '**भुजबाहू प्रवेष्टो दो**' के अनुसार दोस्' का अर्थ 'बाहु' होता है। 'पद्धन्नेत्यादि' सूत्र से दोस् का वैकल्पिक रूप दोषन् भी होता है। अत 'दोष्णाम्' का प्रयोग यहाँ बाहु के अर्थ में वैकल्पिक ही है। ***अभिनयत*** —यहाँ ताण्डवार्थक आवश्यक अशमात्र अभिनय शब्द प्रयुक्त है। **सर्वलोकातिगानाम्**—सर्वेलोका 'सर्वलोका' कर्मधारय समास तान् अतिगच्छन्ति इति सवलोक + अति + गम्, गमेर्ड' से कर्त्ता के अर्थ में ड प्रत्यय—तेषाम् सर्वलोकातिगानाम् यह शब्द यहाँ दोष्णाम् का विशेषण बनकर प्रयुक्त है। **ज्वलनकणमुचम्** = ज्वल + कर्त्तरि युच्, ज्वलन =अग्नि। ज्वलन् कणान् मुञ्चतीति ज्वलनकण + मुच् + कर्त्तरिकिप्, ताम् ज्वलनकणमुचाम्। *यह दृष्टि का* विशेषण बनकर प्रयुक्त है। **दाहभीते** = दाहाद् भीति तस्या दाहभीते। यहाँ 'हतो पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति हुई। इस प्रयोग पर भट्टोजि दीक्षित का यह सिद्धान्त द्रष्टव्य है— विभाषा इति योगविभागाद् अगुणस्त्रियाम् च क्वचिद्—धूमादग्निमान्, नास्ति घटोऽनुपलब्ध।' आधार—आभियेन अस्मिन् अनेन वा इति, आ + धृ + घञ् अधिकरणे करणे वा **आधार**। आधारस्यानुरोध, आधारानुरोध तस्माद् अधारानुरोधात् 'हता। पञ्चमी' से यहाँ पञ्चमी विभक्ति हुई। **दु खनृत्यम्**—दु:खयतीति दु:खन् (पचाद्यच्) दु:खम्-नृत्यम्। इसे दु:ख-नृत्य इसलिए कहा गया है कि शकर के इस नृत्य में सृष्टि-सहार के भय से न तो स्वतन्त्र पदक्षेप है, न बाहुओं का अनर्गल आस्फालन हो, दृष्टि पर पूर्ण नियन्त्रण है फिर भी नृत्य है। 'दु:खनृत्य' शब्द यहाँ श्लेषात्मक सकेतपरक है। सकेत का स्पष्टीकरण आगे करेंगे।

किसी भी नाटक के लिए यथार्थ के साथ आदर्श का समन्वय जितना आवश्यक है, सम्भवत रसोत्कर्ष के लिए संघर्ष भी उतना ही आवश्यक है। जिस नाटक में इस सघर्ष की

चेतना जितनी ही मात्र होगी, उसमें कुतूहल और रोचकता का उतना ही गम्भीर समावेश होगा। क्योंकि, घटना के विकास और संवादों के अर्थगौरव की सर्वाधिक विशेषता कुतूहल में निहित रहती है। यह नाटक सम्पूर्ण रूप से सर्वांगपूर्ण तो है ही—इसमें कुतूहल की रक्षा भी अन्त तक सावधानी से की है। इसका कौतूहल जहाँ चरम सीमा पर पहुँचा है, वहीं नाटक की भी परिसमाप्ति आ गई है। इन सारे भावों को एक साथ समेट कर कवि विशाखदत्त ने प्रारम्भ के इन दो मांगलिक श्लोकों में ही अभिव्यक्त कर दिया है। इन दोनों पद्यों में आशीर्वादात्मक मंगल के व्याज से भगवान् शंकर और उनके कृत्यों के रूपक में समस्त नाटकीय व्यापार के सूत्रधार दो मन्त्रियों (चाणक्य एवं राक्षस) की सूचना दी गई है। चाणक्य, जो दोनों के गुरु हैं प्रथम पद्य में आते हैं। भगवान् शङ्कर ने जिस कौशल से गंगा को गौरी की दृष्टि से बचाया है—उसी प्रकार चाणक्य का कौशल चन्द्रगुप्त की मलयकेतु से रक्षा करना—इस अर्थ की ध्वनि प्रथम श्लोक में है। इसी प्रकार दूसरा श्लोक [illegible] द्वितीय मन्त्री राक्षस के लिए है। इसमें भगवान् शंकर ताण्डवनृत्य प्रारम्भ करते हैं और समस्त सृष्टि को आपत्ति में डाल देते हैं। पुनः नियन्त्रित पदक्षेप, अनुशासित हस्ताभिनय और व्यवस्थित नेत्रावलोकन से—जो सब उन्हें दुःख नृत्य के लिए प्रेरित करते हैं इस सृष्टि को संहार से बचा लेते हैं। उसी प्रकार मन्त्रि-श्रेष्ठ राक्षस ने एक आन्दोलन चलाया, जिसने मलयकेतु को अपने पूरे राजकीय परिवारों के साथ विपत्ति में डाल दिया। किन्तु, अन्त में अपने दुःखनृत्य अर्थात् उपयोगी कार्यों से राक्षस ने—जो बहुत पहले से ही उसमें था—बिगड़ती हुई स्थिति को सँभाल लिया। अथवा—यहाँ भी भगवान् शंकर के इस ताण्डवनृत्य में चरितनायक चाणक्य के नीति-ताण्डव का आभास मिलता है।

इस श्लोक में भी स्रग्धरावृत्त है। परिभाषा लिखी जा चुकी है। यहाँ तक अलङ्कार का प्रश्न है—इसमें भी एकमत नहीं। कुछ लोगों ने इसमें सम्बन्धातिशयोक्ति माना है। अतिशयोक्ति सादृश्य गर्भ अभेद प्रधान अध्यवसाय मूलक अर्थालङ्कार है। इसमें उपमान के द्वारा उपमेय का ज्ञान होता है। अथवा—उपमान उपमेय का निगरण कर उसके साथ अभेद स्थापित करता है। यहाँ वस्तु का वस्तुतः से सम्बन्ध नहीं रहने पर भी सम्बन्ध प्रतिपादन के कारण टीकाकारों ने सम्बन्धातिशयोक्ति माना है। कुछ लोग इसमें 'परिकर' अलङ्कार मानते हैं। परिकर का अर्थ है उपकरण या उत्कर्षक वस्तु। जहाँ विशेषणों का प्रयोग साभिप्राय किया जाता है, वहाँ यह अलङ्कार होता है। इसमें उपकरण का प्रयोग ही इस प्रकार किया जाता है कि रचना में स्वतः उत्कर्षाधान हो जाता है। जिस प्रकार उपकरणों के द्वारा किसी वस्तु की रमणीयता बढ़ जाती है, उसी प्रकार साभिप्राय विशेषणों से किसी भी प्रकार के कथन में सौन्दर्य आ जाता है। सादृश्य तत्त्व तो नहीं है हाँ, साथ ही [illegible] वर्ग के अन्तर्गत विशेषण वैचित्र्य से ही इसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। यों तो इस श्लोक के सभी विशेषण ही साभिप्राय हैं, किन्तु—[illegible] साभिप्राय विशेषण की दृष्टि से त्रिपुर विजय का प्रयोग ही अधिक चमत्कारक है। कुछ ने इस श्लोक में 'अधिक' अलङ्कार माना है। इस अलङ्कार में आधार अथवा आधेय में से किसी एक के आधिक्य का वर्णन रहता है। यह एक विरोधमूलक अलङ्कार है। इसमें आधिक्य का यथार्थ वर्णन न होकर कवि कल्पना प्रसूत या चमत्कारपूर्ण होता है। अस्तुतः भगवान् शंकर के चरणपतन रूप आधेय का अवनि रूप आधाराश्रय की अपेक्षा अधिक वर्णन रहने के कारण ही अधिक अलङ्कार माना है। श्लोक में पाञ्चाली रीति एवं प्रसाद गुण है।

(नान्द्यन्ते)

सूत्रधार —*अलमतिप्रसङ्गेन । आज्ञापितोऽस्मि परिषदा यथाद्य त्वया* सामन्तवटेश्वरदत्तपौत्रस्य महाराजभास्करदत्तसूनो कवेर्विशाखदत्तस्य कृतिरभिनव मुद्राराक्षस नाम नाटकम् नाटयितव्यमिति । यत्सत्य काव्यविशेषवेदिन्या परिषदि प्रयुञ्जानस्य ममापि सुमहान्परितोष प्रादुर्भवति । कुत —

विमला

व्याख्या—नान्द्यन्ते = नन्दयति आनन्दयति लोकानिति नान्दी तस्या अन्ते = अवसाने (*after the blessing*), सूत्रधार = प्रधाननट. (a stage manager), अतिप्रसङ्गेन = अतिविस्तरेण (with excessive talk) अलम् = व्यर्थम् (worthless) परिषदा = गोष्ठ्या (coun il or audience) आज्ञापित = आदिष्ट (commanded by) अस्मि = भवामि (am) सामन्त = चक्रवर्त्ती (The tributary prince) वटेश्वरदत्त पौत्रस्य (grand son of Vatesvara Datta), महाराज = (महाराजति उपाधि) (the holder of the title of Maharaja) भास्करदत्तसूनो = भास्करदत्तस्य पुत्र (son of Bhaskar Datta) कवे = नाटकप्रणेतु (dramatist) विशाख दत्तस्य कृति = विशाखदत्तस्य रचना (drama of Vishakha Datta) अभिनवम् = नवीनम् (ne v), मुद्राराक्षस नाम नाटकम् = मुद्रयाऽङ्गुलिमुद्रया परिगृहीतो राक्षसो यत्र तदधिकृत्यकृतो ग्रन्थो मुद्राराक्षसम्, नाम = तत्सञ्ज्ञक नाटकम् (drama called the Mudrarakshasa) नाटयितव्यम् = अभिनेतव्यम् (to be staged) यत्स यम् = अस्मद्विरचिताऽभिनयस्य दर्शनात् हर्षो भवतीति (certainly) काव्यविशेषवेदिन्याम् = काव्यस्य गुणदोषविशेषज्ञानाम् (the aud ence knowing the excellence of dram) परिषदि = सामाजिकसंसदि (audience, council) प्रयुञ्जानस्य = प्रयोक्ष्यमाणस्य, ममापि = अस्माकमपि (My also) सुमहान् परितोष = अतिसन्तोष (very great satisfaction) प्रादुर्भवति = उत्पद्यते (feel), कुत (for) ।

हिन्दी— (नान्दी की समाप्ति पर)

सूत्रधार—इसके सम्बन्ध म विस्तारपूर्वक कुछ कहना व्यर्थ है। दर्शकों ने हा मुझ आज यह आज्ञा दिया ह कि महाराज भास्करदत्त के पुत्र और सामन्त वटश्वर के पौत्र नाटककार विशाखदत्त की अभिनवकृति मुद्राराक्षस का अभिनय करो। और, सच तो यह ह कि काव्य विशेषज्ञों के सामने ही अपनी कला प्रदर्शित करने में कलाकार को सच्चा सन्तुष्टि मिलती है। क्योंकि—

(After the blessing)

English—Stage manager—Away with vehement talk I am asked by the audience to represent a new drama 'Mudrarakshas' the work of the poet Vishakhadatta, son of Bhaskaradatta the holder of the title Maharaj, grand son of the tributary prince, Vatesvar datta, Really I feel very great satisfaction, acting before a council capable of apreciating merits of drama

चीयते वालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।
न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते ॥ ३ ॥

टिप्पणी—नान्द्यन्ते=नन्दन नन्द 'भाव घञ्' से घञ् प्रत्यय, नन्दस्य इयम् नान्दी 'नन्देदम्' मे अण् प्रत्यय कर रूप सम्पन्न हुआ। **अतिप्रसङ्गेन**=प्र+सञ्ज+घञ्=प्रसङ्ग, अति उचित प्रसङ्ग अतिप्रसङ्ग उस अतिप्रसङ्गेन, यहाँ 'करणे तृतीया' से तृतीया विभक्ति हुई। दूसरा 'अलम्' शब्द का भी इसी प्रयोग है हा। अतः तृतीया विभक्ति होना ही चाहिए। **आज्ञापितः**—आङ्+ज्ञा+णिच् से कर्म में क्त प्रत्यय लगाकर 'आज्ञापित' रूप सम्पन्न हुआ। इसमें 'ज्ञा' धातु है। **परिषदा**—'परि' उपसर्गक सद् धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर अधिकरण कारक में परिषद् रूप हुआ। **सामन्त**—कवि के पितामह सामन्त थे और पिता को महाराज की पदवी मिली थी। वे वस्तुतः महाराज नहीं थे। **मुद्राराक्षसम्**—इसकी व्युत्पत्ति पहले लिखी जा चुकी है। **यत् सत्यम्** यह एक अव्यय है और इसका अर्थ 'निश्चय' है। **काव्यविशेषवेदिन्याम्**—वि+विद्+णिन् से ज्ञान के अर्थ में विद्‌ बना। काव्यस्य विशेषं काव्यविशेषं न वेत्ति इति इति। यह परिषद की प्रशंसा है। साथ ही इससे यह भी सूचित होता है कि यह नाटक उच्च कोटि का है और अभिनेय है। प्रकारान्तर से यह काव्य प्रशंसा भी है। **प्रयुञ्जानस्य**—प्र पूर्वक युज धातु से कर्ता के अर्थ में शानच् प्रत्यय लगाकर प्रयुञ्जान रूप बना। 'प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु' इस सूत्र से आत्मनेपद हुआ। यह 'मन' का विशेषण बतलाता है।

विमला

अन्वयः—वालिशस्यापि, कृषिः, सत्क्षेत्रपतिता चीयते। शालेः, स्तम्बकरिता, वप्तुः गुण, न, अपेक्षते ॥ ३ ॥

व्याख्या—वालिशस्यापि=अज्ञातकृषिविषयस्य (even a foolish person), कृषिः=कर्षणकर्म उप्यमाना बीजम् (to scatter seeds) सत्क्षेत्रपतिता=उत्कृष्टभूमौ प्रयुक्ता (fallen in a good ground), चीयते=वर्द्धते (thrive), शालेः=धान्यस्य (of paddy), स्तम्बकरिता=प्राचुर्यम् (Luxuriant growth) वप्तु=बीजारोपकस्य (sower) गुण=चातुर्यादिकम् (merit) न=नहि (not) अपेक्षते=इच्छति (to expect).

हिन्दी—उर्वरा भूमि में कृषिकर्म में अनभिज्ञ व्यक्ति द्वारा बोये गये बीज भी लह-लहा उठता है। उन बालियों में फूटकर निकलने वाला धान, बीज बोने वाले किसान की योग्यता की अपेक्षा नहीं रखता।

English—Scattered seeds grow profusely in fertile soil, even being sowed by an ignorant peasant. The clustered paddy does not expect any merit in the sower.

टिप्पणी—चीयते-कर्मकर्त्ता में यहाँ लट् लकार का प्रयोग है। चीयते का अर्थ है अत्यन्त मात्रा में। बालिशस्य-'बाले शेते' इस विग्रह में 'ड' प्रत्यय से 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्' ६।३।१४ इस सूत्र से सप्तमी का अलुक् 'र' और 'ल' की एकता से बालिश पद की सिद्धि हुई। 'बालिशस्तु शिशौ मूर्खे' इस मेदिनी कोष के अनुसार बालिश का अर्थ है मूर्ख। यहाँ इसका प्रयोग नट ने

अपने लिए किया है। यह केवल नट के विनय प्रदर्शन की उक्ति है। **सत्क्षेत्र**=से तात्पर्य है उर्वरा भूमि का अर्थात् यह प्रयोग सामाजिकों के लिए है। इस शब्द का प्रयोग परिषद की प्रशंसा में है। **स्तम्बकरिता**='स्तम्ब करोतीति' इस विग्रह में 'स्तम्बकृतो' सूत्र से इन् प्रत्यय करके स्तम्बकरि बना। इसके बाद भाव में तल् प्रत्यय का रूप 'स्तम्बकरिता' बना।

अलङ्कार निर्देश में यहाँ भी विद्वानों में मतभिन्नता है। कुछ लोग इसमें अर्थान्तरन्यास अलङ्कार मानते हैं। *यह अलङ्कार सादृश्यगर्भ अलङ्कारों के अन्दर गम्यौपम्याश्रय वर्ग का अलङ्कार* है। जहाँ सामान्य का विशेष के साथ अथवा विशेष का सामान्य के साथ समर्थन किया जाय वहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार होता है। यहाँ पूर्वार्द्ध का परार्द्ध के साथ वैधर्म्य के द्वारा समर्थन रूप अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

कुछ की दृष्टि में इस श्लोक में दृष्टान्तालङ्कार है। इस अलङ्कार में उपमेय वाक्य एवं उपमान वाक्यों तथा उसके साधारण धर्मों में बिम्ब प्रतिबिम्बभाव होता है। इसमें किसी बात को कहकर उसकी पुष्टि के लिए तत्सदृश अन्य बात कही जाती है। उपमेय तथा उपमान दोनों के साधारण धर्म भिन्न भिन्न होते हैं, दृष्टान्त का अर्थ निश्चय भी होता है। प्रस्तुत *वस्तु की असन्दिग्ध प्रतीति* ही निश्चय है। इसमें वर्णनीय विषय का उदाहरण द्वारा निश्चय होता है। इस लक्षण से जैसे अज्ञकर्तृक उत्कृष्ट भूमि में निहित बीज बढ़ता है—इस सामान्य के द्वारा या अप्रस्तुत के द्वारा उसी प्रकार इस विद्वत्सभा में मेरे द्वारा किये गये प्रयोग भी सफल होगा—इस विशेष या प्रस्तुत के प्रतिपादन से अप्रस्तुतप्रशंसा मूलक दृष्टान्त अलङ्कार हुआ। जैसे—उर्वरा भूमि में प्रयुक्त *कृषि अर्थात् बीज—अनभिज्ञ बीजरोपक के गुण की बिना अपेक्षा के ही फलातिशयोत्पादक होता* है, उसी प्रकार नर्त्तक के गुण की अपेक्षा किये बिना भी सभा में क्रिया के आधारपात्रों के गुण से अभिनय की निपुणता रूप बिम्बप्रतिबिम्ब की प्रतीति के कारण यहाँ दृष्टान्त अलङ्कार हुआ।

कुछ विद्वानों के मत में यहाँ निदर्शना अलङ्कार है। इस अलङ्कार में दो वाक्यों में परस्पर सम्भव या असम्भव सम्बन्ध होने पर भी उपमा के द्वारा उनमें सम्बन्ध की कल्पना की जाती है। इसके द्वारा निश्चित रूप से सादृश्य का अभिव्यञ्जन या प्रकटीकरण होता है। इस श्लोक में अनभिज्ञ किसान के द्वारा की गयी खेती में भी फलातिशय की उत्पत्ति बिम्बप्रतिबिम्बभाव की *प्रतीति है। इन दो असङ्गत प्रतीत होने वाले वाक्यों में सादृश्य का नियोजन कर उसमें सङ्गति* की स्थापना की गयी है। फिर इस दृष्टान्त के द्वारा सभासदों की गुणग्राहिता एवं सहृदयता की चर्चा करते हुए स्वयं नटकर्तृक अनभिज्ञता के द्वारा विनयशीलता या प्रदर्शन दृष्टान्त द्वारा प्रतिपादित होने के कारण *निदर्शना अलङ्कार है।*

इस श्लोक में प्रसादगुण एवं वैदर्भी रीति है। कुछ लोग इसे अनुष्टुपवृत्त कहते हैं। यथार्थतः *इसमें पथ्यावक्त्रनामक वृत्त है। पथ्यावक्त्र में समपाद के चतुर्थ वर्ण के अनन्तर जगण होता है।* अर्थात् पञ्चम और सप्तमवर्ण लघु और षष्ठवर्ण गुरु होता है। प्रथम तृतीय पाद में तो यगण ही रहता है।

ल ल गु ल
। ।ऽ।
चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्र पतिता कृषि

तद्यावद् इदानीं गृहं गत्वा गृहिणीमाहूय गृहजनेन सह सङ्गीतकमनुतिष्ठामि। (परिक्रम्यावलोक्य च) इमे नो गृहा:, तद्यावत् प्रविशामि। (नाट्येन प्रविश्यावलोक्य च) अये तत् किमिदमस्मद्गृहेषु महोत्सव इव दृश्यते। स्वस्वकर्मण्यधिकतरमभियुक्तः परिजनः। तथा हि—

विमला

व्याख्या—'यावत्' अयं शब्दोऽत्र वाक्यालङ्कारार्थः। तत्=तस्मात् कारणात् (For that, reffering to something not present), इदानीं=साम्प्रतम् (even now), गृहं गत्वा=सद्म प्राप्य (having gone home), गृहजनेन सह=परिजनेन सह (with the occupant of the house) सङ्गीतकम्=गानम् (Singing), अनुतिष्ठामि=करिष्यामि (Commence), परिक्रम्यावलोक्य च=कियद्दूरं गत्वा दृष्ट्वा च (Going round and observing), नः=अस्माकम् (our), इमे गृहाः=सद्मानि (houses), नाट्येन=नटोचितमङ्गीविशेषेण (acting) प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा (after entering) अये=आश्चर्यम् (Holla) तत्=इति वाक्यालङ्कारे, इदम् किम्=अपरं पश्यामि (what do I see) अस्मद्गृहे=अस्मद्भवने (in our house), महोत्सव इव=हर्षातिशय इव (as a great festival) दृश्यते=अवलोक्यते (see), स्व स्वकर्मणि=स्वकीयस्वकीयकार्ये (in their respective duties) अधिकतरम्=अत्यर्थम् (excessive) अभियुक्तः=निविष्टः (engaged) परिजनः=गृहजनः (house-hold attendents), तथाहि (Thus)

हिन्दी—अच्छा तो सम्प्रति घर जाकर घर के लोगों के साथ नाटक के गीत का आयोजन करूँ (घूमकर और देखकर) यह यह रहा हमारा घर अच्छा भीतर चलूँ (अभिनय के साथ प्रवेश कर और देखकर)। अरे! यह क्या? हमारे घर में तो लगता है कोई बड़ा उत्सव हो रहा है। सभी लोग अपने अपने कामों में बड़ा ही मनोयोग से लगे हैं।

English—Now having gone home, commence music with the inmates of house (going round and after looking) Here is our house. I enter (Acting entry and looking about) Hallo, what is this! It seems as it were a great festival in our house. The inmates of house were highly engaged in their own works. Still.

टिप्पणी—'यावत्' का प्रयोग यहाँ अवधारणार्थक अव्यय के रूप में है। गृहजनेन=गृहस्य. जन. गृहजनः तेन गृहजनेन, यह जन शब्द जातिपरक एकवचनान्त है। 'शक्तार्थिवादि' से मध्यम पद लोपी समास और 'सहार्थे तृतीया' से तृतीया विभक्ति 'गृहजनेन' रूप की निष्पत्ति हुई। स्वस्व कर्मे 'स्वकर्मे' यहाँ 'स्व' शब्द आत्मीयपरक 'निज' वाचक है। स्व स्व कर्म अस्मिन् इस विग्रह में 'स्व' का वाप्सात्मक द्वित्व है। 'अभि' उपसर्गक 'युज्' धातु से कर्ता में 'क्त' प्रत्यय करने में 'अभियुक्तः' बना।

यद्वतिजलमियं पिनष्टिगन्धानियमियमुद्ग्रथते स्रजो विचित्राः ।
मुसलमिदमियं च पातकाले मुहुरनुयाति कलेन हुंकृतेन ॥ ४ ॥

भवतु । कुटुम्बिनीमाहूय पृच्छामि । (नेपथ्याभिमुखमवलोक्य)

गुणवत्युपायनिलये स्थितिहेतोः साधिके त्रिवर्गस्य ।
मद्भवननीतिविधे कार्याचार्ये द्रुतमुपेहि ॥ ५ ॥

विमला

अन्वयः—इयम्, जल, वहति, इयम्, गन्धान्, पिनष्टि, इयम्, विचित्रा, स्रजः, उद्ग्रथते, इदम्, मुसल, पातकाले, मुहु, कलेन, हुंकृतेन, याति ॥ ४ ॥

व्याख्या—इयम् = काचित् स्त्री (This one), जलम् = सलिलम् (water), वहति = आनयति (Carrying), इयम् = अपरा स्त्री (another woman), गन्धान् = गन्धद्रव्याणि (fragrant herbs) पिनष्टि = चूर्णयति (pounding), इयम् = अन्या (This another), विचित्रा = नकवर्णा (diversified), स्रजः=पुष्पमाला (garlands), उद्ग्रथते = प्रथ्नाति (stringing together), इदम् = श्रूयमाणं (this hearing), मुसलम् = मुसलदण्डं (a mace), पातकाले = धान्याद्युपरिपातनक्षणे (at the time of descent), मुहु = असकृत् (repeatedly), कलेन = मधुरेण (with a sweet) हुंकृतेन = 'हुम्' इति शब्दविशेषेण ('hum' sound) याति = अनुकरोति (accompanying) ॥ ४ ॥

भवतु = आस्ताम् (well), कुटुम्बिनीं=गृहिणीम् (wife) आहूय = आवाहनं कृत्वा (Call) पृच्छामि = (ask her). नेपथ्यस्य=वेषनिर्माणालयस्य (the attiring room) अभिमुखम् = सम्मुखम् (towards) अवलोक्य = दृष्ट्वा (Looking).

अन्वयः—हे गुणवति, उपायनिलये, स्थितिहेतोः, त्रिवर्गस्य साधिके, कार्याचार्ये, मद्भवननीतिविधे, द्रुतम्, उपेहि ॥ ५ ॥

व्याख्या—हे गुणवति = सम्यक्कृतस्वगृहकार्यनैपुण्यादिगुणालङ्कृते (O the talented). उपायनिलये = गृहकर्मपाटवादिनिवासभूते (expert in devising expedients), स्थितिहेतोः = लोकयात्रासम्पादिनीम् (for the sake of existence), त्रिवर्गस्य-साधिके = धर्मार्थकामात्मकस्य निर्वाहयित्रि (provider of the three objects). कार्याचार्ये = कर्त्तव्यार्थोपदेशकर्त्रि, (instructor in all duties), मद्भवननीतिविधे = अस्मद्गृहसम्बन्धिनीतिविधास्वरूपिणि (code of moral of my house) द्रुतम् = शीघ्रम् (Quick) उपेहि = समागच्छ (come) ॥ ५ ॥

हिन्दी—(सामने दीखने वाली) एक नटी तो पानी ढो रही है। दूसरी, *सुगन्धित द्रव्यों* को पीस रही है। तीसरी, अनेक रंग की मालायें गूँथ रही है। इतना ही नहीं—उधर वह मूसल *गिरने के साथ-साथ मीठी 'हुंकार' भरती हुई कुछ कूट रही है ॥ ४ ॥*

जो हो—पत्नी को बुलाकर पूछता हूँ (नेपथ्य की ओर देखकर)

अरी ओ गुणवे ! गृहकार्य में चतुर गृहशान्ति के कारणस्वरूप, मेरे धर्म, अर्थ और काम

रूपी त्रिवर्ग की साधिके ! कर्त्तव्याकर्त्तव्य की मार्गदर्शिके ! मेरे घर की नीतिविद ! कहाँ हो ? शीघ्र आओ।

English—This one is fetching water, another is pounding aromatic herbs, that one is stringing together diversified garlands, another is accompainying with a sweet 'hum' (a kind of sound) the mace at the time of its descent

Well, I will call my wife and ask her (Looking towards the decorating room) O the talented, the dwelling place of remedy, accomplishing of the group of three, which is the reason of stability of worldly life, admonisher of my all duties, the great learning of moral of my house Come soon

टिप्पणी—गन्धान् = 'गन्धद्रव्याणि' यहाँ गन्ध द्रव्य से तात्पर्य है सुगन्धित जड़ी-बूटियों, जो उस समय शृंगार प्रसाधन के उपयोग में लाया जाता थीं। यह 'पिनष्टि' क्रिया का कर्म है रुधादि पिष् धातु से लट् लि में पिनष्टि बना है। उद् उपसर्ग से ग्रथ धातु के लट् लकार का 'उद्ग्रथत' रूप है। किन्तु यह अपाणिनीय प्रयोग है। अनुदात्ति में उपसर्ग वशात् सकर्मकता है। इसी प्रकार हुन्+कृ+क्त प्रत्यय भाव में यह रूप सिद्ध है। सहार्थे तृतीया से यहाँ तृतीया विभक्ति हुई।

'भवतु' यह एक मुहाविरेदार संस्कृत का प्रयोग माना जाता है। यह बहुधा अव्यय की तरह विषयान्तर में प्रयुक्त होता है। कुटुम्बिनस्यास्तीति 'कुटुम्बी' तस्य भार्या—'पत्नी' के अर्थ में यहाँ प्रयुक्त है।

नेपथ्य —यह रंगभूमि का पिछला भाग है, जहाँ पात्र सजते हैं या विश्राम करते हैं। इसमें सूच्य दृश्यों की सूचना दी जाती है।

'गुणवत्युपायनिलये' इत्यादि श्लोक में नाटककार ने सूत्रधार के द्वारा नटी का आह्वान किया है। इस आह्वान की कल्पना बड़ी ही सूक्ष्म प्रतीत होती है। आरम्भ में इस आह्वान की कल्पना की अर्थध्वनि से नाटककार की योग्यता का स्पष्ट ही पाठक को परिचय मिल जाता है। इस नाटक के चरितनायक चाणक्य के द्वारा उनकी अनन्य सहचरी कूटराजनीति के आह्वान की सुन्दर एवं मार्मिक उद्भावना नटी के द्वारा की गयी है। पुस्तक के प्रारम्भ में इस आह्वान का समावेश कर कवि ने जहाँ पाठक के लिए इस नाटक के द्वार का उद्घाटन अबाधरूप से कर दिया है, वहाँ दूसरे इससे इस नाटक के निर्माता की योग्यता की पूर्वपीठिका भी स्पष्ट हो जाती है। नाटक का आरम्भ होने से होते इन बातों का विवेचन यह सिद्ध कर देता है कि उसका रचयिता अनेकों किन्ना सुलझा हुआ है और कितना सन्तुलित है। इसके ज्ञान की गहराई का पता तो विषय ही दे देता है और 'आह्वान' विवेचन उस ज्ञान का प्रयोगोन्मुखता या (Communicative) होने का। अर्थात् विषय की गरिमा ही उसके ज्ञान की इयत्ता को नहीं सूचित करती, प्रत्युत नाटकीय रहस्य के विवेचन करने की उसकी प्रौढ़ प्रांजल यह एक प्रणाली है कि वह दुरूहता को छूकर या छेड़कर ही नहीं छोड़ देता, उसे गंगाजल सा स्वच्छ या दर्पण सा पारदर्शी तक बना डालने की क्षमता रखता है। विशाखदत्त ने इस छोटे से पद्य में इस नाटक के विवेच्य विषय और प्रयोजन की ऐसी वैज्ञानिक अवतारणा की है कि उनके सफल नाटककार होने की बात हृदय में पैठ जाती है। ऐसे ही, आकाश का कुहरा हटने और नालिमा

के निखर उठने पर अधिकारी पछी को भी उड़ान भरने के लिए पर तोलने का अवसर मिल जाता है। नाटककार, दर्शक एवं पाठक सभी अपने अपने अधिकार को आरम्भ में ही समझ समझाकर आगे पैर बढ़ाते हैं।

हाँ, तो लीजिए इस श्लोक का प्रथम शब्द **'गुणवति'** सूत्रधार के पक्ष में दया दाक्षिण्यादि गुणों से युक्त **'भार्या'** का विशेषण है किन्तु, नाटककार का दृष्टिकोण कूटनीति से चाणक्य की चिरसहचरी कूटनीति परक है। गुण शब्द यहाँ श्लिष्ट है। नटी के पक्ष में जहाँ यह शब्द *दया, दाक्षिण्यादि जैसे नारीसुलभ गुण की प्रतीति कराता है*—वहाँ यही शब्द चाणक्य की राजनीति शब्द से सम्बन्ध जुड़ते ही कुछ अन्य अर्थ की प्रतीति कराता है। इस पक्ष में गुण से तात्पर्य राजनीति के इन छः गुणों से है—(१) **सन्धि, (२) विग्रह, (३) यान, (४) आसन, (५) संश्रय और (६) द्वैधीभाव।**

विरोधियों से कुछ ले देकर समझौता करने का नाम सन्धि है। विग्रह का अर्थ अपकारपरक होना है। 'यान' से आक्रमण की स्थिति का अवबोध होता है। आसन का तात्पर्य है परपक्ष की उपेक्षा करना। संश्रय है—दूसरे की शरण लेना तथा द्वैधीभाव का अर्थ है एक के साथ सुलह करके उनकी सहायता से दूसरे से विग्रह करना। *चाणक्य अपनी उसी कूटनीति का आह्वान करता है जिसके ये छः गुण हैं।*

दूसरा—इसी तरह लहराते *अर्थ वाला शब्द है*—**'उपायनिलये'** *नटी के पक्ष में उपाय का* नारी अर्थ गृहसञ्चालन इत्यादि व्यवस्था में सुयोग्य गृहिणी है किन्तु, यही शब्द जब चाणक्य की नीति परक अर्थ का द्योतन करता है तब—इसका अर्थ होगा है—राजनीति के पञ्चाङ्ग भूत 'उपाय'। अर्थात् कार्यारम्भ करने का उपाय, कार्य को सिद्ध करने में उपयोगी द्रव्य का संग्रह, देश और काल का निरूपण, विपत्तियों को दूर करने के उपाय और कार्य सिद्धि का उपाय। कुछ राजनीतिज्ञों की दृष्टि में चार ही उपाय हैं। वे क्रमशः भेद, दण्ड, साम और दान हैं। चाणक्य की वह नीति जिसका आह्वान नाटककार कर रहा है—इन उपायों से परिपूर्ण है।

मद्भवननीतिविधे—नटी पक्ष में गृहकार्य दक्षा चतुर नारी अर्थ में प्रयुक्त है। किन्तु, यही शब्द जब चाणक्य की नीति का संकेत करता है तब दूसरे ही अर्थ की प्रतीति होती है। वह *अर्थ है—इस नाटक में प्रयुक्त सारी ध्वनि प्रति ध्वनियाँ चाणक्य की नीति विधा से सम्बन्धित हैं।*

स्थितिहेतो—'स्थितेः हेतुः तस्य।' 'हेतो' से पञ्चमी विभक्ति हुई। यहाँ यह शब्द 'त्रिवर्गस्य' का विशेषण है। इसका अर्थ है (१) स्थिति—गृहिणी की व्यवस्थासम्बन्धी दशा (२) दूसरे पक्ष में राज्य की स्थिरता।

साधिके त्रिवर्गस्य—त्रयाणां वर्गः त्रिवर्गः तस्य त्रिवर्गस्य। अर्थात् नटी के पक्ष में धर्म, अर्थ और काम की साधनभूता तथा चाणक्य नीति के पक्ष में—वृद्धि, स्थान और क्षयस्वरूपा।

कार्याचार्ये—से तात्पर्य है कार्य अर्थात् गृहकार्य तथा दूसरे पक्ष में राजनीतिक कार्य।

सूत्रधार के आह्वान में यहाँ, नाटककार की समस्त अनुभूति का भाव रूप में परिपाक है। इस नाटक की मूलनीति चाणक्य के चरित्र से उत्क्रान्त हुई है। यों, नाटकीयवृत्त के आवेष्टन से उसे सर्वथा अछूता नहीं कहा जा सकता, किन्तु, पङ्क से उठे पङ्कज की तरह नाटकीय वृत्त की कंटीली डाल पर यह चाणक्य-नीति का खिला हुआ पाटल प्रसून है। डाल से जितना पृथक् फूल हो सकता है, इस नाटक से उतनी ही पृथक् चाणक्य नीति की सम्भावना की जा सकती है।

(प्रविश्य)

नटी—अज्ज, इअम्हि। अण्णाणिओएण म अज्जो अणुगेह्णदु। (आर्य, इयमस्मि। आज्ञानियोगेन मामार्योऽनुगृह्णातु।)

सूत्रधारः—आर्ये, तिष्ठतु तावदाज्ञानियोगः। कथय किमद्य भवत्या तत्र ब्राह्मणानामुपनिमन्त्रणेन कुटुम्बकमनुगृहीतमभिमता वा भवनमतिथयः सम्प्राप्ताः, यत एष पाकविशेषारम्भः ?

नटी—अज्ज, आमन्तिदा मए भअवन्तो बह्मणा। (आर्य, आमन्त्रिता मया भगवन्तो ब्राह्मणाः।)

सूत्रधारः—कथय कस्मिन्निमित्ते ?

नटी—उवरज्जदि किल भअवं चन्दो त्ति। (उपरज्यते किल भगवान् चन्द्र इति।)

सूत्रधारः—आर्ये, क एवमाह ?

नटी—एवं खु णअरवासी जणो मन्तेदि। (एवं खलु नगरवासिजनो मन्त्रयते।)

विमला

व्याख्या—(प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा = Entering)

नटी—आर्य = पूज्य (Respectable sir) इयमस्मि=एषा अहम् प्राप्ता (Here I am) आज्ञानियोगेन=शासनप्रदानेन (confiding with) माम्=अस्माकम् (me) आर्यः=मान्यो भवान् (noble sir), अनुगृह्णातु=अनुकम्पया कृतकृत्यां विधेहि (May your honour favour me).

सूत्रधारः—आर्ये = मान्ये (Noble lady), तिष्ठतु = आस्ताम् (Let aside for a moment) तावत् = वाक्यालङ्कारार्थकः (so much), correlative of यावत्, आज्ञानियोगः = आदेशप्रदानम् (command for work), कथय = वद (tell me), किमद्य = किमर्थमस्मिन् दिवसे (why today) भवत्या = त्वया (by you), तत्र भवताम् = पूज्यानाम् (venerable), ब्राह्मणानाम् = विप्राणाम् (To a man belonging to the first of the four original castes) उपनिमन्त्रणेन = नियोगकरणेन (by having invited), कुटुम्बकम् = पोष्यवर्गः (family), अनुगृहीतम्=कृतार्थीकृतः (favoured), अभिमता = वाञ्छिता (esteemed), वा = अथवा (or), अतिथयः = अभ्यागताः (guests), भवनम् = गृहम् (to our house), सम्प्राप्ताः = आगताः (come), यतः = यस्मात् (Because of), एष = साक्षात् दृश्यमानः (These) पाकविशेषारम्भः = पाकविशेषोद्योगः (special preparation of meals).

नटी—आर्य = मारिष (My lord), मया (by me), भगवन्तः = पूजनीयाः (the worthy), ब्राह्मणाः = विप्राः, आमन्त्रिताः=भोजनार्थम् निमन्त्रिताः (invited).

सूत्रधारः—कथय = वद (Tell me), कस्मिन्निमित्ते = केन प्रयोजनेन (for what reason).

नटी—भगवान् चन्द्र.=शशी (the moon), उपरज्यते=राहुग्रस्तो भविष्यति (will be eclipsed), किल=खलु (Trifling).

सूत्रधार—आर्ये=मान्ये (Noble lady), क=पुरुषविशेष. (who), एवम्=ईदृक् (like this) आह=कथयति (to say).

नटी—एवम्=इत्थम् (such), खलु=निश्चयेन (Indeed) नगरवासी=नगरवसनशीलः (Urban) जन.=लोक (People), मन्त्रयते=कथयति (to say).

हिन्दी— (रङ्गमञ्च पर आकर)

नटी—आर्य! मैं आ गयी। आदेश देकर मुझे अनुगृहीत करें।

सूत्रधार—आर्ये! मेरी आज्ञा की बात अभी रहने दो। सर्वप्रथम यह बताओ कि कुछ मान्य ब्राह्मणों को तुमने आमन्त्रित किया है? अथवा—बिन बुलाये कहाँ से स्नेहशील अतिथिगण पधार रहे हैं, जिनके लिए विशेष भोज की तैयारियाँ हो रही हैं?

नटी—आर्य, मैंने ही कुछ पूज्य ब्राह्मणों को आमन्त्रित किया है।

सूत्रधार—क्यों? क्या बात है?

नटी—सुना है चन्द्रग्रहण होने वाला है।

सूत्रधार—तुमसे ऐसा किसने कहा?

नटी—नागरिकजन तो ऐसा ही कह रहे हैं।

(Entering)

The actress—Respectable sir, I have come. Let me work for your honour with your order.

Manager—Honourable lady, let my order stay for a moment, tell me first:—have you invited venerable Brahmanas to make our house sacred? or if esteemed guests have themselves come to the house?—That there are these special preparations of meals.

The actress—Lord! I have invited the venerable Brahmanas.

Manager—All's right, but what was the occasion?

The actress—for the moon is going to be eclipsed.

Manager—who says so?

टिप्पणी—आर्य—अर्यते इति आर्य। 'ऋ' धातु से कर्म में ण्यत् प्रत्यय कर आदि स्वर की वृद्धि करने पर 'आर्य' शब्द की निष्पत्ति होती है। इसका अर्थ 'मान्य' है। नाटक में सूत्रधार और नटी के बीच 'आर्य' एवं 'आर्य' पारस्परिक सम्बोधन के रूप में व्यवहृत होता है। साहित्य दर्पण में 'आर्य' शब्द का लक्षण लिखा है—

कर्तव्यमाचरन् काममकर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे स वै आर्य इति स्मृत.॥

इसी प्रकार 'आर्ये' के लिए—'नाट्योक्तौ तु पुमानार्यः आर्ये तु मार्षमारिषौ—इति।'

आज्ञानियोग.—आ+नि+युज्, भावे नियोग। ब्राह्मणानामुपनिमन्त्रणेन—चन्द्रग्रहण की

सूत्रधारः—आर्ये, कृतश्रमोऽस्मि चतुःषष्ट्यङ्गे ज्योतिःशास्त्रे। तत्प्रवर्त्यताम् भगवतो ब्राह्मणानुद्दिश्य पाकः। चन्द्रोपरागम्प्रति तु केनापि विप्रलब्धासि। पश्य—

क्रूरग्रहः स केतुश्चन्द्रं सम्पूर्णमण्डलमिदानीम्।
अभिभवितुमिच्छति बलात्.......... (इत्यर्धोक्ते)

(नेपथ्ये)

आः, क एष मयि स्थिते चन्द्रमभिभवितुमिच्छति बलात्।
सूत्रधारः— ... रक्षत्येनं तु बुधयोगः ॥ ६ ॥

नटी—अज्ज, को उण एसो धरणीगोअरो भविअ चन्दं महाभिओआदो रक्खिदु इच्छदि? (आर्य, कः पुनरेष धरणिगोचरो भूत्वा चन्द्रं महाभियोगात् रक्षितुमिच्छति?)

सूत्रधारः—आर्ये, तल्लक्ष्य ममापि नोपलक्षितं। भवतु। भूयोऽभियुक्तः स्वरव्यक्तिमुपलप्स्ये। ('क्रूरग्रहः'—इत्यादि पुनस्तदेव पठति।)

ग्रहण पर पुरस्सरा स्नान तथा भोजन का विधान है। इस सम्बन्ध में 'धर्मसिन्धु' पृ० २७ एवं धर्मशास्त्रसंग्रह पृ० २१७ एवं २१८ द्रष्टव्य हैं —'अमावस्याष्टकावृद्धि' ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः।' विशेषकर चन्द्रग्रहण के समय भोजन श्राद्धादि वर्जित हैं। इस सम्बन्ध में ध्रुव महाराज के विचार द्रष्टव्य हैं—

राहोश्च दर्शने दत्तं श्राद्धमाचन्द्रतारकम्।
गुणवत् सर्वकामीयं पितॄणामुपतिष्ठति ॥

कुटुम्बकम्—'कुटुम्ब का समूह' कुटुम्बकम्' स्वार्थ में कन् प्रत्यय, अतिथि—अतति गच्छति तिष्ठति इति अतिथिः, अत+इथिः अथवा—न विद्यते द्वितीया तिथिर्यस्य असौ अतिथिः। मनुस्मृति में अतिथि की परिभाषा इस प्रकार है—

एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः।
अनित्यं हि स्थितो यस्मात् तस्मादतिथिरुच्यते ॥

पाकविशेषः—पाकस्य विशेषः पाकविशेष=विशिष्टः पाकः, तस्य आरम्भः। वि+शिष+घञ् भावे विशेष अर्थात् विशेष रूप से आयोजित। उपरज्यते—उप+रञ्ज+लट् व कर्म में 'उपरज्यते' ग्रहण को उपराग कहते हैं। विश्वकोष में लिखा है—'उपरागस्तु पुंसि स्यात् राहुग्रासेऽर्कचन्द्रयोः।'

विमला

व्याख्या—आर्ये=मान्य (noble lady), कृतश्रमोऽस्मि=परिश्रम कृतवानस्मि (have spent some labour on), चतुःषष्ट्यङ्गे=चतुरधिकाषष्टिश्चतुःषष्टिः तस्य अङ्गानि प्रतिपाद्यप्रकारा यस्मिन् तथोक्त तस्मिन् चतुःषष्ट्यङ्गे (sixtyfour branches), ज्योतिःशास्त्रे (The science of astronomy), ततः=तस्मात् (so), प्रवर्त्यताम्=पाकविशेष क्रियताम् (Let your preparation of meal start), भगवतः=श्रेष्ठान् (worthy), ब्राह्मणान्=विप्रान् (Bhrahmanas), उद्दिश्य=उद्देश कृत्वा (in

honour of), पाक = पाकविशेष (special food), चन्द्रोपराग प्रति = चन्द्रग्रहण-प्रति (as to the eclipse of the moon) तु = किन्तु (but), केनापि = मिथ्यावादिना (by some one), विप्रलब्धासि = वञ्चितासि (you are deceived), पश्य= अवलोकय (for see)

अन्वयः—स, क्रूरग्रह, केतु, इदानीम, सम्पूर्णमण्डल, चन्द्र, बलात्, अभिभवितुम्, इच्छति ॥ ७ ॥

व्याख्या—स = असौ (That), क्रूरग्रह = पापग्रह (The malignant), केतु = राहु एव केतुशब्देनात्र व्यपदिष्ट (planet) इदानीम्=अधुना (now), सम्पूर्णमण्डलम्= परिपूर्णबिम्बम् (Full orb of the moon) चन्द्रम् = रजनीकरम् (To the moon), बलात् = साहसेन (forcibly), अभिभवितुम् = आक्रमितुम् (to attack).

(एतद्वाक्यत श्लेषेण समलयकेतुराक्षसकर्तृकचन्द्रगुप्ताभियोगसूचनेन श्लिष्टार्थावगमा देव कौटिल्यपात्रप्रवेशस्य वर्णनीयत्वन श्लिष्टार्थं प्रतिपादयति) तथा च द्वितीयपक्षे यथा—

क्रूरग्रह = कूटव्यवहारासङ्ग (determined purpose), सकेतु = मलयकेतुसहित (with Malayaketu), इदानीम् = साम्प्रतम् (at this time) सम्पूर्णमण्डलम् = प्रजासमुदायम् (all the constituent parts of a kingdom), चन्द्रम्=चन्द्रगुप्तम् (to Chandragupta), बलात् = मित्रादिसैन्यमाश्रित्य अथवा सामर्थ्यात् (perforce), अभिभवितुम् = पराजेतुम् (to attack) इच्छति = वाञ्छति (wishes)

(इति = एव (like this) अर्द्धोक्त = अर्द्ध एव सूत्रधारवचने सकोपमाह (when half uttered))

नेपथ्ये = वेषरचनाभूमौ (In the dressing room), आ क एष किं नामकोऽसौ (Ha, who is), मयि = चाणक्ये (Chanakya), स्थिते = विद्यमाने (living) ।

सूत्रधार— बुधयोग = बुधनामकग्रहेण सह सम्बन्ध पक्षान्तरे, चाणक्यस्य योग (conjunction of the planet Mercury, or Connection with the wise Chanakya), एन = चन्द्रम, पक्षान्तरे चन्द्रगुप्तम् (The moon, or to Chandragupta) रक्षति = चन्द्र राहुग्रसनात् वारयति, चन्द्रगुप्तपक्षे शत्रुपराभवात् त्रायते (The Mercury or Chanakya saves, the Moon or Chandragupta)

नटी—आर्य = मान्य (My lord) धरणीगोचरो भूत्वा = भूमिस्थ सन् (having shown himself on the earth), चन्द्रम् = इन्दुम् (The moon), ग्रहाभियोगात्= राहुग्रासात् (from the attack of the planet) रक्षितुम् = त्रातुम् (to save), इच्छति = वाञ्छति (desires), एष पुन क = किं नामक ? (who is)

सूत्रधार—आर्य = मान्ये (lady), यत् उक्त त्वया तत्सत्यमेव (to tell you the truth), मयापि = अहमपि (by me—I too), नोपलक्षित = कोऽसाविति न ज्ञात (did not know him), भवतु = अस्तु (well), भूय = पुन (again), अभियुक्त= सावधान सन् (being attentive), स्वरव्यक्तिम् = कण्ठस्वरविशिष्टजनम् (the identification of his voice), उपलप्स्ये = ज्ञास्यामि (I shall obtain).

('क्रूरग्रह' इत्यादि पुन पठति = that well known Ketu, he repeats)

हिन्दी—आर्ये, ज्योतिःशास्त्र के चौंसठों अङ्गों के अध्ययन में पर्याप्त परिश्रम मैंने किया है। इसलिये मान्य ब्राह्मणों के उद्देश्य से भोज का आयोजन करना चाहती तो करो, किन्तु, चन्द्रग्रहण के सम्बन्ध में किसी ने तुम्हें ठग लिया है। देखो—

सम्पूर्ण चन्द्रमण्डल को वह पापग्रह केतु (राहु) बलपूर्वक ग्रस्त बनाने की इच्छा कर रहा है—(इतना आधा कहा ही था कि)—

(नेपथ्य में अर्थात् पर्दे के पीछे से)

अह ! मेरे रहते वह कौन है जो चन्द्र को ग्रस ले ?

सूत्रधार—   किन्तु, बुध का ऐसा उपाय पड़ा है कि चन्द्र की रक्षा कर रहा है। ६॥

नटी—स्वामी, इस धरती पर रहने वाला यह कौन है जो चन्द्र को ग्रहाभियोग से बचाने की इच्छा करता है ?

सूत्रधार—आर्ये, सच तो यह है कि मेरा ध्यान इस ओर था ही नहीं। अच्छा, एकबार फिर पढ़कर ध्यान से इसका कण्ठ स्वर पहचानूँ। ('क्रूरग्रह' इत्यादि श्लोक का पुनः पाठ करता है)—

English—*Manager* —Noble lady, I have done hard labour in the Science of astronomy with its sixty four branches; so let preparation of meal start for the worthy Brahmanas, but as to the eclipse of the moon, you are deceived by Some one.—See

That malignant planet wishes, perforce, to devour the moon, having the full orb. Or, that well known Ketu of Cruel (king Malayaketu) wishes forcibly to attack Chandra having the full mandala. (When half uttered)

(In the dressing room)

Ha ! Who is he that, while I live, wishes to overpower Chandra ?

Manager—But near presence of Mercury saves him. ॥ 6 ॥

Actress—Noble sir, who is that, being an inhabitant of the earth, wants to save the moon from planetary aggression ?

Manager—Noble lady, to tell you the truth, I did not mark him too Well, being observant again, I shall mark the revelation of his voice. (repeats the verse again—'क्रूरग्रह' etc).

टिप्पणी—चतुःषष्ट्यङ्गे = गर्गाचार्य के अनुसार ज्योतिःशास्त्र के २४ अङ्ग एवं ४० उपाङ्ग हैं। दोनों को मिलाकर ज्योतिःशास्त्र के ६४ अङ्ग माने गये हैं। यद्यपि मूलतः ज्योतिष को लोग त्रिस्कन्ध ही कहते हैं और ये तीन अङ्ग हैं—(१) गणित, (२) होरा और (३) फलित। सूत्रधार के इस कथन का तात्पर्य यह है कि उसने ज्योतिष के इन सभी अङ्गों का अध्ययन किया था। 'क्रूरग्रहः' इत्यादि श्लोक श्लेषार्थक है। इसके प्रत्येक शब्द के दो-दो अर्थ हैं। 'ग्रहः'—'गृह्णाति रविचन्द्रौ इति' इस विग्रह के अनुसार ग्रह का अर्थ यहाँ 'राहु' है। और 'अपने उद्देश्य में जो दृढ़ है'—इस विग्रह के अनुसार ग्रह का अर्थ यहाँ 'राक्षस' है। सकेतुः—यह केतु अथवा केतु शब्द यहाँ राहुपरक प्रयुक्त है। दूसरे अर्थ में—'नाम के एकदेश के ग्रहण से सम्पूर्ण नाम का

(नेपथ्ये)

आः ! क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्तमभिभवितुमिच्छति ।

सूत्रधारः—(आकर्ण्य) आर्ये, ज्ञातम् । कौटिल्यः ।

बोध होता है' इस नियम के अनुसार अपने सदस्यों के साथ 'मलयकेतु' का बोध होता है। **चन्द्र**—यह शब्द यहाँ एकपक्ष में चन्द्रमापरक है और दूसरे पक्ष में चन्द्रगुप्त का बोधक है। **प्रवर्त्यताम्**—प्र+वृत+णिच् कर्म में कामचारानुज्ञार्थक लोट् लकार में यह रूप सिद्ध हुआ है। **बुधयोगः**—बुध+योग. 'बुध' का यहाँ दो अर्थ है एक तो ग्रहों के बीच यह सूर्य और धरणी के बीच का ग्रह है। इसका योग सर्वथा चन्द्रमा को ग्रहण से बचाता है ऐसा शास्त्रीय सिद्धान्त के साथ भौगोलिक तथ्य है। दूसरे अर्थ में बुध से तात्पर्य 'चाणक्य' का है, जिसका सयोग सदैव चन्द्र की सुरक्षा में सलग्न है और वह राक्षस एव मयलकेतु के आक्रमण से बचाता है। शास्त्रीय सिद्धान्त से तात्पर्य 'गर्गसंहिता' से है। उसमें ग्रहण के सम्बन्ध में उल्लेख है कि पचग्रह सयोग में ग्रहण नहीं लगता है। ये पञ्चग्रह हैं—सूर्य, चन्द्र, बुध, गु० और शुक्र। इस व्याख्या के समर्थन में एक वचन है—

तत्नन्दनस्तन्मिथुनानुरूपो रूपोऽस्ति चिद्रूपतया बुधाख्यः ।
यद्योगभाज न विधुन्तुदोपि विधुन्तुदस्युग्रविरोधबोधः ॥

धरणीगोचरोभूत्वा—इसका भी दो अर्थ है। इस धरती का निवासी होकर यह कौन है जो आकाशीय चन्द्र की रक्षा का दम्भ भरता है ? अथवा—इस धरती पर कौन है जो मलयकेतु एव राक्षस के कोपभाजन चन्द्रगुप्त की रक्षा का दम भरता है ? **चन्द्रोपरागम्प्रति**—'उपराग' शब्द का कोषगत अर्थ है 'ग्रहण'। अत यहाँ चन्द्रस्य उपराग. चन्द्रोपरागः (ष० त०) तम् 'चन्द्रोपरागम्'। यहाँ 'प्रति' शब्द के योग में—'कर्मप्रवचनीययोगे द्वितीया' विभक्ति हुई है। **विप्रलब्धा**—वि+प्र+लभ+क्त कर्मणि से ब्युत्पन्न 'विप्रलब्धा' शब्द का यहाँ अर्थ है ठगा जाना।

लगता है **'क्रूरग्रह.'** इत्यादि श्लोक के प्रत्येक शब्द सकल्प को उसके अर्थगौरव की दृष्टि से ही नाटक के आरम्भ में स्वीकार किया गया है। फलत इस श्लोक के प्रत्येक शब्द इस नाटक की समस्त उद्भावनाओं और सभावनाओं को प्रकट करता है। श्लोकगत सभी शब्दों के श्लिष्ट अर्थों का ध्यान रखकर ही सभवतः इसकी रचना हुई होगी। क्योंकि इसके प्रत्येक शब्द से दो अर्थों के अतिरिक्त नाटकीयता स्पष्टतः अभिव्यक्त होती है। 'क्रूरग्रह.' और 'सकेतु.' जैसे शब्दों का प्रयोग नाटक के आन्तरिक धर्म को प्रकट करता है। 'क्रूरग्रह.' इस नाटक का साधना पक्ष है और 'सकेतु' उसका व्यवहार पक्ष है। अत इस श्लोक की सुप्रयुक्तता स्पष्ट है। इन शब्दों के सयोजन की अन्वर्थक्षमता समस्त नाटक में व्याप्त है। यह एक ही श्लोक नाटक के स्वरूप की उभारदार रेखाएँ स्पष्ट करता है—ऐसा किसी भी पाठक को लगेगा। अन्यथा—'क्रूरग्रह' केवल 'केतु' का विशेषणमात्र है।

विमला

व्याख्या—नेपथ्ये=वेषरचनाभूमौ (Behind the curtains)

आः=आश्चर्यार्थकम् अव्ययम् (Ha), क एष.=स्विमकोऽसौ (who is he that), **यो, मयि**=चाणक्ये, **स्थिते**=विद्यमाने (while I live), **चन्द्रगुप्तम्**=वृषलम् (to

(नटी भयं नाटयति)

सूत्रधारः—

कौटिल्यः कुटिलमतिः स एष येन क्रोधाग्नौ प्रसभमदाहि नन्दवंशः।
चन्द्रस्य ग्रहणमिति श्रुतेः सनाम्नो मौर्येन्दोर्द्विषदभियोग इत्यवैति ॥ ७ ॥

तर्हि आवां गच्छावः। (इति निष्क्रान्तौ)

(इति प्रस्तावना)

Chandragupta), बलात्=प्रसभेन (forcibly), अभिभवितुम्=पराभवितुम् (to overpower), इच्छति=वाञ्छति (wishes).

सूत्रधारः—(आकर्ण्य = श्रुत्वा (Listening) आर्ये=मान्ये (Noble lady), ज्ञातम् = बुद्धम् (I see), कौटिल्यः=चाणक्यः (Chanakya).

(नटी भयं नाटयति = नटी त्रासं व्यञ्जयति Actress gesticulates fear)

अन्वयः—येन, क्रोधाग्नौ, नन्दवंशः, प्रसभमदाहि, स, एष, कुटिलमतिः, कौटिल्यः, चन्द्रस्य, ग्रहणम्, इति श्रुतेः, सनाम्नः, मौर्येन्दोः, द्विषदभियोग, इति, अवैति ॥ ७ ॥

व्याख्या—येन = कृतसत्यप्रतिज्ञेन ब्राह्मणेन (By whom), क्रोधाग्नौ = कोपानले (in the fire of his violent anger), नन्दवंशः = योगानन्दकुलम् (the race of the Nandas), प्रसभम् = हठात् (By force), अदाहि = भस्मसात् कृतः (burnt-up), सः एषः=नेपथ्यगतो जनः (That fellow), कुटिलमतिः = क्रूरस्वभावः (cruel hearted), कौटिल्यः=चाणक्यः (Chanakya), चन्द्रस्य ग्रहणम् इति श्रुतेः=चन्द्रग्रहणशब्दश्रवणात् (hearing of suppression of Chandra), सनाम्नः=तुल्याख्यस्य (Who bears the same name), मौर्येन्दोः = इन्दुतुल्यचन्द्रगुप्तस्य (moon like Maurya), द्विषदभियोगः = शत्रुणा आक्रमणम् (enemy attack), अवैति = जानाति (understands). ॥ ७ ॥

हिन्दी— (नेपथ्य में)

अरे, वह कौन है ! जो मेरे रहते चन्द्रगुप्त के पराभव की इच्छा करता है।

सूत्रधार—(कान देकर) पता लग गया। आर्ये, यह कौटिल्य है।

(नटी भयभीत हो जाती है)

हाँ, हाँ, वही कुटिलमति कौटिल्य, जिसने सम्पूर्ण नन्दवंश को बलात् अपनी क्रोध की ज्वाला में भस्म कर डाला, अभी 'चन्द्र के ग्रहण' सम्बन्धी मेरी बात सुनते ही नामसाम्य के कारण 'चन्द्रगुप्त मौर्य पर शत्रु का आक्रमण' समझकर बिगड़ उठा है।

अतः यहाँ से हम दोनों भाग चलें (दोनों निकल जाते हैं)

(प्रस्तावना समाप्त)

English— (In the dressing room)

Ah ! Who is he that while I am living, wants to attack Chandragupta ?

(तत प्रविशति मुक्त शिखा परामृशश्चाणक्य)

चाणक्य —कथय । क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्तमभिभवितुमिच्छति । पश्य—

आस्वादितद्विरदशोणितशोणशोभाम्
संध्यारुणामिव कला शशलाञ्छनस्य ।
जृम्भाविदारितमुखस्य मुखात् स्फुरन्तीम्
को हर्तुमिच्छति हरे परिभूय दंष्ट्राम् ॥ ८ ॥

Manager—(Listening) Noble lady, understood, Kautilya

(Actress gesticulates fear)

Manager—Kautilya it is, by whom the lineage of Nanda was, forcibly burnt up in the fire of his violent anger On hearing of the (चन्द्रस्य ग्रहणम्) catching of the moon, he understands by these two words that there is to be an attack by the enemy on Chandragupta, who has a similar name ॥ 7 ॥

So let us be off from this place (Exeunt)

(End of the commencement)

टिप्पणी—'प्रसभम्' का कुछ लोग 'झटिति' भी अर्थ करते हैं, किन्तु व्युत्पत्ति के अनुसार- 'प्रगता सभा विचारो यस्मिन् कर्मणि' यही होना चाहिए। **अदाहि**—'दह्' धातु से लुङ् लकार 'त' प्रत्यय कर्म में अदाहि। **मौर्येन्दो**—मुराया अपत्य पुमान् मौर्य-'मुरा' शब्द से ण्यत् प्रत्यय करने से मौर्य बना, फिर 'मौर्य इन्दुरिव' मौर्येन्दु। राजा नन्द की मुरा नामक एक शूद्रा दासी थी—उसी से उत्पन्न होने के कारण चन्द्रगुप्त को मौर्य कहा जाता है। यह एक पौराणिक कथा है। **सनाम्न**—समानम् नाम यस्य स सनामा तस्य—समानस्य छन्दसि सूत्र से सिद्ध यह शब्द है। **श्रुते**—यहाँ हेतौ' से पञ्चमी विभक्ति हुई है। **अवैति**—अव+इ लट् लकार 'ति' प्रत्यय से 'अवैति'।

प्रस्तावना—प्र+स्तु+णिच्+युच् 'भावे क्रियाम्' से प्रस्तावना।

विमला

व्याख्या—तत =तदनन्तरम् (after that), मुक्ताम्=असंयताम् (unbound), शिखाम्=चूडाम् (Plume), परामृशन्=करेण स्पृशन् (touching with his hand) चाणक्य =कौटिल्य (Chanakya) प्रविशति=आगच्छति (enters).

चाणक्य —कथय=ब्रूहि (tell me) क एष=किन्नामकोऽसौ (who is he) मयि स्थिते=चाणक्यविद्यमाने (while I am living), चन्द्रगुप्तम्=मौर्यम् (Chandragupta), अभिभवितुम्=पराभवितुम् (to attack), इच्छति=वाञ्छति (desires), पश्य=अवलोकय (look here) —

अन्वय —क, जृम्भाविदारितमुखस्य, हरे, मुखात्, आस्वादितद्विरदशोणितशोणशोभाम्, शशलाञ्छनस्य, सन्ध्यारुणाम्, कलाम्, इव, स्फुरन्तीम्, दंष्ट्राम्, परिभूय, हर्तुम्, इच्छति ॥ ८ ॥

अपि च—

नन्दकुलकालभुजगीं कोपानलबहुलनीलधूमलताम्।
अद्यापि बध्यमानां वध्यः को नेच्छति शिखां मे ॥ ९ ॥

व्याख्या—कः=जनः (who is he), जृम्भाविदारितमुखस्य=शरीरालस्यपरिहारक - मुखव्यादानात्मकव्यापारविशेषेण (yawning) विदारितम्=प्रसारितम्, (wide open), मुखस्य=आननस्य (of his mouth), हरेः=सिंहस्य (of the lion), मुखात्=आस्यात् (from the mouth), आस्वादितम्=पीतः (tasted), द्विरदशोणितम्=गजरक्तम् (the blood of the elephant), शोणा=रक्तवर्णा (of red colour), शोभाम्=छविम् (lustre), शशलाञ्छनस्य=चन्द्रस्य (of the moon), कलाम्=षोडशांशम् (a digit), इव=यथा (like), स्फुरन्तीम्=प्रकाशमानाम् (shining), सन्ध्यारुणाम्=सन्ध्यारागेण इषत् रक्तवर्णाम् (tinted red by the twilight), दंष्ट्राम्=दशनम् (teeth) परिभूय=अवमत्य (with insult or by force), हर्तुम्=उन्मूलयितुम् (to snatch away), इच्छति=वाञ्छति (desires) ॥ ८ ॥

हिन्दी—(अपनी खुली शिखा को हाथ से स्पर्श करते हुए चाणक्य का प्रवेश)

चाणक्य—बतलाओ, वह कौन है? जो मेरे रहते चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने की इच्छा करता है। देखो—

वह कौन है! जिसने जम्हाई लेते हुए सिंह मृगेन्द्र की जम्हाई में खुले हुए मुख से चमकते हुए उन दाँतों को उखाड़ने की हिम्मत करता है—जो हाथी के लाल-लाल खून के तत्काल स्वाद ले चुकने के कारण अब भी सन्ध्याकालीन चन्द्रकला के समान थोड़ी-थोड़ी लाली ले चुके हैं।

English—(Chanakya enters touching with his hand loose tuft of hair on his crest)

Chanakya—Tell me, who is he that, while I am living, dares to attack Chandragupta? look here.

Who dares defiantly to extract from the mouth of the lion whose jaws have been opened by yawning, the colour of which is red with the blood of the elephant, just tasted by him, which appears like a digit of the moon tinted red by the twilight? ॥ 8 ॥

टिप्पणी—राक्षस के साथ मलयकेतु द्वारा चन्द्रगुप्त का पराजय असम्भव है, यही केन्द्रीय विचार इस श्लोक का है। अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार है। वसन्ततिलका वृत्त है।

विमला

अपि च—(Moreover)—

अन्वयः—वध्य, कः, नन्दकुलकालभुजङ्गीम्, कोपानलबहुलनीलधूमलताम्, मे शिखाम्, अद्यापि, बद्धयमानाम्, न, इच्छति ॥ ९ ॥

व्याख्या—वध्यः=हन्तुम् योग्यः (deserves death), कः=जनः (who), नन्दकुलकालभुजङ्गीम्=नन्दान्वयस्य कालसर्पिणीम् (like a female-Cobra to the family of Nandas), कोपानलबहुलनीलधूमलताम्=कोप एव अनलः

अपि च—

उल्लङ्घयन् मम समुज्ज्वलतः प्रतापं
कोपस्य नन्दकुलकाननधूमकेतोः ।
सद्यः परात्मपरिमाणविवेकमूढः
कः शालभेन विधिना लभतां विनाशम् ॥ १० ॥

शार्ङ्गरव शार्ङ्गरव !

कोपानलः=क्रोधवह्निः (fiery wrath) इव तस्य बहुला=अधिका (deep), नीला= कृष्णवर्णा (black colour), धूमलता (dark line of smoke), मे=मम (my), शिखाम्=चूडाम् (tuft), अद्यापि=नन्दवंशध्वंसेऽपि (even now), बध्यमानाम्= संयन्तुमारभ्यमाणाम् (being tied), नेच्छति=नाभिलष्यति (does not wish).

हिन्दी—और भी—वह कौन मरना चाहता है ? जो सम्पूर्ण नन्दवंश के लिए काल्सर्पिणी बनी हुई, मेरी क्रोधाग्नि से निकली काले धुएँ की रेखा की तरह—अब तक बंध जाने वाली मेरी इस शिखा को अभी भी खुली देखना चाहता है ?

Moreover—Who is seeking his death, and even now does not want to see my tufted hair tied up which is like the female cobra to the race of Nandas and is the thick dark line of smoke of the fire of my anger ?

टिप्पणी—वध्य —वधमर्हतीति वध्यः 'अर्हे कृत्यतृचश्च' इस सूत्र में वध धातु से यत् प्रत्यय कर रूप बना। अथवा—'हन्तुम् योग्यः' इस अर्थ में 'हनो वा यद्वधश्च' इस वार्तिक से 'हन्' धातु से यत् प्रत्यय करने के बाद वधादेश कर रूप सम्पन्न हुआ। नन्दकुलकालभुजङ्गीम्— नन्दस्य कुलम् 'नन्दकुलस्य कालभुजङ्गीम्' यहाँ नित्य समास हुआ तथा जातयर्थक ङीप् प्रत्यय है। कोप एव अनल'—कोपानल, अर्थात् कोपोऽनल इव तस्य बहुला अधिका नीला कृष्णा धूमलता नामिव इति=कोपानलबहुलनीलधूमताम्। यहाँ शिखा में कालभुजङ्गत्व एव धूमलतात्व के आरोप से तथा क्रोध में अनलत्व के आरोप से एव-शिखा में धूमलतात्व के आरोप से श्लिष्ट शब्द निबधनमालारूपपरम्परित रूपकालङ्कार है। यहाँ गौडी रीति है तथा आर्या वृत्त है।

विमला

अपि च (Moreover)—

अन्वयः—परात्मपरिमाणविवेकमूढ, कः, मम, समुज्ज्वलत', नन्दकुलकाननधूमकेतो., कोपस्य, प्रतापं, शालभेन, विधिना, उल्लङ्घयन्, सद्य विनाशम्, लभताम्।

व्याख्या—परस्य=शत्रोः (strength of enemy), आत्मन.=स्वस्य, (self), यत् परिमाणम्=मात्रा (the measure), विवेके=विविच्य ग्रहणे (in discrimination), मूढः=ज्ञानशून्यः (stupefied), क=जन' (who is), मम=मामकीनस्य (my), समुज्ज्वलत=दीप्तस्य (blazing), नन्दकुलकाननधूमकेतो.=नन्दवंशवनवह्नः (in the form of the forest fire for the race of Nandas), कोपस्य=अमर्षस्य (of anger), प्रतापं=तेजः (flame) शालभेन विधिना=पतङ्गरीत्या (in the manner of a moth), उल्लङ्घयन्=अतिक्रामन् (crossing), सद्यः=तत्क्षण एव (at that time), विनाशम्=क्षयम् (destruction), लभताम्=प्राप्नोतु (to suffer.)



(प्रविश्य)

शिष्यः—उपाध्याय, आज्ञापय ।

चाणक्यः—वत्स, उपवेष्टुमिच्छामि ।

शिष्यः—उपाध्याय, नन्वियं सन्निहितवेत्रासनैव द्वारप्रकोष्ठशाला । तदस्यामुपवेष्टुमर्हत्युपाध्यायः ।

चाणक्यः—वत्स, कार्याभिनियोग एवास्मान् व्याकुलयति, न पुनरुपाध्यायसहभूः शिष्यजने दुःशीलता । (नाट्येनोपविश्य आत्मगतम्)

हिन्दी— और भी—

वह कौन है? जो अपनी और पराई शक्ति को नापने में असमर्थ है, तथा नन्दवंश रूपी जंगल के लिए दावाग्नि बना मेरा क्रोधाग्नि का अतिक्रमण करता हुआ पतङ्गों की तरह मरने को उद्यत है।

अरे ओ शार्ङ्गरव 'शार्ङ्गरव'

English—*Besides* —Who is he? who being at a loss to distinguish between the measure of his own strength and that of others, is forth with to suffer destruction after the fashion of a moth crossing the flame of my wrath—acting like fire to the forest of the race of the Nandas? O' Sarangarava Sarangarava

टिप्पणी—नन्दकुलकाननधूमकेतोः—नन्दस्य कुलम् नन्द कुलम्, षष्ठी तत्पुरुष समास हुआ। तदेव काननं वनं तस्य धूमकेतुः वह्निः। यहाँ भी षष्ठी समास हुआ। परात्मपरिमाणविवेकमूढ—परस्य आत्मनः आत्मनि स्वस्य च यः परिमाणः बलत्वनत्वोरन्यतरत्वात्तरतम्यरूपो ना तस्य विवेको तस्य विवेचनम् तत्र मूढः अर्थात् ... जनः। शालभेन—शलभस्येदम् शालभम्, तेन शालभेन। यहाँ इदमर्थे ण् से अण् प्रत्यय करके रूप सम्पन्न हुआ है।

यहाँ नन्दकुल में काननत्वारोप हेतुभूत क्रोध में वह्नित्व के आरोप से श्लिष्ट शब्द निबन्धन परम्परित रूपकालङ्कार है। साथ ही वह्नि में प्रविष्ट शलभ की तरह क्रोधरूपी आग में प्रविष्ट होने हेतु विनष्ट होगा यह बिम्बप्रतिबिम्बभाव बोध होने से निदर्शनालङ्कार है। फिर एक ही श्लोक में दोनों अलङ्कार की उपस्थिति रहने के कारण सङ्कर नामक अलङ्कार हुआ। यहाँ भी गौडी रीति है। ओज गुण है तथा वीर रस है। इसमें वसन्ततिलका वृत्त है। इसका लक्षण है—"उक्तं वसन्ततिलका तभजा जगौ गः"

विमला

व्याख्या— प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (Entering)

शिष्यः—उपाध्याय=आचार्य (Revered Sir), आज्ञापय = कार्ये नियोजय (command me),

चाणक्यः—वत्स=हे वत्स (My child), उपवेष्टुम्=आसनग्रहीतुम् (for sitting) इच्छामि=वाञ्छामि (I wish).

शिष्यः—उपाध्याय=आचार्य (Preceptor), ननु = किमिति (implies censure), इयम् (this), सन्निहितम्=समीपस्थम् (near about), वेत्रासनम्=

कथं प्रकाशतां गतोयमर्थः पौरेषु यथा किल नन्दकुलविनाशजनितरोषो राक्षसः पितृवधामर्षितेन सकलनन्दराज्यपरिपणनप्रोत्साहितेन पर्वतकपुत्रेण मलयकेतुना सह संधाय तदुपगृहीतेन च महता म्लेच्छराजबलेन परिवृतो वृषलमभियोक्तुमुद्यत इति । (विचिन्त्य) अथवा—येन मया सर्वलोकप्रकाशानन्दवंशवधम् प्रतिज्ञाय निस्तीर्णा दुस्तरा प्रतिज्ञासरित्सोहमिदानीं प्रकाशीभवन्तमप्येनमर्थं समर्थः प्रशमयितुम् । कुतः—

वीरुदास्तरणम् (cane-seat), द्वारप्रकोष्ठशाला = गृहैकावयवप्रदेश. (at the entrance of the gate yard), तत् = तस्मात् (so), अस्याम्=पुरोदृश्यमानायाम् (there in it) उपवेष्टुम्=सज्जीभवितुम्, अर्हति = समर्थोऽस्ति (will please sit there), उपाध्याय. = आचार्यः (The preceptor).

चाणक्य —वत्स=शिष्यः (Pupil) कार्ये = रिपूच्छेदनव्यापारात्मके कृत्येऽभिनियोगः आसक्तता अस्मान् आकुलयति = व्याकुलम् करोति (It is only to work that distract me), न पुनरुपाध्यायसहभूः = न पुनः अध्यापकानाम् स्वाभाविकी, शिष्यजने= त्वादृशे शिष्ये, दुःशीलता = क्रूराचारः (It is not perverseness towards disciples naturally to be found in preceptors), (नाट्येन = नटव्यापारेण (acting), उपविश्य=आसनं गृहीत्वा (Sitting), आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself), कथम्=केन प्रकारेण (How), अयमर्थः = संवादः (this matter), पौरेषु=पुरवासिषु (among the citizens) प्रकाशताम्=ख्यातिम् गत =प्राप्तः (got abroad), यथा किल (that), नन्दकुलविनाशजनितरोषो राक्षस =नन्दान्वयक्षयोद्भूतकोप राक्षसः (Rakshasa, whose anger is excited by the destruction of the family of Nanda) पितृवधामर्षितेन = पितु· पर्वतकस्य हननक्रुद्धेन (is angered by the murder of his father), सकलनन्दराज्यपरिपणनप्रोत्साहितेन=सम्पूर्णनन्दराज्यस्य तत् परिपणनं शुल्कत्वेन अवस्थापनं तेन प्रोत्साहितेन प्रेरितेन (encouraged by the offer of the entire kingdom of the Nandas), पर्वतकपुत्रेण मलयकेतुना सह साकं सन्धाय सम्मिलय (having allied himself with Malayaketu, the son of Parvatak), तदुपगृहीतेन = संभृतेन (joined by), महता=विपुलेन (A-large), म्लेच्छराजबलेन=यवनसैन्येन (force of the Mlechchha princes), परिवृत =परिवेष्टितः (surrounded), वृषलम्=चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta), अभियोक्तुम्=आक्रमितुम् (for attack), उद्यत.=कृतोद्योग अस्ति (is preparing), विचिन्त्य (Thinking), अथवा=वा (or) येन मया=चाणक्येन (by whom), सर्वेषु=न केवल पौरजनेषु (the whole world), प्रकाशम्=समक्षम् In presence of all people) नन्दवंशवधम्=नन्दकुलक्षयम् (destruction of the race of the Nandas), प्रतिज्ञाय = प्रतिश्रुत्य (vowed), निस्तीर्णा=अतिक्रान्ता (crossed), दुस्तरा= दुरतिक्रमा (insurmountable), प्रतिज्ञासरित् = प्रतिज्ञारूपा नदी (the river of the solemn vow), स=तथाविधम् अहम् (I who), इदानीम् = अधुना (now), प्रकाशीभवन्तमपि = प्रचारं गच्छन्तमपि (publicly open too), एनमर्थम् = राक्षसा-

अभियोगम् (attack of Rakshasa), समर्थः = शक्तः (able), प्रशमयितुम् = निराकर्तुम् (to counteract this matter) कुतः (why).

हिन्दी— (रङ्गमञ्च पर आकर)

शिष्य—गुरुदेव ! आज्ञा दीजिए।

चाणक्य—वत्स, बैठना चाहता हूँ।

शिष्य—आचार्य, दरवाजे की बगल में बैठक है और वहाँ बेंत का आसन रक्खा है अतएव गुरुदेव, उस पर बैठिये।

चाणक्य—वत्स, कार्यों की व्यग्रता ही मुझे इस प्रकार आकुल किये रहती है, इन शिष्यों के प्रति गुरुजनों की स्वाभाविक दुःशीलता न समझ बैठना। (नाटकीय ढङ्ग से बैठ हुए आप ही आप) आखिर यह नागरिकों के बीच यह बात फैल ही गया कि समस्त नन्दवंश के विनाश से कुपित राक्षस पिता के वध से क्रोधान्ध बने तथा उन्हीं नन्द-साम्राज्य के स्वामित्व प्रदान की शर्त से प्रेरित किये गये पर्वतकपुत्र मलयकेतु से जा मिला है, और उसके अधीन म्लेच्छ राजाओं की बड़ी सेना से सम्बद्ध होकर चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने के लिए उद्यतमान हैं। (कुछ सोचकर) अथवा—मैं जो वह चाणक्य हूँ-जिसने सारी दुनियाँ के सामने का गया नन्दवंश-विनाशरूपी अपनी दुस्तर प्रतिज्ञारूपी नदी को तैर कर पार कर दिया—तो फिर लोक में फैले इन सवादों को शान्त कर देने की शक्ति भी मुझ में है। क्योंकि—

English— (Entering)

Pupil—Revered Sir, command me.

Chanakya—My child, I want to sit down.

Pupil—Preceptor, at the entrance of the gate yard canseat is indeed arranged therein. So Revered sir, will please sit there.

Chanakya—My boy, it is only close engagement to work that distract me and not naturally perverseness of preceptors towards disciples (*acting sitting saying to himself*) How has this matter got abroad among the citizens, that Rakshasa, whose anger is excited by the destruction of the family of Nandas, having allied with Malayaketu, the son of Parvataka, who is angered by the murder of his father and is incited with the offer of the entire Kingdom of Nandas and assisted by a large force of the Mlechcha princes is preparing to attack Chandragupta (*thinking*) or—why I am able to counteract this matter though going out—I, who, having first in the presence all people vowed the destruction of the Nanda race, crossed the insurmountable stream of vow. For—

टिप्पणी—उपाध्याय—उपेत्य अस्मादधीयते इति उपाध्यायः, उप आङ् पूर्वक इङ् धातु से 'इङश्च' से घञ् प्रत्यय करने पर उपाध्याय रूप की सिद्धि है। आज्ञापयतु—आङ् पूर्वक ज्ञा धातु से हेतुमण्णिच् का यह रूप है। कार्याभियोगः—अभि + युज + घञ्, भाव में अभियोग।

यस्य मम—

श्यामीकृत्याननेन्दूनरियुवतिदिशा संततैः शोकधूमैः
कामं मन्त्रिद्रुमेभ्यो नयपवनहृतं मोहभस्म प्रकीर्य ।
दग्ध्वा सम्भ्रान्तपौरद्विजगणरहितान्नन्दवंशप्ररोहान्
दाह्याभावान्नखेदाज्ज्वलन इव वने शाम्यति क्रोधवह्निः ॥११॥

व्याकुलयति—वि+आ+कुल+अच कर्त्तरि व्याकुल । व्याकुल करोति इति व्याकुल+णिच्+लट् तिप् । उपाध्यायसहभूः—सह भवति उत्पद्यते इति सहभूः—सह+भू+क्विप् कर्त्तरि सहभूः ।

विमला

अन्वय—यस्य, मम, क्रोधवह्निः, अरियुवतिदिशाम्, आननेन्दून्, सन्ततैः, शोकधूमैः, श्यामीकृत्य, मन्त्रिद्रुमेभ्यः नयपवनहृतम्, मोहभस्म, कामम् प्रकीर्य, सम्भ्रान्तपौरद्विजगणरहितान्, नन्दवंशप्ररोहान्, दग्ध्वा, वने, ज्वलन इव दाह्याभावात्, शाम्यति, न खेदात् ॥

व्याख्या—यस्य मम—क्रोध वह्निः =कोपानलः (The fire of fury), अरियुवतिदिशाम् = शत्रुस्त्रीककुभाम् (In the form of the young wives of the enemies), आननेन्दून् = मुखचन्द्रान् (the moon in the form of faces of quarters), सन्ततैः = अविच्छिन्नैः (continual), शोकधूमैः = स्वामिविरहोद्भवखेदधूमैः (smoke of distress), श्यामीकृत्य = मलिनान् विधाय (to make dark), मन्त्रिद्रुमेभ्यः = सचिववृक्षेभ्यः (the trees in the form of the ministers), नयपवनहृतम् = *नीतिवायुना आनीतम्* (*wafted by the wind of policy*), मोहभस्म = अविवेकभस्म (the ashes of insensibility), कामम् = यथेच्छम् (according to wish) प्रकीर्य = विक्षिप्य (scattered), सम्भ्रान्ता = उद्विग्ना (Frightened), पौरा = पुरवासिनः (citizens), द्विजगणरहितान् (ब्राह्मणसमूहरहितान्, वा, पक्षिसमूहशून्यान् (excepting the flocks of birds or brahmanas), नन्दवंशप्ररोहान् = नन्दवंश एव वंशः तस्य प्ररोहान् अङ्कुरान् (sprout of the bamboos in the form of Nandas), दग्ध्वा = भस्मसात् कृत्वा (having burnt down) वने = अरण्ये (In a forest), ज्वलन इव = वह्निरिव (like a fire), दाह्याभावात् = दग्धुमन्यवस्तुनोऽभावात् (from lack of further materials to burn), शाम्यति = विरमति (goes out), न खेदात् = न हि श्रमात् (Not through exhaustion) ॥ ११ ॥

हिन्दी—मेरी यह क्रोधाग्नि, जिसने शत्रुओं की युवती विधवाओं की दिशाओं में उदित मुखचन्द्र को, शोक की घनीभूत धूमराशि से काला कर दिया जिसने अपनी कूटनीति की हवा द्वारा नन्द के मन्त्रीरूपी वृक्षों पर किंकर्त्तव्यविमूढता की भस्म बिखर दी, जिसने भय से घबराये हुए पक्षियों की तरह भागनेवाले नागरिकों के अतिरिक्त नन्दवंश के अंकुरों तक को जला दिया, मेरी वही क्रोधाग्नि—दावानल की तरह अपने आप शान्त होने चली है इसलिए नहीं कि वह थक चुकी है, बल्कि इसलिए कि अब जलाने को जगत में कुछ शेष नहीं है ॥ ११ ॥

English—My this—

The fire of fury (*like fire in a forest*) *having* by means of the

अपि च—

> शोचन्तोऽवनतैर्नराधिपभयाद्धिक्शब्दगर्भैर्मुखै-
> र्मामग्रासनतोऽवकृष्टमवशं ये दृष्टवन्तः पुरा ।
> ते पश्यन्ति तथैव सम्प्रति जना नन्दं मया सान्वयं
> सिंहेनेव गजेन्द्रमद्रिशिखरात् सिंहासनात्पातितम् ॥ १२ ॥

सोऽहमिदानीमवसितप्रतिज्ञाभारोऽपि वृषलापेक्षया शस्त्रं धारयामि ।

---

continual smoke of distress to make dark the moons of the faces of the young wives of the enemies, having scattered over the trees of the ministers of Nandas, the ashes of insensibility wafted by the wind of my policy, and having burnt down the sprout of the bamboos in the form of Nanda. Excepting the flocks of frightened birds in the form of the citizens, now goes out not through exhaustion but from lack of further materials to burn.

टिप्पणी—सन्ततैः = सम् + तन = सन्तत अथवा 'तनो वा' से सन्तत अर्थात् सम्पूर्वक 'तन' धातु से क्त प्रत्यय करने पर इस रूप की सिद्धि है। आननेन्दून्='आननानि इन्दव इव'। इस विग्रह में कर्मधारय समास हुआ। 'उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे' से रूप की सिद्धि है। स्वाहाकृत्य = 'अस्वाहान् स्वाहान् कृत्वा' इस विग्रह में 'अभूततद्भावे' से 'च्वि' प्रत्यय कर रूप की सिद्धि हुई। निकीर्य = निपूर्वक 'किर' धातु से ल्यप् प्रत्यय कर रूपसिद्धि है। उसी प्रकार 'मन्त्रिद्रुमेभ्यः' में 'मन्त्रिण एव द्रुमाः तेभ्यः' इस विग्रह में विग्रह किया है कर्मणैव मन्त्रिद्रुम शब्दों में 'कर्मणा यमभिप्रैति' से सम्प्रदान कारक हुआ।

इस श्लोक में—कोप में वह्नित्व के आरोप, शोक में धूमत्व, मन्त्रि में वृक्षत्व, नय में पवनत्व, मोह में भस्मत्व तथा नन्दवंश में अङ्कुरत्व के आरोप से साङ्गरूपक अलङ्कार है। गौडी रीति, ओज गुण तथा स्रग्धरा वृत्त है।

विमला

अन्वयः—पुरा, ये, नराधिपभयात्, अवनतैः, धिक्शब्दगर्भैः, मुखैः, शोचन्तः, अवशम्, माम्, अग्रासनतः, अवकृष्टं, दृष्टवन्तः, सम्प्रति, ते जनाः, सिंहेन, गजेन्द्रम्, अद्रिशिखरादिव, मया, सान्वयम्, नन्दम्, सिंहासनात्, तथैव पातितम् पश्यन्ति।

व्याख्या—अपि च=अन्यदपि (Furthermore), पुरा=प्राक्काले (within), ये=जनाः (People), नराधिपभयात्=भोगानन्दत्रासात् (through fear of the king), अवनतैः=नम्रीकृतैः (cast down), धिक्शब्दगर्भैः=धिक् नृपतिमिति शब्दो-गर्भेऽभ्यन्तरे येषाम् तैः तथोक्तैः (with the words fie upon him), मुखैः=आननैः (with faces), शोचन्तः=शोकं कुर्वन्तः (bewailing), अवशम्=प्रतिकर्तुमशक्तम् (helpless), माम्=चाणक्यम् (Chanakya), अग्रासनतः=प्रशस्तश्राद्धीय-ब्राह्मणासनात् (from the front seat), अवकृष्टम्=दूरीकृतम् (dragged away), दृष्टवन्तः=अवलोकितवन्तः (formerly saw me), ते जनाः=लोकाः (people), सम्प्रति=अधुना (now), सिंहेन=मृगाधिपेन (by a lion), गजेन्द्र=गजराजम्, (tusker), अद्रिशिखरादिव=पर्वतशृङ्गादिव (like from the top of a hill),

येन मया—

समुत्खाता नन्दा नव हृदयरोगा इवः भुवः
कृता मौर्ये लक्ष्मीः सरसि नलिनीव स्थिरपदा• ।

मया=चाणक्येन (by me), सान्वयम्=पुत्रपौत्रादिसहितम् (with his successors), नन्दम्=नृपम् (to the king Nanda), सिंहासनात्=नृपासनात् (from the throne) तथैव=तेन प्रकारेण (in the same way), पातितम्=भ्रंशितम् (pulled down), पश्यन्ति=समवलोकन्ते (now see) स =पूर्वोक्तकार्यसम्पादक, अहम् (I), इदानीम्=साम्प्रतम् (now), अवसितप्रतिज्ञाभारोऽपि=समुत्तीर्णप्रतिश्रुतिभारोऽपि (the trouble of vow ended) वृषलापेक्षया=चन्द्रगुप्तानुरोधेन (out of consideration for Chadr¬gupta) शस्त्र=नीतिरूपम् (the sword) धारयामि=धारणम् करोमि (handle)

हिन्दी—और भी—वे लोग जिन्होंने महाराज के लिए मुह में आये धिक्कार' शब्द को भय के मारे मुह में ही दबाए, कुछ सोचते हुए विवश स्थिति में—मुझ प्रशस्तश्राद्धीय ब्राह्मण के आसन से हटाये जाते देखा, वे आज यह भी देखें—जैसे पहाड की चोटी से गजराज को धक्का देकर सिंह गिरा देता है, उसी प्रकार मेरे द्वारा सपरिवार नन्द सम्राट् को राजसिंहासन से वैसे नाचे गिरा दिया जाता है ॥ १२ ।

अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के बाद भी मैं चन्द्रगुप्त के लिये शस्त्र धारण करता हू ॥

English—Further more—

Those people who bewailing cast down, with faces, and to choke the voice of fie upon the king, due to the fear of king Nanda, only gazed upon me formerly, helpless as I was dragged away from the front seat, now they see the king Nanda with his successors pulled down by me, just in the same way from the throne like an elepnant by a lion from the top of a hill ॥ १२ ॥

I, though the trouble of vow ended, still handle out the policy out of consideration for Chandragupta

टिप्पणी—नराधिप =नराणाम् अधिप =नराधिप, यहाँ षष्ठी तत्पुरुष समास है। इसमें 'पञ्चमी भयेन से पञ्चमी विभक्ति हुई। इसी प्रकार धिक्शब्दगर्भैर्मुखैः=धिक् नृपनिमिति शब्दो गर्भोऽभ्यन्तरे येषाम् ते तथोक्तै मुखे उपलक्षिता ''इत्थभूतलक्षणे से यहाँ तृतीया विभक्ति हुइ।

यहाँ उपमानभूत सिंह का उपमेयभूत अस्मद् शब्द के पतनरूप सामान्य धर्म का औपम्य वाचक इव शब्द के प्रतिपादन से श्रौती पूर्णोपमा अलङ्कार है। इसमें वीर रस है। गौडी रीति है और ओज गुण है। शार्दूलविक्रिडित छन्द है। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"सूर्याश्वैर्मसज• स्तत स गुरव शार्दूलविक्रीडितम् ।"

विमला

अन्वय —(सोऽहम् शस्त्रं धारयामि येन मया) भुव, हृदयरोगा, इव, नव नन्दा, समुत्खाता, सरसि, नलिनीव, मौर्यलक्ष्मी, स्थिरपदाकृता, कोपप्रीत्यो द्वयो, सार, द्वितयम्, फलम्, अभियुक्तेन, मनसा, द्विषति च सुहृदि च तुल्यम् विभक्तम् ॥ १३ ॥

द्वयोः सारं तुल्यं द्वितयमभियुक्तेन मनसा
फलं कोपप्रीत्योर्द्विषति च विभक्तं सुहृदि च ॥ १३ ॥

व्याख्या—येन मया = चाणक्येन (I by whom), हृदयस्य = चित्तस्य (of the heart), रोगाः = अन्तर्गता व्याधयः (cankers), इव = यथा (like), भुवः = पृथिव्याः (of the earth), नवनन्दाः = सपुत्रनन्दाः (The nine Nandas), समुत्खाताः = समुन्मूलिताः (have been uprooted), सरसि = कासारे (In a lake), नलिनी = कमलिनी (the lotus), इव = यथा (Like), मौर्यलक्ष्मीः = चन्द्रगुप्ते राज्यश्रीः (unto Maurya sovereignty), स्थिरपदा कृता = निश्चलस्थानमस्मादिता (has been made firmly established), कोपप्रीत्योः = अमर्षस्नेहयोः (anger and love), द्वयोः = उभयोः (of the two), सारं = न्याय्यम् (most excellent), द्वितयम् = द्विविधम् (twofold), फलम् = निग्रहाऽनुग्रहरूपपरिणामम् (Fruit like pleasure and displeasure), द्विषति च सुहृदि च = शत्रौ च मित्रे च (The foe and the friend), तुल्यम् = समानम् (equally), विभक्तम् = विभज्यस्थापितम् (has been divided), अभियुक्तेन = आग्रहवता (with an attentive), मनसा = हृदयेन (mind) ॥ १३ ॥

हिन्दी—मैं वह हूँ, जिसने—इस धरती के हृदय शूलों की तरह नौ के नौ नन्दों को उखाड़ फेंका। मौर्य में राज्यलक्ष्मी को उसी तरह स्थिर कर दिया जैसे किसी सरोवर में कमलिनी बद्धमूल हो, और मैं पूरे मनोयोग के साथ क्रोध का फल शत्रुओं के बीच एवं प्रेम का परिणाम मित्रों के बीच समान रूप से वितरित कर चुका हूँ ॥ १३ ॥

English—I by whom—The nine Nandas have been uprooted, like derts in the heart of the earth, Sovereignty has been firmly made established, in the Maurya like a lotus in a lake, and the proper twofold yield of the two things anger and love, has been equally divided with a careful mind between foe and friend. 13.

टिप्पणी—नवनन्दाः—नवनन्दा से तात्पर्य है, राजा नन्द और उनके आठ पुत्र। हृद्रोगा=हृदयस्य रोगः हृद्रोगः, 'वा शोकष्यञ् रोगेषु' से यह रूप सिद्ध है। द्वितयम्—दौ अवयवौ यस्य इनि द्वि+तयप् प्रत्यय लगाकर द्वितयम् रूप बना। तात्पर्य यह कि निग्रह एवं अनुग्रह रूप दो फल।

इस श्लोक के प्रथम चरण में 'हृदयरोगा इव' में इव शब्द के उपादान से नन्दों के भूहृद्रोग की सम्भावना से गुणोत्प्रेक्षालङ्कार है।

इस प्रकार उपमानभूत नलिनी शब्द का, उपमेयभूत मौर्य शब्द का औपम्यवाचक इव शब्द का, स्थिरपदत्वरूप समान धर्म के अभिधान से श्रौती पूर्णोपमा अलङ्कार है।

तृतीय एवं चतुर्थ पाद के नन्दसमुन्मूलन से उसमें निग्रहात्मक कोप फल का मौर्यश्री के स्थिरीकरण के द्वारा उसमें अनुग्रहात्मकानुराग फल का क्रम से निर्देश होने के कारण यथासंख्य नाम अलङ्कार है।

अतः इस श्लोक में इन सबों के सम्मिश्रण के कारण 'संसृष्टि' नाम अलङ्कार है। इसमें वैदर्भी रीति हुई। ओज गुण है तथा शिखरिणी छन्द है, शिखरिणी का लक्षण वृत्तरत्नाकर में लिखा है :—"रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी।"

अथवा अगृहीते राक्षसे किमुत्खातं नन्दवंशस्य किं वा स्थैर्यमुत्पादितम् चन्द्रगुप्तलक्ष्म्याः (विचिन्त्य) अहो राक्षसस्य नन्दवंशे निरतिशयो भक्तिगुणः। स खलु कस्मिंश्चिदपि जीवति नन्दान्वयावयवे वृषलस्य साचिव्यं ग्राहयितुं न शक्यते। तदभियोगं प्रति निरुद्योगः शक्योऽवस्थापयितुमस्माभिः। अनयैव बुद्ध्या तपोवनगतोऽपि घातितस्तपस्वी नन्दवंशीयः सर्वार्थसिद्धिः। यावदसौ मलयकेतुमङ्गीकृत्यास्मदुच्छेदाय विपुलतरं प्रयत्नमुपदर्शयत्येव। (प्रत्यक्षवदाकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा) साधु अमात्यराक्षस, साधु। साधु श्रोत्रिय, साधु। साधु मन्त्रिबृहस्पते, साधु। कुतः ?

विमला

व्याख्या—अथवा = पक्षान्तरे (or), अगृहीते = अनायत्तीकृते (being unescured), राक्षसे = तदाख्यनन्दामात्ये (Rakshasa), नन्दवंशस्य = नन्दपरिवारस्य (The race of Nandas), किमुत्खातम् ? = किं समुन्मूलितम् (totally destroyed), किंवा = अथवा (or), चन्द्रगुप्तलक्ष्म्या = मौर्यराज्यश्रियः (sovereignty of Maurya), स्थैर्यम् = नैश्चल्यम् (stability), किम् (what), उत्पादितम् = सम्पादितम् (has been given), विचिन्त्य = चिन्तयित्वा (Thinking), अहो = आश्चर्यम् (oh), राक्षसस्य = नन्दामात्यस्य (of Rakshasa), नन्दवंशे = नन्दान्वये (to the race of Nanda), निरतिशये = अतिमहान् (unsurpassable), भक्तिगुणः = भक्तिरूपो गुणविशेषः (devotion), सः = असौ (Rakshasa), खलु = निश्चयः (Indeed), कस्मिंश्चिदपि = एकस्मिन्नपि (any member), जीवति = श्वसति विद्यमान इति यावत् (living), नन्दान्वयावयवे = नन्दकुलोत्पन्ने (The race of Nanda), वृषलस्य = चन्द्रगुप्तस्य (of Chandragupta), साचिव्यम् = मन्त्रित्वम् (the ministership), ग्राहयितुम् = स्वीकारयितुम (to accept), न शक्यते = न प्रभूयते (can not be induced), तदभियोगं प्रति = राक्षसनिग्रहं प्रति (towards a expedition), निरुद्योगः = व्यवसायशून्यः (inactive), अस्माभिः, अवस्थापयितुम् = वर्त्तितुम् (rendered), शक्यः = योग्यः (able), अनयैव, बुद्ध्या = धिया (*In this very belief*), तपोवनगतोऽपि = तपस्तप्तु सेवितारण्योऽपि (though retired to the hermitage), तपस्वी = तापस. (devout), नन्दवंशीयः = नन्दकुलोद्भव. (of the family of Nanda), सर्वार्थसिद्धि = तदाख्य. (Sarvarthasiddhi), घातितः = विनाशितः (killed), यावद्, असौ = सर्वार्थसिद्धिः (still he), मलयकेतुमङ्गीकृत्य = मुद्राराक्षसं स्वीकृत्य (by having accepted Malayaketu), अस्मदुच्छेदाय = अस्मानुच्छेत्तुम् (for our destruction), विपुलतरम् = महान्तम् (greatter), प्रयत्नम् = चेष्टाम् (*effort*), उपदर्शयत्येव = करोत्येव (*is making*), प्रत्यक्षवत् = साक्षात् दृग्गोचरीभूता (as on something visible), आकाशे = गगने (on the sky), लक्ष्यबद्ध्वा = लक्ष्यं कृत्वा (Fixing his eye) साधु अमात्यराक्षस = सज्जनमन्त्रिराक्षस (Bravo ! minister Rakshasa), साधु श्रोत्रिय साधु = साधुवेदाध्ययनशील साधु

ऐश्वर्यादनपेतमीश्वरमयं लोकोऽर्थतः सेवते
　तं गच्छन्त्यनु ये विपत्तिषु पुनस्ते तत्प्रतिष्ठाशया।
भर्तुर्ये प्रलयेऽपि पूर्वसुकृतासंगेन निःसङ्गया
　भक्त्या कार्यधुरं वहन्ति कृतिनस्ते दुर्लभास्त्वादृशाः ॥ १४ ॥

अत एवास्माकं त्वत्संग्रहे यत्नः कथमसौ वृषलस्य साचिव्यग्रहणेन सानुग्रहः स्यादिति। कुतः—

(oh learned Brahman well done), साधु, मन्त्रिबृहस्पते साधु, साधु अमात्य सुरगुरो साधु (Noble Brihaspati like minister, very noble,).

हिन्दी—अथवा—जबतक राक्षस मेरी पकड में नहीं आ जाता, तब तक नन्दवंश का ही हमने क्या उखाड फेका? अथवा चन्द्रगुप्त का राज्यश्री में ही कौनसी स्थिरता ला दी? (कुछ सोचकर) आश्चर्य! नन्दों के प्रति राक्षस की भक्ति भी कितनी अटल है। जब तक नन्दवंश का एक भी व्यक्ति जीवित है, वह चन्द्रगुप्त का मन्त्रित्व करना भी स्वीकार नहीं करेगा। इस सम्बन्ध में जबतक उसे स्वयं यह समझ में न आजाय कि इस दिशा में किये गये उसके सारे प्रयत्न निरर्थक हैं। इसी विचार से मैंने नन्द के एक सम्बन्धी होने के अपराध में तपस्वी सर्वार्थसिद्धि को मरवा डाला। लेकिन इससे क्या हुआ? यह तो मलयकेतु की सहायता से, हमें विनष्ट करने के लिए और अधिक जोर से प्रयत्नशील हो गया है। (प्रत्यक्ष की तरह आकाश में लक्ष्य करके) शाबाश अमात्य राक्षस, शाबाश मन्त्रिशिरोमणि धन्य, सचमुच धन्य है तू देवताओं के गुरु धन्य है। क्यों, कि—

English—But as a matter of fact, so long as the Rakshasa has not been unescured, what I have gained exterminating the race of the Nanda, or what is the stability after making Chandragupta monarch? (Thinking), oh, what an ample of devotion of the Rakshasa to the race of Nanda is? So long as even a single member of the race of Nanda is living, he will, indeed, never accept to be the minister of Chandragupta. As long he is not self thought that his all tries would go inven, I can not appoint him any where Due to this very thought, we got poor Sarvarthasiddhi to be killed, a member of the race of Nanda, though he had joined the hermitary. But he is trying our distruction more rapidly than first having the help of Malayaketu. (Seeing sky as if seeing any visible of object there) Daring, minister Rakshasa, daring, [Oh Brahman praiseworthy, counsellor like Brihaspati, Well done! for—

विमला

अन्वयः—अयम् लोकः, ऐश्वर्यात्, अनपेतम्, ईश्वरम्, अर्थतः, सेवते। ये, पुनः विपत्तिषु तमनुगच्छन्ति, ते तत्प्रतिष्ठाशया। त्वादृशाः कृतिनः, ये, भर्तुः, प्रलयेऽपि, पूर्वसुकृतासङ्गेन, निःसङ्गया, भक्त्या, कार्यधुराम्, वहन्ति, ते दुर्लभाः।

व्याख्या—अयं लोक =एष संसारः (This world), ऐश्वर्यात् = सम्पत्ते. (with *supremacy*), अनपेतम् = अरहितम् (Not gone off), ईश्वरम् = प्रभुम् (Lord), अर्थतः = अर्थलाभहेतोः (for the sake of gain), सेवते = आश्रयति (serve), ये=जनाः (People), पुनः (again), विपत्तिषु=रिपुकृतव्यसनदुर्भिक्षादिसमयेषु (in adversity), तमनुगच्छन्ति = त परिचरन्ति (follow him), ते = जनाः (People), तत्प्रतिष्ठाशया=पुन· राज्यादिलाभाशया (in the hope of him coming *back to power*), त्वादृशा· = भवद्विधा· (*of your type*), कृतिन· = कुशलाः (blessed), ये=जनाः (who), भर्तुः =स्वामिन· (of the master), प्रलयेऽपि=विनाशेऽपि (in the complete ruin) पूर्वसुकृतासङ्गेन=पुराकृतसंरक्षणाद्यविस्मरणेन (remembering past favours), नि·सङ्गया=स्वार्थरहितया (from disinterested), भक्त्या=सेवया (devotion), कार्यधुराम्=कार्यभारम् (the burden of work) वहन्ति=धारयन्ति (bear), ते=जनाः (*People*), दुर्लभाः = कष्टलभ्या· (rarely are to be found) ॥ १४ ॥

अत एव=अलौकिकगुणवत्त्वादेव (Hence indeed), अस्माकम् (us), त्वत्-संग्रहे=तवायत्तीकरणे (to secure you), यत्न =उद्योगः (attempt), कथमसौ = केन प्रकारेण राक्षसः (How he), वृषलस्य=चन्द्रगुप्तस्य (of Chandragupta), साचिव्यग्रहणेन=मन्त्रित्वाङ्गीकारेण (by accepting the ministership), सानुग्रहः=कृतकृत्यः (disposed to favour), स्यात् = भवेत् (might be)

हिन्दी—दुनियाँ के सामान्य जन स्वार्थवश सर्वशक्तिसम्पन्न स्वामी की सेवा करते हैं, कुछ लोग विपत्तिग्रस्त स्वामी की भी सेवा इस आशा से करते हैं कि वे पुन· राज्यशक्ति प्राप्त करेंगे। किन्तु, विपत्ति हो अथवा सम्पत्ति, सर्वतोभावेन विनाश हो जाने पर भी स्वामी के पूर्वकृत अनुग्रहों को याद कर जो जन भक्तिपूर्वक अपने कार्यभार का निर्वाह करता है—ऐसा कृतज्ञ, तुम्हारी तरह दुनिया में विरल ही है ॥ १४ ॥

यही कारण है कि तुम्हें अपने पक्ष में लाने के लिए मेरा यह सारा प्रयास चल रहा है। मैं अपने को तभी कृतकार्य मानूँगा—जब तुम अपने मन्त्रित्व से चाणक्य को अनुगृहीत करोगे। क्यों कि—

English—Ordinary people serve their master so long as he is not divested of power for gain, those again who follow him in adversity, do so in the hope of his coming back to power, but rarely are *to be found those workers of your type, who in memory* of past favours, bear the burden of work out of disinterested devotion, even after the death of their lord. 14.

Hence indeed our attempt to get hold of you—how you might be settle to good will of Chanakya by accepting the ministership.

टिप्पणी—'अर्थत.' में 'हेतौ' से तृतीया विभक्ति हुई है। इसी प्रकार 'तम्' में 'कर्मप्रवचनीययोगे द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है। तत्प्रतिष्ठाशया—प्रति+स्था+अङ्भाव में

कुवः—

> अप्राज्ञेन च कातरेण च गुणः स्याद्भक्तियुक्तेन कः
> प्रज्ञाविक्रमशालिनोऽपि हि भवेत्किं भक्तिहीनात्फलम् ।
> प्रज्ञाविक्रमभक्तयः समुदिता येषां गुणा भूतये
> ते भृत्या नृपतेः कलत्रमितरे संपत्सु चापत्सु च ॥ १५ ॥

प्रतिष्ठा' रूप का निर्माण है। पूर्वसुकृत—पूर्वं सुकृतम्, तस्य आगमन्—आ+गम+क्त, भाव में रूप है अनन्त, 'इनी' ने द्वारा विभक्ति है। निःसङ्ख्या—निर्गत सङ्ख्या यस्या ता, तया, 'जनर्गत सुनाता' इति से रूप सम्पन्न है। कृतिन—कृतमेषामस्तीति कृतिन। कार्यधुरा—कार्यस्य धूः भारः कार्यधुरा 'ऋक्पूरब्धूः' इत्यादि से समासान्त अप् प्रत्यय करने के बाद टाप् प्रत्यय करने से रूप सम्पन्न है। यहाँ अनन्त को भरा अनेकविध का व्यतिरेक से प्रतिपादन होने के कारण व्यतिरेक अलङ्कार है। यहाँ अन्तरस है। वैदर्भी रीति है तथा माधुर्य गुण है। इस श्लोक में 'शार्दूलविक्रीडित' छन्द है। "सूर्याश्वर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्"

विमला

अन्वयः—अप्राज्ञेन, च कातरेण च सानुरागेण, कः गुणः स्यात्, प्रज्ञाविक्रमशालिनोऽपि, भक्तिहीनात्, किम् फलम्, भवेत्, येषां, प्रज्ञाविक्रमभक्तयः समुदिताः, गुणाः, ते, भृत्याः नृपतेः, सम्पत्सु, आपत्सु च, भूतये इतरे, कलत्रम् ।

व्याख्या—अप्राज्ञेन = बुद्धिहीनेन (by unwise), कातरेण = अपराक्रमिणा (by a coward). सानुरागेण = भक्तियुक्तेन (by devotion), भृत्येन = सेवकेन (by a servant), कः गुणः = किं प्रयोजनम् (what is the use) स्यात् = भवेत् (would come), प्रज्ञाविक्रमशालिनोऽपि = बुद्धिसामर्थ्ययुक्तादपि, (endowed with wisdom and bravery), भक्तिहीनात् = पूज्यविषयकानुरागरहितात् (is devoid of loyalty), किम् फलम् = किम् प्रयोजनम् (what is the use), भवेत् = स्यात् (can come out), येषाम् = भृत्यानाम् (of a servant), प्रज्ञाविक्रमभक्तयः समुदिताः गुणाः = सकलाः गुणाः सन्ति (qualities of inteligence, bravery and devotion), ते भृत्याः = ते सेवकाः (those servants), नृपतेः = राज्ञः (of the king), सम्पत्सु = अभ्युदयेषु (in prosperities), च = पुनः (again), आपत्सु = विपत्तिकालेषु (In adversity), भूतये = कल्याणाय भवन्ति (for the welfare), इतरे = अन्ये (others), कलत्रम् = धनप्राप्तिकामनया वनिता (like many wives). ॥ १५ ॥

हिन्दी—बुद्धिहीन एवं कायर किन्तु स्वामिभक्त सेवक से क्या प्रयोजन? इसी प्रकार बुद्धिमान एवं शौर्यसम्पन्न किन्तु राजभक्ति से हीन सेवक से भी क्या प्रयोजन? अच्छा सेवक तो वे हैं, जिनमें बुद्धि, विक्रम और भक्ति तीनों का समन्वय हो। वैसे तो वे सभी राजसेवक ही कहलाते हैं, जिनका भरण-पोषण अच्छे और बुरे दिनों में औरत की तरह राजा को ही करना पड़ता है ॥ १५ ॥

English—What is the need of such servants, who is neither wise nor energetic, though he is full of piety? Simillary, what is the

तन्मयाप्यस्मिन् वस्तुनि न शयानेन स्थीयते यथाशक्ति क्रियते तद्ग्रहणं प्रति यत्नः। कथमिव। अत्र तावद्वृषलपर्वतकयोरन्यतरविनाशेनापि चाणक्यस्यापकृतं भवतीति विषकन्यया राक्षसेनास्माकमत्यन्तोपकारि मित्रं घातितस्तपस्वी पर्वतक इति सञ्चारितो जगति जनापवादः। लोकप्रत्ययार्थमस्यैवार्थस्याभिव्यक्तये पिता ते चाणक्येन घातित इति रहसि त्रासयित्वा भागुरायणेनापवाहितः पर्वतकपुत्रो मलयकेतुः। शक्यः खल्वेष राक्षसमतिपरिगृहीतोऽपि व्युत्तिष्ठमानः प्रज्ञया निग्रहीतुम्। न पुनरस्य निग्रहात्पर्वतकवधोत्पन्नं राक्षसस्यायशः प्रकाशीभवत्प्रमार्ष्टुमिच्छामि। प्रयुक्ताश्च स्वपक्षपरपक्षयोरनुरक्तापरक्तजनजिज्ञासया बहुविधदेशवेषभाषाचारसञ्चारवेदिनो नानाव्यञ्जनाः प्रणिधयः। अन्विष्यते च कुसुमपुरवासिनां नन्दामात्यसुहृदां निपुणं प्रचारगतम्। तत्तत्कारणमुत्पाद्य कृतकृत्यतामापादिताश्चन्द्रगुप्तसहोत्थायिनो भद्रभटप्रभृतयः प्रधानपुरुषाः। शत्रुप्रयुक्तानां च तीक्ष्णरसदायिनां प्रतिविधानं प्रत्यप्रमादिनः परीक्षितभक्तयः क्षितिपतिप्रत्यासन्ना नियोजितास्तत्र तत्राप्तपुरुषाः।

---

use of a wise and brave servant having no devotion ? Only those can bring about the prosperity of their king who are full of wisdom, dare and piety, remainings are equal to women both in calamity and thriving only to be brought up by the lord. 15.

टिप्पणी—अप्राज्ञेन=प्रकृष्ट जानातीति प्रज्ञ. प्रपूर्वक ज्ञा धातु से 'प्रे दा ज्ञः' सूत्र से क प्रत्यय का यह रूप है। प्रज्ञ एव प्राज्ञः, स्वार्थेऽण्, न प्राज्ञोऽप्राज्ञस्तेन अप्राज्ञेन। प्रज्ञाविक्रमशालिन.= प्रज्ञा च विक्रमश्च प्रज्ञाविक्रमौ ताभ्यां शालन्ते इति प्रज्ञाविक्रमशालिन. 'सुप्यजातौ' इत्यादि सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय कर यह रूप बना। भूतये—भूतिम् कर्तुम् इस विग्रह में 'तादर्थ्ये चतुर्थी' से चतुर्थी विभक्ति हुई।

इस श्लोक में भी उपमेयभूत अनुरक्त बुद्धिहीन विक्रमशून्य की अपेक्षा वैसी भक्तिरहित बुद्धि पराक्रम की तरह कथन से 'व्यतिरेक' अलङ्कार है। वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण तथा 'शार्दूलविक्रीडित' छन्द है। छन्द लक्षण पहले (पृ ३७ में) लिखा जा चुका है।

विमला

व्याख्या—तन्मयापि=तत्तस्मात्कारणात् मयापि (Therefore I too), अस्मिन्वस्तुनि=राक्षसायत्तीकरणात्मके विषये (over this matter), शयानेन=असावधानेन (asleep), न=नहि (donot), स्थीयते=विद्यते (Lie), यथाशक्ति=शक्त्यनुसारेण (as much as I can), तद्ग्रहणम् प्रति=राक्षसाधीनीकरण प्रति (to secure him), यत्नः=प्रयासः (an effort), क्रियते (am making), कथमिव=केन प्रकारेण (How is), अत्र तावत्=अस्मिन् कर्मणि खलु (in this matter), वृषलपर्वतकयोः=चन्द्रगुप्तचाणक्यमित्रयोः (Chandragupta and Parvatak), अन्यतरविनाशेनापि=एकस्यापि विनाशेन (by the death of either of the two),

चाणक्यस्यापकृतम् = चाणक्यस्यापदः, भवति = गच्छति (harm would be done to Chanakya), विषकन्यया = विषनिर्मितबालिकया (a poison maid), राक्षसेन (by Rakshasa), अस्माकम् अत्यन्तोपकारिमित्रम् = अस्माकं अतिशयोपकल्याणसम्पादकसुहृद् (our extremely obliging friend), तपस्वी = तापसः (Poor), पर्वतकः = एतन्नामकः (the king Parvatak), घातितः = मारितः (has been killed), इति, जनापवादः = लोकप्रवादः (scandalous report), जगति = संसारे (In the world), संचारितः = प्रचारितः (to be circulated), लोकप्रत्ययार्थम् = सकलजनप्रतीत्यर्थम् (For the credence of people), अस्यैवार्थस्य = पर्वतकवधात्मकवस्तुनः (Parvatak was killed), अभिव्यक्तये = प्रस्थापनाय (for circulation), पिता तेऽनेन = तव जनकः (your father), चाणक्येन घातित = कौटिल्येन हतः (was killed by Chanakya), इति रहसि त्रासयित्वा = एवं एकान्ते भयमुत्पाद्य (having alone inspired fear in him), भागुरायणेन = मलयकेतुमित्रवेषिचाणक्यप्रणिधिना (by Bhagurayan), अपवाहितः = कटकाद्विसारितः (has been removed), पर्वतकपुत्रो मलयकेतुः (Malayaketu the son of Parvatak), शक्यः खलु एष = एनं वशीकर्तुम् स्यादिति (be subdued), राक्षसमतिपरिगृहीतोऽपि = राक्षसबुद्धिस्वीकृतोऽपि (by the counsels of Rakshasa), एष = मलयकेतुः (this), व्युत्थितमानः = युद्धार्थं तत्परः सन् (making preparation for war), प्रज्ञया = बुद्ध्या (by the talent), निग्रहीतुम् = निवारयितुम् (for keeping in check), न पुनरस्य = किन्तु न मलयकेतोः, निग्रहात् = हननात् (by his arrest), पर्वतकवधोत्पन्नं = पर्वतकविनाशादुत्पन्नम् (arising from the murder of Rakshasa), अयशः = अकीर्तिम् (the scandal), प्रकाशीभवत् = संचार्यमाणम् (the infamy), प्रमार्ष्टुमिच्छामि = दूरीकर्तुम् वाञ्छामि (do not wish to put an end), प्रयुक्ताश्च = नियुक्ताश्च (also employed), स्वपक्षपरपक्षयोः = निजपक्षशत्रुपक्षयोः अनुरक्तापरक्तजन = (the people that are attached to or disaffected towards our side or that of the enemy), जिज्ञासया = ज्ञातुमिच्छया (the desire of knowing), बहुविधदेशवेषभाषाचारसंचारवेदिनः = बहुविधानां देशानाम् यो वेषः परिच्छदः, या च भाषा, आचारसंचाराश्च तान्विदन्ति ये ते (with various places, dresses, languages, manners and modes of dealing with), नानाव्यञ्जनाः = बहुविधवेशधारणशीलाः (disguises), प्रणिधयः = गूढचराः (emissaries), अन्विष्यते = अन्वेष्यन्ते च (and in search of), कुसुमपुरवासिनाम् = कुसुमपुरवास्तव्यानाम् (Dwelling of Kusumpur), नन्दामात्यसुहृदाम् = नन्दमन्त्रिबन्धूनाम् (the minister and friends of the Nanda), निपुणम् = कुशलम् (skilled), प्रचारगतम् = कार्यप्रवृत्तिदशाविशेषाः (watched the works), तत्तत्कारणमुत्पाद्य = भद्रभटादी आप्तत्वेन योजयित्वा (by creating various occasions), कृतकृत्यताम् = सफलताम् (success), आपादिताः = गमिताः (completed), चन्द्रगुप्तसहोत्थायिनः = चन्द्रगुप्ताभ्युदयेनाभ्युदयवन्तः (that made common cause with Chandra gupta), भद्रभटप्रभृतयः = भद्रभटादिः (Bhadrabhata and others), प्रधान-

पुरुषा = मुख्यकार्याधिकारिण (high officials), शत्रुप्रयुक्तानाम् = रिपुनियुक्तानाम् (employed by the enemy), तीक्ष्णरसदायिनाम् = विषदायिनाम् (poison employed), प्रतिविधानम् = प्रतिकार निवारणम् (counteracting), प्रत्यप्रमादिन = सावधाना (careful), परीक्षितभक्तयः = दृष्टानुरागा (trusted agents of tried loyalty), क्षितिपतिप्रत्यासन्ना = चन्द्रगुप्तसमीपवर्त्तिन (keeping near the person of the king), आप्तपुरुषा = विश्वस्तानुचरा (faithful servants), नियोजिता = नियुक्ता (appointed)

हिन्दी—और, मैं भी इस काम में सोया तो नहीं हूं। दिन रात उसे पकड़ने के प्रयास में यथाशक्ति लगा हूं। यह कैसे?

दुनियाँ में यह लोकापवाद फैला दिया गया है कि राक्षस ने ही विषकन्या का प्रयोग कर हमारे परम मित्र तपस्वी राजा पर्वतक की हत्या कर दी है, और, वह इसलिये कि चन्द्रगुप्त अथवा पर्वतक इन दोनों में से किसी एक की मृत्यु से भी चाणक्य का सारा खेल बिगड़ जायगा। भागुरायण ने पर्वतकपुत्र मलयकेतु को एकान्त में, यह कहकर, डराकर, अलग भगा ले गया है कि तुम्हारे पिता को चाणक्य ने मरवाया है। राक्षस की सहायता पाकर यह *मलयकेतु हमारे विरुद्ध सम्भवत उठ खड़ा हो, तो—युक्ति से इसे वशवर्ती बनाया जा सकता है।* फिर भी, मैं यह नहीं चाहता कि 'राक्षस ने पर्वतक की हत्या की है' यह फैलता हुआ लोकापवाद समय से पूर्व इस तरह ज्ञात हो जाय। और फिर—हमारे पक्ष में तथा शत्रुओं के पक्ष में कौन अनुरक्त है? यह जानने के लिए—विविध देश, वेष, भाषा, आचार, सचार में कुशल गुप्तचरों को विभिन्न साधनों से सम्पन्न कर, नियुक्त कर दिया गया है। इतना ही नहीं, राजधानी कुसुमपुर में रहनेवाले नन्द के पुराने मन्त्रियों और मित्रों की हर गतिविधि पर निगरानी रखी जा रही है। चन्द्रगुप्त की उन्नति के साथ उन्नतिशील प्रधान राजपुरुष भद्रभटादि के द्वारा उन उन घातों को बनवा-बनवाकर जो कुछ भी किया जाना था कर ही दिया गया है। शत्रु प्रयुक्त तीक्ष्ण विषादि के प्रतिकार में समर्थ, पूर्ण परीक्षित एवं विश्वासपात्र जन ही महाराज की सेवा में हमारे द्वारा नियुक्त कर दिये गये हैं।

English—Over this matter, therefore, I too do not sleep, but I am making an effort to secure him as much as I can How is that—

A scandalous report has been circulated in the world that—Devout Parvatak, our extremely obliging friend was killed by the Rakshasa through a poison maid, thinking that harm would be done to Chanakya by the death of either one of Chandragupta and Parvataka To make this very thing obrious for the belief of the world Parvataka's son Malayaketu has been removed by Bhagurayana, having in alone inspired fear in him that his father was killed by Chanakya. This prince, makig preparations against us, guided by the counsels of Rakshasa is capable of being checked by the force of my intellect On the other hand I do not wish to put an end the infamy of Rakshasa arising from the assassination of Parvataka, which is spreading abroad, Emissaries too, conversant with various

अस्ति चास्माकं सहाध्यायि मित्रमिन्दुशर्मा नाम ब्राह्मणः । स चौशनस्यां दण्डनीत्यां चतुःषष्ट्यङ्गे ज्योतिश्शास्त्रे च परं प्रावीण्यमुपगतः । स मया क्षपणकलिङ्गधारी नन्दवंशवधप्रतिज्ञानन्तरमेव कुसुमपुरमुपनीय सर्वनन्दामात्यैः सह सख्यं ग्राहितो विशेषतश्च तस्मिन् राक्षसः समुत्पन्नविश्रम्भः । तेनेदानीं महत्प्रयोजनमनुष्ठेयं भविष्यति । तदेवमस्मत्तो न किञ्चित्परिहास्यते । वृषल एव केवलं प्रधानप्रकृतिष्वस्मास्वारोपितराज्यतन्त्रभारः सततमुदास्ते । अथवा यत्स्वयमभियोगदुःखैरसाधारणैरपाकृतं तदेव राज्यं सुखयति । कुतः ?

---

places, dresses, languages, manners and modes of dealing with strangers with the desire of knowing the people that are attached to or disaffected towards our side or that of enemy, have been employed by me. The actions of the ministers and friends of Nanda who reside at Kusumpur are skilfully watched. Bhadrabhata and others high officials that made to further our interests by creating various occasions. Trusted persons, ever careful to take standard against men employed by Rakshasa to administer poison, and of tried loyalty have been appointed to be near the king.

विमला

व्याख्या—अस्माकं सहाध्यायी = अस्माकं सतीर्थ्यः (our classfellow), मित्रम्= सुहृद् (friend), इन्दुशर्मा नाम ब्राह्मणः = एतदाख्यो ब्राह्मणः (A Brahman Indu Sharma by name) अस्ति (is), स च = असौ (he), औशनस्यां दण्डनीत्याम्= शुक्रकृतशासनशास्त्रे (the science of polity of Usanas), चतुःषष्ट्यङ्गे ज्योतिःशास्त्रे च (and in the science of astronomy with its sixty four divisions), परम् प्रावीण्यम्=अतिदक्षताम् (very great proficiency), उपगतः= प्राप्तः (has aquired), स मया, क्षपणकलिङ्गधारी = बौद्धसंन्यासिचिह्नयुक्तः (in the dress of a Bauddha mendicant), नन्दवंशवधप्रतिज्ञानन्तरमेव=नन्दकुलसंभूतविनाशसंकल्पात्परमेव (just after my vow to destroy the family of Nanda), कुसुमपुरमुपनीय=पाटलिपुत्रमानीय (he was brought to Kusumpur), सर्वनन्दामात्यैः सह=सकलनन्दमन्त्रिभिः सह (with all the ministers of Nanda), सख्यम्=मैत्रीम् (friendship), ग्राहितः=स्वीकारितः (made to form), विशेषतश्च= विशेषरूपेण च (and in particular), तस्मिन् = इन्दुशर्मणि (in him), राक्षसः = तदाख्यो नन्दामात्यः (the minister of Nanda), समुत्पन्नविश्रम्भः = संजातविश्वासः (very great confidence), तेन = इन्दुशर्मणा (by Indu Sharma), इदानीम् = साम्प्रतम् (presently), महत् प्रयोजनम्=विशेषकार्यम् (an important work), अनुष्ठेयम् भविष्यति=सम्पन्नं भविष्यति (will be rendered), तदेवम् = तस्मादुक्तप्रकारकोपाये कृते सति (so in this matter), अस्मत्तः = अस्माभिः (through us), न किञ्चित्=किमपि न (nothing), परिहास्यते = परिहीनं न्यूनं न भविष्यति (will be

found wanting), वृषल एव केवलम् = चन्द्रगुप्त एव केवलम् (Chandragupta alone) प्रधानप्रकृतिषु=मुख्यमन्त्रिषु (the chief personage), अस्मासु= आरोपित अस्मासु न्यस्त (placed on us), राजतन्त्रभार = स्वराष्ट्रस्मरणस्य भार (responsibility of administering the kingdom), सततमुदास्ते = सर्वदा उदासीन सन् तिष्ठति (always remain apathetic), अथवा = वा (or), स्वयमभियोगदु खै =आत्मना कृत्यविषयकाप्रहसमुत्पन्नखेदै असाधारणै =विशेषै, अपाकृतम्= रहितम्, यत्, राज्यम् = साम्राज्यम्, तदेव सुखयति=सुख करोति (rather, that sovereignty alone gives happiness, which is removed from the peculiar of application to work) कृत =for

हिन्दी—इन्दुशर्मा नाम का एक ब्राह्मण जो मेरा सहपाठी एव मित्र है तथा जो शुक्र नाति में महापण्डित एव ज्योतिष के चौसठों अङ्गों में पारङ्गत है। उसे मने नन्दवश विनाश की घोर प्रतिज्ञा के बाद ही अपने साथ बौद्ध सन्यासियों के वष में कुसुमपुर लाया था। अभी वह समस्त नन्दमन्त्रियों का तथा विशेषरूप से राक्षस का अन्तरङ्ग एव विश्वासभाजन बना है। उसके द्वारा महत् प्रयोजन की सिद्धि का समय अब आया है। इस प्रकार किसी भी दृष्टि से मैं शिथिल नहीं हू। कठिनाई केवल यह है कि साम्राज्य का प्रधान चन्द्रगुप्त भी इन सारे राज्य सचालन के प्रपचों को मुझ पर सौंप कर स्वय निश्चिन्त सा है। शायद सचाई भी यही है कि वही राज्य वास्तव में कुछ सुख दे सकता है, जिसमें कार्यों की असाधारण व्यग्रता कहीं भी अवशिष्ट न हो। क्योंकि—

English—There is also my classfellow and friend, a Brahman Indu Sharma by name. He has to earn very great skilfulness in the science of polity of Ushanas and in the science of astronomy with its sixty four divisions That person was, just after my vow to destroy the family of Nanda brought by me to Kusumpur in the dress of *mendicant and made to form* friendship with all the ministers of Nanda Rakshasa has special confidence in him Now an important work will have to be rendered by him So in this matter nothing in wanting on our side Chanakya alone, the king who to confind the responsibility of administering the kingdom to me, and always remains indifferent Or that sovereignty alone gives happiness, which is relieved of the trouble of attention that is personal and not shared with others

टिप्पणी—विषकन्या—विषरूपा या विषमयी या कन्या—शाकपार्थिवादि से मध्यम पद लोपी समास हुआ। परीक्षितभक्ति —परीक्षिता भक्ति येषा—बहुव्रीहि समास। सहाध्यायि— सह अधीत इति—सह+अधि+इङ्+णिनि सपुंकारिणि कर्तरि से सिद्ध ह। प्राहित — प्र+ह धातु से कर्म में निष्ठा क्त प्रत्यय का यह रूप है। सुखयति—सुख करोतीति—तत्करोति से णिच् का यह रूप है।

स्वयमाहृत्य भुञ्जाना बलिनोऽपि स्वभावतः।
गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः ॥ १६ ॥

(ततः प्रविशति यमपटेन चरः)

प्रणमत यमस्य चरणौ किं कार्यं देवतैरन्यैः।
एष खल्वन्यभक्तानां हरति जीवं परिस्फुरन्तम् ॥ १७ ॥

विमला

अन्वयः—स्वयम्, आहृत्य, भुञ्जानाः, नरेन्द्राश्च, गजेन्द्राश्च, स्वभावतः, बलिनोऽपि प्रायः, दुःखिताः सीदन्ति ॥ १६ ॥

व्याख्या—स्वयम्=साक्षात् आत्मना (oneself), आहृत्य=सगृह्य (having seized) भुञ्जानाः=उपभोग कुर्वाणाः (enjoying), नरेन्द्राश्च=राजानश्च (the kings), गजेन्द्राश्च=करिश्रेष्ठाश्च (lords of elephants) स्वभावतः=प्रकृत्या (naturally), बलिनोऽपि=प्रायः पराक्रमिणोऽपीति यावत् (though possessed of strength) दुःखिताः=क्लेशिताः (discomfort), सीदन्ति=खिद्यन्ति (droop in discomfort). ॥ १६ ॥

हिन्दी—स्वभावतः पर्याप्त शक्तिशाली रहने पर भी गजराज और महाराज जब स्वयं साधनों को जुटाकर उनका उपभोग करते हैं—तो ऐसे उपभोग से भी दुखी एवं खिन्न रहा करते हैं ॥ १६ ॥

English—Lord of elephants and mighty kings though naturally strong yet they have to toil for their livelihood, generally droop in discomfort. 16.

टिप्पणी—स्वभावतः—स्वभावादेव अथवा स्वभावतः स्वभावेन अर्थात् प्रकृत्या 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' से विहित तृतीया से 'तसि' प्रत्यय हुआ है। भुञ्जानाः—उपभोग कुर्वाणाः—भुजोऽनवने से तङ् प्रत्यय फिर—'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' से चानश् प्रत्यय हुआ।

इस श्लोक में दीपकालङ्कार है। इस अलङ्कार की कल्पना दीपकन्याय पर हुई है। इसमें प्रस्तुत में अन्वित साधारण धर्म अप्रस्तुत को भी प्रकाशित करता है। अतः इसमें प्रस्तुत का एवं अप्रस्तुत का एक धर्म सम्बन्ध दिखाया जाता है। दीपक अलङ्कार में भी उपमेय अर्थात् प्रस्तुत एवं उपमान अर्थात् अप्रस्तुत दोनों में धर्मैक्य का कथन होता है। रत्नाकर में इसका लक्षण है—"प्रकृतानामप्रकृतानां चैकसाधारणधर्मान्वयो दीपकम्" यहाँ स्वयं राज्यादि का आहरण कर उपभोगरूपी प्रस्तुत के तथा गजेन्द्ररूपी अप्रस्तुत की एकधर्मता से कथन के कारण ही दीपक अलङ्कार है। इसमें वैदर्भी रीति है। करुण रस है। माधुर्य गुण है तथा अनुष्टुप् वृत्त है। यथा वृत्तरत्नाकरे—"वक्त्रं नाद्यान्नसौ स्यातामब्धेर्योऽनुष्टुभि ख्यातम्।"

विमला

अन्वयः—यमस्य, चरणौ, प्रणमत, अन्यैः देवतैः किं कार्यम्, एष खलु, अन्यभक्तानाम्, परिस्फुरन्तम्, जीवम्, हरति ॥ १७ ॥

(पणमह जमस्स चलणे कि कज्ज दएहिँ अण्णेहिं ।
एसो खु अण्णभत्ताण हरइ जीअं चडफडन्त ॥)

अपि च (अवि अ)—

पुरुषस्य जीवितव्यं विषमाद्भवति भक्तिगृहीतात् ।
मारयति सर्वलोकं यस्तेन यमेन जीवाम ॥ १८ ॥

(पुरिसस्स जीविदव्व विसमादो होइ भत्तिगहिआदो ।
मारेइ सव्वलोअं जो तेण जमेण जीआमो ॥)

व्याख्या—तत =तदनन्तरम् (after that), प्रविशति = प्रवेश करोति (enters), यमपटेन = यमचित्रेण (with Yama's canvas) चर =दूत (a spy) यमस्य = धर्मराजस्य (Yama's) चरणौ = पदौ (the feet) प्रणमत = वन्दत (bowdown), अन्यै = यमभिन्नै (other) दैवतै = सुरै (deities), किं कार्यम् = किम् प्रयोजनम् (what is the use of), एष खलु=यम एव (he indeed), अन्य-भक्तानाम् = अपरदेवभक्तानाम् (the devotees of other deities), परिस्फुरन्तम्= प्रकटीभवन्तम् (struggling), जीवम् = प्राणान् (life), हरति = नाशयति (takes away) ॥ १७ ॥

हिन्दी— (उसके बाद यमपट के साथ दूत का प्रवेश)

चर—यमराज के चरणों में प्रणाम करो। इतर देवताओं को पूजने से क्या लाभ ? क्योंकि अन्य देवताओं के उपासकों के प्राण भी ये यमराज हर लेते हैं ॥ १७ ॥

English— (Then enters a Spy with Yamapata)

Spy—Bow down to the feet of Yama, what is the use of other deities ? He indeed takes away the struggling life of the devotees of other deities 17

विमला

अन्वय•—भक्तिगृहीतात्, विषमात्, पुरुषस्य, जीवितव्यम्, भवति, य , सर्वलोकम्, मारयति, तेन, यमेन, जीवाम ॥ १८ ॥

व्याख्या—भक्तिगृहीतात्=प्रभूतस्नेहसंतोषितात् (propitiated by devotion), विषमात्= क्रूरादपि यमात् (from even the dreadful Yama) पुरुषस्य = प्राणिमात्रस्य (Men's), जीवितव्यम्=जीवनम् भवति (obtain livelihood), य = यम (Yama), सर्वलोकम्=सकलप्राणिनम् (all people), मारयति = विनाशयति (kills), तेन=यमेन (by means of that Yama), जीवाम = श्वसिम (we live) ॥ १८ ॥

हिन्दी—और भी—हम सबों की जिन्दगी सदैव इस भयकर यमराज की भक्ति पर निर्भर करती है। वही यम जो प्राणिमात्र के लिये मृत्यु है—हमारे जीवन का आधार है ॥ १८ ॥

यावदिदं गृहं प्रविश्य यमपटं दर्शयन् गीतानि गायामि। (जाव एदं गेहं पविसिअ जमपडं दंसअन्तो गीआइं गाआमि।)

(इति परिक्रामति)

शिष्यः—(विलोक्य) भद्र, न प्रवेष्टव्यम्।

चरः—अहो ब्राह्मण, कस्येदं गृहम्। (हंहो बह्मण, कस्स एदं गेहं।)

शिष्यः—अस्माकमुपाध्यायस्य सुगृहीतनाम्न आर्यचाणक्यस्य।

चरः—(विहस्य) अहो ब्राह्मण, आत्मीयस्यैव मम धर्मभ्रातुर्गृहं भवति। तस्माद्देहि मे प्रवेशं यावत्तवोपाध्यायस्य यमपटं प्रसार्य धर्ममुपदिशामि। (हंहो बह्मण, अत्तणकेरअस्स जेव्व मह धम्मभादुणो घरं होदि। ता देहि मे पवेसं जाव दे उवज्झाअस्स जमपडं पसारिअ धम्मं उपदिसामि।)

English—Besides this—

Our life is always based on the devotion of Yama even terrible. We live by that Yama who kills all people. 18.

टिप्पणी—१७ वें श्लोक में अप्रस्तुत यमराज के वर्णन से प्रस्तुत चाणक्य के वर्णन का गम्यत्व रहने के कारण अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार है। कुछ लोग 'अन्य देवताओं के सेवन की अपेक्षा यमराज की सेवा करना चाहिए' ऐसे सिद्धान्तक पूर्वार्धगत वाक्यार्थ के प्रति यम का अन्य देवसेवक प्राणहारकत्वात्मक उत्तरार्धगत वाक्यार्थ का हेतुरूप कथन से यहाँ काव्यलिङ्ग अलङ्कार कहते हैं। यहाँ भी वैदर्भी रीति है। शान्त रस है। माधुर्य गुण है। आर्यावृत्त है। उदाहरण—

"लक्ष्मैतत्सप्तगणा गोपेता भवति नेह विषमे यः।
षष्ठोऽयं नलघू वा प्रथमेऽर्धे नियतमार्यायाः॥" (वृ. र.)

१८ वें श्लोक में भी कुछ लोगों की दृष्टि में पूर्ववत् अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार है और कुछ की दृष्टि में उपहिनात्मक यमसेवा हेतु से उपसेवक के जीवनधारण प्रतिपादन के द्वारा विभावनालङ्कार है॥

विमला

व्याख्या—इदम्=पुरोवर्ति (this), गृहम्=भवनम् (house) यावत् प्रविश्य=अन्तर्गत्वा (enter), यमपटम्=कृतान्तचित्रम् (pictures of Yama), दर्शयन्=साक्षात् कारयन् (exhibiting), गीतानि गायामि=गानं करोमि (sing my lays) इति परिक्रामति (walks about).

शिष्य.—विलोक्य=दृष्ट्वा (seeing him), भद्र=सौम्य (gentleman) न=नहि (not) प्रवेष्टव्यम्=अन्तर्गन्तव्यम् (should not enter).

चरः—अहो ब्राह्मण=हे द्विज (O Brahmana), कस्य=किन्नामधेयस्य (whose) इदं गृहम्=साक्षादवलोक्यमानं सदनं (वर्तते) (house is this).

शिष्यः—अस्माकं उपाध्यायस्य=अस्माकम् अध्यापकस्य (of our preceptor), सुगृहीतनाम्नः=पुण्यजनकाभिधेयस्य (of auspicious name), आचार्य=(the venerable) चाणक्यस्य=कौटिल्यस्य (of Chanakya).

शिष्य —(सक्रोधम्) धिङ् मूर्ख ! किं भवानस्मदुपाध्यायादपि धर्मवित्तर. ।

चर —(विहस्य smiling) अहो ब्राह्मण=हे विप्र (O Brahman) आत्मीय स्यैव मम=मत्सम्बन्धिन एव (it belongs to a relative my own), धर्मभ्रातु= राजकीयकृत्यसम्पादकस्य (spiritual brother), गृहम् भवति=सदन अस्ति (house is), तस्मात्=कारणात् (for this), मे=मम (me) प्रवेशम्=अभ्यन्तर-गमनाज्ञाम् (to enter), देहि=मार्गं मा रुणद्धि (allow), यावत्काल, तव उपाध्याय-यस्य=तव गुरो (to your preceptor), यमपट प्रसार्य=कृतान्तचित्र दर्शयित्वा (will show the Yamapata), धर्मम्=शुभ वृत्तम् (something about duty), उपदिशामि=कथयामि (I tell him)

हिन्दी—तबतक मै इस घर में घुसकर यमचित्रों को दिखाते हुए, यमगाथा गाता हू ।
(घर की ओर घूमता है) ।

शिष्य—(देखकर) पुरुष, यहाँ घुसने की आज्ञा नहीं है ।

चर—हे ब्राह्मणदेव, आखिर यह घर है किसका ?

शिष्य—हमारे गुरु, स्वनामधन्य चाणक्य का ।

चर—(हसकर) हे ब्राह्मणदेव, तब तो यह घर मेरे धर्मभाई का ही ठहरा । अत अब मुझ भीतर जाने दो । मै तुम्हारे आचार्य के सम्मुख यह यमचित्र खोलकर उन्हें कुछ धर्मोपदेश दे दू ।

English—Why not let me enter in this home and sing a song showing Yamapata (Moves round)

Pupil—(Seeing him) gentleman, It is not allowed to enter

Spy—O Brahman, who is the owner of this house ?

Pupil—Our preceptor honourable Chanakya of prosperous name

Spy—(Smiling) Then it is the house of my religious brother. Let me go in side so that to tell your preceptor something about Dharma showing this Yamapata

टिप्पणी—विलोक्य—वि पूर्वक 'लोक' धातु से क्यप प्रत्यय का यह रूप है । **प्रवेष्टव्यम्**—प्र पूर्वक विश् धातु से कर्म में तव्यत् प्रत्यय है । धर्मभ्रातु —धर्मेण भ्राता—'सुप्सुपा' से समास । चाणक्य के समान म भी जीवों को धर्म का उपदेश देता हू—अत एक धर्मक होने के कारण यहा भ्राता शब्द प्रयुक्त है । गूढार्थ यह है कि राजा चन्द्रगुप्त की सेवा हम दोनों एक साथ कर रहे हैं, अत हम दोनों भाई हैं ।

विमला

व्याख्या—शिष्य —[सक्रोधम्=सकोपम् (in anger)] धिक् त्वामिति शाप (Fie upon you), मूर्ख=ज्ञानशून्य (fool), अस्मादुपाध्यायात् अपि=अस्मद्-गुरोरपि (than our preceptor), धर्मवित्तर:=विशेषधर्मज्ञ (to be better conversant with Dharma), भवान्=त्वम् (you), किम्=अस्तीति भाव (Do you)

चरः—अहो ब्राह्मण, मा कुप्य। न हि सर्वः सर्वं जानाति। तत्किमपि ते उपाध्यायो जानाति किमपि अस्मादृशा जानन्ति। (हहो बह्मण, मा कुप्प। ण हि सव्वो सव्वं जाणादि। ता किंपि दे उवज्झाओ जाणादि किंपि अह्मारिसा जाणन्दि।)

शिष्यः—मूर्ख, सर्वज्ञतामुपाध्यायस्य चोरयितुमिच्छसि।

चरः—अहो ब्राह्मण, यदि तवोपाध्यायः सर्वं जानाति तर्हि जानातु तावत्कस्य चन्द्रोऽनभिप्रेत इति। (हहो बह्मण, जइ तव उवज्झाओ सव्वं जाणादि ता जाणादु दाव कस्स चन्दो अणभिप्पेदो त्ति।)

शिष्यः—मूर्ख, किमनेन ज्ञातेनाज्ञातेन वा।

चरः—तवोपाध्याय एव ज्ञास्यति यदेतेन ज्ञातेन भवति। त्वं तावदेतावत् जानासि कमलानां चन्द्रोऽनभिप्रेत इति। ननु पश्य (तव उवज्झाओ एव्व जाणिस्सदि जं इमिणा जाणिदेण होदि। तुमं दाव एत्तिअं जाणासि कमलाणं चन्दो अणभिप्पेदो त्ति। ण पेक्ख।)

कमलानां मनोहराणामपि रूपाद्विसंवदति शीलम्।
सम्पूर्णमण्डलेऽपि यानि चन्द्रे विरुद्धानि॥ १९॥
(कमलाण मणहराण वि रूवाहिंतो विसंवदइ सीलं।
संपुण्णमण्डलम्मि वि जाइं चन्दे विरुद्धाइं॥)

चरः—अहो ब्राह्मण (O Brahman), मा कुप्य=क्रोध न कुरु (No offence), नहि=न (not) सर्वः=निखिलो जनः (every one) सर्वम्=समग्रम् (every thing), जानाति=अवगच्छति (knows), तत्=तस्मात् कारणात् (so), ते=तव (your), उपाध्यायः=गुरुः (preceptor), किमपि=किञ्चित् (certain things), जानाति=अवगच्छति (knows), किमपि=किञ्चित् (something), अस्मादृशाः=मद्विधाः (like myself), जानन्ति=बुद्ध्यन्ते (know)

शिष्यः—मूर्ख=अज्ञ (fool), सर्वज्ञताम्=सर्वं जानातीति सर्वज्ञस्तस्य भावः सर्वज्ञता, ताम् (omniscience), उपाध्यायस्य=गुरोः (of our preceptor), चोरयितुम्=गोप्तुम् वा अनङ्गीकर्तुम् (to deny), इच्छसि=अभिलष्यसि (to wish)

चरः—अहो ब्राह्मण=हे विप्र (O Brahman), यदि=(if) तवोपाध्यायः=ते गुरुः (your teacher) सर्वं=अखिलम् (every thing) जानाति=बुद्ध्यते (knows), तर्हि=तदा (then), जानातु तावत् (Let him know), कस्य=जनस्य (by whom), चन्द्रः=विधुः (the moon), अनभिप्रेत इति=अप्रिय इति (is not liked).

शिष्यः—मूर्ख=अज्ञ (fool) अनेन ज्ञातेनाज्ञातेन वा=कश्चन्द्रानभिलाषीति ज्ञानतोऽज्ञानतो वा (whether it is known or not), किम्=किमपि नास्ति (of what matters).

चर —तव=भवत (your), उपाध्याय एव=गुरुरेव (only preceptor), ज्ञास्यति=अवगमिष्यति (will know), यत्=एतस्य (its), एतेन, ज्ञानेन=बोधेन (being known), भवति, त्व=भवान् (you), तावत्=एतावत्, जानामि=अवगच्छसि (simply know this much), कमलानाम्=पद्मानाम् (by lotuses), चन्द्र = विधु (the moon), अनभिप्रत =अप्रिय (is not liked)

अन्वय —मनोहराणामपि, कमलानाम्, शीलम्, रूपात्, विसवदति, यानि, सम्पूर्णमण्डले, अपि चन्द्रे, विरुद्धानि ॥ १९ ॥

व्याख्या—मनोहराणामपि=अधिकसौन्दर्यवतामपि (However lovely), कमलानाम्=पङ्कजानाम् (of lotuses), शीलम्=चरितम् (the character), रूपात्=आकारात् (with their form), विसवदति=सौन्दर्यसदृश न भवति (is inconsistent), यानि=कमलानि (lotuses), सम्पूर्णमण्डले=समग्रबिम्बे (full or bed), चन्द्रे=विधौ (to the moon), विरुद्धानि=विपरीतानि (opposed) ॥ १९ ॥

हिन्दी—शिष्य—(क्रोध के साथ) रे मूर्ख, तुम्हें धिक्कार है। क्या तू हमारे गुरु से भी अधिक धर्मज्ञ है?

चर—ओ ब्राह्मणदेव, व्यर्थ क्रोध क्यों करते हो? कोई भी आदमी यहाँ सर्वज्ञ नहीं है। कुछ तुम्हारे उपाध्याय को आता है, तो कुछ मेरे जैसे लोगों को भी आता है।

शिष्य—मूर्ख! मेरे आचार्य की सर्वज्ञता भी छिपाना चाहता है?

चर—ओ ब्राह्मण, यदि तुम्हारे गुरु ही सब कुछ जानते हैं, तो यह बतायें कि चन्द्र किसे प्रिय नहीं है?

शिष्य—बेवकूफ, भला इस बात के जानने और न जानने से गुरु को क्या लाभ होगा?

चर—ओ ब्राह्मण देवता, इस समाचार को जानने से क्या लाभ हो सकता है? यह तुम्हारे गुरु ही जान सकते हैं। तुम तो केवल इतना ही जानते हो कि चन्द्र कमल को अच्छा नहीं लगता।

देखो ना—

कमल कितने सुन्दर होते हैं और उसकी प्रकृति कितनी विपरीत होती है। राकापति शशि जब अपने सम्पूर्ण मण्डल में होता है तब भी यह उससे मुँह मोड़ लेता है ॥ १९ ॥

English—*Pupil*—(In temper) Idiot! are you more familiar in Dharma than our preceptor?

Spy—You are useless in temper, O Brahman, None is well acquainted with a fact here Some thing is familiar with your preceptor where something is known to men like me?

Pupil—Fool, do you not want to remain my preceptor in his omniscience

Spy—O Brahman, if your preceptor is really familiar with all, Let him ask if he knows by whom chandra (the moon) is disliked

Pupil—Idiot, what happens if it is known or unknown

Spy—Only, your preceptor himself will know the advantage

चाणक्यः—(आकर्ण्यात्मगतम्) अये चन्द्रगुप्तादपरक्तान् पुरुषान् जानामी-त्युत्क्षिप्तमनेन ।

शिष्यः—मूर्ख, किमिदमसंबद्धमभिधीयते ।

चरः—अहो ब्राह्मण, सुसम्बद्धमेवैतद्भवेत् (हहो बह्मण, सुसबद्ध ज्जेव्व एद भवे)

शिष्यः—यदि किं स्यात् ।

चरः—यदि श्रोतु जानन्तं लभे । (जदि सुणिदु जाणन्त लहे)

चाणक्यः—भद्र विश्रब्ध प्रविश लप्स्यते श्रोतारं ज्ञातारं च ।

चरः—एष प्रविशामि । (प्रविश्योपसृत्य च) जयतु आर्यः । (एसो पविसामि । जेदु अज्जो)

---

of its being known. Only only this much is known to you that Lotuses dislike chandra (the moon) See—

How much pleasant lotuses are to the mind but are of just reverse nature, They even oppose a full orbed moon. 19.

विमला

व्याख्या—चाणक्य —[आकर्ण्य आत्मगतम् = श्रुत्वा सर्वश्राव्यम् Listening to himself] अये = सम्बोधननिदम् (Ha), चन्द्रगुप्तात् = वृषलात् (From Chandragupta), अपरक्तान् = विरक्तान् वा विरुद्धान् (disaffected toward), पुरुषान् = लोकान् (people), जानामि = अवगच्छामि (knows) इति = इत्यम् (that), अनेन = चरेण (by this spy), उत्क्षिप्तम् = कथितम् (has hinted).

शिष्य—मूर्ख = अज्ञ (Idiot), इदम् = एतत् (this), किम् (what), असम्बद्धम् = असङ्गतम् (nonsense), अभिधीयते = उच्यते (talk)

चर—अहो ब्राह्मण = हे विप्र (O Brahman), एतत् = इदम् (this), सुसम्बद्धमेव = सुसङ्गतमेव (good sense), भवेत् = स्यात् (will be)

शिष्य—यदि त्वव वचन सुसंगतम् एव भवेत् तर्हि (if), किस्यात् = किं भवेत् (what).

चर—यदि (if), श्रोतुम् = श्रोतार (how to listen), जानन्तम् = ज्ञातारम् (that knew), लभे = प्राप्नोति (I get)

चाणक्य—भद्र = साधो (good man), विश्रब्ध = विश्वस्तम् (with confidence), प्रविश = गृहाभ्यन्तरमागच्छ (enter), लप्स्यसे = प्राप्स्यते (will get), श्रोतारम् = शृण्वन्त (Listener), ज्ञातार = जानन्तम् (an appreciator).

चर—एष प्रविशामि = इदानीमेव गृहाभ्यन्तरमागच्छामि (Here I enter), प्रविश्योपसृत्य च = गृहं प्रविश्य समीपमेत्य च (Entering and approaching), जय त्वार्य = श्रेष्ठ भवान् विजयी भव (victory to your honour)

हिन्दी—चाणक्य—(सुनकर आप ही आप) अरे इसके कहने का अभिप्राय तो कुछ ऐसा लगता है कि चन्द्रगुप्त के प्रति कौन-कौन अनुरक्त नहीं है !—मैं यह सवाद लाया हूं ।

चाणक्यः—(विलोक्यात्मगतम्) कथमय प्रकृतिचित्तपरिज्ञाने नियुक्तो निपुणक । (प्रकाशम्) भद्र, स्वागतमुपविश ।

चरः—यदार्य आज्ञापयति । (ज अज्जो आणवेदि) (भूमावुपविष्टः)

चाणक्यः—भद्र, वर्णयेदानीं स्वनियोगवृत्तान्तम् । अपि वृषलमनुरक्ताः प्रकृतयः ।

शिष्य—मूर्ख ! ऐसी असम्बद्ध बातें क्यों कर रहा है ?

चर—अहो ब्राह्मण देवता ! अभी अभी सारी बातें सुसम्बद्ध बन जाती हैं ।

शिष्य—यदि क्या होता ?

चर—यदि मुझे कोई समझने योग्य श्रोता मिल जाय ।

चाणक्य—भद्र ! भीतर चले आओ, यहाँ तुम्हें सुनने वाला और समझने वाला भी मिल जायगा ।

चर—मैं अभी आया (प्रवेश कर और पास जाकर) आर्य की विजय हो ।

English—*Chanakya—(listening to himself)* Oh it is hinted that this fellow knwos the people who are disaffected towards Chandragupta

Pupil— Idiot, why this nonsense talk ?

Spy—Hallo Brahman, soon it will be of good sense.

Pupil—If what ?

Spy—If I get a person that knew how to listen

Chanakya—Here I enter (Entering and approaching) Victory to your Honour !

Spy—good man, enter freely you will get a person who will hear and understand.

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[विलोक्य=पश्य (observing), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself),] कथम्=केन प्रकारेण (How) अयम् = असौ (this), प्रकृतिचित्तपरिज्ञाने = प्रजाहृदयावबोधने (to know the mind of the subjects), नियुक्त = प्रयुक्तः (appointed), निपुणक । [प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud)], भद्र=साधो (good man), स्वागतम् = शोभनागमनं भवतु (welcome), उपविश = तिष्ठ (sit down)

चर —यत् (as), आर्य=श्रेष्ठ (your Honour), आज्ञापयति=आज्ञां करोति (commands), [भूमावुपविष्ट (squats on the ground)]

चाणक्य —भद्र=साधो (gentleman), इदानीम् = अधुना (now), वर्णय = अभिधेहि (report), स्वनियोगवृत्तान्तम् = आत्माधिकारप्रवृत्तिम् (details of your work), अपि वृषलमनुरक्ताप्रकृतयः=अपिशब्दोऽत्र प्रश्नार्थक, वृषलमनुरागवन्तः पुरुषा , किम् = के जनाः (Are the subjects attached to Vrishala)

चरः—अथ किम्। आर्येण खलु तेषु तेषु विरागकारणेषु परिहृतेषु सुगृहीतनामधेये देवे चन्द्रगुप्ते दृढमनुरक्ताः प्रकृतयः। किंतु पुनरस्त्यत्र नगरे अमात्यराक्षसेन सह प्रथमं समुत्पन्नस्नेहबहुमानास्त्रयः पुरुषा देवस्य चन्द्रश्रियः श्रियं न सहन्ते। (अह इ। अज्जेण क्खु तेसु तेसु विरागकारणेसु परिहरिदेसु सुगहीदणामहेए देवे चन्दउत्ते दिढं अणुरत्ताओ पकिदिओ किंदु उण अथि एत्थ णअरे अमच्चरक्खसेण सह पढम समुप्पण्णसिणेहबहुमाणा तिण्णि (ण्णा) पुरीसा देवस्स चन्दसिरिणो सिरिं ण सहन्दि।)

चाणक्यः—(सक्रोधम्) ननु वक्तव्य स्वजीवितं न सहन्त इति। भद्र, अपि ज्ञायन्ते नामधेयतः।

चरः—कथमज्ञातनामधेया आर्यस्य निवेद्यन्ते। (कह अजाणिअणामहेआ अज्जस्स णिवेदीअन्ति)।

चाणक्यः—तेन हि श्रोतुमिच्छामि।

चर—अथ किम्=अथ शब्दः स्वीकारार्थकोऽव्ययम् (what else), आर्येण=भवता (by your Honour), खलु, तेषु तेषु=भूतपूर्वेषु (all those), विरागकारणेषु=विरक्तिहेतुषु (causes of dissatisfaction), परिहृतेषु=दूरीकृतेषु (being removed), सुगृहीतनामधेये=पुण्याभिधेये (of blessed name), देवे-चन्द्रगुप्ते=राज्ञि मौर्ये (To his Majesty Chandragupta), दृढम्=अधिकम् (firmly), अनुरक्ताः=स्नेहयुक्ताः (attached to), प्रकृतयः=प्रजाः (subjects), किन्तु=परन्तु (but), पुनरस्त्यत्र (there are), नगरे=पुरे (in the city), अमात्यराक्षसेन सह=राक्षसनाम्ना मन्त्रिणा सार्धम् (with minister Rakshasa), प्रथमम्=पूर्वम् (before), समुत्पन्नस्नेहः=सञ्जातानुरागः (affection and regard for Rakhasa), बहुमाना त्रयः पुरुषाः=जनाः (three persons), देवस्य=राज्ञः (of the king), चन्द्रश्रियः=इन्दुकान्तेः (Prosperity of the moon), श्रियं न सहन्ते=अभ्युदयं न मृष्यन्ति (Do not bear to see the prosperity of Chandragupta).

चाणक्य—[सक्रोधम्=कोपयुक्तम् (angrily)], ननु वक्तव्यमस्मो इत्य वक्तव्यम् (rather say), स्वजीवितम्=आत्मनोजीवनम् (their own lives), न सहन्ते इति=न वाञ्छन्ति (do not bear), भद्र=साधो (good man), अपि ज्ञायन्ते नामधेयतः=अपि प्रश्नवाचकं, नाम्ना बुध्यन्ते किम् (Do you know their names)?

चर—कथम्=केन प्रकारेण (How), अज्ञातनामधेया=अबुद्धनामानः (I do not know their names), आर्यस्य=भवतः (your Honour), निवेद्यन्ते=विज्ञाप्यन्ते (may I infrom)

चाणक्य—तेन हि, श्रोतुम्=ज्ञातुम् (to hear them), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish).

हिन्दी—चाणक्य—(देखकर अपने आप) अरे यह तो निपुणक है, जिसे मैंने प्रजा

चर —शृणोत्वार्य । प्रथम तावदार्यस्य रिपुपक्षे बद्धपक्षपात' क्षपणको—
(सुणादु अज्जो । पढम दाव अज्जस्स रिपुपक्खे बद्धपक्खवादो खवणओ—)
चाणक्य —(आत्मगतम्) अस्मद्रिपुपक्षे बद्धपक्षपात क्षपणक ।

जन को प्रकृति जानने के लिए नियुक्त किया था। (प्रकाश रूप से) भले आदमी आओ बैठ जाओ। स्वागत है।

चर—जो आज्ञा श्रीमान् (धरती पर बैठ जाता है)।

चाणक्य—भद्र, अब अपनी बात बतलाओ। चन्द्रगुप्त में प्रजा का अनुराग कैसा है ?

चर—प्रजा क्यों नहीं चाहेगी ? जब आपने अपराग के सभी कारणों को दूर कर ही दिया तो फिर हमारे स्वनामधन्य महाराज चन्द्रगुप्त में प्रजा जन की अनुरक्ति दिन प्रति दिन बढती ही जा रही है। किन्तु इस शहर में तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिनका राक्षस के प्रति पुराना प्रेम और सम्मान अभी भी चल रहा है। ये तीनों, महाराज चन्द्रगुप्त की समृद्धि को सहन नहीं करते।

चाणक्य—(आवेश में) तो यह कहो कि उन्हें अपनी जिन्दगी बर्दाश्त नहीं होती। भद्र, इनका नाम तुम जानते हो।

चर—अगर नाम का पता न होता तो आपके पास मैं आता ही क्यों ?

चाणक्य—उन्हें मैं सुनना चाहता हू।

English—*Chanakya*—(Seeing, to himself), this is Nipunak, appointed by me to know the mind of subjects (Aloud) gentleman, welcome, sit down

Spy—Noble sir, as you command, (squats on the ground)

Chanakya—good man, now report the details of your work Are the subject attached to Chandragupta ?

Spy—yes, All causes of dissatisfaction being removed by your Honour, the subjects are firmly attached to Chandragupta of blessed name But even then in this city there are three persons who have already attachment and great regard for minister Rakshasa who do not bear to see the prosperity of Chandragupta

Chanakya—(*angrily*) Why rather say, they do not bear their own lives Do you know their names ?

Spy—How can I inform you, if I do not know their names ?

विमला

व्याख्या—शृणोत्वार्य = भवान् आकर्णयतु (listen, Noble sir), प्रथमम् (at first), तावदार्यस्य=भवत (your) रिपुपक्षे = शत्रुदले (on the party of your enemies) बद्धपक्षपात = कृतानुराग (fixed his affection) क्षपणक = बौद्धसन्यासी (Baudha mendicant), जीवसिद्धि ।

चाणक्य—[सहर्षमात्मगतम् = सानन्द स्वगतम् (with joy to himself)] अस्मद्-रिपुपक्षे = अस्मद् शत्रुदले (on the party of your enemies) बद्धपक्षपात = कृतानु राग (fixed affection), क्षपणक =बौद्धसंन्यासी (Baudha mendicant)

चरः—जीवसिद्धिर्नाम स येन सा अमात्यराक्षसप्रयुक्ता विषकन्या देवे पर्वतेश्वरे समावेशिता। (जीवसिद्धी णाम सो जेण सा अमच्चरक्खसप्पउत्ता विसकण्णा देवे पव्वदीसरे समावेसिदा)।

चाणक्यः—(स्वगतम्) जीवसिद्धिः। एष तावदस्मत्प्रणिधिः। (प्रकाशम्) भद्र, अथापरः कः।

चरः—आर्य अपरोऽप्यमात्यराक्षसस्य प्रियवयस्यः कायस्थः शकटदासो नाम। (अज्ज अवरोवि अमच्चरक्खसस्स पिअवअस्सो का अत्थो सअडदासो णाम।)

चाणक्यः—(विहस्यात्मगतम्) कायस्थ इति लघ्वी मात्रा। तथापि न युक्तं प्राकृतमपि रिपुमवज्ञातुम्। तस्मिन्मया सुहृच्छद्मना सिद्धार्थको निक्षिप्तः। (प्रकाशम्) भद्र, तृतीयमपि श्रोतुमिच्छामि।

चरः—तृतीयोऽपि अमात्यराक्षसस्य द्वितीयमिव हृदयं पुष्पपुरनिवासी मणिकारश्रेष्ठी चन्दनदासो नाम यस्य गेहे कलत्रं न्यासीकृत्य अमात्यराक्षसो नगरादपक्रान्तः। (तिदीओ वि अमच्चरक्खसस्स दुदीअं हिअअं पुप्फउरणिवासी मणिआरसेट्ठी चन्दणदासो णाम। जस्स गेहे कलत्तं णासीकदुअ अमच्चरक्खसो णअरादो अवक्कन्तो।)

चरः—जीवसिद्धिर्नाम सः=एतन्नामकोऽसौ (Jivasidhi by name), येन=क्षपणकेन (by whom), अमात्यराक्षसप्रयुक्ता=तन्नाम्नमन्त्रिणाव्यापारिता (by the minister Rakshasa by name was directed), सा विषकन्या=प्राणघातकारिणी कन्यका (the poison maid), देवे पर्वतेश्वरे=राज्ञि पर्वतेश्वरे (against the king Parvatak), समावेशिता=सम्प्रयुक्ता (employd)

चाणक्यः—[स्वगतम्=आत्मगतम् (to himself).] एषः=अयम् (this), जीवसिद्धिः=एतद्विधानः (Jivasidhi by name), अस्मत्प्रणिधिः=अस्मद्गुप्तदूतः (my emissary), [प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud),] भद्र=साधो (gentleman) अथापरः= द्वितीयः (second man) कः=(who is).

चरः—आर्य=श्रेष्ठ (Noble sir), अपरोऽपि=अन्योऽपि (next also), अमात्यराक्षसस्य=राक्षसनाम्नो मन्त्रिणः (of minister Rakshasa), प्रियवयस्यः=प्रियमित्रः वा परमसुहृत् (a dear friend), कायस्थः=लेखकः (Kayastha), शकटदासो नाम=नाम्ना शकटदास इति प्रसिद्धः (Sakatdas by name),

चाणक्यः—[विहस्यात्मगतम् (laughing-to himself).] कायस्थ इति लघ्वी मात्रा=नास्मदनिष्टं सम्भवनेति तात्पर्यम् (A Kayastha is a small matter), तथापि=अद्यत्वेऽपि (still), न युक्तम्=नोचितम् (in not proper), प्राकृतम्= क्षुद्रम् (an ordinary), रिपुम्=शत्रुम् (enemy), अवज्ञातुम्=उपेक्षितुम् (to neglect), तस्मिन् मया=शकटदासे मया (on him by me), सुहृच्छद्मना=मित्रव्याजेन (in the guise of a friend), सिद्धार्थकः=एतदभिधानो दूतः (Sidharthak

by name), विनिक्षिप्त. = नियुक्तः (appointed), [प्रकाशम् (aloud),] भद्र = साधो (good man), तृतीयम् (thrid man), श्रोतुमिच्छामि = श्रोतुम् वाञ्छाम् (I wish to hear)

चर.—तृतीयोऽपि = द्वितीयमपरम् (third man also), अमात्य राक्षसस्य = मन्त्रि-राक्षसस्य (of the minister Rakshasa), द्वितीयमिव = मानसमिव (the second heart like), पुष्पपुरनिवासी (inhabitant of Puspapur), मणि-कारश्रेष्ठी=रत्ननिर्माणवणिग् (Jewellers), चन्दनदासो नाम (Chandandas by name), यस्य गेहे = यस्य सदने (in whose house), अमात्यराक्षसः (Minister Rakshasa), कलत्रम्=भार्याम् (his family), न्यासीकृत्य = निक्षिप्य (left), नगरादपक्रान्त = पुरात् निर्गतः (escaped from the town)

हिन्दी—चर—सुनिए महाराज, इनमें सबसे पहला है क्षपणक, जिसे आपके शत्रु पक्ष में बड़ा पक्षपात है।

चाणक्य—(प्रसन्नतापूर्वक) ओह, क्षपणक और हमारे शत्रुपक्ष का बड़ा पक्षपात ?

चर—जीवसिद्धि नाम का वही क्षपणक जो अमात्य राक्षस के सकेत पर देव पर्वतेश्वर की हत्या के लिए विषकन्या को वहाँ ले गया था ?

चाणक्य—(मन ही मन) जीवसिद्धि ? वह तो हमारा अपना आदमी है (व्यक्त) अच्छा तो अब दूसरे का नाम बताओ।

चर—आर्य, दूसरा एक शकटदास नाम का कायस्थ है, और वह अमात्य राक्षस का अन्तरङ्ग मित्र है।

चाणक्य—(मुस्कराते हुए मन ही मन) कायस्थ ! भला एक कायस्थ की क्या हस्ती ? फिर भी यह शत्रु तो है ? और छोटे से छोटे शत्रु की भी अवहेलना उचित नहीं। इसीलिए उसके पीछे मैंने सिद्धार्थक को उसका मित्र बनाकर छोड़ दिया है। (बोलकर) भद्र, तीसरे व्यक्ति का भी नाम जानना चाहता हू।

चर—तीसरा भी अमात्य राक्षस के दूसरे हृदय की तरह, पुष्पपुर निवासी सुनारों में श्रेष्ठ चन्दनदास है, जिसके घर अपने परिवार को रख कर वह नगर से बाहर चला गया है।

English—*Spy*—May your honour Formost is the Baudha Mendicant Jivasidhi, who has fixed his affection towards the side of your enemy

Chanakya—(with joy to himself) A Baudha mendicant Jivasidhi, who has fixed his affection on the party of our enemies

Spy—Jivasidhi is indeed the same that fixed upon the king Parvataka the unlucky poision maid employed by minister Rakshasa.

Chanakya—(To himself) Jivasidhi, but he is our spy (Aloud) Good fellow who is the second man ?

Spy—Noble sir, the second man is a Kayastha Sakatdas who is a dear friend of minister Rakshasa

Chanakya—(with a smile, to himself) A Kayastha is a small matter, still it is not proper to neglect even an ordinary enemy (aloud) gentleman I want to hear the third man.

चाणक्य.—(आत्मगतम्) नूनं सुहृत्तमः । न ह्यनात्मसदृशेषु राक्षसः कलत्रं न्यासीकरिष्यति । (प्रकाशम्) भद्र, चन्दनदासस्य गृहे राक्षसेन कलत्रं न्यासीकृतमिति कथमवगम्यते ।

चरः—आर्य इयमङ्गुलिमुद्रा आर्यमवगतार्थं करिष्यति । (अज्ज इअं अङ्गुलिमुद्दा अज्जं अवगदत्थं करिस्सदि ।) (इति मुद्रामर्पयति ।)

चाणक्य—(मुद्रामवलोक्य गृहीत्वा राक्षसस्य नाम वाचयति । सहर्षं स्वगतम्) ननु वक्तव्यं राक्षस एवास्मदङ्गुलिप्रणयी संवृत्त इति । (प्रकाशम्) भद्र, अङ्गुलिमुद्राधिगमं विस्तरेण श्रोतुमिच्छामि ।

चरः—श्रूयतामार्य । अस्ति तावदहमार्येण पौरजनचरितान्वेषणे नियुक्तः परगृहप्रवेशे परस्याशङ्कनीयेन अनेन यमपटेन हिण्डमानो मणिकारश्रेष्ठि-चन्दनदासस्य गृहं प्रविष्टोऽस्मि । तत्र यमपटं प्रसार्य प्रवृत्तोऽस्मि गीतानि गातुम् । (सुणादु अज्जो । अत्थि दाव अहं अज्जेण पौरजणचरिदअण्णेसणे णिउत्तो परघरप्पवेसे परस्स अणासङ्कणिज्जेण इमिणा जमपडेण हिण्डन्तो मणिआरसेट्ठिणो चन्दणदासस्स गेहं पविट्ठोम्हि । तहिं जमपटं पसारिअ पउत्तोम्हि गीदाइं गादुं ।)

Spy—The third man is the second as it were, of heart minister Rakshasa is the jeweller, Chandandas, inhabitant of Puspapura, in whose house he left his family and escaped from the city

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[आत्मगतम् = स्वगतम् (To himself),] नूनम् = निश्चितम् (Indeed), सुहृत्तमः = परमस्नेही (the best friend), अनात्मसदृशेषु = अनात्मतुल्येषु (unworthy to himself), न न्यासीकरिष्यति = न स्थापयिष्यति (will not leave), हि = यतः (Because), राक्षसः, कलत्रम् = स्त्रियं (his wife), [प्रकाशम् = सुस्पष्टम् aloud),] भद्र = साधो (gentleman), चन्दनदासस्य गृहे = चन्दनदासस्य सदने (In the house of Chandandas), राक्षसेन = सचिवेन (by Rakshasa), कलत्रम् = स्त्रियम् (wife), कथम् = केन प्रकारेण (how), अवगम्यते = बुद्ध्यते (do you know), न्यासीकृतम् = स्थापितम् (left).

चरः—आर्य = पूज्य (Noble sir), इयम् = प्रत्यक्षदृश्यमाना (this), अङ्गुलिमुद्रा = नामाङ्कितमङ्गुलीयकम् (signet ring), आर्यम् = पूज्यम् भवन्तम् (your honour), अवगतार्थम् = विज्ञातोदन्तम्, करिष्यति = विधास्यति (will acquaint), इत्यर्पयति = कथयित्वा ददाति (Delivers the ring)

चाणक्य—[मुद्रामवलोक्य = अङ्गुलीयकम् समीक्ष्य (looking at the ring), गृहीत्वा = हस्ते विधाय (takes), राक्षसस्य नाम वाचयति = मन्त्रिराक्षसस्याभिधानं पठति (reads the name of Rakshasa), सहर्षम् = सानन्दम् (with joy), स्वगतम् = मनसि स्पष्टम् (To himself)], ननु = भोः (oh), राक्षस एव = मन्त्रिराक्षस एव (Rakshas

himself), अस्मदङ्गुलिप्रणयी = अस्माकमङ्गुलिस्नेही (the love of my finger), संवृत्त इति = हस्तस्थ इति (has come in to my possession), वक्तव्यम् = कथितव्यम् (should say), (प्रकाशम् = Aloud), भद्र = साधो (goodman), अङ्गुलिमुद्राधिगमम् = नामाङ्किताङ्गुलीयकस्य प्राप्ति (how you came by the ring), विस्तरेण = क्रमेण (in detail), श्रोतुमिच्छामि = आकर्णितुम् अभिलाषामि (I wish to know)

चर.—आर्य. = पूज्यः (your Honour), शृणोतु = आकर्णयतु (may hear), आर्येण = पूज्येन (by your noble self), यावत् पौरजनचरितान्वेषणे = नागरिक चरितानुसरणे यावत् (to spy the action of the citizens), अहम् नियुक्तः अस्ति = अहम् नियोजितः अस्मि (being appointed), परस्य = अन्यस्य (of others), अनाशङ्कनीयेन = सन्देहायोग्येन (which excites no suspicion), परगृहप्रवेशे = अन्यसदनान्तर्गमने (in entering others houses), अनेन = प्रत्यक्षदृश्यमानेन (with this), यमपटेन = कृतान्तचित्रेण (Yama's canvas), आहिण्डमानः = परिभ्रमन् (wanderd about), मणिकारश्रेष्ठिन. = मणिकारवैश्यस्य (the jewel merchant), चन्दनदासस्य (of Chandandas), गृहम् = सदनम् (to the house), प्रविष्टोऽस्मि = प्रवेशं कृतोऽस्मि (I entered), तत्र = चन्दनदासालये (there), यमपटं = कृतान्तचित्र, प्रसार्य (unfolded my yamapata), गीतानि गातुम्, प्रवृत्तोऽस्मि = तत्परो भवामि (began to sing the songs)

हिन्दी—चाणक्य—(मन ही मन) निश्चय ही वह राक्षस का परम मित्र होगा। क्योंकि, अभिन्न मित्र के अतिरिक्त किसी अन्य के हाथों में वह अपने परिवार को नहीं सौंपता। (सुनाकर) राक्षस का परिवार इन दिनों चन्दनदास के घर ही में है—इस बात का निश्चय तुम्हें कैसे हुआ ?

चर—आर्य, यह अगूठी लीजिये, यह आपको सब कुछ बता देगी। (अगूठी हवाले कर देता है)।

चाणक्य—(अगूठी देखकर, लेकर राक्षस का नाम पढता है, प्रसन्नता के साथ अपने आप) और कहना था—अगूठी नहीं, स्वय राक्षस ही मेरी अगुली की शोभा बनने को आ गया। (प्रकट) भद्र, अगूठी प्राप्ति का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुनना चाहता हू।

चर—आर्य सुनें, नागरिकों की हर गतिविधि का पता लगाने के लिए ही आपने मुझे नियुक्त किया था। इस यमपट के सहारे इधर उधर घूमता हुआ किसी के घर में प्रवेश करने में मुझ पर किसी को सन्देह नहीं होता था। एक दिन मैं घूमते घामत चन्दनदास के घर जा पहुचा और यमपट फैलाकर गीत गाने लगा।

English—*Chanakya*—(To himself) Surely, he must be his best friend for Rakshasa will not leave his family with person unworthy of himself. (Aloud) Gentleman, how do yow know that Rakshasa left his family in the house of Chandandas ?

Spy—Noble sir, this signet-ring will acquaint your honour with everything. (Delivers the ring)

Chanakya—(looking at the ring, takes it and reads the name

चाणक्यः—ततः किम् ।

चरः—ततश्च एकस्मादपवरकात् पञ्चवर्षदेशीयः प्रियदर्शनीयशरीराकृतिः कुमारको बालत्वसुलभकौतूहलोत्फुल्लनयनो निष्क्रमितुं प्रवृत्तः । ततो हा निर्गतो हा निर्गत इति शङ्कापरिग्रहनिवेदयिता तस्यैवापवरकस्याभ्यन्तरे स्त्रीजनस्योत्थितो महान् कलकलः । (ततो एक्कादो अववरआदो पञ्चवरिसदेसीओ पिअदसणीअसरीराकिदी कुमारओ बालत्तणसुलहकोदुहल्लोप्फुल्लणअणो णिक्कमिदु पउत्तो । तदो हा णिग्गदो हा णिग्गदोत्ति सङ्कापरिग्गहणिवेदइत्तिओ तस्स एव्व अववरअस्स अब्भन्तरे इत्थिआजणस्स उट्ठिदो महन्तो कलअलो ।)

तत ईषद्द्वारदेशदापितमुख्या एकया स्त्रिया स कुमारको निष्क्रमन्नेव निर्भर्त्स्यावलम्बितः कोमलया बाहुलतया । तस्याः कुमारसंरोधसम्भ्रमप्रचलिताङ्गुलेः करात्पुरुषाङ्गुलिपरिणाहप्रमाणघटिता विगलितेयमङ्गुलिमुद्रिका

---

of Rakshasa and joyfully to himself) I should say that Rakshasa himself has sought the love of my finger. (Aloud) Gentleman I want to hear in detail how you came by the ring.

Spy—Listen Noble sir, being appointed by you to spy the actions of the citizens. I wandered about showing this Yama's canvas which can not excite suspicion in entering other's house, thus I entered in the house of jeweller Chandandas There opening out the Yama's canvas, began to sing the song.

विमला

व्याख्या—चाणक्य—ततः किम् = तत्पश्चात् किमभूत् (What next)

चरः—ततश्च = तदनन्तरम् (then), एकस्मादपवरकात्पञ्चवर्षदेशीयः=एकस्मात् गवाक्षात् पञ्चवर्षदेशीयः (from one of the apartments of the house a boy about five years old), प्रियदर्शनीयशरीराकृतिः = मनोज्ञकायस्याकारः (lovely and pleasing form of body), कुमारकः = बालकः (A boy), बालत्वसुलभकौतूहलोत्फुल्लनयनः = शिशुस्वभावजं कौतुकेन विकसितनेत्रयुग्मः (with his eyes dilated through curiosity, natural to childhood), निष्क्रमितुम् = निर्गन्तुम्, प्रवृत्तः = उद्यतः (began to come out), ततः = तदनन्तरम् (after that), हा निर्गतः हा निर्गतः इति = इत्येव रूपः "(Ah he has gone out, Ah he has gone out)., शङ्कापरिग्रहनिवेदयिता = सन्देहमाशिनिवेदयिता (a great confused noise). तस्यैवापवरकस्याभ्यन्तरे = तस्यैवगवाक्षमध्ये (inside the very apartment), स्त्रीजनस्य = नारीजनस्य (from women), उत्थितः = समुत्पन्नः (arose), महान् कलकलः = विशेष अव्यक्तध्वनिः (voice of fright), ततः = तत्पश्चात् (after that), ईषद्द्वारदेशदापितमुख्या = अल्पद्वारप्रदेशनिहिताननेन (showed her face slightly

देहलीबन्धे पतिता उत्थिता तया अनवबुद्धैव मम चरणपार्श्वे समागत्य प्रणामनिभृता कुलवधूरिव निश्चला संवृत्ता। मयापि अमात्यराक्षसस्य नामाङ्कितेति आर्यस्य पादमूलं प्रापिता। तस्मादेषोऽस्या आगमः। (तदो ईसिदारदेशदाविदमुहीए एक्काए इत्थिआए सो कुमारओ णिक्कमन्तो एव्व णिब्भच्छिअ अवलम्बिदो कोमलाए बाहुलदाए। तस्साए कुमारसरोधसभमप्प-चलिदगुलिदो करादो पुरिसअगुलिपरिणाहप्पमाणघडिआ विअलिआ इअ अगुलिमुद्दिआ देहलीबन्धम्मि पडिआ उट्ठिदा ताए अणवबुद्धा एव्व मम चलणपासं समागच्छिअ पणामणिहुदा कुलवहु विह णिच्चला संवुत्ता। मए वि अमच्चरक्खसस्स णामङ्किदेत्ति अज्जस्स पादमूलं पाविदा। ता एसो इमाए आअमो।)

चाणक्य—भद्र, श्रुतम्, अपसर। नचिरादस्य परिश्रमस्यानुरूपं फल-मधिगमिष्यसि।

---

at the region of the door), एकया स्त्रिया = अद्वितीयया नार्या (by a lady), स कुमारक = तत्तद्विध शिशु (that boy), निष्क्रामन्नेव = बहिर्निर्गच्छन्नेव (just as he was coming out), निर्भर्त्स्य = उपालभ्य (after being chid), अवलम्बित = धृत (was seized), कोमलया, बाहुलतया = भुजशाखया (with soft creeper like hand), तस्या = स्त्रिय (of that woman), कुमारसरोधसंभ्रम-प्रचलिताङ्गुले = शिशुबहिर्गमनप्रतिषेधव्याकुलप्रकम्पिताङ्गुले (the fingers of whose worked violently in her hurry for the arrest of the boy), करात् = हस्तात् (from hand), पुरुषाङ्गुलिपरिणाहप्रमाणघटिता = नराङ्गुलिप्रमाणनिर्मिता (made to suit the measure of the finger of a man) विगलितेयमङ्गुलि-मुद्रिका = च्युतेयम् नामाङ्किताङ्गुलिमुद्रिका (slipped off from her hand this signet ring), देहलीबन्धे पतिता = द्वाराधःप्रदेशभ्रष्टा (at the threshold), उत्थिता (rebounding), तया अनवबुद्धैव = स्त्रिया अज्ञायमाना एव (unperceived by her) मम चरणपार्श्व = मत्पादसन्निधिम् (tot he edge of my foot), समागत्य = समेत्य (reached), प्रणामनिभृता = प्रणतिविनिता (in the act of bowing), कुलवधूरिव = कुलाङ्गनेव (like noble born girl), निश्चला = सुस्थिरा (motionless), संवृत्ता = जाता (stopped), मयापि (I too), अमात्यराक्षसस्य नामाङ्कितेति राक्षसनाम्नो मंत्रिण नामचिह्निता (engraved with the name of minister Rakshasa), आर्यस्य पादमूलं = भवत चरणनिकट (to the root of Noble sir's foot), प्रापिता = समानीता (brought), तस्मादेष = इत्येवम् रूप (so like this), अस्या अङ्गुलिमुद्राया (its), आगम = लाभोदन्तम् (the story of accession)

चाणक्य—भद्र = कुशलिन् (goodman), श्रुतम् = सर्वमाकर्णितम् (all is heard), अपसर = गच्छ (now retire), न चिरात् = अतिशीघ्रम् (before long),

चरः—यदार्य आज्ञापयति। (जं अज्जो आणवेट।)

(इति निष्क्रान्तः)

अस्य परिश्रमस्य = अस्य उद्योगस्य (of your this labour), अनुरूपम् = सदृशम् (befitting), फलम् = परिणामम् (reward), अधिगमिष्यसि = प्राप्स्यसि (will get).

चरः—यदार्य आज्ञापयति = भवान् यत् शासन करोति (As your Honour commands), [इति निष्क्रान्तः = रङ्गस्थानात् बहिर्गतः (exit)]

हिन्दी—चाणक्य—उसके बाद क्या हुआ

चर—हुआ यह कि लगभग पाँच साल का एक सलोना सुन्दर लड़का, जिसकी आँखें बाल सुलभ चपलता से उत्सुक था घर के एक परदे के पीछे से बाहर निकलने लगा कि इतने में घर के भीतर रहने वाली औरतों की—'हाय वह तो बाहर चला गया—बाहर चला गया' की घबराहट से भरी आकस्मिक आवाज उठने लगी। इसी बीच दरवाजे के बीच से एक नारी ने झाँका और बाहर निकलते हुए उस बच्चे को पकड़कर अपनी कोमल बाँहों में समेट लिया। बच्चे को पकड़ने की घबराहट में बेचारी की प्रकम्पित उँगली से यह अंगूठी जो स्पष्टतः किसी पुरुष के नाप की बनी हुई है—दरवाजे की देहली पर आ गिरा और एकबार उछली, फिर उस महिला को मालूम हो न हो पाया और वह ठीक मेरे चरणों के पास ऐसे आकर रुक गयी जैसे कोई कुल-वधू अपने श्रेष्ठजनों के चरणों में प्रणामावनत हो लजाकर रुक जाती है। मैंने भी इस पर अमात्य राक्षस का नाम खुदा हुआ देख कर आप की सेवा में उपस्थित किया। आर्य, यह है इस अंगूठी की मेरे हाथ लगने की कहानी।

चाणक्य—बहुत अच्छा, सुन ली मैंने सारी कहानी। अब तुम जा सकते हो। तुम्हें शीघ्र ही इस कार्य का यथोचित पुरस्कार मिल जायगा।

चर—जो आज्ञा (बाहर चला जाता है)

English—*Chanakya*—What further ?

Spy—Then I saw a pleasing and lovely boy of five years old coming out from the back of curtain of a room of the house. But soon a frightful noise of women inside the same room as 'Ah, he has gone out, ah, he has gone out' came out ; At the same time that child was caught hold of by the delicate hand of a woman, whose face came before me in adequetely from the half opened door. Then this signet ring which is made clearly in the size of a man's finger; fell down from her hand, due to the movement in her fingers to catch hold of the child, at the threshold and rebounding it came near by my feet, which she could not know, as if a newly married girl bowing to elders. This is the full story of how ring came to me.

Chanakya—Gentleman, I have heard all, you may go, you will soon get prize of the whole difficulties in its accession.

Spy—Only your Honour commands.

(Exit)

चाणक्यः—शार्ङ्गरव, शार्ङ्गरव !

(प्रविश्य)

शिष्यः—उपाध्याय आज्ञापय ।

चाणक्यः—वत्स मसीभाजनं पत्र चोपानय ।

(शिष्यस्तथा करोति)

चाणक्यः—(पत्र गृहीत्वा स्वगतम्) किमत्र लिखामि । अनेन खलु लेखेन राक्षसो जेतव्य ।

(प्रविश्य)

विमला

व्याख्या—चाणक्य —शार्ङ्गरव, शार्ङ्गरव (Sarangrava, O Sarangrava).
[प्रविश्य = प्रवेशंकृत्वा (Entering)].

शिष्य —आज्ञापय = निदेशं कुरु (What are your commands)

चाणक्य —वत्स (Boy), मसीभाजनम् = मस्याधारपात्रम् (ink stand), च = पुनः (and), पत्रम् (piece of paper), आनय = सन्निकटे स्थापय (get me)
[शिष्यस्तथा करोति = (Pupil does accordingly)]

चाणक्य —(पत्र गृहीत्वा स्वगतम् = taking the paper to himself) अत्र = अस्मिन् पत्रे (In this letter), किम् (what), लिखामि (I write), अनेन = लेखेन (by this letter), राक्षस = एतन्नामकः जेतव्यः (to be conquered).
[प्रविश्य = प्रवेश कृत्वा (Entering)]

हिन्दी—चाणक्य—शार्ङ्गरव, शार्ङ्गरव ।

(रङ्गमञ्च पर प्रवेश कर)

शिष्य—आज्ञा हो आचार्य,

चाणक्य—दावात और कागज कहीं से ले आओ तो ।

शिष्य—　　　　(वैसा ही करता है)

चाणक्य—(पत्र लेकर आप ही आप) अब क्या लिखा जाय ? क्योंकि इसी पत्र से राक्षस विजय करना है ।

(प्रवेश कर)

English—*Chanakya*—Sarangrava, O Sarangrava.

(Entering)

Pupil—Command me sir,

Chanakya—Boy get me an ink pot and a piece of paper.

(Pupil does accordingly)

Chanakya—(Holding the leaf to himself) What shall I write on it ? Rakshasa is indeed to be conquered by this writing.

(Entering)

प्रतिहारी—जयत्वार्यः । (जेदु अज्जो)

चाणक्यः—(सहर्षमात्मगतम्) गृहीतो जयशब्दः । (प्रकाशम्) शोणोत्तरे, किमागमनप्रयोजनम् ।

प्रतिहारी—आर्य देवश्चन्द्रश्री शीर्षे कमलमुकुलाकारमञ्जलिं निवेश्य आर्यं विज्ञापयति । इच्छाम्यार्येणाभ्यनुज्ञातो देवस्य पर्वतेश्वरस्य पारलौकिकं कर्तुम् । तेन च धारितपूर्वाणि आभरणानि ब्राह्मणेभ्यः प्रतिपादयामीति । (अज्ज देवो चन्द्रसिरी सीसे कमलमुउलाआरमञ्जलिं णिवेसिअ अज्जं विण्णवेदि । इच्छामि अज्जेण अब्भणुण्णादो देवस्स पव्वदीसरस्स पारलोइअं कादुं तेण अ धारिदपुव्वाइं आहरणाइं बह्मणाणं पडिवादेमित्ति ।)

चाणक्यः—(सहर्षमात्मगतम्) साधु वृषल ममैव हृदयेन सह समन्त्र्य सन्दिष्टवानसि । (प्रकाशम्) शोणोत्तरे उच्यतामस्मद्वचनाद्वृषलः—साधु वत्स, अभिज्ञः खल्वसि लोकव्यवहाराणाम् तदनुष्ठीयतामात्मनोऽभिप्रायः । किन्तु पर्वतेश्वरधृतपूर्वाणि गुणवन्ति भूषणानि गुणवद्भ्य एव प्रतिपादनीयानि । तदहं स्वयमेव परीक्षितगुणान् ब्राह्मणान् प्रेषयामीति ।

प्रतिहारी—यदार्य आज्ञापयति । (जं अज्जो आणवेदि ।)

(इति निष्क्रान्ता)

विमला

व्याख्या—प्रतिहारी—जयतु = सर्वोत्कर्षेण वर्त्तताम् (Victory to you), आर्यः = श्रेष्ठः (Noble sir).

चाणक्य—[सहर्षम् = हर्षेण प्रमदेन सह वर्त्तमानम् सहर्षम् (with joy), आत्मगतम् = सर्वैरश्राव्यम् (to himself)], गृहीतः = प्राप्तः (is accepted), जयशब्दः = अभीप्सितविजयशब्दः (the word of victory), [प्रकाशम् = सुस्पष्टम् (Aloud)], शोणोत्तरे = सम्बोधनविशेषः (Sonottara), किम् (what is), आगमनप्रयोजनम् = आगमनकारणम् (the object of your coming)

प्रतिहारी—आर्य = मान्य (Your Honour), देवश्चन्द्रश्रीः = राजा चन्द्रगुप्तः (esteemed Chandragupta), शीर्षे = मस्तके (forehead), कमलमुकुलाकारमञ्जलिम् = पङ्कजकलिकाकृतिमञ्जलिम् (folded hands like a lotus bud), निवेश्य = निधाय (having placed), विज्ञापयति = निवेदयति (begs to infrom), आर्येण = मान्येन (by noble sir), अभ्यनुज्ञातः = आदिष्टः सन् (permitted), देवस्य = राज्ञः (of the king), पर्वतेश्वरस्य (Parvateswar), पारलौकिकम् = परलोकमिद्धयर्थम् कृतं श्राद्धादिकम् कर्म (obsequial rites), कर्त्तुम् इच्छामि = विधातुम् इच्छामि (I wish), तेन च = पर्वतेश्वरेण च (by him), धारितपूर्वाणि = पूर्वधारितानि (previously worn), आभरणानि = भूषणानि (ornaments), ब्राह्मणानाम् = विप्राणाम् (to the Brahmanas), प्रतिपादयामिति = समर्पयामिति (to present)

चाणक्य —[सहर्षम् = सानन्दम् (with joy), आत्मगतम् = अनतिस्पष्टम् (to himself),] साधुवृषल = गुणवन् मौर्य (Bravo, Vrishala), ममैव = मदीयेनैव हृदयेन = मानसेन सह = सार्धम् (with my heart), सम्मन्त्र्य = मन्त्रयित्वा (having consulted), सन्दिष्टवानसि = आदिष्टवानसि (have sent this massage), [प्रकाशम् = सुस्पष्टम् (aloud)], शोणोत्तरे = प्रतीहार्या सम्बोधनमिदम् (Sonottara), अस्मद् वचनात् = मम वचनानुसारेण *(in my words)*, वृषल = चन्द्रगुप्त *(Chandragupta)* उच्यताम् = अभिधीयताम् (let him be informed), साधु वत्स = भद्र मौर्य (well done, my boy), अभिज्ञ खल्वसि = कुशलोऽसि (well acquainted with), लोकव्यवहाराणाम् = लोकाचाराणाम् (the ways of the world), तत् = तस्मात् कारणात् (for this), आत्मन = स्वस्य (self), अभिप्राय = तात्पर्यम् (desire) अनुष्ठीयताम् = अनुरूपम् क्रियताम् (do as you like), किन्तु = परम् (but), पर्वतेश्वरेण = मलयकेतुपित्रा (by Parvateswer), धृतपूर्वाणि = पूर्वधृतानि (formerly), गुणवन्ति बहुमूल्यानि, वा उत्कृष्टानि (the excellent), भूषणानि = अलङ्करणानि (ornaments), गुणवद्भ्य एव = गुणशालिभ्य एव (worthy), प्रतिपादनीयानि = समर्पणीयानि (to be given), तदहम् (so I), स्वयमेव = साक्षादेव (myself), परीक्षितगुणान् = सद्गुणशालिन (of tried merits), ब्राह्मणान् = विप्रान् (Brahmans), प्रेषयामि = प्रेषयिष्यामि (will send)

प्रतीहारी—यदार्य आज्ञापयति = भवान् यत् आज्ञा करोति (As noble sir, commands), (Exit)

हिन्दी—प्रतीहारी—(प्रवेश कर) विजय हो महाराज !

चाणक्य—(प्रसन्न होकर मन ही मन) विजय' यह तो सचमुच मिल गयी । (व्यक्त) शोणोत्तरे ! कैसे आयी ?

प्रतिहारी—महाराज ! कमल मुकुल की तरह अपने हाथों की प्रणामाञ्जलि को सिर से लगाकर सम्राट चन्द्रगुप्त ने निवेदन किया है कि यदि आप की आज्ञा हो तो मृत महाराज पर्वतेश्वर का पारलौकिक कार्य सम्पन्न करा दिया जाय तथा उनके व्यक्तिगत आभूषणों को गुणज्ञ ब्राह्मणों के बीच बाँट दिया जाय ।

चाणक्य—(मन ही मन प्रसन्न होकर) शाबास चन्द्रगुप्त ! लगता है जैसे मेरे हृदय की सलाह लेकर ही तुमने यह आवेदन भेजा है । (व्यक्त रूप से) शोणोत्तरे ! मेरी ओर से महाराज से कहना—वे लोकाचार से पूर्ण परिचित हैं । अत जैसा उचित समझें करें । किन्तु एक बात—पर्वतेश्वर के आभूषण कोई सामान्य आभूषण नहीं है, उनके ग्रहीता पात्र भी वैसे ही गुणी होना चाहिए । म ऐसे योग्य एव परीक्षित ब्राह्मणों को भेज रहा हू

प्रतिहारी—आपकी जैसी आज्ञा महाराज ! (बाहर निकल जाती है) ।

English—*Wardress*—Let subjugate to your worth sir

Chankya—(With joy to himself) Really, subjugate is recieved (With a clear voice) Sonottara, what is the cause of your coming here ?

Wardress—Sir, having a fold of hands of lotus on the head of the king Chandragupta beg to say you thus—I shall wish to perform,

चाणक्यः—शार्ङ्गरव, उच्यन्तामस्मद्वचनाद्विश्वावसुप्रभृतयस्त्रयो भ्रातरः वृषलात् प्रतिगृह्याभरणानि भवद्भिरहं द्रष्टव्य इति ।

शिष्यः—तथेति (निष्क्रान्त)।

चाणक्य —उत्तरोऽयं लेखार्थः । पूर्वः कथमस्तु (विचिन्त्य) आः ज्ञातम् । उपलब्धवानस्मि प्रणिधिभ्यो यथा तस्य म्लेच्छराजलोकस्य मध्यात् प्रधानतमाः पञ्च राजानः परया सुहृत्तया राक्षसमनुवर्तन्ते । ते यथा—

---

with your order, the 'Shradha' of the king Parvateswar and to distribute his ornaments among worthy Barhmanas.

Chanakya—(With joy—to himself) Well, you have sent this communication to me as it were, after consulting my heart (With a clear voice) Sonottara, you will inform the king Chandragupta in my name—"well done, my boy, you are, really, well acquainted with the public affairs, you have brought good, Do as you like (but remember a thing) jewelries of the late Paravateswar are not simple, the acceptors must be in equal, I am sending you such tried and worthy Brahmanas.

Wardress—As your order sir, (Exit)

विमला

व्याख्या—चाणक्य—शार्ङ्गरव=हे शार्ङ्गरव (O Sharngrav), अस्मद्वचनात्=मम-वचनानुसारेण (in this my name), विश्वावसुप्रभृतयः त्रयः भ्रातरः=सोदरा (the three brothers Vishwabasu and others), वृषलात्=चन्द्रगुप्तात् (from vrishala), प्रतिगृह्य=आदाय वा स्वीकृत्य (having recieved), आभरणानि=आभूषणानि (ornaments), भवद्भिः=सालङ्करणैरित्यर्थः (all of you), अहम्=चाणक्य (I), द्रष्टव्य इति=अवलोकितव्य इति (should see)

शिष्य —तथा (so be it) [इति निष्क्रान्तः (Exit)]

चाणक्य—उत्तरोयम्, लेखार्थः=लेखनीयस्यैतदलंकारत्रयमन्तिमो विषयः (this shall form the latter part of the letter), पूर्वः=प्रथमः (the first), कथम्=कीदृशः (what shall be), अस्तु=स्यात् । [विचिन्त्य=musing], आः ज्ञातम्=आः निश्चितम् (Ah ! I have it), उपलब्धवानस्मि=ज्ञातवान् भवामि (have learnt), प्रणिधिभ्यः=गूढदूतेभ्यः (from spies), यथा तस्य, म्लेच्छराज-लोकस्य=म्लेच्छाधिपसैन्यस्य (tha followers of the Mlechcha prince) मध्यात् (out of), प्रधानतमाः=अतिशयेन प्रधानाः (principals), पञ्चराजानः=पञ्चनृपाः (five kings), परया=उत्कृष्टया, सुहृत्तया=बन्धुतया (with great affection), राक्षसमनुवर्तन्ते=मन्त्रिणमनुसरन्ति (follow Rakhasa), ते यथा (they are) —

हिन्दी—चाणक्य—शार्ङ्गरव, जाओ और मेरी ओर से विश्वावसु प्रभृति तीनों भाइयों से कहो कि सम्राट् चन्द्रगुप्त से आभूषण उपहार में स्वीकार कर मुझ से भेंट करनी है ।

कौलूतश्चित्रवर्मा मलयनरपतिः सिंहनादो नृसिंह
काश्मीरः पुष्कराक्ष क्षतरिपुमहिमा सैन्धवः सिन्धुषेणः ।
मेघाख्य. पञ्चमोऽस्मिन् पृथुतुरगबलः पारसीकाधिराजो
नामान्येषां लिखामि ध्रुवमहमधुना चित्रगुप्तः प्रमार्ष्टु ॥ २० ॥

(विचिन्त्य) अथवा न लिखामि पूर्वमनभिव्यक्तमेवास्ताम् नान्येन लिखित्वा) शार्ङ्गरव !

शिष्य—जैसी आज्ञा (चला जाता है) ।

चाणक्य—यह बात तो पत्र के अन्तिम भाग में आयेगी । प्रारम्भ क्या हो ? (कुछ सोच कर) हाँ, ध्यान में आया—गुप्तचरों के द्वारा मुझ मालूम हो चुका है कि म्लेच्छाधिपति (मलयकेतु) के अनुयायी पाच विशिष्ट राजा लोग राक्षस के बडे भक्त अनुगामी बन रहे हैं । वे हैं—

English—*Chanakya*—Sarangrava, inform Vishwabasu in my name and his three brothers to see me after accepting the ornaments as gift from Chandragupta.

Pupil—Very good, sir (Exit)

Chanakya—This matter (of ornaments) shall be written in the latter portion of *the letter, but what should be the beginning?* (Meditation) Now it is clear—I am informed by spies that five kings among the freinds of Mlechcha king (Malayaketu) are following him with great courage They are —

विमला

अन्वय —कौलूत , चित्रवर्मा, नृसिंह, मलयनरपति , सिंहनाद , काश्मीर , पुष्कराक्ष , क्षतरिपुमहिमा, सैन्धव , सिन्धुषेण , पृथुतुरगबल , पारसीकाधिराज , मेघाख्य , पञ्चम , अस्मिन्, अहम्, ध्रुवम्, अधुना, नामानि, लिखामि, चित्रगुप्त , प्रमार्ष्टु ।

व्याख्या—कौलूत =कुलुताधिपति चित्रवर्मा (King of the Kulut), मलयनरपति =मलयदेशाधिपति सिंहनादो नाम (the lion like king of Malaya), काश्मीर , पुष्कराक्ष =काश्मीरदेशाधिप पुष्कराक्षो नाम (Pushkarkasha of Kashmir), क्षतरिपुमहिमा=शत्रुन्दम (has eclipsed the glory of his enemies), सैन्धव =सिन्धुदेशाधिपति (king of Sindha), सिन्धुषेण =(Sindhukhen), पृथुतुरगबल =प्रभूत अश्वादिसैन्य (with a large force of cavalry), पारसीकानाम्=यवनायुदेशोद्भवानाम्, अधिराजा=अधिपति (the Persian king), मेघाख्यो नाम (named *Magha*), एते पञ्चराजान (*the fifth of the party*), एतषा राज्ञाम्, अस्मिन्=भेदपत्रे, अहम्, अधुना=साम्प्रतम्, ध्रुवम्=निश्चितम्, लिखामि (I shall surely now write the names of these), चित्रगुप्त =यममन्त्री (Chitragupta), प्रमार्ष्टु=प्रोञ्छतु (let Chitragupta bolt them out), अर्थात् एतत्पत्र मदीयलेखेनैव तेषां मरण भविष्यति ॥ २० ॥

(प्रविश्य)

शिष्यः—उपाध्याय, अज्ञापय ।

चाणक्यः—वत्स, श्रोत्रियाक्षराणि प्रयत्नलिखितान्यपि नियतमस्फुटानि भवन्ति । तदुच्यतामस्मद्वचनात्सिद्धार्थकः । एभिरक्षरैः केनापि कस्यापि स्वयं वाच्यमिति अदत्तवाह्यनामानं लेखं शकटदासेन लेखयित्वा मामुपतिष्ठस्व । न चाख्येयमस्मै चाणक्यो लेखयतीति ।

[विचिन्त्य=(thinking)], अथवा न लिखामि (or rather, I will not write them), पूर्वम्=प्राक् (first), अनभिव्यक्तम्=अनतिस्पष्टम् (vague), एवास्ताम्=तिष्ठतु (let be), नाट्येन=नटोचितव्यापारविशेषेण (gesticulating), लिखित्वा=वर्णविन्यासं कृत्वा (writing), शार्ङ्गरव (Sarngarava). -

हिन्दी—कुलूतराज, चित्रवर्मा, मलयाधिपति (नरकेसरी) सिंहनाद, काश्मीर का पुष्कराक्ष जो अपने शत्रुओं को पूर्णतः विनष्ट कर चुका है। सिन्ध का सिन्धुषेण और पाँचवा घुड़सवारों से भरपूर पारसीकों का राजा मेघ—इन पाँच नामों को मैं लिख रहा हूँ। अब तो यमराज के लेखक चित्रगुप्त का सामर्थ्य हो तो वे आकर इसे मिटा दें ॥ २० ॥

(फिर कुछ सोचकर) अथवा—नहीं लिखता हूँ—प्रथम भाग कुछ-कुछ अस्पष्ट ही रहे तो अच्छा है। (नाट्यकार वस्त्र से कुछ लिख कर) ओ शार्ङ्गरव !

English—Chitraverma—the king of Kulut, the lion like king of Malaya—Singhnad, Puskaraksha of Kasmir, (who has destroyed his foes) Sindhusen of Sindhu and the fifth king Megha (with an ample cavalry force) of parsiks. I am writing five names. Let Chitragupta blot out these names. 20

(Thinking) Or, I will not write the name. Let the first part remain obscure (Acting writing) Sarngarava.

टिप्पणी—इस श्लोक में पाञ्चाली रीति है और ओज गुण है। इसका रस वीर है। इसका वृत्त स्रग्धरा है। लक्ष्य पहले लिखा जा चुका है। चित्रगुप्त द्वारा लिखित प्रमार्जन के कारण मरण सूचित होता है। अतः इस श्लोक में अर्थापत्ति अलङ्कार है। साहित्यदर्पण में इसका लक्षण है—'दण्डापूपिकयाऽन्यार्थागमोऽर्थापत्तिरिष्यते ।'

विमला

व्याख्या—[प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा (Entering)].

शिष्यः—उपाध्याय=गुरुदेव (preceptor), आज्ञापय=आज्ञा कुरु (command me)

चाणक्यः—वत्स=पुत्र (My son), श्रोत्रियस्य=वेदपाठिनः (of a Shrotriya Brahman), अक्षराणि=लिखिताः वर्णाः (the alphabets), प्रयत्नलिखितान्यपि=प्रयासविन्यस्तान्यपि (even written with care), नियतम्=निश्चितम् (must certainly), अस्फुटानि=अनतिस्पष्टानि (illegible), भवन्ति=जायन्ते (become),

शिष्य —तथा (इति निष्क्रान्तः) ।
चाणक्य—(स्वगतम्) हन्त जितो मलयकेतु ।
(प्रविश्य लेखहस्त)
सिद्धार्थक —जयत्वार्य । आर्य, अय स शकटदासेन लिखितो लेख ।
(जेदु अज्जो । अज्ज अअ सो सअडदासेण लिहिदो लेहो ।)

तत् = तस्मात् (so), अस्मद् वचनात् = मम वचनानुसारेण (in my name), सिद्धार्थक उच्यताम्=सिद्धार्थक अभिधीयताम् (Let Sidharthaka be told) एभिरक्षरै = वर्णै (in these words), केनापि = जनेन कस्यापि सविधे (by some one to some one else in person), स्वय वाच्यम् = साक्षादभिधेयम्, अदत्तम् = अलिखितम् (without having written), वाह्ये = पत्रेपरि, नाम=सज्ञा यस्मिन् तम (any name on the out side) लेखम् = पत्रम् (letter) शकटदासेन (by Shakatdass), लेखयित्वा मामुपतिष्ठस्व = मत्समीपवर्तीभव (then come to me) नचाख्येयम् = नहि वक्तव्यम् (should not tell him), अस्मै = शकटदासाय (For Shakatdass), चाणक्यो लेखयतीति (Chanakya desires him to write)

हिन्दी— (प्रवश करके)

शिष्य—उपाध्याय, आज्ञा दीजिए ।

चाणक्य—वत्स, प्रयत्नपूर्वक लिखे गये भी श्रोत्रिय ब्राह्मण के हाथ के अक्षर निश्चित रूप से अस्पष्ट हुआ करते हैं । तो मेरी ओर से सिद्धार्थक को कहना—पता नहीं यह पत्र किसका है ? और किसके नाम है ? किन्तु है व्यक्तिगत । ऐसे लेख को शकटदास से लिखवाकर मेरे पास उपस्थित होओ । और हाँ, उसे यह भी न मालूम होने पावे कि यह सब चाणक्य लिखवा रहा है ।

English— (Entering)

Pupil—Order, Sir

Chanakya—My boy , the handwriting of a shrotriya, afterall being written with care, is always illegible. So let Sidharthaka be known in my these words—'Meet me after having a personal letter from Shakatdass with the name of the sender and addressee Further he should not be known that I am getting this letter to be written

टिप्पणी—स्वय वाच्यम्—पत्र का अभिधयार्थ लेखक या वाचक ही जानता है । प्रयत्न लिखितानि-पुराने समय में श्रोत्रिय विद्वानों को लिखने में अभ्यास की कमी के कारण अति कठिनाई होती थी ।

विमला

व्याख्या—शिष्य —तथा=भवदाज्ञानुसारेण करिष्यामि (As you command) इति निष्क्रान्त = रङ्गस्थानात् निर्गत (Exit)

चाणक्य —[स्वगतम् = सर्वेरश्राव्यम् (To himself)], हन्त=इदं हर्षसूचकमव्ययम् (Ha), जित (is subdued), मलयकेतु = पर्वतश्वरसुत (Malayaketu) प्रविश्य, लेखहस्त=करे पत्रमादाय (letter in hand)

सिद्धार्थ —जयतु = सर्वोत्कर्षेणवर्द्धताम् (Let conquer), आर्य = पूज्योभवान्

चाणक्यः—(गृहीत्वा) अहो दर्शनीयान्यक्षराणि । (अनुवाच्य) भद्र, अनया मुद्रया मुद्रयैनम् ।

सिद्धार्थकः—(तथा कृत्वा) आर्य, अयं मुद्रितो लेखः । किमपरमनुष्ठीयताम् । (अज्ज अअं मुद्दिदो लेहो कि अवरं अणुचिट्ठीअदु ।)

चाणक्यः—भद्र, कस्मिंश्चिदाप्तजनानुष्ठेये कर्मणि त्वां व्यापारयितुमिच्छामि ।

(Noble sir), आर्य=मान्य (your Honour), शकटदासेनस्वनाम्ना कायस्थेन (Shakatdasa by name), अयम्=प्रत्यक्षदृश्यमानः (Here is), स.=भवदुक्त., लिखितो-लेख=पत्रम्(the letter written)

चाणक्य —[गृहीत्वा=पत्रमादाय (Taking the letter)], अहो=आश्चर्यम् (oh), दर्शनीयानि=मनोज्ञानि (how beautiful), अक्षराणि=वर्णाः सन्ति (is the handwriting), [अनुवाच्य=पठित्वा (Having read)] भद्र=साधो (gentleman), अनया मुद्रया=राक्षसनामाङ्किताङ्गुलिमुद्रया (with this signetring), एनम् मुद्रय=पत्रम् अङ्कय (seal it)

हिन्दी—शिष्य –जैसी आज्ञा (ऐसा कहकर निकल गया)

चाणक्य—(अपने आप) हर्ष की बात है, मलयकेतु जीत लिया गया ।

(लेख हाथ में लिए प्रवेश करके)

सिद्धार्थक—आर्य, जय हो । आर्य शकटदास द्वारा लिखित यह पत्र है ।

चाणक्य—(लेकर) अहा, पत्र के अक्षर देखने लायक है (पढ़कर) भद्र इस अंगूठी से इस पत्र पर मुहर लगा दो ।

English—*Pupil*—As your Noble command sir, (Exit).

Chanakya—(Thinking to himself) Ha, Malayaketu is subjugated.

(Enters taking a letter in his hand)

Sidharthaka—Let noble sir, victory. It is the letter written by Shakatdasa.

Chanakya—(Taking in his hand) What a fine handwriting ! (Reading silently) O boy ; seal it with this stamp.

विमला

व्याख्या–सिद्धार्थक –[तथाकृत्वा=मुद्रयित्वा (Doing so)], आर्य=मान्य (Noble sir), अयम् मुद्रितो लेख=अयमङ्कितः पत्रम् (Here is the letter with seal), अपरम्=अन्यत् (other), किम् (what), अनुष्ठीयताम्=क्रियताम् (is to be done).

चाणक्य —भद्र=साधो (gentleman), कस्मिंश्चित्=क्वचित् (in a certain work), आप्तजनानुष्ठेये=सुहृज्जन कर्तव्यकार्ये (has to be done by a trusted person), त्वाम्=भवान् (to you), व्यापारयितुम्=नियोजयितुम् (to employ), इच्छामि=कामये (I wish).

सिद्धार्थक — सहर्षम्) आर्य, अनुगृहीतोस्मि। आज्ञापयत्वार्यः किमनेन दासजनेनार्यस्यानुष्ठातव्यम्। (अज्ज अणुगिहिदोह्मि आणवेदु अज्जो कि इमिणा दासजणेण अज्जस्स अणुचिट्ठिदव्व।)

चाणक्य —प्रथम तावद्वध्यस्थान गत्वा घातका सरोपदक्षिणाक्षिसङ्कोचसज्ञा ग्राहयितव्या। ततस्तेषु गृहीतसङ्केतेषु भयापदेशादितस्तत प्रद्रुतेषु शकटदासो वध्यस्थानादपनीय राक्षस प्रापयितव्य। तस्माच्च सुहृत्प्राणपरितुष्टात्पारितोषिक ग्राह्यम्। राक्षस एव कचित्काल सेवितव्य। तत प्रत्यासन्नेषु परेषु प्रयोजनमिदमनुष्ठेयम्। (कर्णे एवमेवम्।)

सिद्धार्थक —[सहर्षम्=सानन्दम् (with joy)], आर्य=मान्य (Noble sir), अनुगृहीतोऽस्मि=अनुकम्पितोऽस्मि (I am favoured)। आज्ञापयत्वार्य =भवान् निदेशम् करोतु (Let noble sir, Command) अनेन दासजनेन=अनुचरेण (by this slave), आर्यस्य=पूज्यस्य (of your sir), किमनुष्ठातव्यम्=किम् विधातव्यम् (what has to be done)

हिन्दी—सिद्धार्थक—(वैसा करके) आय यह पत्र चिह्नित हो गया। दूसरा कौन सा काम किया जाय ?

चाणक्य—भद्र किसी विश्वसनीय व्यक्ति के द्वारा करने योग्य किसी कार्य में तुम्हें लगाना चाहता हू।

सिद्धार्थक—(प्रसन्नतापूर्वक) अनुगृहीत हू। आर्य आज्ञा दें आपके इस दास को क्या करना चाहिए ?

English—*Sidharthaka*—(Doing so) Here it is the sealed letter Arya Command more

Chanakya—There is a work which, I think should be entrusted to a faithful person for which I want to engage you

Sidharthaka—(Happily) It is your good will for me sir, command this slave for the work to b~ done

विमला

व्याख्या—चाणक्य —प्रथमम्=पूर्वम् (In the first), तावत्=तावच्छब्दो वाक्यालङ्कारे, वध्यस्थानम्=प्राणदण्डप्रदेशम् (the place of execution), गत्वा=प्राप्य (you go to), घातका=हननशीला चाण्डाला (the executioners), सरोपदक्षिणाक्षिसकोचसज्ञा=सकोपदक्षिणाक्षिसकोचसकेतम् (with the angry *contraction of the right eye*), ग्राहयितव्या=बोधयितव्या (*understand*), तत =तदनन्तरम् (after that), गृहीतसङ्केतेषु=ज्ञातसङ्केतेषु (having understand the sign), तेषु=घातकेषु (executioners), भयापदेशात्=भयव्याजात् (under the pretence of fright), इतस्तत =चतुर्दिक्षु (hither and thither) प्रद्रुतेषु= पलायितेषु (fled), शकटदास (Shakatdasa), वध्यस्थानात्=प्राणदण्डभूमे

सिद्धार्थक —यदार्य आज्ञापयति । (ज अज्जो आणवेदि ।)

चाणक्य.—शाङ्गरव शाङ्गरव !

(प्रविश्य)

शिष्य —उपाध्याय, आज्ञापय

चाणक्य —उच्यतामस्मद्वचनात् कालपाशिको दण्डपाशिकश्च यथा वृषल

(from the place of exe ution), अपनीय = पृथक् कृत्य (has to be removed), राक्षस प्रापयितव्य = राक्षसम् नेतव्य (taken to Rakshasa), सुहृत्प्राणपरितुष्टात्= (being pl-ased at your having saved the life of his friend), तस्मात्, पारितोषिकम् ग्राह्यम् = हर्षसूचकद्रव्यादिदानम्, ग्राह्यम् (Reward has to be accepted from him) राक्षस एव = नन्दामात्य एव (Rakahasa himself), कचित् कालम्=कियत् समय (for some time), सेवितव्य = आश्रितव्य (should then serve), तत = तत्पश्चात् (when), प्रत्यासन्नेषु = समीपवर्त्तिषु (near), परेषु = शत्रुषु (en-mies), इदम प्रयोजनम् = इदम् कार्यम् (this business), अनुष्ठेयम् = कर्त्तव्यम् (should excute), [कर्णे एवमेवम् (whispers in to his ears)].

हिन्दी—चाणक्य—सर्वप्रथम शूली के स्थान पर जाकर क्रोध में अपनी दाहिनी आंख को दबाते हुए वध्य घातकों को अपना संकेत समझा देना । जब वे तुम्हारे संकेत समझ जाय और मानों डर के मारे इधर-उधर भाग खड़े हों तब शकटदास को वहाँ से बचाकर राक्षस के यहाँ पहुँचा देना । मित्र के प्राणों की रक्षा से प्रसन्न राक्षस तुम्हें अवश्य ही कुछ पुरस्कार देगा— उसे स्वीकार कर लेना, और कुछ दिन इसी प्रकार सेवा सुश्रुषा भी करते रहना । फिर जब शत्रु तुम्हारा अच्छी तरह नजदीकी बन जाय तब ऐसा करना (कान में ऐसे-ऐसे) ।

English—*Charakya*—At first go to the execution-place and make all executiorers understand the sign of your contracted right eye due to anger and as they will understand your sign and begin to be disp-rsed under fear; take Sakatdasa to Rakshasa safely Accept the award from Rakshasa for the overjoy at saving his friend's lif- and serve him for a few days in the same manner As you understand your enemies closer to you perform this work (whispers in his ears)

विमला

व्याख्या—सिद्धार्थक—यदार्य आज्ञापयति = (As Noble sir Command)

चाणक्य —शाङ्गरव, शाङ्गरव, (Sarngarava O, Sarngarava)

[प्रविश्य = प्रवेश कृत्वा (Entering)]

शिष्य —उपाध्याय=आचार्य (Preceptor), आज्ञापय = आदेशम् देहि (Command me).

चाणक्य—उच्यताम् = कथ्यताम् (say), अस्मत् वचनात् = मद् वचनानुसारेण (in

समाज्ञापयति य एष क्षपणको जीवसिद्धिर्नाम राक्षसप्रयुक्तो विषकन्यया पर्वतकं घातितवान् स एनमेव दोषं प्रख्याप्य सनिकारं नगरान्निर्वास्यतामिति ।

शिष्यः—तथा (इति परिक्रम्य)

चाणक्यः—वत्स, तिष्ठ तिष्ठ ! योऽयमपरः कायस्थः शकटदासो नाम राक्षसप्रयुक्तो नित्यमस्मच्छरीरमभिद्रोग्धुमिह प्रयतते स चाप्येनं दोषं प्रख्याप्य शूलमारोप्यतां गृहजनश्चास्य बन्धनागारं प्रवेश्यतामिति ।

---

my name), कालपाशिको दण्डपाशिकश्च = (Kalpasika and Dandpasika), यथा (that), वृषल = चन्द्रगुप्तः (Chandragupta), समाज्ञापयति=निर्देशं करोति (gives the orders), य एष क्षपणकः = बौद्धसन्यासी (He, the mendicant), जीवसिद्धिर्नाम=तदाख्यः चाणक्यप्रतिनिधि. (known as Jivasidhi), राक्षसप्रयुक्त = राक्षसनियुक्त (employed by Rakshasa), विषकन्यया (with a poison-girl), पर्वतकम् = तदाख्यराजानम् (The king Parvateswar), घातितवान्=विनाशितवान् (had killed), सः = असौ (He), एनमेव, दोषम् = अपवादम् (crime), प्रख्याप्य= संकीर्त्य (after proclaiming), सनिकारम् = सतिरस्कारम् (with indignities), नगरात् (from the city), निर्वास्यताम् = निःसार्यताम् (be expelled).

शिष्य.—तथा = यथाज्ञापयतीत्यादि (so be it), [इति परिक्रम्य (goes round the stage)]

हिन्दी—सिद्धार्थक—आपकी जैसी आज्ञा आचार्य ।

चाणक्य—शार्ङ्गरव, ओ शार्ङ्गरव । (प्रवेश करके)

शिष्य—आचार्य आज्ञा दीजिए ।

चाणक्य—मेरी ओर से कालपाशिक और दण्डपाशिक नामक दोनों जल्लादों को कहा जाय कि चन्द्रगुप्त आज्ञा देते हैं कि राक्षस के द्वारा नियुक्त जिस जीवसिद्धिनामक बौद्ध सन्यासी ने विषकन्या के द्वारा पर्वतक को मार डाला था, वह इस अपराध को घोषित करके तिरस्कारपूर्वक इस नगर से निकाल दिया जाय ।

शिष्य—जो आज्ञा (ऐसा कह कर घूमकर) ।

English—*Pupil*—As your noble Command; Sir, (Exit).

Chanakya—Sarngarava, Sarngarava ! (Entering)

Pupil—Order, sir.

Chanakya—Say Kalpasik and Dandpasik in my name, that Chandragupta has orderd—Drive that mendicant Jivasidhi out of the city ignominously announcing publicly his crime that he had *killed Pervateswar by a poison girl being fomented by Rakshasa.*

Pupil—So be it (starts to proceed)

विमला

व्याख्या—चाणक्य —वत्स (my boy), तिष्ठ तिष्ठ=आस्ताम्? (wait), योऽयमपरः = द्वितीयः (that other man), शकटदासो नाम = एतन्नाभिधानः (Shakatdasa

शिष्यः—तथा (इति निष्क्रान्तः)

चाणक्यः—(चिन्तां नाटयित्वा आत्मगतम्) अपि नाम दुरात्मा राक्षसो गृह्येत ।

सिद्धार्थकः—आर्य गृहीतः । (अर्द्धोक्ते)

चाणक्यः—(सहर्षमात्मगतम्) हन्त गृहीतो राक्षसः (प्रकाशम्) भद्र, कोऽयं गृहीतः ?

---

by name), कायस्थः = चित्रगुप्तजातीयः (a Kayastha), नित्यम्=प्रतिदिनम् (everyday), अस्मच्छरीरम् = मत्कायमिव (our person), अभिद्रोग्धुम्= विनाशयितुम् (to harm), इह, प्रयतते = उद्योगं करोति (attempts), स चापि = शकटदासोऽपि (Sakatdasa also), एनं दोषम् = अपवादम् (his guilt), प्रख्याप्य = प्रकाश्य (the publication of this), शूलम्=वधम्, आरोप्यताम्=स्थाप्यताम् (should also be implied), गृहजनश्चास्य = पुनः शकटदासस्य कलत्रादिकम् (his household), बन्धनागारम् = कारागृहं, प्रवेश्यताम्=निक्षिप्यताम् (Put in to prison).

शिष्यः—तथा=यथाज्ञापयति तथा करोमि (So be it), [इति निष्क्रान्तः (Exit)].

हिन्दी—चाणक्य—वत्स, ठहरो। राक्षस के द्वारा नियुक्त शकटदास नामवाला यह कायस्थ जो हमेशा हमारे शरीर से द्रोह करने के लिए इस नगरी में प्रयत्नशील है, वह भी इसी दोष का घोषित करके शूली पर चढ़ा दिया जाय और इसके परिवार के व्यक्ति जेल में डाल दिये जाय।

शिष्य—जो आज्ञा (ऐसा कह कर निकल गया)।

English—*Chanakya*—Wait for some time my boy. And this other man Sakatdasa an unfortunate Kayastha, who always tries to harm our life being fomented by Rakshasa, is to be executed after announcing his crime publicly and imprison all his family members.

Pupil—As your noble Command; sir (Exit)

टिप्पणी—प्रख्याप्य='प्र' उपसर्ग से √ख्या+णिच्+ल्यप्। आरोप्यताम् = आ+√रुह्+णिच्+लोट् वाच्य निर्मित। 'अस्मच्छरीरम्' से चन्द्रगुप्त का बोध होता है। यह 'अभिद्रोग्धुम्' क्रिया का कर्म है। 'कुसुमपुरवास्तव्यः' कर्म से इसका सम्बन्ध है। अभि उपसर्गक द्रुह् धातु से तुमुन् प्रत्यय का यह रूप है। प्रवेश्यताम् = प्र+विश्+णिच्+लोट्वाच् कर्म में निष्पन्न रूप है। आरोप्यताम् = आ+रुह्+णिच् लोट् वाच् कर्म में प्रयोग।

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[चिन्ताम् = स्मरणम् (anxiety), नाटयति = करोति (acting), आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself)], दुरात्मा = दुष्टात्मा (wicked), राक्षसः (Rakshasa), अपिनाम गृह्येत = वशीभूतो भवेदिति (can be taken).

सिद्धार्थक —आर्य = मान्य (Noble sir), गृहीतः = स्वीकृतः मया इति (taken),

चाणक्यः—[सहर्षम् = सानन्दम् (joyfully), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)], हन्त (Oh), गृहीतः = वशीकृतः (is taken), राक्षसः (Rakshasa),

सिद्धार्थकः—गृहीत आर्यसन्देशः। तस्माद् गमिष्यामि कार्यसिद्ध्यै।
(गिहीदो अज्जसन्देसो ता गमिस्स कज्जसिद्धीए।

चाणक्यः—(साङ्गुलिमुद्र लेखमर्पयित्वा) गम्यताम्। अस्तु ते कार्यसिद्धि।

सिद्धार्थकः—तथा (तह) (इति निष्क्रान्तः।)

(प्रविश्य)

शिष्य—उपाध्यायऽकालपाशिको दण्डपाशिकश्च उपाध्याय विज्ञापयतः। इदमनुष्ठीयते देवस्य चन्द्रगुप्तस्य शासनमिति।

चाणक्यः—शोभनम्। वत्स, मणिकारश्रेष्ठिन चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।

शिष्यः—तथा (इति निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य) इत इतः श्रेष्ठिन्।

[प्रकाशम् (Aloud)], भद्र = साधो (gentleman), कोयम् गृहीत = को वशीकृत इति (what is this that is taken)

सिद्धार्थक—गृहीत = (is taken), आर्यसंदेश = भवत वाचिकम् (your Honour's instructions), तस्मात् कार्यस्य = अभीष्टस्य (therefore of the work), सिद्ध्यै = निष्पत्त्यै (for the success), गमिष्यामि = यास्यामि (I will go)

चाणक्य—[साङ्गुलिमुद्र लेख=पत्रम् (Letter with the signet ring), अर्पयित्वा = समर्प्य (delivering)], गम्यताम् = प्रस्थीयताम् (you may go), ते = तव (your), कार्यसिद्धि = अभीष्टलाभ (*obtain success in your work*), अस्तु = भवतु (May)

सिद्धार्थक—तथेति (May it be so) (Exit)

[प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा (Entering)]

शिष्य—उपाध्याय=आचार्य (Preceptor), कालपाशिको दण्डपाशिकश्च इमौ दूतौ (Kalpasika and Dandpasika), उपाध्यायम् = आचार्यम् (to your Honour), विज्ञापयत = प्रार्थयत (beg to request), देवस्य = राज्ञ (of the king), चन्द्रगुप्तस्य = वृषलस्य (Chandragupta), शासनम् = आज्ञाम् (the command), इदमनुष्ठीयते = क्रियते (they will execute)

चाणक्य—शोभनम् = युक्तम् (very well), वत्स = शार्ङ्गरव (my son), मणिकारश्रेष्ठिनम् = वैश्यजातीयम् (The head jeweller), चन्दनदासम् = राक्षससुहृदम् (Chandandasa), इदानीम् = सम्प्रति (Now), द्रष्टुम् = अवलोकितुम् (to see), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish)

शिष्य—तथेति (well), [निष्क्रम्य = रङ्गशालात बहिर्निर्गत्य (Exit), चन्दनदासेन सह (with Chandandas), प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा (reenter)], इत इत श्रेष्ठिन् (This way, this way O Banker)

हिन्दी—चाणक्य—(चिन्ता मुद्रा में अपने आप) क्या दुरात्मा राक्षस पकडा जायेगा?

सिद्धार्थक—आर्य पकड़ लिया गया है। (अर्थात् ग्रहण कर लिया गया)

चाणक्य—(प्रसन्नतापूर्वक अपने आप) हर्ष की बात है राक्षस पकड लिया गया (व्यक्त) भद्र! यह कौन पकड लिया गया?

चन्दनदासः—(स्वगतम्)

चाणक्येनाकरुणेन सहसा शब्दायितस्यापि जनस्य।
निर्दोषस्यापि शङ्का किं पुनर्मम जातदोषस्य ॥ २१ ॥
(चाणक्कम्मि अकरुणे सहसा सद्दाविदस्स वि जणस्स।
णिद्दोसस्स वि सङ्का किं उण मह जाददोसस्स ॥)

सिद्धार्थक—आर्य का संदेश हृदयङ्गम कर लिया गया। तो अब कार्य की सिद्धि के लिए जाता हूँ।

चाणक्य—(मुद्राङ्कित पत्र को हाथ में देते हुए) तुम्हारे कार्य की सिद्धि हो।

सिद्धार्थक—जो आज्ञा (ऐसा कह कर चला गया)।

(प्रवेश करके)

शिष्य—उपाध्याय, कालपाशिक एवं दण्डपाशिक आचार्य से निवेदन करते हैं कि महाराज चन्द्रगुप्त की आज्ञा अभी पालन की जा रही है।

चाणक्य—बहुत अच्छा। वत्स, इस नगर सेठ चन्दनदास को देखना चाहता हूँ।

शिष्य—जो आज्ञा (निकल कर चन्दनदास के साथ प्रवेश करके) सेठ जी इधर से, इधर से आइए।

English—*Chanakya*—(Showing anxious-to himself), still, can that wicked Rakshasa be subjugated.

Sidharthaka—taken sir

Chanakya—Very well, Rakshasa is taken (speaking obviously) Who is taken my boy ?

Sidharthaka—I meant to say that your command was obvious to me and then I proceed to perform my mission

Chanakya—(giving the letter with the signet-ring) you may go. May you get success in your mission.

Sidharthaka—May it be so (Exit)

Pupil—(Entering) Sir, Kalpasika and Dandpasika beg to say that they will immediatly perform the order of His Highness Chandragupta.

Chanakya—Thank you my boy, I want to see the jeweller Chandandas.

Pupil—As you command sir (Entering after sometime with Chandandas) this way, this way O merchant

विमला

चन्दनदास —[स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself)]

अन्वयः—अकरुणेन, चाणक्येन, सहसा, शब्दायितस्य, निर्दोषस्य, अपि, जनस्य, शङ्का, जातदोषस्य, मम, पुनः, किम् ॥ २१ ॥

तस्माद्भणिता मया धनसेनप्रमुखा निजनिवेशसंस्थिताः कदापि चाणक्यहतको गेहं मे विचाययति। तस्मादवहिता निर्वहत भर्तुरमात्यराक्षसस्य गृहजनम्। मम तावद् यद्भवति तद्भवत्विति। (ता भणिदा मए धणसेणप्पमुहा णिअणिवेससण्ठिआ कदावि चाणक्कहदओ गेहं मे विचिण्णाविदि। ता अवहिदा णिव्वहेह भट्टिणो अमच्चरक्खसस्स घरअण। मह दाव जं होदि त होदु त्ति।)

व्याख्या—अकरुणेन=करुणाशून्येन (being heartless), चाणक्येन=कौटिल्येन (Chanakya), सहसा=झटिति (accidentally), शब्दायितस्य=आहूतस्य (called), निर्दोषस्य=निरपराधस्य (though innocent), अपि शब्दोऽत्र शब्दार्थ ग्रहणार्थम्, जनस्य=लोकस्य (a person), शङ्का=सन्देहः (entertains fear), जातदोषस्य=उत्पन्नापराधस्य (have committed a crime), मम=चन्दनदासस्य (I who), पुन.=मुहु', किम्=किम् वक्तव्यम् (How much more). ॥ २१ ॥

हिन्दी—चन्दनदास—(मन ही मन)

निर्दयी चाणक्य के द्वारा एकाएक बुलाये जाने पर किसी निरपराध व्यक्ति का भी दिल शङ्कित हो उठेगा और मैं तो फिर एक अपराधी व्यक्ति ही हू ॥ २१ ॥

English—*Chandandas*—(to himself).

Even the heart of an innocent person becomes afraid of untimely call from Chanakya due to his heartlessness, what Can I say of myself being a Criminal. 21.

टिप्पणी—जातदोषस्य=जात उत्पन्न., दोष' अपराधः यस्मिन् असौ जातदोष कृतापराधः इत्यर्थ। अर्थात् राक्षस के परिवार को अपने घर में छिपा कर रखने के कारण चन्दनदास अपने को अपराधी समझ रहा है। शब्दायितस्य—शब्द कारित. इति शब्द+क्यङ्+णिच्+क्त, कर्म में प्रयुक्त। इस श्लोक में अर्थापत्ति अलकार है। इसमें दण्डापूपिकान्याय से अन्य अर्थ का ज्ञान होता है। अर्थापत्ति प्रमाण में अनुपपद्यमान अर्थ को देखकर उसके उपपादक अर्थ की कल्पना की गई है। सरस्वतीकण्ठाभरण में लिखा है—

"प्रत्यक्षादिप्रतीतोऽर्थो यस्तथा नोपपद्यते। अर्थान्तरञ्च गमयति अर्थापत्तिं वदन्तिताम् ॥" इसी प्रकार इसमें आर्या छन्द है। लक्षण यथा—

यस्या. पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि। अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या।

विमला

व्याख्या—तस्मात्=कारणात् (Therefore), मया भणिता=मया कथिता (I have warned), धनसेनप्रमुखा.=धनसेनप्रभृतय. (Dhansena and others), निजनिवेशसंस्थिता.=स्वशासनविद्यमाना. (living in my house), कदापि=कस्मिंश्चिदपि काले (any moment), चाणक्यहतकः (wretched Chanakya), गेहम्=भवनम् (house), विचिनोति=परीक्षते (searches), तस्मात्=कारणात् (so), भर्त्तुः=स्वामिन. (our master), अमात्यराक्षसस्य (Minister Rakshasa), गृहजनम्=कलत्रादिकम् (member of the household), अवहिता.=सावधानाः सन्तः (with care), निर्वहत=निष्कासयत (remove), मम तवद्, यद्भवति=यदस्ति, तद्भवतु=तदस्त्वित्यर्थ (Let come what may unto me).

शिष्यः—भोः श्रेष्ठिन्, इत इतः ।

चन्दनदासः—अयमागच्छामि । (अअमाअच्छामि ।) (उभौ परिक्रामतः) ।

शिष्यः—(उपसृत्य) उपाध्याय, अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः ।

चन्दनदासः—जयत्वार्य (जेदु अज्जो)

चाणक्यः—(नाट्येनावलोक्य) श्रेष्ठिन्, स्वागतमिदमासनमास्यताम् ।

चन्दनदासः—(प्रणम्य), किं न जानात्यार्यः यथानुचित उपचारो हृदयस्य परिभवादपि मन्दुःखमुत्पादयति । तस्मादिहैवोचितायां भूमावुपविशामि ।

शिष्य—भो श्रेष्ठिन् (O, merchant), इत इत (This way, This way)

चन्दनदास—अयम्=अहम् (I), आगच्छामि=प्राप्तोऽस्मि (am coming)

[उभौपरिक्रामतः=शिष्यचन्दनदासावागच्छतः (Both turn round)]

हिन्दी—अब मैंने द्वारा अपने घर न रहने वाले धनसेन आदि को कहा जा चुका है कि जब कभी इस दुष्ट चाणक्य द्वारा घर तलाशी हो—सावधान होकर स्वामी अमात्य राक्षस के परिवार को हटा दो । अब मुझ पर जो बात, बन जाय ।

शिष्य—इधर, सेठ जी, इधर ।

चन्दनदास—यह आ रहा हूं ।

(दोनों घूमते हैं)

English—So I have made aware my family members and Dhansena of uncertain search of house made by wicked Chanakya and to replace carefully the family of our master, Minister Rakshasa. Later, I have no anxiety for my any fate.

Pupil—This way. O merchant, this way

Chandandasa—I am following the same

(Both move round the stage)

निमन्त्र

व्याख्या—शिष्य—[उपसृत्य=समीपमागत्य (approaching)], उपाध्याय=आचार्य (Preceptor), अयम् (here is), श्रेष्ठी चन्दनदासः (merchant Chandandasa)

चन्दनदास—आर्य=मान्यः (noble sir), जयतु=सर्वोत्कर्षेण वर्त्तताम् (Let prosper)

चाणक्य—[नाट्येन=नाट्योचितव्यापार विशेषेण (acting) अवलोक्य=दृष्ट्वा (seeing)], श्रेष्ठिन्=भो चन्दनदास (O merchant), स्वागतम्=सुष्ठ्वागमनं ते भवतु (Welcome), इदम्=साक्षात् दृश्यमानम (here is), आसनम् (seat), आस्यताम्=उपविश्यताम् (be seated)

चन्दनदास—[प्रणम्य=प्रणाम कृत्वा (Bowing)], आर्यः=मान्योभवान (Noble sir), किं न जानाति=न ज्ञायते (is not aware), यथानुचितम्=अयुक्तम् (undeserved), उपचारः=सत्कारः (courtesy), हृदयस्य (to the

(किं ण जाणादि अज्जो जह अणुचिदो उवआरो हिअ अस्स परिहवादोवि महन्त दु क्खमुप्पादेदि। ता इह ज्जेव उचिदाए भूमिए उवविसामि।)

चाणक्यः—भोः श्रेष्ठिन्, मा मैवम्। सम्भावितमेवेदमस्मद्विधैः भवतः। तदुपविश्यतामासन एव।

चन्दनदासः—(स्वगतम्) उपक्षिप्तमनेन दुष्टेन किमपि। (प्रकाशम्) यदार्य आज्ञापयति। (इत्युपविष्टः) (उवक्खित्तमणेण दुट्ठेन किंवि। ज अज्जो आणवेदि।)

चाणक्यः—भो श्रेष्ठिन् चन्दनदास, अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः।

---

heart), परिभवादपि = तिरस्कारादपि (even indignity), दुःखम् = क्लेशम् (pain), उत्पादयति = जनयति (gives), तस्मात् = कारणात् (so), इहैव = अत्रैव (here is), उचितायाम् = योग्यायाम् (proper), भूमौ = पृथिव्याम् (on the ground), उपविशामि (I sit down).

चाणक्य—भो श्रेष्ठिन् = भो चन्दनदास (O, merchant), मा मैवम् = अनेन प्रकारेण मा वद (do not speak so), अस्मद् विधैः = मादृशैः (our stamp), सह = सार्द्धम् (with), भवतः = तव (your), इदम् = व्यवहारः (this), संभावितमेव = युक्तमेव (indeed proper), ततः = अतः (so), उपविश्यताम् स्थानम् गृह्यताम् (take your seat), आसन एव (on the seat itself).

चन्दनदास—[स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself)], अनेन=चाणक्येण (by this), दुष्टेन (villain), किमपि = ममापराधादिकम् (something is), उपक्षिप्तम् = ज्ञातम् (started), [प्रकाशम् = (Aloud)], यदार्य = यद्भवान् निर्देशं करोतु (As noble sir, commands), (उपविष्टः = Sits down)

चाणक्य—भो श्रेष्ठिन् चन्दनदास (O merchant Chandandsa), अपि (also), च = युष्माकम् (of your), संव्यवहाराणाम् = क्रयविक्रयात्मक वाणिज्यानाम् (mercantile transaction), वृद्धिलाभः (profit), प्रचीयन्ते = वर्द्धन्ते (improve).

हिन्दी—शिष्य—(पास में जाकर) उपाध्याय, यह सेठ चन्दनदास है।

चन्दनदास—आर्य की जय हो।

चाणक्य—(अभिनय के साथ देख कर) सेठ जी, स्वागत है—यह आसन है इस पर विराजिए।

चन्दनदास—(प्रणाम करके) क्या श्रीमान् नहीं जानते हैं कि अयोग्य सम्मान तिरस्कार से भी अधिक दुःख हृदय में उत्पन्न करता है? अतः यहाँ धरती पर अपने योग्य आसन ग्रहण कर रहा हूँ।

चाणक्य—सेठ जी, नहीं ऐसा नहीं। हमारे जैसे व्यक्तियों के द्वारा आपका यह सम्मान उचित ही है। अतः आसन पर ही बैठिये।

चन्दनदास—(अपने आप) जरूर इस दुष्ट ने कुछ मेरा अपराध ताड़ लिया है (सुनाकर) आर्य की जैसी आज्ञा (ऐसा कह कर बैठ गया)।

चन्दनदासः—(स्वगतम्) अत्यादरः शङ्कनीयः। (प्रकाशम्) अथ किम्। आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या। (अत्यादरो सङ्कणीओ। अह इं अज्जस्स प्पसाएण अखण्डिता मे वणिज्जा।)

चाणक्य—न खलु चन्द्रगुप्तदोषा अतिक्रान्तपार्थिवगुणानधुना स्मारयन्ति प्रकृतीः।

चन्दनदासः—(कर्णौ पिधाय) शान्तं पापम्। शारदनिशासमुद्गतेनेव पूर्णिमाचन्द्रेण चन्द्रश्रियाधिकं नन्दन्ति प्रकृतयः। (सन्तं पावं। सारअणि-सासमुग्गएण विअ पुण्णिमाचन्देण चन्दसिरिणा अहिअं णन्दन्ति पकिदिओ)।

चाणक्य—श्रेष्ठि चन्दनदास, तुम्हारा व्यापार तो बढ़ रहा है न?

English—*Pupil*—(approaching) Sir, Here is merchant Chandandasa.

Chandandasa—Let victory your Honour, sir

Chanakya—(Seeing him with acting) Welcome O, merchant. Please be seated on this seat

Chandandasa—(Bowing) No sir, Do you not know that the respect given to an unable person is more painful to him than the direct insult? This very ground is proper for me. Let me sit here.

Chanakya—Do not say so This respect to you given by a man like me is appropriate Come and be seated in the chair

Chandandasa—(To himself) On, the villain has commenced something (aloud) As your order sir, (sits down)

Chanakya—O, merchant, you must be deserving more and more profit in your business

विमला

चन्दनदासः—[स्वगतम् = (To himself)], अत्यादरः = अतिशयसत्कारः (extreme courtesy), शङ्कनीयः = अनिष्टसूचकः (raises suspicion), [प्रकाशम् (Aloud)], अथ किम् = (why not), आर्यस्य = भवतः (of your Honour), प्रसादेन = कृपया (by favour), मे = मम (my), वाणिज्या (business), अखण्डिताः = निर्विघ्ना सन्ति (goes on uninterrupted)

चाणक्य—चन्द्रगुप्तदोषाः = मौर्यापराधाः (the lapses of Chandragupta), अतिक्रान्तपार्थिवगुणान् = अतीतनन्दप्रभृतिनृपगुणान् (the virtues of the king departed), अधुना = इदानीम् (now), न खलु (do not indeed), प्रकृतयः = प्रकृतिभिः (the subjects), स्मारयन्ति (remember)

चन्दनदासः—[कर्णौ पिधाय = श्रोत्रे आच्छाद्य Blocking his ears)], शान्तम् पापम् = अवाच्यम् (god forbid), शारदनिशासमुद्गतेनेव = शारदनिशोदितेनेव (rising in an autumnal night), पूर्णिमाचन्द्रेण = पौर्णमासीन्दुना (like

चाणक्यः—भो श्रेष्ठिन्, यद्येव प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।

चन्दनदासः—आज्ञापयतु आर्य। किं कियदस्माज्जनादिष्यत इति। (आणवेदु अज्जो किं कित्तिअ इमादो जणादो इच्छीअदि त्ति।)

चाणक्यः—भोः श्रेष्ठिन्, चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। यतो नन्दस्यैवार्थरुचेरर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति चन्द्रगुप्तस्य तु भवतामपरिक्लेश एव।

चन्दनदासः—(सहर्षम्) आर्य अनुगृहीतोस्मि। (अज्ज अणुग्गहीदोह्मि।)

चाणक्यः—भो श्रेष्ठिन्, स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवतीति ननु भवता प्रष्टव्या स्मः।

---

full moon), चन्द्रश्रियाधिकम्=अतिशयम् (greater with Chandrasri), प्रकृतय = प्रजा (subjects), नन्दन्ति = मोदन्ते (pleased with)

चाणक्य —भो श्रेष्ठिन् (O merchant), यद्येवम्=चन्द्रगुप्ते अधिकानुरागसत्वे (if so), प्रीताभ्य =प्रसन्नाभ्य (contented), प्रकृतिभ्य =प्रजाभ्य (from their subjects), प्रतिप्रियम् इच्छन्ति (expcet some benefit), राजान = नृपतय (The kings)

चन्दनदास —आर्य=मान्य (Noble sir), आज्ञापयतु = निदेश करोतु (command me), कियत्=किम्परिमाणम् (what and how much), अस्मात् जनात्=मत्त. (from this person), इष्यत इति =अर्थ्यत इति (is expected)

चाणक्य —भो श्रेष्ठिन् (O merchant), चन्द्रगुप्तराज्यमिदम्= इदम् चन्द्रगुप्तस्य राष्ट्रम् (this is the reign of Chandragupta), न नन्दराज्यम् (and not of Nanda), यत (for), नन्दस्यैव (alone Nanda), अर्थरुचे =धनाभिलाषिण (greedy of wealth), अर्थसम्बन्ध =धनसम्पर्के (the prospect of money), प्रीतिम्=हर्षम् (pleased), उत्पादयति=जनयति (gives), चन्द्रगुप्तस्य तु (to Chandragupta), भवताम्=युष्माकम् (your), अपरिक्लेश एव=दुःखाभाव एव (absence of distress)

चन्दनदास —[सहर्षम् (with joy)], आर्य=मान्य (Noble sir), अनुगृहीतोऽस्मि=कृतार्थोस्मि (highly obliged)

चाणक्य —भो श्रेष्ठिन् (O merchant), स चापरिक्लेश =क्लेशाभाव (absence of distress), कथम्=केन प्रकारेण (how that), आविर्भवति=जायते (is manifested), ननु भवता=त्वया (you), प्रष्टव्या स्म =जिज्ञासितव्या (ought to have ask)

हिन्दी—चन्दनदास—(स्वगत) अत्यधिक आदर शंका के योग्य होता है। (प्रकट) और क्या ? आर्य की कृपा से मेरा व्यापार अखण्डित है।

चाणक्य—इस समय चन्द्रगुप्त के दोष प्रजाओं को दिवगत राजा नन्द को स्मरण तो नहीं कराते हैं ?

चन्दनदासः—आज्ञापयतु आर्यः। (आणवेदु अज्जो।)

चन्दनदास—(कानों को ढक कर) पाप शान्त हो। शरद् की रात में पूनम के चाँद की तरह चन्द्रगुप्त से प्रजाएँ प्रसन्न हैं।

चाणक्य—सेठ चन्दनदास! अगर यह बात सच है तो राजा भी अपनी सन्तुष्ट प्रजा से कुछ प्रत्याशा रखते हैं।

चन्दनदास—आदेश दीजिए आचार्य! क्या और कितना इस जन से चाहा जा रहा है?

चाणक्य—सेठ जी, यह चन्द्रगुप्त का राज्य है नन्द का नहीं। क्योंकि धन की कामनावाले नन्द को ही धन की उपलब्धि प्रसन्नता उत्पन्न करती थी, चन्द्रगुप्त को तो आप लोगों के दुख का न होना ही प्रसन्नतादायक है।

चन्दनदास—(प्रसन्नतापूर्वक) आर्य, अनुगृहीत हूँ।

चाणक्य—सेठ जी, और वह दुख का न होना कैसे अभिव्यक्त होता है? यह आपके द्वारा पूछने योग्य है।

English—*Chandandasa*—(To himself) I am awe-stricken by his extreme interest even in the business. (Aloud) Why not? No disturbance may take place in my trade with the grace of your Honour.

Chanakya—Do the faults of Chandragupta not cause the meditation of the virtues of the previous king for the public now?

Chandandasa—(Taking his hands to his ears) God excuse. The matter is just reverse. Subjects of the kingdom of Chandragupta are more pleased than with the vision of full moon rising in an autumnal night?

Chanakya—If so, O merchant, the king expects a benefit in return from his pleased subordinates

Chandandasa—Order your Honour, what and how much is needed from this slave.

Chanakya—O merchant, it is the reign of Chandragupta not of Nanda, who expected wealth from his subjects for his pleasure due to his greed Only the wellwishes from men like you are enough for Chandragupta

Chandandasa—(out of joy) your Honour, I am unable to express my thanks to him for your such favour.

Chanakya—Chandandas, I was thinking about a question from you for me as to how that good will should be expressed.

विमला

व्याख्या—चन्दनदास —आर्य=मान्यः (Noble sir), आज्ञापयतु=निदेश कुरु (command).

चाणक्यः—सङ्क्षेपतो राजनि अविरुद्धाभिर्वृत्तिभिर्वर्तितव्यम् ।

चन्दनदासः—आर्य कः पुनरधन्यो राजा विरुद्ध इति आर्येणावगम्यते । (अज्ज को उण अधण्णो रण्णा विरुद्धोत्ति अज्जेण अवगच्छीआदि ।

चाणक्यः—भवानेव तावत् प्रथमम् ।

चन्दनदासः—(कर्णौ पिधाय) शान्तं पापं शान्तं पापम् । कीदृशस्तृणानामग्निना सह विरोधः । (सन्तं पाव सन्तं पावं । कीदिसो तिणाण अग्गिणा सह विरोहो ।)

चाणक्यः—अयमीदृशो विरोधः । यत्त्वमद्यापि राजापथ्यकारिणः अमात्यराक्षसस्य गृहजन स्वगृहे रक्षसि ।

चाणक्य —सङ्क्षेपतः=समासतः (Briefly), राजनि=नृपतौ (to the king), अविरुद्धाभिः=अनुकूलाभिः (not hostile), वृत्तिभिः=व्यवहारैः (in a manner), वर्तितव्यम्=स्थातव्यम् (has to conduct)

चन्दनदास —आर्य=मान्य, भवान् (Noble sir), कः (who), पुनरधन्य.=भाग्यहीन (wretch), राजा विरुद्ध. (as hostile to the king), आर्येण=पूज्येन (by your Honour sir), अवगम्यते=ज्ञायते (considered).

चाणक्य.—तावच्छब्दो वाक्यालङ्कारे, प्रथमम्=पूर्वम् (In the first), भवान एव (you yourself)

चन्दनदास.—[कर्णौ पिधाय=stopping (his ears)], शान्तम् पापम्, शान्तम् पापम्=अवाच्यमित्यर्थः (Heaven forbid such a thing), तृणानाम्=शष्पानाम् (grasses), अग्निना सह=पावकेन सह (with fire), कीदृशः=क इव (what kind of), विरोध =विद्वेषः (hostility)

चाणक्य —अयमीदृशो विरोध. (the hostility is of this kind), राजापथ्यकारिण =नृपानिष्टविधायिन. (inimically towards the king), अमात्यराक्षसस्य (of the minister Rakshasa), गृहजनम् (The family), स्वगृहम्=निजसदनम् (in your house), अभिनीय=स्थापयित्वा, अद्यापि (still to day), रक्षसि=त्रायसे (keep in)

हिन्दी—चन्दनदास—आदेश दें आर्य !

चाणक्य—सक्षेप में राजा के प्रति अनुकूल आचरणों से व्यवहार करना चाहिए ।

चन्दनदास—आर्य ऐसा कौन अभागा है ? जो आपकी दृष्टि में राजद्रोही है ।

चाणक्य—सबसे पहले तो स्वय आप ही ।

चन्दनदास—(कानों को ढक कर) पाप शान्त हो, पाप शान्त हो, तृणों (घासों) की आग से दुश्मनी कैसी ?

चाणक्य—ऐसा कि तुमने आज भी राजद्रोही आमात्य राक्षस के परिवार को अपने घर में शरण दी है ।

English—*Chandandasa*—Order please.

चन्दनदासः—आर्य अलीकमेतत्केनाप्यनभिज्ञेन आर्यस्य निवेदितम्। (अज्ज अलीअ एद केणावि अणभिण्णेण अज्जस्स णिवेदिदं।)

चाणक्यः—भोः श्रेष्ठिन्, अलमाशङ्कया। भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणाम-निच्छतामपि गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं व्रजन्ति। ततस्तत्प्रच्छादनं दोषमुत्पादयति।

चन्दनदासः—एवं नु इदम्। तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं इति। (एवं ण्णेदं। तस्सिं समये आसि अह्मघरे अमच्चरक्खसस्स घरअणो त्ति।)

चाणक्य.—पूर्वमनृतमिदानीमासीदिति परस्परविरोधिनी वचने।

चन्दनदासः—एतावदेवास्ति मे वाक्छलम्। (एत्तिअं जेव्व अत्थि मे वाआच्छलम्।)

चाणक्यः—भो श्रेष्ठिन्, चन्द्रगुप्ते राजन्यपरिग्रहश्छलानाम्। तत्समर्पय राक्षसस्य गृहजनम्। अच्छलं भवतु भवतः।

Chanakya—In brief, a subordinate should not belong to an enemy to the king.

Chandandasa—Sir, what wretch is he, who is considered as a hostile by your Honour?

Chanakya—You are the first.

Chandandasa—(Stopping his ears) Excuse God such sin. What sort of enemity the straw bear with the fire?

Chanakya—This sort of enemity that you are still hiding the family members of Minister Rakshasa in your house who is the life-foe of king Chandragupta.

विमला

व्याख्या—चन्दनदास—आर्य=मान्य (sir), अलीकम्=असत्यम् (an untruth), एतत् (this is), केनापि=कस्यचिदपि (by some one), अनभिज्ञेन=अनार्येण (ignorant of fact), आर्यस्य=मान्यस्य (your Honour), निवेदितम्=कथितम् (told)

चाणक्यः—भो श्रेष्ठिन् (O merchant), अलम्=व्यर्थम्, आशङ्कया=भयेन (away with alarm), भीताः=त्रस्ताः (Frightened), पूर्वराजपुरुषाः=पूर्वराजभृत्याः (the servants of the former king), पौराणाम्=पुरवासिनाम् (citizens), अनिच्छतामपि=अनभिलषितामपि (even unwilling), गृहेषु=सद्मसु (in the house), गृहजनम्=स्त्रीपुत्रादिकम् (The members of their household), निक्षिप्य=स्थापयित्वा (to leave), देशान्तरम्=अन्यदेशम् (other countries), व्रजन्ति=गच्छन्ति (depart for), ततस्तत्, प्रच्छादनम्=गोपनम् (The hiding of them afterwards), दोषम्=अपराधम् (guilt), उत्पादयति=जनयति (attaches)

चन्दनदास—एवं नु इदम्=भो इदमेवं युक्तम् (so is this indeed), अस्मद्गृहे=मम सद्मे (in my house), अमात्यराक्षसस्य गृहजन• (the household members of minister Rakshasa), तस्मिन् समये (at that time), आसीत् (were)

चाणक्य—पूर्वम्=प्रथमम् (At first), अनृतमिदम्=इदमसत्यम् (untruth this is), सम्प्रति=अधुना (now), आसीत्=अवर्त्तत (were), इति वचने=वाक्ये (statements), परस्परम्=अन्योन्यम् (mutually), विरोधिनी (contradictory).

चन्दनदास—ऐतावदेव=पूर्वापरविरोधरूपमेव (There is only this) मे=मम (My), वाक्छलम्=वचनव्याज• (verbal fraud), अस्ति (is)

चाणक्य—भो श्रेष्ठिन् (O merchent), चन्द्रगुप्ते=मौर्ये (Chandragupta), राजनि=शासके (being king), छलानाम्=व्याजानाम् (of fraud), अपरिग्रह•=अनवकाश (no adoption), तत् (so), समपर्य=देहि (give up), राक्षसस्य गृहजनम् (household members of Rakshasa), भवत• तव (yourself), अच्छलम्=अकापट्य (clear of dishonesty), भवतु=अस्तु (Let be)

हिन्दी—चन्दनदास—आर्य, यथार्थ स्थिति से अनभिज्ञ किसी मूर्ख ने आपको यह मिथ्या सूचना दी है।

चाणक्य—सेठ जी, आशङ्का व्यर्थ है। पूर्व राजा के व्यक्ति भयभीत होकर न चाहने वाले नागरिकों के घर अपने परिवार को रखकर दूसरे देश को चले जाते हैं। उसके बाद उनको छिपाना ही अपराध होता है।

चन्दनदास—यह बात ऐसी ही है। अमात्य राक्षस का परिवार हमारे घर में उस समय था।

चाणक्य—पहले 'असत्य' है और अब 'था' ऐसे वचन परस्पर विरोधी हैं।

चन्दनदास—बस इतना भर ही मेरा वाक्छल है।

चाणक्य—सेठ जी, चन्द्रगुप्त के राज्य में छल के लिए कोई स्थान नहीं है। राक्षस के स्त्री पुत्रादि को समर्पित कर दो फिर तुम्हारा कथन भी निश्छल हो जायगा।

English—*Chandandasa*—Wrong, your honour is infromed by a wrong source

Chanakya—O, Merchant, do not be afraid The officials of the former king start for another city having their family members even in the house of a unwilling citizen due to fear. But it is hostile when it is performed secretly.

Chandandas—you are correct sir, Really, for sometimes, the family members of minister Rakshasa got shelter in my house

Chanakya—First you said 'it wrong' and now you say 'It was' your these two types of version have created a contrast between themselves.

Chandandas—Sir, I have not committed the mistake in reality; but it is due to lack of command on words.

चन्दनदासः—आर्य, ननु विज्ञापयामि आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति। (अज्ज णं विण्णवेमिआसि अह्मघरे अमच्चरक्खस्स घरअणी त्ति।)

चाणक्यः—अथेदानीं क्व गतः ?

चन्दनदासः—न जानामि। (ण जाणामि)

चाणक्यः—(स्मितं कृत्वा) कथं न ज्ञायते नाम। भोः श्रेष्ठिन्, शिरसि भयमतिदूरे तत्प्रतीकारः।

Chanakya—Such guilts are not tolarable in the reign of Chandragupta; O, merchant Be out of hostility having send the family of Rakshasa under my subjugation.

निमला

व्याख्या—चन्दनदास —आर्य=मान्य (Noble sir), विज्ञापयामि=निवेदयामि (I say), आसीत् अस्मद्गृहे=मम सद्मनि आसीत् (were in my house), तस्मिन् समये (at that time) अमात्यराक्षसस्य गृहजनः (The household members of minister Rakshasa)

चाणक्यः—अथ (well), इदानीम्=अधुना (now), क्व=कुत्र (whither), गतः=यातः (gone)

चन्दनदासः—न जानामि (I do not know)

चाणक्य—[स्मितं कृत्वा=(smiling)], कथम्=केन प्रकारेण (why), न ज्ञायते-नाम=न ज्ञायतेत्यर्थः (not known), भो श्रेष्ठिन् (O merchant), शिरसि=मस्तके (overhead), भयम्=कष्टम् (the danger), तत्प्रतीकारः=निवृत्त्युपायः (remedy), अतिदूरे (is very far)

चन्दनदास—[स्वगतम्= To himself]

हिन्दी—चन्दनदास—आर्य निवेदन तो कर रहा हूँ—अमात्य राक्षस का परिवार मेरे घर में था।

चाणक्य—और अब कहाँ चला गया ?

चन्दनदास—नहीं जानता।

चाणक्य—(मुस्कराकर) क्यों नहीं जानते हो ? हे श्रेष्ठिन्, संकट शिर पर है और उसको दूर करने का उपाय दूर है।

English—*Chandandasa*—Sir, have I not stated that previously the family members of Minister Rakshasa were in my house (but not now).

Chanakya—Where have they gone now ?

Chandandasa—I do not know.

Chanakya—[having a false smile] How do you not know ? O merchant, the danger stands over your head and the remedy is very far.

अन्यच्च नन्दमिव विष्णुगुप्तः···[१]

(इत्यर्धोक्ते लज्जां नाटयित्वा) चन्द्रगुप्तममात्यराक्षसः समुच्छेत्स्यतीति मामैव मस्थाः। पश्य—

विक्रान्तैर्नयशालिभिः सुसचिवैः श्रीर्वक्रनासादिभिर्-
नन्दे जीवति या तदा न गमिता स्थैर्यं चलन्ती मुहुः।
तामेकत्वमुपागतां द्युतिमिव प्रह्लादयन्तीं जगत्
कश्चन्द्रादिव चन्द्रगुप्तनृपतेः कर्तुं व्यवस्येत् पृथक् ॥ २२ ॥

विमला

व्याख्या—अन्यच्च=अपरमपि (Besides as), नन्दमिव (like Nanda) विष्णुगुप्तः (Vishnugupta), [इत्यर्धोक्ते लज्जां नाटयित्वा (blushing at this half utterance)], चन्द्रगुप्तम् (to Chandragupta), अमात्यराक्षसः (Minister Rakshasa), समुच्छेत्स्यति=समुन्मूलयिष्यति (will extirpate), मामैवं मस्थाः= मेवं जानीहि (do not think so), पश्य=अवलोकय (see)—

अन्वयः—तदा, नन्दे, जीवति, मुहुः, चलन्ती, या, श्रीः, विक्रान्तैः, नयशालिभिः, वक्रनासादिभिः, सुसचिवैः, स्थैर्यम्, न, गमिता। द्युतिम्, इव, एकत्वम्, उपागताम्, जगत्, प्रह्लादयन्तीम्, ताम्, चन्द्रात्, इव, चन्द्रगुप्तनृपतेः, पृथक्, कर्तुम्, कः, व्यवस्येत्॥ २२ ॥

व्याख्या—तदा=तस्मिन् समये (at that time) नन्दे जीवति=नन्दराजनि- विद्यमाने (when Nanda lived), मुहुः=असकृत् (often), चलन्ती=चलायमाना (unsteady), या श्रीः=या राजलक्ष्मीः (Sovereignty), विक्रान्तैः=वीरैः (brave), नयशालिभिः=नीतिनिपुणैः (skilled in politics), वक्राः=कुटिला नासा=नासिका-

---

१. अत्र क्वचिदधिक पाठ —

चन्दनदासः—(स्वगतम्)—

उपरि घनं घनरटितं दूरे दयिता किमेतदापतितम्।
हिमवति दिव्यौषधयः शीर्षे सर्पः समाविष्टः॥
(उवरि घण घणरडिअं दूरं दइया किदमेदमावडिअम्।
हिमवदि दिव्वोसहिओ सीसे सप्पो समाविट्ठो॥

चाणक्यः—चन्द्रगुप्तममात्यराक्षसः समुच्छेत्स्यतीति मेव मस्थाः।

पश्य—

चन्दनदास—(अपने आप) सिर पर सर्प सवार हो और सञ्जीवनीबूटी हिमालय पर्वत पर हो, ऊपर मेघ गरज रहा हो और प्रिया कोसों दूर हो। (ठीक इसी प्रकार मेरी दुर्दशा तो अब आ ही गयी)।

चाणक्य—वैसे ही अमात्य राक्षस चन्द्रगुप्त को भी सत्यानाश में मिला देगा। भूल कर भी ऐसा न समझना सेठ। देखो—

अपि च—

आस्वादितद्विरदशोणितशोणशोभाम् (इति पूर्वोक्तं पठति)

यस्य तैः वक्रनासादिभिः=वक्रनासप्रमुखैः (Vakranasa and others), सुसचिवैः=सुमन्त्रिभिः (eminent minister), स्थैर्यम्=स्थिरताम् (be firm), न गमिता=न प्रापिता (could not be made), द्युतिम्=कान्तिम् (delight), इव=यथा (like), एकत्वम्=अभिन्नताम् (consolidated), उपागताम्=प्राप्ताम्। जगतः=संसारम् (to the world), प्रह्लादयन्तीम्=आनन्दयन्तीम् (delighted), ताम्=राज्यश्रियम् (Sovereignty), चन्द्रात्=चन्द्रमसः (From the moon), इव=यथा (like), चन्द्रगुप्तनृपतेः=चन्द्रगुप्तनृपतेः (From the king Chandragupta), पृथक्=भिन्नाम् (to separate), कर्तुम्=विधातुम्। कः=जनः (who), व्यवस्येत्=प्रयतेत् (can attempt) ॥ २२ ॥

हिन्दी—और फिर दूसरी बात यह भी है, जैसे नन्द को विष्णुगुप्त ने समूल ...(इतना आधा कहने पर लज्जा का अभिनय करके) चन्द्रगुप्त को अमात्य राक्षस समूल विनष्ट कर देगा—ऐसा मत समझो। देखो—

उस समय राजा नन्द के जीवित रहने पर बार-बार चञ्चल रहने वाली राजलक्ष्मी को वीर एवं नीतिनिपुण वक्रनास प्रभृति श्रेष्ठ मन्त्रियों के द्वारा भी स्थिरता प्राप्त नहीं कराई जा सकी, चाँदनी की तरह अभिन्नता को प्राप्त हुई संसार को आनन्दविभोर करती हुई, उस राजलक्ष्मी को चन्द्र की तरह चन्द्रगुप्त से अलग करने का कौन साहस कर सकता है ॥ २२ ॥

English—*Chanakya*—Besides, as Nanda is annihilated by Vishnugupta (showing his bashfulness) forget it that Rakshasa will exterminate Chandragupta. Remember—

Who is to separate Chandragupta from the Sovereignty. like moon light from the moon, Who wants to bind the prosperity of kingdom in unity and delight for the subjects, which was disturbed under the rule of king Nanda inspite of the presence of several courageous, politics experts and eminent ministers, such as Vakranasa and others. 22.

टिप्पणी-'विक्रान्तैर्नयशालिभिः' इत्यादि श्लोक में ज्योत्स्नावाचक द्युति एवं चन्द्र शब्द का अभेदवाचक श्री और चन्द्रगुप्त शब्दरूप सामान्य धर्म का कथन आह्लादकत्वरूप औपम्यवाचक इव शब्द के उपादान से यहाँ श्रौता पूर्णोपमालङ्कार हुआ। साहित्यदर्पण में इसका लक्षण है—

'सा पूर्णा यदि सामान्यधर्म औपम्यवाचि च। उपमेयं चोपमानं भवेद्वाच्यमियं पुनः ॥

श्रौती यथेव वा शब्दा 'इत्यादि। इसमें गौडी रीति है, ओजगुण है, वीर रस है तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है। छन्द का लक्षण है—सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ॥ २२ ॥

विमला

व्याख्या—अपि च=अपरमपि (Moreover), आस्वादितद्विरद-इति पूर्वोक्त पठति। (Who desires to snatch away & 1/8 Sloka).

चन्दनदास —(स्वगतम्) फलेन सवादितमस्य विकत्थितम् । (फलेण सवादिद से विकत्थिदम्)

(नेपथ्ये कलकल)

चाणक्य —शार्ङ्गरव, ज्ञायता किमेतत् ।

शिष्य —तथा । (इति निष्क्रम्य पुन प्रविश्य) उपाध्याय, एष राज्ञश्चन्द्रगुप्त स्याज्ञया राजापथ्यकारी क्षपणको जीवसिद्धि सनिकार नगरान्निर्वास्यते ।

चाणक्य —क्षपणक अहह । अथवा अनुभव राजापथ्यकारित्वस्य फलम् । भो श्रेष्ठिन् चन्दनदास एवमयमपथ्यकारिषु तीक्ष्णदण्डो राजा । तत्क्रियता पथ्य सुहृद्वच । समर्प्यता राक्षसगृहजन । अनुभूयता चिर विचित्रो राजप्रसाद ।

चन्दनदास —नास्ति मे गेहे अमात्यगृहजन । (णत्थि मे गेहे अमच्च घरअणो ।)

चन्दनदास —[स्वगतम् (to himself)], फलेन=कार्येण (with result), सम्पादितम्=सदृशम् (has been made consistent) अस्य विकत्थितम्=अस्यात्म श्लाघा (His bragging)

[नेपथ्ये कलकल =वेषरचनालये लोकाना रव (A confused noise in the dressing room)]

चाणक्य —शार्ङ्गरव (Sharngrava), ज्ञायताम्=बुध्यताम् (ascertain), किमेतत्=किं हेतुकोऽय जनरव इति (what noise it is)

शिष्य —तथा (As you command) [इति निष्क्रम्य पुन प्रविश्य (Exit and re-enter), उपाध्याय=आचार्य (Preceptor) एष =असौ (It is), राज्ञ = भूपते (of his majesty), चन्द्रगुप्तस्य=वृषलस्य (Chandragupta), आज्ञया= आदेशेन (by the command), राजापथ्यकारी=राजद्रोही (a traitor to the king), क्षपणक =बौद्धसन्यासी (Baudh mendicant) जीवसिद्धि =एतदाख्य (Jivasidhi) सनिकारम्=सतिरस्कारम् (with disgrace) नगरात्=पुरात् (From the city), निर्वास्यते=निष्कास्यते (is being expelled)

चाणक्य —क्षपणक =मुण्डी (The mendicant) अहह=कारुण्याविष्कारकशब्द (Alas) अथवा=वा (or) राजापथ्यकारित्वस्य-राजद्रोहविधायित्वस्य (being treacherous to the king), फलम्=परिणामम् (result) अनुभवतु=भुनक्तु (reap), भो श्रेष्ठिन् चन्दनदास (O merchant Chandandasa) एवम्=अनेन प्रकारेण (in this way), अयम्=एष (is this) राजा=नृपति (The king), अपथ्यकारिषु=राजविद्रोहिषु (upon traitors), तीक्ष्ण =तीव्र , दण्ड =शासन (a grim punisher), तत्=तस्माद्धेतो (Thus) पथ्य=हितम् (the whole some) सुहृद्वच =मित्रकथनम् (advice of friend), क्रियताम्=विधीयताम् (act up), राक्षसगृहजनम्=राक्षसकलत्रादिकम् (the household members of Rakshasa), समर्प्यताम्=प्रदायचीक्रियताम् (surrender), विचित्र =बहु-

(नेपथ्ये पुनः कलकलः)

चाणक्यः—शार्ङ्गरव, ज्ञायतां किमेतत् ।

शिष्यः—तथा । (इति निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य) उपाध्याय, अयमपि राजापथ्यकारी्येव कायस्थः शकटदासः शूलमारोपयितुं नीयते ।

विध (manifold), राजप्रसाद = नृपानुराग (royal favour), चिरम् = बहुकालम् (for a long time), अनुभूयताम् (enjoy)

चन्दनदास—मे गृहे = मम सदने (in my house), अमात्यगृहजन = राक्षस कलत्र (The family of minister Rakshasa), नास्ति (is not)

हिन्दी—चन्दनदास—(अपने आप) सफलता ने इसकी गर्वोक्ति को चरितार्थ कर दिखाया है ।

(नेपथ्य में शोर-गुल)

चाणक्य—शार्ङ्गरव, ज्ञात करो यह क्या है ?

शिष्य—जैसी आज्ञा (निकलकर और फिर प्रवेश करके) आचार्य यह राजा चन्द्रगुप्त की आज्ञा से राजद्रोही सन्यासी जीवसिद्धि तिरस्कारपूर्वक नगर से बाहर निकाला जा रहा है ।

चाणक्य—क्षपणक, अहह । अथवा, राजद्रोह का फल भोगो । हे सेठ चन्दनदास, राजद्रोहियों को राजा इस प्रकार ताड़ना दण्ड देने वाला है । अतः मित्र की हितकर बातें मान लो और बहुत दिनों तक अद्भुत राजकृपा का अनुभव करो ।

चन्दनदास—मेरे घर में अमात्य राक्षस का परिवार नहीं है ।

English—*Chandandasa*—(To himself) His success has accomplished his boasting

(A noise behind the stage)

Chanakya—O Sharngrava, see what is the matter ?

Pupil—As your command. (Exit and coming back) Sir, by the order of His Highness Chandragupta the hostile Baudh mendicant Jivasidhi is being truned out of the city very ignominiously.

Chanakya—Such a deed with the Baudh Mendicant ! But seemas to be correct get the result of deceit. O merchant, see the hardness of our king with the traitors Act up according to a friend's advice. Surrender the family of minister Rakshasa and enjoy the royal favours for a long time

Chandandasa—The family of Minister Rakshasa is not in my house.

विमला

[नेपथ्ये पुनः कलकलः (Again a noise behind the stage)]

व्याख्या—चाणक्य—शार्ङ्गरव (Sharngrava) ज्ञायताम् बुद्ध्यताम् (See), किमेतत् (what is this)

चाणक्यः—स्वकर्मफलमनुभवतु। भोः श्रेष्ठिन् एवमयं राजापथ्यकारिषु तीक्ष्णदण्डो राजा न मर्षयिष्यति राक्षसकलत्रप्रच्छादनं भवतः। तद्रक्ष परकलत्रेणात्मनः कलत्रं जीवितं च।

चन्दनदासः—आर्य किं मे भयं दर्शयसि सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि किं पुनरसन्तम्। (अज्ज किं मे भयं दावेसि। सन्तं वि गेहे अमच्चरक्खसस्स घरअणं ण समप्पेमि किं उण असन्तं।)

चाणक्यः—चन्दनदास, एष ते निश्चयः ?

चन्दनदासः—बाढम्। एष मे निश्चयः। (बाढं एसो मे णिच्चओ।)

शिष्यः—तथा (verywell) [इति निष्क्रम्य पुनः प्रविशति: (going out and coming back)], उपाध्याय = आचार्य (Preceptor), अयमपि (this is also), राजापथ्यकारीव = राजद्रोही एव (another traitor), कायस्थ. शकटदासः (Kayastha Shakatdasa), शूलम् = लौहनिर्मितमायुधम् (stake), आरोपयितुम्, नीयते = तन्निकटं प्राप्यते (being taken away for being impaled)

चाणक्य —स्वकर्मफलम् = निजकार्यपरिणामम् (the conseguence of his deeds) अनुभवतु = प्राप्नोतु (let enjoy), भो श्रेष्ठिन् (O, mrechant), एवमयं राजा- = अनेन प्रकारेण एषः (thus is this), राजापथ्यकारिषु = राजद्रोहिषु (upon traitors), तीक्ष्णदण्डोः = उग्रशासन. (a grim punisher), न = नहि (Not), मर्षयिष्यति = सहिष्ये (will brook), भवतः = तव (your), राक्षसेति = राक्षस्य (Rakshasa's), कलत्रम् = भार्याम् (wife), प्रच्छादनम् = गोपनम् (concealment), तत् = तस्मात्कारणात् (thus), रक्ष = पाहि (save), परकलत्रेण = राक्षसगृहजनसमर्पणेन (by delivering up another's wife), आत्मनः = स्वस्य (your own), कलत्र = स्त्री (wife), च = पुनः (and) जीवितम् (Life),

चन्दनदास.—आर्य मान्य (sir), मे = मम (to me), भयम् = त्रासम् (intimidated), दर्शयसि किम्, अवलोकयसि किम् (do you point out), गेहे = सदने = (In my house), अमात्यराक्षसस्य गृहजनम् (the family of minister Rakshasa), असन्तमपि = अवर्त्तमानमपि (even if existing), न समर्पयामि = न प्रदास्यामि (would not give up), किम्पुनरसन्तम् = अविद्यमानम् (what to say when non-existent).

चाणक्य.—एष. = असौ (this), ते = तव (your), निश्चयः = प्रतिज्ञा (resolve), Chandandas.

चन्दनदास —बाढम् = स्वीकारार्थकमव्ययम् (Certainly), एष. = असौ (This is), धीरः = दृढ. (Firm), मे = मम (my), निश्चय. = प्रतिज्ञा (resolve)

हिन्दी—चाणक्य—शार्ङ्गरव बात करो अब क्या है ?

शिष्य—जैसी आज्ञा (निकलकर फिर प्रवेश कर) आर्य यह भी राजद्रोही कायस्थ शकटदास राजाज्ञा से शूली पर चढ़ाने के लिये ले जाया जा रहा है।

चाणक्यः—(स्वगतम्) साधु चन्दनदास साधु ।

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः ।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना ॥ २३ ॥

(प्रकाशम्) चन्दनदास, एष ते निश्चयः ।

चन्दनदासः—बाढम् । (बाढम्)

चाणक्य—अपने किए कर्मों का फल भोग। हे सेठजी, इस प्रकार राजद्रोहियों के विषय में कठोर दण्ड देने वाला यह राजा तुम्हारे द्वारा राक्षस की पत्नी का छिपाया जाना सहन नहीं करेगा। अतः दूसरे की स्त्री को सौंप कर अपनी स्त्री और अपने जीवन की रक्षा करो।

चन्दनदास—आर्य, क्या मुझे भय दिखला रहे हैं। प्रथम तो घर में अमात्य राक्षस का परिवार है नहीं, अगर मेरे घर में होता भी तो नहीं सौंपता।

चाणक्य—चन्दनदास, क्या यही तुम्हारा निश्चय है?

चन्दनदास—हाँ महाराज, यह हमारा दृढ़ निश्चय है।

English—*Chanakya*—Sharograva, See what is again ?

Pupil—As your order sir, [Exit and comming back] Sir, there is another traitor—Kayastha Shakatdas by name—who is being carried to be executed.

Chanakya—Let him enjoy the result of his own deeds. O, merchant, it is the hard punishment of our king for the traitor, Do not hope for the forgiveness concealing the family of Rakshasa. If you want good for your wife and life; reach the wife of Rakshasa to the rule.

Chandandasa—Sir, do you threat me in such a manner ? I would not have delivered them to you, even if they would have been present, what can I say when they are not present.

Chanakya—Chandandas, is it your resolve ?

Chandandasa—Yes, it is my firm resolve.

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[स्वगतम् (to himself)] साधु चन्दनदास साधु (bravo Chandandas bravo)

अन्वयः—परसंवेदने, अर्थलाभेषु, सुलभेषु, इदानीम्, दुष्करम्, शिविना, विना, कः, जनः, कुर्यात् ॥ २३ ॥

व्याख्या—परसंवेदने = परकीय समर्पणे (another's distress), अर्थलाभेषु = अर्थस्य धनस्य प्रयोजनस्य वा लाभाः = प्राप्तयः तेषु (accessible gifts of wealth) सुलभेषु = सुलभप्राप्येषु सत्सु (easily), इदानीम् = सम्प्रति (in this time), इदम् = एवम् (this), दुष्करम् = दुःखेन करणीयम् (so hard to be done), शिविना = तन्नामधेयेन नरदेशाधिपेन विना (King Shivi no longer existing) कः = त्वदन्यः कः जनः, कुर्यात् = सम्पादयेत् (who can do this) ॥ २३ ॥

चाणक्यः—(सक्रोधम्) दुरात्मन्, दुष्टवणिक्, अनुभूयता तर्हि नरपतिक्रोधः।

चन्दनदासः—सज्जोऽस्मि। अनुतिष्ठतु आर्य, आत्मनोऽधिकारसदृशम्। (सज्जोह्मि। अणुचिट्ठदु अज्जो अत्तणो अहिआरसरिसं।)

चाणक्यः—शार्ङ्गरव उच्यतामस्मद्वचनात्कालपाशिको दण्डपाशिकश्च। शीघ्रमय दुष्टवणिक् निगृह्यताम्। अथवा तिष्ठतु। उच्यता दुर्गपालो विजयपालः गृहीतगृहसारमेन सपुत्रकलत्र सयम्य तावद्रक्ष यावन्मया वृषलाय कथ्यते। वृषल एवास्य प्राणहरं दण्डमाज्ञापयिष्यति।

[प्रकाशम्=(Aloud)], चन्दनदास (Chandandas), एष (this), ते=तव (your), निश्चय =प्रतिज्ञा (resolve)

चन्दनदास —बाढम्=निश्चयम् (Undoubtedly),

हिन्दी—चाणक्य—(अपने आप) शाबास चन्दनदास, शाबास।

दूसरे की वस्तु को समर्पित कर देने पर, आसानी से अर्थलाभ होने पर भी, इस समय इस कठिन कार्य को राजा शिवि के बिना कौन कर सकेगा ? ॥ २४ ॥

[प्रकट] चन्दनदास क्या, यही तुम्हारा निश्चय है ?

चन्दनदास—हाँ।

English—*Chanakya*—(To himself) Bravo Chandandas, bravo. When the acquisitions of money are easy by delivering up what belongs to another, who except the king Shivi can do this hard work now 23

[Aloud] Chandandas is this your resolve

Chandandas—undoubtedly

टिप्पणी—इस श्लोक में कृतयुग में राजा शिवि ने ऐसा किया था एवं कलियुग में तुमने ऐसा किया-यहाँ उपमानभूत शिवि की अपेक्षा उपमेय चन्दनदास के आधिक्य वर्णन से व्यतिरेकालंकार है। किन्हीं की दृष्टि में प्रशस्त कीर्तिशाली महराज शिबिचरित का प्रस्तुताङ्कत्व के कारण उदात्तालङ्कार प्रसादगुण, वैदर्भी रीति एवं अनुष्टुप् छन्द है।

निमला

चाणक्य —[सक्रोधम्=सक्रोपम् (in anger)], दुरात्मन्=क्रूरहृदय (vilehearted), दुष्टवणिक्=क्रूरवैश्य (wicked merchant), तिष्ठ=स्थियताम् (wait) तर्हि=तदा (then), नरपतिक्रोध =नृपामर्ष (the king's wrath), अनुभूयताम्=उपलभ्यताम् (feel)

चन्दनदास —सज्जोस्मि=उद्यतोऽस्मि (I am ready), आर्य =मान्य (Noble sir), आत्मनोऽधिकारसदृशम्=स्वाधिकारानुरूपम् (as befits his post), अनुतिष्ठतु=विदधातु (Let do)

चाणक्य —शार्ङ्गरव (O Sharngrava), अस्मद्वचनात्=मम कथनानुसारेण (in my words), कालपाशिको दण्डपाशिकश्च=दूतद्वयम् (Kalpasika and Dandapasika), उच्यताम्=अभिधीयताम् (tell), शीघ्रम्=द्रुतम् (quick),

शिष्यः—यदाज्ञापयत्युपाध्यायः। श्रेष्ठिन्, इत इतः।

चन्दनदासः—आर्य अयमागच्छामि। (स्वगतम्) दिष्ट्या मित्रकार्येण मे विनाशो न पुरुषदोषेण। (अज्ज अअमाअच्छामि। दिट्ठिआ मित्तकज्जेण मे विणासो ण पुरिसदोसेण।)

(परिक्रम्य शिष्येण सह निष्क्रान्तः)

चाणक्यः—(सहर्षम्) हन्त लब्ध इदानीं राक्षसः। कुतः ?

अयम् = एषः (this), दुष्टवणिक् = दुष्टवैश्यः (wicked merchant), निगृह्यताम् = दण्ड्यताम् (be punished), अथवा = वा (or), तिष्ठतु (stay), दुर्गपालको विजयपालकः = उभौ दूतौ (both the keepers), उच्यताम् = कथ्यताम् (tell), गृहीतगृहसारम्=आयत्तीकृतसदनधनादिरूपम् (seized the valuabes in his house), एनम् this one), सपुत्रकलत्रम् = पत्नीपुत्रसहितम् (with his wife and the son), संयम्य = बद्ध्वा (bound), तावत् = तावत्कालम् (until), रक्ष = स्थापय (keep), यावन्मया (by me), वृषलाय कथ्यते = मौर्याय निवेद्यते (report is made to Vrishala), वृषल एव = मौर्य एव (Chandragupta himself) अस्य= चन्दनदासस्य (Chandandasa's), प्राणहरम् = जीवनाशकम् (the sentence of death), दण्डम् = निग्रहम् (punishment), आज्ञापयिष्यति = विधास्यति (will pass).

शिष्यः—उपाध्यायः = आचार्यः (preceptor), यदाज्ञापयति (as command), श्रेष्ठिन् (O merchant), इत इतः (This way O merchant this way).

चन्दनदासः—आर्य = मान्य (Noble sir), अयमागच्छामि (I am coming), [स्वगतम् (to himself)], दिष्ट्या = भाग्येन (luckily) मे विनाशः = ममापायः (my death), मित्रकार्येण = सुहृत्प्रयोजनेन (in friend's cause), न = नहि (not), पुरुषदोषेण (through human failings), [परिक्रम्य शिष्येण सह निष्क्रान्तः (Exit with pupil)]

चाणक्यः—[सहर्षम्=सप्रमुदम् (with goy)], हन्त (Ha), लब्धः = प्राप्त. (is secured), राक्षसः (Rakshasa), इदानीम = साम्प्रतम् (now), कुतः How:—

हिन्दी—चाणक्य—(क्रोधपूर्वक क्रूरहृदय, दुष्टवणिक् राजकोप का फल भोगो। चन्दनदास—तैयार हूँ। श्रीमान् अपने अधिकार के अनुरूप कार्य करें।

चाणक्य—शार्ङ्गरव, मेरा ओर से कालपाशिक एवं दण्डपाशिक से कहो—शीघ्र ही इस दुष्ट वणिक् को पकड़ लो अथवा—दुर्गपाल एवं विजयपाल से कहो कि जब तक मेरे कहने पर इसे राजा के द्वारा प्राणदण्ड न दिया जाय तब तक इसकी सारी सम्पत्ति छीन कर, इसे पत्नी और पुत्र के साथ बाँधकर रखा जाय।

शिष्य—जैसी आज्ञा आपकी आचार्य ! इधर से आइए सेठ जी, इधर से।

चन्दनदास—आर्य मैं आ रहा हूँ। (स्वगत) सौभाग्य से मित्र कार्य से मेरा विनाश हो रहा है न कि अपने दोष से।

त्यजत्यन् प्रियवत्प्रणायथा तस्यायमापदि ।
तथैवास्यापदि प्राणा नूनं तस्यापि न प्रिया ॥ २४ ॥

(घूम कर शिष्य के साथ निकल गया)

चाणक्य—(प्रसन्नता से) अब राक्षस पकड़ में आ गया । क्योंकि—

English—*Chanakya*—(In anger) oh villain wicked merchant then feel the wrath of the king

Chandandas—I am ready Let your Honour do as befits your post

Chanakya—Sharngrava, say in my words to Kalpasika and Dandpasika Let this wicked merchamt be punished immediately Or wait Let Vijayapal the jail superintendent be told-keep this one with his wife and son bound the valuables in his houses seized until report is made by me to Chandragupta, who himsalf will pass the sentence of death upon him

Pupil—As preceptor command, O merchant this way

Chandandas—I am coming sir, (to himself) Fortunately my death *would be in friend s cause and not for any fault of mine, common* to man [Exit with pupil]

Chanakya—(With joy), Ha, Now Rakshasa is in my hand For

विमला

अन्वय —यथा, तस्य आपदि, अयम्, प्राणान्, अप्रियवत्, त्यजति, तथा एव, अस्य, आपदि, तस्य, अपि, प्राणा , नूनम्, न, प्रिया ॥ २४ ॥

व्याख्या—यथा = येन प्रकारेण (Just as), तस्य = राक्षसस्य (Rakshasa s), आपदि = विपत्तौ (in distress) अयम् = चन्दनदास (this) प्राणान् = असून् (life), अप्रियवत् = अप्रियवस्तु इव (as a hated thing), त्यजति = जहाति (sacrifices), तथा = तेन रूपेण (in the very same way), एव = हि (indeed), अस्य = चन्दनदासस्य (chandandsa s), आपदि = विपत्तौ (in calamity), तस्य = राक्षसस्यापि (Rakshasa's too), प्राणा = असव (life), नूनम् = अवश्यमेव (surely) न प्रिया = न रक्षणीया भविष्यन्ति (will not be agreeable) ॥ २४ ॥

हिन्दी—जिस प्रकार उस राक्षस की विपत्ति में यह अपने प्राणों को अप्रिय वस्तु की तरह त्याग रहा है निश्चय ही इसकी विपत्ति में उसको भी अपने प्राण अप्रिय होंगे २५ ॥

English—Just as this one sacrifices his life as a hated thing, in this very same way, when he is in calamity, surely life will not be agreeable to him also 24

टिप्पणी—इस श्लोक में जैसे चन्दनदास राक्षसकलत्र के रक्षणार्थ प्राणत्याग करने के लिए समुद्यत है उसी प्रकार चन्दनदास के उद्धार के लिए निश्चय ही राक्षस भी अपने प्राणों को समर्पित

(नेपथ्ये कलकलः)

चाणक्यः—शार्ङ्गरव, शार्ङ्गरव !

(प्रविश्य)

शिष्यः—उपाध्याय, आज्ञापय ।

चाणक्यः—किमेष कलकलः ।

(निष्क्रम्य, विभाव्य पुनः प्रविश्य)

शिष्यः—उपाध्याय एष खलु शकटदासं वध्यमानं वध्यभूमेरादाय समपक्रान्तः सिद्धार्थकः ।

चाणक्यः—(स्वगतम्) साधु सिद्धार्थक, कृतः कार्यारम्भः । (प्रकाशम्) प्रसह्य किमपक्रान्तः, (सक्रोधम्) वत्स उच्यतां भागुरायणो यथा त्वरितं समादयेति ।

(निष्क्रम्य प्रविश्य च)

शिष्यः—(सविषादम्) उपाध्याय, हा धिक् कष्टमपक्रान्तो भागुरायणोऽपि ।

करना, ऐसा भाव रहने के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार है। क्योंकि यहाँ उच्चकोटि के चरित्र की सम्भावना है और सम्भावना निश्चय और संदेह की स्थिति है। इस प्रकार यहाँ वञ्चन और उन्नान की सम्भावना के कारण उत्प्रेक्षालङ्कार है। यथा-सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परेण यत्' (का० प्र०)

इसी प्रकार यह उसकी तरह और वह इसकी तरह प्राणत्याग करेगा-ऐसा कहने से परस्पर उपमानोपमेयभाव रहने के कारण उपमा अलंकार भी है। जैसे—'उभयोः समानमेकं गुणादिसिद्धं भवेद्यथैकत्र' अर्थे अन्यत्र तथा नाष्यते सोऽन्या—काव्यालङ्कार। इसमें वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण एवं अनुष्टुप् छन्द है।

निमला

[नेपथ्ये कलकलः = (Noise behind the stage)]

व्याख्या—चाणक्य—शार्ङ्गरव, शार्ङ्गरव = वत्स (O Sharngrava, Sharngrava. [प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा (Entering)]

शिष्य —उपाध्याय = आचार्य (Preceptor), आज्ञापय = आदेशं देहि (Let command).

चाणक्यः—किमेष कलकलः (What noise is this)

शिष्य—[विभाव्य = किंचिद् विचार्य (noticing)], उपाध्याय = आचार्य (Preceptor), एष = अयम् (this), सिद्धार्थकः (Sidharthaka), वध्यभूमेः = प्राणदण्डस्थानात् (from the place of execution), वध्यमानम् = सयम्यमानम् (was to be killed), शकटदासम् = तन्नामानम् कायस्थम् (to Sakatdasa), आदाय = गृहीत्वा, अपक्रान्त = पलायितः (has escaped).

चाणक्य—[स्वगतम् (To himself)], साधु सिद्धार्थक (Well done Sidharthaka), कार्यारम्भः = अभ्यादानम् कृतः विहितः (the beginning of the

चाणक्य —(स्वगतम्) व्रजतु कार्यसिद्धये । (प्रकाशम्, सक्रोधमिव) वत्स,

---

work is made), [प्रकाशम् (Aloud)], प्रसह्य = हठात् (by force), किमपक्रान्त = किम् पलायित (what has he gone away), [सक्रोधम् = सकोपम् (in anger)], वत्स=पुत्र (child), उच्यताम् = अभिधीयताम् (say), भागुरायणम्=तन्नामकदूतम् (to Bhagurayan), यथा त्वरितम् = शीघ्रम् (should immediately), सभावय इति = निगृह्य आनय इति (overtake him)

[निष्क्रम्य (having gone out),च = पुन (and) प्रविश्य = (reentering)]

शिष्य —[सविषादम् = सखेदम् (sorrowfully)], उपाध्याय=आचार्य (Preceptor), हा धिक् कष्टम् = हा दु खम् (Alas, what a misfortune), भागुरायणोऽपि (Bhagurayan too), अपक्रान्त = पलायित (has run away)

हिन्दी— (नेपथ्य में कोलाहल)

[चाणक्य—शार्ङ्गरव, ओ शार्ङ्गरव । (प्रवेश करके)

शिष्य—गुरुदेव, आज्ञा दीजिए ।

चाणक्य—यह कैसा कोलाहल है ?

शिष्य—(निकल कर पुन प्रवेश कर) आचार्य, यह सिद्धार्थक वधभूमि से वध किये जाते हुए शकटदास को लेकर भाग गया ।

चाणक्य—(अपने आप) सिद्धार्थक ने अपना काम आरम्भ कर दिया है । (प्रकट रूप में) क्या, अचानक लेकर भाग गया ? (क्रोध के साथ) वत्स, भागुरायण से जाकर कहो—शीघ्रातिशीघ्र उसे पकडने का प्रबन्ध करे ।

(निकल कर पुन प्रवेश कर)

शिष्य—(खेद के साथ) आचार्य, हाय बडा दु ख है, भागुरायण भी भाग गया ।

(noise behind the scenes)

English—*Chanakya*—Sharngrava, O Sharngrava (entering)

Pupil—Let Preceptor command

Chanakya—What noise is this ?

Pupil—(Noticing) Preceptor, here has Sidharthaka escaped from the place of execution having carried with him Sakatdasa who was going to be killed

Chanakya – (To himself)Well done, Sidharthaka the beginning of the work is made (Aloud) what has he gone away by force ? (angrily) child, tell Bhagurayana that he should overtake him immediately

Pupil—(Going out and reentering) *Alas, sir what a misfortune !* Bhagurayan also has run away.

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[स्वगतम् (To himself)], कार्यसिद्धये = कृत्यसम्पादनाय (for success in the work), व्रजतु = गच्छतु (Let him go), [प्रकाशम् =

उच्यन्तामस्मद्वचनाद् भद्रभट-पुरुषदत्त-डिङ्गरात-बलगुप्त-राजसेन-रोहिताक्ष-विजयवर्माणः शीघ्रमनुसृत्य गृह्यतां दुरात्मा भागुरायण इति।

शिष्यः—तथा। (इति निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य सविषादम्) हा धिक्, कष्टं सर्वमेव तन्त्रमाकुलीभूतम्। तेऽपि खलु भद्रभटप्रमुखाः प्रथमतरमुषस्ये-वापक्रान्ताः।

चाणक्यः—(स्वगतम्) सर्वथैव शिवाः पन्थानः सन्तु। (प्रकाशम्) वत्स, अलं विषादेन। पश्य—

सुस्पष्टम् (Aloud), सक्रोधमिव=सकोपमिव (as if in anger)], वत्स=पुत्र (child), अस्मद्वचनात्=मद्वाक्यानुसारेण (in my words), उच्यन्ताम्=अभिधीयन्ताम् (to say), भद्रभट=Bhadrabhata, पुरुषदत्त=Purushdatta, डिङ्गरात=Dingarata, बलगुप्त=Balgupta, राजसेन=Rajsen, रोहिताक्ष=Rohitaksha, विजयवर्माणः=Vijagaverman, शीघ्रम्=द्रुतम् (quick), अनुसृत्य=समीपम् गत्वा (Pursue), निगृह्यताम् (arrest), दुरात्मा=दुष्टहृदयः (villain), भागुरायणः=Bhagurayana.

शिष्यः—तथा (so be it). [इति निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य सविषादम् (going out and re-entering sorrowfully)], हा धिक्=हा खेदे, निकृष्टतमम्, कष्टम्=क्लेशम्=Alas, what a calamity सर्वमेव=सकलमेव (The whole) तन्त्रम्=प्रजासमूहम् (machinery), आकुलीभूतम्=पीडितम् वर्त्तते (is in confusion), तेऽपि भद्रभटादयोऽपि (They too Bhadrabhata and others), प्रथमतरम्=(The first), उषस्येव=प्रभाते एव (this morning), अपक्रान्ताः=पलायिताः (ran away).

चाणक्यः—[स्वगतम्=स्वमनसि (To himself)], सर्वथा (In all respect) पन्थानः=मार्गाः (their way), शिवम्=कल्याणम् (prosperous), सन्तु=भवन्तु (be), [प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (Aloud)], वत्स=पुत्र (the son) विषादेन=खेदेन अलम्=व्यर्थम् (do not be dejected), पश्य=अवलोकय (see).

हिन्दी—चाणक्य—(अपने आप) वे सब कार्यसिद्धि के लिए जाएँ। (प्रकट रूप में नकली क्रोध के साथ) वत्स, मेरी ओर से भद्रभट, पुरुषदत्त, डिंगरात, बलगुप्त, राजसेन, रोहिताक्ष और विजयवर्मा से कहो कि शीघ्र पीछा कर उस नीच को पकड़ लें।

शिष्य—जैसी आज्ञा (बाहर जा कर और फिर दुःख के साथ) हाय, बड़ा कष्ट है, सारा तन्त्र ही अस्त-व्यस्त हो गया। वे भद्रभटादि भी बहुत पहले सुबह में ही निकल चुके हैं।

चाणक्य—(अपने आप) पथ सर्वथा कल्याणकारी हो (प्रकट रूप में) वत्स, खेद करना व्यर्थ है। देखो—

English—*Chanakya*—(To himself) let him go for success in the work. (Aloud as if in anger) Child, say to Bhadrabhata, Purushdatta, Dingarata, Balagupta, Rajsena, Rohitaksha and Vijayaverma

ये याता॰ किमपि प्रधार्य हृदये पूर्वं गता एव ते
ये तिष्ठन्ति भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यमा॰ ।
एका केवलमेव साधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका
नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम ॥ २५ ॥

---

that I command them to pursue the villain Bhagurayana and arrest him quickly

Pupil—So be it (going out and re entering with sorrow) Alas, what a calamity !! oh, the whole machinary is in confusion, they too Bhadrabhata and others were the first to go away this morming

Chanakya—(To himself) In all respects their way may be prosperous (Aloud) Child, do not be dejected See —

विमला

अन्वय —ये, किमपि, हृदये, प्रधार्य, याता , ते पूर्वम्, एव, गता , ये, तिष्ठन्ति, ते, अपि, कामम, गमने, प्रकामोद्यमा , भवन्तु, तु, साधनविधौ, सेनाशतेभ्य , अधिका, नन्दोन्मूलनदृष्टवीयमहिमा, केवलम्, एका, मम, बुद्धि एव, मागात् ॥ २५ ॥

व्याख्या—ये = भागुरायणादय जना (those), किमपि = मदिष्टमनिष्ट वा (some scheme), हृदये = मनसि (at heart), प्रधार्य = विचार्य (having formulated), याता = गता (have gone), ते = जनाः (they), पूर्वमेव = हृदये प्रधारणसमये एव (before it), गता = याता (has already gone), ये = जना (those), तिष्ठन्ति = अत्र वर्तन्ते (still remain), तेऽपि = ते जना अपि (they also) कामम् = यथेच्छम् (by all means), गमने = नि सरणे (In going), प्रकामोद्यमा॰ = प्रयत्नशीला (try), भवन्तु = सन्तु (be), तु = किन्तु (but), साधनविधौ = कार्यसम्पादने (in the accomplishment of desired objects), सेनाशतेभ्य = बहुसेनाभ्य (a hundred armies), अधिका = श्रेष्ठा (more than), नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा = नन्दविनाशे प्रत्यक्षीकृतशक्ति प्रभावा (power was witnessed at the extirpation of the Nanda), केवलमेका = अद्वितीया (by itself), मम = चाणक्यस्य (Chanakya s), बुद्धि = मति (my intellect), एव (only), मागात् = न गच्छतु (not forsake me), ॥ २५ ॥

हिन्दी—जो भागुरायणादिक हृदय में कुछ रखकर गये हैं, वे पहले ही जा चुके हैं। जो लोग टिके हैं, वे भी अपनी इच्छा के अनुसार जाने के लिए प्रयत्नशील हों। किन्तु, कार्यसाधन विधि में निपुण सैकड़ों सेना से अधिक, नन्दों के विनाश में प्रदर्शित कर चुकी है अपनी शक्ति की महिमा जिसने ऐसी केवल मेरी बुद्धि मुझसे अलग न जाय ॥ २५ ॥

English—Those that have left cherishing something at heart, are indeed gone beforehand, let those also who still remain, by all means try to go away, just as they live Let only my intellect,

(उत्थाय) एष दुरात्मनो भद्रभटप्रभृतीनाहरामि । (प्रत्यक्षवदाकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा, आत्मगतम्) दुरात्मन् राक्षस, क्वेदानीं गमिष्यसि । एषोऽहमचिराद्भवन्तम्—

> स्वच्छन्दमेकचरमुज्ज्वलदानशक्ति-
> मुत्सेकिना मदबलेन विगाहमानम् ।
> बुद्ध्या निगृह्य वृषलस्य कृते क्रियाया-
> मारण्यकं गजमिव प्रगुणीकरोमि ॥ २७ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति मुद्राराक्षसे नाम प्रथमोऽङ्कः



which by itself is more than a hundred armies in the accomplishment of desired objects and the greatness of whose prowess was seen in the dsestruction of the Nandas, not forsake me. 26.

टिप्पणी—'किमपि' से तात्पर्य सूचक है कि मानने वाले पहले देकर छोड़ गये हैं जो मेरे सिवा और कोई नहीं जानता। नन्दाद्—'भाति दुरु' पा० सू० २।२।१७४ और 'न नाव् दोन' पा० सू० ६।४।३५ से [illegible] के आगम का निषेध है। यहाँ सकल कार्य सम्पादन में हेतुभूत बुद्धि का वाक्यार्थत्वेन अन्वय होने के कारण काव्यलिङ्ग अलङ्कार है और सेनाशतक उपमान की अपेक्षा उपमेयभूत बुद्धि के आधिक्य प्रतिपादन से व्यतिरेक अलङ्कार है। पुनः दोनों का सम्मिश्रण रहने के कारण संसृष्टि अलङ्कार हुआ। क्योंकि यहाँ तिलतण्डुल की तरह दो स्वतन्त्र अलङ्कार मिले हैं। इसका लक्षण है—"सैषा संसृष्टिरेतेषाम् भेदेन यदिह स्थितिः" इसमें लाटी रीति है, ओज गुण है तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

विमला

व्याख्या—[उत्थाय आकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा = Rising and fixing his gaze in the sky)], एष=अयं (This), दुरात्मनः=नीचान् (viles), भद्रभटप्रभृतीन् (Bhadrabhata and others), आहरामि=(I bring back), [आत्मगतम् = (To himself)], दुरात्मन् (O vile), राक्षस=(Rakshasa), इदानीम्=अधुना (now), क्व=कुत्र (where), गमिष्यसि = यास्यसि (will go), एषोऽहम् (here I), अचिरात्=शीघ्रम् (ere long), भवन्तम्=त्वाम् (to you).

अन्वयः—उज्ज्वलदानशक्तिम्, एकचरम्, स्वच्छन्दम्, उत्सेकिना मदबलेन, विगाहमानम्, आरण्यकम्, गजम्, इव, बुद्ध्या, निगृह्य, वृषलस्य कृते, क्रियायाम्, प्रगुणीकरोमि ॥ २७ ॥

व्याख्या—उज्ज्वला = प्रसिद्धा, प्रशसनीया वा दानशक्ति वितरण—सामर्थ्यं गज पक्षे मदक्षरण-सामर्थ्यं यस्य तथोक्तम् (brilliant powers of gift), एकचर = त्यक्तस्वजनवर्गं गजपक्षे त्यक्तयूथ सन् (all alone), स्वच्छन्दम्=निरङ्कुशम् (boastful), उत्सेकिना=गर्वहेतुना, मदबलेन = दर्पप्रभावेण गजपक्षे मदजल प्रभावेण (strength of pride), विगाहमानम् अस्मद् विनाशाय चेष्टमानम्, गजपक्षे सरसि अरण्ये वा आलोडनम् कुर्वन्तम् (wandering), आरण्यकम् = वन्यम् wild), गजम् = हस्तिनम् (elephant), इव = यथा (just as) बुद्धया = नीतिनिपुणया (with brilliant), निगृह्य = सयम्य (should catch) वृषलस्य = चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta), कृते = अर्थ (for), क्रियायाम् = मन्त्रिकार्य गजपक्षे भारवहन कर्मणि (ready to work), प्रगुणीकरामि=वशीकरोमि गजपक्षे काय योजयामि (*I will render*) ॥ २७ ॥

(इति निष्क्रान्ता सर्व) (Exeunt omnes)

प्रथमोऽङ्क समाप्त (End of act I)

हिन्दी—(उठकर आकाश की ओर देखकर) यह मैं उस दुष्टात्मा भद्रभट प्रभृति को पकड़ता हू। (अपने आप) दुरात्मन् राक्षस, अब कहाँ जाओगे ? यह मैं भी शीघ्र ही तुमको—

प्रशसनीय दानशक्तिवाले, गजपक्ष में प्रशस्त मदजल बहानेवाले, अपने वर्ग को छोड़कर अकेले घूमनेवाले, स्वच्छन्द मतवाला बना देनेवाले दर्प के प्रभाव से गजपक्ष में—मदजल के प्रभाव से हमारे पक्ष को विनष्ट करने की चेष्टा करनेवाले—गजपक्ष में आलोडन करनेवाले, जगली हाथी के समान, बुद्धि से वशवर्त्ती बनाकर चन्द्रगुप्त के लिए मत्री कार्य में, गजपक्ष में—भार ढोने के कार्य में हठात्, गजपक्ष में बाँधकर लगाता हू ॥ २७ ॥

(इस प्रकार सभी निकल जाते हैं)

मुद्रालाभ नामक प्रथम अक समाप्त

English—(Rising and fixing his gaze at the sky) Here I bring back vile Bhadrabhata and others (To himself) wicked Rakshasa where will you escape now ?

O evil Rakshasa, where can you go now ? Here shall I arrest you by my intellect and make you to serve Vrishala, as you are doing alone on your choice Whose strength to defend is *great and who are laying out deep position in your profuse pride*, similarly as one should catch by device and make to serve a wild elephant, who wanders all alone in freedom, who has a great power to cast rut and who rambles through the high spirits of strength of youthful power.

टिप्पणी—गजमिव भवन्तं प्रगुणीकरोमिः—इस श्लोक का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार मदमत्त जंगली गजराज युक्ति से पकड़ कर भारवाहक बनाये जाते हैं उसी प्रकार नीति से तुम्हें भी वशवर्ती बनाकर चन्द्रगुप्त का मन्त्रिपद स्वीकार करने के लिए विवश कर दूँगा। **एकचरम्**—इस शब्द का तात्पर्य यह है कि राजा नन्द से सम्बधित होने के कारण इस समय एक है, केवल तुम्हीं एक ऐसे हो जो अपने परिवार को भी छोड़कर अलग घूम रहे हो। **विगाहमानम्**—वि+ √गाह्+शानच् से विभक्त्यादि कार्य कर रूप सम्पन्न है। **आरण्यकम्**—अरण्य+वुन् से विभक्त्यादि कार्य कर रूपसिद्धि है।

इस श्लोक में श्लेषमूलक उपमा अलङ्कार है। यहाँ वन्य हाथी के साथ राक्षस की तुलना की गयी है। दोनों में एक दूसरे के साथ सादृश्य की स्थापना की गयी है। सादृश्य के कारण इसमें जो सौन्दर्यानुभूति होती है उसी की प्रधानता है। या यों कहें गजकर्म का राक्षस के साथ सादृश्य ही उपमा के प्राण हैं। इसका लक्षण काव्यप्रकाश में कहा गया है—'साधर्म्य-मुपमाभेदे।' इस श्लोक में वैदर्भी रीति है, ओज गुण है एवम् वसन्ततिलका वृत्त है। 'ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौ गः'

मुद्राराक्षस प्रथम अङ्क की 'विमला' व्याख्या समाप्त ॥



द्वितीयोऽङ्कः

(तत प्रविशत्याहितुण्डिक)

आहितुण्डिक—

जानन्ति तन्त्रयुक्तिं यथास्थितं मण्डलमभिलिखन्ति ।
ये मन्त्ररक्षणपरास्ते सर्पनराधिपावुपचरन्ति ॥ १ ॥

(जाणन्ति तन्तजुत्तिं जहट्ठिअं मण्डलं अहिलिहन्ति ।
जे मन्तरक्खणपरा ते सप्पणराहिवे उवअरन्ति ॥)

विमला

तत =तत्पश्चात् (after that), प्रविशति (enter), आहितुण्डिक (Snake catcher), आहितुण्डिक=सर्पक्रीडनोपजीवी‚यर्थं (Snake catcher) —

अन्वय.—ये, तन्त्रयुक्तिम्, यथास्थितम्, जानन्ति, मण्डलम्, च, अभिलिखन्ति, मन्त्ररक्षणपरा , ते, सर्पनराधिपौ, उपचरन्ति ॥ १ ॥

व्याख्या—ये=नरा (those who) तन्त्रयुक्तिम् =औषधस्योपायम् राजपक्षे स्वराष्ट्रचिन्तनस्योपायम् (१—the application of antidotes, २—The judicious management of state affairs, administration of one's own state), यथास्थितम्=यथावत् (properly), जानन्ति=विदन्ति (know), मण्डलम्=वर्त्तुलाकारं महेन्द्रादि देवतायन्त्रम्, राजपक्षे—द्वादशविधराजमण्डलम् अथवा सप्तप्रकृतिकम् राष्ट्रम् (१—in the case of the snake means the enchanted circle which a serpent-charmer draws round a snake to keep it within limits, २—in the case of the king this may mean the circle of the constituent parts of a kingdom, or the band of twelve kings), च=अपि (also) अभिलिखन्ति=भूमौ अङ्कयन्ति, राजपक्षे-विचारयन्ति (draws round on earth or properly mark out) मन्त्ररक्षणपरा =मन्त्रै =गारुडादि मन्त्रै यत् रक्षणम्, आत्मत्राणम्, तदेव परमप्रधानम् येषाम् तादृशा , राजपक्षे—मन्त्राणाम् गुप्तमन्त्रणानाम्, रक्षणे, गोपने, परा =तत्परा (devoted to the observance of spells, or—versed in preserving state secrets), ते= तादृशा जना (those), सर्पनराधिपौ=सर्पश्च नराधिपश्च, सर्पनराधिपौ उपचरन्ति= व्यवहरन्ति (१—prescribe remedies २—deal with, serve) ॥ १ ॥

हिन्दी—सर्प के पक्ष में—जो सर्पौषधि की युक्ति से परिचित हैं, जो महेन्द्रादि देवताओं के मण्डल को चित्रित करने में समर्थ हैं, तथा गरुडादि मन्त्रों के द्वारा आत्मरक्षण में तत्पर हैं—वे ही सर्प के साथ व्यवहार करने में समर्थ हैं ।

(आकाशे) आर्य, किं त्वं भणसि कस्त्वमिति। आर्य, अहं खलु आहितुण्डिको जीर्णविषो नाम। किं भणसि अहमपि अहिना खेलितुमिच्छामीति। (अज्ज किं तुमं भणासि को तुमं त्ति। अज्ज अहं खु आहितुण्डिओ जिण्णविसो णाम। किं भणासि। अहं वि अहिणा खेलिदुं इच्छामि त्ति।)

राजा के पक्ष में—जो राष्ट्रचिन्तन की युक्तियों से परिचित हैं, जो मान्डलिक राजचक्र को उसकी सीमाओं से बाहर नहीं होने देते, तथा जो राजकार्यविषयक मन्त्रणाओं को गुप्त रखने में तत्पर हैं, वे ही किसी राजा के साथ व्यवहार करने में समर्थ हैं ॥ १ ॥

English—In the case of the snake means :—

Those who know the application of antidotes, who draw the enchanted circle in the right way, and who are devoted to the observance of spells can deal with a snake.

In the case of the king :—

Those who are conversant with the plans or policy to be followed in the administration of a kingdom, who prescribe the proper course of conduct for or properly mark out i. e hold in check, the circle of king, and who are versed in preserving state secrets, can manage a king to be cautiously approached like a snake. I.

टिप्पणी—आहितुण्डिक—सँपेरा—अहेः = सर्पस्य, तुण्डेन=मुखेन, दीव्यति=क्रीडति, इति आहितुण्डिकः। अहितुण्ड शब्द से 'ठक्' प्रत्यय, पुनः विनयादि गणे से स्वार्थ रूप 'आहितुण्डिक' है। नाटक में यह पात्र राक्षस का गुप्तचर है तथा इसका नाम विराधगुप्त है। सँपेरे के वेश में इसका नाम जीर्णविष है।

मण्डलम्—इस शब्द का दो अर्थ हैं (१) सँपेरा अपना खेल दिखाने के पूर्व मन्त्र पढ़कर चारों ओर एक गोल रेखा खींच देता है; तात्पर्य यह कि सर्प उस घेरे से बाहर नहीं जा सकते (२) १२ राष्ट्रों के समूह को भी मण्डल कहते हैं। इस प्रथम श्लोक के कतिपय शब्द श्लिष्ट हैं जिनके दोनों अर्थ हैं। एक सँपेरा के अर्थ में और दूसरा राजनीतिज्ञ के अर्थ में। साहश्यमूलक गम्यौपम्य अलंकार होने के कारण इस श्लोक में तुल्ययोगिता अलङ्कार है। क्योंकि एक ही वाक्य में अनेक पदार्थों का वर्णन कर नाटककार ने एक धर्माभिसम्बन्ध स्थापित किया है। काव्या-लङ्कार में इसका लक्षण है—"विशिष्टेन साम्यार्थमेककालक्रियायोगस्तुल्ययोगिता" वैदर्भी रीति है, प्रसाद गुण एवं 'आर्या' छन्द है।

विमला

व्याख्या—[(आकाशे=खे At the sky)] आर्य=मान्य (Noble sir),—त्वम्=भवान् (you), किम् (what), भणसि=कथयसि (do ask),—'कस्त्वमिति'= किंनामधेयस्त्वम् (who are you), आर्य=मान्य (sir), अहम् (I), खलु=निश्चयः (Indeed), आहितुण्डिकः=सर्पक्रीडोपजीवी (Snake-charmer), जीर्णविषो नाम= जीर्णविषनाम्ना प्रसिद्धः (Jirnavisha by name), किं भणसि=किम् कथयसि (what say you),—अहमपि (I too), अहिना=सर्पेण (with snake), खेलितुम्=

अथ कतरा पुनरार्यो वृत्तिमुपजीवति । किं भणसि राजकुलसेवक इति । ननु खेलति एव आर्योऽहिना । कथमिव । अमन्त्रौपधिकुशलो व्यालग्राही प्रमत्तो मतङ्गजारोही लब्धाधिकारो जितकाशी राजसेवक इत्येते त्रयोऽप्यवश्य विनाशमनुभवन्ति । कथं दृष्टमात्रोऽतिक्रान्त एषः । (पुनराकाशे) । आर्य, किं त्वं भणसि किमेतेषु पेटकसमुद्गकेष्विति । आर्य, जीविकायाः सम्पादकाः सर्पाः । किं भणसि प्रेक्षितुमिच्छामीति । प्रसीदत्वार्यः अस्थानं खलु एतत् । तद्यदि कौतूहलं एहि एतस्मिन्नावासे दर्शयामि । किं भणसि इदं खलु भर्तुरमात्यराक्षसस्य गृहं

क्रीडितुम् (to play), इच्छामि = वाञ्छामि (wish), अथ=अनन्तरम् (well), पुनः आर्यः=भवान् (Noble sir), कतराम्=काम् (what), वृत्तिम्=जीविका (Profession), उपजीवति=समवलम्बते (follow), किं भणसि=किं कथयसि (what do you say),—राजकुलसेवकोऽस्मि=नृपान्तवाश्रितः (an attendant at the royal household), ननु=निश्चयार्थकः (Indeed), आर्य =पूज्यः (Noble sir), अहिना= सर्पेण (with snake), खेलति एव=क्रीडत्येव (is playing already), कथमिव = केन प्रकारेणेति (how), अमन्त्रौपधिकुशल.=मन्त्राश्चौषधयश्च मन्त्रौषधयः तासु कुशलः निपुणः मन्त्रौपधिकुशलः न मन्त्रौपधिकुशलः अमन्त्रौपधिकुशल., मन्त्रेषु = गारुडादिकेषु, ओषधिषु = ईश्वरमूलकादिषु चाज्ञः (Not versed in mantra and herbs), व्यालग्राही=व्यालोपजीवी (The Sanke charmer), मत्त.=प्रमत्तः (without the knowledge of restraining), मतङ्गजारोही (one who mounts on an intoxicated elephant), लब्धाधिकार.=प्राप्ताधिकारः (invested with authority), जितकाशी=जयोद्धतः (proud of his success) राजसेवक =नृपपरिचारकः (the king's servant), एते त्रय.=(these three), अवश्यम् = निश्चितम् (surely), विनाशम् = मृत्युम् (death), अनुभवन्ति = प्राप्नुवन्ति (suffer), कथम् = केन प्रकारेण (how), दृष्टमात्रोतिक्रान्तः = दर्शनप्राप्तोऽतिक्रान्तः (has vanished as soon as seen), एष.=आकाशस्थ पुरुष. (this), [पुनराकाशे: (Again at the sky)], आर्य किम् त्वम् भणसि (What does your Honour say),—एतेषु दृश्यमानेषु (*in these*), पुटकसमुद्गकेषु = मञ्जूषा-सम्पुटेषु (in covered baskets), आर्यः = मान्यः (sir), जीविकाया सम्पादका' = वृत्तिनिर्वाहकाः (that give me a living), सर्पा. = फणिन. (Snakes), किं भणसि = किं कथयसि (what say you), प्रेक्षितुमिच्छामि = द्रष्टुम् वाञ्छामि (I want to see them), आर्यः = मान्य (*sir*), प्रसीदतु = प्रसन्नोभव (*please excuse me*), अस्थानं खलु एतत् = नैवगार्थसत्वेतत् स्थानमयुक्तम् (this is really unsuitable place), तद्यदि = (If), कौतूहलम् = सर्पक्रीडावलोकनोत्कण्ठा (have curiosity), एहि = आगच्छ (come), एतस्मिन्नावासे = अमुष्मिन्गृहे (in this house), दर्शयामि = अवलोकयामि (I will show), किं भणसि (what do you say),—इदम् साक्षात्

नास्त्यस्मादृशानामिह प्रवेश इति । तेन हि गच्छत्वार्यः । मम पुनर्जीविकाया प्रसादेन अस्तीह प्रवेश । कथमेषोऽपि अतिक्रान्तः । (अह कदर उण अज्जो विक्ति उवजीवदि । किं भणासि राअउलसेवकोह्मि त्ति । ण खेलदि एत्थ अज्जो अहिणा । कह णिअ । अमन्तोसहिकुसलो वालग्गाही मत्तो मतङ्गआरोही लद्धाहिआरो जिदकासी राअसेवओ त्ति एदे तिण्णि वि अवस्स विणासमणुहोन्ति । कह दिट्ठमेत्तो अदिक्कन्तो एसो । अज्ज किं तुम भणासि किं एदेसु पेटालसमुग्गएसु त्ति । अज्ज जीविआए सपादआ सप्पा । किं भणासि पेक्खिदुमिच्छामित्ति । पसीददु अज्जो । अट्ठाण खु एद । ता इअ कोदूहल एहि एदस्सि आवासे दसेमि । किं भणासि एद खु भट्टिणो अमच्चरक्खसस्स गेह णत्थि अह्मारिसाण इह पवेसो त्ति । तेण हि गच्छदु अज्जो । मम उण जीविआए पसादेण अत्थि एत्थ पवेसो । कध एसोवि अतिक्कन्तो ।)

दृश्यमानम् (this is), खलु=निश्चितम् (Indeed), भर्तुः=स्वामिनः (his Lordship), अमात्यराक्षसस्य (Minister Rakshasa), गृहम्=सदनम् (the house), अस्मादृशानाम्=मद्विधानाम् (people like us), इह=अस्मिन् गृहे (in this house), प्रवेश =आगम (admission), नास्ति=न विद्यते (have not), तेन=हेतुना (then), हि=यतः, आर्य =भवान् (Noble sir), गच्छतु= व्रजतु (may take your departure), जीविकाया=वृत्ते. (profession), प्रसादन=उपायेन (through), मम (my), इह=अस्मिन् गृहे (in this house), अस्ति प्रवेश=आगमनम् वर्तते (there is admission here), एषोऽपि=अयमपि (he too), कथम्=केन प्रकारेण (how), अतिक्रान्त=अन्तर्हित (has disappeared)

हिन्दी—(आकाश की ओर देखते हुए) आर्य, क्या पूछना चाहते हो? मैं कौन हूं? मैं एक सपेरा हूं, नाम है मेरा जीर्णविष। आर्य, क्या पूछ रहे हो? "मैं साँप से खेलना चाहता हू"। तो आर्य तुम हो कौन? तुम्हारा जीविका के साधन क्या हैं? क्या कहा? "राज कुल का सेवक हूं" तब तो आर्य साँप से खेल रहा रहे हो। "कैसे"? मन्त्र और औषधि के विषय में अनजान सँपेरा, मदमत्त हाथी पर चलनेवाला असावधान एक महावत, अधिकार के मद में चूर अजितेन्द्रिय एक राजसेवक—इन तीनों की मृत्यु अवश्यम्भावी है। अरे, यह क्या? एक आँख देखा नहीं कि गायब। (फिर आकाश में) आर्य, क्या कहा आपने? "इन बन्द पिटारियों में क्या है?" आर्य मेरी जीविका के साधन साँप हैं, क्या कह रहे हो? "देखना चाहता हू" आर्य, कृपा करें, यह दिखाने की जगह नहीं है। यदि उत्कण्ठा है तो आओ, इस घर में दिखलाता हू। क्या कह रहे हो?—"यह स्वामी अमात्य राक्षस का घर है। हमारे जैसे लोगों का इस घर में प्रवेश नहीं है।" तो आप जाओ। मेरा तो जीविका की कृपा से इस घर में भी प्रवेश है। क्या यह भी चला गया!"

English—(At the sky) What do you ask me sir, "who I am?" I am a Snake charmer, Jirnavisha by name Do you say? That you too wish to play with a serpent? Well, what profession does Noble

(स्वगतम्, सस्कृतमाश्रित्य) अहो आश्चर्यम् । चाणक्यमतिपरिगृहीत चन्द्रगुप्तमवलोक्य विफलमिव राक्षसप्रयत्नमवगच्छामि । राक्षसमतिपरिगृहीत मलयकेतुमवलोक्य चलितमिवाधिराज्याच्चन्द्रगुप्तमवगच्छामि । कुत: ?

---

sir follow ? What do you say ? That you are an attendant at the *royal household ? Well, Noble sir, is indeed playing with a Snake* already You want to know, 'how ?' The Snake charmer not versed in mantras and herbs One who mount on an intoxicated elephant without the knowledge of restraining it and a servant of the king who brags of success on getting into office—These three surely suffer death Oh he has vanished from my sight the moment he was seen ! (again looking at the sky) Do you ask sir, 'what *are in these covered baskets ?' The Snakes that give me a living* Noble sir Do you say you wish to see them ? Please excuse me sir, this is really an unsuitable place. So if you have the curiosity, come, I will show them in this house. What does your Honour say ? "This is indeed the house of his lordship minister Rakshasa, there is no admission of people like us here" Then let Noble sir pass. By virtue of my profession there is admission for me here How now ? He, too, has gone away !

विमला

व्याख्या—(स्वगतम् सस्कृतमाश्रित्य = अनतिस्पष्ट 'देववाणीमवलम्ब्य) (To himself, speaking in sanskrit)

अहो = विस्मयसूचकम् (Oh), आश्चर्यम् = चित्रम् (wonder), चाणक्यमतिपरिगृहीतम् = कौटिल्यबुद्धिपरिचालितम् (guided by the intellect of chanakya), चन्द्रगुप्तम् = वृषलम् (chandragupta), अवलोक्य = दृष्ट्वा (seeing), विफलमिव = वितथमिव (as futile), राक्षसप्रयत्नम् (Rakshasa's attempt), अवगच्छामि = सम्भावयामि (I consider), राक्षसमतिपरिगृहीतम्=राक्षसबुद्ध्या परिचालितम् (by the counsel of Raksnasa), मलयकेतुम् (Malayaketu), अवलोक्य=दृष्ट्वा (seeing), चलितमिव=पृथग्भूतमिव (as almost deposed), अधिराज्यात् (from his supreme power), चन्द्रगुप्तम्=वृषलम् (Chandragupta), अवगच्छामि=सभावयामि (look upon), कुत:=(For) —

हिन्दी— *(अपने आप संस्कृत में)*

कैसा आश्चर्य है ? एक ओर जब चाणक्य की कूटनीति का अनुसरण करते हुए चन्द्रगुप्त को देखता हूँ तो ऐसा लगता है मानो राक्षस के सारे प्रयत्न व्यर्थ होने जा रहे हैं । और दूसरी ओर, राक्षस की बुद्धि से परिचालित मलयकेतु को देखता हू तो लगता है, चन्द्रगुप्त के पैर साम्राज्य से उखड चले हों । क्योंकि—

कौटिल्यधीरज्जुनिबद्धमूर्तिं मन्ये स्थिरां मौर्यनृपस्य लक्ष्मीम्।
उपायहस्तैरपि राक्षसेन विकृष्यमाणामिव लक्षयामि ॥ २ ॥

English— (To himself, speaking in Sanskrit)

Oh wonder ! seeing Chandragupta led by the intellect of Chanakya, I consider the attempt of Rakshasa to be futile; while seeing Malayketu guided by the counsels of Rakshasa, I look upon chandragupta as almost deposed from his empire For :—

टिप्पणी—आकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा—इसे आकाशभाषित कहा जाता है। इसमें पात्र आकाश की ओर देखकर अकेले ही इस प्रकार बातें करता है कि मानो कोई व्यक्ति है कि कोई उससे बातें कर रहा है। नाटक का यह एक ऐसा नियम है, जिससे एक ही पात्र से अनेक का पात्रों का काम चल जाता है। वस्तुतस्तु—इसका तात्पर्य यह है कि यह दूसरा स्वयं एक उत्तम कोटि का पात्र है। चूँकि सँपेरा का वेष बनाकर घूम रहा है, अतः प्राकृत में बोलता है। आर्यराज्याद्—अधिराजो राजा अधिराज। 'राज्ञि पञ्चम्यां च' इससे समासान्त, तत्पश्चात् करने पर इन नियम से अधिराज शब्द से पञ्चमी करने पर पञ्चमी विभक्ति का रूप अधिराज्यात्।

विमला

अन्वयः—कौटिल्यधीरज्जुनिबद्धमूर्त्तिम्, मौर्यनृपस्य, लक्ष्मीम्, स्थिराम्, मन्ये, अपि राक्षसेन, उपायहस्तैः, निकृष्यमाणाम्, इव, लक्षये ॥ २ ॥

व्याख्या—कौटिल्यस्य=चाणक्यस्य (Chanakya's), धी=बुद्धिः (the talent), सा एव रज्जुः=बन्धनम् (Rope), तया निबद्धा=संयता (tied down), मूर्त्तिः=देहः (Form), मौर्यनृपस्य=राज्ञः चन्द्रगुप्तस्य (king Maurya's), लक्ष्मीम्=राजश्रियम् (Royalty), स्थिराम्=निश्चलाम् (as stable), मन्ये=मन्यमानोऽस्मि (I consider), अपि=तथा (but), राक्षसेन=अमात्यराक्षसेन (by Rakshasa), उपायहस्तैः=सामदामादिरूपकरैः (with his hands in the form of plans), निकृष्यमाणाम्=आकृष्यमाणाम् (being dragged), इव=यथा (as if), लक्षये=तर्कयामि (I consider)

हिन्दी—चाणक्य की बुद्धिरूपी रस्सी में बँधा हुआ शरीर वाली मौर्य की लक्ष्मी को निश्चल समझता हूँ। तथा राक्षस के द्वारा उपायरूपी हाथों से खिंचा जाता हुआ-सा देख रहा हूँ ॥ २ ॥

English—I consider the Royalty of king Maurya as stable with her form tied down by the rope in the form of Kautilya's wit, I also notice her as if being dragged along by Rakshasa with hands in the form of expedients 2

टिप्पणी—उपायहस्तैः—राजनीतिक उपाय चार कहे गये हैं —साम, दाम, भेद और दण्ड। "भेदो दण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम्" इस श्लोक में प्रस्तुत मौर्य की राज्य लक्ष्मी की स्थिरता में अप्रस्तुत राक्षसकृत अभेद की सम्भावना के कारण उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

तदेवमनयो बुद्धिशालिनो. सुसचिवयोर्विरोधे सशयितेव नन्दकुललक्ष्मी ।
विरुद्धयोर्भृशमिव मन्त्रिमुख्ययो
महावने वनगजयोरिवान्तरे ।
अनिश्चयाद् गजवशयेव भीतया
गतागतैर्ध्रुवमिह खिद्यते श्रिया ॥ ३ ॥
तद् यावदमात्यराक्षस पश्यामि । (इति परिक्रम्य स्थित.)

क्योंकि यहाँ उपमा में ही उपमेय एव उपमान में सादृश्य दिखलाया गया है। यद्यपि यहाँ आधार एक ही है—फिर भी उसी में उपमेय एव उपमान का बोध होनेपर भी इसमें उपमान की प्रतीति उत्कृष्ट रूप से हुइ है। अत यहाँ उत्प्रेक्षा स्पष्ट है —"सभावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परेण यत्" काव्यप्रकाश। इसी प्रकार इस श्लोक में उपजाति छन्द हे —"अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ता"

विमला

तत्=तस्मात्कारणात् (so), एवम्=इत्थम् (like this), अनयो.=चाणक्यराक्षसयो (these two), सुनयशालिनो =सुनीतिविदो (resourceful worthy), सचिवयो =अमात्ययो (ministers), विरोधे=वैरत्वे (in the conflict), नन्दकुललक्ष्मी =राज्यश्री (sovereign power), सशयिता इव=सन्देहाकुलेव (in suspense), लक्ष्यते=अवगम्यते (looks)

अन्वय.—महावने, वनगजयो , इव, भृशम्, विरुद्धयो , मन्त्रिमुख्ययो , अन्तरे, इह अनिश्चयात्, भीतया, गजवशया, इव, श्रिया, गतागतै , ध्रुवम्, खिद्यते, इव ॥ ३ ॥

व्याख्या—महावने=दुर्गमकानने (in a large forest), वनगजयो.=वन्यहस्तिनो (wild elephants), इव=यथा (like), भृशम्=अत्यर्थम् (fully), विरुद्धयो=प्रारब्धविरोधयो (opposed), मन्त्रिमुख्ययो =अमात्यश्रेष्ठयो (these two leading ministers), अन्तरे=मध्ये (between), इह=राजनीतियुद्धे (here), अनिश्चयात्=अनिर्णयात् (through uncertainty) भीतया=त्रस्तया (frightened), गजवशया=हस्तिन स्त्रिया (a female elephant), इव=यथा (like), श्रिया=मौर्यराज्यलक्ष्म्या (goddess of weath), गतागतै =गमनागमनै (crossing over and recrossing), ध्रुवम्=अवश्यम् (sure), खिद्यते इव=खिद्यते इव (the bewildered) 3

तत्=तस्मात्कारणात् (Therefore), अहम् (I), अमात्यराक्षसम्=राक्षसनाम मन्त्रिणम् (Minister Rakshasa), पश्यामि=प्रेक्षे (see)

हिन्दी—तो इस प्रकार इन दोनों बुद्धिशाली योग्य मंत्रियों में विरोध होने पर नन्दकुल की राज्लक्ष्मी सशयग्रस्त-सी हो गयी है।

जिस प्रकार महावन में दो जाली हाथियों के एक दूसरे से लड जाने पर कोई हथिनी, दोनों में किसी की हार जीत का निश्चय न कर पाने के कारण कभी एक के पास और कभी दूसरे के पास आती जाती खिन्न दिखाई पड़ती है, उसी प्रकार नन्दों की कुलक्रमागत राज्यलक्ष्मी इन दोनों परस्पर विरुद्ध महामंत्रियों के बीच किसी एक की भी हार जीत का निर्णय न कर

(ततः प्रविशत्यासनस्थः पुरुषेणानुगम्यमानः सचिन्तो राक्षसः ।)

राक्षसः—(सबाष्पम् ।) कष्टं भोः कष्टम् ।

वृष्णीनामिव नीतिविक्रमगुणव्यापारशान्तद्विषां
नन्दानां विपुले कुलेऽकरुणया नीते नियत्या क्षयम् ।
चिन्तावेशसमाकुलेन मनसा रात्रिंदिवं जाग्रतः
सैवेयं मम चित्रकर्मरचना भित्तिं विना वर्तते ॥ ४ ॥

पास के कारण कभी एक के पास और कभी दूसरे के पास जाती, आती-जाती केवल दुःख ही उठा रही है । ३ ।

तो अब मैं अमात्य राक्षस को देखता हूँ । (कुछ कदम चलकर रुक जाता है ।)

English—So in the conflict of these two able ministers the sovereign power of the Nanda family is, as if it were in suspense,

The bewildered fortune is surely much tired in this case, by crossing over and recrossing through indecision between these two leading ministers strongly opposed to each other, like a female elephant frightened in a large forest between two wild elephants 3.

Now let me see minister Rakshasa.

(Turns about and waits)

टिप्पणी—प्रस्तुत श्लोक में भी उत्प्रेक्षा अलङ्कार है तथा रुचिरा छन्द है। छन्द का लक्षण है —'चतौ जसौ ग्मिति रुचिरा चतुर्ग्रहैः'। सम्भ्रमिता=सम् + भ्रम् + क्त, भाव ... इति—... + ... + ... से रूप की सिद्धि।

विमला

ततः=तत्पश्चात् (then), प्रविशति (enter), आसनस्थः=आसने तिष्ठति यः स तथोक्तः (seated), पुरुषेण=अनुचरेण (by a man), अनुगम्यमानः (followed), सचिन्तः=सशोकः (in an anxious mood)

राक्षस—सबाष्पम्=साश्रुनेत्रम् (In tears), कष्टम् भोः कष्टम्=(Alas, oh, alas)

अन्वयः—वृष्णीनाम्, इव नीतिविक्रमगुणव्यापारशान्तद्विषाम् नन्दानाम्, विपुले, कुले, अकरुणया, नियत्या, क्षयम्, नीते, चिन्तावेशसमाकुलेन, मनसा, रात्रिन्दिवम्, जाग्रतः, मम, सा एव, इयम्, चित्रकर्मरचना, भित्तिम्, विना, वर्तते ॥ ४ ॥

व्याख्या—वृष्णीनाम्=यदूनाम् (Vrishnis), इव=यथा (like), नीतिः=राजनीतिः (Polity), विक्रमः=पराक्रमः (Valour), तौ एव गुणौ (qualities), व्यापारेण=प्रयोगेन (by the application of), शान्ताः=शान्तिम् गमिताः (had vanquished), द्विषः=शत्रवः (enemies), नन्दानाम्=नन्दकुलोत्पन्नानाम् राज्ञाम् (family of Nandas), विपुले=विशाले (the vast), कुले=वंशे (race), अकरुणया=दयारहितया (relentless), नियत्या=भाग्येन (by fate), क्षयम्=

अथवा—

नेदं विस्मृतभक्तिना न विषयव्यासङ्गमूढात्मना
प्राणप्रच्युतिभीरुणा न च मया नात्मप्रतिष्ठार्थिना ।
अत्यर्थं परदास्यमेत्य निपुणं नीतौ मनो दीयते
देव स्वर्गगतोऽपि शात्रववधेनाराधित स्यादिति ॥ ५ ॥

विनाशम् (destroyed), नीते=प्रापिते (having been driven), चिन्तति=चिन्ताया (anxiety), आवेशेन=प्रसक्त्या (by intense), समाकुलेन=व्यग्रेण (Agitated), मनसा=चेतसा (with a mind), रात्रिन्दिवम्=अहर्निशम् (day and night), जाग्रतः=अनिद्रितस्य (keep wakeful), मम=राक्षसस्य (my), सा=यादृशी नन्दसमये तादृशी एव (that), एव=हि, इयम्=एषा (this), चित्रकर्मरचना=विचित्रकार्यनिमिति , अन्यत्र आलेख्यकर्मनिर्माणम् (practising or using of diplomatic skill), भित्तिम्=कुड्यम्, पक्षे स्वामिरूपमाश्रयम् (wall, or, a back ground), विना=परित्यज्य (without), वर्त्तते=अस्ति (is) ॥ ४ ॥

हिन्दी—(इसके बाद पुरुषानुगत चिन्तामग्न आसन पर बैठा राक्षस का प्रवेश)

राक्षस— आँखों में आसू भरकर) अरे ! कष्ट है, बड़ा कष्ट है।

यदुवंशियों की तरह साम, दाम आदि नीति तथा पराक्रमरूपी गुणों के प्रयोग से शान्त कर दिया है शत्रुओं को जिन्होंने ऐसे नन्द के विशाल कुल को, निष्ठुर भाग्य के द्वारा नाश को प्राप्त करा दिये जाने पर, चिन्ता के प्रभाव से आकुल मन से रात दिन जागने वाले—मेरी वही यह विचित्र रचना आश्रय (स्वामी और पक्ष में दिवाल) के बिना हो गया है ॥ ४ ॥

English—(Then enter Rakshasa seated in an anxious mood, followed by an attendant)

Rakshasa—(In tears) The vast family of Nandas, who like the vrishnis, had vanquished their enemies by the application of the vrirtues of polity and valour, have been driven to extinction by rele ntless Fate, I, who am keeping wakeful day and night with a mind tossed by intense anxiety, have my practising of painting or using of diplomatic skill, done in the same way without a back ground or a wall to paint upon 4

टिप्पणी—इस श्लोक में विशेष एव विभावना अलङ्कार है। यथा—"विभावना विना हेतु कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते" दोनों मिलकर संसृष्टि अलंकार है। प्रसाद गुण, पाञ्चालरीति एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

विमला

अन्वय—परदास्यम्, एत्य, नीतौ, मन , अत्यर्थम्, निपुणम्, दीयते इदम्, विस्मृत भक्तिना, न, विषयव्यासङ्गमूढात्मना, न, च, प्राणच्युतिभीरुणा, मया, न, आत्मप्रतिष्ठार्थिना, स्वर्गगत , अपि, देव , शात्रववधेन, आराधित , स्यात् , इति ॥ ५ ॥

व्याख्या:—परदास्यम्=अन्यस्य दासत्वम् (slavery of another), एत्य=प्राप्य (accepting), नीतौ=राजनीतौ (to politics), मनः=चेतः (heart), अत्यर्थम्= अत्यन्तम् (very), निपुणम्=सावधानम् (carefully), दीयते=व्यापृयते (is being), इदम्=नीतौ मनोदानम् (it is), विस्मृतभक्तिना=चित्ताद्विसारितानुरागेण (have forgotten loyalty), न=नहि (not because), विषयेषु= भोगेषु, व्यासङ्ग=समक्तः अतएव मूढः=विवेकशून्यः, आत्मा=अन्तःकरणम् यस्य तथोक्तेन विषयव्यासङ्गमूढात्मना (in the enjoyment of the objects of senses), न=नहि (not), च=पुनः (again), प्राणच्युतिभीरुणा=असूनाम् नाशभयेन (afraid of the loss of life), मया (by me), न=नहि (not), आत्मप्रतिष्ठार्थिना=स्वमहत्त्वाभिलाषिणा (desirous of self glorification), स्वर्गतः=परलोकगतः (gone to heaven), अपि देव=स्वामी नन्द (His majesty), शात्रववधेन=रिपुविनाशेन (by the destruction of his enemies), आराधितः स्यात्=सन्तोषितः भवेत् (may be propitiated) 5

हिन्दी—अथवा—

यह नहीं कि अब मेरे अन्दर स्वामिभक्ति ही नहीं रही, यह भी नहीं कि मेरा मन विषयों में आसक्त हो गया है। यह भी नहीं कि मैं मृत्यु के भय से आक्रान्त हूं। यह भी नहीं कि मुझे किसी भी प्रकार की सांसारिक प्रतिष्ठा की अभिलाषा है। दूसरों की दासता स्वीकार करके भी मेरा मन राजनीति में इसलिए अनुरक्त है कि दिवंगत राजा नन्द मेरे द्वारा किये गये शत्रु विनाश से किसी प्रकार कुछ तृप्त हो सकें। ५।

English—Or—

It is not because I have forgotten my Loyalty, not because my heart is engrossed in the enjoyment of the objects of senses, not because with a dread of the loss of life, nor again with a hankering after personal glory, that I have closely and carefully devoted my attention to politics, but because His majesty though gone to heaven might be served by the destrucion of his enemies. 5.

टिप्पणी—विस्मृतभक्तिना—विस्मृता भक्तिः अनेन इस विग्रह में पूर्वपद को 'धामान्ते नपुंसकम्' से नपुंसकलिङ्ग बनाकर निमित्तादि कार्य से रूपसम्पन्नता। विषयव्यासङ्गमूढात्मना— विषयेषु व्यासङ्गः विषयव्यासङ्गः अतएव मूढः आत्मा यस्य तेन विषयव्यासङ्गमूढात्मना—विषयों की आसक्ति से मोहित आत्मावाले। आत्मप्रतिष्ठा—प्रतिष्ठार्थिना इति प्रति+स्था+अङ् कर प्रतिष्ठा। शात्रववधेन—शत्रुरेव इति शत्रु+अण् स्वार्थे प्रत्यय शात्रव तस्य वधः शात्रववधः तेन शात्रववधेन।

इस श्लोक में परिसंख्या अलङ्कार एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है। प्रसाद गुण एवं पाञ्चाली रीति है।

वृत्तरत्नाकर में शार्दूलविक्रीडित का लक्षण है—"सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।"

(आकाशमवलोक्यन् सास्रम् ।) भगवति कमलालये, भृशमगुणज्ञाऽसि । कुत ।

वैभव

आनन्दहेतुमपि देवमपास्य नन्दं
सक्ताऽसि किं कथय वैरिणि मौर्यपुत्रे ।
दानाम्बुराजिरिव गन्धगजस्य नाशे
तत्रैव किं न चपले प्रलयं गताऽसि ॥ ६ ॥

विमला

व्याख्या —आकाशम्=खम् (the sky), अवलोकयन्=पश्यन् (looking towards), सास्रम्=सरोदनम् (with tears in his eyes), भगवति=ऐश्वर्यशालिनि (mighty), कमलालये=पद्मालये (Resider in lotus), भृशम्=अत्यन्त (extremely, अगुणज्ञासि=ज्ञानशून्यासि (unappreciative of merit), कुत (how)

अन्वय.—हे चपले, कथय, आनन्दहेतुमपि, देवम्, नन्दम्, अपास्य, वैरिणि, मौर्यपुत्रे किं सक्तासि, गन्धगजस्य, नाशे, दानाम्बुराजिरिव, तत्रैव, किम् न, प्रलयम्, गतासि ॥ ६ ॥

व्याख्या—हे चपले=चञ्चले (O fickle one), कथय=ब्रूहि (tell), आनन्दहेतुमपि=सुखकारणमपि (though source of delight), देवम्=स्वामिनम् (His majesty), नन्दम्=नन्दनामानम् नृपम् (*Sire Nanda*), अपास्य=परित्यज्य (forsaking), वैरिणि=रिपौ (to enemy) मौर्यपुत्रे=सपत्नीपुत्रे चन्द्रगुप्ते (the son of begotten Mura), किम्=कथम् (why), सक्तासि=अनुरक्तासि (have become attached), गन्धगजस्य=मदस्राविहस्तिन (of a scent elephant), नाशे=मरणे सति (at the death), दानाम्बुराजिरिव=मदजलपङ्क्तिरिव (like the line of ichor water), तत्रैव=नन्दनाशकाले एव (at that very time), किम् न=कथन (why not), प्रलयम्=नाशम् प्राप्तासि=गतासि (vanish for ever) ॥ ६ ॥

हिन्दी—(भरी आँखों से आकाश की ओर देखते हुए) देवि लक्ष्मी, तुम गुणों को बिल्कुल जानने वाली नहीं हो। क्योंकि—

अरी चपल, आनन्द के कारण स्वरूप महाराज नन्द को छोड़कर बतलाओ उनके शत्रु चन्द्रगुप्त में क्यों अनुरक्त हो गयीं। तुझ तो अपने महाराज के साथ वैसे ही मर जाना चाहिए था जैसे किसी मतवाले हाथी के मर जाने पर उसके साथ उसकी मदधारा भी सूख जाती है ॥ ६ ॥

English—(Looking toward the sky with tears in his eyes), Mighty, Resider in lotus, you are extremely unappreciative of merit —How—

Tell, O fickle one, why are you attracted towards the enemy (of Nanda) Chandragupta, inspite of the source of your delight

अपि च अनभिजाते.

पृथिव्यां किं दग्धाः प्रथितकुलजा भूमिपतयः
　　पतिं पापे मौर्यं यदसि कुलहीनं वृतवती।
प्रकृत्या वा काशप्रभवकुसुमप्रान्तचपला
　　पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी ॥ ७ ॥

Why did you not vanish at that very time, like the line of ichor water vanishing at the death of a scent elephant ? 6.

टिप्पणी—मत्ता—मद+क्त+टाप् से सिद्ध रूप मत्ता। आनन्दहेतु—आनन्दस्य हेतुः आनन्दहेतुः। कमलालये—कमलानि आलयः अस्याः, कमलालया। कमलालया लक्ष्मी का एक नाम है—लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा, कमला श्रीर्हरिप्रिया-अमरकोष। अगुणज्ञा—गुणान् जानाति इति गुणज्ञा, क, कर्तरि रूप गुणज्ञा।

दानाम्बुराजि की तरह सादृश्यार्थक इव शब्द से लक्ष्मी का दानाम्बुराजि के साथ तुल्यत्व प्रतिपादन से यहाँ उपमा अलङ्कार है। साथ ही 'आनन्दहेतु' शब्दजन्य अभिप्राययुक्त विशेषण पद का साभिप्रायत्वेन अभिधान से परिकर अलंकार है। अतः इस श्लोक में परिकर अलङ्कार से संसृष्ट उपमा अलङ्कार है। वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण तथा वसन्ततिलका वृत्त है। इसका लक्षण—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

विमला

व्याख्या—अपि च=किञ्च (moreover), अनभिजाते=असत्कुल-सम्भूते (you basebron one).

अन्वयः—हे पापे, पृथिव्याम्, प्रथितकुलजाः, भूमिपतयः, दग्धाः, किं, यत् त्वं, कुलहीनम्, मौर्यम्, पतिम्, वृतवती, असि, वा, काशप्रभवकुसुमप्रान्तचपला, पुरन्ध्रीणाम्, प्रज्ञा, प्रकृत्या, पुरुषगुणविज्ञानविमुखी ॥ ७ ॥

व्याख्या—पापे=पापिनि (O, sinful), किमिति प्रश्ने (why), पृथिव्याम्=भूमौ (on the earth), प्रथितकुलजाः=प्रख्यातवंशोत्पन्नाः (born of illustrious races), भूमिपतयः=नृपतयः (all kings), दग्धाः=अग्नौ भस्मीभूताः (reduced to ashes), यत्=यस्मात् कारणात् (that), त्वम् (you), कुलहीनम्=नीच-कुलोत्पन्नम् (low extraction), मौर्यम्=मुरापुत्रम् (outcast son of Mura), पतिम्=वल्लभम् (spouse or lord) वृतवती=स्वीकृतवती असि (have chosen), वा=अथवा (or), काशप्रभवम्=काश-तृणजातम् यत् कुसुमम्=पुष्पम् तस्य प्रान्तः=अग्रभागः तद्वत् चपला=चञ्चला (fickle like the tip of flowers that grow on Kasa), पुरन्ध्रीणाम्=कामिनीनाम् (women's), प्रज्ञा=बुद्धिः (the mind), प्रकृत्या=स्वभावेन (by nature), पुरुषाणाम्=आश्रयभूतानाम् जनानाम् (men's), गुणाः=शौर्यादयः गुणाः (the merits), तेषां विज्ञाने=परिज्ञाने (to the appreciation), विमुखी=वामा अर्थात् आग्रहशून्या पराङ्मुखी भवतीति (is averse). ॥ 6 ॥

अपि च अविनीते, तदहमाश्रयोन्मूलनेनैव त्वामकामां करोमि। (विचिन्त्य।) मया तावत्सुहृत्तमस्य चन्दनदासस्य गृहे गृहजनं निक्षिप्य नगरान्नि-

---

हिन्दी—और भी अकुलीने—

अरी पापिनि, क्या पृथ्वी पर प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न सभी राजे मर गये, थे कि तुमने अकुलीन मौर्य को पति के रूप में वरण किया ? अथवा—(इसमें तुम्हारा क्या दोष) काश कुसुम के छोर के समान चंचल स्त्रियों की बुद्धि ही स्वभावतः पुरुषों के गुणों को पहचान में असमर्थ होती है। ७॥

English—Moreover, O illegitimate woman Are all kings on the earth died, that you have selected Chandragupta, a base born as your lord ? Or—the brain of a woman is naturally unstable like the lip flowers of Kasa in appreciating the merits of man 7.

टिप्पणी—**कुलहीनम्**—'मुरा नामक शूद्रा दासी के गर्भ से चन्द्रगुप्त का जन्म हुआ था, अतः उसका नाम 'मुराया उत्पन्न' इस व्युत्पत्ति के अनुसार 'मौर्य' हुआ। अतः वह राजा होते हुए भी अकुलीन है। **पुरन्ध्रीणाम्**—पुरम् गेहम् धारयतीति धरतीति वा पुरन्ध्री = सुन्दर स्त्री। पुर + √धृ + खिच् + खच् + ङीष् + विभक्ति कार्य। **काशप्रभव**—काश प्रभवत्यस्मात् इति प्र + भू + अप् अपादाने प्रभव। **विमुखी**—विवृत्तम् मुखम् अस्या इति विमुखी।

इस श्लोक में अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है। भगवति कमलालये इत्यादि राक्षस के वितर्क प्रतिपादनरूप नामाङ्ग है। प्रकृत्येत्यादि परार्द्धक सामान्य से पृथिव्याम् इत्यादि पूर्वार्द्धात्मक विशेष के समर्थन से यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है। क्योंकि यहाँ सामान्य बात कहकर उसका विशेष से समर्थन किया गया है यह सादृश्य गर्भ अलकारों के अन्तर्गत गम्यौपम्याश्रय वर्ग का अलंकार है। इसमें यद्यपि दोनों खण्ड स्वतन्त्र हैं फिर भी दोनों में समर्थन के द्वारा सादृश्य की स्थापना है। इसका लक्षण साहित्यदर्पण में—"सामान्य वा विशेषेण विशेषस्तेन वा यदि। कार्यं च कारणेनेदं कार्येण च समर्थ्यते। साधर्म्येणेतरेणार्थान्तरन्यासोऽष्टधा ततः।" और फिर वह 'प्रान्तचपला' यहाँ प्रान्त इव चपला इस विग्रह से उपमा अलकार से संसृष्ट अर्थान्तरन्यास है। इसमें वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण एवं प्रगल्भ शब्द के अधिक्य कथन से अधिक पदत्व दोष भी है। शिखरिणी वृत्त है। लक्षण पहले लिखा जा चुका है।

विमला

व्याख्या—अपि च = अन्यच्च (moreover), अविनीते = दुःस्वभावे (o ill bred one), तत् = तस्मात् कारणात् (for that), आश्रयस्य = मौर्यात्मकस्त्वदाश्रयस्य (of your shelter), उन्मूलनेनैव = विनाशेनैव (by destroying), त्वाम् = भवतीम् (you), अकामाम् = निष्फलाभीष्टाम् अहम् करोमि = अहम् सम्पादयामि (*I will defeat you in your object*), [विचिन्त्य = किञ्चित् विचार्य (Reflecting)] मया तावत् (I, for myself), सुहृत्तमस्य = मित्रवर्यस्य (of my best friend), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), गृहे = सदने (in house), गृहजनम् = कलत्रम् (my family), निक्षिप्य = न्यासीकृत्य (in keeping), नगरात् = पुरात् (from

गच्छता न्याय्यमनुष्ठितम् । कुतः । कुसुमपुराभियोगं प्रति अनुदासीनो राक्षस इति तत्रस्थानामस्माभिः सहैककार्याणां देवपादोपजीविनां नोद्यमः शिथिलीभविष्यति । चन्द्रगुप्तशरीरमभिद्रोग्धुमस्मत्प्रयुक्तानां तीक्ष्णरसदायिनामुपसंग्रहार्थं परकृत्योपजापार्थं च महता कोशसंचयेन स्थापितः शकटदासः । प्रतिक्षणमरातिवृत्तान्तोपलब्धये तत्संहतिभेदनाय च व्यापारिताः सुहृदो जीवसिद्धिप्रभृतयः । तत्किमत्र बहुना ।

---

the town), निर्गच्छता = निःसरता (while marching out), न्याय्यम्=समुचितम् (right thing), अनुष्ठितम्=विहितम् (did), कुत =किंकारणमिति (why), कुसुमपुरस्य=पाटलिपुत्रस्य (Kusumpura), अभियोगम् = आक्रमणम् (to an attack), प्रति (on) अनुदासीनः=प्रयत्नहीनः (in not indifferent), राक्षसः= नन्दप्रधानसचिवः (Rakshasa), इति=अस्माद्धेतोः (for this), तत्रस्थानाम्= तत्स्थाने वर्तमानानाम् (staying there), देवपादोपजीविनाम्=देवानुचराणाम् (adherents of His majesty), अस्माभिः सह (with us), एककार्याणाम् (with a common object), उद्यमः=चेष्टा (the efforts), नः=नहि (not), शिथिलीभविष्यति = मन्दः सम्पद्यते (will slacken), चन्द्रगुप्तस्य = वृषलस्य, शरीरम्= देहम्, अभिद्रोग्धुम् = जिघांसुम् (to injure the person of Chandragupta), अस्मत्प्रयुक्तानाम् = मत्प्रेरितानाम् (employed by me), तीक्ष्णरसदायिनाम् = तीक्ष्णरसम् विषम् ददति तच्छीला इति तीक्ष्णरसदायिनस्तेषाम् तीक्ष्णरसदायिनाम् (to administer poison), उपसंग्रहार्थम् = सञ्चयार्थम् (for keeping), परकृत्योपजापार्थञ्च = परस्य=शत्रोः (enemis), कृत्यम् = कार्यम् (secret doing), तस्य उपजापः = भङ्गः (for communicating), महता = प्रचुरेण (vast), कोशसञ्चयेन = धनराशिना (supply of fund), स्थापितः = नियुक्तः (has been stationed), शकटदासः (Sakatdasa), प्रतिक्षणम् = अनवरतम् (every moment), अरातिवृत्तान्तोपलब्धये = शत्रुवृत्तान्त प्राप्तये (to get full news of the enemies), तत्संहतिभेदाय=शत्रुमेलनभङ्गाय (to break up their confederacy), व्यापारिताः = नियुक्ताः (have been employed), सुहृदः = मित्राणि (friends), जीवसिद्धिप्रभृतयः = जीवसिद्धिप्रमुखाः (Jivasidhi and others), तत् = तस्मात् कारणात् (so), किमत्र बहुना = अधिकेनास्मिन् किम् ? (why waste more words on this matter ?).

हिन्दी—और भी—

का दुःशाल, अब मैं तुम्हारा आचार हो नष्ट कर तुम्हें स्वकार्यसिद्धि में विकल कर देता हूँ । (कुछ सोचकर) ऐसा लगता है कि मैंने जो अपना परिवार अपने मित्र चन्दनदास के घर रख कर पाटलिपुत्र छोड़ा, वह अच्छा ही किया । क्योंकि इससे हमारे सहकारी स्वामिभक्तों का गतिविधि में शिथिलता नहीं आने पावेगी । यह अनुभव करके कि पाटलिपुत्र पर आक्रमण के सम्बन्ध में इस सकटकाल में भी राक्षस के प्रयत्न शिथिल नहीं हैं । चन्द्रगुप्त के शरीर पर आघात पहुँचाने के लिए हमारे द्वारा नियुक्त विषैपधि देनेवालों का संग्रह करने के लिए और शत्रुओं के कार्यों का भेद

इष्टात्मजः सपदि सान्वय एव देव
शार्दूलपोतमिव यं परिपोष्य नष्टः ।
तस्यैव बुद्धिविशिखेन भिनद्मि मर्म
वर्मीभवेद्यदि न दैवमदृश्यमानम् ॥ ८ ॥

बतलाने के लिए विशाल कोशराशि के साथ शकटदास वहाँ रख दिया गया है। प्रत्येक क्षण शत्रुओं के समाचारों को जानने के लिए और उनके संगठन को छिन्न भिन्न करने के लिए जीवसिद्धि आदि मित्र लगा दिये गये हैं। तो इस विषय में अधिक कहने से क्या लाभ ?

English—And further, O ill bred one, I am failing you by destoying your shelter (Thinking) I have done good in having my family in the house of my best friend Chandandas, at the time of coming out of the city Because, Rakshasa is not still disappointed at the attack on Kusumpur, thinking this all inhabitants of Kusumpur will never be looser in action of His majesty Nanda Sakatdas is deputed there with a vast supply of treasure for the maintenance of the persons appointed by us to administer poisonous medicines and to injure the body of Chandragupta and communicate us the secrets matter of enemy. Jivasidhi and other friends are engaged to inform us every news of enemy at every moment and to destroy their unity So what is to say more in this matter ?

टिप्पणी—आश्रयोन्मूलनेन—आश्रीयते इति 'आ'उपसर्गपूर्वक 'श्रि' धातु से कर्म में णिच् प्रत्यय कर तृतीयान्त यह रूप है। अकामाम्—अनाप्त काम अनया अथवा असिद्ध काम अस्या इत्यादि। देवपाद—देवपादान् उपजीवन्ति आश्रित्य वर्तयन्ति इति देवपाद+उप+जीव+णिनि+कर्तरि ताच्छील्ये। तेषाम्। उप+जीव, उपसर्गवशात् सकर्मकत्वम् से सकर्मक है और प्रशंसावचनैश्च' से नित्य समास हुआ। कोषसञ्चयेन—सञ्चितेन कोशेण इस विग्रह में सहायक तृतीया विभक्ति हुई। प्रतिक्षणम्—'क्षणे क्षण इति' इस विग्रह में 'योग्यता वीप्सा पदार्थानति वृत्ति सादृश्य यथार्था –इस सूत्र से वीप्सा के अर्थ में अव्ययीभाव समास हुआ। तत् संहति—सम्+हन्+क्तिन् भाव के अर्थ में संहति रूप की सिद्धि। अराति—इसमें तादर्थ्यक चतुर्थी विभक्ति हुई है। शकटदास और जीवसिद्धि—ये दोनों ही चाणक्य के गुप्तचर हैं, जिन्हें राक्षस भ्रमवश अपना मित्र मान रहा है।

विमला

अन्वयः—इष्टात्मजः देव, यम, शार्दूलपोतम, इव, परिपोष्य, सपदि, सान्वय नष्टः, तस्य, एव, मर्म, बुद्धिविशिखेन भिनद्मि, यदि, अदृश्यरूपम्, दैवम्, एव, न वर्मी भवेत् ॥ ८ ॥

व्याख्या—इष्टात्मजः=इष्टा =प्रिया, आत्मजा =पुत्रा यस्य असौ इष्टात्मजः (हेतुगर्भ विशेषणमिदम्) (fond of sons), देव=स्वामीनन्द (sire), यम्=

(ततः प्रविशति कञ्चुकी)

कञ्चुकी—

कामं नन्दमिव प्रमथ्य जरया चाणक्यनीत्या यथा
धर्मो मौर्य इव क्रमेण नगरे नीतः प्रतिष्ठां मयि।
तं संप्रत्युपचीयमानमनु मे लब्धान्तरः सेवया
लोभो राक्षसवज्जयाय यतते जेतुं न शक्नोति च ॥ ९ ॥

चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta) शार्दूलपोतम्=व्याघ्रशावकम् (a tiger cub), इव=यथा (like), परिपोष्य=परिपाल्य (having brought up), सपदि=झटिति (suddenly). सान्वय=सकुलः (with the whole family) नष्टः=विनाशं प्राप्तः (perished), तस्य=नन्दविनाशहेतुभूतस्य चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta), एव=सपदि (just so), मर्म=मर्मस्थानम् (vital part of the body), बुद्धिविशिखेन=मतिबाणेन (with the arrow of my wit). भिनद्मि=विदार यामि (I shall rend), यदि=चेत् (if), अदृश्यरूपम्=अप्रत्यक्षम् (invisible), दैवम्=भाग्यम् (fate), एव=साक्षात् (quite), न वर्मनिर्वेदः=कवचरूपम् न स्यात् (will not serve as an armour). ॥ ८ ॥

हिन्दी—जिन महाराज नन्द जिस चन्द्रगुप्त को सिंह शावक की तरह पालकर, सारे कुल सहित नष्ट हो गये, उस चन्द्रगुप्त के मर्मस्थान को मैं अपनी बुद्धि के बाणों से ही भेदन करूँगा। यदि अदृश्य भाग्य ही कवच बनकर उसकी रक्षा न करता हो ॥ ८ ॥

English—I shall rend with the arrow of my wit the vital parts of that very person whom, sure fond of sons, having brought up like a cub of a tiger, suddenly perished even with the whole family, if invisible fate will not serve as an armour. 8.

टिप्पणी—परिपोष्य—परि+पुष्+ल्यप्। नष्ट—नश्+क्त—विभक्ति कार्यम्। भिनद्मि—भविष्यार्थक वर्तमानकालिक प्रयोग है। अदृश्यरूपम्—न दृश्यम् अदृश्यम् अदृश्य रूपमस्य तत् अदृश्यरूपम्। "शार्दूलपोतमिव यम्" यहाँ सामान्य धर्म है तथा स्नेहादिक विनाशक औपम्यवाचक 'इव' शब्द के साथ उपमेय 'यम्' शब्द वाच्य चन्द्रगुप्त, उपमान शार्दूलपोत तथा इन सबों के वाच्यत्व से यहाँ पूर्णोपमा अलङ्कार है।

इसी प्रकार चन्द्रगुप्त में शार्दूलपोतत्व के आरोप से रूपक अलङ्कार है। इस प्रकार उपमा और रूपक के योग से इस श्लोक में संसृष्टि अलङ्कार है। कुछ विद्वानों की दृष्टि में प्रकृत अभिचार व्यापारोपयोगी कवच में दैवत्व के आरोप से इस श्लोक में परिणाम अलङ्कार है। यहाँ शार्दूलविक्रीडित या वसन्ततिलका वृत्त है—'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः'।

विमला

[ततःप्रविशति कञ्चुकी=(Then enters the Chamberlain)] कञ्चुकी=अन्तःपुरचर (Chamberlain) :—

अन्वयः—चाणक्यनीत्या, यथा, जरया, नन्दम्, इव, कामम्, प्रमथ्य, क्रमेण नगरे

मौर्य, इव, मयि, धर्म, प्रतिष्ठाम्, नीत, सम्प्रति, (मलयकेतो) सेवया उपचीयमानम्, तम्, अनु, लब्धान्तर, राक्षसवत्, मे, लाभ, जयाय, यतते, च, जेतुम्, न, शक्नोति ॥१॥

व्याख्या—चाणक्यनीत्या = कौटिल्यनयेन (by Chankya's policy), यथा = इव (as) जरया = वृद्धावस्था (by old age), नन्दमिव = नन्दराजमिव (like Nanda) कामम् = विषयाभिलाषम् (passion), प्रमथ्य = उपमर्द्य (cradicated) क्रमेण = शनैः शनैः (gradually), नगरे = पुरे (in the city), मौर्यं = चन्द्रगुप्त (Chandragupta), इव = यथा (as), मयि = जाल्मी (in me), धर्मं = सुकृतम् (piety), प्रतिष्ठाम् = स्थितिम्, नीत = प्रापित (frirmly established), सम्प्रति = अधुना (now), सेवया = शुश्रूषया (through service), उपचीयमानम् = वर्द्धमानम् (in growing) तम् = चन्द्रगुप्तम् (to Chandragupta), अनु = लक्ष्यीकृत्य (aiming at), लब्धान्तर = प्राप्तावसर (*having got an opportunity*), राक्षसवत् (like Rakshasa), मे = मम (my) लोभ = सांसारिकी-इच्छा (avarice), जयाय = विजयाय (for victory), यतते = प्रयतते (is trying) च = किन्तु (but), जेतुम् = पराभवितुम् (in conquering) न शक्नोति = न समर्थो भवति (does not succeed) ॥ १ ॥

हिन्दी— (इसके बाद कन्चुकी प्रवेश करता है)

चाणक्य की नीति के समान वृद्धावस्था के द्वारा नन्द के सम न प्रिय वासना को नष्ट करके क्रमशः नगर में चन्द्रगुप्त के समान मुझमें धर्म कर्म प्रतिष्ठा को प्राप्त कर दिया गया। इस समय सेवा के द्वारा बढते हुये उस चन्द्रगुप्त को लक्ष्य करके अवसर पाकर राक्षस के समान मेरा लोभ जीतने के लिए कोशिश कर रहा है किन्तु जीतने में समर्थ नहीं हो पा रहा है ।१।

English—(Then enters Chamberlain)

Chamberlain—The piety (Dharma) is introduced in me by the old age as the policy of Chanakya destroyed Nanada and crowned Chandragupta in the city of Kusumpur, being free from all desires and passions Now, it is trying to subjugate me after getting an opportunity of Rakshasa is doing to win Chandragupta getting the help of (Malayaketu), but both are not successful

(Rather as the policy of Chanakya made Chandragupta the king after destroying Nanda and Rakshasa is in search of a Chance to subjugate him but is not successful, similarly the old age has establish piety in me destroying my passions)

My greed after getting a chance from my service to Malayaketu *in lieu of money, is trying to win that propriety* but is not getting success 9

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा एवं समासोक्ति अलंकार है। वैदर्भी रीति एवं प्रसाद गुण है तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

(परिक्रम्योपसृत्य च ।) इदममात्यराक्षसस्य गृहम्। प्रविशामि। (प्रविश्यावलोक्य च।) स्वस्ति भवते।

राक्षस—आर्य, अभिवादये। प्रियंवदक, आसनमानीयताम्।

पुरुष—एदं आसणम्। उवविसदु अज्जो। (इदमासनम्। उपविशतु आर्यः।)

कञ्चुकी—(उपविश्य।) कुमारो मलयकेतुरमात्यं विज्ञापयति। चिरात्प्रभृत्यार्यः परित्यक्तोचितसंस्कार इति पीड्यते मे हृदयम्। यद्यपि सहसा स्वामिगुणा न शक्यन्ते विस्मर्तुं तथापि मद्विज्ञापना मानयितुमर्हत्यार्यः। (इत्याभरणानि प्रदर्श्य।) इमान्याभरणानि कुमारेण स्वशरीरादवतार्य प्रेषितानि धारयितुमर्हत्यमात्यः।

राक्षस—आर्य जाजले, विज्ञाप्यतामस्मद्वचनात् कुमारः। विस्मृता एव भवद्गुणपक्षपातेन स्वामिगुणाः। किंतु—

विमला

व्याख्या—परिक्रम्य = सञ्चर्य (going round), च = पुनः (and), उपसृत्य = समापमय (walking forth), इदम्—अमात्यराक्षसस्य = इदममात्यराक्षसस्य (this is), अमात्यराक्षसस्य (minister Rakshasa s), गृहम् = सदनम् (house), प्रविशामि = अभ्यन्तरम् गच्छामि (I will enter), (प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (Entering) च = पुनः (and), अवलोक्य = दृष्ट्वा (looking about) भवते = तुभ्यम् (to you), स्वस्ति = कल्याणं (prosperity)

राक्षसः—आर्य = श्रेष्ठ (sir), अभिवादये = प्रणमामि (I bow), प्रियंवदक (Priyambadak), आसनम् = आस्तरणम् (seat), आनीयताम् (bring).

पुरुषः—इदम् (Here is), आसनम् = आस्तरणम् (a seat), आर्यः = मान्य (venerable sir), उपविशतु = समासीना भवतु (may sit down)

कञ्चुकी—[उपविश्य = उपवेशनम् कृत्वा (sitting down)], कुमारः = पर्वतकपुत्रः (Prince), मलयकेतु (Malyaketu), अमात्य = मन्त्रिणम् (to minister), विज्ञापयति = निवेदयति (requests), चिरात् प्रभृति = बहुदिवसतः (for a long time), आर्यः = भवान् (your Honour), परित्यक्त = वर्जितः (has left off), उचितसंस्कारः = योग्यालङ्करणम् (personal decorations), इति = इतो (that), मे = मम (my), हृदयम् = चित्तम् (heart) पीड्यते (is grieved) यद्यपि (though), स्वामिगुणाः = राज्ञः दयादाक्षिण्यादिगुणाः (the merit of the master), सहसा = द्रुतम् (at once), विस्मर्तुम् = विस्मरणम् कर्तुम् (forgotten), न शक्यन्ते (cannot be), तथापि (yet), मद्विज्ञापना = मत्प्रार्थनाम् (my request), मानयितुम् = स्वीकर्तुम् (to entertain), अर्हत्यार्यः (will be pleased to honour), इति = इत्युक्त्वा (to saying), आभरणानि = अलङ्करणानि (the

ornaments), प्रदर्श्य=दर्शयित्वा (showing him) इमानि=प्रत्यक्षदृश्यमानानि (these), आभरणानि=अलङ्करणानि (ornaments), कुमारेण=मलयकेतुना (by the prince), स्वशरीरात्=निजकायात् (from his person), अवतार्य (having taken them off), प्रेषितानि (have been sent), अमात्य = भवान् (Noble sir), धारयितुमर्हति = (will please put on)

राक्षस—आर्य=मान्य (Noble sir), जाजले=कञ्चुकिन् (O Jajali), अस्मद्वचनात्=मदुक्त्या (in my name), कुमार =मलयकेतु (to the prince), विज्ञाप्यताम्=निवेद्यताम् (respectfully say) विस्मृता एव=अविदितप्राया एव (have already been forgotten), मया (by me), स्वामिगुणा =प्रभो गुणा= (merits of my lord), भवद्गुणपक्षपातेन (through my attachment to your Highness merits), किन्तु=तथापि (However) —

हिन्दी—(घूमकर और पास जाकर) यह अमात्य राक्षस का घर है चलूँ भीतर । (प्रवेश करके और देखकर) कल्याण हो महामात्य

राक्षस—आर्य प्रणाम करता हू । प्रियंवदक, आसन लाओ ?

पुरुष—यह आसन है । आर्य बैठें ।

कञ्चुकी—(बैठकर) कुमार मलयकेतु आपसे निवेदन करते हैं—आर्य ने बहुत दिनों से शरीर के उचित साज शृङ्गार को छोड दिया है, इसीसे हमारा हृदय दुखी हो रहा है । यद्यपि एका एक स्वामी (नन्द) के गुण भुलाये नहीं जा सकते फिर भी यह प्रार्थना अवश्य स्वीकृत हो (इतना कहकर आभूषणों को दिखाकर) ये आभूषण कुमार ने अपने शरीर से उतार कर भेजा है । अमात्य इसे धारण करें ।

राक्षस—आर्य, जाजल । मेरी ओर से कुमार को कृपया यह निवेदित कर दिया जाय कि उनके गुणों के प्रति मेरे अनुराग ने महाराज नन्द के गुणों को भुला सा दिया है । किन्तु,

English—(Walking round and going nearer) This is the house of Minister Rakshasa. I will enter (Entering and looking) Blessing to you

Rakshasa—Noble sir, I bow, Priyambadak, bring a seat.

Man—This is a seat. Let Noble sir be seated

Chamberlain—(Sitting) prince Malayaketu requests your Honour— My heart is dsitresed that your Honour has left off your personal dressing for a long time Though the merits of lord (Nanda) are not to be forgotten soon (by you), yet, my request is acceptable (you should accept my request) (after talking such, showing ornaments) These ornaments are given to you by prince (Malayaketu) casting off from his body, which is capable of being put on (let you put these on)

Rakshasa—Worthy Jajali, repectfully say to the prince in my name—from an appreciation of your virtues, the merits of lord Nanda have already been forgotten by me;—However .—

न तावन्निर्वीर्यं परपरिभवाक्रान्तिकृपणे
वहाम्यङ्गेरेभिः प्रतनुमपि संस्काररचनाम् ।
न यावन्निःशेषक्षपितरिपुचक्रस्य निहितं
सुगाङ्गे हेमाङ्कं नृवर तव सिंहासनमिदम् ॥ १० ॥

विमला

अन्वय—हे नृवर, यावत्, निःशेषक्षपितरिपुचक्रस्य, तव हेमाङ्कम् इदम्, सिंहासनम्, सुगाङ्गे, न, निहितम्, तावत् परपरिभवाक्रान्तिकृपणे, निर्वीर्यं, एभिः, अङ्गैः, प्रतनुम्, अपि, संस्काररचनाम् , न, वहामि ॥ १० ॥

व्याख्या—हे नृवर=हे राजन् (O best of men), यावत्=यावत्कालम् (so long), निःशेषम्=समग्रम् (completely), यथा स्यात्तथा, क्षपितम्=नाशितम् (destroyed), रिपुचक्रम्=शत्रुसमूहम् (the circle of enemies), तव=ते (your), हेमाङ्कम्=सुवर्णमण्डितम् (golden), इदम्=एतत् (this), सिंहासनम्=राजासनम् (throne), सुगाङ्गे=एतन्नामके राजप्रासादे (in the Suganga palace), न=नहि (not), निहितम्=स्थापितम् (placed), तावत्=तावत्कालम् (as), परैः=शत्रुभिः (by the enemies), यः परिभवः=तिरस्कारः (indignities), तेन या आक्रान्तिः=आघातः (placing upon), तेन=कृपणैः=दीनैः (pitiable), अत एव निर्वीर्यैः=तेजोहीनैः (powerless), एभिः=मदीयैः (these my) अङ्गैः= अवयवैः (limbs), प्रतनु=अल्पतरम् (slightest), अपि संस्काराणाम्=आभूषणानाम् (ornaments), रचना=विन्यासम् (decoration), न वहामि=न धारयामि (will not wear). ॥ १० ॥

हिन्दी—हे नरश्रेष्ठ ! शत्रु के द्वारा पराभव से अवमत और निर्वीर्य हो चुके इस शरीर पर मैं तबतक कुछ भी आभूषण धारण नहीं करूँगा, जब तक कि तुम्हारे सम्पूर्ण शत्रुओं को आमूल नष्ट करके सुगाङ्ग महल में तुम्हारा स्वर्णसिंहासन प्रतिष्ठित नहीं कर देता । १० ।

English—I will not wear the slightest decoration on these my *limbs which are powerless and miserable through the heaping of* indignities by the enemy, so long as O best of men, this golden throne of your Highness, with the circle of your enemies completely destroyed, is not placed in the Suganga palace 10

टिप्पणी—जाजले—जाजलिन् का अर्थ है सन्त । जाजालेः अपत्यं पुमान् इति जाजलिन् + अण् जाजल इन्' प्रत्यय का लोप 'तद्धित' से हुआ है । जाजलस्य गोत्रापत्यं पुमान् इति जाजल + इञ् अथवा फिञ् प्रत्यय से सिद्ध रूप जाजलि अथवा जाजलायनि—'उदीचां वृद्धादगोत्रात्' से रूप की सिद्धि । जाजलि शब्द कञ्चुकी के लिए प्रयुक्त होता है । निर्वीर्यैः—निर् निर्गतं वीर्यम्, यस्मात् इति निर्वीर्यं अर्थात् तेजहीन व्यक्ति । आक्रान्ति—आ उपसर्ग से क्रम् धातु + क्तिन् प्रत्यय विभक्त्यादि कार्य से रूप सम्पन्न । निःशेष—निर्गतः शेषः यस्मिन् तद् यथा तथा निःशेष

कञ्चुकी—अमात्ये नेतरि सुलभमेतत्कुमारस्य। तत्प्रतिमान्यता कुमारस्य प्रथमः प्रणयः।

राक्षसः—आर्य, कुमार इवानतिक्रमणीयवचनो भवानपि। तदनुष्ठीयते कुमारस्याज्ञा।

कञ्चुकी—(नाट्येन भूषणानि परिधाप्य।) स्वस्ति भवते। साधयाम्यहम्।

राक्षसः—आर्य, अभिवादये।

(कञ्चुकी निष्क्रान्तः।)

राक्षसः—प्रियंवदक, ज्ञायतां कोऽस्मद्दर्शनार्थी द्वारि तिष्ठतीति।

पुरुषः—ज अमच्चो आणवेदि त्ति। (परिक्रम्य आहितुण्डिकं दृष्ट्वा।) अज्ज, को तुमम्। (यदमात्य आज्ञापयतीति। आर्य, कस्त्वम्।)

'क्षपणकिया' की विशेषता बतलाता है। सुगाङ्गे—पाटलिपुत्र के तत्कालीन राजमहल को सुगाङ्ग कहा जाता था। विज्ञापनम्—वि √ज्ञा + णिच् + ल्युट् + पुगागम + टाप् + विभक्ति कार्य।

इस श्लोक में निर्वीर्यादि सत्कार रचना परित्याग रूप उपयुक्त विशेषण के कथन से इस श्लोक में परिकर नामक अलङ्कार है। यथा—"उक्तैर्विशेषणै साभिप्रायै परिकरो मत।" साहित्यदर्पण।

जिस प्रकार उपकरणों के द्वारा किसी वस्तु की रमणीयता बढ जाती है, उसी प्रकार इस श्लोक में उक्त साभिप्राय विशेषणों के प्रयोग से राक्षस के कथन में सौंदर्य आ गया है। अत सादृश्य गर्भ के गम्यौपम्यवर्ग के अन्तर्गत विशेषण वैचित्र्य से सम्बन्धित रहने के कारण यहाँ परिकर अलङ्कार हुआ है। ओज गुण तथा पाञ्चाली रीति है। शिखरिणी छन्द है। यथा—"रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला ग शिखरिणी।"

विमला

व्याख्या—कञ्चुकी—अमात्ये = मन्त्रिणि (minister), नेतरि = नायके सति (is the leader or guiding), एतत् (this is), कुमारस्य = मलयकेतो (for the prince), सुलभम् = सुकरम् (is easy), तत् = तस्मात् कारणात् (therefore), प्रतिमान्यताम् = स्वीक्रियताम् (be granted), कुमारस्य = मलयकेतोः (of the prince), प्रथम = मुख्य (the first), प्रणय = प्रार्थना (request)

राक्षस —आर्य = मान्य (Noble sir), कुमार इव = मलयकेतुरिव (like the prince), अनतिक्रमणीयवचन = अनुल्लङ्घनीयशासन (cannot be disregarded), भवानपि = त्वमपि (you too)

कञ्चुकी—[(नाट्येन = नटोचितव्यापारेण=gesticulates), भूषणानि=अलङ्करणानि (ornaments), परिधाप्य = सन्निवेश्य (putting on)], स्वस्ति भवते = तुभ्य कल्याण भूयात् (Blessing unto thee), अहम् (I), साधयामि = कार्यसम्पादनाय गच्छामि (retire)

राक्षस —आर्य = मान्य (sir,) अभिवादये (I bow).

कञ्चुकी (Chamberlain), निष्क्रान्तः (departs)

आहितुण्डिकः—भद्द, अहं खु आहितुण्डिओ जिण्णविसो णाम। इच्छामि अमच्चस्स पुरदो सप्पेहिं खेलिदुम् (भद्र, अहं खल्वाहितुण्डिको जीर्णविषो नाम। इच्छाम्यमात्यस्य पुरतः सर्पैः खेलितुम्।)

राक्षस—प्रियंवदक (Priyambadak), ज्ञायताम्=बुध्यताम् (ascertain), कः=किंनामकः (who is), अस्मद्दर्शनार्थी=मद्दर्शनाभिलाषुकः (desırous of seeing me), द्वारि=प्रतिहारभूमौ (at the door), तिष्ठति=वर्तते (waits)

पुरुष—अमात्य (minister), यत्=यावत् (as), आज्ञापयति=आदिशति (command), [(परिक्रम्य=turning), आहितुण्डिकम्=सर्पक्रीडोपजीविनम् (Snake charmer), दृष्ट्वा=अवलोक्य (observing)], आर्य=मान्य (Noble sir), त्वम्=भवान् कः=किंनामकः (who are you).

हिन्दी—कञ्चुकी—अमात्य, आपके नेतृत्व में कुमार के लिए ये वस्तुयें अत्यन्त सुलभ हैं। अतः कुमार के प्रथम प्रणय को स्वीकृत करें।

राक्षस—मान्यवर, कुमार की ही तरह आपके वचन भी अनुल्लंघनीय हैं। अतः मान ली मैंने कुमार की आज्ञा।

कञ्चुकी—(आभूषणों को पहनाने का अभिनय करते हुए) मङ्गल हो अमात्य, मैं जा रहा हूँ।

राक्षस—आर्य, आपको मैं प्रणाम कर रहा हूँ।

(कञ्चुकी का प्रस्थान)

राक्षस—प्रियंवदक, जाओ, पता लगाओ, कौन द्वार पर मिलने के लिए खड़ा है।

पुरुष—अमात्य की जैसी आज्ञा (घूमकर सँपेरे को देखकर) आर्य, तुम कौन हो?

English—*Chamberlain*—Minister guiding, it is easy for the prince to accomplishd. So, let first request of prince be granted.

Rakshasa—Worthy sir, as of the prince, your words too cannot be disregaded. Therefore this first request of the prince be granted.

Chamberlain—(acting the putting on of the ornaments) Blessings unto thee I take my departur.

Rakshasa—Venerable sir, I bow (Chamberlain departs).

Rakshasa—Priyambadaka, ascertain, who waits at the door desiring an interview with me.

Man—As minister commands (going round and observing the Snaks charmer) sir, who are you?

विमला

व्याख्या—आहितुण्डिक—भद्र=कल्याणिन् (gentle), अहम् खलु आहितुण्डिकः=सर्पक्रीडनोपजीवी (I am a Snake charmer), जीर्णविषो नाम=जीर्णविषाभिधानः (Jirnavisha by name), अमात्यस्य पुरतः=मन्त्रिराक्षसस्याग्रे (before the

पुरुष —चिट्ठ जाव अमच्चस्स णिवेदेमि । (राक्षसमुपसृत्य ।) अमच्च, एसो खु सप्पजीवी इच्छदि सप्प दसेदुम् । (तिष्ठ यावदमात्यस्य निवेदयामि । अमात्य, एष खलु सर्पजीवी इच्छति सर्पं दर्शयितुम् ।)

राक्षस —(वामाक्षिस्पन्दन सूचयित्वा आत्मगतम् ।) कथ प्रथममेव सर्पदर्शनम् । (प्रकाशम्) प्रियवदक, न न कौतूहल सर्पेषु । तत्परितोष्य विसर्जयैनम् ।

प्रियवदक—तथा । (इत्युपसृत्य ।) अज्ज, एसो खु दे दसणकज्जेण अमच्चो पसाद करेदि । ण उण सप्पदसणेण । (आर्य, एष खलु ते दर्शनकार्येणामात्य प्रसाद करोति । न पुन सर्पदर्शनेन ।)

---

minister), सर्पैं = नागै (with Snakes) खेल्तिुम् = क्रीडितुम् (to play), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish)

पुरुष—यावत् = यत्कालपर्यन्तम् (till), अमात्यस्य निवेदयामि=मन्त्रिण विज्ञापयामि (infrom the minister), तिष्ठ = आस्ताम (wait), [(राक्षसमुपसृत्य = मन्त्रिण समीप प्राप्य (approaching Rakshasa), अमात्य = मन्त्रिन् (Minister), एष खलु = अयम् (Here is) सर्पजीवी = आहितुण्डिक (Snake charmer), सर्पम् = नागम् (Snakes), दर्शयितु (to show), इच्छति = वाञ्छति (wishes)

राक्षस —[(वामाक्षिस्पन्दनम् = सव्यनेत्रस्येषत्कम्पनम् (quivering of the left eye), सूचयित्वा = अभिनय कृत्वा (acting) आत्मगतम्=स्वगतम (To himself)], प्रथममेव = पूर्वमेव (at the very first), सर्पदर्शनम् = व्यालावलोकनम् (the sight of Snake), कथम् = कस्मात् कारणात् (how so), [(प्रकाशम् = सुस्पष्टम् aloud)] प्रियवदक (Priyambadak) न = अस्माकम् (we) सर्पषु = नागेषु (in Snakes), कौतूहलम् = औत्कण्ठ्यम् (curiosity), न = नहि (no), तत् = तस्मात् कारणात् (so), एनम् = व्यालोपजीविनम् (him), परितोष्य = सतुष्ट कृत्वा (satisfy), विसर्जय = इतो बहिष्कुरु (let him go)

प्रियवदक —तथा = भवदीय निदेश करोमि (so be it) [(इत्युपसृत्य-समीपगत्वा (Approaching)], आर्य = मान्य (sir), एष खलु = अयम् (here), ते = तव (your), दर्शनकार्येण-सर्पक्रीडनकार्येण (work of Exhibition), अमात्य = राक्षस (minister), प्रसाद करोति=उपहारम् ददाति (favour by giving reward), न पुन (but not), सर्पदर्शनेन=सर्पक्रीडन दृष्ट्वा (with a look at the Snakes)

हिन्दी—सँपेरा—भद्र म जीर्णविष नामक सँपेरा हू । मैं अमात्य के सामने साँपों का खेल दिखाना चाहता हू ।

पुरुष—रुको, जब तक तुम्हारी बात अमात्य से निवेदित करता हू । (राक्षस के पास जाकर) आर्य, यह सँपेरा साँप दिखाना चाहता है ।

आहितुण्डिकः—भद्दमुह, विण्णवेहि अमच्चं ण केवल अहं सप्पजीवी, पाउड-कवी खु अहम्। ता जइ मे दंसणेण अमच्चो पसादं ण करेदि ता एदं पत्तअं वाचेदु त्ति। (भद्रमुख विज्ञापयामात्यं न केवलमहं सर्पजीवी, प्राकृतकविः खल्वहम्। तस्माद्यदि मे दर्शनेनामात्यः प्रसादं न करोति तदा एतत्पत्रकं वाचयत्विति।)

प्रियंवदकः—(पत्रं गृहीत्वा राक्षसमुपसृत्य।) अज्ज, एसो खु अमच्चं विण्णवेदि ण केवल अहं सप्पजीवी। पाउडकवी खु अहम्। ता जइ मे अमच्चो दंसणेण पसादं ण करेदि तदा एदं पि दाव पत्तअं वाचेदु त्ति। (आर्य, एष खल्वमात्यं विज्ञापयति न केवलमहं सर्पजीवी। प्राकृतकविः खल्वहम्। तस्माद्यदि मे अमात्यो दर्शनेन प्रसादं न करोति तदा एतदपि तावत्पत्रकं वाचयत्विति।)

राक्षसः—(पत्रं गृहीत्वा वाचयति।)

राक्षस—(बाँया आँख फड़क रहा है—आह हो आह) सर्वप्रथम सर्प का हो दर्शन क्यों (प्रकट रूप में) प्रियंवदक, हमें देखने में इसका उत्कंठा नहीं है। अतः इसको सन्तुष्ट करके विदा कर दो।

प्रियंवदक—जैसा कहा (इसके बाद सँपेर के पास जाकर) भाई, तुम्हारे दिखाने के कार्य से अमात्य यह पारितोषिक दे रहे हैं। साँपों को देखकर नहीं।

English—*Snake charmer*—Gentle, I am a Snake charmer Jirnavisha by name I want to play with Snakes before the minister

Man—Wait, till I inform the minister (approaching Rakshasa) Minister, here is a Snake charmer wishes to show Snakes

Rakshasa—(Acting the quivering of the left eye to himself) How so, at the very first, there is the sight of Serpents ! (aloud) Priyambadak, we have no curiosity to see Serpents, so satisfy him and dismiss

Priyambadaka—So be it (approaching) Sir, the minister shows you his favour by giving this reward for your work of exhibition, but not for a look at the Serpents.

विमला

व्याख्या—आहितुण्डिक —भद्रमुख=कल्याणमुख (Gentle sir), अमात्यम्=मन्त्रिणम् (minister), विज्ञापय=निवेदय (inform), अहम् (I) न केवलम्=(not only), सर्पजीवी=आहितुण्डिकः (exhibiter of Serpents), अहम् खलु (I am really), प्राकृतकविः=भाषाकोविदः (a prakrit poet , तस्मात्=तस्मात् कारणात् (so), यदि (if), मे=मम (me), अमात्यः=मन्त्रिणः (minister),

दर्शनेन = सर्पक्रीडावलोकनेन (with a sight), प्रसादं न करोति = उपहारं न ददाति (will not favour), तदा (then), एतत् पत्रकम् (this sheet), वाचयितुम् = पठितुम् (let him read).

प्रियंवदक —[पत्रम् (letter), गृहीत्वा = नीत्वा (taking), राक्षसम् (Rakshasa), उपसृत्य = समीपगत्वा (approaching)], आर्य = मान्य (Noble sir), एष खलु = अयम् (this man), अमात्यम् विज्ञापयति = मन्त्रिणम् प्रार्थयति (requests Your Honour), अहम् (I), न केवलम् (not only), सर्पजीवी (Snake charmer), अहम् खलु (I indeed), प्राकृतकविः = भाषाकोविदः (Prakrit poet), तस्मात् (therefore), यदि (if), मे=मम (me), अमात्यः = राक्षसः (Rakshasa), दर्शनेन=सर्पक्रीडावलोकनेन (favour me with a sight), प्रसादं न करोति= प्रसन्नो न भवति (will not favour), तदा (then), एतदपि = (at least), तावत्पत्रकम् (this letter), वाचयतु (let him read).

राक्षसः—पत्रम् (letter), गृहीत्वा = नीत्वा (taking), वाचयति (reads).

हिन्दी—आहितुण्डिक—भद्रमुख, अमात्य से निवेदन कर दो कि मैं केवल सँपेरा ही नहीं हू, अपितु प्राकृत भाषा का कवि भी हूँ। तो यदि हमको दर्शन देकर अमात्य कृपा नहीं करते हैं तो जरा इस पत्र को ही पढ लें।

प्रियंवदक—(पत्र लेकर राक्षस के पास पहुँचकर) आर्य, यह सँपेरा आप से निवेदन कर रहा है, कि मैं केवल सँपेरा भर ही नहीं हूँ। अपितु प्राकृत भाषा का कवि भी हू। तो यदि मुझे दर्शन देकर अमात्य कृपा नहीं करते तो जरा इस पत्र को ही पढ लें।

राक्षस—(पत्र लेकर पढता है)—

English—*Snakecharmer*—Gentle sir, inform minister that I am not only *Snake charmer, but also a really Prakrit poet. Therefore* if minister will not favour me with a sight, then let him read this letter.

Priyambadoka—(Taking the letter and approaching Rakshasa) Sir, he requests you, saying—"I am not only Snake charmer but also a prakrit Poet, so if the minister does not favour me with a sight he will at least read this letter."

Rakshasa—(Takes the letter and reads it).

टिप्पणी—परितोष्य—परि + तुष् + णिच् + ल्यप्, विभक्ति कार्य। भद्रमुख—भद्र मुखमस्य इति भद्रमुख.। दर्शनकार्येण—दृश् + णिच् + ल्युट्, भावे दर्शनम्। दर्शनरूप कार्यम् दर्शनकार्यम् तेन दर्शनकार्येण।

पाऊण निरवसेसं कुसुमरसं अत्तणो कुसलदाए।
जं उग्गिरेइ भमरो अण्णाणं कुणइ तं कज्जं॥ ११॥
(पीत्वा निरवशेषं कुसुमरसमात्मनः कुशलतया।
यदुद्गिरति भ्रमरः अन्येषां करोति तत्कार्यम्॥)

(विचिन्त्य स्वगतम्। अये, कुसुमपुरवृत्तान्तज्ञो भवत्प्रणिधिरिति गाथार्थः। कार्यव्यग्रत्वान्मनसः प्रभूतत्वाच्च प्रणिधीना विस्मृतम्। इदानीं स्मृतिरुपलब्धा। व्यक्तमाहितुण्डिकच्छद्मना विराधगुप्तेनानेन भवितव्यम्। (प्रकाशम्।) प्रियंवदक, प्रवेशयैनम्। सुकविरेष। श्रोतव्यमस्मात् सुभाषितम्।

विमला

अन्वयः—भ्रमरः, आत्मनः कुशलतया, निरवशेषम् कुसुमरसम्, पीत्वा, यत् उद्गिरति, तत्, अन्येषाम्, कार्यम्, करोति॥ ११॥

व्याख्या—भ्रमरः=मधुकरः पक्षे स्पशः (black bee, also meaning a Spy), आत्मनः =स्वस्य (its), कुशलतया = नैपुण्येन (by skill), निरवशेषम् = समग्रम् (completely), कुसुमरसम्=पुष्पासवम् मधु, पक्षे कुसुमपुरस्य रहस्यम् (honey of flowers—important news from Kusumpur), पीत्वा = पान कृत्वा (drunk up), यत्=यत्किमपि, उद्गिरति = बहिः निस्सारयति, पक्षे कथयति (gives out-says), तत्=यद्गिरणम् (that), अन्येषाम्=सामान्यजनानाम्, पक्षे स्वाम्यादीनाम् (of others—or of lords), कार्यम् = हितम्, करोति = विदधाति, (serves the purpose)॥ ११॥

हिन्दी—मधुमक्खी, पक्ष में गुप्तचर अपनी निपुणता से सम्पूर्ण फूल के रस को, पक्ष में कुसुम पुर के रहस्य को पीकर पक्ष में—जानकर, जो बाहर निकलता है, पक्ष में—कहता है, वह दूसरों का, पक्ष में—स्वामी का हित करता है॥ ११॥

English—That which the black bee (Spy) gives out after having, by its skill, completely drunk up (having known) honey of flower (important news from Kusumpura) serves the purpose of others (of Lords) 11

टिप्पणी—भ्रमरः भ्रम्+अर (उ०), विभक्ति कार्ये। इस श्लोक में अप्राकरणिक भ्रमरकर्तृक कुसुमरस कर्मक पान के बाद मधु के उद्गिरण से प्राकरणिक अपने कुसुमपुर वृत्तान्त कथन की प्रतीति से अप्रस्तुतप्रशंसा नामक अलङ्कार है। 'अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया'—काव्यप्रकाश। वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण एवं आर्या वृत्त है॥ ११॥

व्याख्या—[विचिन्त्य = विचार्य (thinking), स्वगतम् = अनतिस्पष्टम् (To himself), अये=कोमलालापेऽव्ययमिदम् (ah), कुसुमपुरवृत्तान्तज्ञ=कुसुमपुरोदन्तवेत्ता (knows the news of Kusumpura), भवत्प्रणिधिः=दूत (he is my Spy), इति = गाथार्थः=गीतिकायास्तात्पर्यम् (the drift of the verse is),

प्रियवदक—तथा। (इत्याहितुण्डिकमुपसृत्य।) उपसप्पदु अज्जो। (उपसर्पतु आर्यः।)

आहितुण्डिक—(नाट्येनोपसृत्य विलोक्य च स्वगतम्। संस्कृतमाश्रित्य।) अयममात्यराक्षसः। स एष

वामां बाहुलतां निवेश्य शिथिलं कण्ठे विवृत्तानना
स्कन्धे दक्षिणया बलान्निहितयाऽप्यङ्के पतन्त्या मुहुः।
गाढालिङ्गनसङ्गपीडितमुखं यस्योद्यमाशङ्किनी
मौर्यस्योरसि नाधुनापि कुरुते वामेतरं श्रीः स्तनम्॥ १२॥

(प्रकाशम्।) जेदु अमच्चो। (जयतु अमात्य।)

कार्यव्यग्रत्वात् मनस =कृत्याकुलत्वात् (through destruction of mind from work), च=पुन (and), प्रणिधानाम् प्रभुतत्वात=चराणामाधिक्यात् (largeness of the number of Spies), विस्मृतम् (have foregotten), इदानीम् = अधुना (now), उपलब्धा=प्राप्ता (recovered), स्मृति (memory), व्यक्तम्=स्पष्टम् आहितुण्डिकच्छद्मना=व्यालोपजीविव्याजेन (disguised as Snake charmer), विराधगुप्तेन (Viradhgupta), अनेन भवितव्यम्=चरेण भवितव्यम् (this must be), [प्रकाशम् (aloud)], प्रियवदक (Priyambadaka), एनम् = चरम्, प्रवेशय = मत्सन्निधिं प्रापय (usher him in), एष =सुकवि (he is a fine poet) अस्मात्=सुकव (from him), सुभाषितम्=सुवाक्यम् (fine sayings), श्रोतव्यम्=आकर्णनीयम् (must listen)

हिन्दी—(सोचकर अपने आप) अये, कुसुमपुर के समाचार को जानने वाला आपका गुप्तचर हूं—इस गाथा का यही अर्थ है। मन के कार्यों में व्यग्र होने के कारण तथा गुप्तचरों की अधिकता से भूल गया। अब स्मरण आ गया। स्पष्ट ही सँपरे के वेश से इसको विराधगुप्त होना चाहिए। (प्रकट रूप में) प्रियवदक, इसको भीतर लाओ। यह अच्छा कवि है। इससे सूक्तियां सुननी हैं।

English—(Reflecting to himself), Ah, the drift of the verse is—"I am your Spy and know the news of Kusumpura." I forgot it on account of my mind being engrossed in my work and of the large number of my Spies Now memory is recovered This must be Viradhgupta, disguised as a Sanke-charmer (Aloud) Priyambadaka usher him in, he is good poet, I will hear from him good sayings

विमला

व्याख्या—प्रियवदक —तथा=यथाज्ञापयतु (as you command sir), [इत्याहितुण्डिकमुपसृत्य (approaching the Snake charmer),] उपसर्पतु आर्य =गच्छतु भवान् (may Your Honour come in).

आहितुण्डिक:—[नाट्येनोपसृत्य विलोक्य च स्वगतम् । संस्कृतमाश्रित्य (acting advance and looking about to himself, adopting Sanskrit).] अयम् = एषः (this), अमात्यराक्षसः (minister Rakhasa), स=असौ एषः (He is) :—

अन्वयः—यस्य, उद्यमाशङ्किनी, श्रीः, वामाम्, बाहुलताम्, कण्ठे, शिथिलम्, निवेश्य, विवृत्तानना, बलात्, स्कन्धे, निहितया, अपि, मुहुः, अङ्के, पतन्त्या, दक्षिणया, गाढालिङ्गनसङ्गपीडितमुखम्, वामेतरम्, स्तनम्, अधुना, अपि, मौर्यस्य, उरसि, न, कुरुते ॥ १२ ॥

व्याख्या—यस्य=नीतिज्ञस्य राक्षसस्य (Raksnasa's), उद्यमाशङ्किनी = उद्योगभीता (afraid of whose efforts), श्रीः=मौर्यराजलक्ष्मी (the goodess of wealth), वामाम्=दक्षिणेतराम् (left), बाहुलताम्=भुजवल्लीम् (arm), कण्ठे=गलप्रदेशे (neck), शिथिलम्=अगाढम् (loosely), निवेश्य=स्थाप्य (twined), विवृत्ताननाम्=पराङ्मुखी (her face turned away), बलात्=हठात् (forcibly), स्कन्धे=मौर्यस्य स्कन्धप्रदेशे (on shoulder), निहितया = दत्तया (having kept), अपि=(also) मुहुः=वारं वारम् (again and again), अङ्के=क्रोडे (on lap), पतन्त्या = स्खलन्त्या (falling down), दक्षिणया=वामेतरया (right) भुजलतया (creeper like arm), गाढम्=दृढम्, यत् आलिङ्गनम् = परिरम्भः तस्य सङ्गेन सश्लेषेण पीडितम्=चिपिटीकृतम्, मुखम् चूचुकम्=अग्रभागः यस्य तादृशः = वामेतरम्= दक्षिणम्, स्तनम् = कुचम् अर्थात् (being herself in close contact), अधुनापि= अद्यापि (even now), मौर्यस्य=चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), उरसि=वक्षसि (with the bosom), न कुरुते = न स्थापयति (does not brings) ॥ १२ ॥ [प्रकाशम्=स्पष्टम् (aloud), अमात्यः (Minister), जयतु (May conquer)].

हिन्दी—जिस राक्षस के उद्योग से भयभीत राजलक्ष्मी अपनी बायीं भुजलता को चन्द्रगुप्त के गले में शिथिल रूप से डालकर, मुंह फेरकर—बलात् कन्धे पर रक्खी गयी, बारम्बार गोद में गिरने वाली दाहिनी भुजलता से युक्त यह राजलक्ष्मी कसकर किये गये आलिङ्गन के दबाव से चिपटा हो गया है स्तनाग्र जिसका ऐसा दाहिना स्तन आज भी चन्द्रगुप्त की छाती से नहीं लगा रही है ॥ १२ ॥

English—Afraid of whose efforts, the Goddess of wealth, having her creeper-like left arm winding loosely round the neck of Chandragupta, with her turned face and right arm regularly falling down on her lap, though forcefully placed on the shoulder, does not even now bring her right nipple on the thorax of Chandragupta, which is compressed by close embracement. (Aloud) Let minister prosper. 12.

टिप्पणी—अति अनालिङ्गित रहने पर भी अनुरागशून्यहृदया कामिनी की तरह राजलक्ष्मी प्रतिलक्षण चन्द्रगुप्त के द्वारा आलिङ्गित अर्थात् धारण से राजलक्ष्मी के आकर्षिक रहते हुए भी आकस्मिक अनुरागहीन नायिका कर्तृक नीतिज्ञानुपदेशक दृढ आलिङ्गनरूप कार्याभाव

राक्षसः—(विलोक्य ।) अये विराध—(इत्यर्धोक्ते ।) ननु विरूढश्मश्रुः । प्रियंवदक, भुजंगैरिदानीं विनोदयितव्यम् । तद्विश्रम्यतामितः परिजनेन । त्वमपि स्वाधिकारमशून्यं कुरु ।

प्रियंवदकः—तथा । (इति सपरिवारो निष्क्रान्तः ।)

राक्षसः—सखे विराधगुप्त, इदमासनम् । आस्यताम् ।

(*विराधगुप्तो नाट्येनोपविष्टः* ।)

राक्षसः—(निर्वर्ण्य ।) अये, देवपादपद्मोपजीविनोऽवस्थेयम् । (इति रोदिति ।)

विराधगुप्तः—अलममात्य, शोकेन । नातिचिरादमात्योऽस्मान् पुरातनीमवस्थामारोपयिष्यति ।

राक्षसः—सखे, वर्णय कुसुमपुरवृत्तान्तम् ।

के समारोपण से इस श्लोक में समासोक्ति अलकार है । यह समासोक्ति उपमाशङ्कित पदार्थहेतुक काव्यलिङ्ग से सकीर्ण है । परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः—का० प्र० । इसमें पाञ्चाली रीति, प्रसादगुण एव शार्दूलविक्रीडित छन्द है ।

विमला

व्याख्या—राक्षस—[विलोक्य=दृष्ट्वा (observing)], अये विराधः=एतदाख्यः (Ha Viradh), [इत्यर्धोक्ते (when halfuttered)], ननु विरूढश्मश्रुः=विरूढानि प्रवृद्धानि श्मश्रूणि पुरुषास्यस्थरोमाणि यस्य स विरूढश्मश्रुः (with beards grown indeed), प्रियंवदक (Priyambadak), भुजंगैः=सर्पैः (with Snakes), इदानीम्=सम्प्रति (now), विनोदयितव्यम् (have to enjoy), तत् (so), इत. (from this place), परिजनेन=स्वजनेन (attendants), विश्रम्यताम् (let go and rest), त्वमपि (you too), स्वाधिकारम्=आत्मनियोगम् (your post), अशून्यम् कुरु=प्रतिपालय (do not vacate).

प्रियंवदक—तथा (as your Honour command), [इति सपरिवारः= सपरिजनः (with attendants), निष्क्रान्तः=निर्गतः (departs).]

राक्षस—सखे विराधगुप्त=मित्र विराधगुप्त (friend Viradhgupta), इदम्= एतत् (this), आसनम्=आस्तरणम् (seat), आस्यताम्=उपविश्यताम् (sit down)

[विराधगुप्त (Vridahgupta), नाट्येन=नरव्यापारेण (acting), उपविष्टः (sitting down)]

राक्षस—[निर्वर्ण्य=दृष्ट्वा (Eyeing close)], अये आश्चर्यम् (alas), देवपादपद्मोपजीविनः=देवस्य=राज्ञो नन्दस्य पादपद्मम्=चरणकमलम् उपजीवतीति देवपादपद्मोपजीवी तस्य (a servant of His majesty), इयम्=एतादृशी (this), अवस्था= दशा अस्ति (should be the condition), [इति रोदिति=क्रन्दति (weeps)].

विराधगुप्तः—अमात्य, विस्तीर्णः खलु कुसुमपुरवृत्तान्तः। तत्कुतःप्रभृति वर्णयामि।

विराधगुप्त—अमात्य=मन्त्रिन् (Minister), अलम्=व्यर्थम् (useless), शोकेन= खेदेन (with this sorrow), नातिचिरात्=अतिशीघ्रम् (Ere long), अमात्य.= मन्त्री (minister), अस्मान् (us), पुरातनाम्=प्राक्, सदृशीम् (former), अवस्थाम्=दशाम् (position) आरोपयिष्यति=प्रापयिष्यति (will restore)

राक्षसः—सखे=मित्र (friend), कुसुमपुरवृत्तान्तम्=कुसुमपुरोदन्तम् (news of Kusumpur), वर्णय=कथय (report)

हिन्दी—राक्षस—(देखकर) अरे, विराध,—(ऐसा आधा कहने पर) ओह, इसकी दशा ना जरा देखो किस तरह बढ़ आई है। प्रियंवदक, इस समय साँपों से मन बहलाव करना है, वो नौकर-चाकर यहाँ से जाकर विश्राम करें। तुम भी अपने कर्तव्य को पूर्ण करो।

प्रियंवदक—जैसी आज्ञा (ऐसा कह कर परिवार के साथ चला गया)

राक्षस—मित्र विराधगुप्त, यह आसन है, बैठो।

(विराधगुप्त अभिनयपूर्वक बैठता है)

राक्षस—(भली प्रकार देखकर) अरे, महाराज नन्द के चरणाश्रितों की यह अवस्था?

(ऐसा कहकर रोता है)

विराधगुप्त—अमात्य, शोक करना व्यर्थ है, शीघ्र ही आप हमलोगों को हमारी पुरानी अवस्था प्राप्त करा देंगे।

राक्षस—मित्र, कुसुमपुर के समाचार का वर्णन करो।

English—*Rakshasa*—(observing) Ah ! Viradh—(here he breaks off) with beards grown indeed Priyambadaka, we have to enjoy with Snakes. so let the servants retire you too not vacate your post.

Priyambadaka—So be it (Exit with attendants).

Rakshasa—Friend, Viradhgupta, here is a seat, sit down.

(Viradhgupta acts sitting down)

Rakshasa—(closely marking him) Alas ! such is the condition of a servant of His majesty (Weeps)

Viradhgupta—Away with sorrow minister Erelong your Honour will restore us to our former position

Rakshasa—Friend report the news of Kusumpura.

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त—अमात्य=मन्त्रिन् (minister), विस्तीर्णः=प्रचुरम् (very long), खलु=निश्चयेन (indeed), कुसुमपुरवृत्तान्त=कुसुमपुरोदन्तः (news of Kusumpura), तत्=तस्मात् कारणात् (therefore), कुतः प्रभृति=कस्मादारम्य (from where), वर्णयामि=ब्रवीमि (shall I narrate)

राक्षसः—सखे, चन्द्रगुप्तस्यैव तावन्नगरप्रवेशात् प्रभृति अस्मत्प्रयुक्तैस्तीक्ष्णरसदादिभिः किमनुष्ठितमित्यादितः श्रोतुमिच्छामि ।

विराधगुप्तः—एष कथयामि । अस्ति तावच्छकयवनकिरातकाम्बोजपारसीकबाह्लीकप्रभृतिभिश्चाणक्यमतिपरिगृहीतैश्चन्द्रगुप्तपर्वतेश्वरबलैरुदधिभिरिव प्रलयोच्चलितसलिलैः समन्तादुपरुद्धं कुसुमपुरम् ।

राक्षसः—(शस्त्रमाकृष्य ससम्भ्रमम् ।) अयि, मयि स्थिते कः कुसुमपुरमुपरोत्स्यति । प्रवीरक प्रवीरक, क्षिप्रमिदानीम् ।

राक्षस—सखे=अभिन्नहृदय (Friend), तावत्=प्रथमम् (at first), चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), नगरप्रवेशात् प्रभृति=पुरप्रवेशमारभ्य (with the entry of the city), अस्मत्प्रयुक्तैः=अस्मन्नियुक्तैः (employed by me), तीक्ष्णरसदायिभि =विषप्रदानशीलैः (administerers of poision), किमनुष्ठितम्=किं कृतम् (what has been done), इत्यादितः (from the very beginning), श्रोतुम्=आकर्णितुम् (to hear), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish)

विराधगुप्त—एष=अहम् (I) कथयामि=वर्णयामि (begin), चाणक्यमतिपरिगृहीतैः=कौटिल्यबुद्धिसचालितैः (by the direction of Chanakya), शकयवनकिरातकाम्बोजपारसीकबाह्लीका प्रभृतिरादिर्येषा ते तथोक्तास्तैस्तथोक्तैः (Sakas, Yavanas Kiratas, Kambojas, Parasikas, Balhikas and others), चन्द्रगुप्तपर्वतेश्वरबलैः=मौर्यपर्वतेश्वरबलैः (by the forces belonging to Chandragupta and Pervateswer), प्रलयोच्चलितसलिलैः =प्रलयकालसचालिततोयैः (with their waters overflown at the time of universal destruction), उदधिभिः=समुद्रैः (by the seas), समन्तात्=सर्वतः (on all sdies), उपरुद्धम्=वेष्टितम् (blocked), कुसुमपुरम्=तदाख्यनगरम् (Kusumapura), अस्ति=वर्त्तते (was).

राक्षस—[शस्त्रमाकृष्य=असि बहिष्कृत्य (drawing his sword), ससम्भ्रमम्=सन्देहम् (in great haste)], अयि=सम्बोधनमिदम् (well), मयि स्थिते=विद्यमाने (while I am living), कः=किंनामकः पुरुषः (who), कुसुमपुरम् (Kusumpura), उपरोत्स्यति=सैन्यैः वेष्टयिष्यति (*dares blockade*), प्रवीरक प्रवीरक=तत्काले सन्निहितानुचरसंज्ञेयम् (Praviraka O, Praviraka), क्षिप्रम्=शीघ्रम् (then quick), इदानीम्=सम्प्रति (now)

हिन्दी—*विराधगुप्त—अमात्य, कुसुमपुर की खबर लम्बी है । कहाँ से प्रारम्भ करूँ ?*

राक्षस—मित्र, पहले चन्द्रगुप्त के नगर में यथाविधि प्रवेश कर चुकने के पश्चात्, हमारे विष देनेवाले गुप्तचरों ने क्या सब किया ?—इन बातों को प्रारम्भ से सुनना चाहूगा ।

विराधगुप्त—तो कहता हू—प्रलयकाल में उफनाते जलवाले समुद्रों की तरह, चाणक्य की बुद्धि से सचालित, शक, यवन, किरात, काम्बोज, पारसीक, बाह्लीक आदि चन्द्रगुप्त एव पर्वतेश्वर की सेनाओं के द्वारा कुसुमपुर चारों ओर से घेर लिया गया ।

प्राकारं परितः शरासनधरैः क्षिप्रं परिक्रम्यतां
द्वारेषु द्विरदैः प्रतिद्विपघटाभेदक्षमैः स्थीयताम् ।
त्यक्त्वा मृत्युभयं प्रहर्तुमनसः शत्रोर्बले दुर्बले
ते निर्यान्तु मया सहैकमनसो येषामभीष्टं यशः ॥ १३ ॥

विराधगुप्त —अमात्य, अलमावेगेन । वृत्तमिदं वर्ण्यते ।

राक्षस—(तलवार निकाल कर आवेग में,) अरे, मेरे रहते कौन कुसुमपुर को घेरे? प्रवीरक, प्रवीरक! शीघ्र इस समय —

English—*Viradhgupta*—Minister, the story of Kusumpur is long, so where from I shall narrate it?

Rakshasa—Friend, I wish to hear from the very beginning, what has been done by the administerers of poison emplyed by us, after the formal entry of Chandragupta in the city

Viradhgupta—Here I begin, the city of Kusumpura was blockaded on all side by the forces of Chandragupta and Parvateswar led by the counsels of Chanakya—by Sakas, Yavanas, Kiratas, Kambojas, Parsikas, Valhikas and others as by the oceans with their water over flows at the time of the world's final destruction

Rakshasa—(Drawing his sword in haste) Well, who will besiege Kusumpura while I am living? Praviraka, O Praviraka! quickly now:—

विमला

अन्वयः—शरासनधरैः, प्राकारम्, परितः, क्षिप्रम्, परिक्रम्यताम्, प्रतिद्विपघटाभेदक्षमैः, द्विरदैः, द्वारेषु, स्थीयताम्, येषाम्, यशः, अभीष्टम्, ते, मृत्युभयम्, त्यक्त्वा, शत्रोः, दुर्बले, बले, एकमनसः, प्रहर्तुमनसः, मया सह, निर्यान्तु ॥ १३ ॥

व्याख्या—शरासनधरैः=धानुष्कैः (archers), प्राकारम्=प्राचीरम् (rampart), परितः=समन्तात् (round), क्षिप्रम्=झटिति (quickly), परिक्रम्यताम्=परिभ्रम्यताम् (move), प्रतिद्विपघटाभेदक्षमैः=शत्रुहस्तिसमूहविदारणसमर्थैः (capable of dispersing the array of enemy-elephants), द्विरदैः=हस्तिभिः (elephants), द्वारेषु=प्रवेशमार्गेषु (at the gates), स्थीयताम्=अवस्थानम् क्रियताम् (be posted), येषाम्=वीराणाम् (those), यशः=कीर्त्तिः (fame), अभीष्टम्=प्रियम् (ambitious), ते=वीराः (they), मृत्युभयम्=मरणभीतिम् (the fear of death), त्यक्त्वा=परित्यज्य (giving up), शत्रोः=रिपोः (of the enemy), दुर्बले=बलहीने (weak), बले=सैन्ये (the force), एकमनसः=समानचेताः (united in mind), प्रहर्तुमनसः=योद्धकामाः (attacking), मया सह=राक्षसेन साकम् (with me) निर्यान्तु=बहिर्निःसरन्तु (march out) ॥ १३ ॥

राक्षस —(नि श्वस्य ।) कष्ट वृत्तमिदम् । मया पुनर्ज्ञात स एवाय काल इति । (शस्त्रमुत्सृज्य) । हा देव नन्द, स्मरामि ते राक्षस प्रति प्रसादातिशयम् । त्वमत्र सङ्ग्रामकाले— कृपा

विराधगुप्त —(अमात्य=मन्त्रिन् Minister), आवेगेन=क्रोधन (with agitation), अलम्=व्यर्थम् (away), इदम् (it is), वृत्तम्=वृत्तान्त (the past), वर्ण्यते= अभिधीयते (is being described)

हिन्दी—सभी धनुर्धर प्राचीर के चारों ओर चक्कर काटें और हमारे हाथी जो शत्रुओं की गजघटा को भेदन करने में समर्थ हैं—हर फाटक पर स्थिर कर दिये जाय। जिन्हें यश प्रिय है—जो हृदय से हमारे साथ हैं, मृत्यु के भय से मुक्त होकर शत्रु की दुर्बल सेना पर आक्रमण करने के लिए मेरे साथ निकल आवें॥ १३ ।

विराधगुप्त—अमात्य, क्रोध करना व्यर्थ है। यह तो मैं अतीत की घटना सुना रहा था।

English—Let archers move rapidly round this rampart Let elephants capable of dispersing the array of enemy—elephants be posted at the gates, let those to whom fame in ambition, giving up the fear of death, united in mind with me, are bent upon attacking the weak force of the enemy, march out with me (13)

Viradhgupta—Minister, away with agitation It is the past being described

टिप्पणी—परिक्रम्य—परि + √क्रम + ल्यप् से रूप की सिद्धि। प्राकारम्—प्रकियते इति योग में द्वितीया विभक्ति है। शरासनधरै शरा अस्यन्ते एभि इस विग्रह में शर+अस+ल्युट् करण शरासनानि तेषाम् धरा 'कर्मण्यण्' से अण् प्रत्यय कर विभक्त्यादि कार्य से शरासनधरा की सिद्धि। प्रहर्तुमनस —प्रहर्तुम् मन यषाम् इस विग्रह में तुङ्काममनसोरपि, से म का लोप है। दुर्बल —दु स्थितानि बलानि अस्य, दुर्बल तस्मिन् दुर्बले। येषामभीष्टम्—अभि + इष् + क्त + कर्मणि वर्तमाने—'क्तस्य च वर्तमाने' से षष्ठी। इस श्लोक में स्वभावोक्ति तथा काव्यलिङ्ग अलङ्कार एव शार्दूलविक्रीडित छन्द है। वीर रस स्थायीभाव, गौडी रीति एव ओज गुण है।

निमला

व्याख्या—राक्षस —[नि श्वस्य = (sighing)], कष्टम् =दु खम् (alas), इदम् (this is), वृत्तम् =वृत्तान्त (past event), मया (I, however), पुनर्ज्ञातम् = अवगतम् (imagined), स एवाय काल इति=कुसुमपुरावरोधनसमयो वर्तते (it was the same time now), [शस्त्रम्=असिम् (the sward), उत्सृज्य = परित्यज्य (dorpping down)] हा देव नन्द=हा राजन् नन्द (oh king Nanda) स्मरामि= चिन्तयामि (*remember*), ते=तव (*your*), राक्षस प्रति=स्वप्रधानसचिव प्रति (towards Rakshasa), प्रसादातिशयम् = अतिशयप्रसन्नताम् (excessive graciousness), त्वमत्र (you), सङ्ग्रामकाले=युद्धसमये (at the time of battle) —

यत्रैषा मेघनीला चरति गजघटा राक्षसस्तत्र याया-
देतत्पारिप्लवाम्भःप्लुति तुरगबलं वार्यतां राक्षसेन ।
पत्तीनां राक्षसोऽन्तं नयतु बलमिति प्रेषयन्मह्यमाज्ञा-
मज्ञासीः प्रीतियोगात्स्थितमिव नगरे राक्षसानां सहस्रम् ॥१४॥

अन्वयः—यत्र, एषा, मेघनीला, गजघटा, चरति, तत्र, राक्षसः, यायात् पारिप्लवाम्भःप्लुति, एतत्, तुरगबलम्, राक्षसेन, वार्यताम्, पत्तीनाम्, बलम्, राक्षसः, अन्तम्, नयतु, इति, मह्यम्, आज्ञाम्, प्रेषयन्, प्रीतियोगात्, नगरे, राक्षसानाम्, सहस्रम्, इव, स्थितम्, अज्ञासीः ॥ १४ ॥

व्याख्या—यत्र=यस्मिन् स्थाने (where), एषा=दृश्यमाना (this), मेघनीला= पयोदवर्णा (like a mass of cloud), गजघटा=हस्तिसमूहः (line of elephants), चरति=अग्रसरति (moves), तत्र=तस्मिन् स्थाने (there), राक्षसः (Rakshasa), यायात्=अवगाहताम् गच्छेत् (let Rakshasa go), पारिप्लवाम्भःप्लुति=पारिप्लवम्= चञ्चलम् तत् अम्भः जलम् तस्य प्लुतिः=प्लवनम् इव प्लुतिः यस्य तादृशम् (bounding like rushing waters), एतत्=पुरो दृश्यमानम् (this), तुरगबलम्=अश्वसैन्यम् (force of cavalry), राक्षसेन वार्यताम्=निवार्यताम् (be checked by Rakshasa), पत्तीनाम्=पदातिनाम् (infantry), बलम्=सेनाम् (force), राक्षसः (Rakshasa), अन्तम् नयतु=समाप्तिम् प्रापयतु (let destroy), इति=इत्थम् (like this), मह्यम्=राक्षसाय (for me), आज्ञाम्=आदेशम् (order), प्रेषयन्=कुर्वन् (despatched), प्रीतियोगात्=प्रेमसम्बन्धात् (with affection)' नगरे=कुसुमपुरे (in Kusumpur), राक्षसानाम् सहस्रम्=सहस्रसंख्यकान् राक्षसान् (a thousand of Rakshasas), इव=यथा (like), स्थितम्=वर्तमानम् (were stationed), अज्ञासीः=अमंस्थाः (understood)

हिन्दी—राक्षस—(लम्बी साँस लेकर) कष्ट है, यह बीती घटना का वर्णन है। मैंने तो समझा यह वही समय है। (हथियार छोड़कर) हा महाराज नन्द, राक्षस के प्रति आपके स्नेह विशेष का स्मरण करता हूँ। आप इस समान के समय :—

जहाँ यह मेघों के समान नीला गज समूह आगे बढ़ रहा है, वहाँ राक्षस जाए। चञ्चल जलराशि के समान छलांग मारता बढ़ने वाला घोड़ों का यह सेना राक्षस के द्वारा रोका जाय। पैदल चलने वाली सेना को राक्षस नष्ट करे। इस प्रकार आज्ञा पर आज्ञा देते हुए, युद्ध करने प्रेम में आप जानते थे कि जैसे इस नगर में एक नहीं हजार राक्षस उपस्थित हों ॥ १४ ॥

English—*Rakshasa*—(Sighing), Alas, it is a past event' I however, imagined that it was the same time now. (dropping down the weapon) Oh king Nanda, Rashasa remembers your excessive love. For you at the time of battle —

Sending out order after order to me such as :—Where this line of elephants like a mass of clouds, move, there let Rakshasa

विराधगुप्त—ततः समन्तादुपरुद्धं कुसुमपुरमवलोक्य बहुदिवसप्रवृत्तमतिमहदुपरोधवैशसमुपरि पौराणां परिवर्तमानमसहमाने तस्यामप्यवस्थायां पौरजनापेक्षया सुरङ्गामेत्यापक्रान्ते तपोवनाय देवे सर्वार्थसिद्धौ स्वामिविरहात्प्रशिथिलीकृतप्रयत्नेषु युष्मद्बलेषु जयघोषणाव्याघातादिसाहसानुमितेष्वन्तर्नगरवासिषु, पुनरपि नन्दराज्यप्रत्यानयनाय सुरङ्गया बहिरपगतेषु युष्मासु चन्द्रगुप्तनिधनाय युष्मत्प्रयुक्तया विषकन्यया घातिते तपस्विनि पर्वतेश्वरे ।

राक्षसः—सखे, पश्याश्चर्यम् ।

---

go, let this troop of cavalry bounding like rushing waters be chacked by Rakshasa, let Rakshasa destroy the body of infantry, you, through affection, thought as if a thousand of Rakshasas were statoined in this city. (14)

टिप्पणी—एक राक्षस में ही हजार राक्षसों के कृत्य की सम्पादनशीलता के कारण 'राक्षससहस्रमिव मा स्थितमशासी,' इस विग्रह के कारण सामान्यधर्म-उपमान, उपमेय और औपम्यवाचियों के बीच में एक का, दो या तीन के अनुपादान से लुप्तोपमा है —साहित्यदर्पण में इसका लक्षण है —

लुप्ता सामान्यधर्मादेरेकस्य यदि वा द्वयोः ।
त्रयाणां वाऽनुपादाने श्रौत्यार्थी सापि पूर्ववत् ॥

फिर 'राक्षसाना सहस्रमिव' में वाच्योत्प्रेक्षा रहने के कारण 'संसृष्टि' अलङ्कार है । इसमें ओज गुण, लाटी रीति एव स्रग्धरा वृत्त है । छन्द का लक्षण—'म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्'

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त —ततः=तत्पश्चात् (after that), समन्तात्=सर्वतः (on all sides), उपरुद्धम्=सैन्याक्रान्तम् (besieged), कुसुमपुरम् (Kusumpura), अवलोक्य=दृष्ट्वा (seeing), बहुदिवसप्रवृत्तम्=कतिपय-दिन-प्रचलितम् (had already continued for many days), अतिमहत्=अतिबहुलम् (very great), उपरोधेन=निरोधेन (the siege), वैशसम्=कष्टम् (hardships), पौराणाम्=नागरिकाणाम् उपरि (on the citizens), परिवर्तमानम्=नित्य नवीनम् (ever-recurring) असहमाने=सोढुमसमर्थे (not bearing to), तस्यामपि अवस्थायाम्=असहनदशायाम् (even in those circumstances), पौरजनापेक्षया=नगरवासिजनानुमत्या (out of regard for the citizens), सुरङ्गाम्=गुप्तवर्त्म (a tunnel), एत्य=प्राप्य (came to), अपक्रान्ते=गते सति (having left), तपोवनाय=तपोवन गन्तुम् (for the hermitage), देवे=राज्ञि (sire), सर्वार्थसिद्धौ (Sarvarthasiddhi), स्वामिविरहात्=प्रभुविच्छेदात् (absence of their master), प्रशिथिलीकृतप्रयत्नेषु=मन्दीकृतोद्योगेषु (slackened their efforts), युष्मद्बलेषु=भवत्सैन्येषु (your forces), जयघोषणाव्याघातादिसाहसानुमितेषु=जयस्य चन्द्र-

गुप्तविजयस्य, घोषणा=डिण्डिमाघातपूर्वकविज्ञापनम् तस्याम् ये व्याघातादयः=बाधा-दयः तेषाम् तेषु वा यत् साहसम्=दुष्करकर्म, तेन कारणेन, अनुमितेषु=ज्ञातेषु, ज्ञातभावेषु अर्थात् परिज्ञातनन्दानुरागेषु (by their daring acts, such as their obstruction to the proclamation of victory), अन्तर्नगरवासिषु=पुराभ्यन्तरवासिषु (residents within the city), पुनरपि (again), नन्दराज्यप्रत्यानयनाय= नन्दनृपतिराज्यस्वीकरणाय (for the recovery of the kingdom of Nanda), सुरङ्गया=गुप्तवर्त्मना (by the tunnel), बहिरपगतेषु=बाह्यप्रदेशं गच्छत्सु (having gone out), युष्मासु=भवत्सु (you too), चन्द्रगुप्तनिधनाय=मौर्यविनाशाय (for the destruction of Chandragupta), युष्मत्प्रयुक्तया=भवत्प्रेरितया (employed by you), विषकन्यया=विषनिर्मितकन्यया (with the poison girl), घातिते= विनाशिते (having been killed), तपस्विनि=तपश्चरणशीले (poor), पर्वतेश्वरे (Parvateswer).

राक्षसः—सखे=मित्र (Friend), आश्चर्यम्=अद्भुतम् (the wonder), पश्य= अवलोकय (see).

हिन्दी—विराधगुप्त—इसके बाद कुसुमपुर को चारों ओर घिरा हुआ देखकर, नागरिकों के ऊपर बहुत दिनों से चलनेवाले नित नये-नये, घेरे में होने वाले अत्यन्त कष्ट को सहन न करने के कारण, उस अवस्था में भी नागरिकों के प्रति अनुराग के कारण जब महाराज सर्वार्थसिद्धि एक सुरंग के द्वारा तपोवन के लिए भाग निकले, तब स्वामी के अभाव में आपकी सेना के प्रयत्न ढीले पड गये। फिर भी नगर के भीतर वर्तमान व्यक्तियों के द्वारा विजय घोषणा में अब भी खलल डाले जा रहे थे। नन्द के राज्य को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए सुरङ्ग के रास्ते से आपके बाहर निकल जाने पर, चन्द्रगुप्त को मारने के लिये आपके द्वारा प्रयुक्त विषकन्या से बेचारे पर्वतेश्वर की हत्या कर दी गयी।

राक्षस—मित्र देखो आश्चर्य !

English—*Viradhgupta*—There upon when sire Sarvarthasiddhi, seeing Kusumpura besieged on all sides and not bearing to see the great hardship of the siege entailed on the citizens, which had already continued for many days; came to a tunnel, out of regard for the citizens even in those circumstances having left for the hermitage, our forces, slackened their efforts greatly owing to the absence of their master; you with the residents with in the city, by their daring acts, such as there obstruction to the proclamation of victory; when you, too, escaped by the tunnel for the recovery of the kingdom of Nanda, poor Parvateswera having been killed by the poison-girl emplyed by you for the destruction of Chandragupta.

Rakshasa—Friend, see the wonder :—

कर्णेनेव विषाङ्गनैकपुरुषव्यापादिनी रक्षिता
हन्तुं शक्तिरिवार्जुनं बलवती या चन्द्रगुप्तं मया।
सा विष्णोरिव विष्णुगुप्तहतकस्यात्यन्तिकश्रेयसे
हैडिम्बेयमिवेत्य पर्वतनृपं तद्वध्यमेवावधीत् ॥ १५ ॥

विमला

अन्वय—कर्णेन, इव, मया, अर्जुनम्, इव, चन्द्रगुप्तम्, हन्तुम्, बलवती एकपुरुषव्यापादिनी, शक्तिः, इव, या, विषाङ्गना, रक्षिता, सा, विष्णो, इव, विष्णुगुप्तहतकस्य, आत्यन्तिकश्रेयसे, तद्वध्यम्, हैडिम्बेयम्, इव, पर्वतनृपम्, एव, एत्य, अवधीत्।

व्याख्या—कर्णेन=राधापुत्रेण (by Karna), इव=यथा (like), मया=राक्षसेन (by me), अर्जुनम् इव=पार्थमिव (like Arjuna), चन्द्रगुप्तम्=मौर्यं राजानम् (to Chandragupta), हन्तुम्=व्यापादयितुम् (for killing), बलवती=अत्यन्त प्रबला (powerful), एकपुरुषव्यापादिनी=एकपुरुषघातिनी (the killer of a single individual), शक्तिरिव=आयुधविशेष इव (like a weapon 'Shakti' by name), या=विशिष्टा, विषाङ्गना=विषकन्या (poison girl), रक्षिता=स्थापिता (reserved), सा=विषकन्या (that poison girl), विष्णोरिव=श्रीकृष्णस्येव (as of Vishnu), विष्णुगुप्तहतकस्य=दुष्टचाणक्यस्य (of cursed Vishnugupta), आत्यन्तिकश्रेयसे=सार्वकालिककल्याणाय (of the great good luck), तद्वध्यम्=श्रीकृष्णस्य वधार्हम् (smote the great interest of Vishnu), हैडिम्बेयम्=भीमपुत्रघटोत्कचम् (the son of Hidimba), इव=यथा (like), पर्वतनृपम्=पर्वतेश्वरम् राजानम् (Parvateswar), एव=हि, एत्य=प्राप्य (getting) ॥ १५ ॥

हिन्दी—जैसे कभी एक व्यक्तिविशेष का संहार करनेवाली कर्ण को अमोघ शक्ति ने—जिसे, अर्जुन को मारने के लिए ही सुरक्षित रख दिया गया था—हिडिम्बा के पुत्र घटोत्कच का प्राण ले लो, जो कृष्ण की आँखों का काँटा था और अन्त में कृष्ण का ही कल्याण किया, उसी प्रकार एक ही व्यक्ति का वध करने के लिए, हमारे द्वारा प्रयुक्त विषकन्या ने,—जिसे चन्द्रगुप्त की हत्या करने के लिए सुरक्षित रक्खा गया था—राजा पर्वतक के प्राण ले लिये, जिसे चाणक्य ही मरवा डालता। इससे तो चाणक्य का ही कल्याण हुआ ॥ १५ ॥

English—The potent poison maid, the killer of single individual, that was reserved by me to kill Chandragupta, like the *powerful* missile, the one man slayer, which was kept in *reserve* by Karna in order to kill Arjuna, did, for the lasting benefit of cursed Vishnugupta, as of Vishnu, came in contact with king Parvataka, like Hidimba's son that was but his own victim. (15)

टिप्पणी—हैडिम्बेयम्—हिडिम्बा+ढक्+विभक्तिकार्यम्। एत्य—इण्+ल्यप्+तुगागम, विभक्ति कार्य से सम्पन्न रूप। आरम्भ वैरूप्यपूर्वक अनर्थ सम्भवरूप यहाँ विषमालङ्कार है। फिर वह 'कर्णेनेव' इत्यादि में सादृश्यार्थक 'इव' शब्द के रहने से पूर्णोपमा अलङ्कार सङ्कीर्ण है। वैदर्भी रीति, माधुर्य गुण तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है। लक्षण पहले लिखा जा चुका है।

विराधगुप्तः—अमात्य, दैवस्यात्र कामचारः, किं क्रियताम् ।
राक्षसः—ततस्ततः ।

विराधगुप्तः—ततः पितृवधत्रासादपक्रान्ते कुमारे मलयकेतौ विश्वासिते पर्वतकभ्रातरि वैरोचके प्रकाशिते च चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशे चाणक्यहतकेन आहूयाभिहिताः सर्व एव कुसुमपुरनिवासिनः सूत्रधारा यथा सांवत्सरिकादेशादर्धरात्रसमये चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशो भविष्यति । ततः पूर्वद्वारात्प्रभृति संस्क्रियतां राजभवनमिति । ततः सूत्रधारैरभिहितम्—'आर्य, प्रथममेव देवस्य चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशमुपलभ्य सूत्रधारेण दारुवर्मणा कनकतोरणन्यासादिभिः संस्कारविशेषैः संस्कृतं प्रथमराजभवनद्वारम् । अस्माभिरिदानीमभ्यन्तरे संस्कार आधेय' इति । ततश्चाणक्यवटुना अनादिष्टेनैव सूत्रधारेण संस्कृतं राजभवनद्वारमिति परितुष्टेनेव सुचिरं दारुवर्मणो दाक्ष्यं प्रशस्याभिहितम्—'अचिरादस्य दाक्ष्यस्यानुरूपं फलमधिगमिष्यसि दारुवर्मन् ।'

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त:—अमात्य=मन्त्रिन् (Minister), अत्र=पर्वतेश्वरवधे (here), दैवस्य=भाग्यस्य (of fate), कामचार:=स्वेच्छाचारिता (freak in the matter), अत्र=अस्मिन् विषये, किम् क्रियताम् (what could be done ?)

राक्षस—ततस्ततः=तदनन्तरम् (Next what next ?)

विराधगुप्त—ततः=तत्पश्चात् (after that), पितृवधत्रासात्=तातविनाशभयात् (frightened at the murder of his father), अपक्रान्ते=पलायिते (had fled), कुमारे=शिशौ पर्वतराजसुते (prince Malayaketu), विश्वासिते=आश्वासिते (lured in to confidence), पर्वतकभ्रातरि=पर्वतकसहोदरे (the brother of Parvataka), वैरोचके=तन्नाम्नि (Vairochaka by name), प्रकाशिते=प्रख्यापिते (publicly annouced), चन्द्रगुप्तस्य=मौर्यस्य (Chandragupta's) नन्दभवनप्रवेशे=नन्दनृपतिगृहसन्निवेशे (the entry in to the palace of king Nanda), चाणक्यहतकेन=विष्णुगुप्तविद्वेषिणा (by the cursed Chanakya), आहूय=आकार्य (called), अभिहिताः=कथिता (informed), सर्वे एव=निखिल एव (all together), कुसुमपुरनिवासिनः=कुसुमपुरवास्तव्याः (resident in Kusumpura), सूत्रधाराः=शिल्पज्ञा (the Carpenters), यथा सांवत्सरिकादेशात्=दैवज्ञकथनात् (according to the direction of Astrologers), अर्द्धरात्रसमये=निशीथार्द्धकाले (at midnight), चन्द्रगुप्तस्य=नृपतेस्य (Chandragupta's), नन्दभवनप्रवेशो=नन्दगृहसन्निवेशः (entry into the palace of king Nanda), भविष्यति (will take place), ततः=तस्मात् कारणात् (therefore), पूर्वद्वारात् प्रभृति=प्रथमद्वारादारभ्य (with the eastern gate), राजभवनम्=नृपसद्म (royal palace), संक्रियताम्=संस्कारयुक्तं विधीयताम् (let the palace be decorated), ततः=तत्पश्चात् (after that), सूत्रधारैः अभिहितम्=कथितम्

(the Carpenters said), आर्य (Sir), प्रथममेव=प्रागेव (previously), देवस्य=राज्ञ (the king), चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), नन्दभवनप्रवेशमुपलभ्य=नन्दसदनसन्निवेश ज्ञात्वा (known entry into the palace of Nanda), सूत्रधारेण=शिल्पिना (by the Carpenter), दारुवर्णमा (Daruvarma by name), कनकतोरणन्यासादिभि=कनकस्य=सुवर्णस्य तोरणम्=बहिर्द्वारम तस्य न्यास=सन्निवेश आदिर्येषा ते—तै (construction of golden arches), सत्कारविशेषै=रचनाविशेषै (with special), सत्कृतम्=सत्कारयुक्त कृतम् (had decorated), प्रथमराजभवनद्वारम् (front gate of the royal palace), अस्माभि (by us), इदानीम्=अधुना (now), अभ्यन्तरे=अन्तराले (in the interier), सत्कार आधेयः=सत्कार सम्पादनोय (make the decorations), तत=तत्पश्चात् (after that), चाणक्यबटुना=दुष्टकौटिल्येन (by Chanakya), अनादिष्टेनैव=आदेशमप्राप्तवतैव (without being ordered), सूत्रधारेण=शिल्पिना (Carpenter), दारुवर्णणा=तन्नाम्ना (Daruvarma by name), सत्कृतम्=सज्जीकृतम् (decorated), राजभवनद्वारम्=नृपगृहद्वारम् (the gate of the palace), परितुष्टेन=सतुष्टेन (to be pleased), सुचिरम्=बहुकालम् (for a long time), दारुवर्मण (Daruvarma), दाक्ष्य=नैपुण्यम् (cleverness), प्रशस्य=प्रशसाम् कृत्वा (be lauding), अभिहितम्=कथितम् (said)—अचिरात्=शीघ्रम् (before long), अस्य दाक्ष्यस्य=अस्य नैपुण्यस्य (for this cleverness), अनुरूपम्=सदृशम् (fitting), फलम्=परिणामम् (reward), अधिगमिष्यसि=प्राप्स्यसि (will receive), दारुवर्मन्=(O Daruvarma)

हिन्दी—विराधगुप्त—अमात्य, यहाँ दैव की स्वेच्छाचारिता है, क्या किया जाय ?
राक्षस—हाँ तो उसके बाद फिर ?—

विराधगुप्त—उसके बाद कुमार मलयकेतु पितृवध की सूचना से डर कर भाग गया। पर्वतक के भाई वैरोचक को विश्वास दिला दिया गया कि तुम्हारा कुछ नहीं बिगडेगा। जनता में घोषणा करा दी गयी कि महाराज नन्द के राजमहल में अब चन्द्रगुप्त का प्रवेश होगा। पाटलिपुत्र के शिल्पियों को बुलवाकर कह दिया गया कि ज्योतिषियों की गणना के अनुसार आज आधी रात को नन्दगृह में चन्द्रगुप्त प्रवेश करेंगे। इस उपलक्ष्य में राजदुर्ग को, प्रथम द्वार से आरम्भ कर अन्त तक सजा देने की आज्ञा शिल्पियों को सुना दी गयी। शिल्पियों द्वारा यह सुनते ही, चाणक्य को बता दिया गया कि कुशल कलाकार दारुवर्मा ने चन्द्रगुप्त के नन्दभवन प्रवेश समाचार पाते ही नाना प्रकार की सजावटों, जैसे कि स्वर्ण तोरण की स्थापना इत्यादि से राजदुर्ग का प्रथम द्वार सजा दिया और भवन की भीतरी भाग की ही सजावट करनी बाकी रह गयी है। इस पर दुष्ट चाणक्य ने दारुवर्मा की चातुरी की प्रशंसा करते हुए, जैसे काफी प्रसन्न हो—कहा, बिना मेरे आदेश के ही तुमने राजभवन को सजा दिया ? इसका फल तुम्हें शीघ्र ही मिलेगा।

English—*Vradhgupta*—Minister, it is fates' frack in the matter, What could be done ?

Rakshasa—Next, what next ?

राक्षस.—(सोद्वेगम् । सखे, कुतश्चाणक्यवटो: परितोष । अफलमनिष्टफल वा दारुवर्मण: प्रयत्नमवगच्छामि । यदनेन बुद्धिमोहादथवा राजभक्तिप्रकर्षान्नियोगकालमप्रतीक्षमाणेन जनितश्चाणक्यवटोश्चेतसि बलवान्विकल्प । ततस्तत ।

Viradna—Then, prince Malayketu, being afraid to the murder of his father; seceded and Vairochaka, the brother of Parvataka, had been lured in to confidence, the entry of Chandragupta into the palace of the Nanda was publicly announced When the cursed Chanakya summoned all the Carpenters of Kusumpura and addressed them as—"According to the instructions of the astrologers the entry of Chandragupta in the pala e of Nanda comes off at midnight. So, let the decoration be started from the eastern gate of the palce Then the Carpenters remarked—"Noble sir; after hearing the entry of His Majesty Chandragupta in the palace of Nanda, Daru varma has specially decorated it (the main eastern gate) by the placement of golden gateways and alike, Let no now decorate the interior" Then the fellow Chanakya, as it were pleased that the gate was decorated by Daruvarman without any order, bastowed a long eulogy on the fore-right of Daruvarman and said—'O Daruvarman, you will be awarded before long for this your fore-right.'

टिप्पणी—सांवत्सरिक—संवत्सरं कथयन्ति बोधयन्ति वा इति संवत्सर+ठञ् इसे सांवत्सरिका—इसमें 'कालात् ठञ्' से ठञ् प्रत्यय कर पुन: 'ठ' को इक् विभक्त्यादि कार्य सांवत्सरिक रूप की सिद्धि । कनकतोरण—तोरण—मुख्यद्वार को कहते हैं । कनकस्य तोरणम्, तस्य स्थाने स आदिदेश्यान् । आधेय—आ+धा+यत्, कर्म में आधेय रूप की सिद्धि । अनुरूपम् फलम्—यह शब्द यहाँ व्यङ्ग्यार्थ रूप में प्रयुक्त है अर्थात् जैसा कार्य होगा उसी के अनुरूप उसे फल प्राप्त होगा । अर्थात् इस सज्जा का परिणाम-उसकी मृत्यु है ।

विमला

व्याख्या—राक्षस—[सोद्वेगम्=सोत्कण्ठम् (with anxiety)], सखे=मित्र (Friend), कुत:=कस्मात् (whence), चाणक्यवटो:=अल्पबुद्धिमत विष्णुगुप्तस्य (to the brat Chanakya), परितोष=सन्तोष (satisfaction), अफलम्=निष्फलम् (fruitless), वा=अथवा (or), अनिष्टफलम्=अशुभफलम् (bore bitter fruits), दारुवर्मण (Daruvarma's), प्रयत्नम्=प्रयास (efforts), अवगच्छामि=जानामि (I think), यत्=यस्मात् कारणात् (for), अनेन=दारुवर्मणा (by Daru verma), बुद्धिमोहात्=मतिभ्रमात् (through foolishness), अथवा=वा (or), राजभक्तिप्रकर्षात्=राज्ञ अत्याधिक्यप्रदर्शनात् (through excess of devotion to the king), नियोगकालम्=प्रेरणसमयम् (time or order), अप्रतीक्षमाणेन=

विराधगुप्तः—ततश्चाणक्यहतकेनानुकूललग्नवशादर्धरात्रसमये चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशो भविष्यतीति शिल्पिनः पौरांश्च गृहीतार्थान् कृत्वा तस्मिन्नेव क्षणे पर्वतेश्वरभ्रातरं वैरोचकमेकासने चन्द्रगुप्तेन सहोपवेश्य कृतः पृथ्वीराज्यविभागः।

राक्षसः—किमातिसृष्टः पर्वतकभ्रात्रे वैरोचकाय पूर्वप्रतिश्रुतो राज्यार्धविभागः।

असहिष्णुना (not waiting), जनितः = समुत्पादितः (must have been aroused), चाणक्यबटोः = दुष्टकौटिल्यस्य (of the devil Chanakya), चेतसि = हृदये (in mind), बलवान् विकल्प = सुदृढः सन्देहः (a strong suspicion), ततस्ततः = (वीप्सायां द्विरुक्तिः) तदनन्तरम् किम् जातम् ? (what next)

विराधगुप्त —ततः = तदनन्तरम् (after that), चाणक्यहतकेन (cursed fellow, Chanakya), अनुकूललग्नवशात् (favourable juncture of stars), अर्द्धरात्रसमये = मध्यनिशीथे (at midnight), चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशो (entry of Chandragupta into the palace of Nanda), भविष्यति (will take place), शिल्पिन. = शिल्पविद्यावत. (Carpenters), पौरांश्च = पुरवासिनः (citizens), गृहीतार्थान् = अवगताभिप्रायान् (understand), कृत्वा = विधाय (made), तस्मिन्नेव क्षणे = नन्दभवनप्रवेशसमये (at that very time), पर्वतेश्वरभ्रातरम् = सोदरम् (brother of Parveteswar), वैरोचकम् = तन्नामानम् (Vairochaka), एकासने = एकोपवेशने (on the same throne), चन्द्रगुप्तेन सह = वृषलेन सह (with Chandragupta), उपवेश्य = संस्थाप्य (seated), कृतः पृथ्वीराज्यविभाग = सम्पादितः पृथ्वी एव राज्यम् तस्य अर्द्धभागः (divided between them the sovereignty of the world).

राक्षस —किंवा = किञ्च (what), पर्वतकभ्रात्रे = पर्वतेश्वरसोदराय (for the brother of Parvateswar), वैरोचकाय (to Vairochaka), पूर्वप्रतिश्रुतः = प्राक् प्रतिज्ञातम् (pre-promised), राज्यार्द्ध विभाग (half of the kingdome), अति सृष्टः = वृत्तः (had been given away)

हिन्दी—राक्षस—(उद्वेग के साथ) मित्र, नीच चाणक्य को सतोष कहाँ ? दारुवर्मा के प्रयत्न को निष्फल अथवा अप्रिय परिणाम देनेवाला समझ रहा हूँ। क्योंकि मतिभ्रम से अथवा राजभक्ति की अधिकता से, आज्ञा आने की प्रतीक्षा किये बिना ही उसने जरूर चाणक्य के मन में एक महान् सन्देह उत्पन्न कर दिया होगा। हाँ फिर क्या हुआ ?

विराधगुप्त—उसके बाद नीच चाणक्य के द्वारा—'अनुकूल मुहूर्त के कारण आधी रात के समय चन्द्रगुप्त का नन्द के महल में प्रवेश होगा'—इसकी घोषणा शिल्पियों और नागरिकों के बीच कर, उसी मुहूर्त में पर्वतेश्वर के भाई वैरोचक को चन्द्रगुप्त के साथ एकासन पर बैठाकर पृथ्वी के राज्य का हिस्सा बाँट दिया।

राक्षस—क्या पर्वतक के भाई वैरोचक को पहले से वादा किया हुआ राज्य का आधा भाग दे दिया गया ?

विराधगुप्तः—अथ किम् ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) नियतमतिधूर्तेन चाणक्यवटुना तस्यापि तपस्विनः कमप्युपांशुवधमाकलय्य पर्वतेश्वरविनाशेन जनितमयशः प्रमार्ष्टुमेषा लोकप्रसिद्धिरुपचिता । (प्रकाशम् ।) ततस्ततः ।

English—*Rakshasa*—(with anxiety), Friend, whence can there be satisfaction in the case of that brat Chanakya. I think the Daruvarma's efforts were fruitless or even bore bitter fruits as through delusion of excess of loyalty, by his not waiting till he received the order, a strong suspicion must have been aroused in the mind of the devil, Chanakya, what next ?

Viradhgupta—Then that, cursed Chanakya, having made the artisans and the citizens understand that the entry of Chandra gupta would take place at midnight owing to a faverable stars, and that very moment a division of the world empire was made by making Parvataka's brother Vairochaka sit on the same throne with Chandragupta.

Rakshasa—What, was half share of the kingdom that had already been promised, given away to Parvataka's brother Vairochaka ?

विमला

व्याख्या—विराधगुप्तः—अथ किम् = दत्तम् अर्द्धराज्यम् (yes, it was).

राक्षसः—[स्वगतम् = (To himself)], नियतम् = निश्चितम् (surely), अतिधूर्तेन = अतिशठेन (very wily), चाणक्यवटुना (by brat Chanakya), तस्यापि तपस्विनः = (that poor fellow too), कमपि = अनिर्दिष्टमपि उपांशुवधम् = रहस्यहननम् (some sort of secret murder), आकलय्य = निश्चित्य (assuredly), पर्वतेश्वरविनाशजनितस्य = पर्वतेश्वरवधोत्पन्नस्य (caused by the murder of Parvataka), अयशः = अकीर्त्ति (the infamy), प्रमार्ष्टुम् = प्रक्षालनार्थम् (for wipout), एषा लोकप्रसिद्धिः = एषा जनप्रकथापना (report among the public), उपचिता = परिकल्पिता [प्रकाशम् = स्पष्टम् (aloud)], ततस्ततः = तत्पश्चात् (after that) ?

हिन्दी—विराधगुप्त—और क्या ?

राक्षस—(मन में) अवश्य ही अत्यन्त धूर्त दुष्ट चाणक्य के द्वारा उस बेचारे का भी कोई गुप्त वध का विचार कर, पर्वतेश्वर के वध से उत्पन्न अपकीर्ति को मिटाने के लिए, लोगों में यह बात फैलाया गया है। (प्रकट रूप में) उसके बाद, उसके बाद।

English—*Viradhgupta*—What else.

Rakshasa—(To himself) Surely after having planned some sort of secret murder for that poor fellow too, this report among the public in order to wipe away the ill-repute caused by the

विराधगुप्त—तत प्रथममेव प्रकाशिते रात्रौ चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशे कृताभिषेके किल वैरोचके विमलमुक्तामणिपरिक्षेपविरचितचित्रपटमयवारबाणप्रच्छादितशरीरे मणिमयमुकुटनिविडनियमितरुचिरतरमौलौ सुरभिकुसुमदामवैकक्ष्यावभासितविपुलवक्षःस्थले परिचिततमैरप्यनभिज्ञायमानाकृतौ चाणक्यहतकादेशाच्चन्द्रगुप्तापवाह्यां चन्द्रलेखां नाम गजवशामारूढे चन्द्रगुप्तानुयायिना राजलोकेनानुगम्यमाने देवस्य नन्दस्य भवनं प्रविशति वैरोचके युष्मत्प्रयुक्तेन दारुवर्मणा सूत्रधारेण चन्द्रगुप्तोऽयमिति मत्वा तस्योपरि पातनाय सज्जीकृतं यन्त्रतोरणम्। अत्रान्तरे बहिर्निगृहीतवाहनेषु स्थितेषु चन्द्रगुप्तानुयायिषु नृपेषु युष्मत्प्रयुक्तेन चन्द्रगुप्तनिपातिना बर्बरकेण कनकदण्डिकान्तर्निहितामसिपुत्रिकामाक्रष्टुकामेनावलम्बिता करेण कनकशृङ्खलावलम्बिनी कनकदण्डिका।

---

murder of Parvataka *by that very wily brat Chanakya* (*Aloud*) Next what next

टिप्पणी—अतिसृष्ट—अति+ √सृज+क्त+विभक्तिकार्यम्। आकलय्य—आ+ √कल+णिच्+ल्यप्। प्रमार्ष्टुम्—प्र+ √मृज+तुमुन्। प्रसिद्धि—प्र+ √सिध+क्तिन्+विभक्तिकार्यम्। उपचिता—उप+ √चि+क्त+टाप्।

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त—तत =तदनन्तरम् (after that), प्रथममेव=पूर्वमेव (previously), प्रकाशिते=प्रचारिते (having been anounced) रात्रौ= निशीथे (at night), चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेश =मौर्यस्य नन्दगृहसन्निवेशे (Chandra gupta's entry into the palace of Nanda), कृताभिषेके=कृतस्नपने (with coronation performed), वैरोचके (Vairochaka by name), विमलानाम्=स्वच्छानाम् (of bright), मुक्तामणीनाम् (pearls), य परिक्षेप = परित विन्यास (moving about) तेन विरचित =रचित (formed), चित्रपटमय =नानावर्णवस्त्रनिष्पन्न (speckled rope), य वारबाण =कञ्चुक (an armour), तेन प्रच्छादितम्=आच्छादितम् (was covered), शरीरम्=वपु (body) यस्य तस्मिन् मणिमयति=मणिखचितेन (set with jewels), मुकुटेन= *किरीटेन (diadem), निविडम्=दृढम् (the close fitting), यथा स्यात्तथा,* नियमिता =संयता (restrained), रुचिरतरा =अतिशोभना (more graceful), मौल्य =केशा (Hair on the crown of head) यस्य तादृशे, सुरभि=सुगन्धि (sweet smelling), यत् कुसुमदाम=पुष्पमाल्यम् (garland of flowers), तस्य वैकक्ष्यम्=तिर्यग्धारणम् (placed cross wise), तेन अवभासितम्= सुशोभितम् (glittered) विपुलम्=विस्तीर्णम् (broad), वक्ष स्थलम्=उरःस्थलम् (*bosom*), यस्य तादृशे, परिचिततमैरपि=अतिशयेन संस्तुतैरपि (*the* most intimate too), अनभिज्ञायमाना=अनवगम्यमाना (not being recognised), आकृति =आकार (from), यस्य तस्मिन्, चाणक्यहतकादेशात्=निन्दित

विष्णुगुप्तनिदेशात् (at the command of the vile Chanakya), चन्द्रगुप्तोपवाह्यात् = चन्द्रगुप्तवाहनभूताम् (Chandragupta's mount), चन्द्रलेखानाम् (Chandralekha by name), गजवशाम् = गजस्त्रीम् (the female-elephant), आरुह्य = तदुपरि स्थित्वा (had mounted), चन्द्रगुप्तानुयायिनः = मौर्यानुगामिनः (followers of Chandragupta), राजलोकेन = नृपजनेन (by the princes), अनुगम्यमाने = अनुयायमाने (being followed), देवस्य = राज्ञः (sire), नन्दस्य (Nanda's), भवनम् = सदनम् (palace), प्रविशति = अभ्यन्तरं गच्छति (going to enter), दारुवर्मा (Vairochaka), त्वत्प्रयुक्तेन = त्वत्प्रेरितेन (directed by you), दारुवर्मणा (Daruvarma), सूत्रधारेण = शिल्पिना (Carpenter), चन्द्रगुप्तोऽयम् (this is Chandragupta), इति मत्वा = एवं ज्ञात्वा (believing him), तस्योपरि (on him), पातनाय = प्रक्षेपणाय (to drop down), सज्जीकृतम् = समुद्यतम् (ready), यन्त्रतोरणम् = यन्त्रमयितम् बहिर्द्वारम् (mechanical-gateway), अत्रान्तरे (in the mean time), बहिर्निगृहीतवाहनेषु = बाह्यावरुद्धाश्वादिषु (having stopped outside with their mounts checked), स्थितेषु चन्द्रगुप्तानुयायिषु नृपेषु (the attendent princes of Chandragupta), त्वत्प्रयुक्तेनैव=त्वत्प्रेरितेनैव (employed by you), चन्द्रगुप्तनिषादिना = मौर्यहस्तिपकेन (Chandragupta's driver), वर्वरकेण (by Varvaraka), कनकदण्डिकायाः = लघुसौवर्णदण्डस्य (the golden staff), अन्तः = मध्ये (within), निहितान् = स्थापितान् (concealed), असिपुत्रिकाम् = छुरिकाम् (knife), अवलम्बिता = गृहीता (taken up), करेण = हस्तेन (in his hand), कनकशृङ्खलावलम्बिनी = आस्यावलम्बनानस्वर्णहारिस्यर्थः (hanging by the golden chain), कनकदण्डिका = स्वर्णयष्टिः (gold stick).

हिन्दी—विराधगुप्त—और जब कि सभा लोग नन्दभवन में अर्द्धरात्रि के अवसर पर चन्द्रगुप्त प्रवेश के तथ्य में अवगत हो चुके—वैरोचक पर राज्याभिषेक कर दिया गया। स्वच्छ मोतियों के चारों ओर लगने से निर्मित नाना रंग वाले वस्त्रों से बने कवच से पूर्ण ज्यों हुई देहवाले, मोतियों से निर्मित मुकुट से इच्छापूर्वक बँधे हुए अत्यन्त सुन्दर केशसमूह वाले, छाती पर लहराती अति सुगन्धित पुष्पमालाओं के धारण करने वाले—वैरोचक ऐसा लगने लगा कि प्रतिदिन के मिलनेवाले अति परिचित व्यक्ति भी उसे न पहचान सकें—दुष्ट चाणक्य के आदेश से—चन्द्रगुप्त की निजी हथिनी चन्द्रलेखा पर आसीन होकर, चन्द्रगुप्त के ही पुछगामी राजाओं के पीछे-पीछे चलते हुए नन्दभवन में प्रवेश करना प्रारम्भ किया कि आपके द्वारा नियुक्त शिल्पकार दारुवर्मा ने, उसे 'यही चन्द्रगुप्त है' ऐसा समझकर, उस पर गिराने के लिए अपने स्वर्णमय तोरण यन्त्र को उठा लिया। चन्द्रगुप्त के अनुगामी राजाओं ने ज्यों ही देखा अपने अपने सवारियों को बाहर ही रोकने लगे। इसी बीच आपके द्वारा नियुक्त चन्द्रगुप्त के महावत वर्वर ने सोने की छड़ के भीतर छिपी कटार निकालने के लिये सोने की जंजीर से लटकती, उस सोने की छड़ी की मूठ पकड़ी।

English—*Viradhgupta*—Then as the entry of Chandragupta in the palace of Nanda was announced previously at night; Vairochak

राक्षस.—उभयोरप्यस्थाने यत्न: ।

विराधगुप्त.—अथ जघनाभिघातमुत्प्रेक्षमाणा गजवधूरतिजवनतया गत्यन्तरमारूढवती । प्रथमगत्यनुरोधप्रत्याकलितमुक्तेन प्रभ्रष्टलक्ष्य पतता यन्त्रतोरणेना·

---

was made to go through the appearance of crowning ceremony and when he (Vairochaka), whos body was coverd with an armoure like kingly dress made of defferent coulours of shiny pearls and gems textured cross-wise, whose head seemed more pleasing due to the close fitting crown of many precious jewels, on whose chest *was full of garlands of smelling flowers and who* was quite unrecognisable even by most intimated person, had mounted, at the order of mean Chanakya, the female elephant of Chandragupta to whom he used to often ride, Chandralekha with some princes, the usual attendants of Chandragupta, was entering the palace of Nanda, *Carpenter Daruvarman, being directed by you, was ready* to drop his mechanical gateway on him believing him Chandragupta In the mean time, attendants of Chandragupta restrained the out side, when Varvarak, the driver appointed by your Honour of Chandragupta become ready to draw out the concealed dagger *in a golden stick which was suspended by a golden chain in* his hand

टिप्पणी—असिपुत्रिका—असे पुत्रिका इव पुत्रिका—यहाँ यह एक diminutive के रूप में व्यवहृत है। **बर्बरक**—यह चन्द्रगुप्त का खास महावत है। वस्तुत यह राक्षस का प्रतिनिधि है। इसकी नियुक्ति उसने सिर्फ चन्द्रगुप्त वध के लिए ही की थी। **अवलम्बिता**—अव + √लम्ब् + क्त + टाप् विभक्त्यादि कार्य से रूपसिद्धि। **वैकक्ष्यम्**—विकक्ष भवम् इति विकक्ष + यत् वैकक्ष्यम्। **चन्द्रगुप्तोपवाह्य**—उप् + वह् + ण्यत् से कर्म में उपवाह्य रूप की सिद्धि। **यन्त्रतोरणम्**—'यन्त्रस्खलितम् मुक्त वा' इस विग्रह से विभक्त्यादि कार्य से सिद्धि कनकदण्डिकायाम् अन्तर्निहिता—दण्ड एव इति दण्ड + कन् + स्वार्थे + टाप् स्त्रियाम् दण्डिका—कनकस्य दण्डिका। तस्या अन्त तस्मिन् निहिता, अथवा अन्त मध्ये निहित: इति अन्तर + नि + धा + क्त कर्म में अन्तर्निहिता।

विमला

व्याख्या—राक्षस —उभयो द्वयो (of both), अस्थाने=अनवसरे (the wrong place), यत्न=उद्योग. (the attempts)

विराधगुप्त —अथ = अनन्तरम् (There at), जघने=नितम्बे (on the hips), अभिघात. = प्रहार. (heavy blow), तम् उत्प्रेक्षमाणा = सम्भावयन्ती (anticipating), गजवधू=कारिणी (she elephant), अतिजवनतया = अतिशयवेगेन (with very quick-steps), गत्यन्तरम् = शीघ्रगतिम् (different gait),

कृष्टकृपाणीऽयमपाणिरनासादयन्नेव चन्द्रगुप्ताशया वैरोचकं हतस्तपस्वी वर्वरकः। ततो दारुवर्मणा[यन्त्रतोरणनिपातनाद]ात्मवधमाकलय्य पूर्वमेवोत्तुङ्गतोरणस्थलमारूढेन यन्त्रघट्टनबीज लोहकीलकमादाय हस्तिनीगत एव हतस्तपस्वी वैरोचकः।

आरूढवती=समाश्रितवती (took to), प्रथमगत्यनुरोधेन=मन्दगमनापेक्षया (with reference to the previous speed), आदौ प्रत्याकलितम् = गृहीतम् पश्चात् मुक्तम् = सञ्चालितम् (loosened and released), प्रभ्रष्टलक्ष्यम्=च्युतलक्ष्यम (wide of mark), पतता (fell), यन्त्रतोरणेन = तोरणरूपेण निर्मितयन्त्रविशेषेण (by the gate way that was worked by mechanism), आकृष्टा=कनकदण्डाया निःसारिता (was drawn), या कृपाणी = असिपुत्रिका (poniard), तस्याम् व्यग्र = व्यापृत (clenched), पाणि = करः (hand), यस्य असौ, अनासादयन् अप्राप्नुवन् = (ere reached), चन्द्रगुप्ताशया = मौर्यबुद्धया (in expectation of Chandragupta), वैरोचकम्=एतन्नामानम् (Vairochaka), हतः = विनाशितः (was killed), तपस्वी=वराकः (poor), वर्वरक (Varvaraka), ततः=तत्पश्चात् (after that), दारुवर्मणा (Daruvarman), यन्त्रतोरण निपातनात् = यन्त्रतोरणप्रहरणात् (for letting the gate way down), आत्मवधमाकलय्य = स्वविनाश निश्चित्य (expected his own death), पूर्वमेव = प्रागेव (even before), उत्तुङ्गतोरणस्थलम्=अतिशयोच्च बहिर्द्वारस्थानम् (top of a lofty archway), आरूढेन = प्राप्तवता (mounted), यन्त्रघट्टनबीजम्=यन्त्रसंचालनकारणं लौहकीलकम् (The iron bolt by which the mechanism), आदाय = गृहीत्वा (having taken up), हस्तिनीगत एव=करिणीपृष्ट समागत एव (was seated on the female-elephant), तपस्वी वैरोचकः (poor Vairochaka), हतः=विनाशितः (killed).

हिन्दी—राक्षस—दोनों का ही प्रयत्न अनुचित स्थान पर हुआ।

विराधगुप्त—और तब, यह हुआ कि—अपने पुट्ठे पर आघात की आशंका से उस हथिनी ने बहुत जल्दी में अपनी चाल बढ़ादी—उसकी प्रथम चाल के अनुमान से फेंककर छोड़ गये—निशाना चूककर यन्त्रयुक्त तोरण से गिरते हुए उस बेचारे वर्वरक का ही जान ले ली, जिनके दोनों हाथ चन्द्रगुप्त के हाने का उन्माद से कटार खींचकर निकालने में ही फंसे थे। उसके बाद, पहले से ही, तोरण की ऊँचा जगह पर चढ़ हुए दारुवर्मा ने, यन्त्रयुक्त तोरण के गिराने के कारण अपने वध का आशंका से तोरण की जड़ में लगा लोहे का काल उखाड़ ली—जिससे हाथी पर बैठे बेचारे वैरोचक की ही हत्या हो गयी।

English—*Rakshasa*—Both attempted in the wrong time.

Viradhgupta—Then she she-elephant seemed to be anticipated by any coming attempt as she changed herself in a quick speed. And the gateway-which was based on the calculation of the previous speed of the she-elephant fell on Vervaraka with the dagger

राक्षसः—कष्टम् । अनर्थद्वयमापतितम् । न हतश्चन्द्रगुप्तो हतौ वैरोचक-वर्वरकौ दैवेन । अथ सूत्रधारो दारुवर्मा कथम् ।

विराधगुप्तः—वैरोचकपुरःसरेण पदातिलोकेनेव लोष्टघातं हतः ।

राक्षसः—(सास्रम् ।) कष्टम् । अहो वत्सलेन सुहृदा दारुवर्मणा वियुक्ताः स्मः । अथ तत्रत्येन भिषजा अभयदत्तेन किमनुष्ठितम् ।

विराधगुप्तः—सर्वमनुष्ठितम् ।

राक्षसः—(सहर्षम् ।) किं हतो दुरात्मा चन्द्रगुप्तः ।

विराधगुप्तः—अमात्य, दैवान्न हतः ।

राक्षसः—(सविषादम् ।) तत्किमिदानीं कथयसि सर्वमनुष्ठितमिति ।

---

drawn in his hand to attempt on Vairochaka, knowing him Chandragupta, and he died. And expecting his own execution due to the let fall of arch, Daruvarman, who had reached to the uppermost part of the arch, pulled the iron key for the performance of mechanism of the gateway, which caused the death of poor Vairochaka (in the same position, as he was sitting on the elephant).

विमला

व्याख्या—राक्षस —कष्टम् = दुःखम् (Alas!), अनर्थद्वयम् = अनिष्टद्वयम् (two misfortunes), आपतितम् = सम्प्राप्तम् (have happened), न हतश्चन्द्रगुप्तः = मौर्यो न विनाशितः (Chandragupta is not killed), दैवेन = भाग्येन (by fate), वैरोचकवर्वरौ (Vairochaka and Varveraka), हतौ=विनाशितौ (are killed), अथ = अनन्तरम् (now), सूत्रधारः=शिल्पी (Carpenter), दारुवर्मा (Daruvarman), कथम्=केन प्रकारेण अस्तीति (how did).

विराधगुप्त—वैरोचकपुरःसरेण = वैरोचकाग्रगामिना (marched before Vairochaka), पदातिलोकेनैव = चरणगेन लोकेन (by the foot-man), लोष्टघातम् (hit with brick-bats), हत = विनाशितः (killed).

राक्षस —[सास्रम्-नेत्रजलेनसहितम् (with tears in his eyes)], कष्टम् = दुःखम् (Alas !), वत्सलेन=प्रीतिमता (the loving), सुहृदा = मित्रेण (friend), दारुवर्मणा (Daruvarman), वियुक्ता स्मः=विरहितास्म (bereaved), अथ = अनन्तरम् (now), तत्रत्येन=तत्रवास्तव्येन (living there), भिषजा=वैद्येन (by the physician), अभयदत्तेन = तन्नाम्ना (Abhayadatta), किमनुष्ठितम्= किं कार्यम् कृतम् (what was done).

विराधगुप्त —सर्वम् = सकलम् (All), अनुष्ठितम्=सम्पादितम् (was done).

राक्षस—[सहर्षम्=सप्रसन्नम् (with joy)] किम् (what ?), हतः=मृतः (killed), दुरात्मा=दुष्टः (wicked), चन्द्रगुप्त =वृषलः (Chandragupta).

विराधगुप्त —अमात्य=मन्त्रिन् (Minister), दैवात्=भाग्यात् (by fate), न हतः= न मृतः (was not killed)

विराधगुप्तः—अमात्य, कल्पितमनेन योगचूर्णमिश्रितमौषधं चन्द्रगुप्ताय। तत्प्रत्यक्षीकुर्वता चाणक्यहतकेन कनकभाजने वर्णान्तरमुपलभ्याभिहितश्चन्द्रगुप्तः—वृषल, सविषमिदमौषधं न पातव्यम्' इति।

राक्षस—[सविषादम् = सखेदम् (sorrowfully)], तत = तस्मात् (then), इदानीम् = अधुना (now), सर्वमनुष्ठितम् = सर्वकार्यं सम्पादितम् (all was done), किं कथयसि (why do you say)

हिन्दी—राक्षस—बड़ा कष्ट है, दो अनर्थ एक साथ, चन्द्रगुप्त तो मारा गया नहीं, भाग्य ने वैरोचक और बर्बरक मार गये। अच्छा, प्रिय दारुवर्मा का क्या समाचार है?

विराधगुप्त—वैरोचक के पैदल चलने वाले अनुयायियों ने पत्थर मार-मार कर उनकी जान ले ली।

राक्षस—(आँखों में आँसू भरकर) बड़ा दुख है। हाय! अत्यन्त स्नेही मित्र दारुवर्मा ने भी साथ छोड़ दिया। अच्छा, वहाँ वर्तमान वैद्य अभयदत्त ने क्या किया?

विराधगुप्त—सब कुछ किया गया।

राक्षस—(प्रसन्नता पूर्वक) क्या दुरात्मा चन्द्रगुप्त को समाप्त कर दिया गया?

विराधगुप्त—अमात्य! भाग्य से नहीं मारा गया।

राक्षस—(अफसोस के साथ) तो फिर क्यों कह रहे हो "सब कुछ पूरा कर दिया गया!"

English—*Raksaasa*—Oh, what a double misfortune at the same time? Chandragupta is not killed while the fortune killed Vairochaka and Varvaraka! Yes, what is to Daruvarma?

Viradhagupta—He was killed by stones by the fore marching persons of Vairochaka.

Rakshasa—(With tears in his eyes) Ah; we have lost our one more dearest friend, Daruvarma What has done the physician-Abhayadatta living there?

Viradhagupta—All was done.

Rakshasa—(With joy) What? Is the wicked Chandragupta killed?

Viradh—Minister, by luck, he was not killed

Rakshasa—(Sorrowfully) Then why do you say now "all was done?"

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त—अमात्य=मन्त्रिन् (Minister) अनेन=वैद्येन (by this), योगचूर्णमिश्रितमौषधम्=विषचूर्णसंयुक्तभेषजम् (a medicine mixed with a treacherous powder), चन्द्रगुप्ताय=वृषलाय (for Chandragupta), कल्पितम्=प्रयुक्तम् (had prepared), तत्प्रत्यक्षीकुर्वता=परिशोधयता (inspecting it), चाणक्यहतकेन=विष्णुगुप्त दुष्टेन (by wicked Chanakya), कनकभाजने स्वर्णपात्रे (in

राक्षस —शठ खल्वसौ बटु । अथ स वैद्य· कथम् ।

विराधगुप्त —तदेवौषध पायितो मृतश्च ।

राक्षस —(सविषादम् ।) अहो महान्विज्ञानराशिरुपरत । अथ तस्य शयनाधिकृतस्य प्रमोदकस्य किं वृत्तम् ।

---

a golden cup), वर्णान्तरमुपगतम्=अन्य वर्णमुपगतम् (a change of colour), उपलभ्य=ज्ञात्वा (having noticed), अभिहित =उक्त (said), चन्द्रगुप्त =वृषल (Maurya), वृषल=मौर्य (O Chandragupta), सविषमौषधम् = विषमिश्रित भेषजम् (this is poisoned medicine), न पातव्यम् (must not be taken)

राक्षस —असौ = अयम् (He is), खलु = निश्चयन (indeed), बटु = ईषद् विद्य शठ —क्रूर अस्ति (wily fellow), अथ = अनन्तरम् (after that), स = असौ (that), वैद्य = भिषज (physician), कथ = केन प्रकारेण (how did)

विराधगुप्त —तदेव = विषमिश्रितमेव (the same), औषधम् = भेषजम् (medicine) पायित (complled to drink), उपरतश्च = मृतश्च (and died)

राक्षस —[सविषादम् = सखेदम्=(sorrowfully)] अहो (Alas !), महान्=श्रेष्ठ (great) विज्ञानराशि = चिकित्साविषयकज्ञानाकर (treasure of knowledge), उपरत =मृत (is lost) अथ=अनन्तरम् (that) शयनाधिकृतस्य = शयनेनियुक्तस्य (employed in his bedroom), प्रमोदकस्य = गुप्तचरस्य (of Promodaka), किम् वृत्तम (what became ?)

हिन्दी—विराधगुप्त—अमात्य, इसने तो चन्द्रगुप्त को मारने के लिए योगचूर्ण से मिलाई गयी औषध तैयार की थी। खाने के पात्र में उसका निरीक्षण करते समय—उसका बदलता रंग देखकर, इस दुष्ट चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से कहा—वृषल, यह औषधि विषमिश्रित है। इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

राक्षस—कैसा दुष्ट है यह चाणक्य ! बताओ उस वैद्य पर क्या बीती ?

विराधगुप्त—उसे ही वह औषधि पीनी पड़ी और जान से हाथ धोना पड़ा।

राक्षस—(विषण्णता के साथ) ओह, इतने बड़े वैज्ञानिक का ऐसा अन्त, अच्छा तो बताओ उसके शयनकक्ष के अधिकारी प्रमोदक का क्या हुआ ?

English—*Viradhgupta*—Minister, he had prepared a medicine mixed with a powder for killing Chandragupta But wicked Chanakya inspecting it, having noticed change of colour in a golden plate said this to Chandragupta—Vrishala, this is poisoned medicine, it must not be drunk

Rakshasa—He is wily fellow indeed, what of the physician ?

Viradhgupta—He was compelled to drink the same medicine and died

Rakshasa—Alas ! A great treasure of knowledge is lost and what became of Promoda, who was employed in his bed room ?

विराधगुप्तः—यदितरेषाम् ।

राक्षसः—(सोद्वेगम् ।) कथमिव ।

विराधगुप्तः—स खलु मूर्खस्त्वं युष्माभिरतिसृष्टं महान्तमर्थराशिमवाप्य महता व्ययेनोपभोक्तुमारब्धवान् । ततः कुतोऽयं भूयान्धनागम इति पृच्छ्यमानो यदा वाक्यभेदान्बहूनगमत्तदा चाणक्यहतकेन विचित्रवधेन व्यापादितः ।

राक्षसः—(सोद्वेगम् ।) कथमत्रापि दैवेनोपहता वयम् । अथ शयितस्य चन्द्रगुप्तस्य शरीरे प्रहर्तुमस्मत्प्रयुक्तानां राजगृहस्यान्तर्भित्तिसुरङ्गानिरय प्रथममेव निवसतां बीभत्सकादीनां को वृत्तान्तः ।

विराधगुप्त—अमात्य दारुणो वृत्तान्तः ।

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त—यदितरषाम् = यदन्यषाम् (The same of others).

राक्षस—सखेदम् (Anxiously), कथमिव=केन प्रकारेण (How so ?)

विराधगुप्त —स = असौ (that), खलु = निश्चयेन (indeed), मूर्ख = ज्ञानशून्य (fool), युष्माभिः = भवद्भिः (by you), अतिसृष्टम् = दत्तम (given), महान्तम्= प्रचुरम (the large) अर्थराशिम्=धनसमूहम् (amount of money), अवाप्य = प्राप्य (having obtained), महता = प्रभूतेन (with great), व्ययेन = अर्थस्यापगमेन (expense), उपभोक्तुम् = निर्वेष्टुम् (enjoy), आरब्धवान्=प्रारब्धवान् (began to), ततः = तदनन्तरम् (then), कुतः = कस्मात् ('how), अयम् = प्रमोदकः (he), भूयान् (accession), धनागमः=अर्थाधिगमः (of immense wealth), इति पृच्छ्यमानः = जिज्ञास्यमानः (questioned), यदा (when), वाक्यभेदान्= अन्योन्यविरुद्धवचनानि (divergent statements), बहून्=अनेकानि (several), अगमत् (made), तदा (where upon), चाणक्य हतकेन = दुष्ट चाणक्येन (by cursed Chanakya), विचित्रवधेन = अनेकविधवधेन (by an indescribably), व्यापादितः=मारितः (was killed).

राक्षस—[सोद्वेगम्=ससम्भ्रमम् (Sorrowfully)], कथम् (How), अत्रापि (here too), दैवेन = भाग्येन (by fate), उपहतावयम् = वयम् विनाशिता (we have been disappointed), अथ शयितस्य = अनन्तरम् निद्रितस्य (well, lying down on his bed), चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), शरीरे = देहे (on body), प्रहर्तुम् = शस्त्रप्रहारकर्तुम् (to slay), अस्मत् प्रयुक्तानाम् = मत् प्रेषितानाम् (employed by us), राजगृहस्य = राजभवनस्य (royal palace), अन्तर्भित्ति सुरङ्गाम् = अभ्यन्तर्वर्तित बिले (a recess in the wall), प्रविश्य = प्राप्य (having got in), प्रथममेव निवसता = तिष्ठताम् (previously living in), बिभत्सकादीनाम् (Bivatsaka and others), को वृत्तान्तः = किं वृत्तान्तमिति (what news of)

विराधगुप्त —अमात्य = मन्त्रिन् (Minister,) दारुण = कठिनः (terrible), वृत्तान्तः (news).

राक्षस —(सावेगम् ।) कथ दारुणो वृत्तान्त'। न खलु विदितास्ते तत्र निवसन्तश्चाणक्यहतकेन ।

विराधगुप्त —अमात्य, अथ किम् । प्राक् चन्द्रगुप्तप्रवेशाच्छयनगृह प्रविष्टमात्रेणैव निपुणमवलोकयता दुरात्मना चाणक्यहतकेन कस्माच्छिद्भित्तिच्छिद्रा·

हिन्दी—विराधगुप्त—जो अन्य लोगों का हुआ ।

राक्षस—(घबराहट के साथ) कैसे ?

विराधगुप्त—आप से प्राप्त अपार धनराशि का उस मूर्ख ने अपव्यय के साथ उपभोग करना प्रारम्भ कर दिया । उसके बाद—'यह विशाल धन की प्राप्ति कहाँ से हुई' ऐसा पूछे जाने पर—उसने परस्पर विरोधी बयान दिये । तब दुष्ट चाणक्य ने विचित्र वध से उसे भी मार डाला ।

राक्षस—(घबडाकर) क्या यहाँ भी भाग्य के द्वारा हम मारे गये ? अच्छा, सोये में चन्द्रगुप्त के शरीर पर प्रहार करने के लिए—मेरे द्वारा नियुक्त भीतरी दिवाल के अन्त सुरङ्ग में पहले से निवास करने वाले बिभत्सक आदि का क्या हाल है ?

विराधगुप्त—अमात्य, भयङ्कर वृत्तान्त है ।

English—*Viradhgupta*—The same as of others

Rakshasa—(In alarm) How is that ?

Viradhagupta—That fool, having obtained the vast amount of money given by you began to enjoy at great expence And when questioned as to how he came by so much wealth, he made many contradictory statments, whereupon that cursed Chanakya ordered him to be killed in a fearful way

Rakshasa—(Sorrowfully) How ! here too, we have been disappointed by fate and what news you bring of Bibhatsaka and others, who were employed by us to slay Chandragupta when lying down on his bed, and who having previously got in were living in a hole within the wall of the palace ?

Viradhagupta—Terrible news, Minister !

विमला

व्याख्या—राक्षस —[सावेगम् = सक्लेशम् = with agitation)], कथम् = कुत· (How), दारुण = दुःखप्रदः (sorrowful), वृत्तान्त = उदन्त (news) न खलुविदितास्ते = न ज्ञातास्ते किम् (they were not found), तत्र निवसन्त = वास कुर्वन्त (living there), चाणक्य हतकेन = दुष्ट चाणक्येन (by the villain Chanakya)

विराधगुप्त —अमात्य = मन्त्रिन् (Minister), अथकिम् = ते विदिता एव (what else), प्राक्चन्द्रगुप्त प्रवेशात्=मौर्यसन्निवेशात्प्राक् (before Chandragupt s the very entry), शयनगृहम् = निद्राभवने (bedroom), प्रविष्टमात्रेणैव = सन्निवेशमात्रेणैव moment), चाणक्यण दुरात्मना = दुष्टचाणक्येन (by the villain Chanakya),

गृहीतभक्तावयवां निष्क्रामन्तीं पिपीलिकापङ्क्तिमवलोक्य पुरुषगर्भमेतद्गृहमिति गृहीतार्थेन दाहितं तच्छयनगृहम्। तस्मिंश्च दह्यमाने धूमावरुद्धदृष्टयः प्रथम-पिहितनिर्गमनमार्गमनधिगम्य द्वारं सर्व एव बीभत्सकाद्यो तत्रैव नष्टाः।

राक्षसः—(सास्रम्।) कष्टं भोः, कष्टम्। सखे, पश्य दैवसंपद् दुरात्मनश्चन्द्र-गुप्तहतकस्य। कुतः।

निपुणमवलोकयता=निरीक्षितेसति (a searching look about), कस्माचित् भित्ति छिद्राद्=केनापि कुड्यरन्ध्रात् (from some crevice in the wall), गृहीतभक्ता-वयवाम्=आत्ताद्यकणाम् (with fragments of boiled rice), निष्क्रामन्तीम्= निर्गच्छन्तीम् (issuing), पिपीलिकापङ्क्तिम्=पिपीलिका श्रेणीम् (a line of ants), अवलोक्य=दृष्ट्वा (having seen), पुरुषगर्भमेतत्=पुरुषयुक्तमेतत् (had people within), गृहमिति=सदनमिति (the house), गृहीतार्थेन=निश्चिततात्पर्येण (truth guessed), दाहितम्=भस्मसात्कृतम् (to be burnt down), तच्छयन-गृहम्=तच्छिद्रामवनम् (that bedroom), तस्मिंश्च=शयनगृहे च दह्यमाने= भस्मसात् क्रियेसति (while it was being burnt), धूमावरुद्ध दृष्टयः (with eyes closed by smoke), प्रथमम्=पूर्वम् (before), विहित=निर्मित (constructed), निर्गमनमार्गम्=निस्सरणपथम् (the way out), अनधिगम्य=अप्राप्य (not having reached), द्वारम् (door), सर्वएव (even all), विभत्सकादयः (Bibhatsaka and others), ज्वलनम्=अग्निम् (the fire), उपगम्य=प्राप्य (having got), तत्रैव (there), नष्टाः=विनष्टाः (perished).

राक्षसः—[सास्रम्=with tears in his eyes)], कष्टम् भोकष्टम्=(Terrible, O, Terrible), सखे=मित्र (friend), पश्य=अवलोकय (see), दैवसम्पदम्= भाग्यसम्पदम् (profusion of luck), दुरात्मनश्चन्द्रगुप्तहतकस्य (of the vile-hearted and the wicked Chandragupta), कुतः=कस्मात् (For) :—

हिन्दी—राक्षस—(सभय) कैसा भयङ्कर वृत्तान्त ! वहाँ रहते हुए दुष्ट चाणक्य के द्वारा जान तो नहीं लिए गये !

विराधगुप्त—अमात्य ! और क्या ! चन्द्रगुप्त के प्रवेश से पूर्व उसके शयनागार में प्रविष्ट होते ही चारों ओर देखकर जैसे ही दिवाल के एक छेद से चावल के कणों को ढोती हुई चींटियों की बाहर निकलती कतार पर उसकी दृष्टि पड़ी, उसने ताड़ लिया कि यहाँ कुछ लोग छिपे पड़े हैं—अतः उसने उस घर में आग लगवा दी। बिभत्सक इत्यादि सबके सबकी आँखें जलते हुए घर में धुंए से ऐसा भर गयीं कि उन्हें वहाँ से निकल भागने का वह रास्ता ढूँढ़ते न मिल सका जिसे उन लोगों ने पहल से ही ढक रक्खा था। फलस्वरूप उनके सब वहीं जलकर मर गये।

राक्षस—(आँखों में आँसू भरकर) कष्ट है, मित्र दुरात्मा नीच चन्द्रगुप्त की भाग्य सम्पत्ति को तो देखो। क्योंकि—

English—*Rakshasa*—How a bad news ? Has villain Chanakya traced him living there ?

कन्या तस्य वधाय या विषमयी गूढं प्रयुक्ता मया
देवात्पर्वतकस्तया स निहतो यस्तस्य राज्यार्धहृत्।
ये शस्त्रेषु रसेषु च प्रणिहितास्तैरेव ते घातिता
मौर्यस्यैव फलन्ति पश्य विविधश्रेयांसि मन्नीतयः ॥ १६ ॥

Viradhgupta—Minister, the same happened, the wicked soul Chanakya, entered the bed-room before the entry of Chandragupta and after seeing a continuous line of ants carrying boiled rice in their mouth from a hole of the wall, being firm for the presense of men hidden in the room, he ordered the bed-room to be set on fire—as it began to burn—all those, Bibhatsaka and others, were unable to find out the previously constructed outlet due to the obstruction of smoke and being enveloped in the flames, perished

Rakshasa—Grievous, a grievous. Friend, look at the excess of good luck of the evil Chandragupta. For :—

विमला

व्याख्या—अन्वयः—मया, तस्य, वधाय, या, विषमयी, कन्या, गूढम, प्रयुक्ता, तया, देवात्, सः पर्वतक, निहतः, यः, तस्य, राज्यार्द्ध हृतम, ये, शस्त्रेषु, च, रसेषु, प्रणिहिता, ते, तैः, एव, घातिताः, पश्य, मन्नीतयः, मौर्यस्य, एव, विविध श्रेयांसि, फलन्ति ॥ १६ ॥

व्याख्या—मया = राक्षसेन (by me), तस्य = चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), वधाय = नाशाय (for death), या विषमयी = विषपूर्णशरीरा (a poisoned body), कन्या=अविवाहिता युवतिः (the maid), गूढम् = प्रच्छन्नम् (had secretly), प्रयुक्ता=नियुक्ता (employed), तया = विषकन्यया (by that girl), दैवात् = संयोगात् (through fate), सः=असौ (that), पर्वतकः (Parvataka), निहतः = मृत्युंप्रापितः (were killed), यः = पर्वतकः (who), तस्य = चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), राज्यार्द्धहृत् = राज्यार्द्धभाक् (was to claim half of his kingdom), ये = जनाः (people), शस्त्रेषु=आयुधप्रयोगेषु (in the matter of weapons), च = पुनः (and), रसेषु = विषप्रयोगेषु (to use poisons), प्रणिहिताः=प्रेरिताः (were employed), ते = जनाः (people), तैः = शस्त्ररसः (by those very means), एव = निश्चये (indeed), घातिताः = विनाशिता (killed), पश्य = अवलोकय (see), मन्नीतयः = ममोपायाः (my schemes), मौर्यस्य एव=चन्द्रगुप्तस्यैव (to Chandragupta himself), विविध=अनेक (many), श्रेयांसि = मङ्गलानि (blessings), फलन्ति=प्रतिपादयन्ति (a rich harvest) ॥१६॥

हिन्दी—मैंने जिस विषकन्या को मौर्यवध के लिए भेजा था, वह उसी के राज्य के आधे के अधिकारी को मार गयी ! और मैंने जिन लोगों को शस्त्र और विष के द्वारा उन्हें मारने

विराधगुप्तः—अमात्य, तथापि खलु प्रारब्धमपरित्याज्यमेव । पश्य ।

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति ॥ १७ ॥

के लिए लाया था—वे हथियार और जहर उन्हीं के लिए प्राणघातक सिद्ध हुए। दैववश ने मेरा सारी नीतियां चन्द्र के पक्ष में वरदान बन गयी ॥ १६ ।

English—The poison maid, who was employed by me to kill Chandragupta, killed Parvataka, who was the owner of his half of the kingdom And persons, who were appointed by me to kill him by weapon and poison, are made to suffer death by those very means Just see, my all the schemes are blesses to Chandragupta. (16)

टिप्पणी—विषमयी—विष+मयट्+ङीप् विभक्त्यादि कार्य से रूप सम्पन्न है। घातिता —, हन्+णिच्+क्त+विभक्ति कार्य। प्रणिहिता —प्र+ √नि+ √धा+क्त+ विभक्तिकार्य। राज्यार्द्धम्—राज्यस्य अर्द्धम् राज्यार्द्धम् । दैवसम्पदम्—दैव सम+पद+क्विप् भावे सम्पद् ।

इस श्लोक में विषकन्या प्रेरणात्मक नीति प्रयोग के द्वारा दो प्रतिकूल पदार्थों के संघटन में चमत्कार उत्पन्न किया गया है। अत यहाँ विषमालङ्कार है। विषम विरोधमूलक अलङ्कार माना जाता है। इस श्लोक में वैदर्भी रीति, माधुर्य गुण एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

विमला

विराधगुप्त —अमात्य=मन्त्रिन् (Minister), तथापि=नीतिवैफल्येऽपि (still), खलु=निश्चयेन (indeed), प्रारब्धम्=प्रक्रान्तम् (undertaken), अपरित्याज्यमेव=परित्याज्य योग्यम् न (must not be givenup), पश्य=अवलोकय (see)

अन्वयः—नीचैः, विघ्नभयेन, न, खलु, प्रारभ्यत, मध्या, प्रारभ्य, विघ्नविहिता, विरमन्ति, उत्तमगुणा, विघ्नै, पुन, पुन, प्रतिहन्यमाना, अपि, प्रारब्धम् न, परित्यजन्ति ॥ १७ ॥

व्याख्या—नीचैः=अधमैः (Mean man), विघ्न भयेन=अन्तरायभीत्या (from fear of obstacles), न=नहि (not), खलु=निश्चयेन (indeed), प्रारभ्यते=आरभ्यते (set to work), मध्या=मध्यमा (average people), प्रारभ्य=आरम्भम् कृत्वा (begin), विघ्नविहिताः=अन्तराय प्रताडिता (confronted with difficulties), विरमन्ति=कार्यम् त्यजन्ति (desist), उत्तमगुणा =श्रेष्ठा (Men of best energy), विघ्नै=अन्तरायै (by difficulties), पुन पुनः=मुहुर्मुहु (again and again), प्रतिहन्यमाना=प्रताडिता सन्तोऽपि (assailed), अपि=(also), प्रारब्धम्=आरब्धम् (undertaken), न परित्यजन्ति=न त्यजन्ति (do not give up) ॥ १७ ॥

अपि च।

किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत्
किं वा नास्ति परिश्रमो दिनपतेरास्ते न यन्निश्चलः।
किं त्वङ्गीकृतमुत्सृजन्कृपणवच्छ्लाघ्यो जनो लज्जते
निर्व्यूढं प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्॥ १८॥

हिन्दी—विराधगुप्त—कुछ हो मन्त्रिप्रवर जो काम हाथ में लिया गया है, उसे छोडा नहीं जा सकता। कहा भी है—

नीचजन विघ्नों के भय से किसी भी कार्य को प्रारभ ही नहीं करते,। प्रारभ करके विघ्नों के द्वारा प्रताडित होने पर मध्यम लोग रुक जाते हैं, किन्तु, विघ्नों से बार बार प्रताडित होते हुए भी आरम्भित कार्य को उत्तमजन नहीं छोडते॥

English—*Viradhgupta*—Minister, still, what is undertaken must not be given up See

Mean men set not to work from fear of obstacles Average people desist after commencing difficulties, but Men of superior merit though again and again assailed by difficulties, do not give up what is once undertakan 17

टिप्पणी—परित्याज्यम्—परि+त्यज्+ण्यत् कर्मणि परित्याज्य। विघ्नभयेन—वि+हन्+क करण घञर्थे विघ्न तस्मात् भयम्, 'हेतौ' से तृतीया विभक्ति। 'विरमन्ति' में परस्मैपद 'व्याङ परिभ्योरमः' से हुआ है।

इस श्लोक में पूर्णोपमालङ्कार है। कुछ लोग इसमें व्यतिरेक एव कुछ लोग अप्रस्तुत प्रशसा अलङ्कार मानते हैं। इसमें वैदर्भी रीति, प्रसादगुण एव वसन्ततिलका वृत्त है। लक्षण है—

'उक्तावसन्ततिलकातभजाजगौग'

विमला

अन्वयः—शेषस्य, वपुषि, किम, भरव्यथा, न, यत्, एष, क्ष्माम्, न, क्षिपति, वा, किम्, दिनपते, परिश्रम, न, अस्ति, यत्, निश्चल, न, अस्ति, किन्तु, श्लाघ्य, जन, अङ्गीकृतम्, कृपणवत्, उत्सृजन्, लज्जते, हि निर्व्यूढम्, एतत्, सताम्, गोत्रव्रतम्,॥ १८॥

व्याख्या—शेषस्य=शेषनागस्य (Sesha's), वपुषि=शरीरे (on body), किमितिप्रश्ने (what) भरव्यथा=भार पीडा (pain of burden), न=नहि (not), यत् (that), एष=शेषनाग (he) क्ष्माम्=पृथिवीम् (the earth), न=नहि (not), क्षिपति=पातयति (throw off), वा=अथवा (or), किम् दिनपते=सूर्यस्य (the Suns), परिश्रम=श्रान्ति (toil), न=नहि (not), अस्ति=भवति (does), यत् (that), निश्चल=स्थिर (motionless) न=नहि (not), आस्ते=अस्ति (does), किन्तु (but), श्लाघ्य=प्रशसनीय (praise worthy), जन=लोक (people), अङ्गीकृतम्=स्वीकृतम् (undertaken),

राक्षसः—सखे, प्रारब्धमपरित्याज्यमिति प्रत्यक्षमेवैतद्भवताम् । ततस्ततः ।

विराधगुप्तः—ततःप्रभृति चन्द्रगुप्तशरीरे सहस्रगुणमप्रमत्तश्चाणक्यहतक एभ्य एतदीदृशं भवतीत्यन्विष्य निगृहीतवान्पुरनिवासिनो युष्मदीयानाप्तपुरुषान् ।

कृपणवत्=दीनवत् (like a mean hearted man), उत्सृजन्=परित्यजन् (to lay aside), लज्जते=त्रपामनुभवति (blushes), हि=यत, निर्व्यूढम्=निर्वाह (to carry), एतत्=(this), सताम्=सज्जनानाम् (of the worthy), गोत्रव्रतम्=कुलव्रतम् (the family vow) ॥ १८ ॥

हिन्दी—और भी—

क्या शेषनाग के शरीर पर क्या भार की पीडा नहीं है ? जो इसे फेंक नहीं देता है, अथवा—क्या सूर्य को परिश्रम नहीं होता, जो वह स्थिर नहीं होता ? किन्तु, प्रशंसनीय व्यक्ति स्वीकृत की हुई वस्तु को कायर की तरह छोड़ता हुआ लज्जित नहीं होता, क्योंकि प्रारम्भित कार्यों का निर्वाह करना सज्जनों का कुलधर्म है ? ॥ १८ ॥

English—Moreover —

Is there no pain of burden in the body of Sesha, that he does not throw down the earth ? Or—does not feel the Sun fatigued that he does not sit down motionless ? But a praiseworthy man blushes to lay aside, like a mean hearted person, what he has once undertaken To carry their undertaking to their end—this is indeed, *the family vow of the good. 18.*

टिप्पणी—उत्सृजन्—उद्+ √सृज्+शतृ+सुमादि कार्य से रूपसिद्धि । निर्व्यूढम्—निर्+वि+ √वह्+क्त (भावे) विभक्ति कार्य । श्लाघ्य—√श्लाघ्+ण्यत् (कर्मणि) विभक्त्यादिकार्य से रूपसिद्धि । इस श्लोक में अर्थान्तरन्यास अलंकार एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है । प्रसादगुण एवं वैदर्भी रीति है ।

विमला

व्याख्या—राक्षस—सखे=हे मित्र (friend), प्रारब्धम्=प्रस्तुतम् कार्यम् (have undertaken), अपरित्याज्यम्=परित्यागोऽयोग्यम् (not giving up), एतत् (*that*), भवताम्=युष्माकम् (*you*), प्रत्यक्षमेव=समक्षमेव (*before* your eyes), ततस्ततः=तदनन्तरम् किम् जातम् (what further)

विराधगुप्त—ततःप्रभृति=तस्माद्दिवसादारभ्य (since then), चाणक्यहतकः=दुष्ट चाणक्यः (the cursed Chanakya), चन्द्रगुप्तस्य शरीरे=मौर्यस्य विग्रहे (regarding the person of Chandragupta) सहस्रगुणमप्रमत्तः=सहस्रम् अधिका गुणा यस्मिन् कर्मणि तत्सहस्रगुणम् सहस्रगुणाम् यथास्यात् तथा (thousand times more), अप्रमत्त=सावधान (*careful*), एभ्यः एव=कुसुमपुरवासिराक्षसाप्तजनेभ्यः एव सदृशम् (*from them*), एतत्=विषकन्यादि प्रयोगारूपम् ईदृशम्=अनिष्टम्, भवति=जायते (then such attempts originated), अन्विष्य=सम्मृग्य (after learning on enquiry), निगृहीतवान्=आयत्तीकृतवान् (arrested), पुरनिवासिनः=

राक्षस—(सोद्वेगम् । कथय कथय के के निगृहीताः ।

विराधगुप्त—प्रथमं तावत्क्षपणको जीवसिद्धिः सनिकारं नगरान्निर्वासितः ।

राक्षस—(स्वगतम् ।) एतावत्सह्यम् । न निष्परिग्रहं स्थानभ्रंशः पीडयिष्यति । (प्रकाशम् ।) वयस्य, किमपराधमुद्दिश्य निर्वासितः ।

विराधगुप्त—एष राक्षसप्रयुक्तया विषकन्यया पर्वतेश्वरं व्यापादितवानिति ।

कुसुमपुर वास्तव्यान् (residing in the city),युष्मदीयान् (your), आत्मसुहृदान्= विश्वासिन लोकान् (trusted agents)

राक्षस —[सोद्वेगम् = सत्रासम् = (with concern)], कथय कथय वीप्सायाम् द्विरुक्ति) (tell me), के के = किन्नामका (who were), निगृहीता = दण्डिता (arrested)

विराधगुप्त —प्रथमम्=आदौ (In the first), तावत् = वाक्यालङ्कारे प्रयोग, क्षपणक = बौद्ध सन्यासी चिह्नधारी (the mendicant), जीवसिद्धि = तन्नामक. (Jivasidhi), सनिकारम्=सतिरस्कारम् (with indignities), नगरात्=पुरः (from the city), निर्वासित = निष्कासित (was expelled)

राक्षस —[स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself)], एतावत् = जीवसिद्धि निष्कासनम् (this much), सह्यम् = सहनयोग्यम् (is bearable), निष्परिग्रहम् = विषयासक्तिशून्यम् (one who owns nothing), स्थानभ्रंश = वासस्थानपरित्याग (expulsion from residence), न=नहि पीडयिष्यति = व्यथा करिष्यति (will not pain), [प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud)] वयस्य = मित्र (friend), कम्=किमभिधेयम् (on what), अपराधम् = दोषम् (charge), उद्दिश्य=निश्चित्य (with reference), एष = क्षपणक (he) निर्वासित = निष्कासित (was expelled)

विराधगुप्त —एष = असौ (that), राक्षसप्रयुक्तया (employed by Rakshasa), विषकन्यया = विषनिर्मितबालिकया (poison girl), पर्वतेश्वरम्=तन्नामकराजानम् (Parvateswer), व्यापादितवान् = विनाशितवान् (was killed)

हिन्दी—राक्षस—मित्र ! प्रारम्भित कार्य छोड़ने योग्य नहीं होता,—यह आप लोगों के सामने ही है । उसके बाद ?

विराधगुप्त—तभी से लेकर इस दुष्ट चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के शरीर की रक्षा में हजारों गुणा अधिक सावधानी की है । और, इन सबों की जड़ यही लोग हैं—ऐसा निर्णय कर—खोजकर उसने नगरी में रहने वाले आप के विश्वस्तजनों को कैद करा दिया ।

राक्षस —(घबड़ाहट के साथ) बतलाओ, बतलाओ, कौन-कौन पकड़े गये ?

विराधगुप्त—*सर्वप्रथम तो बौद्ध सन्यासी जीवसिद्धि को बड़ी ही बेइज्जती के साथ शहर* से बाहर निकाल दिया गया ।

राक्षस—(स्वगत) यहाँ तक तो बर्दास्त करने योग्य है । बिना परिवार वाले का तो स्थान का परित्याग पीड़ित करेगा नहीं (प्रकाश रूप में) किन्तु, मित्र किस अपराध में उसे यह सजा मिली ?

राक्षसः—(स्वगतम् ।) साधु कौटिल्य, साधु ।
परिहृतमयशः पातितमस्मासु च घातितोऽर्धराज्यहरः ।
एकमपि नीतिबीजं बहुफलतामेति यस्य तव ॥ १९ ॥
(प्रकाशम् ।) ततस्ततः ।

विराधगुप्त—इस अपराध में कि राक्षस द्वारा प्रयुक्त विषकन्या से इसने ही पर्वतेश्वर के प्राण हरे हैं ।

English—*Rakshasa*—Friend, you can see that we are not giving up what we have under taken Next what next ?

Viradhgupta—The cursed Chanakya, a thousand fold more vigilant regarding the person of Chandragupta since then, has arrested your trusted agents residing in the city, on enquiry that such attempts originated from them

Rakshasa—(With concern) Tell me, oh tell me, who were arrested ?

Viradhgupta—In the first place, the mendicant Jivasidhi was expelled from the city with ignominy.

Rakshasa—(To himself) This much is bearable. Loss of place will not pain one who owns nothing (aloud), Friend, with reference to what was he expelled ?

Viradhgupta—That he killed Parvatswar with poison-maid employed by you.

विमला

व्याख्या:—राक्षस—[स्वगतम्=आत्मगतम्=(To himself)], साधु=सम्यक् कृतम् (excellent), कौटिल्य=विष्णुगुप्त (Chanakya), साधु=त्वया सम्यक् कृतम् (well done)

अन्वयः—अर्द्धराज्यहर , घातित , अयश , परिहृतम्, अस्मासु, पातितम्, यस्य, तव, एकमपि, नीतिबीजम्, बहुफलताम्, एति ॥ १९ ॥

व्याख्या—अर्द्धराज्यहर=प्रतिज्ञातार्द्धराज्याधिकारी (the sharer of half the kingdom), घातितः=मृत्युमापित (had killed), अयश=तद्धत्या दुष्कीर्तिम् (infamy), परिहृतम्=दूरीकृतम् (removed), अस्मासु=मयि (upon us), पातितम्=समर्पितम् (have cast), यस्यतव=चाणक्यस्य (you of whom), एकमपि=केवलमपि (even a single), नीतिबीजम्=नय अङ्कुरकारणम् (germ of policy), बहुफलताम्=अनेकविध परिणामभावम् (bears multifarious fruit) ॥ १९ ॥

[प्रकाशम्=स्पष्टम् (aloud)], ततस्ततः=तदनन्तरम् किम् (what next)

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) शाबाश, चाणक्य, शाबाश !

विराधगुप्त—ततश्चन्द्रगुप्तशरीरमभिद्रोग्धुमनेन व्यापारिता दारुवर्मादय इति नगरे प्रख्याप्य शकटदासः शूलमारोपितः।

राक्षसः—(सास्रम्।) हा सखे, शकटदास, अयुक्तरूपस्तवायमीदृशो मृत्युः। अथवा स्वाम्यर्थमुपरतो न शोच्यस्त्वम्। वयमेवात्र शोच्या ये नन्दकुलविनाशेऽपि जीवितुमिच्छामः।

विराधगुप्तः—अमात्य, स्वाम्यर्थ एव साधयितव्य इति प्रयतसे।

आधे राज्य के अधिकारी पर्वतक को मारकर, अपने ऊपर आने वाले अपयश को दूर कर—हम पर डाल दिया—तुम्हारे एक भी नातिबीज अनेक प्रकार के फलों को दे रहे हैं ॥ १९ ॥

(सुनाकर) उसके बाद ?

English—*Rakshasa*—(To himself) Well done, you Kautilya, excellent

Ramoving infamy dodged and cast upon us, while at the same time the sharer of half the kingdom is done away with You of whom even a single germ of policy bears multifarious fruit 19

(Aloud), what next

टिप्पणी—सहस्रगुणम्—सहस्रगुणा यस्मिन् कर्मणि तत् यथा तथा। निष्परिग्रहम्—परि+ग्रह+अप् कर्म में 'परिग्रह' निरस्त परिग्रह अनेन—'इगुपधस्येत्यादि' षत्व विभक्त्यादि कार्य से रूप की सिद्धि।

नातिबीज के अनेक फलोत्पादकत्व में हेतुभूत—'अपहृतमयश' इत्यादि का पदार्थत्व के साथ कथन से इस श्लोक में काव्यलिङ्ग अलङ्कार है। उदाहरण जैसे—

'हेतोर्वाक्य पदार्थत्वे काव्यलिङ्गमुदाहृतम्'

इसमें वैदर्भी रीति और प्रसादगुण है तथा आर्यावृत्त है। जैसे लक्षण—

यस्या पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथास्तृतीयेऽपि
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त—तत = तदनन्तरम् (after that), चन्द्रगुप्तशरीरम् = नृपस्य देहम् (body of Chandragupta), अभिद्रोग्धुम् = अभिजिघांसितुम् (to injure), अनेन = शकटदासेन (by him), व्यापारिता = नियोजिता (had been employed), दारुवर्मादय (Daruverma and others), इति=इत्येतद् वृत्तम् (this news), नगरे = पत्तने (in the city), प्रख्याप्य = उद्घोष्य (proclaiming) शकटदास = तन्नामक (Sakatdas), शूलम्=लौहदण्डम् (an iron spit), आरोपित = स्थापित (put to)

राक्षस —[सास्रम्=(with tears)], हा सखे शकटदास = कष्टम् हे मित्र शकटदास (Alas ! friend Sakatdas), अयुक्तरूप = अयोग्य (unfit), तव (your), अयम् = एष (this), ईदृश = एतद्विध (such), मृत्यु = मरणम् (death), अथवा = वा (or), स्वाम्यर्थम् = प्रभु कारणम् (for master's cause), उपरत. =

राक्षसः—सखे,

अस्माभिरमुमेवार्थमालम्ब्य न जिजीविषाम्।
परलोकगतो देवः कृतघ्नैर्नानुगम्यते ॥ २० ॥

कथ्यतामपरस्यापि सुहृद्व्यसनस्य श्रवणे सज्जोऽस्मि।

मृतः (dead), त्वम् (you), न शोच्यः = शोचितुं योग्यः (not to be pitied), वयमेव (we alone), अत्र = अस्मिन् विषये (in this matter), शोच्याः = शोकयोग्याः (to be pitied), ये = वयम् (we), नन्दकुल विनाशेऽपि = नन्दवंशक्षयेऽपि (even after the race of Nanda is destroyed), जीवितुम् = प्राणितुम् इच्छामः = अभिलषामः (wish to live)

विराधगुप्त—अमात्य = मन्त्रिन् (Minister), स्वाम्यर्थं एव = प्रभुकार्यमेव (in the interest of your master), साधयितव्य इति = सम्पादयितव्य इति हेतो (has to be served), प्रवर्तते = चेष्टसे (are working)

हिन्दी—विराधगुप्त—इसके बाद, इस शकटदास ने 'चन्द्रगुप्त पर आघात करने के लिए दारुवर्मा प्रभृति को नियुक्त किया था'—नगर में ऐसी घोषणा कर के शकटदास को शूली पर चढ़ा दिया।

राक्षस—(आँखों में आँसू भर कर) हाय मित्र शकटदास, तुम्हारी इस तरह की मृत्यु अनुचित है। अथवा—स्वामी के लिए मरे हुए तुम शोक करने योग्य नहीं हो, इस विषय में हम लोग ही शोक करने योग्य हैं, जो नन्दकुल के विनाश हो जाने पर भी जीने की इच्छा करते हैं।

विराधगुप्त—अमात्य, 'स्वामी का कार्य सम्पादनीय है'—इसलिए तो आप प्रयत्न कर रहे हैं।

English—*Viradhgupta*—Then Sakatdas put to the stake proclaiming in the city that Daruvarma and others were instigated by him to plot against the life of Chandragupta.

Rakshasa—(With tears), Alas ! friend Sakatdas; such a death quite undeserved by you Or—you who dead in master's cause, must not be mourned for But accursed in the life of me who wishes to live even at the extinction of the race of Narda.

Viradhgupta—Minister, you are working, solely in the interest of your master

विमला

व्याख्या—राक्षस—सखे = मित्र (Friend) —

अन्वयः—अमुम्, अर्थम्, एव, अवलम्ब्य, जिजीविषाम, न, कृतघ्नैः, अस्माभिः, परलोकगतः, देवः, न, अनुगम्यते ॥ २० ॥

व्याख्या—अमुम् = भवदर्थम् (this), अर्थम् = कार्यम् (object), एवेत्यत्र धारणे अवलम्ब्य = आश्रित्य (clinging), जिजीविषाम् = जीवनेच्छाम् (desire to

विराधगुप्तः—एतदुपलभ्य चन्दनदासेनापवाहितममात्यकलत्रम् ।
राक्षसः—क्रूरस्य चाणक्यबटोर्विरुद्धमयुक्तमनुष्ठित तेन । .
विराधगुप्तः—आमात्य, नन्वयुक्ततरः सुहृद्द्रोहः ।

live), न = नहि (not), कृतघ्नै. = अकृतज्ञैः (ungrateful), अस्माभि. = राक्षसादिभि. (by us), परलोकगत. = स्वर्गप्राप्तः (gone to the other world), देव = नन्द. (sire), न अनुगम्यते = न अनुध्रियते (is not being followed) ॥ २० ॥

कथ्यताम् = उच्यताम् (tell), अपरस्यापि = अन्यस्यापि (others also), सुहृद्व्यसनस्य = मित्रदु खस्य (disasters to friend), श्रवणे = आकर्णने (to listen), सज्जोऽस्मि = तत्परोऽस्मि (I am prepared)

हिन्दी—राक्षस—मित्र,

मैं कितना कृतघ्न हू कि अपने स्वामी का मैंने अनुगमन नहीं किया । तुम ठीक ही कहते हो कि मैं उस स्वर्गवासी की इच्छा किस तरह पूरी हो—इसी उद्देश्य से जी रहा हू—न कि जीने की इच्छा से ॥ २० ॥

कहो, मैं दूसरे मित्र की विपत्ति को सुनने के लिए प्रस्तुत हू ।

English—*Rakshasa*—Friend,

His Majesty gone to the other world, is not being followed by us, ungrateful as we are, clinging not to a desire to live, but to this very object. 20.

Proceed, I am ready to hear of the misfortune of other friends also.

टिप्पणी—जिजीविषाम्—जीवितुमिच्छा इति जीव + सन् + अ, भावे जिजीविषा, ताम् जिजीविषाम् ॥

कृतघ्नै—कृ + क्त कर्मणि कृतम् तत् हन्ति विस्मरणेन इति कृत + √हन् क्त कर्तरि कृतघ्नः तै कृतघ्नै. ।

इस श्लोक में परलोकगत राजा के अनुगमन में हेतुभूत कृतघ्नता का और स्वामी कार्य साधन का पदार्थत्वेन कथन से काव्यलिङ्ग अलङ्कार है ।

दूसरा—अप्रश्नपूर्वक उक्त स्वामीकार्य के सम्पादनात्मक वस्तु का परलोकगत राजा के अनुगमन के निराकरण से परिसख्या अलकार भी है । फिर दोनों के समावेश से ससृष्टि अलङ्कार है । इसमें वैदर्भी रीति, माधुर्य गुण, करुण रस एव अनुष्टुप् छन्द है ।

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त —एतदुपलभ्य = इद ज्ञात्वा (hearing of this), चन्दनदासेन (by Chandandas), अमात्यकलत्रम् = राक्षस गृहजनम् (minister's wife), अपवाहितम् = स्थानान्तरम् प्रापितम् (was sent away)

राक्षस —क्रूरस्य = दुष्टस्य (*cruel fellow*), चाणक्यबटोः = विष्णुगुप्तस्य (Chanakya's), *विरुद्धम् = प्रतिकूलम् (against), तेन (by him)*, अयुक्तम् = असमुचितम् (improper), अनुष्ठितम् = कृतम् (what is done)

विराधगुप्त —अमात्य = मन्त्रिन् (Minister), ननु = (but), सुहृद्द्रोह = मित्रविरुद्धाचरणम् (to betray a friend), अयुक्ततरः = अन्याय्यतर. (would have been worse)

राक्षसः—ततस्ततः।

विराधगुप्तः—ततो याच्यमानेन न समर्पितममात्यकलत्रं यदा तदातिकुपितेन चाणक्यवटुना—

राक्षसः—(सोद्वेगम्।) न खलु व्यापादितः।

विराधगुप्तः—न हि। गृहीतगृहसारः सपुत्रकलत्रो बन्धनागारे निक्षिप्तः।

राक्षस—ततस्ततः =तदनन्तरम् (Next, what next)

विराधगुप्त—ततस्तदनन्तरम् (Next), याच्यमानेन=प्रार्थ्यमानेनापि (even on being requested), अनेन=चन्दनदासेन (by him), यदा (when), अमात्यकलत्रम्=राक्षसस्त्री (minister's wife), न समर्पितम्=न दत्तम् (did not give up), तदा (then), अतिकुपितेन=अतिक्रुद्धेन (by the enraged), चाणक्यवटुना=विष्णुगुप्तेन (brat Chanakya)

राक्षस—[सोद्वेगम्=सत्रासम्=In alarm)], न खलु (Not surely), व्यापादितः=मारितः (killed)

विराधगुप्त—नहि=(Not indeed), गृहीतगृहसारः=आत्तगृहस्थितसकलधनम्(with all his property sequestered), सपुत्रकलत्रः=स्त्रीपुत्रसहितम् (with son and wife), बन्धनागारे=कारागृहे (into prison), निक्षिप्तः=स्थापितः (he was sent),

हिन्दी—विराधगुप्त—यह सब सुनकर चन्दनदास ने आपके परिवार को अन्यत्र हटा दिया।

राक्षस—ऐसा करके तो उसने केवल क्रूर चाणक्य के विरुद्ध दुश्मनी मोल ले ली।

विराधगुप्त—अमात्य, मित्रद्रोह और अधिक अनुचित होता।

राक्षस—उसके बाद, उसके बाद।

विराधगुप्त—तब माँगने पर भी जब उस चन्दनदास ने अमात्य के परिवार को समर्पित नहीं किया तब अत्यन्त क्रुद्ध दुष्ट चाणक्य के द्वारा—

राक्षस—(घबराहट के साथ) मार डाला तो नहीं गया?

विराधगुप्त—नहीं। धनसम्पत्ति से रहित करके पुत्र-पत्नी के साथ जेल में डाल दिया गया।

English—*Viradhgupta*—On hearing of these, minister's wife was sent away by Chandandas.

Rakshasa—He did wrong, in going against that cruel fellow, Chanakya.

Viradhgupta—But Minister, betray to a friend is more improper.

Rakshasa—Next, what next.

Viradhgupta—Next, when he did not give up minister's wife even on being requested, then by the enraged brat Chanakya —

Rakshasa—(In alarm) Surely not killed ?

Viradhgupta—Cast into the Jail with his son and wife and with his all property sequestered.

राक्षसः—तत्किं परितुष्टः कथयसि अपवाहितं राक्षसकलत्रमिति । ननु वक्तव्य सयमितः सपुत्रकलत्रो राक्षस इति ।

(प्रविश्य ।)

पुरुष'—जेदु अमच्चो । एसो क्खु सअडदासो पडिआरभूमिं उवट्ठिदो । (*जयतु अमात्य'। एष खलु शकटदासः प्रतिहारभूमिमुपस्थितः ।)*

राक्षसः—भद्र, अपि सत्यम् ।

पुरुष'—किं अलिअं अमच्चपादेसु विणिवेदेमि । (*किमलीकममात्यपादेषु विनिवेदयामि ।*

राक्षसः—सखे विराधगुप्त, कथमेतत् ।

विराधगुप्त'—अमात्य, स्यादेतदेव यतो भव्य रक्षति भवितव्यता ।

राक्षसः—प्रियंवदक, किमद्यापि चिरयसि । क्षिप्रं प्रवेशयैनम् ।

पुरुषः—तथा । (इति निष्क्रान्तः ।)

विमला

राक्षस —तत्किम्=(how then), परितुष्ट=सन्तुष्ट. (with satisfaction), कथयसि=ब्रवीषि (do you say), अपवाहितम्=अन्यत्र स्थापितम् (was removed), अनेन (by him), राक्षसकलत्रम्=राक्षसपत्नीम् (minister's wife), इति=एवम् (this), ननु वक्तव्यम्=कथितव्यम् (realy, should say), सपुत्रकलत्रो राक्षसः (with wife and son Rakshasa), सयमितः=सम्बद्ध (was put into iron)

(प्रविश्य=entering)

पुरुष —जयतु=सर्वोत्कर्षेण वर्त्तताम् (Let prosper), अमात्य (minister), एष खलु=असौ (here is), शकटदासः=तन्नामा कायस्थ (Sakatdasa), प्रतिहारभूमिम्=द्वारदेशम् (at the door), उपस्थितः=आगत (come)

राक्षस—भद्र (Gentle), अपि सत्यम्=(is it brue) ?

पुरुष —किम् (what), अलीकम्=असत्यम् (a falsehood), अमात्यपदेषु= मन्त्रिचरणेषु (to the minister), विनिवेदयामि=कथयामि (*can I report*)

राक्षस —सखे=हे मित्र (O friend), विराधगुप्त (Viradhgupta), कथमेतत् (how is this)

विराधगुप्त —अमात्य=मन्त्रिन् (minister), एवम्=अनेन प्रकारेण, एतत् , स्यात्= भवेत् (It may be so), यत (for), भवितव्यता=भाग्यम् (fate), भव्यम्= अवश्य भावि (the blessed), रक्षति=पालयति (guards)

राक्षस—प्रियंवदक (Priyambadaka), किमद्यापि (why do you now), चिरयसि=विलम्बसे (tarry), क्षिप्रम्=शीघ्रम् (quickly), एनम् (*him*), प्रवेशय (usher in)

पुरुष —तथा (*so be it*), इति निष्क्रान्त. (*exit*).

(प्रविष्टः सिद्धार्थकः शकटदासश्च ।)

शकटदासः—(स्वगतम् ।)

दृष्ट्वा मौर्यमिव प्रतिष्ठितपदं शूलं धरित्र्याः स्थले
तल्लक्ष्मीमिव चेतनाप्रमथिनीमुन्मुच्य वध्यस्रजम् ।
श्रुत्वा स्वाम्युपरोधरौद्रविषमानाघाततूर्यस्वना-
न्न ध्वस्तं प्रथमाभियातकठिनं यत्तन्मदीयं मनः ॥ २१ ॥

हिन्दी—राक्षस—तब क्यों सन्तुष्ट होकर कह रहे हो कि राक्षस का परिवार हटा दिया गया—कहना चाहिए—राक्षस स्त्री-पुत्र के साथ बंध गया ।

(प्रवेश करके)

पुरुष—अमात्य, जय हो—यह शकटदास दरवाजे पर उपस्थित है ।

राक्षस—भद्र क्या यह सत्य है ?

पुरुष—क्या अमात्य के चरणों में असत्य निवेदन करूँगा ?

राक्षस—मित्र विराधगुप्त यह कैसे ?

विराधगुप्त—अमात्य, सब कुछ सम्भव है, भाग्य ही रक्षा स्वयं किये करता है ।

राक्षस—प्रियंवदक, क्यों अब भी विलम्ब कर रहे हो ? शीघ्र अन्दर लाओ ।

पुरुष—जैसी आज्ञा, (ऐसा कहकर निकल गया)

English—*Rakshasa*—Then how do you say with satisfaction that minister's wife was removed ? Really you should say Rakshasa is arrested with son and wife.

(Entering)

Servant—Victory to the minister, Sakatdasa is waiting at the door.

Rakshasa—Gentleman ! is that true ?

Servant—Can I report a falsehood to the minister ?

Rakshasa—Friend, Viradhgupta, how is this ?

Viradhgupta—Minister, it may be so, for fate guards the blessed.

Rakshasa—Priyambadak, why tarry even now ? Quickly usher him in.

Servant—so be it .(exit)

टिप्पणी

(प्रविष्टः = enter, सिद्धार्थकः = (Sidharthaka), च (and) शकटदासः = (Sakatdasa).

शकटदासः—(स्वगतम् = to himself)

अन्वयः—प्रतिष्ठितपदम्, मौर्यम्, इव, धरित्र्याः, स्थले, शूलम्, दृष्ट्वा, तल्लक्ष्मीम्, इव, चेतनाप्रमथिनीम्, वध्यस्रजम्, उन्मुच्य, स्वाम्युपरोधरौद्रविषमान्, आघाततूर्यस्वनान्, श्रुत्वा, मदीयम्, यत् मनः, न, ध्वस्तम्, तत् प्रथमाभिघातकठिनम्, मन्ये ॥ २१ ॥

व्याख्या—प्रतिष्ठितपदम्=सुस्थापितराज्यशासनम् (firmly established), मौर्यम् =चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta), इव=यथा (like), धरित्र्या =पृथिव्या: (the earth), स्थले=तले (on), शूलम्=वधसाधनभूतम् लौहम् (the stake), दृष्ट्वा= अवलोक्य (on seeing), तल्लक्ष्मीम्=मौर्यराज्यश्रियम् (the sovereignty of Maurya) इव यथा (like), चेतनाप्रमथिनीम्=सज्ञाविलोपिनीम् (pains consciousness), वध्यस्रजम्=वध्यमालाम् (the garland tied round the head), उन्मुच्य=परिधाय (takes), स्वामिन: प्रभो उपरोधेन हिंसनेन रौद्रा घोरा: विषमा अश्राव्या , तान् इति स्वाम्युपरोधरौद्रविषमान् (as terrific and dismal as at the time of the dethronement of the lord), आघात =वध्यभूमि (killing place), तस्य तूर्यस्वना =पटहध्वनय: (the sound of the trumpets), श्रुत्वा= आकर्ण्य (having heard), अपि यत् मदीयम्=मामकीनम् (my), मन =हृदयम् (heart), न ध्वस्तम्=न विदीर्णम् (did not breakdown), अत: तत् प्रथमा:= पूर्वप्राप्ता: (the previous), ये अभिघाता =अनर्थपरम्परा (strokes), तै कठिनम्= कठोरम् (the hardened), आसीदित्यह जाने (methinks) ॥ २१ ॥

हिन्दी—(शकटदास और सिद्धार्थक का प्रवेश)

शकटदास—(अपने आप)—

स्थिर शासन वाले चन्द्रगुप्त के समान पृथ्वी के ऊपर दृढता से गडे हुए शूल को देखकर, चन्द्रगुप्त की लक्ष्मी के समान चेतना को विनष्ट कर देने वाली वध्यमाला को देखकर, स्वामी के उखाड फेंके जाने के समय भयकर एव असह्य वध बाजे के शब्दों को सुनकर भी मेरा मन नहीं फटा—वह इसलिए कि पहले के भयङ्कर कष्टों से कठोर हो गया—ऐसा मैं मानता हू ॥ २१ ॥

English—(Enter Sakatdas and Sidharthaka)

Sakatdasa—(To himself)—

That my heart, having seen to put to death by spilting on stakes, strongly planted in the ground like Maurya firmly established on the earth, suspending from the head the garland that takes away consciousness like the sovereignty of Maurya, and hearing the beating of the drums of execution grim and discordant, like a sound as terrific and dismal as at the time of dethornement of the lord, did not break down, because it was hardened by previous strokes (21)

टिप्पणी—चिरयसि—चिर+णिच् (नामधातु)+लट्+सिप् विभक्तिकार्य से सम्पन्नरूप, ध्वस्तम्— √ध्वस्+क्त+विभक्ति कार्य से रूप सम्पन्न ।

स्वाम्युपरोध-उप+रुध्+घन् भावे उपरोध -विभिन्ना समेभ्य इतिविषमा —'सम' के सकार को 'सुविनिर्दुर्भ्य सुपि सूतिसमा.' से षत्व, पुन 'रौद्रश्च ते विषमाश्च' कर्मधारय समास कर विभक्त्यादि कार्य से सम्पन्न रूप स्वाम्युपरोधेन रौद्रविषमा की सिद्धि । आघात—आ सम्यक् हननम् इति—आ+हन्+घञ् भावे आघात ।

इस श्लोक में 'उपमा' एव 'उत्प्रेक्षा' के सयोग से 'ससृष्टि' अलङ्कार है । छन्द है—शार्दूल विक्रीडित ।

(उपसृत्यावलोक्य च सहर्षम् ।) अयममात्यराक्षसस्तिष्ठति । य एषः—

अक्षीणभक्तिः क्षीणेऽपि नन्दे स्वाम्यर्थमुद्वहन् ।
पृथिव्यां स्वामिभक्तानां प्रमाणे परमे स्थितः ॥ २२ ॥

(उपसृत्य ।) जयत्वमात्य ।

विमला

व्याख्या—[उपसृत्य = समीपमेत्य (advancing), अवलोक्य = दृष्ट्वा (noticing), च = पुनः (and), सहर्षम् = सप्रसादम् (with joy)], अयम् = असौ (here is), अमात्यः = मन्त्री (minister), राक्षसः (Rakshasa), तिष्ठति=उपविष्टः आस्ते (sits).

अन्वयः—नन्दे, क्षीणे, अपि, अक्षीणभक्तिः, स्वाम्यर्थम्, उद्वहन्, पृथिव्याम्, स्वामिभक्तानाम्, परमे, प्रमाणे, स्थितः ॥ २२ ॥

व्याख्या—नन्दे = अस्माकम् स्वामिनि (Nanda himself), क्षीणे = सान्वयं विनष्टे (even at the demise), अपि (also), अक्षीणभक्तिः = अमन्दश्रद्धः (unabated devotion), स्वाम्यर्थम् = प्रभोः प्रयोजनम् (the cause of his master), उद्वहन्=धारयन् (bearing up), पृथिव्याम् = भूतले (on the earth), स्वामिभक्तानाम् = भर्तुः श्रद्धासमन्वितानाम् (loyal to their master), परमे = उत्कृष्टे (the highest), प्रमाणे=दृष्टान्ते (standard), स्थितः= वर्तमानः (stands) ॥ २२ ॥

उपसृत्य = समीपं गत्वा (advancing), जयत्वार्यः (let minister prosper).

हिन्दी—(पास आकर तथा प्रसन्नता के साथ देखकर)
यह अमात्य राक्षस बैठा है । जो—
नन्द के विनष्ट हो जाने पर भी अमन्द भक्तिवाला, स्वामी के कार्य को धारण करता हुआ, पृथ्वी पर स्वामिभक्तों के अनुपम दृष्टान्त के रूप में स्थित है ॥ २२ ॥
(समीप आकर) जय हो स्वामी ।

English—(Going near and seeing with joy)
Here is minister Rakshasa, he who, even at the demise of Nanda, upholding the unabated devotion for the cause of his master, stands on earth like the highest standard of those who are devoted to their lord (22)
(Approaching) victory to the minister !

टिप्पणी—क्षीणः— √क्षि + क्त + दीर्घ + विभक्त्यादि कार्य से सम्पन्न । उद्वहन्—उद् + √वह् + शतृ प्रत्यय विभक्त्यादिकार्य से सम्पन्न रूप । स्थितः— √स्था + क्त + विभक्ति कार्य से सम्पन्न ।

नन्दान्वयरूपी कारण के नहीं रहने पर भी राक्षस की भक्ति की अक्षीणतारूपी कार्योत्पत्ति के कारण इस श्लोक में विभावना अलङ्कार है । यथा—
"विभावना विना हेतुं कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते'

राक्षसः—(विलोक्य सहर्षम् ।) सखे शकटदास, दिष्ट्या कौटिल्यगोचरगतोऽपि त्वं दृष्टोऽसि । तत्परिष्वजस्व माम् ।

(शकटदासस्तथा करोति ।)

राक्षसः—(चिरं परिष्वज्य ।) इदमासनमास्यताम् ।

(शकटदासो नाट्येनोपविष्टः ।)

राक्षसः—सखे शकटदास, अथ कोऽयं मे ईदृशस्य हृदयानन्दस्य हेतुः ।

शकटदासः—(सिद्धार्थकं निदिश्य ।) अनेन प्रियसुहृदा सिद्धार्थकेन घातकान् विद्राव्य वध्यस्थानादपहृतोऽस्मि ।

कुछ लोगों की दृष्टि में—नन्द के जीवित रहने पर शत्रु निर्यातनरूप कार्य के असम्पादन से उसके नष्ट हो जाने पर, उसकी भक्ति की क्षीणता में उस कार्य का सम्पादन असंभव होने के कारण—नन्द के होने पर भी राक्षस की भक्ति की अक्षीणता—राक्षसनिष्ठ नन्दान्वय विषयक अनुराग की क्षीणता में भी प्रभु-कार्य साधन का पदार्थत्वेन कथन रहने के कारण यहाँ काव्यलिङ्ग अलङ्कार है । लक्षण—"हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिङ्गं निगद्यते ।"

इस श्लोक में अनुष्टुप् छन्द है । लक्षण यथा—

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् । द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

विमला

व्याख्या—राक्षसः—[विलोक्य=दृष्ट्वा (seeing), सहर्षम्=सानन्दम् (with joy)], सखे शकटदास=मित्र शकटदास (Friend Sakatdas), दिष्ट्या=भाग्येन (luckily), कौटिल्यगोचरगतोऽपि=चाणक्यसमीपम् प्राप्तोऽपि (though fallen into the clutches of Kautilya), दृष्टोऽसि=अवलोकितोऽसि (I see you), तत्=तस्मात् कारणात् (therefore), मां परिष्वजस्व = आलिङ्ग (embrace me).

(शकटदासः=Sakatdasa, तथा करोति does accordingly)

राक्षसः—[चिरं परिष्वज्य=बहुकालमालिङ्ग्य (Embracing long)], इदम्=एतत् (Here), आसनम्=उपवेशनार्थमास्तरणम् (a seat), आस्यताम्=उपविश्यताम् (sit down)

शकटदासः = Sakatdas, नाट्येन = अभिनयेन (gesticulating), उपविष्टः = (sit down).

राक्षसः—सखे शकटदास (Friend Sakatdas), अथ=वाक्यालङ्कारे प्रयोगः, मे=मम (my), हृदयानन्दस्य हेतुः=मानससुखस्य कारणम् (auther of delight to heart), ईदृशस्य = अनुपमस्य (such), कोऽयम् (who is)

शकटदासः—[सिद्धार्थकं निदिश्य (pointing to Sidharthaka)], अमात्य (minister), प्रियसुहृदा=प्रियमित्रेण = अनेन (by this dear friend), सिद्धार्थकेन (Sidharthaka), घातकान्=हिंसकान्= (executioners), विद्राव्य=सताड्य (put to flignt), वध्यस्थानात्=(from the place of execution), अपहृतोऽस्मि=समानीतः अस्मि (have been led away)

राक्षस—(सहर्षम् ।) भद्र सिद्धार्थक, किं पर्याप्तमिदमस्य प्रियस्य । तथापि गृह्यताम् । (स्वगात्रादवतार्य भूषणानि प्रयच्छति ।)

सिद्धार्थक—(गृहीत्वा पादयोर्निपत्य, स्वगतम् ।) अअं क्खु अज्जोवदेसो । होदु । तह करिस्सम् । (प्रकाशम् ।) अमच्च, एत्थ पढमपविट्ठस्स णत्थि केवि

हिन्दी—राक्षस—(देखकर प्रसन्नतापूर्वक) मित्र शकटदास, सौभाग्य से, चाणक्य के हाथ में जाकर भी तुम देख गये हो । तो मुझ आलिङ्गन करो ।

(शकटदास वैसा ही करता है)

राक्षस—(देर तक आलिङ्गन कर चुकने के बाद) यह आसन है, बैठो ।

शकटदास—(शकटदास अभिनय के साथ बैठ जाता है)

राक्षस—मित्र शकटदास, मेरे हृदय का आनन्द—किसने सम्भव कर दिखाया ?

शकटदास—(सिद्धार्थक की ओर संकेत करते हुए) इस प्रिय मित्र सिद्धार्थक के द्वारा वधिकों को मारकर—वध्यस्थान से बचाकर यहाँ तक लाया गया हूँ ।

English—*Rakshasa*—(Seeing him with joy) Friend ! Sakatdas, luckily again I see you, though you fell into the clutches of Chanakya, therefore, do you embrace me !

Sakatdas—(Does accordingly)

Rakshasa—(Embracing long) Here is a seat, sit down (Sakatdasa gesticulating and sitdown) Well, Friend ! Sakatdas, who is the author of such delight to my heart ?

Sakatdasa—(Pointing to Sidharthaka) I have been led away from the place of execution by this dear friend, Sidharthaka who put the executioners to flight.

विमला

व्याख्या—राक्षस—[सहर्षम् (with joy)].

भद्रसिद्धार्थक=कल्याणिन् (Good Sidharthaka), अस्य=वदत्कृतस्य (for this), प्रियस्य=अतिशयानन्दस्य (pleasure), इदम् = मया दीयमानम् (is this), पर्याप्तम्=यथेच्छम् (enough), किम् (what), तथापि=तस्य अपर्याप्तत्वेऽपि (still), गृह्यताम् = ग्रहणं क्रियताम् (take these)

[स्वगात्रात्=निजशरीरात् (from his body), अवतार्य = उन्मुच्य (takes off), भूषणानि = (Ornaments), प्रयच्छति=ददाति (offers)]

सिद्धार्थक—[गृहीत्वा=आदाय (taking), पादयोः=चरणयोः (at feet), निपत्य = शिरः संपात्य (falling), स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself)]

अयम् खलु आर्योपदेशः = चाणक्यशिक्षा (is the advice of my lord), भवतु= अस्तु (well), तथा करिष्यामि = तथाऽनुष्ठास्यामि (I will act accordingly).

परिचिदो जत्थ एद अमच्चस्स । पसाद णिक्खिविअ णिव्वुदो भविस्सम् । ता इच्छामि अह इमाए मुद्दाए मुद्दिद अमच्चस्स एव्व भण्डाआरे ठाविदुम् । जदा मे पओअण तदा गेह्लिस्सम् । (अय खलु आर्योपदेश । भवतु । तथा करिष्यामि । अमात्य, अत्र प्रथमप्रविष्टस्य नास्ति कोऽपि परिचित । यत्रेममामात्यस्य प्रसाद निक्षिप्य निर्वृतो भवामि । तस्मादिच्छाम्यहमेतया मुद्रया मुद्रितममात्यस्यैव भाण्डागारे स्थापयितुम् । यदा मे प्रयोजन तदा ग्रहीष्यामि ।)

[प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud)], अमात्य = मन्त्रिन् (minister), अत्र=अस्मिन् स्थाने (this place), प्रथमप्रविष्टस्य=अभूतपूर्वागमनस्य (a new comer), नास्ति=न वर्तते (have no), कोपि=(any body), परिचित =सुहृद् (acquaintance), यत्र=यस्मिन् जने (to whom), इमम्=भवता दीयमानम् (this), अमात्यस्य (minister's), प्रसादम्=अनुग्रहम् (favour), निक्षिप्य=सस्थाप्य (entrust), निर्वृत =सुखी (free from care), भवामि (be), तस्मात्=तस्माद्धेतो (therefore), एतया=भवदीयया (with this), मुद्रया=अङ्गुलिमुद्रया (seal ring), मुद्रितम्=चिह्नितम् (after having sealed), अमात्यस्यैव= सचिवस्यैव (in minister's), भाण्डागारे=कोषगृहे (treasury), स्थापितुम्= निक्षेप्तुम् (to deposit), इच्छामि=अभिलषामि (I wish), यदा=यस्मिन् काले (when), मे=मम (my), प्रयोजनम्=कार्यम् (an occasion), तदा (then), ग्रहीष्यामि=आदास्यामि (I will take)

हिन्दी—राक्षस—(प्रसन्नतापूर्वक) भद्र सिद्धार्थक, तुम्हारे किये गये इस प्रिय कार्य के लिए क्या यह पर्याप्त है ? फिर भी—इसे ग्रहण करो । (अपने शरीर से उतार कर आभूषणों को देता है ।)

सिद्धार्थक—(लेकर, पैरों पर गिरकर अपने आप) यह आर्य का उपदेश ही है । अच्छा वैसा ही करूँ । (प्रकट रूप में) अमात्य, इस नगरी में पहले पहल आया हूँ—यहाँ, मेरा एक भी परिचित नहीं है जिसके यहाँ आपके इस प्रसाद को रखकर निश्चिन्त होऊँगा । अत इसे इस अगूठी से मुद्रित करके अमात्य के ही कोषागार में सुरक्षित रखना चाहता हूँ । जब आवश्यकता होगी—इसे ले लूँगा ।

English—*Rakshasa*—(Joyfully) Gentle friend, Sidharthaka, is this enough for such favour ? Still take these (taking off the ornaments from his body and gives them to Sidharthaka)

Sidharthaka—(Accepting and falling down at his feet)—Such, indeed, is the instruction of my lord I will act accordingly (aloud) Minister, as I come here for the first time, I have no acquaintance with whom I can entrust thees ornaments and may feel relieved So I wish to have these placed in master's treasury with this seal I will take them away when there is occasion for them.

राक्षस —भद्र, को दोषः । शकटदास, एवं क्रियताम् ।

शकटदास —यदाज्ञापयत्यमात्य । (मुद्रां विलोक्य जनान्तिकम् ।) अमात्य, भवन्नामाङ्कितेयं मुद्रा ।

राक्षस —(विलोक्यात्मगतम् ।) सत्यं नगरान्निष्क्रामतो मम हस्ताद्ब्राह्मण्या उत्कण्ठाविनोदार्थं गृहीता । तत्कथमस्य हस्तमुपागता । (प्रकाशम् ।) भद्र सिद्धार्थक, कुतस्त्वयेयमधिगता ।

विमला

व्याख्या—राक्षस—भद्र=कल्याणिन् (gentle), का दोषः=का हानि (what harm) शकटदास (Sakatdas), एवं क्रियताम्=अयं यदभिदधाति तद्विधीयताम् (do so)

शकटदास—यदाज्ञापयत्यमात्यः=यत् सचिव निर्दिशति (As minister commands), [मुद्राम्=अङ्गुलीयकम् (ring), विलोक्य=दृष्ट्वा (looking at), जनान्तिकम्= अस्पष्टम् (aside)], अमात्य=सचिव, (minister), इयम् मुद्रा (this ring), भवन्नामाङ्किता=त्वन्नामचिह्निता (engraved with your name)

राक्षस —[विलोक्य=दृष्ट्वा (looking at it), सत्यम्=यथार्थम् (in truth), नगरात्=पुरतः (from city), निष्क्रामतः=बहिर्निःसरतः (was coming out), मम हस्तात्=मदीयकरात् (from my hand), ब्राह्मण्या =मम स्त्रिया (my wife), उत्कण्ठाविनोदार्थम्=उन्मनस्कत्वप्रशमनार्थम् (as a souvenir), गृहीता=आत्ता (took it), तत्=तस्मात् कारणात् (so), कथम्=केन प्रकारेण (how), अस्य= सिद्धार्थकस्य (Sidharathaka's), हस्तम्=करम् (hand), उपगता=प्राप्ता (reach) [प्रकाशम्=सुस्पष्ट (Aloud)],भद्र सिद्धार्थक (gentle Sidharthaka), कुतः =कस्मात् (from) त्वया=भवता (you) इयम्=मुद्रा (this ring) अधिगता=प्राप्ता (get)

हिन्दी—राक्षस—भद्र, क्या दोष है ? शकटदास, जैसे यह कहता है कर दो ।

शकटदास—आप की जैसी आज्ञा (अगूठी को देखकर सिद्धार्थक की आड में राक्षस से) अमात्य, यह अगूठी, आपके नाम से अङ्कित है ।

राक्षस—(देखकर अपने आप) वास्तव में नगर से निकलते समय हमारे हाथ से ब्राह्मणी ने अपनी वेदना प्रशमनार्थ इसे ले ली थी । तो कैसे इसके हाथ में आ गयी ? (प्रकट रूप में) भद्र सिद्धार्थक, यह तुम्हारे हाथ कैसे लगी ।

English—*Rakshasa*—Gentle, what is the harm Sakatdas do so

Sakatdasa—As your Honour Commands (looking at the seal ring aside) minister, this seal is engraved with your name

Rakshasa—(looking at it-to himself) To be sure, when I left the city my wife took it from my hand as a Souvenir How could it then come into his hand ? (aloud) Friend Sidharathak, whence did, you get it ?

सिद्धार्थक—अत्थि कुसुमपुरे मणिआरसेट्ठी चन्दनदासो णाम। तस्स गेहदुआरपाडसरे पडिदा मए आसादिदा। (अस्ति कुसुमपुरे मणिकारश्रेष्ठी चन्दनदासो नाम। तस्य गेहद्वारपरिसरे पतिता मया आसादिता।)

राक्षस—युज्यते।

सिद्धार्थक—अमच्च, एत्थ कि जुज्जइ। (अमात्य, अत्र किं युज्यते।)

राक्षस—भद्र यन्महाधनाना गृहे पतितस्यैवविधस्योपलब्धिरिति।

विमला

व्याख्या—सिद्धार्थक—कुसुमपुरे (At Kusumpura), मणिकारश्रेष्ठी=वैश्यजातीय. (a jeweller), चन्दनदासो नाम (Chandandas by name), अस्ति (is), तस्य = चन्दनदासस्य (Chandandasa s), गेहद्वारपरिसरे = भवनप्रतीहारभूमौ (near the door of his house), पतिता=स्रस्ता (fallen), मया आसादिता = मया प्राप्ता (was found by me)

राक्षस—युज्यते (That is right)

सिद्धार्थक—अमात्य = मन्त्रिन् (minister), अत्र=अस्मिन् विषये (in this) किं युज्यते (what is right ?)

राक्षस—भद्र=कल्याणिन् (good man), यत=यस्मात् (for), महाधनानाम् = प्रचुरविभवशालिनाम (very rich man s), गृहे = सदने (house), पतितस्य = स्रस्तस्य (fallen), एवविधस्य = महामूल्यस्य वस्तुन (such a thing), उपलब्धिरिति = प्राप्ति भवत्विति (should be found),

हिन्दी—सिद्धार्थक—कुसुमपुर में चन्दनदास नामक एक जौहरी है। उसके घर के दरवाजे के पास पडी मुझे यह मिली थी।

राक्षस—ठीक है।

सिद्धार्थक—अमात्य, इस विषय में क्या ठीक है ?

राक्षस—भद्र, बडे धनी लोगों के घर में गिरी ऐसी मूल्यवान वस्तुओं की उपलब्धि ठीक ही है।

English—*Sidharthaka*—There is a jeweller at Kusumpura, Chandandas by name It was found by me fallen near the door of his house

Rakshasa—That is right

Sidharthasa—Minister, what is right in this ?

Rakshasa—Goodman, that such a valuable thing should be found fallen somewhere in the house of excessively rich

शकटदासः—सखे सिद्धार्थक, अमात्यनामाङ्कितेय मुद्रा। तदितो बहुतरेणार्थेन भवन्तममात्यस्तोषयिष्यति। दीयतामेषा।

सिद्धार्थकः—अज्ज, ण पसादो एसो जं इमाए मुद्दाए अमच्चो परिग्गहं करेदित्ति। (इति मुद्रामर्पयति।) (आर्य, ननु प्रसाद एषः यदस्या मुद्राया अमात्यः परिग्रहं करोतीति।

राक्षसः—सखे शकटदास, अनयैव मुद्रया स्वाधिकारे व्यवहर्तव्यं भवता।

विमला

व्याख्या—शकटदास—सखे सिद्धार्थक (Friend Sidharthaka), इयम् मुद्रा = अङ्गुलिमुद्रा (this ring), अमात्यनामाङ्किता=मन्त्रिराक्षसनामचिह्निता (stamped with minister's name), तदितः=तस्मान्मुद्रामूल्यात् (so from this), बहुतरेण=प्रचुरेण (much exceeding), अर्थेन=धनेन (with money), भवन्तम् = त्वाम् (to you), अमात्यः=सचिवः (minister), तोषयिष्यति=आनन्दयिष्यति (will satisfy), दीयतामेषा=भवद्भ्या मुद्रा वितीर्यताम् (give it to him)

सिद्धार्थक—आर्य=मान्य (noble sir), ननु प्रसाद् एष=ननु एष सन्तोषः (it is a favour), यत्=यस्मात् (that), अस्या मुद्रायाम्=अस्या अङ्गुलिमुद्रायाः (by this righ), परिग्रहं करोति=स्वीकरणेन प्रसन्ना जनयति (accepts), [इति मुद्रा अर्पयति= ददाति (Delivers the ring).]

राक्षस—सखे शकटदास (Friend Sakatdas), अनयैव मुद्रया (with this very ring), स्वाधिकारे=स्वनियोगे (in your office), भवता=त्वया (by you), व्यवहर्तव्यम् = व्यवहारः कर्त्तव्यः (carrying out the business).

हिन्दी—शकटदास—मित्र सिद्धार्थक, यह अगूठी अमात्य राक्षस के नाम से अङ्कित है तो इस अगूठी के अधिक मूल्य से अमात्य तुम्हें सन्तुष्ट कर देंगे। यह दे दो।

सिद्धार्थक—आर्य, यह तो परम कृपा है कि अमात्य इस अगूठी को स्वीकार कर रहे हैं (ऐसा कहकर अगूठा देता है)

राक्षस—मित्र शकटदास इसी अगूठी से आपके द्वारा अपने अधिकार के विषय में व्यवहार करना चाहिए।

Engilsh—*Sakatdas*—Friend, Sidharthaka, this ring is stamped with minister's name: Give it to him The minister will satisfy you with money much exceeding.

Sidharthaka—Well noble sir, it is a favour that minister accepts this ring. (delivers the ring).

Rakshasa—Friend, Sakatdas with this very seal you are to carry out the business of your office.

शकटदास —यदाज्ञापयत्यमात्य ।

सिद्धार्थक —अमच्च, विण्णवेमि । (अमात्य, विज्ञापयामि ।)

राक्षस —ब्रूहि विश्रब्धम् ।

सिद्धार्थक —जाणादि एव्व अमच्चो जह चाणक्कवडुकस्स विप्पिअ कदुअ णत्थि पुणो पाडलिउत्ते पवेसो त्ति इच्छामिअह अमच्चचलणे एव्व सुस्सूसिदुम् । (जानात्येवामात्यो यथा चाणक्यबटुकस्य विप्रिय कृत्वा नास्ति पुन पाटलिपुत्रे प्रवेश इति इच्छाम्यह अमात्यस्य चरणावेव शुश्रूषितुम् ।)

राक्षस —भद्र, प्रिय न । किंतु त्वदभिप्रायापरिज्ञानान्तरितोऽयमस्मदनुनय । तदेव क्रियताम् ।

विमला

व्याख्या—शकटदास —अमात्य = सचिव (minister) यदाज्ञापयति (as commands)

सिद्धार्थक —अमात्य = मन्त्रिन् (minister), अत्र=अस्मिन् विषये (In this matter), किमपि विज्ञापयामि = किमपि निवेदयामि (I have a request to make)

राक्षस —ब्रूहि = कथय (speak out), विश्रब्धम् = विश्वासपूर्वकम् (Unresevedly),

सिद्धार्थक —अमात्य सचिव (minister), जानात्येव = अवगच्छत्येव (knows), यथा=यत् (that) चाणक्यबटुकस्य = दुष्टचाणक्यस्य (the brat Chanakya), विप्रियम् कृत्वा = विरोधम् विधाय (serving an unpleasant turn), नास्ति= (does not), पुन (again), पाटलिपुत्रे प्रवेश इति=कुसुमपुरे स्थिति इति (entrance into Patliputra), तदहम् (so I), अमात्यस्य = भवत एव चरणौ (your feet), शुश्रूषितुम्=सेवाम् कर्तुम् (to serve at), इच्छामि=वाञ्छामि (wish)

हिन्दी—शकटदास—आपकी जैसी आज्ञा ।

सिद्धार्थक—अमात्य, मुझे आपसे कुछ निवेदन करना था ।

राक्षस—विश्वासपूर्वक कहो ।

सिद्धार्थक—आप तो जानते ही हैं कि दुष्ट चाणक्य के साथ शत्रुता मोल लेकर अब मैं पाटलिपुत्र नहीं जा सकता । अत मैं आपके चरणों की सेवा करना चाहता हू ।

English—*Sakatdas*—As your Honour commands

Sidharthaka—Minister, I have a request to make

Rakshasa—Speak out unreservedly

Sidharthaka—The minister knows full well that when any one has given offence to the brat Chanakya, he has no entrance into Patliputra again So I wish to serve at miniser's feet

विमला

व्याख्या—राक्षस —भद्र=कल्याणिन् (good man), प्रियम् = इष्टम् (pleased), न=अस्माकम् (to us), किन्तु = परञ्च (but), त्वदभिप्रायापरिज्ञानेन = त्वदाशयाबोधनेन (ignorance of your wishes), अन्तरित: = तिरोहित (sppressed),

सिद्धार्थकः—(सहर्षम् ।) अनुगिहीदोम्हि । (अनुगृहीतोऽस्मि ।)

राक्षसः—शकटदास, विश्रामय सिद्धार्थकम् ।

शकटदासः—तथा । (इति सिद्धार्थकेन सह निष्क्रान्तः)

राक्षसः—सखे विराधगुप्त वर्णय वृत्तशेषम् । अपि क्षमन्तेऽस्मदुपजापं चन्द्रगुप्तप्रकृतयः ।

विराधगुप्तः—अमात्य, बाढं क्षमन्ते यथाप्रकाशमनुगच्छन्त्येव ।

राक्षसः—सखे किं तत्र प्रकाशम् ।

अयम् (this), अस्मदनुनयः=अस्माकमनुरोधः (our request), तदेव क्रियताम् (do so then)

सिद्धार्थकः—[सहर्षम्=सप्रसादम् (joyfully)], अनुगृहीतोस्मि=(I am favoured)

राक्षसः—शकटदास (Sakatdas), विश्रामय सिद्धार्थकम् (let Sidharthaka rest)

शकटदासः—तथा (It be so), [इति सिद्धार्थकेन सह निष्क्रान्तः=exit with Sidharthaka)]

राक्षसः—सखे विराधगुप्त=मित्र विराधगुप्त (friend Viradhgupta), वृत्तशेषम्= अवशिष्टकथाम् (the remainder of tale), वर्णय=कथय (tell), अपि क्षमन्ते= सहन्ते किम् (do tolerate), अस्मदुपजापम्=अस्मत्कृतान्योन्यभेदम् (our overtures), चन्द्रगुप्तप्रकृतयः=मौर्यप्रजाः (the subjects of Chandragupta)

विराधगुप्तः—अमात्य=मन्त्रिन् (Minister), बाढम्=स्वाकारार्थकमव्ययम् (they do), क्षमन्ते=(tolerate undoubtedly), यथा प्रकाशम् अनुगच्छन्त्येव (as is current they even accept them)

राक्षसः—सखे=मित्र (Friend), तत्र=तस्मिन् स्थाने (there), किं प्रकाशम् (what is current)

हिन्दी—राक्षस—भद्र हम पसन्द है। किन्तु तुम्हारे अभिप्राय को न जानने के कारण ही मेरी ओर से निवेदन नहीं किया जा सका। तो ऐसा ही करो।

सिद्धार्थक—(प्रसन्नतापूर्वक) कृतार्थ हो गया।

राक्षस—मित्र शकटदास, सिद्धार्थक को विश्राम कराओ।

शकटदास—जैसी आज्ञा (ऐसा कहकर सिद्धार्थक के साथ निकल जाता है)

राक्षस—मित्र विराधगुप्त, शेष वृत्तान्त सुनाओ। क्या चन्द्रगुप्त की प्रजा हमारे द्वारा फूट को बीज बोकर भड़काने का बात सह करती है।

विराधगुप्त—करती क्यों नहीं ? चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त के परस्पर विरोध के प्रकाशित होने पर अनुसरण ही करती है।

राक्षस—मित्र वहाँ क्या प्रकाश में आया है ?

विराधगुप्तः—अमात्य, इदं तत्र प्रकाशम्। मलयकेतोरपक्रमणात्प्रभृति कुपितश्चन्द्रगुप्तश्चाणक्यस्योपरीति चाणक्योऽप्यतिजितकाशितयाऽसहमानश्चन्द्रगुप्तं तैस्तैराज्ञाभङ्गैश्चन्द्रगुप्तस्य चेतःपीडामुपचिनोति। इत्थमपि ममानुभवः।

राक्षसः—(सहर्षम्।) सखे विराधगुप्त, गच्छ त्वमनेनैवाहितुण्डिकच्छद्मना पुनः कुसुमपुरम्। तत्र मे प्रियसुहृद्वैतालिकव्यञ्जनः स्तनकलशो नाम प्रतिवसति। स त्वया मद्वचनाद्वाच्यः यथा चाणक्येन क्रियमाणेष्वाज्ञाभङ्गेषु

English—*Rakshasa*—Good man, we are pleased at this. It was our ignorance of your wishes that prevented us from making this request to you. Do so then.

Sidharthaka—(Joyfully) I am favoured.

Rakshasa—Sakatdas, let Sidharthaka rest.

Sakatdasa—It be so (exit with Sidharthaka).

Rakshasa—Friend, Viradhgupta, tell the remainder of story. Do the subjects of Chandragupta tolerate our overtures.

Viradhagupta—Minister, they tolerate undoubtedly. They are acting in pursuance of them, as certain things are being revealed.

Rakshasa—Friend, what are the things that are being revealed there.

विमला

विराधगुप्त'—अमात्य = मन्त्रिन् (Minister), इदम् (this), तत्र=कुसुमपुरे (there), प्रकाशः=भेदः (reveal), मलयकेतोः अपक्रमणात् प्रभृति पलायमादारभ्य (ever since Malayaketu's escape), कुपितः = क्रुद्धः (has got angry), चन्द्रगुप्तः (Chandragupta), चाणक्यस्योपरीति=चाणक्यस्योपरि (with Chanckya), चाणक्योऽपि (Chanakya too), अतिजितकाशितया = अतिगर्विततया (in extreme arrogance), असहमानः = अक्षाम्यन् (does not bear this), चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta), तैस्तैराज्ञाभङ्गैः = चन्द्रगुप्तक्लेशजनकनिदेशापालनैः (with various acts of disobedience), चन्द्रगुप्तस्य = (Chandragupta's), चेतःपीडाम् = हृदयस्य व्यथाम् (pains the heart), उपचिनोतीति = उत्पादयतीति (produces), इत्थमपि ममानुभवः (such is my impression too).

राक्षसः—[सहर्षम् (with joy)], सखे विराधगुप्त (friend Viradhgupta), त्वम् (you), गच्छ (go), अनेनैव = पूर्वाङ्गीकृतेनैव (in this very), आहितुण्डिकच्छद्मना = व्यालोपजीविव्याजेन (disguise of a Snake charmer), पुनः (again), कुसुमपुरम् (Kusumpura), तत्र (these), मे = मम (my), प्रियसुहृद्=प्रियसखा (dear friend), वैतालिकव्यञ्जनः = मागधस्य लिङ्गधारी (disguised as a bard), स्तनकलशो नाम (Stankalas by name), प्रतिवसति = निवसति (lives), सः=असौ (he) त्वया (by you), मद्वचनात् (in my name), वाच्यः=अभि-

चन्द्रगुप्तः समुत्तेजनसमर्थैः श्लोकैरुपश्लोकयितव्यः, कार्यं चातिनिभृत करभकहस्तेन सन्देष्टव्यमिति ।

विराधगुप्तः—यदाज्ञापयत्यमात्यः । (इति निष्क्रान्तः ।)

घातव्यः (tell him), यथा चाणक्येन (by Chanakya), क्रियमाणेषु=विधीयमानेषु (will be commiting act), आज्ञाभङ्गेषु=निदेशव्याघातेषु (of disobedience), चन्द्रगुप्तः=मौर्यः (Maurya), समुत्तेजनसमर्थः=मन्युदीपनयोग्यैः (to inflame his spirit), श्लोकैः=पद्यैः (with stanzas), उपश्लोकयितव्यः=स्तोतव्यः (should praise), कार्यं च=स्वकीयकृत्यमपि (business), निभृतम् (the profoundest secrecy), करभकहस्तेन=करभकद्वारा (through Karvaka), सन्देष्टव्य इति=प्रेषयितव्य इति (will have to send),

विराधगुप्तः—अमात्यः=सचिवः (minister), यदाज्ञापयति (as commands), इति निष्क्रान्तः (Exit).

हिन्दी—विराधगुप्त—अमात्य, वहाँ यह प्रकाश में आया है कि मलयकेतु के भागने के समय से ही चन्द्रगुप्त चाणक्य के ऊपर कुपित है। चाणक्य भी विजय से अत्यन्त गर्वीला होने के कारण चन्द्रगुप्त को बर्दाश्त न करता हुआ, उन उन आज्ञाओं को मानने से अस्वीकार कर देने के कारण चन्द्रगुप्त के चित्त को पीडा को उत्पन्न कर रहा है। ऐसा भी मेरा अनुभव है।

राक्षस—(प्रसन्नतापूर्वक) मित्र विराधगुप्त, इसी सँपेरे के बहाने से तुम पुनः कुसुमपुर जाओ। वहाँ भाट के वेशवाला स्तनकलश नामक हमारा प्रिय मित्र निवास करता है। तुम उसको मेरी तरफ से कहना कि चाणक्य के द्वारा आज्ञाओं के भग किये जाने पर उत्तेजित करने में समर्थ श्लोकों के द्वारा चन्द्रगुप्त की स्तुति की जानी चाहिए और अपने कार्य को अत्यन्त गुप्तरूप से करभक के हाथ भेजना चाहिए।

विराधगुप्तः—अमात्य की जैसी आज्ञा। (यह कहकर निकल जाता है)

English—*Viradhgupta*—Minister, this is what has come to light there, that Chandragupta has got angry with Chanakya, ever since Malayaketu's escape. Chanakya too elated by success, intolerant of Chandragupta, by frequent supercession of orders aggravates the mortification of his soul. Such is my experience too.

Rakshasa—(With joy), Friend, *Viradhgupta, you go again to* Kusumpur in this very disguise of Snake-charmer. There lives my dear friend, Stanankalash by name, disguised as a bard. He has to be told by you this in my name—whenever supercession of orders is being made by Chanakya. Chandragupta has to be louded in verses capbale of rousing him thoroughly and the work has to be reported very secretly through the hand of Karvaka.

Viradhgupta—As your Honour commands. (exit)

पुरुषः—(प्रविश्य ।) अमच्च, एसो क्खु सअडदासो विण्णवेदि । एदे क्खु तिण्णि अलकारसजोआ विक्कीअन्दि । ता पच्चक्खीकरेदु अमच्चो । (अमात्य, एप खलु शकटदासो विज्ञापयति एते खलु त्रयोऽलकारसयोगा विक्रीयन्ते । तस्मात्प्रत्यक्षीकरोत्वमात्य इति ।

राक्षसः—(विलोक्य ।) अहो महार्हाण्याभरणानि । भद्र, उच्यतामस्मद्वचनाच्छकटदासः परितोष्य विक्रेतार गृह्यतामिति ।

पुरुषः—तथा । (इति निष्क्रान्तः ।)

राक्षसः—यावदहमपि कुसुमपुराय करभक प्रेषयामि । (उत्थाय ।) अपि नाम दुरात्मनश्चाणक्याच्चन्द्रगुप्तो भिद्येत । अथवा सिद्धमेव नः समीहित पश्यामि । कुतः—

विमला

व्याख्या—पुरुष.—[प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (Entering)], अमात्य=मन्त्रिन् (minister), एष खलु (here is), शकटदास. = एतदाख्य भवत्सुहृत् कायस्थः (Sakatdas), विज्ञापयति = निवेदयति (reports), एते खलु = (that these), त्रयोऽलङ्कारसंयोगा = महार्हास्त्रयोऽलङ्कारा. (three well made ornaments), विक्रीयन्ते (are going to be sold), तस्मात् = तत् (so), अमात्यः = सचिव. (minister), प्रत्यक्षीकरोतु = पश्यतु (let inspect)

हिन्दी—पुरुष—अमात्य शकटदास ने निवेदन किया है—तीन मूल्यवान आभूषण कोई बेचने आया है । पहले अमात्य उन्हें जरा देख लें ।

English—*Man*—(entering) Minister, Sakatdasa imforms you that these three ornaments are going to be sold, and you should examine them yourself.

विमला

व्याख्या—राक्षस.—[विलोक्य = पश्य (seeing them)], अहो = आश्चर्यम् (Oh), महार्हाणि = अधिकमूल्यानि (very precious), . आभरणानि = अलङ्करणानि (ornaments), [प्रकाशम् (aloud)], भद्र = कल्याणिन् (good man), उच्यताम् = कथ्यताम् (tell), अस्मद्वचनात् (in my name), शकटदास. (Sakatdasa), विक्रेतारम् = विक्रयणकारिणम् (seller), परितोष्य = सतोष्य (should satisfy), गृह्यन्तामिति = आदीयन्तामिति (buy them).

पुरुष —तथा (As your Honour commands), [निष्क्रान्तः (exit)]

राक्षस —यावत् कालम् अहमपि (I too), कुसुमपुराय (for Kusumpura), करभकम् = तन्नामानं चरम् (Karavaka), प्रेषयामि = प्रहिणोमि (will send), [उत्थाय = (rising)], अपि नाम (would), दुरात्मनश्चाणक्यात् = दुष्टचाणक्यात् (from the vile Chanakya), चन्द्रगुप्त. = वृषलः (Chandragupta), भिद्येत = वैमनस्य प्राप्नुयात् (would be a split), अथवा = वा (or), सिद्धमेव = सफलमेव

मौर्यस्तेजसि सर्वभूतलभुजामाज्ञापको वर्तते
चाणक्योऽपि मदाश्रयादयमभूद्राजेति जातस्मयः ।
राज्यप्राप्तिकृतार्थमेकमपरं तीर्णप्रतिज्ञार्णवं
सौहार्दात् कृतकृत्यतैव नियतं लब्धान्तरा भेत्स्यति ॥ २२ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

(इति द्वितीयोऽङ्कः)

(already fulfilled), नः=अस्माकम् (our), समीहितम्=वाञ्छितम् (desire), पश्यामि=अवलोकयामि (I see), कुतः=for.

हिन्दी—राक्षस—(देखकर) अहो बहुमूल्य आभूषण है। (प्रकट रूप में) भद्र, मेरी ओर से शकटदास से कहो—बेचने वाले को उचित मूल्य देकर इसे खरीद ले।

पुरुष—जैसी आज्ञा। (ऐसा कहकर चला गया)

राक्षस—तब तक मैं भी करभक को कुसुमपुर भेजता हूँ। (उठकर) क्या दुरात्मा चाणक्य से चन्द्रगुप्त अलग किया जा सकेगा ? अथवा अपने मनोरथ को पूर्ण हुआ ही देखता हूँ।

English—*Rakshasa*—(Seeing them) Oh, these are ornaments of great value. Gentleman, let Sakatdasa be informed in my name that he should satisfy the seller and buy them.

Man—As you command. (exit)

Rakshasa—I too will send Karavaka to Kusumpura. (Rising) Would there be a split between Chandragupta and the vile Chanakya or—I consider my desire as already fulfilled. For—

विमला

अन्वयः—मौर्यः, सर्वभूतलभुजाम्, आज्ञापकः, तेजसि, वर्तते, चाणक्यः, अपि, मदाश्रयात्, अयम्, राजा, अभूत्, इति, जातस्मयः, राज्यप्राप्तिकृतार्थम्, एकम्, तीर्णप्रतिज्ञार्णवम्, अपरम्, लब्धान्तरा, कृतकृत्यता, एव, नियतम्, सौहार्दात्, भेत्स्यति ॥ २२ ॥

व्याख्या—मौर्यः=चन्द्रगुप्तः (Chandragupta), सर्वभूतलभुजाम् आज्ञापकः= सकलभूपतीनाम् शासनकर्त्ता (ruling over all the kings of the world), तेजसि=प्रतापे (imperious), वर्तते=आस्ते (has become), चाणक्यः अपि (Chanakya also), मदाश्रयात्=मम साहाय्यात् (through my support), अयम्=असौ (he), राजा=नृपः (king), अभूत्=जातः (became), इति जातस्मयः=सञ्जातगर्वः (the feeling of satisfaction), राज्यप्राप्तिकृतार्थम्=

राज्यलाभेन सफलम् (by his acquisition of the kingdom), एकम् = चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta), तीर्णप्रतिज्ञार्णवम् = पूर्णप्रतिज्ञमिति (successfully cross the sea of his vow), अपरम् = द्वितीयम् (next), लब्धान्तरा = प्राप्तावकाशा (gained his object), कृतकृत्यता एव=चरितार्थता एव (very consciousness), नियतम् = अवश्यम् (sure), सौहार्दात् = मित्रभावात् (from their friendship), भेत्स्यति=विघटयिष्यति (alienate them) ॥ २३ ॥

हिन्दी—चन्द्र सभी राजाओं को आज्ञा देने वाला तेजस्वी है। चाणक्य भी—'मेरा आश्रय पाकर यह शासक हुआ है' ऐसा सोचकर गर्वीला बना है। एक राज्य मिल जाने से सफल, दूसरा प्रतिज्ञासागर को पार कर लेने से सन्तुष्ट—अब दोनों ओर सफलता ही है—जो अवसर आने पर दोनों की मित्रता भङ्ग कर सकती है ॥ २३ ॥

English—Maurya, ruling over all the kings of the world, has become imperious Chanakya, again, cherishes the pride—this man has become king through my support. The very consciousness of having gained the end will, with a loop-hole found, surely divert from friendship, the one happy by his acquisition of the kingdom, the other by his having successfully crossed the sea of his vow (23)

टिप्पणी—इस श्लोक में यथासङ्ख्य नाम अलङ्कार एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

मुद्राराक्षस द्वितीय अङ्क की 'विमला' व्याख्या समाप्त।



तृतीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति कञ्चुकी ।)

कञ्चुकी—(सनिर्वेदम्)

रूपादीन् विषयान्निरूप्य करणैर्यैरात्मलाभस्त्वया
लब्धस्तेष्वपि चक्षुरादिषु हताः स्वार्थावबोधक्रियाः ।
अङ्गानि प्रसभं त्यजन्ति पटुतामाज्ञाविधेयानि ते
न्यस्तं मूर्ध्नि पदं तवैव जरया तृष्णे मुधा ताम्यसि ॥ १ ॥

विमला

(ततः प्रविशति कञ्चुकी = Enter the Chamberlain)

कञ्चुकी—(सनिर्वेदम् = (dejectedly)

अन्वयः—हे तृष्णे, यैः, करणैः रूपादीन्, विषयान्, निरूप्य, त्वया, आत्मलाभः, लब्धः, तेषु, चक्षुरादिषु, अपि, स्वार्थावबोधक्रियाः, हताः, ते, आज्ञाविधेयानि, अङ्गानि, प्रसभम्, पटुताम्, त्यजन्ति, जरया, तव, एव, मूर्ध्नि, पदम्, न्यस्तम्, मुधा, ताम्यसि ॥१॥

व्याख्या—तृष्णे = हे स्पृहे (O Desire), यैः करणैः = चक्षुरादिभिः ज्ञानेन्द्रियैः (operations of perceiving), रूपादीन् = रूप रस-गन्ध स्पर्श-शब्दान् विषयान् = ज्ञानेन्द्रियग्राह्यान् पदार्थान् (their own objects), निरूप्य = भोग्यतयाऽवधार्य (has been placed) त्वया = तृष्णया (by you), आत्मलाभः = आत्मोपलब्धिः (self production), लब्धः = प्राप्तः (gained), तेषु = तव आत्मोपलब्धिस्थलेषु (in them), चक्षुरादिषु = दृष्टिरसनादिषु (eye and others), अपि (also), स्वार्थावबोधक्रियाः = स्वार्थस्य, निजविषयस्य, यः अवबोधः ज्ञानम्, तद्रूपा या क्रियाः = व्यापारः अर्थात् स्वविषयग्रहणसामर्थ्यम् (the function of perceiving their own objects), हताः = विनष्टाः (have been lost), ते = तव (your), आज्ञाविधेयानि = आदेशवशम्वदानि (obedient to yowr commands), अङ्गानि = कर्मेन्द्रियाणि (organs of action) त्यजन्ति = मुञ्चन्ति (given up), जरया = वृद्धावस्थया (old age), तव = भवतः (your) एव, मूर्ध्नि = मस्तके (on head), पदम् = चरणम् (foot), न्यस्तम् = अर्पितम् (has been placed), मुधा = व्यर्थमेव (in vain), ताम्यसि = माद्यसि (pine now) ॥ १ ॥

हिन्दी—(इसके बाद कञ्चुकी प्रवेश करता है)

कञ्चुकी—(खेद के साथ)—

हे तृष्णा, जिन ज्ञानेन्द्रियों से रूपादि विषयों को प्राप्त करके तुमने अपना अस्तित्व प्राप्त किया—उन चक्षुरादि इन्द्रियों ने भी अपने-अपने विषयों के ज्ञान प्राप्त करने की क्षमताएँ नष्ट हो

(परिक्रम्याकाशे) भो भोः सुगाङ्गप्रासादाधिकृताः पुरुषाः, सुगृहीतनामा देवश्चन्द्रगुप्तो वः समाज्ञापयति—'प्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवरमणीय कुसुमपुरमवलोकयितुमिच्छामि। तत्संस्क्रियन्तामस्मद्दर्शनयोग्याः सुगाङ्गप्रसादोपरिभूमयः' इति। (पुनराकाशे) किं ब्रथ 'आर्य, किमविदित एवायं देवस्य कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेध.' इति। आः दैवोपहताः, किमनेन वः सद्य प्राणहरेण कथोपोद्घातेन। शीघ्रमिदानीम्—

तुम्हारी आज्ञा का पालन करने में तत्पर ये तुम्हारे कर्मेन्द्रिय भी हठात् अपनी दक्षता खो चुके हैं। अब तो बुढापा का पैर तुम्हारे ही सिर पर पड चुका है। अब भला व्यर्थ ही चञ्चल हो रही हो॥३॥

English—(Enter the Chamberlain)

Chamberlain—(dejectedly) O desire, old age has placed its foot on your head—in vain your regret; as the operations of perceiving their self production have been decayed with an eye to those very organs of sense, the eyes and others, with the help of which you have gained your object, by perceiving the object of sense such as form and others, the action organs, previously which were your obedient have perforce lost their energy.

टिप्पणी—इस श्लोक में समासोक्ति एव विभावना अलंकार है तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है। लक्षण पहले लिखा जा चुका है।

विमला

व्याख्या—[परिक्रम्याकाशे = सचर्य वियति=(moving in the sky)], भो भोः= अभिप्रेतार्थबोधने • सम्बोधनपदम् (Oh, ho), सुगाङ्गप्रासादे = सुगाङ्गभवने (Suganga palace), अधिकृताः=नियुक्ता. (employed), पुरुषा. = अनुचराः (servants), सुगृहीतनामा = प्रात स्मरणीयाभिधानः (His majesty), देवः = राजा (sire), चन्द्रगुप्त', व. = युष्मान् (all of you), समाज्ञापयति = निर्दिशति (commands)—प्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवरमणीयम् = आरब्धशारदपूर्णिमासाध्यव्रतविशेषाधिकमनोज्ञम् (more charming with the Kaumudi-festival commenced), कुसुमपुरम्=पाटलिपुत्रम् (Kusumpura), अवलोकयितुम् = द्रष्टुम् (to see), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish), तत्=तस्मात् कारणात् (so), संस्क्रियन्ताम्=अलङ्क्रियन्ताम् (decorate), अस्मद्दर्शनयोग्या. = मदवलोकनीयाः (for our reception), सुगाङ्गप्रासादस्योपरि भूमय = उपरिष्टात् प्रदेशाः (the upper terraces of Suganga), [पुनराकाशे=Again looking in the sky)], आर्य = मान्यो भवान् (sir), किंब्रूथ = किं कथयथ (what do you say), किमविदित एव=अज्ञात एव (does not know), अयम् (this), देवस्य=चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेध =शारदपूर्णेन्दुपूजनारम्भोत्सवनिषेधः (the festival has been forbidden), आः दैवोपहताः=भाग्येन विनष्टाः (Ah

आलिङ्गन्तु गृहीतधूपसुरभीन् स्तम्भान् पिनद्धस्रजः
संपूर्णेन्दुमयूखसंहतिरुचां सचामराणां श्रियः।
सिंहाङ्कासनधारणाच्च सुचिरं संजातमूर्च्छामिव
क्षिप्रं चन्दनवारिणा सकुसुमः सेकोऽनुगृह्णातु गाम् ॥ २ ॥

---

ill fated beings), किमनेन=किमे पेन (what is by), वः=युस्माकम् (you), सद्य प्राणहरेण=जीवविनाशकेन (entails instant loss to life), कथोपोद्घातेन=वार्त्ताप्रसङ्गेन (reference to a subject), शीघ्रम् (quickly), इदानीम्=अधुना (now) :—

हिन्दी—(चारो ओर घूमकर आकाश की ओर देखकर) हे सुगाङ्गप्रासाद के अधिकारियों प्रातःस्मरणीय महाराज चन्द्रगुप्त आदेश देते हैं—"प्रचलित कौमुदी महोत्सव से अत्यन्त रमणीय कुसुमपुर को देखना चाहता हूं। अतः महाराज के स्वागत के अनुकूल महल की ऊपरी छतों को सजा दी जाय। (फिर आकाश की ओर देखकर) क्या कह रहे हो आर्य—क्या महाराज को पता नहीं कि कौमुदी महोत्सव पर रोक लग चुकी है ?" अरे भाग्य के मारों, क्यों ऐसी कथा छेड बैठे हो, जिससे काल ही क्षण तुम्हारी जान पर आ सकती है

English—(*turning round and looking into the sky*) Oh, All of you officials employed at the Suganga palace, Sire Chandragupta of auspicious name commands you thus —I wish to see a sight of Kusumpura more charming with the Kaumudi festival commenced. Therefore you should decorate the upper floors of the Suganga palace for our reception (Again looking into the air) What do you say ? Do you say, "Sire, does not know that the festival has been forbidden ?" Ah, *you illfated fellow, what is gained by* you by this reference to a subject that entails instant loss to life Quickly now, :—

विमला

अन्वयः—पूर्णेन्दुमयूखसंहतिरुचाम्, सचामराणाम्, श्रियः, पिनद्धस्रजः, गृहीतधूपसुरभीन्, स्तम्भान्, आलिङ्गन्तु, च सकुसुमः, चन्दनवारिणा, सेकः, सुचिरम्, सिंहाङ्कासनधारणात्, संजातमूर्च्छाम्, इव, गाम्, क्षिप्रम्, अनुगृह्णातु ॥ २ ॥

व्याख्या—पूर्णेन्दुमयूखसंहतिरुचाम्=चन्द्रकिरणधवलानाम् (the lustre of enmassed beams of the full moon), सच्चामराणाम्=चमरीश्रेष्ठपुच्छानाम् (the glow of fine Chamaries), श्रियः=कान्तयः (beauty of bright), पिनद्धाः=अवबद्धाः (having fastened round), स्रजः=पुष्पमालिकाः (garlands), येषु तादृशाम्=गृहीतधूपसुरभीन्=सेवितधूपसुगन्धयुक्तान् (fragrant by being fumigated with incense), स्तम्भान्=गृहस्थूणाः (the pillars), आलिङ्गन्तु=उपश्लिष्यन्तु (let embrace), च=पुनः (and), सकुसुमः=पुष्पमिश्रितः (mixed with flowers), चन्दनवारिणा=मलयजजलेन (with Sandal water), सेकः=

किं न्वथ-'आर्य, इदमनुष्ठीयते देवस्य शासनम्' इति । भद्रा', त्वरध्वम् । अयमागत एव देवश्चन्द्रगुप्त' । य एषः-

> सुचिरध्वैरङ्गैः पथिषु विषमेष्वप्यचलता
> चिरं धुर्येणोढा गुरुरपि भुवो याऽस्य गुरुणा ।
> धुरं तामेवोच्चैर्नववयसि वोढुं व्यवसितो
> मनस्वी दम्यत्वात् स्खलति च न दुःखं वहति च ॥ ३ ॥

सिञ्चनम् (sprinkling), सुचिरम् = बहुकालम् (has been long time), सिंहासनधारणात् = राजासनवहनात् (under the weight of the lion-emblemed throne), सञ्जातमूर्च्छामिव = उत्पन्नचेतनाशून्यमिव (like in a swoon), गाम् = पृथिवीम् (the earth), क्षिप्रम् = शीघ्रम् = (quickly), अनुगृह्णातु = सम्भावयतु (let favour) ॥ २ ॥

हिन्दी—पूनम के चाँद की किरणों के समान चमकीले, सुन्दर चाँवरों से छिटकने वाली छटायें मानों सुगन्धित धूपों से सुरभित और लटकती मालाओं से सुशोभित अट्टालिका के स्तम्भों का आलिङ्गन करे । इतना ही नहीं फूलों की सुवास मिश्रित चन्दनजल का न छिड़काव ऐसा सर्वत्र शीघ्र किया जाय जैसे सिंह के पंजे की भाँति पड़े राजसिंहासन के दीर्घकालीन भार से दबी गोरूपी यह धरती एकबार उच्छ्वसित हो उठे ॥ २ ॥

English—Let the glow of fine Chamaries having the lustre of enmassed beams of the full-moon quickly embrace the pillars, fragrant by being fumigated with incense, and having garlands fastened round them, let also sprinkling with Sandal water mixed with flower quickly favour the earth that is in a swoon as it were by the long weight of the lion-emblemed throne (2).

टिप्पणी—अपिनद्ध-अपि + √नह् + क्त कर्मणि रूप, अपिनद्ध या पिनद्ध । सम्पूर्णेन्दुमयूखसहतिरूपाम्—सम्पूर्णसकलकलायुक्तः यः इन्दुः चन्द्रः तस्य मयूखाः चन्द्रिका तेषां या संहतिः—सम् + √हन् + क्तिन् भावे,संहति समवायः तस्याः रुक् कान्तिरिव कान्ति यस्य तादृशानाम् । सेक.—सिच् + घञ् + विभक्तिकार्य । प्रतिषेध.—प्रति + सिध् + घञ् + विभक्तिकार्य ।

इस श्लोक के पूर्वार्ध में समासोक्ति एव परार्द्ध में उत्प्रेक्षा अलङ्कार है तथा वृत्त शार्दूलविक्रीडित है । लक्षण लिखा जा चुका है ॥ २ ॥

विमला

किं न्वथ = किं कथयन्ति (what do you say), आर्य, (sir), इदम् (this), अनुष्ठीयते=क्रियते (being obeyed), देवस्य=राज्ञः (His majesty), शासनम्=आदिष्टम् (command), भद्रा = कक्ष्याणिन. (gentlemen), त्वरध्वम् = शीघ्रताम् कुरुत (hasten), अयम्=असौ (here), आगत एव=सम्प्राप्त एव (has indeed arrived), देवश्चन्द्रगुप्त=राजा मौर्य. (Sire Chandragupta), य एष (he it is) —

अन्वयः—विषमेषु, अपि, पथिषु, अचलता, धुर्येण, अस्य, गुरुणा, सुविश्रब्धैः, अङ्गैः, गुरु, अपि, या, चिरं, ऊढा, तामेव, उच्चैः, भुवो, धुरम्, नववयसि वोढुम्, व्यवसित, च, एष, मनस्वी, दम्यत्वात्, दुःखम्, वहति च, न, स्खलति च ॥ ३ ॥

व्याख्या—विषमेषु=वरिष्ठेषु (on rough), अपि (also), पथिषु=मार्गेषु (path), पक्षे-राज्यसंचालनेषु (political situation), अचलता=धैर्यवत्ता (grvity), पक्षे-भारोद्वहनकुशलेन धुर्येण=राज्यभारसंचालनकुशलेन (able to bear the responsibility) पक्षे-धुरिसंयोजितेन (accustomed to bear the yoke), अस्य=चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), पक्षे-वृषभस्य (bull's), गुरुणा=पित्रा-नन्देन (by his father) पक्षे-वय श्रेष्ठेन (by elder) सुविश्रब्धैः=विश्वसनीयः (well confident), पक्षे=दृढैः (trusty), अङ्गैः=राज्यावयवैः अमात्यादिभिः (the members of the political body), पक्षे-अवयवैः (limbs), गुरु=महती अपि (trained or experienced), या=धूः चिरम्=बहुकालम् (long time), ऊढा=सचालिता (bear up), तामेव=पूर्वधृतामेव उच्चैः=महत्तमाम् (heavy), धुरम्=भारम् (burden), नववयसि=नवीनावस्थायाम् (youthfulness), वोढुम्=धारयितुम् (bearing), व्यवसित=तत्परः (ready), च एष, मनस्वी=महोत्साह (wise), पक्षे=बलदर्पित (resolute), दम्यत्वात्=अनतिप्रौढत्वात् (inexperience), स्खलति=त्रुटिम् करोति (*does mistake*), पक्षे—भ्रश्यति (to fall down), च=किन्तु (but), न=नहि (not), दुःखम्=क्लेशम्, वहति=प्राप्नोति (bears it with difficulties) ॥ ३ ॥

हिन्दी—क्या पूछ रहे हो आर्य, महाराज की आज्ञा पूरा किया जा रहा है। भद्र, जल्दी करो। महाराज आ ही गये हैं। जो यह—

विषमनीय, (पक्ष में ऊबड़) राज्य के अद्भुत सचिवादि (पक्ष में—अवयवों से) जटिल (पक्ष में—ऊँचे-नीचे) राज्यतन्त्र के संचालन में (पक्ष में—रास्ते पर) भी न विचलित होने वाले (पक्ष में—भारवहन करने में कुशल) राज्य के भार को वहन करने वाले (पक्ष में—धुरी में जुते हुए) इस चन्द्रगुप्त (पक्ष में—नया बैल) के पिता नन्द के द्वारा (पक्ष में—प्रौढ़ वृषभ के द्वारा) पृथिवी का महान भी जो भार (पक्ष में—जूआ) बहुत दिनों तक वहन किया गया (पक्ष में—ढोई गयी) उसी महान भार को (पक्ष में—जूआ को) नवीन अवस्था में वहन करने के लिए तत्पर महत्त्वाकांक्षी चन्द्रगुप्त (पक्ष में—दृढ़ नववृषभ) अन-धिक प्रौढ़ होने के कारण गलती करता है (पक्ष में-फिसलता है) किन्तु दुखी नहीं होता ॥ ३ ॥

English—What do you say ?—Here, Noble sir, Sire Chandragupta's command is being obeyed. Hasten, good fellows here, Sire Chandragupta has indeed arrived He it is :—

Who being strong minded, has resolved to bear up, even in his prime youth, that very yoke of (responsibility of governing) the earth which, though heavy, was for a long time borne by his sire, like a trained bull (experienced and able) who did not stop amiss

(नेपथ्ये ।)

इत इतो देवः ।

(ततः प्रविशति राजा प्रतीहारी च)

राजा—(स्वगतम् ।) राज्यं हि नाम राजधर्मानुवृत्तिपरस्य नृपतेर्महदप्रीतिस्थानम् । कुतः ।

परार्थानुष्ठाने रहयति नृपं स्वार्थपरता
परित्यक्तस्वार्थो नियतमयथार्थः क्षितिपतिः ।
परार्थश्चेत् स्वार्थादभिमततरो हन्त परवान्
परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः ॥ ४ ॥

---

even on rough paths (trying situations) on account of his firm limbs (with well trusted ministers), he stumbles on account of his youthness (in experience) but bears it lightly without difficulties. (3),

टिप्पणी—इस श्लोक में समासोक्ति अलंकार तथा शिखरणी छन्द है। छन्द का लक्षण यथा—'रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलाः गः शिखरिणी'

विमला

(नेपथ्ये = वेशरचनालये (In the dressing room)

इतो इतो देव. = अनेन पथा आगच्छतु (This way), देवः = भवान् (sire).

राजा—[स्वगतम् = (To himself)], राजधर्मानुवृत्तपरस्य = राजधर्मानुसरणदत्तचित्तस्य (intent upon observing the duties of king), नृपते. = राज्ञ. (the king's), महत् = अधिकम् (great), अप्रीतिस्थानम् = अतृप्त्यास्पदम् (a source of great trouble), राज्यम् हि नाम (a kingdom is indeed), कुत. = for —

अन्वयः—परार्थानुष्ठाने, स्वार्थपरता, नृपम्, रहयति, परित्यक्तस्वार्थः, नियतम्, अयथार्थः, क्षितिपति, चेत्, परार्थः, स्वार्थात्, अभिमततरः, हन्त, परवान्, परायत्तः, पुरुषः, प्रीतेः, रसम्, कथमिव, वेत्ति ॥ ४ ॥

व्याख्या—परार्थानुष्ठाने = परप्रयोजनसम्पादने (in seving others), स्वार्थपरता = स्वप्रयोजनसाधनप्रवृत्तिः (selfi interest), नृपम् = राजानम् (to the king), रहयति = त्यजति (forsakes), परित्यक्तस्वार्थः = परिहृतस्वसुखादिप्रयोजनम् (abandoned his self-interest), नियतम् = निश्चितम् (decided), अयथार्थः = असत्यभूतः (is not true), क्षितिपतिः = भूपालः (lord of the earth) चेत् = यदि (if), परार्थः = परप्रयोजनम् (other's interest), स्वार्थात् = स्वप्रयोजनात् (from self-interest), अभिमततरः = प्रियतर. (more preferable), हन्त (alas), परवान् = पराधीन. (dependent), परायत्त. = पराधीनः (controlled man), पुरुष = जनः (man), प्रीतेः = सुखस्य (of pleasures), रसम् = आनन्दम् (the flavour), कथमिव = केन प्रकारेण (how), वेत्ति = जानाति (know). ॥ ४ ॥

अपि च ! दुराराध्या हि राजलक्ष्मीरात्मवद्भिरपि राजभिः ।
कुतः—

> तीक्ष्णादुद्विजते मृदौ परिभवत्रासान्न सन्तिष्ठते
> मूर्खं द्वेष्टि न गच्छति प्रणयितामत्यन्तविद्वत्स्वपि ।
> शूरेभ्योऽप्यधिकं बिभेत्युपहसत्येकान्तभीरूनहो
> श्रीर्लब्धप्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम् ॥ ५ ॥

हिन्दी— (नेपथ्य)

इधर से महाराज इधर से—

(राजा साथ में प्रतिहारी)

राजा—(मन ही मन) कर्त्तव्यपालन में तत्पर राजा के लिए राज्य महान कष्ट का कारण है। क्योंकि—

राजा यदि परोपकार में ही दिन-रात तत्पर रहे तो वह अपने स्वार्थ की पूर्ति से वञ्चित रह जायेगा और यदि वह स्वार्थ की भावना से रहित हो जाय तो वह भूमि का पति ही रह जाय और यदि मनुष्य पराक्रम की वृत्ति को सचमुच स्वार्थभावना से श्रेयस्कर मान ले—फिर तो वह सर्वथा पराधीन, पराश्रित हो गया और—पराधीन को क्या मालूम जीवन में प्रेम नाम की कोई वस्तु है या ? ॥ ४ ॥

(Behind the scenes)

English—This way, this way, Sire.

(Then enter the king and warder)

The king—(To himself) Sovereignty is indeed a source of great trouble to the king intent upon observing the duties of a king For :—

In serving other's end self-interest forsakes the king and the king, who abandons personal interest, is not the lord of the earth in the real sense of the term If other's interest is preferable to self-interest, then, alas ! the king has a master to serve, how can he know the flavour of pleasures ? (4)

टिप्पणी—इस श्लोक में काव्यलिङ्ग अलङ्कार तथा शिखरिणी छन्द है।

विमला

अपि च = अन्यदपि (more over), आत्मवद्भिः = स्थिरमानसैः (by self controlled), अपि (also), राजभिः = नृपैः (kings), राजलक्ष्मीः = राज्यश्री (the goddess of wealth), दुराराध्या = क्लेशेन सेव्या (is hard to serve), कुतः = for —

अन्वयः—तीक्ष्णात्, उद्विजते, मृदौ, परिभवत्रासात्, न, सन्तिष्ठते, मूर्खान्, द्वेष्टि, अत्यन्तविद्वत्सु, अपि, प्रणयिताम्, न गच्छति, शूरेभ्यः, अप्यधिकम्, बिभेति, एकान्तभीरून्, उपहसति, अहो, लब्धप्रसरा, वेशवनिता, इव, श्रीः, भृशम्, दुःखोपचर्या ॥ ५ ॥

अन्यच्च । कृतककलहं कृत्वा स्वतन्त्रेण किंचित्कालान्तरं व्यवहर्तव्यमित्यार्योपदेशः । स च कथमपि मया पातकमिवाभ्युपगतः । अथ वा शश्वदार्योपदेशसंस्क्रियमाणमतयः सदैव स्वतन्त्रा वयम् । कुतः ।

व्याख्या—तीक्ष्णात् = उग्रस्वभावात् (from austere), उद्विजते = उद्विग्ना भवति (shrinks), मृदौ = कोमलस्वभावे राजनि (in the mild nature), परिभवत्रासात् = अन्यकृतानादरभयात् (from fear of insult), न = नहि (not), सन्तिष्ठते = स्थितिम् लभते (does not abide), मूर्खान् = अज्ञान् (fools), द्वेष्टि = दूरतः एव जहाति (hates), अत्यन्तविद्वत्सु = भूरिविद्याशालिषु (the most learned), अपि (also), प्रणयिताम् = अनुरागभावम् (love), न गच्छति = न प्राप्नोति (not bears), शूरेभ्यः = वीरेभ्यः (the brave), अभ्यधिकम् = अत्यधिकम् (exceedingly), बिभेति = भयकरोति (dreads), एकान्तभीरून् = अतिभयशीलान् (the ever timid), उपहसति (scoffs), अहो = आश्चर्यम् (oh !), लब्धप्रसरा = प्राप्तधृष्टता (has gained ascendancy), वेशवनिता = वेश्या (a harlot), इव = यथा (like), श्रीः = राज्यलक्ष्मी (goddess of wealth), भृशम् = अत्यर्थम् (very), दुःखोपचर्या = कष्टसेव्या (difficult to please) ॥ ५ ॥

हिन्दी—और भी—

समाहित चित्तवाले राजाओं के लिए भी राजलक्ष्मी कष्ट से आराध्य है। क्योंकि लक्ष्मी—

उग्र स्वभाव वाले राजा से उद्विग्न होती है। कोमल स्वभाव वाले के पास तिरस्कार के भय से अच्छी तरह नहीं टिकती है। मूर्खों से द्वेष करती है। अति विद्वान् से भी प्रेमभाव नहीं करती है। अत्यन्त वीरों से भी घबडाती है। अधिक डरपोक का उपहास करती है। आश्चर्य है, अति धृष्टा, वेश्या के समान राजलक्ष्मी कष्ट से प्रसन्न होनेवाली है ॥ ५ ॥

English—Moreover :—

The Goddess of wealth is hard to please even by kings with a command over self For :—

From the stern, she shrinks In the mild, she does not abide from fear of insult Hates a fool, she cultivates no friendship to the most learned, the brave-she dreads mightly The ever timid, she scoffs The Goddess of wealth, Ho ! like a harlot, that has gained ascendancy is extremely hard to please (5)

टिप्पणी—दुराराध्या—आ + √राध् + णिच् (स्वार्थे) ण्यत्, कर्मणि आराध्या—दुःखेन आराध्या। सन्तिष्ठते—सम् + स्था—'समवप्रविभ्यः स्थः' से आत्मनेपद हुआ है।

इस श्लोक में काव्यलिंग एवं उपमा अलङ्कार है तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

निमला

व्याख्या—अन्यच्च = अपरमपि (moroever), कृतककलहम् = कृत्रिमविवादम् (a mock quarrel), कृत्वा = विधाय (getting up), स्वतन्त्रेण = अनायत्तेन (independently), किञ्चित् = कियत् (some), कालान्तरम् = समयम् (time), व्यवहर्त-

इह विरचयन् साध्वीं शिष्यः क्रियां न निवार्यते
त्यजति तु यदा मार्गं मोहात्तदा गुरुरङ्कुशः ।
विनयरुचयस्तस्मात् सन्तः सदैव निरङ्कुशाः
परतरमतः स्वातन्त्र्येभ्यो वयं हि पराङ्मुखाः ॥ ६ ॥

र्त्तव्यम् = वर्त्तितव्यम् (have to be managed), इति = एवं (like this), आर्यस्य = मान्यस्य (preceptor), आदेशः = अनुदेशः (command), स च = आदेशः (that order), कथमपि = केनापि प्रकारेण (any how), मया (by me), पातकमिव = निन्द्यकर्मेव (this like a sin), अभ्युपगतः = स्वीकृतः (accepted), अथवा = वा (or), शश्वत् = सर्वदा (always), आर्योपदेशसंस्क्रियमाणमतयः = चाणक्यनिर्देशविशोध्यमानबुद्धयः (being constantly corrected and improved by preceptor's instructions), सदैव = अनवरत (always), एव, वयम् (we), स्वतन्त्राः = स्वाधीनाः स्मः (independent)

हिन्दी—और भी—

आर्य चाणक्य की भी आज्ञा है कि उनसे झूठ बनावटी कलह करना पड़ता, स्वतन्त्र बनना पड़ता, इसलिए बड़े भार कुछ समय तक स्वयं सम्हालना पड़ता। मुझे जानबूझ कर यह पाप करना पड़ा। अथवा—निरन्तर आर्य के उपदेश से सुधारी हुई बुद्धि वाले हमलोग सर्वदा स्वतन्त्र ही हैं। क्योंकि—

English—Moreover —

It is the command of my preceptor that I should manage independently for sometime, while after getting up a mock quarrel with him. I accepted it with a great difficulty as if it was a sin, or, we are always independent with our views being constantly corrected and improued by preceptor's instructions. For '—

टिप्पणी—कृतककलहः—कृत एव कृतकः तादृशः कलहः = कृतककलहः बनावटी झगड़ा।
स्वतन्त्र—स्व आत्मा तन्त्रं प्रधानमस्य। मया वा।
व्यवहर्तव्यम्—वि+अव+हृ+तव्य भाव वाच्य विभक्ति कार्य से रूप सम्पन्न।

विमला

अन्वयः—इह, साध्वीम्, क्रियाम्, रचयन्, शिष्यः न निवार्यते, तु, यदा, मोहात्, मार्गम्, त्यजति, तदा, गुरुः, अङ्कुशः, तस्मात्, विनयरुचयः, सन्तः, सदा, एव, निरङ्कुशाः, अतः, परतरम्, स्वातन्त्र्येभ्यः, वयम्, हि, पराङ्मुखाः ॥ ६ ॥

व्याख्या—इह = अस्मिन् लोके (in this world), हि = यतः (indeed), साध्वीम् = न्याय्याम् (right way), क्रियाम् = कार्यम् (work), रचयन् = कुर्वन् (doing), शिष्यः = छात्रः (pupil), न निवार्यते = न प्रतिषिध्यते (not check), तु = किन्तु (but), यदा = यस्मिन् काले (when), मोहात् = अज्ञानात् (through delusion), मार्गम् = सत्पथम् (the proper path), त्यजति = जहाति (strays), तदा = तस्मिन् काले (then), गुरुः = आचार्यः (Preceptor), अङ्कुशः = नियामकः (a curb),

(प्रकाशम् ।) आर्य वैहीनरे, सुगाङ्गमार्गमादेशय ।

कञ्चुकी—इत इतो देवः । (नाट्येन परिक्रम्य ।) अय सुगाङ्गप्रासादः । शनैरारोहतु देवः ।

राजा—(नाट्येनारुह्य, दिशोऽवलोक्य ।) अहो शरत्समयसंभृतशोभानां दिशामतिरमणीयता । कुतः ।

तस्मात्=एतस्मात् कारणात् (therefore), विनयरुचय:=विनये गुरुकृतशिक्षणे (according to the instruction of preceptor), रुचिः=प्रीतिः (interest), येषाम् तादृशाः, सन्तः=सदाचारजनाः (good men), सदैव=सर्वदा एव (always), निरंकुशाः=स्वतन्त्राः (free from restraint), अतः (so), परतरम्=अधिकम् (more), स्वातन्त्र्येभ्य=स्वच्छन्दताभ्यः(to any independence), वयम् (we), हि=निश्चये (indeed), पराङ्मुखाः=विपरीताः (averse) ॥ ६ ॥

हिन्दी—निश्चय ही इस ससार में हुआ शुभक्रिया को करता सदाचारी शिष्य रोका नहीं जाता । किन्तु, जब शिष्य अज्ञानवश मार्ग छोड़ता है, तब गुरु निबन्धक होता है । अत. गुरु के बतलाये मार्ग में रुचि रखनेवाले सुन्दर आचरण करने वाले शिष्य हमेशा स्वतन्त्र है । इससे अधिक स्वतन्त्रता के हम विपरीत हैं ॥ ६ ॥

English—In this world a pupil is not checked doing a good work. The preceptor is a curb when he strays from the proper path through delusion, hence, good men with a liking for discipline are always curbless. We for our part are averse to any independence other than this, (6).

टिप्पणी—व्यवहर्त्तव्यम्—वि+अव+ √हृ+तव्य+विभक्तिकार्य । स्वातन्त्र्येभ्य.—स्वतन्त्र+ष्यञ्+पञ्चमीबहुवचने विभक्ति कार्य ।

इस श्लोक में परिणाम अलङ्कार एव हरिणी छन्द है । उदाहरण यथा—अलङ्कार—आरोप्यमाणस्य प्रकृतोपयोगित्वे परिणाम.—अलङ्कारसर्वस्व । छन्द—नसमरसला ग· षड्वेदैर्यतिर्हरिणीमता—वृत्तरत्नाकर ।

विमला

व्याख्या—[प्रकाशम्=व्यक्तम् (aloud)], आर्य=मान्य (Sir), वैहीनरे = कञ्चुकिन् (Vaihinari), सुगाङ्गमार्ग=सुगाङ्गहर्म्यपथम् (way to the Suganga palace), आदेशय=दर्शय (show me).

कञ्चुकी—इत इतः (this way, this way), देव. = मान्यः (sire)

[नाट्येन = अभिनयेन (acting), परिक्रम्य=परिक्रमां कृत्वा (going round),] अयं सुगाङ्गप्रासाद. = एष सुगाङ्गसौधः (this is the Suganga palace), शनै. = मन्दम् (slowly), देव· = पूज्यः (sire), आरोहतु = उपरिष्टाद्गन्तुमर्हतु (let ascend).

राजा—[नाट्येन = नटोचितव्यापारविशेषेण (acting), आरुह्य = सौधोपरिप्रदेश प्राप्य (ascent), दिशः=ककुभः (the quarters), अवलोक्य = दृष्ट्वा (obser-

> शनैः श्यानीभूताः सितजलधरच्छेदपुलिनाः
> समन्तादाकीर्णाः कलविरुतिभिः सारसकुलैः ।
> चिताश्चित्राकारैर्निशि विकचनक्षत्रकुमुदै-
> र्नभस्तः स्यन्दन्ते सरित इव दीर्घा दश दिशः ॥ ७ ॥

---

ving)], अहो = आश्चर्यम् (Oh !), शरत्समयेन (by the autumnal season), सम्भृताः=उपचिताः शोभाः विभूतयः यासां (with grace added), दिशाम्=आशानाम् (the quarters), अतिरमणीयता = प्रभूतसौन्दर्यम् (the beauty).

हिन्दी—(प्रकट रूप में) आर्य, वैहीनरि सुगाङ्ग का मार्ग निर्देशित कीजिए।

कञ्चुकी—महाराज, इधर से, इधर से। (अभिनय के साथ चारों ओर घूमकर) यह सुगाङ्ग नामक राजमहल है। महाराज धीरे से इस पर चढ़ें।

राजा—(राजा अभिनयपूर्वक चढ़कर तथा दिशाओं को देखकर) अहो! शरद् ऋतु के द्वारा बढ़ा दी गई शोभावाली दिशाओं की अत्यन्त रमणीयता है। क्योंकि—

English—(*Aloud*) *Sir* ! *Vaihinari, show the way to Suganga* palace.

Chamberlain—This way, Sire, this way, (acting going round) This is the palace Suganga. Let my lord ascend slowly,

The king—(acting ascent and observing the quarters) Oh, the extreme beauty of the quarters with grace added by the autumnal season ! For :—

विमला

अन्वयः—शनैः, श्यानीभूताः, सितजलधरच्छेदपुलिनाः, कलविरुतिभिः, सारसकुलैः, समन्तात्, आकीर्णाः, निशि, चित्राकारैः, विकचनक्षत्रकुमुदैः, चिताः, दीर्घाः, दश दिशः, सरितः, इव, नभस्तः, स्यन्दन्ते ॥ ७ ॥

व्याख्या—शनैः = क्रमशः (gradually), श्यानीभूताः = कृशीभूताः (shrinking up), सितजलधरच्छेदपुलिनाः=सिकतामयतटानीव यासां ताः, सरित्पक्षे—वालुकामयतटानि यासां ताः (having the strips of white clouds for sand-banks), कलविरुतिभिः = मधुरैः अव्यक्तशब्दैः (with swarms of sweetly cackling swans), सारसकुलैः = सारससमूहैः (flocks of herons), समन्तात् = सर्वतः (all round), आकीर्णाः = व्याप्ताः (having crowded), निशि = रात्रौ (at *night*), *चित्राकारैः = विविधप्रकारैः (various forms)*, *विकचनक्षत्रकुमुदैः* = प्रफुल्लतारामण्डलकैरवाणीव तैः (with fine looking lily-like stars unveilted), चिताः = व्याप्ताः, दीर्घाः = विशालाः (long), दशदिशः=दशकाष्ठाः (the ten quarters), सरितः इव = नद्यः इव (like ten rivers), नभस्तः=आकाशात् (from the sky), स्यन्दन्ते = निःसरन्ति (flowing) ॥ ७ ॥

हिन्दी—शरत्काल की नदियाँ दिशाओं की तरह और दसों दिशाएं नदियों की भाँति लग रही हैं। एक ओर सर्वत्र मधुर स्वरवाले सारसों की पंक्तियों से भरी मरे चमकते बालुका-

अपि च—

अपामुद्वृत्तानां निजमुपदिशन्त्या स्थितिपदं
दधत्या शालीनामवनतिमुदारे सति फले।
मयूराणामुग्रं विषमिव हरन्त्या मदमहो
कृतः कृत्स्नस्यायं विनय इव लोकस्य शरदा ॥ ८ ॥

पुंज ऐसे शान्त पड़े हुए हैं मानो धवल मेघखण्ड हों और दूसरी ओर इसी प्रकार धवल मेघों के टुकड़े ऐसे निःशब्द दिखाई दे रहे हैं मानो नदीपुलिन हों। एक ओर इस रात में खिले हुए चित्र विचित्र कुमुदों से भरी हुई नदियाँ ऐसी लगती हैं—मानो तारों से भरी दिशायें हों और दूसरी ओर आकाश की दिशाएं ऐसी लगती हैं मानों कुमुद से भरी सरितायें हों ॥ ७ ॥

English—Gradually shrinking up, having the strips of white clouds for sand-banks, crowded all round with swarms of sweetly cackling Swans, and thick-set at night with asterism of various forms like so many full blown lily flowers, the extensive ten directions flow down from the sky like ten long rivers (7)

टिप्पणी—श्यामीभूता—श्याम+च्वि+ √भू+क्त+विभक्ति कार्य से सम्पन्न रूप। आकीर्णा—आ+ √कृ+क्त+विभक्ति कार्य से सम्पन्न रूप। चिता— √चि+क्त विभक्तिकार्य।

इस श्लोक में उपमेयोपमा एवं श्लेष अलंकार है तथा शिखरिणीछन्द है। लक्षण लिखा जा चुका है।

विमला

अन्वय—अहो, उद्वृत्तानाम्, अपाम्, निजम्, स्थितिपदम्, उपदिशन्त्या, शालीनाम्, उदारे, फले, सति, अवनतिम्, दधत्या, मयूराणाम्, उग्रम्, मदम्, विषम्, इव, हरन्त्या, शरदा कृत्स्नस्य, लोकस्य, अयम्, विनय, कृत, इव ॥ ८ ॥

व्याख्या—अहो=आश्चर्यम् (Oh!), उद्वृत्तानाम्=प्रवृद्धानाम् (had over flows), अपाम्=जलानाम् (water), निजम्=स्वीयम् (natural), स्थिति पदम्=मर्यादाम् (bond), उपदिशन्त्या=शिक्षयन्त्या (has been taught) शालीनाम्=धान्यानाम् (paddy), उदारे=प्रभूते (stalks), फले=परिणामे सति=जाते (becoming mature), अवनतिम्=नम्रताम् (bend low), दधत्या= कुर्वन्त्या (doing), मयूराणाम्=शिखिनाम् (the Peacocks), उग्रम्=तीव्रम् (excessive), मदम्=गर्वम् (lust), विषम् इव=गरलमिव (as poison), हरन्त्या=दूरीकुर्वन्त्या (depriving), शरदा (Autumn), कृत्स्नस्य=समग्रस्य (the whole), लोकस्य=संसारस्य (the world), अयम् (this), विनय = नम्रता (manners), कृत इव=शिक्षित इव (to have imparted to proper training) ॥ ८ ॥

हिन्दी—आश्चर्य है—पानी के बढ़ाव को मानो मर्यादा में रहने की शिक्षा देती हुई, धान से भरी शालियों को मानो नम्रता की दीक्षा देती हुई, मयूरों के मद को भयंकर विष की तरह उतारती हुई, शरद् ऋतु मानो सारी दुनियाँ को विनय का पाठ पढ़ा रही है ॥ ८ ॥

इमामपि—

> भर्तुस्तया कलुषितां बहुवल्लभस्य
> मार्गे कथंचिदवतार्य तनूभवन्तीम् ।
> सर्वात्मना रतिकथाचतुरेव दूती
> गङ्गां शरन्नयति सिन्धुपतिं प्रसन्नाम् ॥ ९ ॥

English—Oh, it seems that Autumn to have imparted a proper training to the whole world, pointing out their natural place and location to water that had overflown, imparting stoop to paddies the crop becoming mature, removing the peacock of their excessive lust as of virulent poison. (8)

टिप्पणी—इस श्लोक में उत्प्रेक्षा तथा काव्यलिङ्ग अलङ्कार है जिसका लक्षण पहले लिखा जा चुका है। शिखरिणी छन्द है। इसका भी लक्षण लिखा जा चुका है।

विमला

अन्वयः—शरत्, रतिकथाचतुरा, दूती, इव, कलुषिताम्, तनूभवन्तीम्, गङ्गाम्, सर्वात्मना, प्रसन्नाम्, बहुवल्लभस्य, भर्तुः, मार्गे, कथञ्चित्, अवतार्य, सिन्धुपतिम्, नयति, ॥ ९ ॥

व्याख्या—इमामपि (also)

शरद् (Autumn), रतिकथाचतुरा = प्रणयकथाप्रवीणा (adept in love-matters), दूती = सञ्चारिका (a female messenger), इव = यथा (like), कलुषिताम् = आविलाम् (turbid in rainy season), नायिकापक्षे रुष्टाम् (displeased), तनूभवन्तीम् = क्षीणीभवन्तीम् (thinning), गङ्गाम् = सुरसरिताम् (Ganga), सर्वात्मना = सर्वप्रकारेण (all over), प्रसन्नाम् = निर्मलाम् (pleased), बहुवल्लभस्य = अनेकसरित्प्रियस्य, नायिकापक्षे अनेकभार्यस्य (many wives), भर्तुः = पत्युः (husband), मार्गे = उचितपथे (proper path), कथञ्चित् = केनापि प्रकारेण (in any way), अवतार्य = आनीय (to bring), सिन्धुपतिम् = सागरम्, पक्षे पतिम् (the sea or husband), नयति = प्रापयति (leads), ॥ ९ ॥

हिन्दी—और यह भी—

नाचे दिखाई देनेवाली यह गङ्गा भी, जो अब तक वर्षा के कलुषित जल से भरी हुई-सी बन रही थी, मानो अपने प्रियतम से खाली और मुँहफुलाया नायिका हो, इस समय अपनी स्वाभाविक धारा में अपने निर्दिष्ट मार्ग पर बहती हुई देखा प्रसन्न। उल्टा बनी हुई—इस शरद के द्वारा समुद्र से मिलने के लिए ले जायी जा रही है, जैसे किसी चतुर दूती के द्वारा समझा-बुझा कर और रूठी नायिका, मनोमालिन्य भूली हुई प्रियमिलन के लिए ले जायी जा रही हो ॥ ९ ॥

English—Also—

Like a female messenger adept in love matters, the Autumnal season, having with great difficulty brought Ganga, who was so

(समन्तान्नाट्येनावलोक्य ।) अये, कथमप्रवृत्तकौमुदीमहोत्सव कुसुमपुरम् । आर्य वैहीनरे, अथास्मद्वचनादाघोषित कुसुमपुरे कौमुदीमहोत्सव ।

कञ्चुकी—अथ किम ।

राजा—तत्कि न गृहीतमस्मद्वचन पौरै ।

कञ्चुकी—(कर्णौ पिधाय ।) शान्त पाप शान्त पापम् । पृथिव्यामस्खलितपूर्व देवस्य शासन कथ पौरेषु स्खलिष्यति ।

राजा—तत्कथमप्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवमद्यापि कुसुमपुरम् ।

---

much unhappy (had become turbid in rainy seasan) with her husband for his having many wives, to the proper path as she grew thinning (shrank within its bed) leads her in a completely pleased-mood to the sea (9),

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा अलङ्कार एव वसन्त तिलका वृत्त है। दोनों का लक्षण लिखा जा चुका है।

विमला

व्याख्या—[समन्तात्=चतुर्दिक्षु (all round), नाट्येन=भङ्ग्यात्मकेन (acting), अवलोक्य=दृष्ट्वा (observation)], अये (Ha), कथम्=कस्मात् कारणात् (how is it), अप्रवृत्त=अनारब्ध (uncommenced), कौमुदीमहोत्सव = शारदोत्सव (The Kaumudi festival), कुसुमपुरम्=पाटलिपुत्रम् (Kusum pura) आर्य=मान्य (noble sir), वैहीनरे (Vaihinari), अथ=अनन्तरम् (after that), अस्मद्वचनात् (in my name), आघोषित =प्रख्यापित (proclaimed), कुसुमपुरे=पाटलिपुत्रे (at Kusumpura), कौमुदीमहोत्सव =शारदीयोत्सव (the celebration of Kaumudi festival)

कन्चुकी—अथ किम =एवमित्यर्थ (What else), (yes) ?

राजा—तत्किम् (Is it then), अस्मद्वचनम् (my command), पौरै = पौरजनै (by the citizen), न गृहीतम्=न कृतम् (not respected)

कन्चुकी—[कर्णौ पिधाय=श्रवणौ आवृत्य (blocking his ears)], शान्तम् पापम्=वीप्सायां द्विरुक्ति (Begone sin), पृथिव्याम्=भूमौ (in the whole world), अस्खलितपूर्वम्=अनुल्लङ्घितपूर्वम् (never ineffective), देवस्य= भवत (sire), शासनम्=निदेश (command), पौरेषु=पुरवासिजनेषु (among the citizens), कथम्=केन प्रकारेण (how), स्खलिष्यति=(could be *ineffective*)

राजा—तत्=तस्मात् (Then), कथम्=केन हेतुना (how), अप्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवम्=अनारब्धशारदपूर्णचन्द्रोत्सवम् (has not commenced the Kaumu di festival), अद्यापि=साम्प्रतमपि (even now), कुसुमपुरम्=पाटलिपुत्रम् (Kusumpuram)

धूर्तैरन्वीयमानाः स्फुटचतुरकथाकोविदैर्वेशनार्यो
नालंकुर्वन्ति रथ्याः पृथुजघनभराक्रान्तिमन्दैः प्रयातैः।
अन्योन्यं स्पर्धमाना न च गृहविभवैः स्वामिनो मुक्तशङ्काः
साकं स्त्रीभिर्भजन्ते विधिमभिलषितं पार्वणं पौरमुख्याः ॥ १० ॥

हिन्दी—(चारों ओर अभिनय के साथ देखकर) अरे, क्या कुसुमपुर में कौमुदी महोत्सव प्रारम्भ नहीं हुआ है ? आर्य वैहीनरे, क्या हमारी आज्ञा से कुसुमपुर में कौमुदी महोत्सव की घोषणा कर दी थी ?

कञ्चुकी—और क्या ?

राजा—तो फिर क्या ! नागरिकों ने हमारी आज्ञा स्वीकृत नहीं की ?

कञ्चुकी—(कानों को ढककर) पाप शान्त हो, पाप शान्त हो। पृथ्वी पर कभी स्खलित न होनेवाली महाराज की आज्ञा भला नागरिकों से कैसे स्खलित होगी ?

राजा—तो कैसे आज भी प्रारम्भ नहीं हुआ है कौमुदी महोत्सव जिसने देखा कुसुमपुर है ?

English—(acting observation all round) Ah, how is it, that Kusumpura goes with the Kaumudi festival uncommenced ? Venerable Vaihinari, was not the Kaumudi festival proclaimed in Kusumpura at our command ?

Chamberlain—What else (yes).

King—Why then have not the citizens obeyed our command ?

Chamberlain—(Stopping his ears) Begone sin, Begone sin, Sire's command never has been disobeyed in the whole world. How it be disobeyed by the citizens ?

King—How is it then that the festivities have not been commenced in Kusumpura ?

विमला

अन्वयः—स्फुटचतुरकथाकोविदैः, धूर्तैः, अन्वीयमानाः, वेशनार्यः, पृथुजघनभराक्रान्तिमन्दैः, प्रयातैः, रथ्याः, नालङ्कुर्वन्ति, गृहविभवैश्च, अन्योऽन्यम्, स्पर्द्धमानाः पौरमुख्याः, स्वामिनः, मुक्तशङ्काः, स्त्रीभिः, साकम्, अभिलषितम्, पार्वणम्, विधिं, न, भजन्ते ॥ १० ॥

व्याख्या—स्फुटाः=स्पष्टाः (free), चतुराः=कुशलाः (clever), याः कथाः=प्रणयवार्ताः (conversation), तासु कोविदैः=कुशलैः (skilled), धूर्तैः=विटैः (by pimps), अन्वीयमानाः=अनुगम्यमानाः (followed), वेशनार्यः=वारविलासिन्यः (harlots), पृथुजघनभराक्रान्तिमन्दैः=पृथोः=स्थूलस्य (compar), जघनस्य=स्त्रीकटिभागस्य (hips), यो भारः=गुरुता (weight), तस्य आक्रान्त्या=आरोपेण (with steps), मन्दैः=अलसैः (slow), प्रयातैः=गतिभिः (with their gaits), रथ्याः=विशिखाः (the streets), नालङ्कुर्वन्ति=न शोभन्ते (do not grace), गृहविभवैः=गृहसम्पत्तिभिः (the wealth of

houses), च=पुन. (again), अन्योन्यम्=परस्परम् (with one another), स्पर्द्धमाना =स्पर्द्धांकुर्वन्त (vying), पौरमुख्या =पुरवासिना श्रेष्ठा (the leading citizens), स्वामिन =गृहस्वामिन (sovereign's), मुक्तशङ्का =निर्भीका (free from misgivings), स्त्रीभि =वनिताभि (womens), साकम्=सह (with), अभिलषितम्=चिरवाञ्छितम् (in the desired), पार्वणम्=पर्वणि= कार्त्तिक्या पौर्णमास्या भव=पार्वणम्=शरत्पूर्णिमासम्बन्धिनम् (falling on the fullmoon day), विधिम्=महोत्सवम् (festivity), न=नहि (do not), भजन्ते=सेवन्ते (partake) ॥ १० ॥

हिन्दी—स्पष्ट और चतुरतापूर्ण प्रणय कथाओं में प्रवीण धूर्तों के द्वारा अनुसरण की जाती हुई वेश्याएँ विशाल जंघाओं के भार के आरोपण से अपनी मन्थरगति से राजमार्गों को अलङ्कृत नहीं कर रही हैं। घरों के ऐश्वर्य के द्वारा परस्पर स्पर्द्धा करते हुए नागरिकों में श्रेष्ठ गृहस्वामी निर्भय होकर स्त्रियों के साथ चिराकांक्षित शरदपूर्णिमा के उत्सव को नहीं मना रहे हैं ॥ १० ॥

English—Public women followed by pimps beaux skilled in free and clever talk do not grace the streets with their gaits slow on the weight of their hips, nor do the leading citizens vying with one an{other in the richness of their house and being free from misgivings partake, along with their women, in the desired festivity falling on full moon day 10

टिप्पणी—(१) अस्खलितपूर्वम्—स्खल्+क्त कर्त्तरि स्खलित। पूर्वम् स्खलितम्—'भूतपूर्वे चरट्' इस सूत्र से पूर्व शब्द का परनिपात हो गया। इसका विग्रह है—न स्खलितपूर्वम्—अस्खलितपूर्वम्।

(२) 'कौति' इति कुशब्दे+विच् कर्त्तरि कौ, पुन, वेत्ति इति विद्+क्त कर्त्तरि विद को वेदस्य विद" = कोविद"।

(३) अन्वीयमाना —अनु+इ+शानच्, कर्मणि = अन्वीयमाना।

(४) 'वेशो वेश्यागृहेऽपि च' तस्य नार्य्य वेशनार्य, अर्थात् वेश्या।

(५) स्वामिन—स्वधनमस्यास्तीति स्व+आमिन् मत्वर्थे स्वामिन् प्रातिपदिकादिकार्य से स्वामिन।

(६) पर्वणि भव पार्वण —पर्वन् 'तत्र भव' से अण् प्रत्यय आदि वृद्धि, प्रातिपदिकादि कार्य पार्वण।

(७) पृथुजघन—विशाल जाघवाली नारी श्रेष्ठ मानी जाती है।

(८) मुक्तशङ्का—इससे तात्पर्य यह है कि राजा की ओर से कौमुदी महोत्सव मनाने के आदेश के कारण धनप्रदर्शन में धन छिन जाने की कोई आशंका नहीं है।

किसी भी प्रस्तुत महोत्सव में वाराङ्गनाओं का राजमार्ग में गमन तथा पुरवासियों का स्त्रियों के साथ विहरण स्वाभाविक है। अत इस श्लोक में उक्त प्रकार की स्वाभाविक क्रियाओं के वर्णन करने के कारण 'स्वभावोक्ति' अलङ्कार है तथा स्रग्धरा नामक छन्द है। इन दोनों के लक्षण हैं—

कञ्चुकी—एवमेवैतत्।

राजा—किमेतत्।

कञ्चुकी—देव, इदम्।

राजा—स्फुटं कथय।

कञ्चुकी—प्रतिषिद्धः कौमुदीमहोत्सवः।

राजा—(सक्रोधम्) आः केन।

कञ्चुकी—देव, नातः परं विज्ञापयितुं शक्यम्।

राजा—न खलु आर्यचाणक्येनापहृतः प्रेक्षकाणामतिशयरमणीयश्चक्षुषो विषयः।

कञ्चुकी—देव, कोऽन्यो जीवितुकामो देवस्य शासनमतिवर्तेत।

यथा—अलङ्कार—'स्वभावोक्तिस्त्वर्थस्वक्रियारूपवर्णनम्'

छन्द—'म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्त्तितेयम्'

व मला

व्याख्या—कञ्चुकी—एवम्=भवता यथोक्तम् तथैव (It is), एव (indeed), एतत्=उत्सवविधानम् (this).

राजा—किम् (what is), एतत् (it).

कञ्चुकी—देव=महाराज (Sire), इदम्=एतत् (it is this).

राजा—स्फुटम्=स्पष्टम् (clearly), कथय (speak).

कञ्चुकी—प्रतिषिद्धः=निषिद्धः (has been prohibited), कौमुदीमहोत्सवः=शारदोत्सवः (Kaumudi festival).

राजा—[सक्रोधम्=सकोपम् (with warmth)], आः (Ha), केन (by whom).

कञ्चुकी—देव=महाराज (Sire), अतः परम्=इतोधिकम् (beyond this), विज्ञापयितुम्=सूचयितुम् (be reported), न शक्यम्=न युज्यम् (can not).

राजा—न खलु (can not), आर्य=मान्यः (the noble), चाणक्येन=कौटिल्येण (by Chanakya), अपहृतः=प्रतिषिद्धः (have deprived), प्रेक्षकाणाम्=दर्शकानाम् (the spectators), अतिशयरमणीयः=अतिमनोज्ञः (excessively *delightful*), चक्षुषः=नेत्रस्य (*of sight*), विषयः=दरयपदार्थः (*object*).

कञ्चुकी—देव=महाराज (My lord), कोऽन्यः=चाणक्यादतिरिक्तः (who else), जीवितुकामः=जीवनाभिलाषी (with a desire to live), देवस्य=भवतः (of your majesty), शासनम्=निर्देशम् (command), अतिवर्तेत=अतीत्य वर्त्तेत (would over-rule).

हिन्दी—कञ्चुकी—ऐसा ही है यह।

राजा—यह क्या है ?

कञ्चुकी—महाराज यह।

राजा—शोणोत्तरे, उपवेष्टुमिच्छामि।

प्रतीहारी—देव, एदं सिंहासणम्। देव, इदं सिंहासनम्।

राजा—(नाट्येनोपविश्य।) आर्य वैहीनरे, आर्यचाणक्य द्रष्टुमिच्छामि।

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः। (इति निष्क्रान्तः।)

(ततः प्रविशति आसनस्थः स्वभवनगतः कोपानुविद्धां चिन्तां नाटयंश्चाणक्यः।)

चाणक्यः—कथं स्पर्धते मया सह दुरात्मा राक्षसः।

राजा—साफ साफ बतलाओ।

कञ्चुकी—*कौमुदी महोत्सव रोक दिया गया है।*

राजा—(क्रोध के साथ) आः! किसके द्वारा।

कञ्चुकी—महाराज, इससे अधिक निवेदन करना सम्भव नहीं है।

राजा—आर्य, चाणक्य के द्वारा तो नहीं? दर्शकों की दृष्टि का अत्यन्त रमणीय विषय रोक दिया गया?

कञ्चुकी—महाराज, जीने की अभिलाषा रखने वाला दूसरा कौन महाराज की आज्ञा का उल्लंघन कर सकता है?

English—*Chamberlain*—It is just so

King—What is that?

Chamberlain—My lrod it is this.

King—Speak clearly.

Chamberlain—The kaumudi festival has been prohibited

King—(Angrily), Ha by whom?

Chamberlain—My lord, beyond this can not be reported.

King—Really, by noble Chankya has not been deprived the spectators of an excessively delightful object of sight

Chamberlain—Sire, who else with a desire to live can transgress the command of your majesty.

विमला

व्याख्या—राजा—शोणोत्तरे (Sonottara), उपवेष्टुम् (to sit down), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish)

प्रतीहारी—देव=महाराज (Sire), इदम् (here is), सिंहासनम् (throne).

राजा—[नाट्येन=अभिनयेन (acting), उपविश्य (*sitting down*)], आर्य=मान्य (noble), वैहीनरे (Vahinari), आर्य =मान्य (venerable), चाणक्यम्=कौटिल्यम् (chanakya), द्रष्टुम् (to see), इच्छामि (I wish)

कञ्चुकी—देव =महाराज (my lord), यदाज्ञापयति (as command), इति-निष्क्रान्तः (to exit), ततः=तदनन्तरम् (then), प्रविशति (enters),

आसनस्थः = आस्तरणारूढः (on a seat), स्वभवनगतः = निजगृहप्राप्तः (in his own house), कोपानुविद्धाम् = क्रोधसहिताम् (in an angry mood), चिन्ताम् = स्मृतिम् (meditation), नाटयन् = अभिनयन् (acting), चाणक्य. = कौटिल्यः (Chanakya)]

चाणक्य—कथम्=कुत', केन प्रकारेण वा (How so), दुरात्मा = दुष्टात्मा (wicked-souled), राक्षसः (Rakshasa), मया सह=आत्मना सार्धम् (with me), स्पर्द्धते = मत्प्रयासवैफल्यम् इच्छति (keeps up rivalry).

हिन्दी—राजा—शोणोत्तरे ! बैठना चाहता हूं।
प्रतिहारी—महाराज, यह सिंहासन है।
राजा—(अभिनय के साथ बैठकर) आर्य, वैहीनरे, आर्य चाणक्य को देखना चाहता हूँ।
कञ्चुकी—महाराज की जैसी आज्ञा (ऐसा कहकर निकल गया)
(उसके बाद अपने घर में आसन पर बैठा हुआ क्रोधपूर्ण चिन्ता का अभिनय करता हुआ चाणक्य प्रवेश करता है)।
चाणक्य—मेरे साथ दुरात्मा राक्षस किस प्रकार स्पर्द्धा करता है ?

English—*King*—Sonottara, I wish to sit down.
Warder—Sire here is your throne.
King—(acting sitting down) venerable Vathinari, I wish to see the noble Chanakya.
Chamberlain—My lord as you command. (Exit).
(Then enter Chanakya on a seat, in his own house, acting meditation mixed with anger) .
Chanakya—How so the vile hearted Rakshasa keeps up rivalry with me ?

टिप्पणी—(१) विज्ञापयितुम्—वि + ज्ञा + णिच् + तुमुन् , सामान्यतः यह रूप 'आज्ञापयितुम्' का द्योतक है।

(२) जीवितुकामः—जीवितुम् काम. यस्य। यहाँ पर 'जीवितुम्' के मकार का लोप 'तुम्काममनसोरपि' इस कारिका के अनुसार हुआ है।

(३) उपवेष्टुमिच्छामि—उप + विश् + तुमुन्—इससे राजा अपने हृदयस्थ क्रोध को अभिव्यक्त कर रहा है।

(४) अनिवर्तत इति—अनि + वृत् + लिङ् + ईट्, आर्षलिङ् अथवा समावनायाम् लिङ् है।

(५) कोपानुविद्धाम्—अनु + व्यध् + क्त + कर्मणि अनुविद्धः। कोपेन अनुविद्धाम् = कोपरञ्जिताम्।

(६) दुरात्मा—आत्मन् यहाँ बुद्धिपरक है। दुष्टः आत्मा यस्य इति दुर्बुद्धिः। यहाँ चाणक्य राक्षस के प्रति हार्दिक क्रोध प्रकट करते दीखता है। यद्यपि राक्षस कूटनीतिज्ञ है, फिर भी शत्रुपक्ष के अवलम्बन के कारण ही चाणक्य उसे ऐसा कहकर कोसता है।

कृतागा कौटिल्यो भुजग इव निर्याय नगरा-
यथा नन्दान्हत्वा नृपतिमकरोन्मौर्यवृषलम्।
तथाहं मौर्येन्दो: श्रियमपहरामीति कृतधी
प्रकर्षं मद्बुद्धेरतिशयितुमेष व्यवसित ॥ ११ ॥

विमला

अन्वय —कृतागा, कौटिल्य, भुजग, इव, नगरात्, निर्याय, यथा, नन्दान्, हत्वा, मौर्यवृषलम्, नृपतिम्, अकरोत्, तथा अहम्, मौर्येन्दो, श्रियम्, अपहरामि, इति, कृतधी, एष, मद्बुद्धे, प्रकर्षम्, अतिशयितुम्, व्यवसित ॥ ११ ॥

व्याख्या—कृतम्=आचरितम्, आग अपराध यस्मिन् तादृशः सन् (after being insulted), कौटिल्य चाणक्य (Chanakya), भुजग = सर्प (Snake), इव=यथा (like), नगरात्=कुसुमपुरात् (from the capital town), निर्याय= निर्गत्य (went out), यथा=येन प्रकारेण (as), नन्दान्=नवनन्दान् (the Nandas), हत्वा=विनाश्य (destroyed), मौर्यवृषलम्=चन्द्रगुप्तम् (Vrishala, son of Mura), नृपतिम्=राजानम् (a king), अकरोत्=व्यधात् (made), तथा=तेनैव प्रकारेण (so), अहम्=चाणक्य (I), मौर्येन्दो=चन्द्रगुप्तस्य, श्रियम्= राजलक्ष्मीम् (the sovereignty from the moon like maurya), अपहरामि= अपनयामि (wrench) इति=इत्थम् (like this) कृतधी = कृतनिश्चय (resol ved), एष =मम शत्रुभूत राक्षस (he), मद्बुद्धे=मन्मते (my own genius), प्रकर्षम्=श्रेष्ठताम् (excellence), अतिशयितुम्=अतिक्रमितुम् (is attempting), व्यवसित =तत्पर (to surpass) ॥ ११ ॥

हिन्दी—कौटिल्य का जब अपमान हुआ था, उसने एक कुचले गये साँप की तरह नगर से बाहर निकलकर नन्द का उन्मूलन कर दिया था और चन्द्रगुप्त को उसी जगह प्रतिष्ठित कर दिखाया था। उसी प्रकार—मैं चन्द्रगुप्त की राज्यलक्ष्मी को अपहृत करूँगा—इस प्रकार सोचने वाला यह राक्षस मेरी बुद्धि की उत्कृष्टता को लाँघने के लिए तत्पर है। ११ ॥

English—As Kautilya who being insulted, went out of the capital town like an molested snake, distroyed the Nandas and raised Vrishala, son of mura to the throne, so shall I wrench the fortune of the moon like maurya Thus resolved he is attempting to surpass the excellence of my own genius 11

टिप्पणी—(१) भुजग —भुजेन कुटिलगत्या गच्छतीति। भुज्+गम्+ड+कर्त्तरि प्रयोग है। भुजङ्ग और भुजङ्गम का सिद्धि खच प्रत्यय से होती है। 'भुजग इव' कहने का तात्पर्य यहाँ यह प्रतीत होता है कि जैसे कुचला हुआ साँप कुचलने वाले से अपना बदला लेकर ही दम लेता है। उसी प्रकार अपमानित कौटिल्य ने अपना बदला ही लेकर दम लिया।

(२) प्रकर्षम्—प्र+कृष्+घञ्+भावे प्रकर्ष तम्, प्रकर्षम्।

(३) अतिशयितुम्—अधि+शी+तुमुन्—उपसर्ग के कारण ही यहाँ सकर्मकत्व हुआ।

(आकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा ।) राक्षस राक्षस, विरम्यतामस्माद्दुर्व्यसनात् ।
उत्सिक्तः कुसचिवदृष्टराज्यभारो
नन्दोऽसौ न भवति चन्द्रगुप्त एषः ।
चाणक्यस्त्वमपि च नैव केवलं ते
साधर्म्यं मदनुकृतेः प्रधानवैरम् ॥ १२ ॥

---

(४) व्यवच्छिन्न—वि + अव + छिद् + क्त—कर्मणि प्रयोग है।

(५) आहरामि—यहाँ चाणक्य कथन का तात्पर्य प्रथम दो पंक्तियों में दो हैं—(१) नन्द का विनाश और (२) चन्द्रगुप्त को राजा बनाना।

(६) ईर्ष्यावश राक्षस 'अशक्तोऽहम् गृहारम्भे शक्तोऽहम् गृहभञ्जने' इस न्याय के अनुसार मौर्य का अपकार करने के लिए प्रयत्नशील है। उसकी इस धृष्टता पर चाणक्य का यह श्लोक परिहास है।

इस श्लोक में 'उपमा' अलङ्कार एवं शिखरिणी छन्द है।

विमर्श

[आकाशे = शून्ये (in the sky), लक्ष्यं बध्वा = (fixing his glance)], राक्षस-राक्षस = वीप्सायां द्विरुक्तिः भो राक्षस = हे सुबुद्धे (Rakshasa-Rakshasa), अस्माद् = अमुष्मात् (from this), दुर्व्यसनात् = दुष्टव्यापारात् = (vain pursuit), विरम्यताम् = निवृत्यताम् (stop).

अन्वयः—एष, चन्द्रगुप्तः, उत्सिक्तः, कुसचिवदृष्टराज्यभारः, असौ, नन्दः, न भवति, च, त्वमपि, चाणक्यः, नव, प्रधानवैरम्, केवलम्, ते, मदनुकृतेः, साधर्म्यम् ॥ १२ ॥

व्याख्या—एषः = अयम् (this one), चन्द्रगुप्तः = वृषलः (Chahdragupta), उत्सिक्तः = उद्धतः (haughty), कुसचिवदृष्टभार-कुसचिवैः = कुत्सितमन्त्रिभिः (by bad ministers), दृष्टः = सञ्चालितः (were managed), राज्यभारः = शासनकार्यम् (state affairs), यस्य तादृशः असौ = एषः (this), नन्दः नन्दाख्यः नृपः (king Nanda), न भवति = नास्ति (is not), च = पुनः (and), त्वमपि = त्व राक्षसोऽपि (you too), चाणक्यः = कौटिल्य (Chanakya), नव = नासीति (is not), प्रधानवैरम् = परिवृद्धद्वेष (enmity to the principal person), केवलम् = एकमात्रम् (only), ते = तव (your), मदनुकृतेः = ममानुकरणस्य (in imitation of myself), साधर्म्यम् = सादृश्यम् (point of resemblance). ॥ १२ ॥

हिन्दी—(आकाश की ओर टकटकी लगाकर) राक्षस, इस निष्फल प्रयास से रुक जाओ। घमंडी कुत्सित मन्त्रियों से सञ्चालित राज्यभार वाला वह नन्द—यह चन्द्रगुप्त नहीं है और तुम भी चाणक्य नहीं हो। इस प्रधान वैर का कारण केवल तुम्हारा मेरे अनुकरण का समानधर्म है ॥ १२ ॥

English—(Fixing his glance) Rakshasa, O Rakshasa stop from this vain pursuit —

This one is Chandragupta, not that howghty king Nanda whose affairs of state were managed by bad ministers You too are not

(विचिन्त्य ।) अथ वा नातिमात्रमत्र वस्तुनि मया मनः खेदयितव्यम् । कुतः—
मद्भृत्यैः किल सोऽपि पर्वतसुतो व्याप्तः प्रविष्टान्तरै-
रुद्युक्ताः स्वनियोगसाधनविधौ सिद्धार्थकाद्याः स्पशाः ।
कृत्वा संप्रति कैतवेन कलहं मौर्येन्दुना राक्षसं
भेत्स्यामि स्वमतेन भेदकुशलस्त्वेष प्रतीपं द्विषः ॥ १३ ॥

-certainly Chanakya, enmity to the principal person is the only point of resemblance in your imitation of myself 12

टिप्पणी—(१) दुर्व्यसनात्—व्यस्यते—क्षिप्यते अनेन इति—दुर्+वि+√अस्+ल्युट् करणे विभक्त्यादि कार्य, पुन -दुष्ट व्यसनम् दुर्व्यसनम् तस्मात् दुर्व्यसनात् । यहाँ—'जुगुप्सा-विरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्' इस वार्तिक से पचमी विभक्ति हुई है ।

(२) कुसचिवदृष्टराज्यभार —'कुसचिवैः दृष्ट राज्यभारो यस्य तादृश ' किन्तु राक्षस के लिए चाणक्य द्वारा प्रयुक्त यह शब्द यहाँ उचित प्रतीत नहीं होगा । क्योंकि स्वय चाणक्य ने प्रथम अङ्क के २३ वें श्लोक में नन्दमत्रियों की प्रशसा की है । इस श्लोक में नन्द मत्रियों को विक्रान्त, नयशालिन् और सुसचिव कहा गया है ।

(३) त्वमपि चाणक्य नैव—चाणक्य के इस कथन में उसकी नीति निपुणता एव क्षमता पर उसका अभिमान व्यक्त होता है ।

(४) साधर्म्यम्—सधर्म+ष्यञ्+विभक्ति कार्य से रूपसिद्धि ।

'उत्सिक्त' एव कुसचिव इन दो विशेषणों के साभिप्राय कथन से यहाँ परिकर अलङ्कार है । यह सादृश्यगर्भ के गम्यौपम्याश्रय वर्ग के अन्तर्गत विशेषण वैचित्र सम्बन्धी अलकार है । प्रकरण सम्बद्ध साभिप्राय विशेषण रहने के कारण यहाँ कथन का सौन्दर्य जहाँ एक ओर तर्कात्मक वृत्तिप्रधान प्रतीत होता है, वहीं दूसरी ओर विशेषणों का साभिप्राय कथन उपयुक्त अर्थ के अनुरूप सटीक बैठा है । इसका लक्षण काव्यप्रकाश में लिखा है—

'विशेषणैर्यत्साकूतैरुक्ति परिकरस्तु स '—का० प्र० १०।११८

इस श्लोक में 'प्रहर्षिणी' छन्द है । इसका लक्षण—'म्नाशाभिर्मनजरगा प्रहर्षिणीयम्'

विमला

[विचिन्त्य=विमृश्य (reflecting)], अथवा=किंवा (or), अत्रवस्तुनि=अस्मिन् राक्षसकर्तृकमौर्योन्मूलने (in this matter), मया=आत्मना (by me), अतिमात्रम्=अतिशयम् (too much), मनः=चित्तम् (mind), न=नहि (not), खेदयितव्यम्=क्षोभास्पद विधेयम् (need not be troubled), कुतः=(why) —

अन्वयः—प्रविष्टान्तरैः, मद्भृत्यैः, स, पर्वतसुत, अपि, व्याप्त, किल, सिद्धार्थकाद्या, स्पशा, स्वनियोगसाधनविधौ, उद्युक्ता, सम्प्रति, मौर्येन्दुना, कैतवेन, कलहम्, कृत्वा, एष, स्वमतेन, भेदकुशल, प्रतीपम्, राक्षसम्, हि, द्विष, भेत्स्यामि ॥ १३ ॥

व्याख्या—प्रविष्टान्तरैः=प्रविष्टम्=आयत्तीकृतम् अन्त =अन्त करणम् यस्त=वशीकृतशत्रुहृदयैः (gained heart), मद्भृत्यैः =मदनुचरैः (my servants), स = असौ (that), पर्वतसुत=मलयकेतु (The son of Parvataka) अपि=(also) व्याप्त=

परिवृत्तः (Circumvented), किल=निश्चये (indeed), सिद्धार्थकाद्याः=सिद्धार्थकप्रभृतयः (Sidharthaka and others), स्पशाः=गूढपुरुषाः (Spies), स्वनियोगसाधनविधौ स्वनियोगस्य=निजकर्मणः (their mission), साधनविधौ=निष्पादनविषये (in the matter of carrying out), उद्युक्ताः=तत्पराः (are engaged), सम्प्रति=अधुना (now), मौर्येन्दुना=चन्द्रगुप्तेन सह (with the moon like maurya), कैतवेन=व्याजेन (by my cunning causing), कलहम्=विवादम् (quarrel), कृत्वा=विधाय (do), एष=असौ (this), स्वमतेन=स्वबुद्ध्या (according to his own idea), भेदकुशलम्=भेदारोपणे प्रवीणम् (clever at alienation), प्रतीपम्=प्रतिकूलम् (opposite), राक्षसम् (Rakshasa), हि=निश्चयेन (indeed), द्विषः=शत्रोः (form the enemy), भेत्स्यामि=पृथक् करिष्यामि (I shall separate) ॥ १३ ॥

हिन्दी—(सोचकर) अथवा इस विषय में मुझे अपने मन को अत्यधिक दुःखी नहीं करना चाहिए। क्योंकि—

शत्रुओं के हृदय में प्रविष्ट मेरे अनुचरों के द्वारा वह पर्वतकपुत्र मलयकेतु भी घिरा है। निश्चय ही सिद्धार्थक प्रभृति गुप्तचर अपने कार्य को सम्पन्न करने में तत्पर हैं। सम्प्रति चन्द्रगुप्त के साथ बनावटी झगड़ा करके मैं अपनी बुद्धि से, फूट डालने में चतुर शत्रु राक्षस को अवश्य ही शत्रु अर्थात् मलयकेतु से अलग दूँगा ॥ १३ ॥

English—(Reflecting) Or my mind need not be troubled too much by me in this matter. For,—

That son of Parvata, has been circumvanted by my servants, who have gained his confidence; my spies, Sidhartharka and others are engaged in the matter of carrying out their mission. Clever at alienation as I am I shall now having falsely picked up a row with the moon-like maurya, in no time separate Rakshasa who is plotting against me and who, according to his own idea, is a master of the art of creating discord, from the enemy. 13.

टिप्पणी—(१) उद्युक्ताः—उद्+√युज्+क्त+विभक्ति कार्य से सम्पन्न रूप है। मूलतः 'युज्' धातु समाध्यर्थक दिवादिगणीय है। 'कर्तरि वर्तमाने' के अर्थ में यह अकर्मक धातु है।

(२) मौर्येन्दुना—'सहार्थे तृतीया' से तृतीया विभक्ति हुई है।

(३) मद्गूढैः—से यहाँ तात्पर्य है—भागुरायण प्रभृति गुप्तचरों से।

(४) एष भेत्स्यामि—इस बात का प्रतीक है कि चाणक्य को अपनी कौटिल्यनीति पर पूर्ण विश्वास है।

इस श्लोक में 'मौर्येन्दुना' यहाँ कर्मधारय एवं उपमिति समास द्वय की सम्भावना से जन्य किन्तु रूपक अलङ्कार जानना चाहिए। इसमें शार्दूलविक्रीडित वृत्त है जिसका लक्षण लिखा जा चुका है। गौडी रीति एवं ओज गुण है। ॥ १३ ॥

(प्रविश्य ।)

कञ्चुकी—कष्ट खलु सेवा—

भेतव्यं नृपतेस्तत· सचिवतो राज्ञस्ततो वल्लभा·
दन्येभ्यश्च वसन्ति येऽस्य भवने लब्धप्रसादा विटाः ।
दैन्यादुन्मुखदर्शनापलपनैः पिण्डार्थमायस्यत·
सेवा लाघवकारिणीं कृतधिय· स्थाने श्ववृत्तिं विदु· ॥ १४ ॥

विमला

[प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा (entering)]

कञ्चुकी—सेवा=परकीया परिचर्या (service), कष्ट खलु=क्लेशरूपैव (misery indeed)—

अन्वय·—नृपते, भेतव्यम्, तत, सचिवत, तत, राज्ञ, वल्लभात्, अन्येभ्य, च ये, लब्धप्रसादा, विटा, अस्य, भवने, वसन्ति । दैन्यात्, उन्मुखदर्शनापलपनै, पिण्डार्थम्, आयस्यत, लाघवकारिणीम्, सेवाम्, कृतधिय, स्थाने, श्ववृत्तिम्, विदु ॥ १४ ॥

व्याख्या—नृपते=राज्ञ (of the king), भेतव्यम्=शङ्कितव्यम् (to be afraid), तत=तदनन्तरम् (then), सचिवत=अमात्यात् (of his minister). तत=तदनन्तरम् (then), राज्ञ=नृपते (king's), वल्लभात्=प्रियजनात् (of his favourite), अन्येभ्य=एतद्व्यतिरिक्तेभ्य (of others), च=अपि (also), ये लब्धप्रसादा= प्राप्तानुग्रहा (gained favour), विटा=धूर्ता (pimps), अस्य=राज्ञ (king s), भवने=गृहे (in the palace), वसन्ति=निवसन्ति (dwell), दैन्यात्=दीनभावात् (From penury), उन्मुखदर्शनापलपनै=उन्मुखम्=उपग्रीवम्, दर्शनानि=अवलोकनानि (looking up), अपलपनानि=चाटुवचनानि (by his entreating), पिण्डार्थम्=ग्रासार्थम् (for bread), आयस्यत=क्लेशं कुर्वत (toiling), लाघवकारिणीम्=नीचत्वविधायिनीम् (imparts meanness), सेवाम्=शुश्रूषाम् (service), कृतधिय=विद्वास (learnedmen), स्थाने=युक्तमेव (rightly), श्ववृत्तिम्= कुक्कुरस्य जीविकाम् (dog's life) विदु=कथयन्ति (tell) ॥ १४ ॥

हिन्दी— (प्रवेश करके)

कञ्चुकी—सेवावृत्ति बड़ी दुःखदायिनी है ।

सर्वप्रथम राजा से डरना चाहिए, उसके बाद मन्त्री से, उसके बाद राजा के प्रियजनों से तदनन्तर दूसरे लोगों से भी जो धूर्त हैं, राजा के कृपापात्र हैं तथा राजभवन में निवास करते हैं। दीनतावश ऊपर मुख करके देखने तथा चाटुकारिताओं से उदरपूर्ति के लिए कष्ट उठाते हुए अनुचर को तुच्छ करने वाली सेवा को विद्वानों ने उचित ही कुत्ते की वृत्ति कहा है ॥ १४ ॥

English— (Entering)

Chamberlain—Service is indeed misery —

First of all a servant has to be afraid of a king, then of his minister, then of his favourite and also of others pimps who dwell in his palace having gained his favour Rightly the learned men

(परिक्रम्यावलोक्य च ।) इदमार्यचाणक्यगृहम् । यावत्प्रविशामि । (प्रविश्यावलोक्य च) । अहो राजाधिराजमन्त्रिणो विभूतिः । तथाहि—

उपलशकलमेतद्भेदकं गोमयानां
　　वटुभिरुपहृतानां बर्हिषां स्तूपमेतत् ।
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिराभि-
　　र्विनमितपटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम् ॥ १५ ॥

regard the service, which degrades a man, of one who from penury plods for bread by his entreating looks and mis-representation through helplessness as a dog's life. 14

टिप्पणी—(१) सेवा—'अमरकोश' के अनुसार 'सेवा श्ववृत्तिराख्याता' अर्थात् सेवा कुत्ते की वृत्ति की तरह है। अतः विद्वानों ने इसे अत्यन्त गर्हित मानकर बहिष्कृत किया है—"श्वनो वृत्तिः स्मृता सेवा गर्हितम् तद्विवर्जयेत्"

(२) उन्मुखदर्शनालापनै—उन्मुखम् मुखं यस्मिन् तद् उन्मुखम्, उन्मुखं यथा स्यात् तथा दर्शनम्—ऊपर की ओर मुख करके देखना, जैसे कुत्ते देखा करते हैं। इसी प्रकार अप्+लप्+ल्युट् भाव अपलपनम्—मिथ्याभाषण या चाटुकारिता है।

(३) स्थाने—यह एक अव्यय है, जिसका अर्थ ठीक या यथार्थ होता है।

(४) इस श्लोक में कञ्चुकी का निर्वेद वर्णित है। इसमें सेवा और कुक्कुरवृत्ति को समानवर्ण माना गया है। उदरभरण के लिए कुक्कुर और नौकर दोनों ही अपने स्वामी के सामने समान आचरण करते हैं।

इस श्लोक में सेवा की श्ववृत्ति सिद्ध करने के लिए उसका कारण वाक्य के अर्थ में दिया गया है। जिस प्रकार वर्णोत्कर्ष में कार्य और कारण का वर्णन होता है, उसी प्रकार उक्ति-वैचित्र्य के द्वारा इस श्लोक चमत्कारातिशय उत्पन्न किया गया है। अतः यहाँ काव्यलिङ्ग अलङ्कार है तथा इसमें शार्दूलविक्रीडित छन्द है। लक्षण—'सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।' छन्द का लक्षण लिखा जा चुका है। वैदर्भी रीति एवं प्रसाद गुण है।

विमला

[परिक्रम्य = परिक्रमां कृत्वा (going round), अवलोक्य = दृष्ट्वा (observing), च = पुनः (and)], इदम् = एतत् (this is), आर्यस्य=मान्यस्य (Noble), चाणक्यस्य= कौटिल्यस्य (Chanakya's) गृहम् = सदनम् (house), यावत् (let), प्रविशामि = प्रवेशं करोमि (enter), [प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (entering), च = पुनः (and), अवलोक्य=दृष्ट्वा (observing)], अहो = आश्चर्यम् (Oh), राजाधिराज (the king of kings), मन्त्रिणः = सचिवस्य (minister's), विभूतिः = ऐश्वर्यम् (affluence), तथा हि (Thus) —

अन्वयः—गोमयानाम्, भेदकम्, एतत्, उपलशकलम्, वटुभिः, उपहृतानाम्, बर्हिषाम्, एतत्, स्तूपम्, शुष्यमाणाभिः, आभिः, समिद्भिः, विनमितपटलान्तम्, जीर्णकुड्यम्, शरणम्, अपि, दृश्यते ॥ १५ ॥

तत्स्थाने खल्वस्य वृषलोद्यश्चन्द्रगुप्त इति । कुत —

व्याख्या—गोमयानाम् = करीषाणाम् (cow dung cakes), भेदकम् = विदारकम् (for breaking) एतत् (this), उपलशकलम् = प्रस्तरखण्डम् (a piece of stone), वटुभि = शिष्यै (by disciple), उपहृतानाम् = आनीतानाम् (brought), बर्हिषाम्=कुशानाम् (the holy Kusa grass), एतत् (this), स्तूपम्=समूह (a stack), शुष्यमाणाभि = शुष्यन्तीभि (for drying) आभि = पुरोवर्त्तिनीभि (appears), समिद्भि = यज्ञीयकाष्ठै (holy sticks), विनमितपटलान्तम् = विनमित = नम्रीभूत (bent down), पटलान्त = छदिप्रान्त (its roof), यस्य तादृशम्, जीर्णम्=विशीर्णम् (old) कुड्यम्=भित्ति (wall), यस्य तादृशम्, शरणम्= गृहम् (house), अपि (also), दृश्यते = अवलोक्यते (appears) ॥ १५ ॥

हिन्दी—(घूमकर और देखकर) यह आर्य चाणक्य का घर है। जब तक प्रवेश करता हू। (प्रवेश कर तथा देखकर) सम्राट् के मन्त्री की महिमा अद्भुत है। जैसे कि —

उपलों को तोडने वाला यह पत्थर का टुकडा है। शिष्यों के द्वारा लाये गये पवित्र कुशों का यह ढेर है। सूखती हुई समिधाओं से झुके हुए छप्पर के किनारे तथा फटी पुरानी दीवालों वाला यह सामने घर भी दिखलाई पड रहा है ॥ १५ ।

English—(Going round and observing), This is noble Chanakyas house Let me enter (entering and observing) Oh, the affluence of king of kings. Thus —

Here is a piece of stone for breaking cow dung cakes, here is a heap of Kusa grass brought by young disciples, the shed too is being seen with dilapidated 'walls and the corners of the roof bent down by there holy sticks exposed for drying 15

टिप्पणी—(१) उपलशकलम्—इससे यह सूचित होता है कि चाणक्य संयत एक वीतराग पुरुष है। क्योंकि उसके पास एक उपल भी पूरा नहीं, उसका टुकडा है। उपलस्य शकलम्—'उपलशकलम्'।

(२) उपहृतानाम्—उप + √हृ + क्त + षष्ठीबहुवचने विभक्तिकार्यम्।

(३) शरणम्—शृ + ल्युट् विभक्तिकार्यम्।

(४) विनमित—वि + नम् + णिच क्त कर्मणि विनमित।

(५) गोमयानाम्—गो पुरीषम् इति गो + मयट्, तेषाम्।

इस श्लोक में स्वभावोक्ति अलङ्कार है तथा मालिनी छन्द है। छ द का लक्षण—'ननमययुतेयम् मालिनीभोगिलोकै'

इस श्लोक में वैदर्भी रीति एव प्रसाद गुण है।

टिप्पणी

तत् = तस्मात् विभूतिनैरपेक्ष्यात् (Therefore), अस्य = प्रधानसचिवचाणक्यस्य (to him) देव = महाराज (sire), चन्द्रगुप्त (Chandragupta), वृषल = सुरागार्भोद्भवत्वात् वृषल इति (simply Vrishala), खलु = निश्चयेन (indeed), स्थाने=युक्तम् (right), कुत=for —

स्तुवन्ति श्रान्तास्याः क्षितिपतिमभूतैरपि गुणैः
प्रवाचः कार्पण्याद्यदवितथवाचोऽपि पुरुषाः।
प्रभावस्तृष्णायाः स खलु सकलः स्यादितरथा
निरीहाणामीशस्तृणमिव तिरस्कारविषयः ॥ १६ ॥

अन्वयः—अवितथवाचः, अपि, पुरुषाः, यत्, कार्पण्यात्, प्रवाचः, श्रान्तास्याः, अभूतैः, अपि, तद्गुणैः, क्षितिपतिम्, स्तुवन्ति, सः, खलु, सकलः, तृष्णायाः, प्रभाव, इतरथा, निरीहाणाम्, ईशः, तृणम्, इव, तिरस्कार,विषयः, स्यात् ॥ १६ ॥

व्याख्या—अवितथवाचः = सत्यवचनशीलाः (truthful speech), अपि (also), पुरुषाः = जनाः (men) यत् कार्पण्यात् = दैन्यात् (Through helplessness) प्रवाचः = वाचालाः (belaud) श्रान्तास्याः, श्रान्तम् = श्रमयुक्तम् (tired), आस्यम् = मुखम् (mouths), येषाम् तादृशाः, अभूतैः = अविद्यमानैः (unpossessed), अपि (also), तद्गुणैः = नृपतिविशिष्टतानिः (king's qualities), क्षितिपतिम् = नृपतिम् (to king), स्तुवन्ति = उपश्लोकयन्ति (praise), सः खलु = निश्चितम् (indeed), सकलः = सम्पूर्णः (all that), तृष्णायाः = धनलिप्सायाः (of desire), प्रभावः = महिमा स्यात् (is the might) इतरथा = अन्यथा (otherwise), निरीहाणाम् = धनतृष्णारहितानाम् (who are free from desire), ईशः = राजा (Lord), तृणम् = शष्पम् (grass), इव = यथा (like), तिरस्कारस्य = अनादरस्य (of disregard), विषयः = पात्रम् (an object), स्यात् = भवेत् (is) ॥ १६ ॥

हिन्दी—अतः इसके द्वारा महाराज चन्द्रगुप्त को वृषल कहा जाना उचित ही है। क्योंकि :-
जो इतना निस्पृह है उसके लिए बड़े भी राजे महाराजे तृण के समान हैं। अन्यत्र तो सर्वत्र तृष्णा का प्रभाव परिलक्षित होता ही है, क्योंकि बड़े-बड़े सत्यवादी और यशस्वी लोग मुँह की थकान तक का अनुभव नहीं करते—प्रत्युत दीनतावश वाचाल बने हुए—राजाओं की झूठी प्रशंसा के पुल बाँधते रहा करते हैं ॥ १६ ॥

English—But it is proper that to him Sire Chandragupta is only a Vrishal. For :—

That persons who speak the truth, indulge in words through helplessness and belaud the lord with mouths tired even for qualities, which he does not possess,—all that indeed the full power of desire. Otherwise to those, whose desire in gone completely a king is an object of disragerd like straw. 16

टिप्पणी—(१) वृषलेव—वृषल+इव+'इव' इति स्थिते' में ... प्रत्यय लगाकर बना सिद्ध रूप है। निस्पृह होने के कारण चन्द्रगुप्त को चाणक्य वृषल अर्थात् शूद्र नामक दासी-पुत्र से उत्पन्न के नाते 'वृषल' सम्बोधन करता है।

(२) अवितथवाच—तथ या तथा = सत्य, वितथ तथा अस्याः वितथा=असत्या, न वितथा = सत्य, तादृशी वाग्येषाम्, सत्यवचनशीलाः।

(३) सकलः—कलाभिः सह सम्पूर्णः।

(विलोक्य सभयम् ।) आये, तदयमार्यचाणक्यस्तिष्ठति ।

यो नन्दमौर्यनृपयोः परिभूय लोक-
मस्तोदयावदिशदप्रतिभिन्नकालम् ।
पर्यायपातितहिमोष्णमसर्वगामि
धाम्नातिशाययति धाम सहस्रधाम्नः ॥ १७ ॥

---

(४) तिरस्कार—तिरस्+कृ+घञ् भावे तिरस्कार या तिर कार—'तिरसोऽन्यतरस्याम्' से सिद्ध रूप है ।

(५) प्रभाव —प्रकृष्टो भाव प्रभाव प्रादित्व—यहाँ 'श्रणी भुवोऽनुपसर्गे' से घन् का निषेध हुआ है ।

सत्यवादियों के भी असत्य वचनों से राजस्तुति रूप विरुद्ध स्थिति के कारण 'विरोधाभास' अलकार है । फिर, राजे महाराजे तृण की तरह वीतराग व्यक्तियों के लिए हैं यहाँ 'इव' के साथ स्पष्टत उपमा अलकार है । अत इस श्लोक में विरोधाभास एव उपमा के सम्पर्क से 'ससृष्टि' नामक अलकार है । क्योंकि दोनों ही अलकार तिल तण्डुल की तरह एक दूसरे से मिले हैं । इसका लक्षण है—

'सेष्टा ससृष्टिरेतेषाम् भेदेन यदिह स्थिति ' का० प्र० ९१।१३९ ।

इसमें 'शिखरिणी' छन्द है, जिसका लक्षण पहले लिखा जा चुका है । इसमें वैदर्भी रीति एव प्रसाद गुण है ।

विमला

[विलोक्य = दृष्ट्वा (looking), सभयम्=भयेन सह (with awe)], अये=आश्चर्यम् (Ah), तदयम्=सचासावयम् (here), आर्य चाणक्य =श्रेष्ठविष्णुगुप्त (Honourable chanakya), तिष्ठति = वर्त्तते (is)

अन्वयः—य , लोकम्, परिभूय, नन्दमौर्यनृपयो , अप्रतिभिन्नकालम्, अस्तोदयौ, प्रतिदिशन्, असर्वगामि, पर्यायपातितहिमोष्णम्, सहस्रधाम्न', धाम, धाम्ना, अतिशाययति ॥ १७ ॥

व्याख्या—य =चाणक्य (who), लोकम् = नन्दामात्यादिकम् (the world), परिभूय = स्वनीत्या तिरस्कृत्य (defying) नन्दमौर्यनृपयो = नन्दच-द्रगुप्तराज्ञो (of the king Nanda and Marurya) अप्रतिभिन्नकालम् = एककालम् (the same time), अस्तोदयौ=नाशोन्नयने (the rise and fall of the kings), प्रतिदिशन्=कुर्वन् (directed), असर्वगामि = सर्वत्राप्रसरणशीलम् (which does reach all), पर्याय पातितहिमोष्णम्=पर्यायेण=क्रमश (by turns), पातितम्= प्रसारितम्, विनाशितम् वा (let down), हिमम्=शैत्यम् (cold), उष्णम्=आतपश्च (heat), येन तादृशम्, सहस्रधाम्न=सूर्यस्य (of the thou sand rayed Sun), धाम = तेज (splendour), धाम्ना = तेजसा (causes his glory), अतिशाययति= अतिक्रामति (to surpass) ॥ १७ ॥

हिन्दी—(देखकर भय के साथ) अरे ! यही वह आर्य चाणक्य बैठे हैं ।

(जानुभ्यां भूमौ निपत्य ।) जयत्वार्यः ।

चाणक्यः—वैहीनरे, किमागमनप्रयोजनम् ।

कञ्चुकी—आर्य, प्रणतससम्भ्रमोच्चलितभूमिपालमौलिमालामाणिक्यशकल-

जिसने लोक को तिरस्कृत कर, एक ही काल में नन्द तथा मौर्य दोनों राजाओं का क्रमशः अस्त एवं उदय करते हुए—सर्वत्र न पहुँच सकने वाले क्रमशः फैलाता है शीत और गर्मी को जिसने—ऐसे सहस्ररश्मि सूर्य के तेज को भी अपने तेज से जीत लिया है ॥ १७ ।

English—(Looking with awe) Ah ! here is his Honour Chanakya.

Who defying the world directed the same time, the rise and fall of the kings Maurya and Nanda and thus causes his glory to surpass the spendour of the thousand-rayed Sun which does not reach all and by whom heat and cold are let down in alternate succession. 17.

टिप्पणी—(१) तद्धाम—तत् च तत् धाम—यहाँ कर्मधारय समास है।

(२) लोकम्—यहाँ दो अर्थ हैं—सूर्य के पक्ष में संसार और चाणक्य के पक्ष में नन्दामात्यादि।

(३) परिभूय—परि+भू+ल्यप् विभक्त्यादि कार्य से सम्पन्न रूप।

(४) पर्याय—परि+आ+इ+अच् अथवा अय+घञ् भाव पर्यायः।

(५) हिमोष्णम्—हिमञ्च उष्णञ्च हिमोष्णम् अथवा हिमोष्णे—'विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि' से सिद्ध रूप।

(६) अतिशायितम्—अति+शी+णिच्+क्त विधि।

(७) धाम्ना—'अनुक्ते कर्तरि तृतीया' से यहाँ तृतीया विभक्ति हुई है।

इस श्लोक में व्यतिरेक अलङ्कार से उत्थापित अतिशयोक्ति अलङ्कार है। व्यतिरेक अलङ्कार में उपमान की अपेक्षा उपमेय के उत्कर्ष का वर्णन रहता है। इस इष्टार्थ प्रतिपादक श्लोक में श्लेषानुप्राणित चाणक्य के द्वारा अपने तेज से सूर्य के तेज को भी अतिक्रमित करने के कारण उपमान सूर्य की अपेक्षा उपमेय चाणक्य के तेज में अधिक उत्कर्ष दिखलाया गया है। अतः यहाँ व्यतिरेक अलङ्कार है। पुनः

इस श्लोक में चाणक्य के तेज को इस तरह बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया है कि वह यथार्थ की सीमा का उल्लङ्घन कर गया है। इसमें उपमान चाणक्य का तेज उपमेय सूर्य के तेज को निगल गया है। फलतः उपमान के द्वारा ही उपमेय सूर्य का ज्ञान होता है। अतः यहाँ व्यतिरेक उत्थापित अतिशयोक्ति अलङ्कार है। इसमें छन्द वसन्ततिलका है। लक्षण लिखा जा चुका है। इसमें पाञ्चाली रीति एवं ओज गुण है।

विमला

व्याख्या—जानुभ्याम् (with the knee), भूमौ (the ground), निपत्य (touching). आर्यः=मान्यः (noble sir), जयतु=विजयं लभस्व (let prosper).

चाणक्य—वैहीनरे (Vaihinari), आगमनप्रयोजनम्=आगमनकारणम् (object of your comming), किम् (what is).

कञ्चुकी—आर्य=मान्यः (noble sir), प्रणतिससम्भ्रमेति—प्रणता=कृतप्रणामाः

शिखापिशङ्गीकृतपादपद्मयुगलः सुगृहीतनामधेयो देवश्चन्द्रगुप्त आर्यं शिरसा प्रणम्य विज्ञापयति—'अकृतक्रियान्तरायमार्यं द्रष्टुमिच्छामि' इति ।

चाणक्यः—वृषलो मां द्रष्टुमिच्छति । वैहीनरे, न खलु वृषलश्रवणपथं गतोऽयं मत्कृतः कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधः ।

कञ्चुकी—आर्य, अथ किम् ।

चाणक्यः—(सक्रोधम् ।) आः, केन कथितम् ।

(after having saluted) (अतएव) ससंभ्रमेण= त्वरया (through haste) उच्चलितानि=जातकम्पानि (are shaken), यानि भूमिपालानाम्=राज्ञाम् (of kings), मौलिमालासु=चूडापंक्तिषु (on the crest), यानि माणिक्यशकलानि= रत्नखण्डानि (the pieces of rubies), तेषाम् शिखाभिः=किरणैः (by the rays), पिशङ्गीकृतम्=पिङ्गलीकृतम् (rendered brown), पादपद्मयुगलम्=चरण-कमलयुगलम् (couple of lotus feet), यस्य सः सुगृहीतनामधेयः=प्रातःस्मरणीय-नामधेयम् (auspicious name), यस्य सः देवः=महाराजः (sire), चन्द्रगुप्तः= वृषलः (Chandragupta), आर्यम्=भवन्तम् (to your Honour), शिरसा= उत्तमाङ्गेन, (with his head), प्रणम्य=प्रणिपत्य (having saluted), विज्ञापयति= निवेदयति (says), अकृतक्रियान्तरायम् अकृतः=अविहितः (without), क्रियायाम्= धार्मिककर्मणि (to daily rites), अन्तरायः=विघ्नः (interference), यस्य ताम्=आर्यम् द्रष्टुम्=प्रेक्षितुम् (to see), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish).

चाणक्य—वृषलः=चन्द्रगुप्तः (Chandragupta), माम्=चाणक्यम् (me), द्रष्टुम्=प्रेक्षितुम् (to see), इच्छति=वाञ्छति (wishes), वैहीनरे (Vaihinari), न खलु=किम् (it is not), अयम्=एष. (This), मत्कृतः=अस्मद्विहितः (by me), कौमुदीमहोत्सवः=शारदपूर्णचन्द्रनिमित्तकोत्सवः (Kaumudi festival), प्रतिषेधः= निषेधः (prohibition), वृषलश्रवणपथं गतः=चन्द्रगुप्तकर्णप्राप्तः (has reached the ears of Vrishala).

कञ्चुकी—आर्य=मान्यो भवान् (Noble sir), अथ किम्=एवमिति (It has), (yes).

चाणक्य—[सक्रोधम्=सकोपम् (in anger)], आः (Ha), केन (by whom), कथितम्=निवेदितम् (told).

हिन्दी—(दोनों घुटनों से भूमि पर गिरकर) आर्य की विजय हो ।

चाणक्य—वैहीनरे, कैसे आना हुआ ?

कञ्चुकी—आर्य, प्रणाम करने में शीघ्रतावश चञ्चल राजाओं के मुकुटों की पंक्ति पर स्थित रत्नों के टुकड़ों की किरणों से लाल पीला कर दिये गये हैं दोनों चरणकमल जिनके ऐसे प्रातः-स्मरणीय महाराज चन्द्रगुप्त आपको विनतमस्तक होकर निवेदन करते हैं कि—"यदि किसी कार्य में विघ्न न हो तो आपको देखना चाहता हूँ ।"

चाणक्य—वृषल, मुझको देखना चाहता है । वैहीनरि, कहीं इसके कान में तो यह खबर नहीं पड़ गयी कि कौमुदी महोत्सव पर यह रोक मैंने लगाई है ?

कञ्चुकी—आर्य और क्या ?

कञ्चुकी—(सभयम् ।) प्रसीदत्वार्य । स्वयमेव सुगाङ्गप्रासादगतेन देवेना-वलोकितमप्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवं पुरम् ।

चाणक्य —आ, ज्ञातम् । ततो भवद्भिरन्तरा प्रोत्साह्य कोपितो वृषल । किमन्यत् ।

(कञ्चुकी भय नाटयस्तूष्णीमधोमुखस्तिष्ठति ।)

चाणक्य —अहो, राजपरिजनस्य चाणक्योपरि प्रद्वेषपक्षपात । अथ क्व वृषल ।

कञ्चुकी—(भय नाटयन् ।) आर्य, सुगाङ्गगतेन देवेनाहमार्यपादमूलं प्रेषित ।

चाणक्य —(उत्थाय ।) सुगाङ्गमार्गमादेशय ।

कञ्चुकी—इत इत आर्य ।

(उभौ परिक्रामत ।)

चाणक्य—(क्रोध के साथ) हं, किसने कहा ?

English—(Falling on his knees)—Victory to you sir

Chanakya—Vaihinari, what is the object of your coming ?

Chamberlain—Sir, sire Chandragupta of blessed name, whose couple of lotus feet is rendered brown by the rays of the pieces of rubies on the crest of kings, shaken in the act of their hasty salutation, respectfully bows to your Honour and says—"I wish to see Noble preceptor without interference to his daily rites."

Chanakya—Chandragupta wants to see me ? Vaihinari, is it not, indeed, the prohibition of Kaumudi festival by me reached the ears of Chandragupta ?

Chamberlain—It has sir, (yes)

Chanakya—(In anger) Ha, by whom told.

विमला

व्याख्या—कञ्चुकी [सभयम्=भयेन सहितम् (in fright)], आर्य=मान्यो भवान् (noble sir), प्रसीदतु=प्रसन्नो भवतु (please), स्वयमेव=साक्षादेव (himself), सुगाङ्गप्रासादगतेन=सुगाङ्गनामधेयहर्म्यस्थितेन (sitting on the Sugang palace), देवेन=राज्ञा (sire), अवलोकितम्=दृष्टम् (saw), अप्रवृत्तम्=अनारब्ध (uncommenced), कौमुदीमहोत्सवम्=शरत्पूर्णचन्द्रमहोत्सवम् (Kaumudi fastival), पुरम्=कुसुमपुरम् (Kusumpura).

चाणक्य—आ=ईर्ष्यासूचकमव्ययम् (Ah), ज्ञातम्=अवगतम् (understand it), ततः=तदनन्तरम् (then), भवद्भि=युष्माभि (by you), अन्तरा=मध्ये (at this), प्रोत्साह्य=उद्दीप्य (incited), कोपितः=रोषितः (angered), वृषलः=चन्द्रगुप्त (Chandragupta)

[कञ्चुकी = (Chamberlain), भयम् = fear, नाटयन् = अभिनयन् (acting), तूष्णीम् = (in silence), अधोमुखः = (down with face), तिष्ठति = (stands)].

चाणक्य.—अहो = आश्चर्यम् (Oh), राजपरिजनस्य = नृपानुचरस्य (attendants of the king), चाणक्यस्योपरि = विष्णुगुप्तोपरि (towards Chanakya), प्रद्वेषपक्षपातः = विद्वेषे आसक्तिः (the side of hatred), अथ = वाक्यालङ्कारार्थकप्रयोगः (now), वृषलः चन्द्रगुप्तः (Vrishala), क्व = कुत्र वर्त्तते (where is).

कञ्चुकी —[भयम् = साध्वसम् (fear), नाटयन् = अभिनयन् (acting)], आर्यः = श्रीमान् (noble sir), सुगाङ्गप्रासादगतेन = सुगाङ्गहर्म्यस्थितेन (sitting on the Suganga palace), देवेन = राज्ञा (by the king), अहम् (I), आर्यपादमूलम् = भवच्चरणसमीपम् (your Honour's feet), प्रेषितः = प्रापितोऽस्मि (sent me).

चाणक्यः—[उत्थाय = (Rising)], सुगाङ्गमार्गम् = सुगाङ्गहर्म्यपथम् (the way of Suganga), आदेशय = दर्शय (lead)

कञ्चुकी—इतः इतः = अनेन मार्गेण (by this way), आर्यः = श्रीमान् (Your Honour).

[उभौ = द्वौ (both), प्रक्रामतः = walk on)]

हिन्दी—कञ्चुकी—(डरते हुए) आर्य, प्रसन्न हों। स्वयं महाराज ने सुगाङ्ग महल की छत से जाकर देखा कि नगर में कहीं भी कौमुदी महोत्सव नहीं मनाया जा रहा है।

चाणक्य—ओह, अब समझा ! तुम लोगों के द्वारा बीच में ही मेरे विरुद्ध चन्द्रगुप्त को भड़का कर क्रुद्ध कर दिया गया है। और क्या ?

(कञ्चुकी भय का अभिनय करता हुआ चुपचाप नीचे मुख किए खड़ा रहता है)

चाणक्य—अहो, राजा के परिजनवर्ग का चाणक्य के ऊपर द्वेष के विषय में पक्षपात है। अच्छा, अब बतलाओ वृषल कहाँ है ?

कञ्चुकी—(डरते हुए से) आर्य, मुझे तो महाराज ने सुगाङ्ग प्रासाद से यहाँ भेजा था।

चाणक्य—(उठकर) सुगाङ्ग का मार्ग बतलाओ।

कञ्चुकी—इधर से, इधर से, आर्य। (दोनों निकल जाते हैं)

English—*Chamberlain*—(in fright) please, Noble sir, sire, himself saw that the festival uncommenced in the town, when he went to the Suganga palace.

Chanakya—Ah, I understand it, Vrishala was incited and angered by you all, what else ?

(Chamberlain stands mute with face down cast acting fear)

Chanakya—Oh the feeling of hatred by the attendants of the king towards Chanakya ! Now where is Vrishala ?

Chamberlain—(*acting fright*) *sir, His majesty, who was in* the Suganga palace sent me to Your Honour's feet.

Chanakya—(Rising) Lead the way to Suganga.

Chemberlain—This way, this way, sir. (*Both walk on*).

कञ्चुकी—एष सुगाङ्गप्रसादः ।

चाणक्यः—(नाट्येनावरुह्यावलोक्य च ।) अये, सिंहासनमध्यास्ते वृषलः । साधु साधु ।

नन्दैर्वियुक्तमनपेक्षितराजराजैः ९७२
रध्यासितं च वृषलेन वृषेण राज्ञाम् ।

विमला

व्याख्या—कञ्चुकी—एषः=अयम् (this), सुगाङ्गम्=(Sugangam), प्रासादम्=हर्म्यम् (palace), शनैः=मन्दम् (slowly), आरोहतु=उपरि गच्छतु (let go up), आर्यः=श्रीमान् (noble sir).

चाणक्यः—[नाट्येन=अभिनयेन (acting), अवलोक्य=दृष्ट्वा (noticing)], अये=इदम् कोमलालापे सम्बोधनम् (ah), सिंहासनम्=नृपासनम् (on the throne), अध्यास्ते=अधितिष्ठति (is seated), वृषलः=मौर्यः (Vrishala), साधु साधु=(very good, very good).

हिन्दी—कञ्चुकी—यह सुगाङ्ग राजमहल है। आर्य, धीरे से ऊपर चढ़ें।

चाणक्य—(अभिनय के साथ चढ़कर और देखकर) अरे, वृषल सिंहासन पर बैठा है। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा।

Engilsh—*Chamberlain*—This is the Suganga palace. Let noble sir, gently go up.

Chanakya—(Acting ascent and noticing), Ah Vrishal is seated on the throne. Very good-very good.

टिप्पणी—(१) प्रणतिससम्भ्रमनमित्यादि—'प्रणतौ' प्रणामकरणे यः सम्भ्रमः त्वरा तेन 'समुच्चलितानि' जातप्रकम्पानि यानि 'भूमिपालानां मौलिषु' चूडासु स्थितानां 'मालानाम्' माणिक्यशकलानि 'रत्नखण्डानि तेषां शिखाभिः' किरणैः 'पिशङ्गीकृतम्' पिङ्गलीकृतम् 'पादपद्मयुगलं चरणारविन्दद्वयम् यस्य तादृशः' ये सारे चन्द्रगुप्त के विशेषण हैं। तात्पर्य यह कि सभी राजगण शीघ्रता से चन्द्रगुप्त को प्रणाम करना चाहते हैं। विनत राजाओं के शिरस्थित मुकुट के मणिमाणिक्यादि से निःसृत किरणों से चन्द्रगुप्त के दोनों चरणकमल लाल हो जाते हैं।

(२) अकृतक्रियान्तरायम्—तात्पर्य यह कि 'यदि किसी कार्य में विघ्न न हो तो' अन्तः=मध्ये, अयनम् इति-अन्तर+अय+घन् भावे अन्तरायः विघ्नः। क्रियायाः अन्तरायः। अकृतः क्रियान्तरायः येन तम्, यह आर्य का विशेषण है।

(३) अन्तरा—यह एक अव्यय है जिसका अर्थ है अवकाश, बीच में या अवसर पाकर।

(४) प्रोत्साह्य—प्र+उत्+सह्+णिच्+ल्यप्।

(५) विद्वेषपक्षपातः—विद्वेषे पक्षपातः=आसक्तिः कर्मधारय समास।

(६) सिंहासनम्—यहाँ 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' इस सूत्र से आधार को कर्मत्व प्राप्त है।

(७) अध्यास्ते—अधि+आस+लट् ते—अध्यास्ते।

विमला

अन्वयः—सिंहासनम्, अनपेक्षितराजराजैः, नन्दैः, वियुक्तम्, च, राज्ञाम्, वृषेण,

सिंहासनं सदृशपार्थिवसंगतं च
प्रीतिं परां प्रगुणयन्ति गुणा ममैते ॥ १८ ॥

वृषलेन, अध्यासितम्, सदृशपार्थिवसंगतम्, च, एते, गुणा, मम, पराम्, प्रीतिम्, प्रगुणयन्ति ॥ १८ ॥

व्याख्या—सिंहासनम्=नृपासनम् (The throne), अनपेक्षित =अनादृत (disregarded), राजराज=कुबेर (kubera), यै तादृशै नन्दै=नन्दनृपतिभि (from the Nandas), वियुक्तम्=विरहितम् (vacated), च=पुन (and), राज्ञाम्=नृपाणाम् (among kings), वृषेण=श्रेष्ठेन (the foremost), वृषलेन= चन्द्रगुप्तेन (by Vrishala), अध्यासितम्=अधिष्ठितम् (has been occupied), सदृश=अनुरूप (worthy), य=पार्थिव=राजा (the king), तेन संगतम्= युक्तम् (is joined), च=पुन (and), एते=उक्तास्त्रय (these), गुणा=व्यापारा (good occurrences), मम=चाणक्यस्य (me), पराम्=उत्कृष्टाम् (supreme), प्रीतिम्=प्रसन्नताम् (joy), प्रगुणयन्ति=जनयन्ति (produce). ॥ १८ ॥

हिन्दी—सिंहासन—कुबेर की भी परवाह नहीं करने वाले नन्दों से विछुड़ गया, तथा राजाओं में श्रेष्ठ चन्द्रगुप्त के द्वारा अधिष्ठित हुआ, और अपने अनुरूप राजा से युक्त भी हुआ है—ये गुण मेरी प्रसन्नता को अत्यधिक बढ़ा रहे हैं ॥ १८ ॥

English—The throne wrested from the Nandas, who disregarded even Kubera has been occupied by Vrishala the best of kings and it has been joined to a worthy king These virtues produce supreme satisfaction in me 18.

टिप्पणी—(१) सिंहासनमध्यासितम्—'अधिशीङ्स्थासां कर्म' से द्वितीया विभक्ति हुई। अधि+आस्+ते।

(२) सदृशपार्थिवसंगतम्—नन्द दुर्व्यसनी थे। यह राजसिंहासन उनसे वञ्चित हो गया था—राजोचित सभी गुणों से सम्पन्न चन्द्रगुप्त को पाकर आज सिंहासन भी धन्य है।

(३) प्रगुणयन्ति—प्रगुण+णिच् (नाम धातु)+अन्ति। प्रशस्तो गुण अस्मिन् इति प्रगुण।

(४) एते गुणा—ये तीन गुण—(क) नन्द से वियुक्त, (ख) चन्द्रगुप्त से युक्त (ग) उपयुक्त राजा से संयुक्त।

सिंहासन का उचित नृप के साथ संयोग प्रदर्शन के कारण यहाँ सम नामक अलङ्कार है। सम का अर्थ समान है। जहाँ दो अनुरूप पदार्थों के परस्पर योग्य सम्बन्ध का वर्णन हो वहाँ सम नामक अलङ्कार होता है। इस श्लोक में सामान्य अर्थ की किया के द्वारा उपमान को उपमेय में समता दिखलाई गयी है। सिंहासन एवं उसके अनुरूप राजा अर्थात् उपमेय तथा उपमान में सभी प्रकार से समता प्रदर्शित करने के लिए कवि ने उपमेय की उत्कर्षकारी विशेषताओं का उल्लेख किया है। मुख्यत यहाँ दो पदार्थों के स्थापनीय तत्त्वों में औचित्यपूर्ण समता प्रदर्शित की गयी है। अत यहाँ 'सम' नामक अलङ्कार है। इसका लक्षण है —

"समं योग्यतया योगो यदि संभावित क्वचित्" । का० प्र०

इसमें वसन्ततिलका छन्द है जिसका लक्षण है—

(उपसृत्य ।) विजयतां वृषलः ।

राजा—(आसनादुत्थाय ।) आर्य, चन्द्रगुप्तः प्रणमति । (इति पादयोः पतति ।)

चाणक्यः—(पाणौ गृहीत्वा ।) उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वत्स ।

आ शैलेन्द्राच्छिलान्तःस्खलितसुरनदीशीकरासारशीतात्
तीरान्तान्नैकरागस्फुरितमणिरुचो दक्षिणस्यार्णवस्य ।

'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' ।

इसमें वैदर्भी रीति एवं प्रसाद गुण है ।

विमला

[उपसृत्य = समीपम् गत्वा (approaching)], विजयताम् = विजय लभस्व (Let prosper), वृषलः = मौर्यः (Vrishala)

व्याख्या—राजा —[आसनात् = सिंहासनात् (from his seat), उत्थाय (rising)], आर्यः = श्रीमान् (Noble sir), चन्द्रगुप्तः = मौर्यः (Chandragupta), प्रणमति = प्रणामम् करोति (bows to you), [इति पादयोः = चरणयोः (at his feet), पतति (falls)]

चाणक्य —[पाणौ = करे (by the hand), गृहीत्वा = ग्रहणम् कृत्वा (taking up), उत्तिष्ठ-उत्तिष्ठ (arise, arise), वत्स = पुत्र (my child).

हिन्दी—(समीप जाते हुए) विजयी बनो वृषल ।

राजा—(सिंहासन से उठकर) आर्य, चन्द्रगुप्त प्रणाम कर रहा है (ऐसा कहकर पैरों पर गिरता है)

चाणक्य—(हाथों में लेकर) उठो, उठो बेटा ।

English—(Advancing) Prosperity to you, Vrishala !

King—(Rising from the throne) Venerable sir, Chandragupta bows unto you, (falls at his feet)

Chanakya—(Taking up by the hand) Arise, arise my son—

टिप्पणी—(१) विजयताम्—'विपराभ्यां जेः' से आत्मनेपद हुआ ।

(२) उपसृत्य—उप + सृ + क्त्वा, ल्यप् तुागम ।

विमला

अन्वयः—शिलान्तः, स्खलितसुरनदीशीकरासारशीतात्, आशैलेन्द्रात्, नैकरागस्फुरितमणिरुचः, दक्षिणस्य, अर्णवस्य, तीरान्तात्, आगत्य, आगत्य, भीतिप्रणतनृपशतैः, तव, चरणयुगस्य, अङ्गुलीरन्ध्रभागाः, शश्वत्, एव, चूडारत्नांशुगर्भाः, क्रियन्ताम् ॥ १९ ॥

व्याख्या—शिलान्त स्खलितेति—शिलानाम् = प्रस्तरखण्डानाम् (rocks), अन्तः = मध्ये (among), स्खलिता = विशीर्णा (dropped down), या सुरनदी = गङ्गा (celestial river), तस्याः शीकराः = जलकणाः (spray), तेषाम् आसारः =

आगत्यागत्य भीतिप्रणतनृपशतैः शश्वदेव क्रियन्तां
चूडारत्नांशुगर्भास्तव चरणयुगस्याङ्गुलीरन्ध्रभागाः ॥ १९ ॥

निरन्तरवर्षणम् (the showers) तेन शीतात् = शीतलात् (cooled) आ शैलेन्द्रात् = अहिमालयात् (from the lord of mountains), नैकरागेति—न एका नैका = बहुविधाः (diverse), रागाः=वर्णाः (colours), यासां ताः स्फुरितानाम्=प्रकाशमानानाम् (flashing), मणीनाम्=रत्नानाम् (with gems), रुचः = कान्तयः (having lustres), यस्मिन् तादृशस्य, दक्षिणस्य दक्षिणदिग्वर्त्तिनः (the southern), अर्णवस्य=समुद्रस्य (ocean), तीरान्तात् = तटसमीपात् (of the shores), आगत्य आगत्य=पौनःपुन्येन समेत्य (coming again and again), भीत्या= भयेन, (in awe), प्रणतानि = प्रणामार्थं नम्रीभूतानि (bow), नृपशतैः = राजसमूहैः (by hundreds of kings) तव=चन्द्रगुप्तस्य (Your Honour), चरणयुगस्य= पादयुगलस्य (feet), अङ्गुलीनाम् = चरणशाखानाम् (toes), रन्ध्रभागाः = छिद्रप्रदेशाः (between the hole) शश्वदेव=सर्वदैव (always), चूडारत्नानाम्=मुकुटस्थितमणीनाम् (gems on crest), अंशवः=किरणाः (the luster), गर्भे= अन्तराले (an inner apartment), येषाम् तादृशाः, क्रियन्ताम्-विधीयन्ताम् (may perform)

हिन्दी—शिलाखण्डों के बीच में गिरी हुई गङ्गा के जलशीकरों की निरन्तर वर्षा से शीतल बने हिमालय से लेकर—विभिन्न वर्णों से रञ्जित रत्नादि की किरणों से देदीप्यमान दक्षिण समुद्रतटों से—आ आ कर, भय से नतमस्तक राजाओं के मुकुटमणियों की कान्ति से सवदा तुम्हारे दोनों चरणों की अंगुलियों के छिद्रांश भरते रहें ॥ १९ ॥

English—May hundred of kings coming again and again from the lord of hills cooled by the showers of spray of the celestial river Ganga playing about among its rocks, as well as from the shores of the southern ocean having lustres of gems shining in diverse colours, bow to your feet in awe and ever make the interstices of the toes of your feet filled with the lustre of the gems on their crest. 19

टिप्पणी—(१) अनुग्राहयितुम्—अनु + ग्रह् + णिच् + तुमुन् ।

(२) उपालब्धुम्—उप् + आङ् + लभ् + तुमुन् ।

(३) नियुक्ता—नि + √युज + क्त + विभक्तिकार्यम् ।

(४) शैलेन्द्रात्—शैलानाम् इन्द्र लक्षणया राजा शैलेन्द्र हिमालय' तस्मात् शैलेन्द्रात् 'पञ्चम्यपाङ्परिभिः' इस सूत्र से आङ् के योग में पञ्चमी विभक्ति हुई है।

(५) नैकराग—न एक नैक नञर्थेन नशब्देन 'सुप्सुपा' से यहाँ समास हुआ है। नैकश्च नैकश्च नैकश्च में एकशेष समास है।

(६) क्रियन्ताम्—यहाँ आशीर्वाद के अर्थ में 'आशिषि लिङ्लोटौ' से लोट् लकार है।

(७) चूडारत्नांशुगर्भा—गङ्गादिका आकृतिगण में रहने के कारण सतम्यन्तगर्भ शब्द का पर निपात हुआ है।

राजा—आर्यप्रसादादनुभूयत एव सर्वम् । तदुपविशत्वार्यः ।

(उभौ यथोचितमुपविष्टौ ।)

चाणक्य—वृषल, किमर्थं वयमाहूताः ।

राजा—आर्यस्य दर्शनेनात्मानमनुग्राहयितुम् ।

चाणक्यः—(सस्मितम् ।) अलमनेन प्रश्रयेण । न निष्प्रयोजनमधिकारवन्तः प्रभुभिराहूयन्ते ।

राजा—आर्य, कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य किं फलमार्यः पश्यति ।

चाणक्यः—(स्मितं कृत्वा ।) उपालब्धुं तर्हि वयमाहूताः ।

इस श्लोक में कुमुदिनियों की कान्ति से चन्द्रकिरणों के विकास का करना—एक के गुण से दूसरे के गुणों का पुष्टि के कारण 'उल्लास' नामक अलङ्कार है। लक्षण यथा—'एकस्य गुणदोषाभ्याम् उल्लासोऽन्यस्य तौ यदि ।' कुवलयानन्द—१३३, छन्द स्रग्धरा है—लक्षण लिखा जा चुका है।

विमला

व्याख्या—राजा—आर्यप्रसादात्=भवतोऽनुग्रहात् (through the favour of your sir), सर्वम्=सकलम् (all), अनुभूयत एव=प्राप्यत एव (is being already enjoyed), तत्=इति शेषः (so), आर्यः=श्रीमान् (Your Honour), उपविशतु=आस्ताम् (may sit down), [उभौ=द्वौ (both), यथोचितम् (according to rank), उपविष्टौ (sit down)]

चाणक्य—वृषल=मौर्य (*Vrishala*), किमर्थम्=किंनिमित्तमुद्दिश्य (*why did*), वयम् (we), आहूताः (have been summon)

राजा—आर्यस्य=पूज्यस्य (your Honour's), दर्शनेन=निरीक्षणेन (with sight), अनुग्राहयितुम्=प्रसन्नतास्पदम् कर्तुम् (to bless), आत्मानम्=जीवम् (myself)

चाणक्य—[सस्मितम्=हास्ययुतम् (with a smile)], अनेन=एतेन (with this), प्रश्रयेण=विनयेन (humility), अलम्=व्यर्थम् (away), प्रभुभिः=राजभिः (by the kings), अधिकारवन्तः=कार्यकारिणः (officers), निष्प्रयोजनम्=निर्हेतुकम् (without purpose), नाहूयन्ते=नाकार्यन्ते (are not summoned).

राजा—आर्य (noble sir), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य (in forbidding the Kaumudi festival), किम् फलम्=किं परिणामम् (what benefit), आर्यः=भवान् (Your honour), पश्यति (see) ?

चाणक्य—[स्मितं कृत्वा=with smile)], तर्हि=तदा (then), वयम् (we), उपालब्धुम्=तिरस्कर्तुम् (for censure), आहूताः=आकारिताः (has been summoned).

हिन्दी—राजा—आर्य का कृपा से सब कुछ अनुभव किया जा रहा है। तो आर्य बैठें। (दोनों यथायोग्य बैठ गये)।

राजा—शान्त पापं शान्तं पापम् । नहि नहि । विज्ञापयितुम् ।

चाणक्यः—यद्येव तर्हि विज्ञापनीयानामवश्यं शिष्येण स्वैररुचयो न निरोद्धव्याः ।

राजा—एवमेतत् । कः सदेहः किंतु न कदाचिदार्यस्य निष्प्रयोजना प्रवृत्तिरित्यस्ति नः प्रश्नावकाशः ।

चाणक्यः—वृषल, सम्यग्गृहीतवानसि न प्रयोजनमन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टत इति ।

चाणक्य—वृषल, हमें बुलाया किस लिये था ?

राजा—आर्य के दर्शन से अपने को अनुगृहीत करने के लिए ।

चाणक्य—(मुस्कुराहट के साथ) रहने दो इस विनय प्रदर्शन को । राजे अपने अधिकारियों को बेमतलब नहीं बुलाया करते ।

राजा—आर्य, कौमुदी महोत्सव पर रोक लगाने में आपका क्या अभिप्राय था ?

चाणक्य—(मुस्कुराकर) तो उलाहना देने के लिए हम बुलाये गये हैं ?

English—*King*—Through Your Honour's favour all this is being already enjoyed please let sir sit down. (Both are accordingly seated).

Chanakya—Vrishala, why did you summon me ?

King—To bless myself with Your Honour's sight.

Canakya—(With a smile) Away with this humility. Officers are not summoned by the kings without any purpose.

King—Your honour, what benefit does noble sir see in forbidding [the Kaumudi festival ?

Chanakya—(With smile) You have then summoned me for censure ?

विमला

व्याख्या—राजा—शान्तम् पापम् (begone sin), शान्तम् पापम् (begone sin), नहि, नहि (no, not at all), विज्ञापयितुम् (only for representation),

चाणक्य—यदि = यदा (if), एवम् (so), तर्हि=तदा (then), विज्ञापनीयानाम्= गुरूणाम् (to whom those representation is to be made), अवश्यम्= निश्चयम् (indeed), शिष्येण=अन्तेवासिना (by a pupil), स्वैररुचयः = स्वतन्त्रेच्छा (uncontrolled tastes), न = नहि (not), निरोद्धव्या =व्याहन्तव्याः (*to be checked*).

राजा—एवमेतत् (it is so), कः सन्देह (no doubt), किन्तु (but), न कदाचित् (never), आर्यस्य (preceptor's), निष्प्रयोजना = निर्हेतुका (aimless), प्रवृत्तिः (tendency), इति = एवं, नः = अस्माकम् (our), प्रश्नावकाशः अस्ति = पृच्छावसरः अस्ति (is scope for question).

राजा—आर्य, अत एव शुश्रूषा मां मुखरयति।

चाणक्यः—वृषल, श्रूयताम्। इह खल्वर्थशास्त्रकारास्त्रिविधां सिद्धिमुपवर्णयन्ति—राजायत्तां सचिवायत्तामुभयायत्तां चेति। ततः सचिवायत्तसिद्धेस्तव किं प्रयोजनान्वेषणेन। यतो वयमेवात्र नियुक्ता वेत्स्यामः।

(राजा सकोपं मुखं परावर्तयति।)

(नेपथ्ये वैतालिकौ पठतः।)

चाणक्यः—वृषल (Vrishala), सम्यक्=साधु (rightly), गृहीतवानसि=अवगतवानसि (have understood), प्रयोजनम्=कार्यम् (aim), अन्तरा=अनवेक्षमाणः (without), चाणक्यः=विष्णुगुप्तः (Chanakya), स्वप्नेऽपि=निद्रायामपि (even in a dream), न चेष्टते=नोद्युङ्क्ते (dose not stir).

हिन्दी—राजा—पाप शान्त हो, पाप शान्त हो। नहीं नहीं, मात्र निवेदन करने के लिए।

चाणक्य—यदि ऐसा है तो गुरुओं की स्वच्छन्द प्रवृत्तियाँ शिष्यों द्वारा नहीं रोकी जानी चाहिए।

राजा—बात ऐसा ही है। इसमें सन्देह क्या? किन्तु, आर्य का कोई भी कार्य निष्प्रयोजन नहीं हो सकता है। अतः प्रश्न का अवकाश था।

चाणक्य—वृषल, तुमने ठीक ही समझा है। प्रयोजन के बिना तो चाणक्य स्वप्न में भी कोई चेष्टा नहीं करता है।

English—*King*—Begone sin! Begone sin! No not at all, only for representation.

Chanakya—If so, then uncontrolled tastes of those to whom the representation is to be made, by no means to be checked by a pupil.

King—It is so, no doubt. But your honour never does a thing aimlessly. So there is scope for my question.

Chanakya—Vrishala, you hove understood it rightly, without an aim, Chanakya does not stir even in a dream.

विमला

व्याख्या—राजा—आर्य=मान्यो भवान् (Noble sir), अतएव (for this), माम् (makes me), शुश्रूषा=श्रवणेच्छा (desire to hear), मुखरयति=वक्तुं प्रवर्त्तयति (speak).

चाणक्य—वृषल=मौर्य (Vrishala), श्रूयताम्=आकर्ण्यताम् (listen), इह=अस्मिन् लोके (in the world), खलु=निश्चयेन (indeed), अर्थशास्त्रकाराः=नीतिशास्त्रप्रणेतारः (writers on politics), त्रिविधाम्=त्रिप्रकाराम् (three forms), सिद्धिम् (administration), उपवर्णयन्ति=ब्रुवन्ति (mention), राजायत्ताम्=नृपाधीनाम् (resting with the king), सचिवायत्ताम्=अमात्याधीनाम् (resting

with the ministers), उभयायत्ताम्=राज्ञ मन्त्रिणश्चाधीनाम् (that dependent upon both), ततः=तत्पश्चात् (then), तव=भवत (your), सचिवायत्तसिद्धे=अमात्याधीनोपपत्ते (who depend upon your minister), अन्वेषणेन=जिज्ञासया (inquiring), किम् प्रयोजनम् (what is the reasons), यत (for), वयमेव (alone I), अत्र=अस्मिन् विषये (In this matter), नियुक्ता वास्यामः=कार्यानुगुण्येन वर्तिष्यामहे (employed will act)

राजा—[सकोप इव=सक्रोध इव (as if in anger), मुखम्=आननम् (face) परावर्तयति=अन्यतो नयति (turns away)]

[नेपथ्ये=(in the dressing room), वैतालिकौ (two bards), पठत (sing)]

हिन्दी—राजा—आय इसीलिये सुनने की इच्छा मुझको वाचाल बना रही है।

चाणक्य—वृषल सुनो। इस ससार में अर्थशास्त्रकार तीन प्रकार की सिद्धि का वर्णन करते हैं। (१) राजा के अधीन, (२) मन्त्री के अधीन और (३) दोनों के अधीन। मन्त्री के अधीन सिद्धि के विषय में तुम्हारा प्रयोजन को खोजने से क्या लाभ ? क्योंकि हम ही इस विषय म नियुक्त हुए जानेंगे।

राजा—(राजा क्रोध के साथ मुँह को घुमा लेता है)

(नेपथ्य में वैतालिक पढते हैं)

English—*King*—Venerable sir, for this very reason, a desire to hear makes me garrulous

Chanakya—Vrishala, listen, in this matter Writers on politics speak of three kinds of administration in this world—(1) resting with king, (ii) resting with the ministers, (iii) resting with both What have you, then who depend upon your minister, to do with inquiring into reasons of a thing ? For we ourselves, Officer in the matter shall know

King—(Turns away his fece in anger)

(Two bards sing in dressing room)

टिप्पणी—(१) अनुग्राहयितुम्—अनु+ग्रह्+णिच्+तुमुन्।

(२) उपालब्धुम् उप्+आङ्+लभ्+तुमुन्।

(३) विज्ञापयितुम्—वि+ज्ञा+णिच्+तुमुन्।

(४) अन्तरा—अव्यय है—इसका दो अर्थ है—बीच में और विना।

(५) नियुक्ता —नि+युज्+क्त+विभक्ति कार्य।

(६) प्रश्रयेण—प्र+श्रि+अच् भावे—प्रश्रयेण।

(७) शुश्रूषा—श्रोतुमिच्छा इति श्रु+ +सन्+अ, भावे स्त्रियाम्।

(८) मुखरयति—मुखमस्ति अस्य महत् इति मुख+र मत्वर्थे वाचाल। मुखर करोतीति मुखर+णिच् (नामधातु)+लट्+तिप्।

(९)—राजायत्ताम्—आ+यत्+क्त=आयत्ता राज्ञ आयत्ता राजायत्ता।

एकः—

आकाशं काशपुष्पच्छविमभिभवता भस्मना शुक्लयन्ती
शीतांशोरंशुजालैर्जलधरमलिनां क्लिश्नती कृत्तिमैभीम्।
कापालीमुद्वहन्ती स्रजमिव धवलां कौमुदीमित्यपूर्वा
हास्यश्रीराजहंसा हरतु तनुरिव क्लेशमैशी शरद्वः॥ २०॥

विमला

शिवपक्षे—

अन्वयः—काशपुष्पच्छविम्, अभिभवता, भस्मना, आकाशम्, शुक्लयन्ती, शीतांशोः अंशुजालैः, जलधरमलिनाम्, ऐभीम्, कृत्तिम्, क्लिश्नती, कौमुदीम्, इव, धवलाम् कापालीम्, स्रजम्, उद्वहन्ती, हास्यश्रीराजहंसा, अपूर्वा, शरद् इव, ऐशी, तनुः, वः, क्लेशम्, हरतु॥ २०॥

व्याख्या—काशपुष्पच्छविम्—काशपुष्पाणाम् = काशप्रसूनानाम् (of the Kasa flower), छविम् = कान्तिम् (the lustre), अभिभवता = तिरस्कुर्वता (that surpasses the brightness of Kasa flower), भस्मना = भूत्या (with ashes), आकाशम् = गगनम् (the sky), शुक्लयन्ती = श्वेतयन्ती (whitening), शीतांशोः = चन्द्रस्य (of the moon), अंशुजालैः = किरणसमूहैः (the mass of rays), जलधरः = पयोदः (a cloud), इव = यथा (like), मलिना = कृष्णा (dark), ताम्—ऐभीम् = गजसम्बन्धिनीम् (the elephant's), कृत्तिम् = चर्म (skin), क्लिश्नती = क्लिश्यन्ती (tramsforming or injuring), कौमुदी = चन्द्रिकाम् (moon beam), इव = यथा (like), धवलाम् = शुभ्राम् (white), कापालीम् = नरमुण्डसम्बन्धिनीम् (to skulls), स्रजम् = मालाम् (garland), उद्वहन्तीम् = धारयन्तीम् (bearing), हास्यश्रीराजहंसा—हासस्य = ताण्डवोचितचाट्टहासस्य (laughs of), श्री = शोभा (beauteous), राजहंसी = राजहंसपंक्तिः (series of swans), इव = यथा (like), यस्याम् तादृशी अपूर्वा = अद्भुता (unusually), शरदिव = शरद्कालइव (like the autumnal season), ऐशीम् = शिवस्य (lord Shiva's), तनुः = मूर्त्तिः (the body), वः = युष्माकम् (your), क्लेशम् = सन्तापम् (trouble), हरतु = अपनयतु (remove) ॥ २० ॥

हिन्दी—काशपुष्प की धवलता को भी तिरस्कृत करने वाली, भस्म से आकाश को श्वेत करती हुई, चन्द्रमा की किरणों के समूह से मेघ के समान मलिन वर्ण वाले गजचर्म को विवर्ण करती हुई चन्द्रिका के समान श्वेत नरमुण्डों की माला को धारण करती हुई राजहंसों के समान अट्टहास की शोभावाली, अद्भुत शरद् ऋतु की तरह भगवान् शिव की मूर्त्ति आपके कष्टों को नष्ट करे॥ २०॥

English—May the lord Shiva's body remove your troubles—the person whitening the sky with ashes that dim the lustre of Kasa flowers; with the mass of rays of the moon transforming the elephant's skin which is dark as a pouring cloud, bearing a

garland of white skulls like moon beam, laughs of which the lustre of is like that of series of swans, and which is thus like the unusual autumnal season 20

शरत्पक्षे —

अन्वयः—भस्म, अभिभवन्त्या, काशपुष्पच्छुवा, आकाशम्, शुक्लयन्ती, शीतांशो अंशुजालैः, ऐभीम्, कृत्तिम्, जलधरमलिनाम्, क्लिश्नती, कापालीम्, स्रजम्, इव, धवलाम्, कौमुदीम्, उद्वहन्तीम्, हास्यश्रीराजहंसा, अपूर्वा, ऐशी, तनु, इव, शरद्, व, क्लेशम्, हरतु ॥ २१ ॥

व्याख्या—भस्म = भूतिम् (ashes), अभिभवन्त्या = तिरस्कुर्वन्त्या (having defeated), काशपुष्पच्छुवा = काशकुसुमकान्त्या (with the lustre of Kash flowers), आकाशम् = गगनम् (the sky), शुक्लयन्ती = भासयन्ती (whitening), शीतांशो = चन्द्रस्य (the moon's), अंशुजालै = किरणसमूहै (with the mass of rays), ऐभीम् = गजसम्बन्धिनीम् (the elephant's), कृत्तिम् = चर्म (hide), इव = यथा (like) जलधरमलिनाम् = पयोदमलिनताम् (dark like cloud), क्लिश्नती = विनाशयन्ती (injuring), कापालीम् = कपालनिर्मिताम् (of skulls), स्रजमिव = मालामिव (like garland), धवलाम् = शुभ्राम् (white), कौमुदीम् = चन्द्रिकाम् (moon light), उद्वहन्तीम् = धारयन्तीम् (bearing), हास्यश्रीरिव राजहंसा यस्यां तादृशी = (displaying its swans like beauteous smiles), अपूर्वा = लोकोत्तरा (unusually), ऐशी = ईशसम्बन्धिनी (lord Shiva's), तनुरिव = मूर्त्तिरिव (like the body), शरद् (the Autumnal season), व = युष्माकम् (your), क्लेशम् = कष्टम् (trouble), हरतु = दूरीकरोतु (remove), ॥ २० ॥

प्रथम वैतालिक—

हिन्दी—भस्म को तिरस्कृत करने वाली काश के फूलों की छवि से आकाश को धवल बनाती हुई, चन्द्रमा की किरणों के समूह से गजचर्म के समान मेघों की मलिनता को नष्ट करती हुई, नरमुण्डों की माला के शुभ्र चाँदनी को धारण करती हुई, हास्य की शोभा के समान राजहंसों की पंक्तिवाली, शिव की मूर्ति की तरह यह अद्भुत शरद् ऋतु आपके कष्ट को दूर करे । २० ॥

English—First Bard —

Whitening the sky with its ashen hue that surpasses the brightness of Kasa flowers, counteracting the impression of the elephant hide like space dark with clouds by means of the streaming rays of the moon, bearing the bright moon light like a white garland of skulls and displaying its swans like beauteous smiles may the Autumnal season, thus unusually accoutred, like the body of lord Shiva, remove your trouble 20

अपि च।

> प्रत्यग्रोन्मेषजिह्मा क्षणमनभिमुखी रत्नदीपप्रभाणा-
> मात्मव्यापारगुर्वी जनितजललवा जृम्भितैः साङ्गभङ्गैः।
> नागाङ्कं मोक्तुमिच्छोः शयनमुरु फणाचक्रवालोपधानं
> निद्राच्छेदाभिताम्रा चिरमवतु हरेर्दृष्टिराकेकरा वः॥ २१॥

टिप्पणी—(१) वैतालिकौ—विविधं अनेकं तालं वितालं तेन चरति इति—इस विग्रह में ठक् प्रत्यय 'ठ' को इकादेश विभक्त्यादि कार्य के बाद वैतालिक। इसके द्विवचन में वैतालिकौ। इन दोनों में प्रथम चाणक्य का प्रतिनिधि है और दूसरा राक्षस द्वारा प्रेषित 'स्तनकलश' है।

(२) शुक्लयन्ती—शुक्लं करोतीति शुक्ल+णिच्+शतृ पुनः ङीप्।

(३) इभः गजः तस्य इदम् इस विग्रह में अण् प्रत्यय आदि अच् की वृद्धि विभक्त्यादि कार्य से सम्पन्न रूप ऐभीम्। यह गजासुर का चर्म है जिसे ताण्डव नृत्य के समय शङ्कर धारण करते हैं।

(४) हास्यश्रीराजहंसा—हास्यस्य श्रीः हास्यश्रीः राजहंस इव, धवलिमनिर्मलत्वात् सः अस्ति अस्याम् इति हास्यश्रीराजहंस+अच् मत्वर्थे। शरद् आते ही राजहंस मानसरोवर से लौट आते हैं।

(५) यह श्लोक श्लिष्ट है। इसका एक अर्थ शङ्कर के पक्ष में तथा दूसरा अर्थ शरद् ऋतु के पक्ष में है।

इस श्लोक में उपमा अलङ्कार एवं स्रग्धरा छन्द है।

विमला

अन्वयः—फणाचक्रवालोपधानम्, उरु, नागाङ्कम्, शयनम्, मोक्तुम्, इच्छोः, हरेः, प्रत्यग्रोन्मेषजिह्मा, क्षणम्, रत्नदीपप्रभाणाम्, अनभिमुखी, साङ्गभङ्गैः, जृम्भितैः, जनितजललवाः, आत्मव्यापारगुर्वी, निद्राच्छेदाभिताम्रा, आकेकरा, दृष्टि, वः, चिरम्, अवतु॥ २१॥

व्याख्या—फणाचक्रवालोपधानम् = स्फटामण्डलोपबर्हम् (the group of hoods for the pillow), उरु=महत् (the wide), नागाङ्कम्=भुजगश्रेष्ठरूपम् (of the Serpent's body), शयनम्=शय्याम् (bed), मोक्तुम्=त्यक्तुम् (of leaving), इच्छोः=अभिलषतः (desirous), हरेः=विष्णोः (of Hari), प्रत्यग्रोन्मेषजिह्मा=नवोन्मीलनालसा (dull from recent opening), क्षणम्= किञ्चित्कालम् (for the moment), रत्नदीपप्रभाणाम्=मुक्तामणिरत्नस्पर्भजिप्रदीप-कान्तीनाम् (from the beaming luster of the jewel lamps), अनभिमुखी= असम्मुखी (averse to face), साङ्गभङ्गैः=अङ्गभङ्गसहितैः (with strechings of limbs), जृम्भितैः=निद्रालस्यापहारक्मुखव्यादानात्मकव्यापारैः (by yawning), जनितजललवा=संजाताश्रुकणा (produced drops of tears), आत्मव्यापारगुर्वी= दर्शनात्मकस्वक्रियाऽसमर्था (tardy in performing their function), निद्राच्छेदा-भिताम्रा=निद्राभङ्गारक्ता (reddish at the corners from break of sleep), आकेकरा=अर्द्धनिमीलिता दृष्टिः (half closed), दृष्टिः=चक्षुः (eyes),

द्वितीय—

सत्त्वोत्कर्षस्य धात्रा निधय इव कृताः केऽपि कस्यापि हेतो-
र्जेतारः स्वेन धाम्ना मदसलिलमुचां नागयूथेश्वराणाम् ।

व = युष्मान् (you), चिरम् = बहुकालम् (for ever), अवतु = रक्षतु (may guard) ॥ २१ ॥

हिन्दी—और भी—

तत्काल नींद खुलने के कारण सन्मुख देखने में असमर्थ, क्षणभर भी जो रत्न दीपों की प्रभा को सहन नहीं कर सकती, किंचित् वक्र, जागरण समय अङ्गड़ाइयों और जम्हाइयों के कारण जिसमें कुछ अश्रु बूंदें भर आई हैं, अपने व्यापार में शिथिल, निद्राभंग के कारण कुछ रक्ताभ—इस जागरण वेला में शेषनाग के फणों का तकिया एवं बिछावन बनाकर सोने वाले भगवान् विष्णु की—अधखुली आँखें आपकी रक्षा करें ॥ २१ ॥

English—Moreover :—

May the halfclosed eyes of Hari when about to leave his wide bed of the Serpent's body having the group of hoods for its pillow guard you for ever !—The eyes which are dull from recent opening, which are for the moment averse to face the light of gems, which are tardy in performing their function in which drop of tears have been brought up by yawns with strechings of limbs and which are reddish at the corners from break of sleep. 21.

टिप्पणी—(१) आकेकरा—'दृष्टिराकेकरा किञ्चित् स्फुटापाङ्गे प्रसारिता' के अनुसार 'अर्द्ध निमीलित' आँखों को 'आकेकरा' कहते हैं। इस दृष्टि के विस्तार के सम्बन्ध में लिखा है—'आकेकरा दुरालोके विच्छेदप्रेक्षितेषु च'।

(२) यह श्लोक कार्तिक पूर्णिमा को पढ़ा गया है। कार्तिक शुक्ल एकादशी को चार महीने के बाद भगवान विष्णु निद्रा त्याग कर जगते हैं। इसी स्थिति में उनकी अलस आँखों का वर्णन है। **"शेते विष्णुः सदाऽऽषाढे कार्तिके च विबुध्यते।"**

इस श्लोक में—रत्न में दीपत्व का, नागाङ्क में शय्यात्व का, फणाचक्रवाल में उपधानत्व के समारोपण से रूपक अलङ्कार है, जैसे—'रूपकं रूपितारोपे विषये निरपह्नवे।' पुनः भगवान विष्णु की आँखों की स्वाभाविक क्रिया के वर्णनों से 'स्वभावोक्ति' अलङ्कार है। यथा—'स्वभावोक्ति र्दुरूहार्थस्वक्रियारूपवर्णनम्' फिर दोनों के संयोग एक साथ रहने के कारण यहाँ 'संसृष्टि अलंकार' है। 'स्रग्धरावृत्त' एवं प्रसाद गुण तथा लाटी रीति है।

विमला

अन्वयः—नृवर, धात्रा, सत्त्वोत्कर्षस्य, केपि, कस्यापि, हेतोः, निधयः, इव, कृताः, मदसलिलमुचाम, नागयूथेश्वराणाम, स्वेन, धाम्ना, जेतारः, मृगाणाम, अधिपतयः, इव, दंष्ट्राभङ्गम, न सहन्ते, व्यक्तमानावलेपाः, सार्वभौमाः, स्वादृशाः, नृपतयः, आज्ञाभङ्गम न, सहन्ते ॥ २२ ॥

दंष्ट्राभङ्गं मृगाणामधिपतय इव व्यक्तमानावलेपा
नाज्ञाभङ्गं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशाः सार्वभौमाः ॥ २२ ॥

व्याख्या—नृवर=हे नरनाथ (O best of men), धात्रा=विधिना (by the Creator), सत्त्वोत्कर्षस्य=बलातिशयस्य (exuberence of power), केऽपि=लोकविलक्षणमहिमानः (supremely eminent), कस्यापि हेतोः=कस्मैचिदपि प्रयोजनाय (with some object), निधयः=आकराः (repository), इव=यथा (like), कृताः=सृष्टाः (made), मदसलिलमुचाम्=मदस्राविणाम् (of rut-shedding), नागयूथेश्वराणाम्=हस्तियूथपतीनाम् (of the leader of herd of tuskers), स्वेन=निजेन (by self), धाम्ना=तेजसा (might), जेतारः=जयिनः (conquerors), मृगाणाम् अधिपतयः=सिंहाः (the lord of beast), इव=यथा (like), दंष्ट्राभङ्गम्=दंष्ट्रोत्पाटनम् (the breaking of their jaws), न सहन्ते=न मर्षन्ति (do not put up with), तथैव—व्यक्तमानावलेपाः=प्रसिद्धस्वाभिमानदर्पाः (sense of self steam and pride), सार्वभौमाः=सर्वभूमीश्वराः (universal sovereigns), त्वादृशाः=भवादृशाः (like you), नृपतयः=नरेन्द्राः (the king), आज्ञाभङ्गम्=आज्ञाव्याघातम् (supercession of orders), न सहन्ते=न क्षमन्ते (do not put up with). ॥ २२ ॥

दूसरा—

हिन्दी—हे नरश्रेष्ठ, विधाता के द्वारा कुछ लोग किसी कारण से तेज की उत्कृष्टता के खजाने बना दिये गये हैं, जिस प्रकार मदजलस्रावी गज समूहों के अधिपतियों के विजेता मृगाधिप अपनी दाढ़ उखाड़े जाने को सहन नहीं कर सकता, उसी प्रकार तुम्हारे समान प्रसिद्ध स्वाभिमानी एवं तेजस्वी लोग अपनी आज्ञा का भङ्ग नहीं बर्दाश्त कर सकते हैं ॥ २२ ॥

English—Second bard :—

O you best of men, universal sovereigns made dy the creator as the repository of the exuberence of power with pride and self respect manifest like yourself, whoever they are do not, for any reasons whatsoever put up with the infringement of their command, just as the lords of beast who by their own might are conquerors of the leaders of herd of tuskers emitting the fluid of ichor, do not brook the breaking of their jaws 22.

टिप्पणी—(१) निधयः—निधीयन्ते—स्थाप्यन्ते एषु इस विग्रह में नि+धा+कि= 'कर्मण्यधिकरणे च'।

(२) कस्यापि हेतोः—'षष्ठी हेतुप्रयोगे' से षष्ठी विभक्ति हुई।

(३) मदसलिलमुचाम् तथा नागयूथेश्वराणाम्—'कर्तृकर्मणोः कृति' से कृद् योग में षष्ठी है।

(४) व्यक्तमानावलेपाः—व्यक्त—वि+अञ्ज्+क्त कर्मणि। मन्+घञ् भावे मानः। अवलेप—अव+लिप+घञ् भावे—मानस्य अवलेपश्च व्यक्तो येषां ते।

(५) त्वादृशाः—त्वमिव दृश्यन्ते। इस विग्रह में 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने' से कञ्।

अपि च ।

भूषणाद्युपभोगेन प्रभुर्भवति न प्रभुः ।
परैरपरिभूताज्ञस्त्वमिव प्रभुरुच्यते ॥ २३ ॥

चाणक्य —(स्वगतम् ।) प्रथम तावद्विशिष्टदेवतास्तुतिरूपेण प्रवृत्तशरद्गुण-प्रख्यापनमाशीर्वचनम् । इदमपर किमिति नावधारयामि । (विचिन्त्य ।) आ, ज्ञातम् । राक्षसस्याय प्रयोग । दुरात्मन् राक्षस, दृश्यसे भो जागति खलु कौटिल्य ।

---

(६) सार्वभौमा —सर्वभूमेरीश्वरा अथवा सवभूमौ विदिता इति सार्वभौमा । इस विग्रह में सर्वभूमि से अण् प्रत्यय—'अनुशतिकादीनाञ्च' से उभयपद की वृद्धि विभक्ति कार्य।

(७) श्लोक २२ और २३ राक्षस के प्रणिधि 'स्तनकलश' द्वारा पठित है।

इस श्लोक में उत्प्रेक्षा तथा उपमा अलकार एव स्रग्धरा वृत्त है।

विमला

अन्वय —भूषणाद्युपभोगेन, प्रभुः प्रभु न भवति, परै, अपरिभूताज्ञ, त्वम्, इव, प्रभु, उच्यते ॥ २३ ॥

व्याख्या—भूषणाद्युपभोगेन = अलङ्कारादयुपभोगेन (by bearing of ornament), प्रभु = राजा (A lord), प्रभु = यथार्थ राजा (the king in real sense), न भवति (does not become), अपितु अपरिभूताज्ञ = अखण्डितादेश (whose command is not slighted), परै = अन्यैः (by others), त्वमिव = यथा त्वम् तथा (like you), प्रभु = राजा (the king), उच्यते = कथ्यते (is said) ॥ २३ ॥

हिन्दी—और भी—

भूषणादि का उपभोग करने से ही कोई राजा यथार्थ में राजा नहीं होता है। दूसरों के द्वारा अतिरस्कृत आज्ञा वाला तुम्हारे जैसा राजा ही राजा कहलाता है ॥ २३ ॥

English—Moreover —

A lord is not the lord by reason of the enjoyment of ornaments etc Rightly is he called king who like yourself has his order not superseded by others 23

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा अलकार एव अनुष्टुप छन्द है।

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[स्वगतम् = आत्मगतम् = (To himself)], प्रथमम् = प्राक् (the first), तावत् = वाक्यालङ्कारे विशिष्टदेवतास्तुतिरूपेण = विशिष्टा चासौ देवता विशिष्टदेवता तस्या स्तुति सैव रूपन्तेन (in the form of the praise of the supreme deities), प्रवृत्तशरद्गुणप्रख्यापनम् = उपस्थितशरद्गुणकीर्त्तनम् (describing the autumnal season), आशीर्वचनम् = आशीर्वादः (blessing), इदम् = एतत् (this), अपरम् = द्वितीयवैताळिकोक्त (other), किम् (what is),

राजा—आर्ये वैहीनरि, आभ्यां वैतालिकाभ्यां सुवर्णशतसहस्रं दापय।

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः (इत्युत्थाय परिक्रामति ।)

चाणक्यः—(सक्रोधम् ।) वैहीनरे, तिष्ठ न गन्तव्यम्। वृषल, किमयमस्थाने महानर्थोत्सर्गः ।

नावधारयामि=न जानामि (I do not know), [विचिन्त्य=विचार्य=(after reflecting)], आः ज्ञातम्=ईर्ष्या सूचकमव्ययम् (Ah I see), राक्षसस्य=नन्दसचिवस्य (Rakshasa's), अयम्=एतत् (It is), प्रयोगः=चन्द्रगुप्तमुत्तेजयितुं प्रयोगः (the intrigue), आः (Ah), दुरात्मन्=दुर्जीव (vile), राक्षस (Rakshasa), दृश्यसे=निरीक्ष्यसे (detected), जागर्त्ति=स्वकार्ये सावधानस्तिष्ठति (is wide awake), खलु=निश्चयेन (to be sure), कौटिल्यः (Kautilya)

राजा—आर्य वैहीनरे=(Noble vaihinari), आभ्याम्=नेपथ्यस्थिताभ्याम् (these), वैतालिकाभ्याम्=स्तुतिपाठकाभ्याम् (two bards), सुवर्णशतसहस्रम् शतसहस्रसंख्यकम् सुवर्णमुद्रात्मकम् पारितोषिकम् (a hundred thousand gold coins), दापय=(let be given)

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः (As sire commands), [इति उत्थाय=(He rises), परिक्रामति=goes round)]

हिन्दी—चाणक्य—(अपने आप) प्रथम वैतालिक द्वारा कहा गया तो विशिष्ट देवता परक स्तुति है प्रस्तुत शरद ऋतु के गुणों को प्रकट करने वाला आशीर्वचन है। यह दूसरा क्या है? नहीं समझ पा रहा हूं। (सोचकर) आः, समझ गया है। यह राक्षस का कार्य है। अरे दुरात्मन् राक्षस, देख लिये गये हो, कौटिल्य जाग रहा है।

राजा—आर्य, वैहीनरि, इन दोनों वैतालिकों को सौ हजार सुवर्ण मुद्राएँ दिलवा दो।

कञ्चुकी—महाराज की जैसी आज्ञा। (ऐसा कहकर उठकर घूमता है)

English—*Chanakya*—(To himself) The first is a blessing in the form of the praise of the supreme deities and indeed a pronouncement of benediction descriptive of the attraction of Autumn. What this other is I do not understand (after reflecting), Ah I see, it is intrigue of Rakshasa ! Vile Rakshasa, you are detected, Ah, Kautilya to be sure, is wide awake

King—Noble Vaihinari, let a hundred thousand gold coins be given unto these two bards

Chamberlain—As sire commads (He rises and goes round)

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[सक्रोधम्=सकोपम् (Angrily)], वैहीनरि (Vaihinari), तिष्ठ=स्थीयताम् (stop), न गन्तव्यम् (do not go), वृषल=मौर्य (Vrishala), किम्=किमर्थम् (why), अस्थाने=असत्पात्रे (on an unworthy object), अयम्=एषः (this), महान्=प्रचुरः (large), अर्थोत्सर्गः=धनव्ययः (expenditure of money).

राजा—(सकोपम् ।) आर्येणैव सर्वत्र निरुद्धचेष्टाप्रसरस्य मे बन्धनमिव राज्य न राज्यमिव ।

चाणक्य.—वृषल, स्वयमनभियुक्ताना राज्ञामेते दोषा सभवन्ति । तद्यदि न सहसे ततः स्वयमभियुज्यस्व ।

राजा—एते स्वकर्मण्यभियुज्यामहे ।

चाणक्य—प्रिय न' । वयमपि स्वकर्मण्यभियुज्यामहे ।

राजा—[सकोपम्=सक्रोधम् (with heat)], आर्येण=पूज्येनभवता (by Your Honour), एवम्=वैत लिकोदेश्यकार्यत्यागवत् (like), सर्वत्र=सर्वत (all round), निरुद्धचेष्टा प्रसरस्य=प्रतिहतोद्योगावसरस्य (course of action is checked), मे=मम (my), राज्यम्=प्रजाधिपत्य (kingship), बन्धनमिव= कारागृह सदृशमिव (like prison), न राज्यमिव=न कारागृहादतिरिक्तमिव (not like a kingdom).

चाणक्य—वृषल (Vrishal), स्वयमनभियुक्तानाम्=राजकार्येष्वस्वतन्त्रणाम् (do not attend personally to their duties), राज्ञाम्=नृपाणाम् (of those kings), एते=इमे (these), दोषा (evils), सम्भवन्ति=जायन्ते (attend), तद्=तस्मात् कारणात् (so), यदि (if), न सहसे=न क्षमन्ते (can not bear), ततः=तदा (then), स्वयम्=साक्षात् (yourself), अभियुज्यस्व=राजकार्यसम्पादने-तत्परोभव (attend personally to work)

राजा—एते=वयमितिशेष' (Here we), स्वकर्मणि=राजकार्ये (in our work), अभियुज्यामहे=स्वतन्त्राभवाम (attend).

चाणक्य—प्रियनः=अस्माकमिष्टम् (This please me), वयमपि (we too), स्वकर्मणि (to our duty), अभियुज्यमहे (attend to work)

हिन्दी—**चाणक्य**—(क्रोध के साथ) वैहीनरे, रुको, नहीं जाना है। वृषल, अनुचित स्थान में इतनी बडी राशि का व्यय क्यों ?

राजा—(कुपित होकर) इस प्रकार हर स्थान में मेरी हर गतिविधि पर आर्य के प्रति बन्धों से यह राज्य मेरे लिये अब राज्य नहीं, एक बन्धन ही अधिक बन गया है।

चाणक्य—हाँ वृषल, स्वय राजतन्त्र का सचालन न करने वाले राजाओं में ये दोष उत्पन्न हो जाते हैं। तो यदि सहन न कर सकते तो स्वय अपना काम सम्हालो।

राजा—ये हम अपने कार्य में सलग्न होते हैं।

चाणक्य—बडी अच्छी बात है। हम भी अपने कर्त्तव्य में सलग्न होते हैं।

English—*Chanakya*—(Angrily) Stop Vaihinari, don't go Vrishala why this large expenditure of money on an unworthy object.

King—(With heat) Kingdom is like bondage to me when my actions thus checked in every case by Noble preceptor, it is not like kingship at all.

राजा—यद्येव तर्हि कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य तावत्प्रयोजन श्रोतुमिच्छामि।

चाणक्य—वृषल, कौमुदीमहोत्सवानुष्ठानस्य किं प्रयोजनमित्यहमपि श्रोतुमिच्छामि।

राजा—प्रथम तावन्ममाज्ञाव्याघातः।

चाणक्य—वृषल, ममापि त्वदाज्ञाव्याघात एव कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य प्रथम प्रयोजनम्। कुत —

Chanakya—Yes Vrishala, such evils are but the lot of those kings who are personally inattentive to their work. So if you cannot bear them, attend yourself to your duties.

King—Here we attened to our work.

Chanakya—This please me, we too attend to our work.

विमला

व्याख्या—राजा—यद्येवम् (if so), तर्हि (then), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य (prohibition of the Kaumudi festival), तावत्प्रयोजनम् (the utility), श्रोतुमिच्छामि (want to hear)

चाणक्य—वृषल = मौर्य (Vrishala), कौमुदीमहोत्सवानुष्ठानस्य (of observing the Kaumudi festival), किम्प्रयोजनम् (what reasons), इत्यहमपि (this I too), श्रोतुमिच्छामि (wish to hear)

राजा—प्रथमम् = प्राक् (First), तावत् (indeed), मम = आत्मन (my), आज्ञा = आदेश (command), व्याघात = भङ्ग (the violation)

चाणक्य—वृषल = मौर्य (Vrishala), ममापि = आत्मनोऽपि (mine too), त्वदाज्ञाव्याघात = त्वदादेशाप्रतिपालनम् (the interruption of your order), एव = निश्चय (indeed), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य (the prohibition of the Kaumudi festival), प्रथमम् = आद्यम् (first), प्रयोजनम् = फलम् (utility), कुत (For)

हिन्दी—राजा—यदि ऐसा है तो कौमुदी महोत्सव के रोके जाने का प्रयोजन सुनना चाहता हूँ।

चाणक्य—वृषल, मैं भी कौमुदीमहोत्सव मनाने का प्रयोजन क्या है ? जानना चाहता हूँ।

राजा—सर्वप्रथम तो मेरी आज्ञा का उल्लघन नहीं होना चाहिए।

चाणक्य—वृषल, मेरा भी प्रयोजन कौमुदीमहोत्सव रोकने का यही था कि तुम्हारी आज्ञा का उल्लघन हो। क्योंकि—

English—*King*—If so then I want to hear the Utility of the prohibition of the Kaumudi festival.

Chanakya—Vrishala, I too wish to hear your reason for observing the Kaumudi festival.

अम्भोधीनां तमालप्रभवकिसलयश्यामवेलावनाना-
मापारेभ्यश्चतुर्णां चटुलतिमिकुलक्षोभितान्तर्जलानाम् ।
मालेवाम्लानपुष्पा तव नृपतिशतैरुह्यते या शिरोभिः
सा मय्येव स्खलन्ती कथयति विनयालंकृतं ते प्रभुत्वम् ॥ २४ ॥

King—First indeed is the uninterruption of my order.

Chanakya—Vrishala, disobedience of your order is my first purpose too, in forbidding the Kaumudi festival. For—

टिप्पणी—(१) अर्थोत्सर्गः—उद्+सृज्+घञ् भावे उत्सर्गः । अर्थस्य उत्सर्गः ।

(२) अभियुज्यस्व—अभि उपसर्गक दिवादिगणीय युज् धातु से प्रेरणा के अर्थ में लोट् लकार का रूप है ।

(३) आज्ञाव्याघातः—वि+आ+हन्+घञ्, भावे व्याघात, न व्याघातः अव्याघातः, आज्ञायाः अव्याघातः ।

(४) प्रवृत्त—प्रख्यायते अनेन इति प्र+ख्या or चक्ष+णिच्+ल्युट् करणे प्रख्यापणम्, प्रवृत्ता शरद्, तस्याः गुणाः, तेषा प्रख्यापनम् ।

(५) वयमपि स्वकर्मण्यभियुज्यामहे—इस कथन का यहाँ तात्पर्य यह है कि इस मिथ्या कलह के माध्यम से ही अब मैं राक्षस को वश करने लिए प्रत्नशील होता हू शब्दार्थ है—अब तक मैंने तुम्हारा काम किया है, अब मैं अपना कार्य अर्थात् अग्निहोत्रादि में प्रवृत्त होता हूँ ।

विमला

अन्वयः—तमालप्रभवकिसलयश्यामवेलावनानाम्, चटुलतिमिकुलक्षोभितान्तर्जलानाम्, चतुर्णाम्, अम्भोधीनाम्, आपारेभ्यः, नृपतिशतैः, या, तव, अम्लानपुष्पा, माला, इव, शिरोभिः उह्यते, सा, मयि, स्खलन्ती, ते, विनयालंकृतम्, प्रभुत्वम्, एव, कथयति ॥२४॥

व्याख्या—तमालप्रभवाणि = तमालजातानि (growing on Tamal trees), यानि किसलयानि = नवपल्लवाः (fresh leaves), तैः श्यामानि = ईषत्कृष्णानि (are darkened), वेलावनानि = तटकाननानि (the forests on the coasts), येषाम् तादृशानाम् अपि च चटुलम् = चपलम् (agitated), यत् तिमिकुलम् = मत्स्यविशेषाणाम् समूहम् (by whales), तेन क्षोभितम् = आन्दोलितम् (rushing about), अन्तर्जलम् = जलमध्यम् (inward water), येषाम् तादृशानाम् चतुर्णाम् = चतुर्दिक्षुस्थितानाम् (of the four), अम्भोधीनाम् = सागराणाम् (oceans), आपारेभ्यः = परतीरेभ्यः आरभ्येत्यर्थः (up to the shores), नृपतीनाम् = राज्ञाम् (of kings), शतैः = समूहैः (by hundreds), या तव = भवता (your), अम्लानानि = अमलिनानि (unfaded), पुष्पाणि (flowers), यस्याः तादृशी माला = स्रक् (a garland), इव = यथा (like), शिरोभिः = उत्तमाङ्गैः (on heads), उह्यते = धार्यते (is carried), सा = सैवाज्ञा (command), मयि = तव गुरौ चाणक्ये (me), स्खलन्ती = व्याहता (failing in), ते = तव (your), विनयेन = नम्रतया (by humility), अलंकृतम् = सुशोभितम् (as graced), प्रभुत्वम् = आधिपत्यम् (sovereignty), एव = निश्चये (only), कथयति = आख्यापयति (declares)

अथ त्वमपरमपि प्रयोजनं श्रोतुमिच्छसि तदपि कथयामि ।

राजा—कथ्यताम् ।

चाणक्यः—शोणोत्तरे, मद्वचनात् कायस्थमचलं ब्रूहि—'यत्तद्भद्रभटप्रभृतीनामितोऽपरागादपक्रम्य मलयकेतुमाश्रितानां लेख्यपत्रं दीयताम्' इति ।

प्रतीहारी—जं अज्जो आणवेदित्ति । (निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य ।) अज्ज, इअं पत्तअम् । (यदार्य आज्ञापयतीति । आर्य, इदं पत्रकम् ।)

हिन्दी—तमाल वृक्ष से उत्पन्न कोमल नवीन पत्तों से श्यामवर्ण तट के वनों वाले, चञ्चल 'तिमि' मत्स्य समूह से विक्षुब्ध अन्तर्जलवाले, चारों सागरों के पार से आये हुए सैकड़ों राजाओं के द्वारा जो तुम्हारी आज्ञा न कुम्हलाए हुए फूलों की माला के समान मस्तकों से धारण की जाती है उसी आज्ञा की अवहेलना जब मुझसे होती है, उसका तात्पर्य मेरे लिए तुझे मात्र यही बताना होता है कि प्रभुता का आभूषण नम्रता है ॥ २४ ॥

English—Stumbling against me alone, your command declares your sovereignty as graced by humility—The order which up to the shores of the four oceans the forests on the coast of which are darkened by the leaves of Tamala trees and the waters of which are inwardly agitated by whales rushing about, is carried on their head by hundred of kings like a garland of flowers unfaded. 28.

टिप्पणी—आज्ञा व्याघातः—वि + आ + हन् + घञ् भावे व्याघातः, न व्याघातः अव्याघातः आज्ञायाः अव्याघातः ।

आसारेभ्यः—परतीरेभ्यः आ, यहाँ अभिविधि के अर्थ में आङ् है । 'आङ् मर्यादाभिवचने' तथा कर्मप्रवचनीय होने से 'पञ्चम्यपाङ्परिभिः' से आङ् के योग में पञ्चमी विभक्ति है । तिमिकुल—यह एक महाविशाल मछली है । इसके सम्बन्ध में कहा गया है—"अस्तिमत्स्यो तिमिर्नाम शतयोजनमायतः ।"

इस श्लोक में 'उपमा' अलंकार एवं स्रग्धरा छन्द है ।

ओज गुण तथा गौडी रीति है । यहाँ राक्षस की पराजित बुद्धि पर चाणक्य के आक्रोश का अद्भुत अभियान है । आरम्भ की दो पंक्तियों की राजस्तुति क्रमशः तुलना हुआ उत्तरार्द्ध में ध्वनि व्यङ्ग बन गया है । सम्पूर्ण राजन्य वर्ग की प्रजा की समीक्षा में करुण विनोद वृत्ति अत्यन्त मार्मिक है ।

विमला

व्याख्या—अथ=अनन्तरम् (and), त्वम् (you), अपरमपि=द्वितीयमपि (second also), प्रयोजनम्=कारणम् (reason), श्रोतुम्=श्रवणं कर्तुम् (to hear), इच्छसि=वाञ्छसि (wish), तदपि (that too), कथयामि (I will tell)

राजा—कथ्यताम्=अभिधीयताम् (Do so).

चाणक्य—शोणोत्तरे (Sonottara), मद्वचनात्=मदुक्त्या (in my words), अचलम्=एतन्नामकम् (Achala), कायस्थम् (Kayastha), ब्रूहि=कथय (tell),

चाणक्यः—(गृहीत्वा ।) वृषल, दृश्यतामिदम् ।

राजा—(आत्मगतं वाचयति ।) स्वस्ति सुगृहीतनामधेयस्य देवस्य चन्द्रगुप्तस्य सहोत्थायिनां प्रधानपुरुषाणामितोऽपक्रम्य वध्यमलयकेतुमाश्रितानां

इतः = कुसुमपुरात् (from Kusumpura), अपक्रम्य = निर्गत्य (having gone), अपरागात् = मौर्ये अननुरागात् (through discontent), मलयकेतुम् = पर्वतकसुतम् (to Malayaketu), आश्रितानाम् = सेवमानानाम् (employing), भद्रभटप्रभृतीनाम् = भद्रभटादीनाम् (Bhadrabhata and his colleagues), यत् लेखपत्रम् = लिखितपत्रिका (document), तद्दीयताम् = अर्प्यताम् (send me).

प्रतीहारी—यद् आर्यः = मान्यो भवान् (As noble sir), आज्ञापयति (commands), [इति निष्क्रम्य = बहिर्गत्य (exit), पुनः (and), प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (coming back)], आर्य = श्रीमन् (Your Honour), एतत् (this is), पत्रकम् = लेखपत्रम् (the writing)

हिन्दी—और भी एक प्रयोजन—अगर यह भी तुम्हें सुनने की इच्छा हो, तो वह भी कह दूँ ।

चन्द्रगुप्त—कहिए ।

चाणक्य—शोणोत्तरे, मेरी ओर से अचल नामक कायस्थ से कहना—'जो यहाँ से विरक्ति के कारण भाग कर मलयकेतु का आश्रय लेने वाले भद्रभटादियों का लिखा हुआ पत्र है, वह दो ।'

प्रतीहारी—जो आर्य आज्ञा देते हैं (निकल कर पुनः प्रवेश कर) आर्य यह पत्र है ।

English—And if you wish to hear the second reason, that too, I will tell you.

King—Let it be told then.

Chanakya—Sonottara, tell Kayastha Achala this in my words:—Send me the document in connection with Bhadrabhata and his colleagues who left us through discontent and went over to Malayaketu.

Fem Doorkeeper—As noble sir commands (Exit and re enter) your Honour, here is the writing.

विमला

चाणक्य—[गृहीत्वा (taking it up), वृषल = मौर्य (Vrishala), दृश्यतामिदम् (see it)

राजा—[आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself), वाचयति (reads)], स्वस्ति = मङ्गलमस्तु ('may good come), सुगृहीतनामधेयस्य = प्रातः स्मरणीयनाम्नः (of auspicious name), देवस्य = राज्ञः (sire's), चन्द्रगुप्तस्य = मौर्यस्य (Chandragupt's), सहोत्थायिनाम् = युगपदुत्थितिशीलानाम् (rose along with), इतः = अस्मात् कुसुमपुरात् (from here), अपक्रम्य = निर्गत्य (having

प्रमाणलेख्यपत्रमिदम्। तत्र प्रथममेव तावद्गजाध्यक्षो भद्रभटः अश्वाध्यक्षः पुरुषदत्तः महाप्रतीहारस्य चन्द्रभानोर्भागिनेयो डिङ्गरातः देवस्य स्वजनसम्बन्धी महाराजो बलदेवगुप्तः देवस्यैव कुमारसेवको राजसेनः सेनापतेः सिंहबलस्य कनीयान्भ्राता भागुरायणो मालवराजपुत्रो लोहिताक्षः क्षत्रगणमुख्यो विजयवर्मेति। एते वयं देवस्य कार्ये अवहिताः स्म इति। (प्रकाशम्।) आर्य, एतावदेतत्पत्रकम्। अथैतेषामपरागहेतून् विज्ञातुमिच्छामि।

---

fled), वध्य (ill-fated), मलयकेतुम्=पर्वतकपुत्रम् (to Malayaketu), आश्रितानाम्=सेवमानानाम् (have sided), प्रधानपुरुषाणाम्=कार्याधिपतीनाम् (of those principal persons), इदम् (this), प्रमाणलेख्यपत्रम्=संख्यापत्रम् (Recordsheet), तत्र=प्रमाणपत्रे (of them), प्रथममेव=आद्यमेव (very first), तावद्=इदम् शब्दोवाक्यालङ्कारे, भद्रभटः (Bhadrabhata), गजाध्यक्षः= हस्तिपालकः (the principal officer of elephant-warriors), पुरुषदत्तः= एतन्नामकः (Purushdatta), अश्वाध्यक्षः=वाजिपालकः (the commander of cavalry), महाप्रतीहारस्य=प्रधानद्वारपालकस्य (the chief warder), चन्द्रभानोः=तन्नामकस्य (Chandrabhanu's), भगिनीपुत्रः (the nephew), डिङ्गरातः (Dingrata) देवस्य=राज्ञः (of sire), स्वजनसम्बन्धी=आत्मीयजनसम्बन्धी (a distant relation), महाराजोबलदेवगुप्तः (Maharaj Baldeogupta), देवस्यैव=चन्द्रगुप्तस्यैव (of sire himself), कुमारसेवकः=बाल्यभृत्यः (from his boyhood attendant), राजसेनः (Rajasena), सेनापतेः= सेनाध्यक्षस्य (the commander-in-chief), सिंहबलस्य (Sinhabala's), कनीयान्=अनुजः (the younger), भ्राता=सहोदरः (brother), भागुरायणः (Bhagurayana), मालवराजपुत्रः=मालवाधीशसुतः (the son of the king of Malava), लोहिताक्षः (Lohitahsha), क्षत्रगणमुख्यः=क्षत्रियवर्गप्रधानः (the head of a class of Kshatriya), विजयवर्मा (Vijayavarma), एते वयम् (we are), देवस्य=राज्ञः (sire's), कार्ये (in work), अवहिताःस्म=सावधानाः भवामः (ready), [प्रकाशम्=(aloud)], आर्य=मान्यः (noble sir), एतावत् (this much), एतत् (this), पत्रकम्=दलम् (the sheet), अथैतेषाम्= भद्रभटप्रभृतीनाम् (of their), अपरागहेतून्=विरागकारणानि (causes of disaffection), विज्ञातुम्=ज्ञातुम् (to know), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish).

हिन्दी—चाणक्य—(लेकर) वत्स, यह देखो।

राजा—(अपने आप पढ़ता है) कल्याण हो, [illegible] महाराज चन्द्रगुप्त के साथ उठनेवाले, यहाँ से भाग कर वध के योग्य मलयकेतु के आश्रय लेनेवाले, प्रमुख व्यक्तियों का यह प्रमाणपत्र है। उनमें सर्वप्रथम हस्तिसेनाध्यक्ष भद्रभट, अश्वसेनापति पुरुषदत्त, प्रधान दौवारिक चन्द्रभानु का भांजा डिङ्गरात, महाराज का अपना सम्बन्धी महाराज बलगुप्त, महाराज का ही बचपन का सेवक राजसेन, सेनापति सिंहबल का छोटा भाई भागुरायण, मालवराजपुत्र लोहिताक्ष, क्षत्रियों के गण का प्रधान विजयवर्मा। ये हम सभी महाराज के कार्य में

सावधान हैं (सुनाकर), आर्य, यही यह पत्र है। अब मैं इनके असन्तोष का कारण जानना चाहता हूँ ।

English—*Chanakya*—(Taking it) Vrishala, see it.

King—(Reads to himself) May good come ! This is a document containing the list of those high officials, who rose along with Sire Chandragupta of auspicious name, and who having fled from here gone over to the ill-fated Malayaketu. Of them the very first is this—Bhadrabhatta, the chief officer of elephant warriors, Purushdatta, the commander of cavalry; Dingarata, the nephew of Chandrabhanu, the chief warder; Baldeogupta, a distant relation of sire himself, Rajsena the old attendent of sire himself, Bhagurayan the younger brother of Singhbala the commander-in chief, Rohitaksha the prince of Malava, Vijayavarman, the head of a class of Kshatriya (aloud) Noble sir this sheet has this much. Now I wish to know the causes of their disaffection.

टिप्पणी—(१) लेखापत्रम्—लिख्यत् कर्मणि लेख्यम्, तस्य पत्रम् लेखापत्रम् ।

(२) अपरमपि प्रयोजनम्—'तत्राज्ञाव्याघात' कहकर चाणक्य ने प्रथम कारण स्पष्ट कर दिया है—*अब यदि दूसरा कारण भी चन्द्रगुप्त जानना चाहता है तो उसे भी स्पष्ट कर* रहा है।

(३) दृश्यतामिदम्—यह कथन ही इस बात का प्रमाण है कि पत्र गोपनीय है।

(४) गजाध्यक्ष —अभिगतः अक्षम् अध्यक्षः—गजेषु अध्यक्षः गजाध्यक्ष.—'सुप् सुपा' से समास हुआ है। इसके भागने से राजसेना की क्षति की सूचना मिलती है।

(५) महाप्रतीहारस्य—प्रति ह्रियते अत्र इति प्रति+हृ+घञ्, अधिकरणे—प्रतीहार, महान् चासौ प्रतीहारः महाप्रतीहारः—इससे दो बातें सूचित होती हैं—नगररक्षक की अविश्वसनीयता और आक्रमण पथ का सुलभ होना।

(६) *स्वजनसम्बन्धी—स्व जन॰ स्वजनः तस्य सम्बन्ध. स्वजनसम्बन्ध.—स. अस्ति* अस्य स्वजनसम्बन्धी—अपने ही व्यक्ति के विरोध के कारण भावी अनर्थ की सूचना ही है।

(७) कुमारसेवक —कुमारस्य सेवक अथवा देवम् कौमारमारभ्य सेवते इति कुमारसेवक.। इसके भाग जाने से गुप्त रहस्यों के प्रकाशित हो जाने की सम्भावना है।

(८) अपक्रम्य—अप+क्रम+ल्यप् विभक्त्यादि कार्य।

(९) भागिनेय —भगिनी+ढक् = विभक्तिकार्य।

(१०)—सेनापते.—कनीयान् भ्राता—इससे सेनापति के प्रति स्पष्ट अविश्वास प्रकट होता है।

(११) कनीयान्—अतिशयेन युवा इति युवन्+ईयसुन्—इससे कनीयान् एव यवीयान् रूप की सिद्धि 'युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम्' इस सूत्र से है।

(१२) क्षत्रगणमुख्य —क्षत्राणाम् गणः तस्मिन् मुख्य॰ क्षत्रगणमुख्यः—इससे सहायकों की हानि एव शत्रुओं के उत्साह की वृद्धि सूचित होती है।

चाणक्यः—वृषल, श्रूयताम्। अत्र यावेतौ गजाध्यक्षाश्वाध्यक्षौ भद्रभटपुरुषदत्तनामानौ तौ खलु स्त्रीमद्यमृगयाशीलौ हस्त्यश्वावेक्षणेऽनभियुक्तौ मयाधिकाराभ्यामवरोप्य स्वजीवनमात्रेणैव स्थापिताविति परपक्षे स्वेन स्वेनाधिकारेण गत्वा मलयकेतुमाश्रितौ। यावेतौ डिङ्गरातबलगुप्तौ तावप्यत्यन्तलोभाभिभूतौ त्वद्दत्तं जीवनमबहुमन्यमानौ तत्र बहु लभ्यत इत्यपक्रम्य मलयकेतुमाश्रितौ।

---

(१३)—भद्रभटादिकों का कथन है। वे कहना चाहते हैं कि आपकी आज्ञा से उन उन कार्यों का त्याग करके चन्द्रगुप्त से विरक्त होकर हम मलयकेतु के पास आ गये हैं तथा आपके कार्य में राक्षस और मलयकेतु में भेद डालने के कार्य में व्यस्त हैं।

(१४) देवावदलम्बकम्—चन्द्रगुप्त के पढ़ने पर 'हमारा' व्यर्थ है क्योंकि चाणक्य भी सब कुछ जानता है।

यह सम्पूर्ण दृश्य एक नाटक है नाटकीय स्वातन्त्र्य का आदर्श दूसरे शब्दों में 'वंचनिच्छलित' का सम्यक् निर्वाह प्रस्तुत करना है और है उच्चकोटि की कलात्मकता और इस दृश्य में आलोचना के योग्य अनेक विषय हैं और प्रत्येक विषय के विविध स्तर हैं, क्योंकि चन्द्रगुप्त और चाणक्य दोनों ही इस बात से पूर्ण परिचित हैं कि यह 'कृतककलह' मात्र एक नाटक है,—परन्तु दिखाने के लिए ही यह सब पढ़ा जा रहा है। सबसे पहले चाणक्य के क्रोध का स्वाभाविक प्रसार चन्द्रगुप्त के प्राणों पर स्वच्छन्द साया डालता है। ऐसे एक निःश्वास-उच्छ्वास तक का आभास नहीं मिलता जो यथार्थ के गौरव से आर्द्र न हो। चाणक्य की कुटिलता से राजभवन तक, पृथिवी से स्वर्ग तक कौटिल्य नीति का एक समान ताना-बाना बुना है। भद्रभट, डिङ्गरात, पुरुषदत्त एवं बलदेवगुप्त एक ही प्रणाली के बहुरङ्ग सुमन हैं, एक ही चेतना की विविध अभिव्यक्तियाँ हैं।

विमला

व्याख्या—वृषल = मौर्य (Vrishal), श्रूयताम् = आकर्ण्यताम् (hear), अत्र = भद्रभटादिषु (here), यावेतौ (those two), गजाध्यक्षाश्वाध्यक्षौ=हस्तिपालकाश्वपालकौ (the commander of the elephants and the horse), भद्रभटपुरुषदत्तनामानौ (by name Bhadrabhatta and Purushdatta), तौ खलु-शब्दो वाक्यालङ्कारे (both of them), स्त्रीमद्यमृगयाशीलौ = नारीमद्याखेटस्वभावौ (were addicted to women, wine and chase), हस्त्यश्वावेक्षणे = गजवाजिसरक्षणे (to look after the elephants and the horses), अनभियुक्तौ = असावधानौ (inattentive), मया (by me), अवरोप्य=पृथक्कृत्य (were removed , स्वजीवनमात्रेणैव=स्वजीविकानिर्वाहमात्रेणैव (mere subsistence allowence , स्थापितौ (placed on), इति परपक्षे = शत्रुपक्षे (to the enemy), स्वेन स्वेन अधिकारेण = गजरक्षकत्वेन अश्वरक्षकत्वेन रूपेण (from their office), गत्वा (went over), मलयकेतुम् (to Malayaketu), आश्रितौ = समाश्रित्य रक्षकौ जातौ (have attached themselves), यावेतौ = इमौ these two), डिङ्गरातबलगुप्तौ=एतन्नामकौ (Dingurata and Balgupta), तावपि (they were), अत्यन्तलोभाभिभूतौ=अतिशयलुब्धप्रकृती (affected by extreme greed),

योऽप्यसौ भवत कुमारसेवको राजसेन इति सोऽपि तव प्रसादादतिप्रभूतकोशहस्त्यश्व सहसैव तन्महदैश्वर्यमवाप्य पुनरुच्छेदशङ्कयापक्रम्य मलयकेतुमाश्रितः । योऽयमपर सेनापते सिंहबलस्य कनीयान्भ्राता भागुरायणोऽसावपि तत्र काले पर्वतकेन सह समुत्पन्नसौहार्दस्तत्प्रीत्या च पिता ते चाणक्येन व्यापादित इत्युत्पाद्य रहसि त्रासयित्वा मलयकेतुमपवाहितवान् । ततो भवदपथ्यकारिषु चन्दनदासादिषु निगृहीतेषु स्वदोषाशङ्कयापक्रम्य मलयकेतुमाश्रित । तेनाप्यसौ मम प्राणरक्षक इति कृतज्ञतामनुवर्तमानेनात्मनोऽनन्तरममात्यपदं प्राप्ति । यौ तौ लोहिताक्षविजयवर्माणौ तावप्यतिमानित्वात् स्वदायादेभ्यस्त्वया दीयमानमसहमानौ मलयकेतुमाश्रितौ इत्येषामपरागहेतवः ।

त्वद्दत्तम्=त्वयाप्रागङ्गीकृतम् (given by you , जीवनम्=जीविका (the salary), अबहुमन्यमानौ=अल्पमवबुध्यमानौ (thinking insufficient), तत्र=मलयकेतु सन्निधौ (there), बहुलभ्यत=अधिक प्राप्येत (could get more), इत्यपक्रम्य (went over), मलयकेतुमाश्रितौ=पर्वतकपुत्रमाश्रितौ (attached themselves to Malayaketu), योप्यसौ=यश्चैव (regarding), भवत (your), कुमारसेवक=बालभृत्य (old attendant), राजसेन (Rajsen), इति सोऽपि (he too), तव=भवत (your), प्रसादात्=अनुग्रहाद् (through favour), अति प्रभूत =विवृद्ध (consisting of a large), कोश=धनराशि (treasure), हस्त्यश्वम्=नागाश्वम (elephants and horses), सहसैव (having suddenty), तन्महदैश्वर्यम्=अतिप्रभूतसम्पत्तिम (considerable fortune), अवाप्य=प्राप्य (got), पुनरुच्छेदशंकयाम्=भूय विनाशत्रासेन (from fear of its being taken back), अपक्रम्य=इतो निर्गत्य (has run away) मलयकेतुमाश्रित =पर्वतकसुतमाश्रित (joined Malayaketu), योऽयमपर. (about the other fellow), सेनापते=सेनाध्यक्षस्य (the commander in chief), सिंहबलस्य (Sinhabala's), कनीयान् भ्राता=अनुज सोदर (younger brother), भागुरायणोऽपि (Bhagurayan), असावपि (he too), तत्र (there), काले=समय (at that time), पर्वतकेन सह=पर्वतकेन सार्द्धम् (with Parvataka) समुत्पन्नसौहार्द =सञ्जातमैत्रिक (formed friendship), तत्प्रीत्या=पर्वतकस्नेहेन (out of affection for him), पिता ते=तव जनक (your father), चाणक्येन व्यापादित =कौटिल्येन घातित (was killed by Chankya), इत्युत्पाद्य, रहसि=एकान्ते (in secret by inventing the story), त्रासयित्वा=भाययित्वा (frightened), मलयकेतुम् (Malayaketu), अपवाहितवान्=अपसारितवान् (made him leave the town) तत =तत्पश्चात् (*after that*), भवदपथ्यकारिषु=त्वद्विरुद्धविधायिषु (*were* working harm unto you), चन्दनदासादिषु (Chandandasa and other), निगृहीतेषु=दण्ड्यमानेषु (were arrested), स्वदोषाशङ्कया=निजापराधभयेन (through apprehensions due to his own guilt), अपक्रम्य=निर्गत्य (fled), मलयकेतुमाश्रित (for protection to Malayaketu), तेनापि=मलयकेतुनापि

(he too), असौ (he), मम प्राणरक्षक (had saved his life), कृतज्ञतानुवर्तनानेन=प्रत्युपकारितानिर्वहणार्थेन (in pursuance of gratitude), अनन्तरोऽनन्तरम्=स्वस्मात् अव्यवहितम् (next to him in power), अमात्यपदम्= सचिवपदम् (post of minister), ग्राहितः=प्रापितः (conferred), यौ तौ (the two), लोहिताक्षविजयवर्माणौ (Lohitaksha and Vijayavarma), तावपि (they too), अतिमानित्वात्=अत्यन्ताभिमानवत्त्वात् (in their great vanity), स्वदायादेभ्यः=स्वबन्धुभ्यः (to their relatives), त्वया=भवता (by you), दीयमानम्=वितीर्यमाणम् (what you gave), असहमानौ=अमृष्यमाणौ (could not bear), मलयकेतुमाश्रितौ (went over to Malayaketu), इत्येषाम् (these are), अपरागहेतवः=विरागकारणानि (the causes of their disaffection).

हिन्दी—चाणक्य—वह भी सुन लो वृषल ! इनमें जो ये गजसेनाध्यक्ष और अश्वसेनाधिपति भद्रभट और पुरुदत्त हैं, वे तो स्त्री, मद्य और मृगया में निरन्तर आसक्त रहने के कारण हस्तिदल और अश्वदल के पालन-निरीक्षण में सदा असावधान रहते आते हैं, जिसके लिए इन्हें इनके अधिकारों से अलग कर आजीविकामात्र पर रहने दिया गया और इसलिए इन्हें यहाँ से विरक्त होने पर मलयकेतु के पक्ष में मिलते ही, इन्हें अपने अपने कार्यों पर नियुक्ति मिल गयी है। इनमें जो ये डिङ्गरात और बलगुप्त हैं—स्वभावतः अत्यन्त लोभी रहे हैं, तुम्हारे द्वारा दी गयी आजीविका को पर्याप्त न मानते हुए—वहाँ से अधिक मात्रा इतना देता होनेपर—यहाँ से भागकर मलयकेतु का आश्रय ग्रहण कर लिए हैं। और जो यह—तुम्हारे बचपन से सेवा में तत्पर राजसेन है, वह भी तुम्हारी कृपा से अत्यधिक खजाना, हाथी और घोड़ाओं सब महान सम्पत्ति को सहसा ही पाकर फिर उसे विनष्ट हो जाने के भय से भाग कर मलयकेतु की शरण में चला गया। अब सेनापति सिंहबल का कनिष्ठ सहोदर जो भागुरायण है, वह भी पहले से ही पर्वतक के साथ, ऐसे उनका घनिष्ठ मित्रता रहा आया है, जिससे इसने 'तुम्हारे पिता को चाणक्य ने ही मरवाया है', ऐसा डरा-धमका कर मलयकेतु को यहाँ से भगाना—यह जान लेने पर कि तुम्हारे अहितचिन्तक और अपकारक चन्दनदास आदि लोग पकड़े जा रहे हैं और उन्हें भी उनके अपराधों का दण्ड मिलेगा—यहाँ से निकल भागा है और मलयकेतु से जा मिला है और मलयकेतु ने भी इसे अपना प्राणरक्षक मानकर—कृतज्ञता प्रकट करते हुए, अपने सबसे ऊँचे अमात्य के पद पर नियुक्त कर दिया है। अब इनमें जो ये लोहिताक्ष और विजयवर्मा हैं, वे भी अत्यन्त स्वाभिमानी होने के कारण तुम्हारे द्वारा अपने बान्धवों को दिये जाने वाले सम्मान को सहन न करते हुए मलयकेतु का आश्रय ग्रहण कर लिए। यही हैं इनके असन्तोष के कारण।

English—*Chanakya*—Vrishala ! listen, these two, by name Bhadrabhatta and Purusdatta respectively the commander of the elephants and horses, were addicted to women, wine and chase, and were indeed inattentive to the inspection of the elephants and the horses. So they were removed by me from their office and placed on mere subsistence allowance. They therefore went over to the

enemy and took service under Malayaketu in their respective capacities As to Dingarata and Balgupta these two, swayed too much by greed, and thinking the salaries given by you insufficient, went over to Malayaketu, believing that they could get more there. Regarding your old attendant Rajsena, he too, through your favour having suddenly come by great affluence with elephants, horse and immense wealth, went and joind Malayaketu from fear of its being taken back Now about the other foellow—Bhagurayana the younger brother of Sinhabala the Commender in chief, had contraced friendship with Parvataka at that time, and out of affection for him fri›htened Malayaketu in secret by inventing the story 'Your father was killed by Chandragupta" and made him leave the town When afterward Chandandasa and others, who were working harm unto you were being punished, he, through apprehensions due to his own guilt, ran away and attached himself to Malayaketu He too, thinking that he had saved his life, out of gratitude conferred upon him, his ministership, a rank next to his own Lastly, the two Lohitaksha and Vijayavarma could not bear, in their great vanity, what you gave to their relatives, and went over to Malayaketu These are the reasons for the disaffection of these men

टिप्पणी—(१) एतेषामपरागहेतून्—सम्राट् चन्द्रगुप्त इस तथ्य से पूर्ण परिचित है कि तथाकथित लोगों में यथार्थतः विरक्ति का कोई कारण नहीं है, फिर भी मात्र दिखाने के लिए यह विरक्ति के कारण को मान लेते हैं और इसी मान्यता के आधार पर आचार्य चाणक्य से इन्होंने प्रश्न किया है।

(२) अत्रयावेतौ—'यावेतौ' से तात्पर्य प्रति दो व्यक्तियों से है और ये दोनों अलग अलग अपनी विशेषताओं से सम्बद्ध हैं। यथा—

(१) भद्रभट और पुरुषदत्त—क्षुद्रकृत्य हैं।
(२) डिङ्गरात और बलगुप्त—लुब्धकृत्य हैं।
(३) राजसेन और भागुरायण—अवमानितकृत्य हैं।

(३) स्त्रीमद्यमृगयाशीलौ—मृगयनम् इति मृग, अदन्त चुरादि √मृग से णिच् प्रत्यय स्वार्थे + श भावे मृगया—स्त्री च मद्यञ्च मृगया च स्त्रीमद्यमृगया। ता शीलम् स्वभावम् ययोस्तौ स्त्रीमद्यमृगयाशीलौ—मृगया + शील + णिच् स्वार्थे + न कर्तरि। मनुस्मृति में राजा के अधोङ्कित चार व्यसन बतलाये गये हैं—पानम्, अक्षा, स्त्रिय, मृगया।

(४) स्वेन स्वेन अधिकारेण—यहाँ 'करण तृतीया' से तृतीया विभक्ति हुई है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिन्हें जिन-जिन पदों से हटाया गया, मलयकेतु के यहाँ उन्हें उन्हीं उन्हीं पदों पर नियुक्त कर लिया गया।

(५) अनभियुक्तौ—अन + अभि + युज् + क्त + विभक्ति कार्य से रूप की सिद्धि।

(६) अवरोप्य—अव + रुह् + ल्यप् + पुगागम् विभक्त्यादि कार्य।

राजा—एवमेतेषु परिज्ञातपरागहेतुषु क्षिप्रमेव कस्मान्न प्रतिविहितमार्येण।
चाणक्यः—वृषल, न पारित प्रतिविधातुम्।
राजा—किमकौशलादुत प्रयोजनापेक्षया।
चाणक्य—कथमकौशल भविष्यति। प्रयोजनापेक्षयैव।
राजा—प्रयोजनमिदानी श्रोतुमिच्छामि।

---

(७) तत्रकाले—पार्यलिपुत्र के घर के समय में। अर्थात् उस समय पर्वतक चन्द्रगुप्त के साथ रह कर उसकी सहायता कर रहा था।

(८) अतिप्रभूतकोशहस्त्यश्वम्—काशाश्च हस्तिनश्च अश्वाश्च कोशहस्त्यश्वा.। अतिप्रभूताः कोशहस्त्यश्वा यस्मिन् तादृशम्।

(९) ग्राहित—ग्रह् + णिच् + क्त विभक्ति कार्य से सम्पन्न रूप ग्राहित।

(१०) इति उत्पाद्य—इति एतद् उत्पाद्य कल्पयित्वा—वास्तविक घटना को भी मिथ्या रूप से मनुष्यों को विश्वास दिलाने के लिए विस्तृत कर दिया गया है।

(११) स्वदोषाशकया—स्वस्य दोष स्वदोष तस्य आशका तया स्वदोषाशकया।

(१२) प्राणरक्षक—प्राणान् रक्षतीति—प्राण + रक्ष् + अण् कर्त्तर—प्राणरक्ष—उसके बाद स्वार्थ में कन् प्रत्यय करने पर प्राणरक्षक रूप की सिद्धि।

(१३) अनन्तरम्—अविमानमन्तरमस्य इति अनन्तरम्—सन्निकट।

(१४) दायादस्य—दाय पैतृकधनम् अदन्ति इति दायदा दाय + अद् + अण् कर्त्तरि दायादा नम्य। 'दायाद' का अर्थ होता है उत्तराधिकार के अधिकारी। यहाँ इसका सामान्य अर्थ सम्बन्धी मात्र है। चतुर्थी बहुवचने से यहाँ विभक्त्यादि कार्य हुआ है।

विमला

व्याख्या—राजा—एवम् = उक्तप्रकारेण (being thus), परिज्ञाता=अवगता (known), अपरागाणाम् = विरागाणाम् (discontent), हेतव = कारणानि (the reasons), येषा ते तयोक्तास्तेषु—एतेषु = भद्रभटादिषु (of these men), क्षिप्रमेव = शीघ्रमेव (promptly), कस्मान्न=कुतो न (why not), आर्येण = भवता (by noble sir), प्रतिविहितम् = प्रतिकार कृत. (Counteract them).

चाणक्य—वृषल = मौर्य (Vrishal), प्रतिविधातुम् = प्रतिकर्तुम् (to counteract), न पारितम् = न युक्तम् (was not possible)

राजा—अकौशलात् = असामर्थ्यात् (to want of skill), उत् = अथवा (or), प्रयोजनापेक्षया = यत् किञ्चित् इप्सितफलानुरोधेन (in view of some object), किम् (why)

चाणक्य—कथम् = कस्मात् (How could), अकौशलम् = असामर्थ्यम् (be tactless), भविष्यति, प्रयोजनापेक्षयैव = ईप्सीतकार्यानुरोधेनैव (in view of some object indeed).

राजा—इदानीम् = अधुना (now), प्रयोजनम् = कारणम् (purpose), श्रोतुम् (to hear), इच्छामि = वाञ्छामि (I want),

चाणक्यः—श्रूयतामवधार्यतां च। इह खलु विरक्तानां प्रकृतीनां द्विविधं प्रतिविधानम्—अनुग्रहो निग्रहश्च। अनुग्रहस्तावदाक्षिप्ताधिकारयोर्भद्रभटपुरुषदत्तयोः पुनरधिकारारोपणमेव। अधिकारश्च तादृशेषु व्यसनयोगादनभियुक्तेषु

हिन्दी—राजा—किन्तु, इस प्रकार इन सबों की अपरिक्ति के विविध हेतु आपको मालूम थे, तो फिर समय पर इनका प्रतिकार आपने क्यों नहीं किया।

चाणक्य—प्रतिकार किया नहीं जा सका वृषल!

राजा—क्यों असामर्थ्य से अथवा किसी प्रयोजनविशेष के कारण।

चाणक्य—कैसी अकुशलता? प्रयोजनविशेष के कारण ही प्रतिकार नहीं किया जा सका।

राजा—हाँ तो, वह प्रयोजन भी तो सुनूं।

English—*King*—The causes of their discontent if were known, why were not promptly remedied by noble sir?

Chanakya—Vrishala, these could not be possible to counteract.

King—Why owing to went of skill or in view of some purpose.

Chanakya—How could it be tactlessness? There was a special purpose in view.

King—That purpose I want now to hear.

टिप्पणी—(१) पारितन्—पार+णिच् स्वार्थे चुरादि+क्त भावे।

(२) अकौशलात्—कुशलस्य भावः कौशलम्—न कुशलः अकुशलः तस्य भावः।

विमला

व्याख्या—चाणक्य—श्रूयताम् = आकर्ण्यताम् (listen), अवधार्यताम् = विचार्यताम् (learn), च=पुनः (*and*), इह = अस्मिन् लोके (*in this world*), विरक्तानाम् = अनुरागशून्यानाम् (discontented), प्रकृतीनाम् = प्रजानाम् (subjects), द्विविधम्=द्विप्रकारम् (two fold), प्रतिविधानम् = प्रतीकारम् (remedy), अनुग्रहः = अनुकम्पा (favour), च=पुनः (and), निग्रहः = दण्डः (punishment), तावत् = आदौ (at first), आक्षिप्ताधिकारयोः = स्वायत्तीकृतकार्यभारयोः (whose offices have been wrested from them), भद्रभटपुरुषदत्तयोः (In the case of Bhadrabatta and Purusdatta), पुनरधिकारारोपणम् = भूयः कार्याविचणस्थापनमेव (re-appointment alone), अनुग्रहः = अनुकम्पा (to show favour), व्यसनयोगात् = स्त्रीमद्यास्वेटाभियोगात् (on account of their *addiction to vice*), अनभियुक्तेषु = अयोग्येषु (careless), तादृशेषु = आक्षिप्ताधिकारेषु (like so), पुनः = भूयः (again), आरोप्यमाणः = स्थाप्यमानः (re-entrusted), अधिकारः = हस्त्यश्वरक्षणाध्यक्षत्वम् (be restored to office), राज्यस्य = आधिपत्यस्य (of the kingdom), मूलम्=कारणम् (basis), हस्त्यश्वम्=गजघोटकम् (cavalry and elephant force), अवसादयेत् = विनाशयेत् (would ruin), अत्यन्तलुब्धप्रकृतयोः = अतितृष्णाग्रस्तस्वभावयोः (extremely greedy), सकलराज्यप्रदानेनापि=निखिलप्रजाधिपत्यवितरणेनापि (even by the

पुनरारोप्यमाणः सकलमेव राज्यस्य मूलं हस्त्यश्वमवसादयेत्। डिङ्गरातबलगुप्तयोरतिलुब्धयोः सकलराज्यप्रदानेनाप्यपरितुष्यतोरनुग्रहः कथं शक्यः। राजसेनभागुरायणयोस्तु धनप्रणाशभीतयोः कुतोऽनुग्रहस्यावकाशः। लोहिताक्षविजयवर्मणोरपि दायादमसहमानयोरतिमानिनोः कीदृशोऽनुग्रहः प्रीतिं जनयिष्यतीति परिहृतः पूर्वः पक्षः। उत्तरोऽपि खलु वयमचिरादधिगतनन्दैश्वर्याः सहोत्थायिनं प्रधानपुरुषवर्गमुग्रेण दण्डेन पीडयन्तो नन्दकुलानुरक्तानां प्रकृतीनामविश्वास्या एव भवाम इत्यतः परिहृत एव। तदेवमनुगृहीतास्मत्पक्षो राक्षसोपदेशप्रवणो महीयसा म्लेच्छबलेन परिवृतः पितृवधामर्षी पर्वतकपुत्रो मलयकेतुरस्मानभियोक्तुमुद्यतः। सोऽयं व्यायामकालो नोत्सवकाल इति दुर्गसंस्कारे प्रारब्धव्ये किं कौमुदीमहोत्सवेनेति प्रतिषिद्धः।

---

gift of the whole kingdom), अपरितुष्यतोः = सन्तोषमप्राप्नुवतोः (would not be contented), डिङ्गरातबलगुप्तयोः (Dingurat and Balgupta), अनुग्रहः = दया (conciliation), कथम् = केन प्रकारेण (how could), शक्यः = योग्यः (be possible), धनप्रणाशभीतयोः = धनक्षयसंजातसाध्वसयोः (were afraid of losing their property), राजसेनभागुरायणयोः (Rajsen and Bhagurayan), विषये = सम्बन्धे (In the case of), अनुग्रहस्य = दयायाः (a kind), कुतः = कथम् (how), अवकाशः = अवसरः (scope for), दायादम् = ज्ञातिम् (relatives), असहमानयोः = असूयतोः (jealous of), अतिमानिनोः = अत्यन्ताभिमानवतोः (are extremely proud), लोहिताक्षविजयवर्मणोरपि (Lohitaksha and Vijayavarma also), विषये = सम्बन्धे (about), कीदृशः (what kind of), अनुग्रहः = दया (favour), प्रीतिम् = हर्षम् (the affection), जनयति = समुत्पादयति (won), इति = अतः (so), पूर्वपक्षः = प्रथमकोऽनुग्रहरूपः (the first alternative), परिहृतः = त्यक्तः (to abandon), खलुशब्दो वाक्यालङ्कारे, अचिरात् = शीघ्रम् (recently), अधिगतनन्दैश्वर्याः = प्राप्तनन्दसम्पदः (acquisition of the realm of the Nandas), सहोत्थायिनम् = युगपदुत्थानशीलम् (adherents), प्रधानपुरुषवर्गम् = मुख्यलोकसमूहम् (the influential persons), उग्रेण = तीक्ष्णेन (with hard), दण्डेन = निग्रहेण (punishment), पीडयन्तः = क्लेशयन्तः (inflicted), नन्दकुलानुरक्तानाम् = नन्दान्वयानुरक्तानाम् (*attached to the family of* Nandas), प्रकृतीनाम् = प्रजानाम् (subjects), अविश्वास्याः = अप्रतीत्याः भवामः (we become objects of distrust), इत्यतः = अस्माद्धेतोः (for this), उत्तरोऽपि = द्वितीयोऽपि (the last too), परिहृतः = त्यक्त एव (is indeed dismissed), एवम् = उक्तप्रकारेण (so having thus), अनुगृहीतः = अनुकम्पयावलम्बितः (having favoured), अस्मत्पक्षः = भद्रभटादिवर्गः (Bhadrabhata and others), राक्षसोपदेशप्रवणः = राक्षसकर्तृकशिक्षणानुरक्तः (guided by the counsels of Rakshasa), महीयसा = महता (a large), म्लेच्छबलेन = म्लेच्छसैन्येन (with force of Mlechchhas), परिवृतः =

युक्त (stands), पितृवधामर्षी=पातव्यापादनजन्यक्रोधयुक्तः (angered by the murder of his father), पर्वतकपुत्र=मलयकेतु (the son of Parvataka Malayaketu by name), अस्मान् अभियोक्तुम्=पराभवितुम्, उद्यत=तत्पर (is preparing to attack us), सोऽयम् (thus), व्यायामकाल=सैन्यसंग्रहाधात्मरोधिकप्रयासकाल (the present in the time for exertion), नोत्सवकाल (not for festivities), अतोऽस्मात् कारणात् (therefore), दुर्गसंस्कारे (as repairs to the fort), आरब्धव्ये=प्रक्रमितव्ये (to be commenced), किम्=किम् प्रयोजनम् (what), कौमुदीमहोत्सवेन=शारदोत्सवेन (by the Kaumudi festival), इति=अनेन कारणेन (for this reason), प्रतिषिद्ध=परित्यक्त-(I forbade it)

हिन्दी—चाणक्य—वृषल, सुनो और विचार करो। इस संसार में विद्रोही प्रजा का प्रतिकार दो ही प्रकार से सम्भव है—या तो अनुग्रह से और नहीं तो निग्रह से। अब पदच्युत भद्रभट और पुरुषदत्त के प्रति, अनुग्रह करना तो यही होता कि उन्हें उनके पदों पर पुन नियुक्त कर दिया जाय। किन्तु, क्या ऐसे दुर्व्यसनग्रस्त और शासन कार्य में सर्वथा असावधान व्यक्तियों को विषय में पुन आरोपित किया जाता हुआ अधिकार सम्पूर्ण राज्य के ही मूल गजसेना और अश्वसेना को नष्ट नहीं कर देता। अत्यन्त लोभी डिङ्गुरात और बलगुप्त पर जो स्वभाव से ही महालोभी हों और जिन्हें सारा साम्राज्य सौंपकर भी प्रसन्न नहीं किया जा सके किस प्रकार का अनुग्रह? अब रह राजसेन और भागुरायण जो अपने अपने धन और प्राण का भय रखने वाले हैं। इन पर भला अनुग्रह का कहाँ अवकाश? इसी प्रकार लोहिताक्ष एवं विजयवर्मा हैं, जिन्हें अपने दायादों की बढती से कुढन है और जिनके अभिमान का कोई ठिकाना नहीं, किस प्रकार के अनुग्रह से भला खुश किए जा सकते? बस इन्हीं कारणों से अनुग्रह का पक्ष तो छूट ही गया। अब रहा निग्रह का पक्ष जिसे छोड देना इसलिए उचित समझा गया कि जिसमें अभी अभी नन्द का ऐश्वर्य हस्तगत करनेवाले हम लोगों के द्वारा यदि नाम के साथ निभाने वाले प्रमुख राजपुरुषों को कठोर दण्ड दे-देकर पीडित किया जाने लगा तब भला नन्दवंशानुरक्त प्रजा क्यों कर हम पर विश्वास करेगी? अत इस प्रकार हमारे पक्ष के व्यक्तियों पर अनुग्रह करनेवाला, राक्षस की राजनीति सुनने में तत्पर, महान् म्लेच्छों की सेना से युक्त, पिता की मृत्यु से क्रोधित, पर्वतक का पुत्र मलयकेतु जब हम पर आक्रमण करने के लिए उद्यत है, तब भला—यह युद्ध की तैयारी का समय है अथवा उत्सव मानने का समय? इसी प्रकार दुर्ग के संस्कार प्रारम्भ किये जाने के अवसर पर भला कौमुदी महोत्सव मनाने से क्या लाभ? अत इसे रोक दिया गया।

English—*Chanakya*—Listen and consider There are only two ways to treat with discontented subject—favour and punishment Favour in the case of Bhadragupta and Purusdatta after re-appointing them on their ceased posts And office again reconfined to people so careless through their addiction to vice, would destroy our whole body of horses and elephant—the main pillar of the kingdom How the favour is possible to Dingurat and Balgupta-extreme greedy

persons—who will never be contented even by giving the whole kingdom. There was not a least scope of favour in the case of Rajsena and Bhagurayan who were always afraid of their life and wealth. What sort of kindness is to be given to Lohitaksha and Vijoyvarman who are always jealous of their relatives and are always proud? So I left the first (favour) The other (punishment) was also abandoned for after our recent gaining of the Nanda's kingdom. We grinding with hard punishment the batch of high officers that made common cause with us, shall be the object of destruction to the subjects attached to the family of Nanda forever. So having favour our people in this way, Malayaketu, the son of Parvataka being angry by the murder of his father, is ready to attack us with a large force of Mlechchhas following the advice of Rakshasa. So it is the time of exertion and not of fastivities. Thinking so, what is to be gained by Kaumudi fastival at the time of repairs to the fort? It was forbidden.

टिप्पणी—(१) अवसादयन्—अव+सद्+णिच्+लोट् शान् कर्मणि।

(२) प्रतिविधानम्—प्रति+वि+धा+ल्युट् भावे+विभक्ति कार्य।

(३) आश्रितनिकार—आ+श्रि+क्त कर्तरि—आश्रित, अधिकार: अनयो: इति।

(४) अधिकारारोपणात्—अधिकार आरोपणम् = अधिकारारोपणम्—इत्युक्त सूत्र से समास किया गया है।

(५) परिहृत—परि+हृ+क्त कर्मणि।

(६) हस्त्यश्वम्—हस्तिनश्च अश्वाश्च इति 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' इस सूत्र से सेना का अङ्ग होने के कारण द्वन्द्व समास एवं एकवद्भाव हुआ।

(७) धनप्राणनाशभयात्—राजसेन धन के विनाश के डर से और भागुरायण प्राणों के विनाश के डर से।

(८) उभयमपि—अर्थात् 'विग्रह' का पक्ष भी छोड दिया गया। इस कथन में चाणक्य का तात्पर्य यह है कि यदि अभी हम पक्ष के लोगों को दण्ड देते हैं तो हम पर नन्द के सहायक एवं मित्र जो अभी हमारे सहयोगी बने हैं—अविश्वास करना प्रारम्भ कर देंगे—यह सोचकर कि जब ये अपने लोगों को ही इतना कठोर दण्ड दे सकते हैं तो फिर हमारे साथ इनका उदार व्यवहार कैसे होगा!

(९) अत्युद्योगान्तरम्—इससे मित्रशक्ति का ह्रास एवं शत्रुपक्ष की अभिवृद्धि सूचित हुआ है।

(१०) म्लेच्छबलेन—इससे मलयकेतु की अजेय शक्ति की सूचना मिलती है।

(११) पितृवधामर्षी—मलयकेतु अपने पिता की हत्या का बदला लेने पर उतारू है। अतः इससे सन्धि की किसी भी प्रकार सम्भावना नहीं है।

राजा—आर्य, बहु प्रष्टव्यमत्र।

चाणक्यः—वृषल, विश्रब्ध पृच्छ। ममापि बह्वाख्येयमत्र।

राजा—सोऽप्यस्य सर्वस्यानर्थस्य हेतुर्मलयकेतुः कस्मादपक्रामन्नुपेक्षितः।

चाणक्यः—वृषल, अनुपेक्षणे द्वयी गतिः निगृह्येत वा प्रतिश्रुतं राज्यार्धं प्रतिपाद्येत वा। निग्रहे तावत् पर्वतकोऽस्माभिरेव व्यापादित इति कृतघ्नतायाः स्वहस्तो दत्त स्यात्। प्रतिश्रुतराज्यार्धप्रतिपादनेऽपि पर्वतकविनाशः केवलं कृतघ्नतामात्रफलः स्यादिति मलयकेतुरपक्रामन्नुपेक्षितः।

राजा—अत्र तावदेवम्। राक्षसः पुनरिहैव वर्तमान आर्येणोपेक्षित इत्यत्र किमुत्तरमार्यस्य।

विमला

व्याख्या—राजा—आर्य=मान्य, श्रीमन् (Noble preceptor), अत्र=अस्मिन् विषये (in this matter), बहु=अति (much), प्रष्टव्यम् (to ask).

चाणक्य—वृषल (Vrishal), विश्रब्धम्=विश्वस्तम् (freely), पृच्छ=ब्रूहि (ask), ममापि (I have too), बहु (much), आख्येयम्=वक्तव्यम् (to explain), अत्र (in this matter).

राजा—सोऽपि=असावपि (he too), अस्य=एतस्य (this), सर्वस्यानर्थस्य=सर्वानिष्टस्य (of all the evil), हेतु=कारणम् (the root), मलयकेतुः (Malayaketu), अपक्रामन्=इतो निस्सरन् (to escape), कस्मात्=कुतः कारणात् (why did), उपेक्षितः=परित्यक्त (overlooked).

चाणक्य—वृषल (Vrishal), अनुपेक्षणे=निःसरणावरोधपरित्यागे (if not over looked), द्वयीगति=द्विप्रकारोपाय (two courses), निगृह्येत=दण्ड्येत (to punish), वा=अथवा (either), प्रतिश्रुतम्=प्रतिज्ञातम् (Promised), राज्यार्द्धम् (half of the kingdom), वा=अथवा (or), प्रतिपाद्येत=दीयेत (to give), निग्रहे=दण्डे (to have punished), तावत्=वाक्यालंकारे प्रयोगः पर्वतक (Parvataka), अस्माभिरेव (by us), व्यापादितः=विनाशितः (was killed), इति एवं (like this), कृतघ्नतायाः=कृतोपकारस्यापकारितायाः (ingratitude), स्वहस्तो (our own hand), दत्तः स्यात्=भवेत् (should have lent), प्रतिश्रुतराज्यार्द्धप्रतिपादनेऽपि=प्रतिज्ञातार्द्धराज्यदानेऽपि (in making over half the kingdom promised), पर्वतकविनाशः=मलयकेतुपितृवध (the *murder of Parvataka*), केवलम् (*only*), *कृतघ्नतामात्रफलः=result of* ingratiude), स्यादिति=भवेदिति (would have been), मलयकेतुरपक्रामन्=मलयकेतु इतोनिर्गच्छन् (Malayaketu while escaping), उपेक्षितः=परित्यक्तः (was overlooked).

राजा—अत्र=अस्मिन् विषये (in this matter), तावत्=प्रथमम् (at first), एवम्=इत्थमुत्तरम् (is indeed), राक्षसः (Rakshasa), पुनः (again), इहैव=अस्मिन्नेव (in this very city), वर्त्तमानः=विद्यमानः (staying),

चाणक्यः—राक्षसोऽपि स्वामिनि स्थिरानुरागित्वात् सुचिरमेकत्र वासाच्च शीलज्ञानां नन्दानुरक्तानां प्रकृतीनामत्यन्तविश्वास्यः प्रज्ञापुरुषकाराभ्यामुपेतः

आर्येण=पूज्येन (by noble preceptor), उपेक्षितः=न गृहीतः (neglected), इत्यत्र=राक्षसोपेक्षणे (to this), आर्यस्य=भवतः (Noble preceptor's), किमुत्तरम् (what is explenation).

हिन्दी—राजा—आर्य, इस विषय में बहुत से प्रश्न हैं।

चाणक्य—वृषल, विश्वासपूर्वक पूछो। मुझे भी इस विषय में बहुत कुछ कहना है।

राजा—इस सम्पूर्ण अनर्थ का कारण मलयकेतु भागता हुआ क्यों उपेक्षित कर दिया गया?

चाणक्य—वृषल, उपेक्षा न करने पर दो ही परिणाम होते—पकड़ लिया जाता अथवा प्रतिज्ञा के अनुसार आधा राज्य दे दिया जाता। पकड़ लेने पर तो पर्वतक हमारे द्वारा ही मार डाला गया—इस प्रकार कृतघ्नता को अपना ही सहारा देना होता। एवं प्रतिज्ञात राज्य के आधे भाग देने पर भी पर्वतक का विनाश केवल कृतघ्नता मात्र फल वाला होता। अतः भागता हुआ मलयकेतु उपेक्षित कर दिया गया।

राजा—इस विषय में तो ऐसा है। किन्तु, यहीं रहता हुआ राक्षस आर्य के द्वारा उपेक्षित किया गया—इस विषय में आर्य का क्या उत्तर है?

English—*King*—Noble preceptor, I have much to ask in this matter.

Chanakya—Vrishala, ask freely. I too have much to explain.

King—Why did you allow Malayaketu, the root of all the evil, to escape?

Chanakya—Vrishala, there would have been two courses—to punish him or to give him half of the kingdom as promised. To have punished him—we should have lent our own hand to the treachery and ingratitude that Parvataka was killed by ourselves. In making over half the kingdom promissed, again, the only result of the assassination of Parvatka would have been the sin of ingratitude. Hence Malyaketu was overlooked, while escaping.

King—It is indeed so in this matter. Then again you neglected to take proper steps against Rakshasa who was living here what has your sir to say to this?

निन्दा

व्याख्या—चाणक्य—राक्षसोऽपि (Rakshasa too), स्वामिनि=प्रभौ (to master), स्थिरानुरागित्वात्=दृढप्रेमवत्त्वात् (unswerving devotion), सुचिरम्=बहुकालम् (long), एकत्र=एकस्मिन् स्थाने (in one place), वासात्=अवस्थानात् (stay), शीलज्ञानाम्=चरित्राभिज्ञानाम् (appreciate character), नन्दानुरक्तानाम्=नन्दस्नेहयुक्तानाम् (Loyal to Nanda), प्रकृतीनाम्=प्रजानाम् (of the

सहायसम्पदाभियुक्तः कोशवानिहैवान्तर्नगरे वर्तमानः खलुः महान्तमन्तःकोपमुत्पादयेत्। दूरीकृतस्तु बाह्यकोपमुत्पादयन्नपि कथमप्युपायैर्वशयितुं शक्य इत्ययमत्रस्थ एव हृदयेशयः शङ्कुरिवोद्धृत्य दूरीकृतः।

राजा—आर्य, कस्माद् विक्रम्य न गृहीतः।

चाणक्यः—राक्षसः खल्वसौ। विक्रम्य गृह्यमाणो युष्मद्बलानि बहूनि नाशयेत् स्वयं वा विनश्येत्। एवं सत्युभयथापि दोषः। पश्य—

---

subjects), अत्यन्तम् = निरतिशयम् (the perfect), विश्वास्य = विश्रम्भपात्रम् (confidence), प्रज्ञापुरुषकाराभ्याम् = बुद्धि-पौरुषाभ्याम् (with intelligence and valour), उपेत = युक्तः (endowed), सहायसम्पदा = भृत्यात्मकसम्पत्त्या (by largs number of helpers), अभियुक्त = अन्वित (possessing), कोशवान् = अर्थसामर्थ्ययुक्तः (has a large treasure), इहैव = अत्रैव (this very), अन्तर्नगरे = नगरस्य मध्ये (within city), वर्तमान = तिष्ठन् (staying), महान्तम् = प्रचुरम् (serious), अन्तःकोपम् = आभ्यन्तरिकविद्वेषम् (internal disaffection), उत्पादयेत् = जनयेत् (would create), दूरीकृतस्तु = पृथक्कृतस्तु (but sent away), बाह्यकोपम् = बहिर्विद्वेषम् (disaffection out side), उत्पादयन्नपि = जनयन्नपि (having produced), कथमपि = केनापि प्रकारेण (anyhow), उपायैः (by expedients), वशयितुम् शक्य इति (would be possiple to manage), अयम् = असौ (he), अत्रस्थ एव (lived here), हृदयेशयः (rankling in the heart), शंकु = कण्टकः (plug), इव = यथा (like), उद्धृत्य = उत्पाट्य (was extracted), दूरीकृत = उपेक्षितः (removed to a distance).

राजा—आर्य = मान्य श्रीमन् (noble sir), कस्मात् = कुतः (why), विक्रम्य (सामर्थ्येन) (by force), न (did not), गृहीत = धृत (capture).

चाणक्य—राक्षसः = नन्दसचिवः (Rakshasa), खलु = वाक्यालङ्कारे, असौ = एषः (he is), विक्रम्य (बलेन) (by force), गृह्यमाण (in an attempt to seize), बहूनि (a large number of), युष्मद्बलानि स्वसैन्यानि (your warriors), नाशयेत् (have killed), वा = अथवा (or), स्वयं (*himself*), विनश्येत् (perished), एव सति (with such an attempt), उभयथापि दोष = उभयस्मिन्नपि हानि. (undesirable result follows either way), पश्य (mark) :—

हिन्दी—चाणक्य—राक्षस की बात अलग है। राजा नन्द में उसकी अविचल भक्ति है। बहुत दिनों तक इसी एक ही स्थान पर रहने के कारण शहर में रहने वाले अनुयायियों का वह परम विश्वासपात्र बन चुका है, और फिर उसमें बुद्धि के साथ पुरुषार्थ भी है, एक अच्छा खासा मित्रवर्ग, और विशाल कोशबल उसके हाथ में है। यह अगर भीतर राजधानी में रहता तो निश्चय ही महान् आन्तरिक विद्रोह उत्पन्न करता। किन्तु यहाँ से भगा दिया गया, *बाहर के लोगों में विद्रोह उत्पन्न करता हुआ भी किसी तरह उपायों से वश में किया* जा सकता है। इसलिए यहाँ रहते हुए भी, कलेजे में लगे काँटे के समान, उखाड़ कर दूर कर दिया गया।

स हि भृशमभियुक्तो यद्युपेयाद् विनाशं
ननु वृषल वियुक्तः तादृशेनापि पुंसा ।
अथ तव बलमुख्यान् घातयेत् सापि पीडा
वनगज इव तस्मात् सोऽभ्युपायैर्विनेयः ॥ २५ ॥

राजा—लेकिन प्रभुशक्ति के द्वारा भी तो उसे पकड़ा जा सकता था।

चाणक्य—यह राक्षस है, आक्रमण करके पकड़ा जाता हुआ तुम्हारे बहुत सेना को नष्ट कर देता अथवा स्वयं लड़कर मर जाता। ऐसा होने पर, दोनों तरह से अनिष्ट है। देखो —

English—*Chanakya*—Again, Rakshasa, on account of his unswerving devotion to his master and long residence together, an object of great confidence to the subjects who are attached to the Nandas and appreciate character, he is endowed with intelligence and valour, is strong in allies and has a large treasure at his command. But sent away, he is capable of being forced to subjection, anyhow, by expedients through causing disaffection outside. So, like a plug rankling in the heart only when he is here, he was extracted and removed to a distance

King—Sir, why was he not seized by force ?

Chankya—He is Rakshasa, mind you, in an attempt to seize him by force, he would have either killed a large number of your warriors or perished himself. With such an attempt—an unwelcome result in either case. *See* .—

टिप्पणी—विस्रब्धम्—वि+स्रम्भ्+क्त+विभक्तिकार्यं (२) वशयितुम्—वश+णिच्+तुमुन्+विभक्तिकार्यं (३) पुरस्कार—पुरस्+कृ+घञ् करण पुरस्कारः—(४) आस्थेयम्—आ+स्था+यत्। (५) वशयितुम्—वश्+णिच्+तुमुन्। (६) हृदयेशय—हृदये+शी+अच्+कर्तरि।

निमला

अन्वयः—स , हि, भृशम्, अभियुक्तम्, यदि, विनाशम्, उपेयात्, ननु, वृषल, तादृशेन, पुंसा, वियुक्तः, असि, अथ, तव, बलमुख्यान्, घातयेत्, सा, अपि, पीडा, तस्मात्, स , वनगज , इव, अभ्युपायैः, विनेय ॥ २५ ॥

व्याख्या—सः=असौ (he), हि=निश्चये (indeed), भृशम्=हठात् (being hard), अभियुक्तः=आक्रान्तः सन् (pressed), यदि=चेत् (if), विनाशम्=मृत्युम् (death), उपेयात्=प्राप्नुयात् (to meet), ननु=निश्चयेन (indeed), वृषल=मौर्य (vrishala), तादृशेन=लोकोत्तरगुणशालिना (such a great), पुंसा=पुरुषेण (person). वियुक्तः=रहितः असि=भविष्यसि (would have lost), अथ=यदि (on the other hand), तव=भवतः (your), बलमुख्यान्=सेनापतीन् (leading fighters), घातयेत्=मारयेत् (to destroy), साऽपि (that again), पीडा=अपकृतिः (an injury), तस्मात्=तस्मात्कारणात् (so), सः=राक्षसः

राजा—न शक्नुमो वयमार्यस्य मतिमतिशयितुम्। सर्वथा अमात्यराक्षस एवात्र प्रशस्यतरः।

(he), वनगजः=आरण्यकः हस्ती (wild tusker), इव=यथा (like), अभ्युपायैः= कौशलेन (by stratagem), विनेयः=वशीकार्यः (be trained). ॥ २५ ॥

हिन्दी—वह राक्षस प्रचण्डता के साथ आक्रमण करते हुए यदि युद्ध में मारा गया तो निश्चय ही, हे वृषल, उसके जैसे एक योग्य व्यक्ति से तुम वञ्चित हो जाओगे। और—यदि कहीं उसने तुम्हारे सेनापति को मार डाला तो भी वह हमारे लिए कष्टकर ही होगा। अतः वह, जंगली हाथी की तरह उपायों से वशवर्ती बनाने योग्य है ॥ २५ ॥

English—If being hard pressed he is to meet death, then Vrishala *you are indeed deprived of such a great person.* If on the other hand he kills your leading fighters, that again is an injury. So like an elephant of the forest, he has to be trained with stratagems. 25.

टिप्पणी—(१) विक्रम्य—वि+क्रम्+ल्यप्।

(२) गृह्यमाण—ग्रह्+शानच्+कर्मणि+विभक्त्यादि कार्यं।

(३) वनगजः—वनचरो गजः—शाकपार्थिवादि से समास हुआ है।

मुद्राराक्षस—ऐतिहासिकता की दृष्टि से चाहे जो भी महत्त्व रखता हो किन्तु, स्थान स्थान पर भारतीय राजनीति के लिए अटकाव है। इसमें राजनीति के अनेक विषय हैं और प्रत्येक विषय के विविध स्तर हैं। कम से कम राजनीतिक दाँवों का आक्षितिज प्रसार प्राणों पर रजतातप का साया तो अवश्य ही डाल देता है। ऐसे एक निःश्वास-उच्छ्वास तक का आभास नहीं मिलता जो स्वस्थ राजनीति के सौरभ से आर्द्र न हो। चाणक्य की कुटिया से चन्द्रगुप्त के राजमहल तक राजनीति का एक समान ताना बाना बुना है। इस श्लोक में एक 'उपाय' शब्द में चाणक्य के द्वारा पूरे नाटक में साम दाम, भय, भेद आदि उपायों का जाल बिछा दिया गया है। इन उपायों में कुछ ये हैं :—

(१) भेद—मलयकेतु से राक्षस को अलग करना।

(२) *दण्ड—चन्दनदास को फांसी का दण्ड।*

(३) साम—राक्षस को मन्त्रित्व का पद।

(४) दाम—चन्दनदास को नगरश्रेष्ठी बनाना।

(५) उपेक्षा—राक्षस भगाने की उपेक्षा।

(६) इन्द्रजाल—*आत्महत्या का मिथ्याभिनय।*

इस श्लोक में राक्षस की उपमा वनगज के साथ विशाखदत्त की नाट्यकला की त्वचा सी बन गयी है और अमूर्त भावनाओं को मूर्त्त और मूर्त्त को मार्मिक बनाने का उपकरण बन गयी है। वनगज की प्रवृत्ति और राक्षस की प्रकृति में तुल्य बल्साहचर्य विशाखदत्त की उपमा की सार्थकता है। यहाँ उपमा अलकार और मालिनी छन्द है।

विमला

राजा—वयम् (we), आर्यस्य=पूज्यस्य (Noble sir's), मतिम्=बुद्धिम् (intellect), अतिशयितुम्=उल्लङ्घयितुम् (to surpass), न शक्नुमः=न पारयामः (we are unable), सर्वथा=सर्वप्रकारेण (after all), अमात्यराक्षस-

चाणक्यः—(सक्रोधम् ।) न भवानिति वाक्यशेषः । भो वृषल, तेन किं कृतम् ।

राजा—श्रूयताम् । येन खलु महात्मना—

ऋध्वायां पुरि यावदिच्छमुषितं कृत्वा पदं नो गले
व्याघातो जयघोषणादिषु बलादस्मद्बलानां कृतः ।
अत्यर्थं विपुलैः स्वनीतिविभवैः संमोहमापादिता
विश्वास्येष्वपि विश्वसन्ति मतयो न स्वेषु वर्गेषु नः ॥ २६ ॥

एव = नन्दप्रधानसचिव (minister Rakshasa), एवात्र प्रशस्यतरः = अतिशयेन प्रशस्य श्रेष्ठ (is more praiseworthy)

चाणक्य—[सक्रोधम् = सक्रोपम् (in anger)], न भवानिति वाक्यशेषः = राक्षसान्यो न प्रशस्यः इत्यवशिष्टवाक्यार्थः ("not you" is the remaining part of the sentence), भो वृषल (O Vrishal), तेन किं कृतम् = राक्षसेन किं विशिष्टकार्यं सम्पादितम् (what has he done)

राजा—श्रूयताम् (Listen), तेन (by him), महात्मना (a magnanimous soul) —

अन्वयः—लब्धायाम्, पुरि, नः, गले, पदम्, कृत्वा, यावदिच्छम्, उषितम्, अस्मद्बलानाम्, जयघोषणादिषु, बलात्, व्याघातः, कृतः विपुलैः, स्वनीति विभवैः, एव, अत्यर्थम्, सम्मोहम्, आपादिताः, नः, मतयः, विश्वास्येषु, अपि, स्वेषु, वर्गेषु, न, विश्वसन्ति ॥ २६ ॥

व्याख्या—लब्धायाम् = प्राप्तायाम् (had been captured), पुरि=नगर्याम् (in the city), नः=अस्माकम् (our), गले = ग्रीवायाम् (on neck), पदम् = चरणम् (foot), कृत्वा=विधाय (planting), यावदिच्छम् = यथेच्छम् (as long as he desired), उषितम् = निवसितम् (dwelt), अस्मद्बलानाम् = अस्मत्सैन्यानाम् (by our forces), जयघोषणादिषु=विजयघोषादिषु (to the proclamation of victory), बलात्=हठात् (forcibly), व्याघातः=विघ्नः (obstruction), कृतः=उत्पादित (offered), विपुलैः=विशालैः (great), स्वनीतिविभवैः= निजनिर्दोषनयबलैः (with the majesty of his policy), एव अत्यर्थम् = अत्यधिकम् (exceeded), सम्मोहम् = व्यग्रताम् (bewilderment), आपादिताः= प्रापिताः (thrown), न = अस्माकम् (our), मतयः = बुद्धयः (mind), विश्वास्येषु=विश्वासयोग्येषु (in even most trustworthy), अपि, स्वेषु = स्वकीयेषु (own), वर्गेषु पक्षेषु (partisans), न विश्वसन्ति=सन्दिह्यते (has no confidence) ॥ २६ ॥

हिन्दी—राजा—इन आचार्य को युक्तियों का उत्तर युक्तियों से तो दे नहीं सकते। किन्तु, सब कुछ देखकर लगता यही है कि अमात्य राक्षस ही सर्वप्रकार से प्रशंसनीय हैं।

चाणक्य—(क्रोध के साथ) 'न कि आप'—यह वाक्य का शेषांश है। ओ वृषल, उसके द्वारा क्या किया गया ?

राजा—यदि नहीं पता है तो सुन लीजिए—उस महात्मा के द्वारा :—

चाणक्यः—(विहस्य) एतत्कृत राक्षसेन ! वृषल, मया पुनर्ज्ञातं नन्दमिव भवन्तमुद्धृत्य भवानिव भूतले मलयकेतू राजाधिराजपदे नियोजित इति !

राजा—अन्येनैवेदमनुष्ठितं किमत्रार्यस्य !

चाणक्य—हे मत्सरिन्,

आरुह्यारूढकोपस्फुरणविषमिताग्राङ्गुलीमुक्तचूडां
लोकप्रत्यक्षमुग्रां सकलरिपुकुलोत्सादवीर्घां प्रतिज्ञाम्।

नगर पर हमारा अधिकार था, किन्तु जब तक वह रहा, स्वच्छन्दतापूर्वक रहा और हमारी गर्दन पर पैर रख कर रहा। हमारी सेनाओं के जयघोष में सदैव उसने विघ्न ही उपस्थित किया। उसकी मति का कोई अन्त नहीं, हम विमूढ बने हैं और, आज हमारी यह स्थिति बन चुकी है कि हमें अपने विश्वासपात्र मित्रों पर भी विश्वास नहीं है ॥ २६ ॥

English—*King*—We are unable to surpass Noble sir's arguing. But after all Rakshasa is more praiseworthy.

Chanakya—(In anger) 'Not you' *is the remaining part of the* sentence O Vrishala, what has he done ?

King—Listen from me, He, a lion-hearted .—

Dwelt in the city which had been captured by us, as long as he desired planting his foot on our very neck and forcibly offered destruction to the ,proclamation of victory. Thus my mind is thrown into great confusion with the majesty of his policy and we do not trust even the most trustworthy of our own partisans 26

टिप्पणी—इस श्लोक में दीपक, अतिशयोक्ति एवं उदात्त अलङ्कार एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है ॥ २६ ॥

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[विहस्य = हास्य कृत्वा (laughing)], राक्षसेन (by Rakshasa), एतत्=कार्यम् (this), कृतम्=सम्पादितम्(was done), वृषल (Vrishal), मया=चाणक्येन (by me), पुनर्ज्ञातम्=बुद्धम् (thought), नन्दमिव (like Nanda), भवन्तम् (you), उद्धृत्य=उत्पाट्य (having been uprooted), भवानिव=त्वमिव (like you), भूतले=पृथिव्याम् (in the world), राजाधिराजपदे (to the dignity of king of kings), मलयकेतु (Malayaketu), नियोजित इति (has been raised)

राजा—आर्यस्य=पूज्यस्य (Noble sir's), अत्र=अस्मिन् विषये (in this), किम् (what has), इदम्=एतत् (that), अन्येनैव=भाग्येनैव (it was another), अनुष्ठितम्=सम्पादितम् (was done)

चाणक्य—हे मत्सरिन्=हे अन्योत्कर्षासहनशील (O you Detractor).

अन्वयः—लोकप्रत्यक्षम्, आरूढकोपस्फुरणविषमिताग्राङ्गुलीमुक्तचूडाम्, उग्राम्, सकलरिपुकुलोत्सादवीर्घाम्, प्रतिज्ञाम्, आरुह्य, केन, अन्येन, अवक्षिप्ता, नवनवतिशतद्रव्यकोटीश्वरा, ते, नन्दा, राक्षसस्य, पश्यत, एव, पर्यायभूता, पशव, इव, हताः ॥२७॥

केनान्येनावलिप्ता नवनवतिशतद्रव्यकोटीश्वरास्ते
नन्दाः पर्यायभूताः पशव इव हताः पश्यतो राक्षसस्य ॥ २७ ॥

व्याख्या—लोकप्रत्यक्षम्=लोकसमक्षम् (in the presence of the people), आस्कन्दत्परुषरोषविषमिताङ्गुलीमुक्तचूडाम्=संजातक्रोधावेशासमाङ्गुल्यग्रभागच्यावित-शिखाम् (the knot of hair was loosened by the tips of fingers forcibly agitated by the flashing of anger), उग्राम्=घोराम् (a dreadful), सकलरिपुकुलोत्सादसाध्यां=निखिलशत्रुवंशविनाशसम्भवाम् (difficult to be performed because the whole race of enemies having to be destroyed), प्रतिज्ञाम्=प्रतिज्ञातम् (vow), आरुह्य=विधाय (having made), केन=अन्येन (by whom else), अवलिप्ता=दृप्ताः (the proud), नवनवतिशतद्रव्यकोटीश्वराः=अभूतधनस्वामिनः (masters of ninetynine hundred crores of gold coins), ते नन्दाः=दुष्टत्वेन प्रसिद्धनन्दाः (Nine Nandas), राक्षसस्य=त्वदमात्यस्य (Rakshasa's), पश्यतः=अवलोकयतः (looking on), एव, पर्यायभूताः=एकैकशः निबद्धाः (in succession), पशवः=छागलाः (beasts), इव=यथा (like), हताः=विनाशिताः (killed). ॥ २७ ॥

हिन्दी—चाणक्य—(हँसते हुए) अच्छा तो, यह सब राक्षस का काम है। वृषल, मैंने तो समझा था कि तुम्हें ही उसने नन्दों पर से नन्द की तरह उठा दिया था और मलयकेतु को उस पर तुम्हारी भाँति बैठा दिया है।

राजा—अरे यह सब तो भाग्य से हुआ है, इसमें आपके बड़ों की बात कैसी?

चाणक्य—ओ ईर्ष्यालु,

मेरे अतिरिक्त ऐसा कौन है जिसने इस राक्षस के देखते-देखते, सारी दुनियाँ के सामने, अपने शत्रु के समूलोन्मूलन का यह भयङ्कर प्रतिज्ञा की, जिसने क्रोध के आवेग से काँपते हुए शरीर की उद्विग्न अंगुलियों ने शिखा खोल डाली और जिसके द्वारा अर्जित धन-सम्पत्ति के स्वामी, महाभिमानी महाराज नन्द और उनके वंशधर पशुओं की भाँति एक के बाद एक मौत के घाट उतार डाले गये ॥ २७ ॥

English—*Chanakya*—(laughing) This, It was done by Rakshasa ? I thought, however, Vrishala, that like you Malayaketu has been raised in the world to the dignity of king of kings and you having been uprooted like Nandas.

King—It was another that did this, what is in it of my noble sir ?

Chanakya—O, Detractor, By whom else, having made the grim vow in the presence of the people, difficult to be performed on account of the extirpation of the entire family of the enemy and in which the knot of hair was unloosened with the tips of fingers that were unsteadied by the sway of wrath that was rising within were the proud nine Nandas, the master of ninetynine crors of gold coins, killed by turns like beasts under the very eyes of Rakshasa 27.

अपि च—

गृध्रैराबद्धचक्रं वियति विचलितैर्दीर्घनिष्कम्पपक्षै-
धूमैर्ध्वस्तार्कभासां सघनमिव दिशां मण्डलं दर्शयन्तः।
नन्दैरानन्दयन्तः पितृवनिलयान् प्राणिनः पश्य चैतान्
निर्वान्त्यद्यापि नैते स्रुतबहलवसावाहिनो हव्यवाहाः ॥ २८ ॥

टिप्पणी—इस श्लोक में अर्थापत्ति एवं उपमा अलङ्कार तथा 'स्रग्धरा' वृत्त और ओजोगुण एवं गौडी रीति है।

विमला

अन्वयः—पश्य, वियति, आबद्धचक्रम्, विचलितैः, दीर्घनिष्कम्पपक्षैः, गृध्रैः, धूमैः, ध्वस्तार्कभासाम्, दिशाम्, मण्डलम्, सघनम्, इव, दर्शयन्तः, नन्दैः, च, पितृवननिलयान्, एतान्, प्राणिनः, आनन्दयन्तः, स्रुतबहलवसावाहिनः, एते, हव्यवाहाः, अद्य, अपि च, निर्वान्ति ॥ २८ ॥

व्याख्या—पश्य = अवलोकय (see), वियति = आकाशे (in sky), आबद्धचक्रम्=रचितमण्डलम् (making the circle), विचलितैः = भ्रमद्भिः (hovering), दीर्घनिष्कम्पपक्षैः = आयतनिश्चलच्छदाः (with wide and quiverless wings), गृध्रैः = दाक्षाय्यैः (vultures), तैरेव धूमैः = चिताग्निधूमैः (by the smoke), ध्वस्ता = विनष्टा (dimmed), अर्कस्य=सूर्यस्य (of the sun), भासः = कान्तयः (to the rays), दिशाम्=आशानाम् (of directions), मण्डलम्=चक्रकम् (round in circles), सघनम्=समेघम् (with clouds), इव=यथा (like), दर्शयन्तः=अवभासयन्तः (to appears), नन्दैः (Nandas), पितृवननिलयान्=श्मशानावासम् (live on the burning ground), एतान्=पुरोदृश्यमानान् (these), प्राणिनः = जीवान् (creatures), आनन्दयन्तः = प्रीणयन्तः (entertaining), स्रुतबहलवसावाहिनः=कायनिसृतदन्मेदधारिणः (which containing a large store of marrow), एते = दृश्यमानाः (these), हव्यवाहाः = अग्नयः (funeral fires), अद्यापि = सम्प्रत्यपि (even yet), न = नहि (do not), निर्वान्ति = शाम्यन्ति (go out). ॥ २८ ॥

हिन्दी—और भी—

देखो, अभी भी उस अग्नि की वे लिपटती लपटें, जले-मरे नन्दों से श्मशानवासी जीवों को तृप्त करने वाली ये ज्वालायें, नन्द के वंशधरों की पिघलने वाली चर्बियों से धू धू कर जलने वाली ये अग्नि शिखायें—दीर्घ निष्कम्प पक्षवाले चारों ओर आकाश में चक्कर काटते हुए गिद्धों के रूप में प्रत्यक्ष प्रतीत होने वाली धूमराशियों से नष्ट सूर्यालोक दिशाओं में घनान्धकार फैलाने वाली लपटें—अभी भी कहाँ बुझी हैं ॥ २८ ॥

English—*Moreover*—Behold, even yet do not go out these funeral fires, which containing in them a large store of marrow dripped down, and making the circle of directions appears as if *clouded* with sunlight dimmed by smoke in the shape of vultures hovering in the sky in circles with wide and quiverless wings, and

राजा—अन्येनैवेदमनुष्ठितम्।
चाणक्यः—आः, केन।
राजा—नन्दकुलविद्वेषिणा दैवेन।
चाणक्यः—दैवमविद्वांसः प्रमाणयन्ति।
राजा—विद्वांसोऽप्यविकत्थना भवन्ति।
चाणक्यः—(सक्रोधम्।) वृषल, भृत्यमिव मामारोढुमिच्छसि।

---

entertaining the creatures that haunt the cemetery with a feast on the Nandas. 28.

टिप्पणी—हव्यवाहः—हव्य + वह + अण् कर्तरि + विभक्ति कार्य।
(२) [illegible]—वह + [illegible] + [illegible] + [illegible]।
(३) निर्वान्ति—निर् + वा + लट् + अन्ति।
इस श्लोक में श्लेष अलङ्कार तथा स्रग्धरा वृत्त है।

विमला

व्याख्या—राजा—अन्येन (by another), एव = निश्चयेन (indeed), इदम् = एतत् (these), अनुष्ठितम् = कृतम् (has been done).

चाणक्यः—आः = आश्चर्यम् (Ah), केन (by whom).

राजा—नन्दकुलविद्वेषिणा (that hates the family of Nandas), दैवेन = भाग्येन (by fate).

चाणक्यः—दैवम् = भाग्यम् (fate), अविद्वांसः = मूर्खाः (illiterate alone), प्रमाणयन्ति = प्रमाणं कुर्वन्ति (believe in)

राजा—विद्वांसोऽपि = विज्ञोऽपि (the literate too), अविकत्थना = आत्मप्रशंसिनः (not given to boasting), भवन्ति (are).

चाणक्यः—[सक्रोधम् = सक्रोधम् (in anger)], वृषल (Vrishal), भृत्यमिव = दासमिव (like a servant), माम् = चाणक्यम् (me), आरोढुम् (to over ride), इच्छसि = वाञ्छसि (you wish).

हिन्दी—राजा—ये सारी बातें दूसरों के द्वारा ही हुई हैं।
चाणक्य—आः, किसके द्वारा?
राजा—नन्दकुल से द्वेष करनेवाले भाग्य के द्वारा।
चाणक्य—भाग्य को मूर्खजन प्रमाण मानते हैं।
राजा—विद्वान् लोग भी आत्मश्लाघक नहीं होते हैं?
चाणक्य—वृषल, नौकर के समान मेरे साथ व्यवहार करना चाहते हो।

English—*King*—These all have been done indeed by another.
Chanakya—Ah, by whom?
King—By fate that hates the family of the Nandas.
Chankya—The illiterate alone believe in fate.
King—The literate too are not given to boasting.

शिखां मोक्तुं वद्धामपि पुनरयं धावति करः

(भूमौ पाद प्रहृत्य)—

प्रतिज्ञामारोढुं पुनरपि चलत्येप चरणः ।
प्रणाशान्नन्दानां प्रशममुपयातं त्वमधुना
परीतः कालेन ज्वलयसि मम क्रोधदहनम् ॥ २९ ॥

Chanakya—(In anger) Vrishala, do you wish to trample down me like a slave.

विमला

अन्वयः—वद्धाम्, अपि, शिखाम्, मोक्तुम्, अयम्, कर, धावति, एप, चरणः अपि, पुन. प्रतिज्ञाम्, आरोढुम्, चलति, नन्दानाम्, प्रणाशात्, प्रशमम्, उपयातम्, मम, क्रोधदहनम्, अधुना, कालेन, परीतः, त्वम्, ज्वलयसि ॥ २९ ॥

व्याख्या—वद्धाम्=संयमिताम् (tied up), अपि (also), शिखाम्=चूडाम् (the knot of hair), मोक्तुम्=अपगतबन्धाम् कर्तुम् (to loosen), अयम्= एपः (this), कर.=हस्तः (hand), धावति=प्रसरति (runs), पुनः (again)—

[भूमौ=पृथिव्याम् (the ground), पादम्=चरणम् (foot), प्रहृत्य (stamping)] :—

प्रतिज्ञाम्=प्रणम् (vow), आरोढुम्=कर्तुम् (to enter into), चलति (moves), नन्दानाम् (Nandas), प्रणाशात्=विनाशात् (by the destruction), प्रशमम्=शान्तिम् (extinction), उपयातम्=प्राप्तम् (go out), मम=(my), क्रोधदहनम्=कोपाग्नि. (the fire of wrath), अधुना=सम्प्रति (now), कालेन=मृत्युना (by the god of death), परीत.=वशीकृतः (being doomed), त्वम् (you), ज्वलयसि=उद्दीपयसि (inflame) ॥ २९ ॥

हिन्दी—भाय. बँधी हुई शिखा को पुनः खोलने के लिए यह हाथ दौड़ रहा है।
(जमीन पर पैर पटक कर)—

यह पैर भी प्रतिज्ञा पर आरूढ होने के लिए आगे बढ रहा है। नन्दों के नष्ट हो जाने से शान्त हुई मेरी क्रोधाग्नि को इस समय मृत्यु के द्वारा वश में किये गये तुम प्रज्ज्वलित कर रहे हो ॥ २९ ॥

English—My hand again runs to loosen the knot of hair though tied up—(Stamping on the ground with his foot)
and this foot too rushes to enter into vow. Encompassed by death you now inflame the fire of my wrath that was extinguished by the destruction of Nandas. 29.

टिप्पणी—ज्वलयसि—ज्वल्+णिच्+लट्+सिप्। इस श्लोक में रूपक अलङ्कार तथा शिखरणी छन्द है।

राजा—(सावेगमात्मगतम् ।) अये, कथं सत्यमेवार्यः कुपितः । तथाहि—

संरम्भोत्स्पन्दिपक्ष्मक्षरदमलजलक्षालनक्षामयापि
भ्रूभङ्गोद्भेदधूमं ज्वलितमिव पुरः पिङ्गया नेत्रभासा ।
मन्ये रुद्रस्य रौद्रं रसमभिनयतस्ताण्डवेषु स्मरन्त्या
संजातोग्रप्रकम्पं कथमपि धरया धारितः पादघातः ॥ ३० ॥

विमला

राजा—[सावेगम्=उद्वेगसहितम् (in agitation), आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself)], अये=आश्चर्यसूचकसम्बोधनम् (ah), कथम्=कस्मात् (how), सत्यमेव=यथार्थरूपेण (is really), आर्यः=चाणक्यः (Noble sir), कुपितः=क्रोधितः (angry), तथाहि (Thus) :—

अन्वयः—संरम्भोत्स्पन्दिपक्ष्मक्षरदमलजलक्षालनक्षामया, अपि पिङ्गया, नेत्रभासा, भ्रूभङ्गोद्भेदधूमं, पुरः, ज्वलितम्, इव, मन्ये, ताण्डवेषु, रौद्रम्, रसम्, अभिनयतः, रुद्रस्य, स्मरन्त्या, धरया, संजातोग्रप्रकम्पम्, कथमपि, पादघातः, धारितः ॥ ३० ॥

व्याख्या—संरम्भेण=क्रोधावेगेन (in anger), उत्स्पन्दीनि=उच्चलितानि (raised up), यानि पक्ष्माणि=नेत्रलोमानि (the eyelids), तेभ्यः क्षरता=गलता (dropping), अमलजलेन=विशदक्रोधाश्रुणा (by the clear water), यत्क्षालनम् (by being washed), तेन क्षामया=रूक्षया (infirm), अपि (also), पिङ्गया=अरुणया (ruddy), नेत्रभासा=नयनकान्त्या (lustre of eyes), भ्रूभङ्गोद्भेदधूमः=कोपजन्यविकृतिधूमः (the knittings of the eyebrows appeared like smoke), पुरज्वलितम्=अग्रे प्रदीप्तम् (flashed forth), इव=यथा (like), मन्ये=सम्भावयामि (methinks), ताण्डवेषु=नृत्येषु (in frantic dances), क्रोधात्मकम् रौद्ररसम्=क्रोधात्मकम् रसम् (the Rudra rasa), अभिनयतः=अभिनयं कुर्वतः (acting), रुद्रस्य स्मरन्त्या=शिवस्य स्मृतिमधिगच्छन्त्या (have remembered Rudra), धरया=पृथिव्या (by the earth), सञ्जातः=उत्पन्नः (was born), उग्रः=भयङ्करः (fearful), कम्पः=कम्पनः (quaking), कथमपि=कथञ्चिद् (with difficulty), पादघातः=चरणप्रहारः (the stamping of his foot), धारितः=सोढः (has been withstood). ॥ ३० ॥

हिन्दी—राजा—(घबराहट के साथ अपने आप) अरे क्या सचमुच आर्य कुपित हो गये । जैसे :—

क्रोध के कारण फड़कने वाली पलकों से गिरने वाले स्वच्छ जल से धुल जाने के कारण मन्द पड़ी हुई भी लाल नेत्रों की ज्वाला के द्वारा भृकुटिभङ्गिमारूपी निर्गत धूमपूर्वक, सामने मानो प्रज्वलित हुआ-सा प्रतीत होता है, मानो ताण्डवनृत्य में रौद्र रस को अभिनीत करने वाले रुद्र का स्मरण करती हुई पृथ्वी के द्वारा, अपने में उत्पन्न भयङ्कर कम्पन के साथ किसी तरह चरण का प्रहार दुस्सह प्रतीत हुआ ॥ ३० ॥

चाणक्य —(कृतककोप सहृत्य।) वृषल वृषल, अलमुत्तरोत्तरेण। यद्यस्मत्तो गरीयान् राक्षसोऽवगम्यते तदिद शस्त्र तस्मै दीयताम्। (इति शस्त्रमुत्सृज्योत्थाय चाकाशे लक्ष्य बद्ध्वा, स्वगतम्।) राक्षस, एष भवत कौटिल्यबुद्धिविजिगीषो-र्बुद्धे प्रकर्ष —

चाणक्यतश्चलितभक्तिमहं सुखेन
जेष्यामि मौर्यमिति संप्रति य प्रयुक्तः।

English—*King*—(In agitation—to himself) Ha, how so, Noble sir, is really angry Thus—His ruddy eyes though dimmed by being washed by the clear water dropping from the eyelids raaised up in anger flashed forth As if it were fire in which the knittings of the eyesbrows appeared like smoke, and methinks the blow with the foot has been withstood by the earth somehow with a rude shock felt as if remembered Rudra acting the sentiment of wrath at his dances 30

टिप्पणी—इस श्लोक में रूपक और उत्प्रेक्षा अलङ्कार और स्रग्धरा छन्द है।

विमला

व्याख्या—चाणक्य —[कृतकम्=अतथ्यम् (Pretended), कोपम्=क्रोधम् (anger), संहृत्य=परित्यज्य (checking)], वृषल वृषल=वीप्सायां द्विरुक्ति (Vrishal, Vrishala), उत्तरोत्तरेण=वाग्विन्यासेन (of bandying words), अलम्=व्यर्थम् (enough), यदि, राक्षस =नन्दसचिव (if Rakshasa), अस्मत्तो गरीयान्=अस्मदपेक्षया श्रेष्ठ (is superior to me), अवगम्यते=अवबुध्यते (you think), तस्मादिदम्=एतत् (then let this), शस्त्रम्=आयुधम् (the weapon), तस्मै=राक्षसाय (to him), दीयताम्=प्रत्यर्प्यताम् (be entrused), [शस्त्रम्=आयुधम् (weapon), उत्सृज्य=परित्यज्य (throwing down), च=पुन (again), उत्थाय (rising), आकाशे=नभसि (in sky), लक्ष्यम् बध्वा=पुरुषाकार निश्चित्य (fixing the gaze), स्वगतम्=आत्मगतम् (to himself)], राक्षस Rakshasa), कौटिल्यबुद्धिविजिगीषो =चाणक्यमत्यतिक्रमणाभिलाषिण (in your desire to outdo the genius of Kautilya), भवत =तव (your), एष= असौ (this is), बुद्धे =धिय (intellect), प्रकर्ष =उत्कर्ष (the height)

अन्वय —शठ, चाणक्यत , चलितभक्तिम्, मौर्यम्, अहम्, सुखेन, जेष्यामि, इति, सम्प्रति, भवता, य , एष , भेद , प्रयुक्त , किल, स , सकल , एव, तव, एव, हि, दूषणाय, सम्पत्स्यते ॥ ३१ ॥

व्याख्या—शठ=धूर्त (O cunning one), चाणक्यत =चाणक्यात् (to Chanakya), चलितभक्तिम्=विनष्टश्रद्धा (has swerved from devotion), मौर्यम्=चन्द्रगुप्तम् (Maurya), अहम्=भेदप्रवण राक्षस (I), सुखेन=अनायासेन (easily), जेष्यामि=पराभविष्यामि (conquer), इति=इत्थ विचार्य (thinking

भेदः किलैष भवता सकलः स एव
संपत्स्यते शठ तवैव हि दूषणाय ॥ ३१ ॥
(इति निष्क्रान्तः ।)

---

that), सम्प्रति = अधुना (now), भवता = त्वया (by you), यः एषः=अस्माभिः परिज्ञातः (which has been), भेदः=उपजापः (hitting), प्रयुक्तः=उपक्रान्तः (adopted), किल सः=त्वया प्रयुक्तः (that), सकलः = समग्रः (whole), एव भेद तवैव = भवत एव (in your own), हि=इति निश्चयेन (indeed), दूषणाय = भेदाय (conviction), सम्पत्स्यते=भविष्यति (will end), इति निष्क्रान्तः (Exit). ॥ ३१ ॥

हिन्दी—चाणक्य—(कृत्रिम क्रोध को दूर कर) वृषल, वृषल, मुझे तुमसे वादविवाद नहीं करना है। यदि तुम राक्षस को हमसे बड़ा समझते हो, ये दो यह शस्त्र उसे (हथियार फेंककर, उठते हुए आकाश की ओर देखकर स्वगत) राक्षस, राक्षस, कौटिल्य की बुद्धि के विजयैषी हो न ! तुम्हारी बुद्धि का ऐसा प्रकर्ष।

अरे धूर्त, क्या यह चाल इसलिए चली है कि चन्द्रगुप्त को चाणक्य से शिथिलभक्ति देखते ही उसे अनायास जीत लोगे। तुमने जो यह फूट इन दोनों में पैदा करने की चेष्टा की है, देख लेना किस प्रकार तुम्हारा ही सर्वनाश करेगी ! ॥ ३१ ॥

(बाहर चला जाता है)

English—*Chanakya*—(Checking his pretended anger) Vrishala, Vrishala, no use bandying words. If Rakshasa is superior to me give him this weapon (Throwing down the weapon, rising and fixing the gaze in the sky) Rakshasa, Rakshasa, this is indeed the height of your wit that tries to beat the intellect of Kautilya !

The whole plan of dissension, which is now adopted by you thinking that you would very easily conquer Maurya, when he has swerved from his devotion to Chanakya, will end, O Rogue result in your own disgrace 31.

(Exit)

टिप्पणी—(१) उत्तरोत्तरेण—उत्तरत्वेन इति—उद्+तृ+अप् करने उत्तर्, उत्तरस्य उत्तरम्—वादविवाद देना। करण में तृतीया है।

(२) गरीयान्—अतिशयेन गुरुः इति—गुरु+ईयसुन् = गर = ईयसुन्—गरीयान्।

(३) चलितभक्तिम्—चलिते भक्तिरस्य। समानान्ये मतुप्कन्।

(४) तवैव हि दूषणाय—यहाँ 'दूषणाय' में 'क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः' इस वार्तिक से चतुर्थी है। दुष्+णिच्+ल्युट्+भावे दूषण, तस्मै।

इस श्लोक में 'विषम' अलङ्कार तथा 'वसन्ततिलका' छन्द है। प्रसाद गुण एवं वैदर्भी रीति है।

राजा—आर्य वैहीनरे, अत प्रभृत्यनादृत्य चाणक्य चन्द्रगुप्त स्वयमेव राज्य करिष्यतीति गृहीतार्थी क्रियन्ता प्रकृतय ।

कञ्चुकी—(आत्मगतम् ।) कथ निरुपपदमेव चाणक्यमिति, नार्यचाणक्यमिति । हन्त, सगृहीतोऽधिकार । अथ वा न खल्वत्र वस्तुनि देवदोप । कुत —

स दोप• सचिवस्यैव यदसत् कुरुते नृप ।
याति यन्तु प्रमादेन गजो व्यालत्ववाच्यताम् ॥ ३२ ॥

विमला

व्याख्या—राजा—आर्य=मान्य श्रीमन् (Noble sir), वैहीनरे (Vaihinari), अत प्रभृति = अद्यारभ्य (henceforth), चन्द्रगुप्त = मौर्य (chandragupta), चाणक्य = कौटिल्य (Chanakya), अनादृत्य = तिरस्कृत्य (ignoring), स्वयमेव=साक्षादेव (himself), राज्यम् = निग्रहानुग्रहात्मककृत्यम् (the affairs of state), करिष्यति=विधास्यति (will do), इति = एतत् वृत्तम् (this), प्रकृतय = प्रजा (subjects), गृहीतार्था = अवगताभिप्राया (be informed), क्रियन्ताम् = विधीयन्ताम् (let be)

कञ्चुकी—[आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)] कथम् = कुत (How is), निरुपपद =विशेषणशून्य (without a honorific added), चाणक्य (only Chanakya), नार्यचाणक्यम् इति=आर्यचाणक्यम् इति शब्दो न प्रयुक्त (not noble Chanakya), हन्त=खेदे (Alas !), सगृहीत = हृत (withdrawn), अधिकार (authority), अथवा = वा (or), न खल्वत्र वस्तुनि=नैवास्मिन्नधिकारहरणे (not in this matter) देवदोष = चन्द्रगुप्तापराध अस्ति (fault is sire's), कुत (for) —

अन्वयः—नृप , यत् , असत् , कुरुते, स , सचिवस्य, एव, दोप । यन्तु , प्रमादेन, गज , व्यालत्ववाच्यताम्, याति ॥ ३२ ॥

व्याख्या—नृप = राजा (King), यत्=यत् किमपि (to attempt), असत् अनुचितम् (dishonours), कुरुते=विदधाति (is), स (that), सचिवस्य=मन्त्रिण (of the minister), एव = इत्यवधारणे, दोष =अपराध (the fault), यन्तु हस्तिपकस्य (of the driver), प्रमादेन = अनवधानतया (through carelessness), गज=हस्ती (an elephant), व्यालत्ववाच्यताम् = दुष्टगजत्वेन निन्द्यताम् (to be censured as a vicious animal), याति = प्राप्नोति (comes) ॥ ३२ ॥

हिन्दी—राजा—आर्य वैहीनरे । आज से चाणक्य को हटाया, अब चन्द्रगुप्त स्वय राज-काज करेगा, जाओ और प्रजाओं को इससे अवगत करा दो ।

कञ्चुकी—(स्वगत) अरे, आज तो केवल 'चाणक्य' कह दिया, 'आर्य चाणक्य' अब गये, उनका सारा आधिपत्य भी चला गया—इसमें महाराज का क्या दोष !

यह तो सचिव का दोष है जो राजा कुछ अनुचित कर बैठे। महावत की असावधानी के कारण ही तो हाथी बिगड़ जाता है ॥ ३२ ॥

राजा—आर्य, किं विचारयसि ।

कञ्चुकी—देव, न किंचित् । दिष्ट्या देव इदानीं देवः संवृत्तः ।

राजा—(आत्मगतम् ।) एवमस्मासु गृह्यमाणेषु स्वकार्यसिद्धिकामः सकामो भवत्वार्यः । (प्रकाशम् ।) शोणोत्तरे, अनेन शुष्ककलहेन शिरोवेदना मां बाधते । शयनगृहमादेशय ।

प्रतीहारी—एदु एदु देवो । (एतु एतु देवः) ।

राजा—(आत्मगतम् ।)

English—*King*—Venerable Vaihinari, let the subjects be informed that henceforth, ignoring Chanakya, Chandragupta himself will rule.

Chamberlain—(To himself) How is it he says 'Chanakya' without a honorific added, not noble Chanakya? Alas! Authority has been drawn from him or in this matter sire is not to blame For—

It is the fault of the minister himself if the king dishonours him. The tusker comes to be branded as a 'rogue' through the carelessness of the driver. 32.

टिप्पणी—(१) निरुपपदम्—बिना किसी आदरसूचक विशेषण के । 'निरुपदम् उपपदम् अलग्नदा?' ।

(२) अपराद्धे—'अपराधादरयोः' सूत्र से [illegible] ।

(३) व्यालता—पागल हाथी को 'व्याल' कहते हैं ।

इस श्लोक में दृष्टान्त अलङ्कार एवं अनुष्टुप् छन्द है ।

निमता

व्याख्या—राजा—आर्य (Noble sir), किम् (what), विचारयसि=चिन्तयसि (thinking of).

कञ्चुकी—देव=राजन् (Sire), न किञ्चित्=न किमपि (nothing), विचारयामि=चिन्तयामि (I think), दिष्ट्या=भाग्येन (luckily), देव=राजन् (sire), इदानीम्=अधुना (now), देवः संवृत्तः=देवपदभाग्यो जातः (has become a king).

राजा—[आत्मगतम्=स्वगतम्=to himself)], एवम् (in this light), स्वकार्यसिद्धिकामः=आत्मकृत्यनिष्पत्त्यभिलाषी (expects success in the undertaking), सकामः=सफलमनोरथः (have his desire fulfilled), भवतु (let be), आर्यः (Noble sir), [प्रकाशम्=(aloud)], शोणोत्तरे (Sonottara), अनेन (through this), शुष्ककलहेन=व्यर्थविवादेन (dry quarrel), माम्=चन्द्रगुप्तम् (me), शिरोवेदना=शिरोव्यथा (a headache), बाधते=पीड्यति (is troubling), शयनगृहम् (the bedroom), आदेशय (show)

प्रतीहारी—एतु एतु (come let come), देवः=श्रीमान् (sire).

राजा—[आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself)]

आर्याज्ञयैव मम लङ्घितगौरवस्य
बुद्धिः प्रवेष्टुमिव भूविवरं प्रवृत्ता ।
ये सत्यमेव हि गुरूनतिपातयन्ति
तेषां कथं नु हृदयं न भिनत्ति लज्जा ॥ ३३ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

तृतीयोऽङ्कः ।

हिन्दी—राजा—आर्य, क्या सोच रहे हो ?

कञ्चुकी—कुछ नहीं महाराज ! बस यही कहना चाह रहा हूँ कि आज महाराज महाराज हुए ।

राजा—(स्वगत) लोगों में मेरी इस प्रसिद्धि से आर्य को जो कुछ सिद्ध करना अभीष्ट हो, कर लें (व्यक्त) शोणोत्तरे, इस सूखे कलह से मुझे तो भारी सिर दर्द हो गया । मुझे शयनगृह का मार्ग दिखाओ ?

प्रतीहारी—इधर आवें महाराज !

राजा—(अपने आप) —

English—*King*—Noble Sir, what are you thinking!

Chamberlain—Nothing Sire, I am glad Sire has now become a King in reality

King—(Aside) Let His Honour wishing to accomplish his object realize his desire, by our being looked on in this light, (aloud) Sonottara, through this dry wrangle a headache is troubling me Show me the bed room

Chamberlain—Come, Let Sire come

King—(To himself)—

विमला

अन्वयः—आर्याज्ञया, एव, लङ्घितगौरवस्य, मम, बुद्धिः, भूविवरम्, इव, प्रवेष्टुम्, प्रवृत्ता, ये, सत्यम्, एव, हि, गुरून्, अतिपातयन्ति, तेषाम्, हृदयम्, लज्जा, कथम्, नु, न, भिनत्ति ॥ ३३ ॥

व्याख्या—आर्याज्ञया=पूज्यादेशेन (by the command of Noble sir), एव=इति अवधारणे, लङ्घितगौरवस्य=अतिक्रान्तमर्यादाया (overstepped the bounds of respectfulness), मम (my), बुद्धिः=मतिः (mind), भूविवरम् इव=पृथिव्याः छिद्रमिव (the very cavity of the earth), प्रवेष्टुम्=गन्तुम् (to enter), प्रवृत्ता=तत्परा =तत्परा आस्ते (the intention arises), ये=ये जनाः (those), सत्यमेव=यथार्थमेव (really), हि=इति पादपूरणार्थमेव, गुरून्=पूज्यान् (preceptors), अतिपातयन्ति=अवजानयन्ति (slight), तेषाम्=गुरून् तिरस्कुर्वताम्

(their), हृदयम्=वक्षःस्थलम् (the hearts), लज्जा=व्रीडा (shame), कथन्नु=कस्माद् (how does not), भिनत्ति=विदारयति (rend). इस श्लोक में अर्थापत्ति अलङ्कार एवं वसन्ततिलका छन्द है ॥ ३३ ॥

हिन्दी—जब आर्य की आज्ञा से ही हमने उनके गौरव का उल्लंघन किया है, तब भी यदि हमारा हृदय ऐसे अधीर हो उठा है, जैसे पाताल में पैठ जाना चाहता हो, तब भला उन लोगों के हृदय को तो लज्जा से फट ही जाना चाहिए जो सचमुच अपने से बड़ों का अपमान किया करते हैं ॥ ३३ ॥

English—My mind has as if it were to enter the very cavity of the earth though I over-stepped the bounds of respectfulness at the command of Noble Sir himself. How is it that shame does not rend the heart of those who really insult their preceptors. 33.

(Depart all)

मुद्राराक्षस तृतीय अङ्क की 'विनता' व्याख्या समाप्त।



चतुर्थोऽङ्कः

पथिक वेष मे

(तत प्रविशत्यध्वगवेष पुरुष ।)

पुरुष —ही हीमाणहे हीमाणहे । (अहो, आश्चर्यम्, आश्चर्यम् !)

¹जोअणसअं समधिअं को णाम गआगअमिह करेइ।
अट्ठाणगमणगुव्वी पहुणो अण्णा जइ ण होइ ॥ १ ॥

(योजनशत समधिक को नाम गतागतमिह करोति।
अस्थानगमनगुर्वी प्रभोराज्ञा यदि न भवति ॥ १ ॥)

विमला

[तत = तदनन्तरम् (after that), प्रविशति = प्रवेश करोति (enter), अध्वगवेप = पथिकाकृति (in a traveller s costume), पुरुष = मानव (man)]

पुरुष —आश्चर्यमाश्चर्यम = निपात , अतिशयार्थप्रतिपादनाय द्विरुक्ति ।

अन्वय —अस्थानगमनगुर्वी प्रभो , आज्ञा, यदि, न भवति, इह, को नाम समधिकम्, योजनशतम् गतागतम्, करोति ॥ १ ॥

व्याख्या—अस्थाने=अनवसरे (at an unseasonable hour), गमने = यात्राविषये (has to go), गुर्वी = अनुल्लङ्घनीया (inviolable), अथवा = or अस्थाने= अविद्यमानम् स्थानम् = स्थिति विराम इति यावत् यस्मिन् तादृशम्, यत् गमनम् तेन गुर्वी गुरुतरा (ceaselessly has to go), प्रभो:=स्वामिन (of the master), आज्ञा= ादेश (the command), यदि = चेत् (if), न भवति (it were not), इह = अस्मिन् (in this matter) को नाम = को जन (who), समधिकम् = पर्याप्तम् (more), योजनशतम् (a hundred Yojanas), गतागतम् = गमना गमनम् (to go and come back again), करोति (would undertake) ॥१॥

हिन्दी—(इसके बाद पथिकवेशधारी पुरुष का प्रवेश)

पुरुष—अहो, आश्चर्य है, आश्चर्य है !

अनवसर में ही चल पडने के विषय में अनुल्लङ्घनीय अथवा निरन्तर यात्रा करने से गुरुतर अथवा अनुचित स्थान में जाने से गुरुतर स्वामी की आज्ञा यदि नहीं होती तो इस ससार में कौन व्यक्ति सैकड़ों योजन आने-जाने को प्रस्तुत होता है ॥ १ ॥

English—(Enter a man in a traveller s costume)

Man—What wonder oh ! Who indeed in this matter would do the going and coming back over a hundred Yojans and more if there were no master s command, inviolable even when one has to go at an unseasonal hour !

टिप्पणी—अध्वगवेष —अध्वन् + गम् + ड विभक्तिकार्य । इस श्लोक में काव्यलिङ्ग अलङ्कार एव आर्या छन्द है ।

१ राअणिओओ महिदो' (राजनियोगो महीयान्) इति असमीचीन पाठ ।

जाव अमच्चरक्खसस्स एदं गेहं गच्छामि। (श्रान्तवत्परिक्रम्य।) को एत्थ दुवारिआण। णिवेदेह भट्टिणो अमच्चरक्खसस्स एसो करभओ तुवरन्तो पाडलिपुत्तआदो आगदोत्ति। (यावदमात्यराक्षसस्यैतद्गेहं गच्छामि। कोऽत्र दौवारिकाणाम्। निवेदय भर्तुरमात्यराक्षसस्य एष करभकस्त्वरयन् पाटलिपुत्रादागत इति।)

(प्रविश्य।)

दौवारिकः—भद्द, सणेर्हि मन्तेहि। एसो अमच्चो कज्जचिन्ताजणिदेण जाअरेण समुप्पण्णसीसवेअणो अज्ज वि सअणं ण मुञ्चदि। ता चिट्ठ मुहुत्तअं। लद्धावसरो तुह आअमणं णिवेदेमि। (भद्र, शनैर्मन्त्रय। एषोऽमात्यः कार्यचिन्ताजनितेन जागरेण समुत्पन्नशीर्षवेदनोऽद्यापि शयनं न मुञ्चति। तस्मात्तिष्ठ मुहूर्तम्। लब्धावसरस्तवागमनं निवेदयामि।)

पुरुषः—भद्दमुह, तह करेहि। (भद्रमुख, तथा कुरु।)

विमला

यावदिति—यावत्=निपातोऽयम्, अमात्यराक्षसस्य=नन्दसचिवस्य (of the minister Rakshasa), एतद्=प्रत्यक्षदृश्यमानम् (this is), गेहम्=गृहम् (house), गच्छामि=यामि (I will go there), [श्रान्तवद् (as if fatigued), परिक्रम्य (going round)], दौवारिकाणाम्=द्वारपालनियुक्तानाम् (of the warders), अत्र=अस्मिन् स्थाने (here), कः=कियानन्यैव अवस्तिष्ठति (which of warders is), भर्तुः=स्वामिनः (to master), अमात्यराक्षसस्य=राक्षसनाम्नो मन्त्रिणः (minister Rakshasa), निवेदय=कथय (report), एषः=असौ (that) करभकः=तन्नामकः दूतः (Karabhaka), त्वरयन्=तूर्णं साधयन् (hastening), पाटलिपुत्रात्=कुसुमपुरात् (from Pataliputra), आगतः=प्राप्तः (just has arrived)

[प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा (entering)]

दौवारिकः—भद्र=कल्याणिन् (good fellow), शनैः=मन्दम् (not so loud) मन्त्रय=वद (talk), कार्यचिन्ताजनितेन=कृत्यस्मरणोत्पादितेन (by thinking of state affairs), जागरेण=निद्राक्षयेन (through wakefulness), समुत्पन्नशीर्षवेदनः=सञ्जातोत्तमाङ्गपीडः (with a headache supervened), एषः=असौ (that), अमात्यः=सचिवः (the minister), अद्यापि=अद्यापि (yet), शयनम्=शय्याम् (the bed), न मुञ्चति=न त्यजति (does not leave), तस्मात्=न कारणात् (so), मुहूर्तम्=क्षणमात्रम् (a moment), तिष्ठ=विरम्यस्व (wait), लब्धावसरः=प्राप्तावकाशो भूत्वा (having found an opportunity) तव=भवतः (your), आगमनम्=स्थितिम् (arrival), निवेदयामि=विज्ञापयिष्यामि (will report)

पुरुषः—भद्रमुख=इयम् सञ्ज्ञा (Bhadramukh), तथा कुरु=यथा त्वं रोचते कुरु (do so)

(ततः प्रविशति शयनगृहगत आसनस्थ शकटदासेन सह सचिन्तो राक्षसः ।)

राक्षस —(आत्मगतम् ।)

मम विमृशतः कार्यारम्भे विधेरविधेयता-
मपि च कुटिलां कौटिल्यस्य प्रचिन्तयतो मतिम् ।
अपि च विहिते मत्कृत्यानां निकाममुपग्रहे
कथमिदमिहेत्युच्छिद्रस्य प्रयात्यनिशं निशा ॥ २ ॥

[ततः=तदनन्तरम् (now), प्रविशति (enter), शयनगृहगतः=निद्राभवनप्राप्त (in his bed chamber), आसनस्थ =आसनवर्त्ती (seated), सचिन्तः= चिन्तायुक्त (meditating) राक्षस (Rakshasa), शकटदासेन सह (with Shakatdasa)]

हिन्दी—अच्छा चलूँ, मुझे तो अब अमात्य राक्षस के घर चलना है। (थके हुए की तरह) अरे, कोई द्वारपालों में से है यहाँ—हमारे स्वामी अमात्य राक्षस से जाकर निवेदन कर आओ— करभक सब काम बना कर के शीघ्र ही पाटलिपुत्र से लौट आया है।

(प्रवेश करके)

दौवारिक—भद्र, धीरे बोलो। हमारे स्वामी अमात्य राक्षस कार्यचिन्ता से जागते रहने के कारण सिरदर्द से पीड़ित अभी तक पर्यङ्क पर लेटे पड़े हैं। थोड़ी देर रुके रहो अवसर मिलते ही तुम्हारे आने की सूचना पहुँचा दी जायेगी।

पुरुष—भद्रमुख ऐसा ही करो।

(पर्यङ्क पर लेटे चिन्तामग्न राक्षस और आसन पर बैठे शकटदास का रङ्गमञ्च पर प्रवेश)

English—This is the house of minister Rakshasa, let me now enter (going round of it fatigued) which of the warders here? Report to master minister Rakshasa, that Karbhaka hastening from Pathputra has just arrived (Entering)

Warder—Good Sir, do not speak so loud Here minister with a headache supervened through sleeplessness caused by thinking of state affairs has not left the bed yet So wait for a moment, having found an opportunity, I will report your arrival

Man—Bhadramukh do so

(Now enter with Shakatdasa, Rakshsa, meditating seated in his bed room)

विमला

राक्षस —[आत्मगतम्=स्वगतम्=to himself] —

अन्वयः—कार्यारम्भे, विधेः, अविधेयताम्, विमृशतः, अपि च, कौटिल्यस्य कुटिलाम्, मतिम्, प्रचिन्तयतः, अपि च, मत्कृत्यानाम्, निकामम्, उपग्रहे, विहिते, इह इदम् कथम्, इति, उच्छिद्रस्य, अनिशम्, मम, निशा प्रयाति ॥ २ ॥

व्याख्या—कार्यारम्भे = कृत्यप्रारम्भे (at the beginning of venture-brooding) विधेः दैवस्य (of fate) अविधेयताम् = अननुकूलताम् (the perversity) विमृशतः = ध्यायतः (reflect upon) अपि च = तथा (and) कौटिल्यस्य = चाणक्यस्य (Kautilya's) कुटिलाम् = वक्राम (the crooked) मतिम् = बुद्धिम्, (policy) प्रचिन्तयतः = विचारयतः (thinking) अपि च = तथा (and) मत्कृत्यानाम = मम कार्याणाम (all my plans) निकामम = पर्याप्तम (plentiful), उपग्रहे = निरोधे (frustrated), विहिते = कृते सति (performed), इह = अस्मिन् विषये (in this matter), इदम् = एतदवरोधनम् (this), कथम् = केन प्रकारेण (how), इति = एतत् सर्वं (all this), उन्निद्रस्य = जागरितस्य (wakeful), अनिशम् = सर्वदा (always), निशा = रात्रि (the night), प्रयाति = गच्छति (even pass away) ॥ २ ॥

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप)

कार्य के प्रारम्भ से ही भाग्य की प्रतिकूलता को सोचते हुए तथा चाणक्य की कुटिल मति पर विचार करते हुए और मेरे कार्यों के पूर्णतया विफल कर दिये जाने पर, 'इस विषय पर यह कैसे हुआ ?' ऐसा सोचकर जागते हुए ही सर्वदा मेरी रात्रि व्यतीत होती है ॥ २ ॥

English—*Rakshasa*—(To himself) Night always slips away as I keep wakeful at the beginning of the venture brooding reflect upon the adverseness, of fate and weighing the crooked policy of Chanakaya and thereafter brooding how all my plans have been completely frustrated remained-awake thinking—'how is this to succeed in the face of all this 2.

टिप्पणी—(१) दौवारिकमान्—द्वारे नियुक्तः इति द्वार + ठक् ('तत्र नियुक्तः' इस सूत्र से ठक् प्रत्यय हुआ । 'द्वारादीनाम्' से द्वार को दौवारादेश विभक्ति कार्य ।

(२) त्वरयन्—त्वर् + णिच् + शतृ ।

(३) इस श्लोक की प्रथम दो पंक्तियों में राक्षस ने स्पष्ट कर दिया है कि एक तो विधि विपरीत है उस पर भी कोढ पर खाज की तरह कौटिल्य की कुटिल बुद्धि का पार पाना असम्भव है।

(४) अविधेयताम्—वि + धा + यत् कर्मणि विधेयः न विधेयः अविधेयः ।

(५) अनिशम्—अविद्यमाना निशा यस्मिन् कर्मणि तद् यथा तथा ।

इस श्लोक में समुच्चय अलङ्कार है। यहाँ साधक राक्षस के अनेकों प्रयत्न दूसरे साधक चाणक्य के द्वारा खण्डित हो रहा हैं। और इस अलङ्कार के किसी कार्य की सिद्धि के लिए एक साधक के होने पर भी साधकान्तर का उल्लेख रहता है। आलङ्कारिकों ने इसके सम्बन्ध में 'खल कपोतिकान्याय' का उल्लेख किया है। इसमें हरिणीछन्द है। जिसका लक्षण—'नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणीमता।'

अपि च—

कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयंस्तस्य विस्तारमिच्छन्
बीजानां गर्भितानां फलमतिगहनं गूढमुद्भेदयंश्च।
कुर्वन् बुद्ध्या विमर्शं प्रसृतमपि पुनः संहरन् कार्यजातं
कर्ता वा नाटकानामिममनुभवति क्लेशमस्मद्विधो वा ॥ ३ ॥

विमला

अन्वय.—आदौ, तनुम्, अपि कार्योपक्षेपम्, रचयन्, तस्य, विस्तारम्, इच्छन्, गर्भितानाम्, च, बीजानाम्, अतिगहनम्, गूढम्, फलम्, उद्भेदयन्, बुद्ध्या, विमर्शम्, कुर्वन्, प्रसृतम्, अपि, कार्यजातम्, पुनः, संहरन्, नाटकानाम्, कर्ता, वा, अस्मद्विधः, इमम्, क्लेशम्, अनुभवति ॥ ३ ॥

राजनीतिज्ञपक्षे—

व्याख्या—अपि च (Moreover), आदौ = प्रथमम् (first of all), तनुम् = अल्पम् अपि (tiny), कार्योपक्षेपम् = कार्यस्य, अभीष्टकृत्यस्य (the business), उपक्षेपम्, उपायम् (taking the first step towards), रचयन्=कुर्वन् (devising), तस्य=प्रारब्धकार्यस्य (at start), विस्तारम्=प्रचयम् (development), इच्छन्= वाञ्छन् (thinking of), गर्भितानाम्=गुप्तानाम् (the secret), च = अपि (also), बीजानाम् = मन्त्रणानाम् (political measure), अतिगहनम् = रहस्यपूर्णम् (very deep), गूढम् = अनभिव्यक्तम् (hidden), फलम् = परिणामम् (results), उद्भेदयन् = प्रकटयन् (making a survey), बुद्ध्या = मत्या (mentally), विमर्शम्= विचारम् कुर्वन्, विदधन् (doing deliberation), प्रसृतमपि = विस्तृतमपि (though scattered), कार्यजातम् = कार्यसमूहम् (all the works), पुनः = अन्ते (lastly), संहरन् = उपसंहरन् (focussing together), अस्मद्विधः = मादृशः (a person like me), इमम् = अनुभूयमानम् (this), क्लेशम् = कष्टम् (trouble), अनुभवति= भजते (suffers)

नाटककारपक्षे—

आदौ = मुखसन्धौ (seed, in what is called मुखसन्धि), तनुमपि=स्वल्पो द्दिष्टमपि (though meagre , कार्योपक्षेपम् = बीजविन्यासम् कार्यं (chief object), उपक्षेपम् (one of the twelve subsidiary parts of mukha), रचयन्=प्रणयन् (to make), तस्य=विन्यस्तबीजस्य (of that seeds), विस्तारम्=अभिव्यक्तिम् (in the प्रतिमुखसन्धि), इच्छन्=वाञ्छन् (desired), गर्भितानाम्=दृष्टनष्टानाम् (what is called गर्भसन्धि in which help the denouement of the plot), अतिगहनम् = बहुदुर्बोधम् (very secret), उद्भेदयन् = अभिव्यञ्जयन् (to look), बुद्ध्या = विचारदक्षतया (by the force of intellect) गूढम् = फलम् (गर्भसन्धौ) (fruit), विमर्शम् = अन्वेषणम् विदधन् = कुर्वन् (mentally making a survey), प्रसृतमपि = यथायथम् विप्रकीर्णमपि (gone forward too), कार्यजातम्=मुखसन्ध्या द्यर्थजातम् (various incidents), पुनः = मुहुः (again), संहरन् = उपसंहरन्

(drawing in), नाटकाना कर्त्ता=नाटककारः (writer of plays), इमम्=उक्तिर्निरूपम् (such is), क्लेशम्=कष्टम्=(the trouble), अनुभवति=भजते (has to undergo)

हिन्दी—राजनीतिज्ञ के पक्ष में—

प्रारम्भ में स्वल्प भी अभीष्ट कार्य के उपाय अर्थात् साम, दान आदि उपायों का करता हुआ एक राजनीतिज्ञ अपने आरम्भित कार्य के विस्तार को चाहता हुआ, गुप्त मन्त्रणाओं के रहस्यपूर्ण गूढ़ फल को प्रकट करता हुआ, पुन बुद्धि के द्वारा विचार करता हुआ, राजनीति के विभिन्न फैले हुए कार्यों को पुनः मनोरथ तक पहुँचाता हुआ, हमारे समान व्यक्ति इस जागरण के कष्ट का अनुभव करता है। ३।

नाटककार के पक्ष में—

मुखसन्धि में थोड़ भी बीजन्यास को करता हुआ, उसके विस्तार को चाहता हुआ, गर्भ सन्धि में स्थित भी बीजों के रहस्यों के गूढ़ फल को खोजता हुआ, फिर, विमर्शसन्धि में उसी बीज का बुद्धि के द्वारा अन्वेषण करता हुआ, फैले हुए भी कार्यों के समूह को निर्वहणसन्धि में एक उद्देश्य से पुन इकट्ठा करता हुआ नाटककार इस कष्ट का अनुभव करता है॥ ३॥

English—In the side of politician—

At first, the politician as well as one like me suffers this trouble, wishing the extension of his started work, next thinking of its development and then secretly causing the very deep issue of the impregnated seed, to germinate, again wisely making a thinking of results and lastly focussing together all the results though scattered.

In the side of Dramatist—

First of all, a dramatist has the troubles to cast the tiny seeds of the adventure, then to supervise their development and when the seeds have elongated, to result the secret deep hidden fruit then to lay on the land more definitely by the force of wisdom, and finally to make the various converge to the desired issue.

टिप्पणी—(१) विन्यस्यन्—वि+नि+अस्+शतृ+विभक्तिकार्य।

(२) उपक्षिपन्—उप+क्षिप्+शतृ+विभक्ति कार्य।

(३) विस्तारम्—वि+स्तृ+घञ्+विभक्ति कार्य।

(४) गूढम्—गुह्+क्त+विभक्ति कार्य।

(५) कर्ता वा नाटकानाम्—इस पद्य में विशाखदत्त ने राक्षस के इस कथन के माध्यम से इस नाटक के निर्माण में अपनी अनुभूत कठिनाइयों का वर्णन किया है। इस श्लोक में श्लेष के द्वारा राजनीतिज्ञ एवं नाटककारों की समान कठिनाइयों का उपस्थापन अति रोचक है।

नाटकीय विकास की दृष्टि से किसी भी नाटककार को बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य इन पाँच अर्थप्रकृतियों का, आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम, इन पाँच अवस्थाओं का एवं इन अर्थप्रकृतियों और अवस्थाओं के संयोग से निष्पन्न होने वाली

तदपि नाम दुरात्मा चाणक्यबटु —

(उपसृत्य ।)

दौवारिक —जेदु । (जयतु ।)

मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्श और निवर्हण इन पाँच सन्धियों का वर्णन करना परम आवश्यक होता है।

सन्धि—मुखप्रतिमुखे गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः । दशरूपक १।२४ ॥ तात्पर्य यह कि कथांश को जब प्रयोजनान्तर से सम्बद्ध करते हैं तब उसे सन्धि कहते हैं। अर्थात् अन्तरैकार्थसम्बन्ध-सन्धिरेकान्वये सति। दशरूपक। १।२३ ॥

(१) मुखसन्धि में अनेकों रसोत्पादन करने वाले बीज की उत्पत्ति तथा आरम्भ अवस्था होती है।

(२) प्रतिमुखसन्धि में बिन्दु प्रयत्न होता है।

(३) गर्भसन्धि में पताका और प्राप्त्याशा होती है। इस सन्धि में बीज कभी प्रकट और कभी अन्तर्हित रहता है, जिसका सर्वथा अन्वेषण किया जाता है।

(४) अवमर्शसन्धि में प्रकरी तथा नियताप्ति का वर्णन होता है।

(५) निर्वहणसन्धि में कार्य और फलागम का वर्णन होता है।

(६) कार्योपक्षेपमादौ—नाटक के पक्ष में यहाँ आदौ का अर्थ है मुखसन्धि, अर्थात्—'मुखम् बीजसमुत्पत्तिर्नानार्थरससम्भवा' दशरूपक—१।२४।

(७) तन्य विस्तारमिच्छन्—उस बीज का प्रतिमुख सन्धि में स्पष्टरूप से प्रतीत होना ही प्रतिमुखसन्धि का विषय है। इस सन्धि में 'बिन्दु' नामक अर्थप्रकृति तथा प्रयत्न नामक अवस्था का मिश्रण होता है। यथा—

लक्ष्यालक्ष्यतयोर्भेदस्तस्य प्रतिमुख भवेत् बिन्दुप्रयत्नानुगमात् । दश० १।३०

(८) बीजानाम् गर्भितानाम्—गर्भसन्धि जब बीज के दिखने के बाद, फिर से नष्ट हो जाने पर उसका अन्वेषण बार-बार किया जाता है तो गर्भसन्धि होती है। इसमें पताका, अर्थप्रकृति एव प्राप्त्याशा का मिश्रण पाया जाता है।—गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य। द० १।

(९) कुर्वन् बुद्ध्या विमर्शन्—काम, क्रोधादि से प्रभावित होकर जहाँ चिन्तन किया जाय वहाँ अवमर्शसन्धि होती है।

(१०) प्रसृतमपि पुन संहरन् कार्यजातम्—इसमें फैले यत्र तत्र कार्यों का उपसंहार किया है। द० १।४

इस प्रकार सभी सन्धियाँ इस श्लोक में वर्णित हैं।

इस श्लोक में श्लेष तथा दीपक अलङ्कार तथा स्रग्धरा छन्द है।

विमला

व्याख्या—तदपि = तथापि (well then), दुरात्मा = दुष्टजीव (vile hearted), चाणक्यबटु = अल्पबुद्धिश्चाणक्य (brat Chankya) —[उपसृत्य = राक्षसान्तिकम् गत्वा (approaching)]

दौवारिक —जयतु = सर्वोत्कर्षेण वर्तताम् (Be victorious)

राक्षसः—अतिसंधातुं शक्यः स्यात् ।

दौवारिकः—अमच्चो । (अमात्यः ।)

राक्षसः—(वामाक्षिस्पन्दनं सूचयित्वा, आत्मगतम् ।) दुरात्मा चाणक्य-वटुर्जयत्यतिसंधातुं शक्यः स्यादमात्य इति वागीश्वरी वामाक्षिस्पन्दनेन प्रस्तावागता प्रतिपादयति । तथापि नोद्यमस्त्याज्यः । (प्रकाशम् ।) भद्र, किमसि वक्तुकामः ।

राक्षस—अतिसंधातुम्=प्रतारयितुम् (of being deceived), शक्यः=समर्थः (be capable), स्यात्=भवेत् (might).

दौवारिक—अमात्यः=सचिवो भवान् (minister).

राक्षस—[वामाक्षिस्पन्दनेन=दक्षिणेतरनेत्रस्फुरणेन (throbbing of his left eye)], सूचयित्वा=प्रतिपादयित्वा (indicating), आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself)], दुरात्मा=दुष्टजीव (vile-hearted), चाणक्यवटुः=अल्पबुद्धिः चाणक्यः (brat Chanakya), जयतु=सर्वोत्कर्षेण वर्द्धस्व (let be victorious), अमात्यः=सचिवो भवान् (minister), अतिसंधातुम्=प्रतारयितुम् (of being deceived), शक्यः स्यात्=समर्थो भवेत् (might be capable), इति=एवम् (like so), वागीश्वरी=वाग्देवता (Divine speech), वामाक्षिस्पन्दनेन=दक्षिणेतरनेत्रस्फुरणेन (by the throbbing of the left eye), प्रस्तावागता=प्रकरणप्राप्ता (ruling the context), प्रतिपादयति=सूचयति (establishes), तथापि (still), उद्यम=उद्योगः (efforts), न=नहि (not), त्याज्यः=परिहरणीयः (be abandoned), [प्रकाशम्=(to aloud)], भद्र (good man), किमसि वक्तुकामः=किं कथनप्रतिपादनाभिलाषी असि (what do you want to say).

हिन्दी—फिर भी, यदि कहीं वह चाणक्य—

दौवारिक—(पास पहुँच कर) जय हो ।

राक्षस—वश में किया जा सकता है ।

दौवारिक—अमात्य !

राक्षस—(बाईं आँख का फड़कना देख अपने आप) 'दुष्ट चाणक्य की जय हो और अमात्य वश में किया जा सकता है'—प्रकरणवश आयी हुई सरस्वती बाईं आँख के फड़कने के द्वारा—ऐसा प्रतिपादित कर रही है । फिर भी, उद्योग नहीं छोड़ना चाहिए (प्रकट रूप में) भद्र, क्या कुछ कहना चाहते हो ?

English—Well then, is it likely that, the wicked fellow chanakya.

Warder—(Approaching) Be Victorious.

Rakshasa—Can be capable of being deceived.

Warder—Minister.

Rakshasa—(Indicating the throbbing of his left eye to himself) The Goddess of speech, ruling the context, establishes this by the

दौवारिकः—अमच्च, करभओ दुआरे चिट्ठदि। (अमात्य, करभको द्वारि तिष्ठति।)

राक्षसः—शीघ्र प्रवेशय।

दौवारिकः—तहेत्ति (निष्क्रम्य पुरुषमुपसृत्य।) भद्द, उपसप्प अमच्चम्। (इति निष्क्रान्तः।) (तथेति। भद्र, उपसर्प अमात्यम्।)

करभकः—(उपसृत्य।) जेदु अमच्चो। (जयत्वमात्यः।)

राक्षसः—भद्र, उपविश।

करभकः—ज अमच्चो आणवेदित्ति। (भूमावुपविष्टः।) (यदमात्य आज्ञापयति।)

राक्षसः—(आत्मगतम्।) कस्मिन् प्रयोजने ममाय प्रहित इति प्रयोजनानां बाहुल्यान्न खल्ववधारयामि। (इति चिन्तां नाटयति।)

---

throbbing of the left eye—the vile hearted brat chanakya will be successful and I, the minister, shall be duped. Still efforts must not be abandoned (aloud) good man, what do you want ?

विमला

व्याख्या—दौवारिक —अमात्य = सचिव (minister) द्वारि = द्वारदेशे (at the gate), करभक (Karabhaka), तिष्ठति = वर्त्तते (waits).

राक्षस —शीघ्रम् = अवारितम् (in quick), प्रवेशय (show him).

दौवरिक —तथेति (As minister commands), [निष्क्रम्य (going out), पुरुषमुपसृत्य (approaching the man)] भद्र (good man), अमात्यम् = सचिवम् (to the minister), उपसर्प = समीपम् गच्छ (approach), [इति निष्क्रान्तः = Exit)].

करभक —[उपसृत्य = समीपम् गत्वा (approaching)], अमात्यः = सचिवः (The minister) जयतु = जय लभस्व (Let prosper)

राक्षस —भद्र (good man), उपविश (sit down)

करभक —यत् (as), अमात्य = सचिव (the minister), आज्ञापयति = आदेशयति (commands) [भूमौ = पृथिव्याम् (on the ground) उपविष्टः (sits)]

राक्षस —[आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)], कस्मिन् कार्ये = कस्मिन् प्रयोजने (to what purpose) अयम् = प्रणिधि (this fellow), मम प्रहितः = मया प्रेषितः (was sent by me), इति (it), प्रयोजनानाम् बाहुल्यात् = कार्याणामाधिक्यात् (through multiplicity of works), न खलु = नैव (do not indeed), अवधारयामि = अवगच्छामि (recollect) [इतिचिन्तां नाटयति = (acts thinking)]

हिन्दी—दौवारिक—अमात्य करभक दरवाजे पर खड़ा है।

राक्षस—शीघ्र भीतर लाओ।

दौवारिक—जैसी आज्ञा (ऐसा कह कर पुरुष के पास जाकर) भद्र अमात्य के पास चलो (ऐसा कह कर निकल गया)

(ततः प्रविशति वेत्रपाणिद्वितीयः पुरुषः ।)

पुरुषः—ओसलेह ओसलेह । आअदो । अवेह अवेह माणवा । किं ण पेक्खह । (अपसरत अपसरत । आगतः । अपेत अपेत मानवाः । किं न पश्यथ ।)

दूले पच्चासत्ती दंसणं वि दुल्लहमधण्णेः ।
कल्लाणकुलहराणं देआणं विअ मणुस्सदेआणं ॥ ४ ॥
(दूरे प्रत्यासत्तिर्दर्शनमपि दुर्लभनधन्यैः ।
कल्याणकुलधराणां देवानामिव मनुष्यदेवानाम् ॥ ४ ॥)

करभक—(समीप जाकर) अमात्य का जय हो ।

राक्षस—भद्र, बैठ जाओ ।

करभक—अमात्य की जैसी आज्ञा (ऐसा कहकर भूमि पर बैठ जाता है ।)

राक्षस—(अपने आप) मैंने इसको किस कार्य के लिए नियुक्त किया था ? कार्याधिक्य के कारण निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ । चिन्ता का अभिनय करता है) ।

English—*Warder*—Minister, Karbhaka waits at the gate.

Rakshasa—Show him quickly.

Warder—As minister commands (going out and approaching the man) good man, you may see the minister (Exit)

Karabhaka—(approaching) Let minister prosper.

Rakshasa—Good man, sit down

Karabhaka—As minister commands (squats on the ground).

Rakshasa—(To himself) Through multiplicity of purpose, I do not indeed recollect to what purpose this fellow was sent by me (acts thinking).

निमला

[ततः=तत्पश्चात् (then), प्रविशति=प्रवेशं करोति (enter), वेत्रपाणिः (cane staff in his hand), द्वितीयः=अपरः (another), पुरुषः=मनुष्यः (man)].

पुरुषः—अपसरत अपसरत=पलायध्वम् पलायध्वम् (move away, move away), आगतः=(arrived), अपेत-अपेत मानवाः=अपगच्छत अपगच्छत जनाः (be off men be off) किं न पश्यथ=किं नावलोकयत (don't see you).

अन्वयः—देवानाम्, इव, कल्याणकुलधराणाम्, मनुष्यदेवानाम्, अधन्यैः, दर्शनम्, अपि, दुर्लभम्, प्रत्यासत्तिः, दूरे ॥ ४ ॥

व्याख्या—देवानाम्=देवतानाम् (of gods), इव=यथा (like) कल्याण-कुलधराणाम्=सुवर्णमयमेरुपर्वतवासिनाम् (the representatives of blessed families), मनुष्यदेवानाम्=नरेन्द्राणाम् (of kings), अधन्यैः=भाग्यहीनैः (by the unlucky) दर्शनम्=दूरादवलोकनम् (the sight) अपि (even) दुर्लभम्=

(आकाशे ।)

अज्जा,—किं भणाद—किंणिमित्तं ओसालणं करिअदि' त्ति । अज्जा, एसो क्खु कुमालो मलयकेदु समुप्पण्णसीसवेअणं अमच्चरक्खसं पेक्खिदु इदो एव आअच्छदि । ता ओसालणा करिअदि । (इति निष्क्रान्तः पुरुषः ।) (आर्याः, किं भणथ—किंनिमित्तमपसारणं क्रियते इति । आर्याः, एष खलु कुमारो मलयकेतुः समुत्पन्नशीर्षवेदनममात्यराक्षसं प्रेक्षितुमित एवागच्छति तस्मादपसारणा क्रियते ।)

(ततः प्रविशति भागुरायणेन कञ्चुकिना चानुगम्यमानो मलयकेतुः ।)

दुष्प्रापम् (is hardly available) प्रत्यासत्ति=सन्निधिः (close proximity) दूरे=विप्रकृष्टे तिष्ठतु (let alone). ॥ ४ ॥

हिन्दी–(बेंत हाथ में लिए दूसरे पुरुष का प्रवेश)

पुरुष—दूर हटो, मनुष्यो दूर हो जाओ, दूर हो जाओ । क्या देख नहीं रहे हो ?

सुमेरु पर्वतवासी देवताओं के समान उन्नत एवं प्रख्यात यशवाले राजाओं का सान्निध्य लाभ तो दूर रहे, दर्शन भी भाग्यहीनों के लिए दुर्लभ ही है ॥ ४ ॥

English—(Then enters another man, cane in hand)

Man—Move away, move away ! be off be off men, do not see you

Let alone their close proximity; even a sight of kings, the representatives of blessed family, is, like that of gods, difficult to be obtained by the unlucky. 4.

टिप्पणी—वेत्रपाणिर्द्वितीयः पुरुषः—'वेत्र पाणौ यस्य' । अपेत—अप+इण्+लोट् त । प्रत्यासत्ति —प्रति+आ+सद्+क्तिन् भावे+विभक्ति कार्ये ।

इस श्लोक में दीपक अलंकार तथा आर्या छन्द है ।

विमला

[आकाशे (in the sky)]

व्याख्या—आर्याः=मान्याः (Noble sirs), किं भणथ=किं ब्रूथ (what do you ask), किंनिमित्तम्=कस्मात् कारणात् (why), अपसारणा=पार्श्ववर्त्तित्वम् क्रियते=विधीयते (clearing is being made ?), आर्याः=मान्याः (noble sirs), एष खलु=असौ (here indeed), कुमारो मलयकेतुः=तदाख्यः पर्वतकपुत्रः (Prince Malayaketu), समुत्पन्नशीर्षवेदनम्=सञ्जातशिरोव्यथम् (has got a headache), अमात्यराक्षसम् (minister Rakshasa), प्रेक्षितुम्=द्रष्टुम् (to see), एवागच्छति=अत्रैवागच्छति (is coming this very way), तस्मात्=अनेन कारणेन (hence), अपसारणा क्रियते=युष्माकं वर्त्मैकपार्श्ववर्तित्वं विधीयते (the clearing is being made), [इति निष्क्रान्तः पुरुषः=Exit attendant].

[तत=तत्पश्चात् (now), प्रविशति (enter), भागुरायणेन (by Bhagurayan), कञ्चुकिना (and Chamberlain), अनुगम्यमानः (followed), मलयकेतुः (Malayaketu)].

मलयकेतुः—(निश्वस्यात्मगतम् ।) अद्य दशमो मासस्तातस्योपरतस्य न चास्माभिर्वृथापुरुषाभिमानमुद्वहद्भिस्तमुद्दिश्य तोयाञ्जलिरप्यावर्जितः । प्रतिज्ञातमेतत् पुरस्तात् ।

वक्षस्ताडनभिन्नरत्नवलयं भ्रष्टोत्तरीयांशुकं
हाहेत्युच्चरितार्तनादकरुणं भूरेणुरूक्षालकम् ।

मलयकेतु—[निश्वस्य (with a sigh), आत्मगतम् (to himself)], अद्य (Today), उपरतस्य = मृतस्य (died), तातस्य = पितुः (father's), दशमो मासः (is the tenth month), वृथा = मिथ्या (falsely), पुरुषाभिमानम् = पुरुषोऽस्मि इत्येवम् रूपम् (the pride of man), उद्वहद्भिः = धारयद्भिः (bearing), तमुद्दिश्य = मृततातमुपलक्ष्य (unto him), तोयाञ्जलिरपि = जलाञ्जलिरपि (even a handful of water), न आवर्जितः = न दत्तः (has not yet been offered), एतत् = वक्ष्यमाणम् (this), पुरस्तात् = पूर्वम् (formerly), प्रतिज्ञातम् = प्रतिश्रुतम् (was vowed)

(आकाश की ओर - देख कर)

हिन्दी—अरे लोगो, क्या यह जानना चाहते हो कि क्यों तुम्हें हटाया जा रहा है? कन्चुकी कुमार मलयकेतु आ रहे हैं। शिरोव्यथा से अमात्य राक्षस पीड़ित हैं, उन्हें देखने के लिए इधर आ रहे हैं। अतः तुम्हें हटाया जा रहा है। (पुरुष निकल जाता है)

(कुमार मलयकेतु के साथ साथ भागुरायण और कञ्चुकी का प्रवेश)

मलयकेतु—(साँस खींचकर स्वगत) आज पिता के निधन का दसवाँ महीना बीत रहा है। व्यर्थ का यह सब हमारा अपने पुरुषत्व का अभिमान रहा। अब तक उनको तोयाञ्जलि भी नहीं अर्पित की जा सकी। पहले मैंने यह प्रतिज्ञा की थी :—

English—(In the sky)

Noble Sirs, 'do you ask, why is passage being cleared?' Noble sirs here indeed prince Malayaketu is coming this very way to see Minister Rakshasa, who has got a headache. Hence the clearing is being made. (Exit man)

(Now enter Malayaketu followed by Bhagurayan and the Chamberlain)

Malayaketu—(Sighing to himself) To day is the tenth month since father died, but even a handful of water has not yet been offered unto him by me falsely bearing the pride of man. This was vowed by me formerly :—

टिप्पणी—(१) अपसारण—अप + सृ + णिच् + ल्युट् भावे अपसारण ।
(२) पुरुषाभिमान—अभि + मन + घञ् ।
(३) आवर्जितः—आ + वृज + णिच् + क्त + कर्मणि ।

विमला

अन्वयः—तातवनस्य, शोकजनितम्, वक्षस्ताडनभिन्नरत्नवलयम्, भ्रष्टोत्तरीयां-

ताहङ्मातृजनस्य शोकजनितं संप्रत्यवस्थान्तरं
शत्रुस्त्रीषु मया विधाय गुरवे देयो निवापाञ्जलिः ॥ ५ ॥

शुक्म हाहेत्युच्चरितार्त्तनादकरुणम्, भूरेणुरुक्षालकम्, तादृक्, अवस्थान्तरम्, सम्प्रति शत्रुस्त्रीषु, विधाय, मया, गुरवे, निवापाञ्जलि, देय ॥ ५ ॥

व्याख्या—मातृजनस्य=अस्मासमूहस्य (on my mothers), शोकजनितम्=दुःखेनोत्पन्नम् (brought on through grief), वक्षस्ताडनभिन्नरत्नवलयम्=हृदयाघातभग्नरत्ननिमितकटकम् (beat their breasts till their pearl-necklaces were shattered), भ्रष्टोत्तरीयाशुकम्=भ्रष्टम्, स्वस्थानात् च्युत (felloff), उत्तरीयाशुकम्, ऊर्ध्वधारणवस्त्रम् (upper garments), हाहेत्युच्चरितार्त्तनादकरणम्=हाहेतिनिस्सृतार्त्तस्वरदीनम् (the cries of 'ha ha' were piteously uttered), भूरेणुरुक्षालकम्=भुव, पृथिव्या (of dust), रेणुभि, धूलिभि (by the particles), रुक्षा, विरसा (made rough), अलका, कुन्तला (the hair), यस्मिन् तादृशम्, तादृक्=तथाविधम् (like so), अवस्थान्तरम्=दशान्तरम् (altered condition), सम्प्रति=अद्य (now), शत्रुस्त्रीषु=अरिवनितासु (on the wives of my enemy), विधाय=उत्पाद्य (performing), मया (by me) निवापाञ्जलि=निवापसलिलम् (the handful of libations), देय =आवर्जनीय (has to be offered) ॥ ५ ॥

हिन्दी—पितृवध से उत्पन्न मातृजन की शोकजनित वह दुरवस्था, वह छाती पीटने से टूट टूट कर गिरने वाले रत्नवलयों, अस्तव्यस्त गिरे पड़े उत्तरीय परिधानों, हाय हाय की हृदयविदारक ध्वनियों से भरी करुणा धूलिधूसरित केशपाशों के रूखेपन की दुर्दशा जब दुश्मनों की पत्नियों के भाग्य में बदल दूंगा, तभी अपने पूज्य पितृदेव का श्राद्ध तर्पण करूंगा ॥५॥

English—That I should first reduce the wives of my enemy to that altered condition which was then brought up on my mothers by grief a condition, in which they beat their breasts till their garments slipped off with locks, the cries of 'Ah ! Ah' were piteously uttered, and the hair was made rough by the particles of dust—and then the handful of libations has to be offered by me to father 5

टिप्पणी ( )—तादृक—तद्+दृश+क्विन्+कर्त्तरि।

(२) देय —दा+यत्+विभक्ति कार्ये।

(३) मातृजनस्य—माता एव जना मातृजन तस्य मातृजनस्य बहुवचने मातर एव जना ।

(४) नाटकीयता की दृष्टि से इस श्लोक में घटनाओं का गत्यात्मक घात प्रतिघात, उनकी एकता और सार्थकता सबों का समन्वय दर्शनीय है। कार्य व्यापार के बाहर पितृवध की घटना मानो मलयकेतु के हृदय में सवृत्ति की सृष्टि करती है। सवृत्ति से तात्पर्य कथा की उस बीज सृष्टि से है जिसका विस्तार कार्य व्यापार के आरम्भ से उस स्थल तक होता है। जहाँ कथा नायक के उत्कर्ष की ओर मोड़ लेती है। मुख्यत सवृत्ति से अभिप्राय है—'उलझन'। दो असङ्गत प्रतीत होने वाली स्थितियों में सादृश्य का नियोजन कर उसमें

किमत्र बहुना ।

उद्यच्छता धुरमकापुरुषानुरूपां
गन्तव्यमाजिनिधनेन पितुः पथा वा ।
आच्छिद्य वा स्वजननीजनलोचनेभ्यो
नेयो मया रिपुवधूनयनानि बाष्पः ॥ ६ ॥

संगति की स्थापना की गयी है। अतः इस श्लोक में निदर्शना अलङ्कार है तथा शार्दूल-विक्रीडित छन्द है।

विमला

अन्वयः—अकापुरुषानुरूपाम्, धुरम्, उद्यच्छता, आजिनिधनेन, पितुः, पथा, वा, गन्तव्यम्, वा, मया, स्वजननीजनलोचनेभ्यः, आच्छिद्य, रिपुवधूनयनानि, बाष्पः, नेयः ॥ ६ ॥

व्याख्या—किमत्र बहुना = (What with talking much about it)—

अकापुरुषानुरूपाम् = वीरोचिताम् (worthy of a brave man), धुरम् = भारम् (a yoke), उद्यच्छता = उद्वहता (bearing up), आजिनिधनेन = आजौ = युद्धे (in battle), निधनेन = मृत्युना (by death), पितुः = तातस्य (of father), पथा = मार्गेण (path), वा = अथवा (either), गन्तव्यम् = यातव्यम् (should go), वा = अथवा (or), मया (by me), स्वजननीजनलोचनेभ्यः = स्वमातृवर्गस्य नेत्रेभ्यः (from the eyes of my mothers), आच्छिद्य = आकृष्य (shall forcibly take away), रिपुवधूनयनानि = शत्रुस्त्रीलोचनानि (eyes to the wives of the enemies), बाष्पः = नयनसलिलम् (tears), नेयः = प्रापनीयः (transfer). ॥६॥

हिन्दी—इस विषय में अधिक कहने से क्या ?

वीर पुरुषों की भाँति इस महान् कार्यभार को उठाते हुए या तो मुझे अपने मातृजन की आँखों के आँसुओं को शत्रुवनिताओं की आँखों में पहुँचाना है अथवा समरभूमि में जूझते हुए वीरगति पाकर अपने पितृदेव का अनुसरण करना है ॥ ६ ॥

English—What with talking much about it—

Bearing the burden worthy of a brave man, I will either follow the path of my father by death in battle, or transfer forcibly the tears from the eyes of my mothers to the wives of my enemies 6.

टिप्पणी—(१) उद्यच्छता—उद् + यम् + शतृ—यहाँ यद्यपि 'समुदाङ्भ्यो यमो ग्रन्थे' से आत्मनेपद प्राप्त था फिर भी 'स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले' से परस्मैपद हो गया।

(२) आच्छिद्य—आ + छिद् + ल्यप् विभक्तिकार्य।

(३) नेयः—नी + ल्यप् विभक्तिकार्य।

(४) अकापुरुषानुरूपाम्—रूपमनुगता अनुरूपा ताम् अनुरूपाम्, कुत्सितः पुरुषः का पुरुषः, न कापुरुषः अकापुरुषः। यहाँ विरोध के अर्थ में नञ् समास है।

(५) आजिनिधनेन—आजौ रणे तस्या निधनम् तेन आजिनिधनेन। इससे तात्पर्य यह है कि मलयकेतु पिता की तरह युद्ध में असफलता की स्थिति में मारा जाना पसन्द

(प्रकाशम् ।) आर्य जाजले, उच्यन्तामस्मद्वचनादनुयायिनो राजानः—'एक एवाहममात्यराक्षसस्यातर्कितगमनेन प्रीतिमुत्पादयितुमिच्छामि । तत्कृतमनुगमनक्लेशेन' इति ।

कञ्चुकी—तथा । (इति परिक्रम्याकाशे ।) भो भो राजानः, कुमारः समाज्ञापयति—'न खल्वहं केनचिदनुगन्तव्य' इति । (विलोक्य सहर्षम् ।) कुमारस्याज्ञानन्तरमेव सर्वे राजानः प्रतिनिवृत्ताः । पश्यतु कुमारः ।

करता है जब कि तथ्य इसके विपरीत यह है कि मलयकेतु के पिता की मृत्यु विषकन्या के प्रयोग से हुई है । फिर इस कथन का तात्पर्य मृत्यु की मात्र समता है ।'

(६) नेत्र.—यहाँ 'नी' धातु द्विकर्मक होने के कारण ही दो कर्म किए हैं ।

इस श्लोक में दो विकल्प हैं (१) या तो वीर पुरुषोचित युद्धक्षेत्र में मरण अथवा (२) मातृजन को आँखों के आँसुओं को शत्रुस्त्रियों की आँखों तक पहुँचाना । अतः इसमें विरोध नामक अलङ्कार है । वसन्ततिलका छन्द है ।

विमला

व्याख्या—[प्रकाशम् = (Aloud)], आर्य = मान्य (Noble sir), जाजले (Jajali), अस्मद्वचनात् = मदुक्तया (in my words), अनुयायिन = अनुगमनशीलाः (following me), राजान = नृपाः (princes), उच्यन्ताम् = अभिधीयन्ताम् (let be told), एकः = अद्वितीय (unattended), एवाहम् (I), अतर्कितगमनेन = सहसोपस्थित्या (unexpected approach), अमात्यराक्षसस्य = मन्त्रिराक्षसस्य (minister Rakshasa), प्रीतिम् = सुखम् (joy), उत्पादयितुम् = जनयितुम् (to give), इच्छामि = वाञ्छामि (I wish), अत (so), अनुगमनक्लेशेन = अनुसरणप्रयासेन (with the trouble of following), कृतम् = पर्याप्तम् (away),

कञ्चुकी = (Chamberlain), तथा (so be it), [इतिपरिक्रम्य = परिक्रम्य कृत्वा (going round), आकाशे = गगने (in the sky)], भो भो राजान. (Ho, Ho ! kings) कुमार = मलयकेतुः (the prince), समाज्ञापयति = समादिशति (commands) अहम् (Malayaketu), खलु = निश्चयेन (must), न = नहि (not), केनचित् (by any one), अनुगन्तव्यम् = अनुसरितव्यम् (be followed), [विलोक्य = दृष्ट्वा (observing)], सहर्षम् = समुदम् (with joy) कुमारस्य (of the prince), आज्ञा = आदेश (order), अनन्तरमेव (after), सर्वे (all), राजान. = नृपाः (the kings), प्रतिनिवृत्ता = परावर्तिता (have turned back), कुमारः (the pirnce), पश्यतु = अवलोकयतु (look) :—

हिन्दी—(प्रकट रूप से) आर्य जाजल ! अनुयायी राजगण से जाकर मेरी ओर से कहो—मैं अकेला ही एकाएक अमात्य राक्षस के पास जाकर उनके मन में प्रसन्नता उत्पन्न करना चाहता हूँ । अत मेरे पीछे आने के कष्ट की आवश्यकता नहीं है ।

कञ्चुकी—आप की जैसी आज्ञा (घूम फिर कर आकाश की ओर) राजगण सुनें ! कुमार की आज्ञा है कि उनके पीछे कोई न आवें (देखकर हर्ष के साथ) कुमार ! यह देखिये कुमार की आज्ञा सुनने के साथ ही समस्त राजगण लौट चले ।

सोत्सेधैः स्कन्धदेशैः खरतरकविकाकर्षणात्यर्थभुग्नै-
रश्वाः कैश्चिन्निरुद्धाः खमिव खुरपुटैः खण्डयन्तः पुरस्तात्।
केचिन्मातङ्गमुख्यैर्विहतजवतया मूकघण्टैर्निवृत्ता
मर्यादां भूमिपाला जलधय इव ते देव नोल्लङ्घयन्ति ॥७॥

English—(Aloud) Venerab'e Jajali, Let the princes who are following me be told this is my words—Unattended I wish to give delight to the minister Rakshasa by unexpected approach So away with the trouble of following.

Chamberlain—So be it (going round—in the Sky) Ho, Ho kings the prince commands thus—I must not be followed by any one (observing—with joy) All the kings have turned back immediately after the prince's order [1]. Look, Oh Prince—

विमला

अन्वयः—कैश्चित्, खुरपुटैः, पुरस्तात्, खम्, खण्डयन्तः इव, खरतरकविकाकर्षणात्यर्थभुग्नैः, सोत्सेधैः, स्कन्धदेशैः, अश्वाः, निरुद्धाः, केचित्, विहतजवतया, मूकघण्टैः, मातङ्गमुख्यैः, निवृत्ताः, देव, जलधयः, इव, भूमिपालाः, ते, मर्यादाम्, न, उल्लङ्घयन्ति ॥ ७ ॥

व्याख्या—कैश्चित्=कतिपयैः नृपैः (some kings), खुरपुटैः=शफैः (with hoofs), पुरस्तात्=अग्रतः (in front), खम्=आकाशम् (the sky), खण्डयन्तः=विदारयन्तः (pounding), इव=यथा (as if), खरतरात्=तीक्ष्णात् (from a very tight), या कविका=खलीना (the reins), तस्याः आकर्षणम्=समाकृष्टिः (pull off), तेन अत्यर्थम्=पर्याप्तम् (much), भुग्नैः=वक्रैः (curved), अत एव सोत्सेधैः=मध्यभागोन्नतैः (raised up), स्कन्धदेशैः=ग्रीवाप्रदेशैः (with necks), अश्वाः=वाजिनः (horses), निरुद्धाः=अवरुद्धाः (have been checked), केचित्=कतिपये राजानः (some kings), विहितजवतया=निरुद्धवेगहेतुना (because of the speed checked), मूकघण्टैः=निःशब्दघण्टैः (with the bells mute), मातङ्गमुख्यैः=गजराजैः (on lordly tuskers), निवृत्ताः=प्रतिगताः (stopped on), देव=हे महाराज (sire), जलधयः=सागराः (the seas), इव=यथा (like) भूमिपालाः=नृपाः (the kings), ते=तव (your), मर्यादाम्=आज्ञाम् (order), न=नहि (not), उल्लङ्घयन्ति=अतिक्रामन्ति (overstep). ॥ ७ ॥

हिन्दी—कुमार! जिस प्रकार सागर अपने तीर (सीमा) का उल्लंघन नहीं करता, उसी प्रकार राजा आपकी शासन मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं। कई राजाओं ने तो तेज लगामों के खींचने से अत्यधिक नीचे झुके, अतः उन्नत हो उठने वाले अपने-अपने कंधों को, जो वेग के विहित हो जाने के कारण आकाश को हा अपने खुरपुटों से खण्ड-खण्ड करते प्रतीत हो रहे हैं—सहसा रोक लिया। कई राजे अपने र

मलयकेतु—आर्य, त्वमपि सपरिजनो निवर्तस्व। भागुरायण एको मामनुगच्छतु।

कञ्चुकी—तथा। (इति सपरिजनो निष्क्रान्त ।)

मलयकेतु—सखे भागुरायण, विज्ञप्तोऽहमहागच्छद्भिर्भद्रभटप्रभृतिभि 'यथा न वयममात्यराक्षसद्वारेण कुमारमाश्रयणीयमाश्रयामहे। किंतु कुमारस्य

गजराजों के साथ, जिनके वेग रुकते ही घण्टों की आवाज बन्द हो गयी—सहसा लौट पड़े। ७।

English—By some have been checked their horses, whose necks, raised up, are excessively bent on account of the very harsh bridles being pulled in and which are as if pounding with their hoofs the sky in front, while others have stopped on lordly tuskers with the bells mute because of the speed checked Thus the kings, like the seas, do not overstep the boundary assigned to them by your order 7

टिप्पणी—(१) सोत्सेधै —उद्+सिध्+घञ भाव उत्सेध अर्थात् उन्नतन सह सोत्सेधैः।

(२) स्कन्धदेशैः—स्कन्ध ग्रीवा तस्य देशा, तै स्कन्धदेशैः। यहाँ 'इत्थंभूतलक्षण' से तृतीया विभक्ति हुई।

(३ —खरतरखलिन —अतिशयेन खरम् खरतरम्।

(४)—निरुद्धा —नि+रुध्+क्त कर्मणि।

(५)—निवृत्ता —नि+वृत्+क्त कर्तरि।

(६)—पुरस्तात्—पूर्वस्मिन् देशे इति पूर्व+ङि+अस्ताति स्वार्थे—अव्यय।

(७)—मातङ्गमुख्या —मातङ्गनु मातङ्गानाम् वा मुख्या —'सुप्सुपा' से समास हुआ।

इस श्लोक में—स्वभावोक्ति, उत्प्रेक्षा तथा उपमा नामक अलङ्कार और स्रग्धरा छन्द है।

विमला

व्याख्या—मल०—आर्य=मान्य (Noble Sir), त्वमपि=भवानपि (you too), **सपरिजन सहानुचरवर्ग** (with attendants), **निवर्तस्व=प्रतिनिवृत्तोभव** (retire), भागुरायण (Bhagurayana), एक=अद्वितीय (alone), माम्= (me) अनुगच्छतु=अनुसरतु (follow)

कञ्चुकी—यत् (as), आज्ञापयति=आदिशति (commands), कुमार=भवान् (prince), [इति निष्क्रान्त (retires) सपरिजन (with attendants)]

मलय०—सखे=मित्र (friend), भागुरायण (Bhagurayan), अहम् (I), विज्ञापित=निवेदित (have been told), इह=अत्र (here), आगच्छद्भि=सम्प्राप्त (coming over), भद्रभटप्रभृतिभि=भद्रभटादिभि (Bhadrabhatta and others), यथा-यत् (that) वयम् (we) अमात्यराक्षसद्वारेण=मन्त्रिराक्षस द्वारा (through the minister Rakshasa), आश्रयणीयम्=सेवनीयम् (supportable) कुमार=मलयकेतुम् (to Malayaketu) न आश्रयामहे=न सेवामहे

सेनापतिं शिखरकमुरीकृत्य दुष्टामात्यपरिगृहीताच्चन्द्रगुप्तादपरक्ताः कुमारमाभिगामिकगुणयोगादाश्रयणीयमाश्रयामहे' इति । तन्न मया सुचिरमपि विचारयता तेषामयं वाक्यार्थोऽवधारितः ।

भागुरायणः—कुमार, न दुर्बोधोऽयमर्थः । विजिगीषुमात्मगुणसम्पन्नं प्रियहितद्वारेणाश्रयणीयमाश्रयेदिति ननु न्याय्य एवायमर्थः ।

(do not serve him), किन्तु = किन्तु (but), कुमारस्य = मलयकेतोः (Honourable Malayaketu's), सेनापतिम्=चमूनायकम् (general), शिखरकम्= तन्नामकम् (Saikharaka), उरीकृत्य=अङ्गीकृत्य (having accepted), दुष्टामात्यपरिगृहीतात् = दुश्चरितमन्त्रिवशीकृतात् (guided by a vile minister), चन्द्रगुप्तात् = मौर्यात् (from Chandragupta), अपरक्ताः = विरक्ताः (being alienated), आभिगामिकगुणयोगात् = प्रशस्तगुणयोगात् (on account of amiable qualities), आश्रयणीयम्=सेवनीयम् (supportable), आश्रयामहे= सेवामहे (approach), इति उक्तवन्तः विज्ञापिताः सुचिरमपि=सुदीर्घकालमपि (even for a long time), विचारयता=विविच्यता (thinking), मया (by me), वाक्यार्थः=वाक्याभिप्रायः (meaning of their words), नावधारितः=न ज्ञातः (I have not been able to grasp).

भागुरा॰—कुमार (Prince), न दुर्बोधोऽयमर्थः = नातिमयक्लिष्टोऽयमर्थः (the meaning of these words is not so hard to understand), पश्य = अवलोकय (see), विजिगीषुम् = विजयाभिलाषिणम् (ambitious), आत्मगुणसम्पन्नम् (endowed with personal qualities), प्रियहितद्वारेण=प्रियहितजनोपायेन (through the medium of one who is beloved and friendly), आश्रयेत्= सेवेत (should resort), इति, अयमर्थः (this meaning), न्याय्य एव= न्यायादनपेतः युक्त एव (is very proper course of conduct).

हिन्दी—मल॰—आर्य, तुम भी परिजनों के साथ लौट जाओ। केवल भागुरायण ही मेरे साथ चले।

कञ्चुकी—कुमार की जैसी आज्ञा (ऐसा कहकर परिजनों के साथ चला गया)।

मलय—आर्य भागुरायण, यहाँ आने वाले भद्र भट प्रभृति के द्वारा जो मुझसे यह निवेदित किया गया—"आश्रय के योग्य कुमार का आश्रय इन लोगों ने अमात्य राक्षस के द्वारा ग्रहण नहीं किया है, प्रत्युत कुमार के सेनापति शिखरसेन के माध्यम से, दुष्ट चाणक्य के वशीभूत चन्द्रगुप्त से विरक्त होकर, प्रशस्त गुणयुक्त श्रेयस्य कुमार का आश्रय ग्रहण किया है।" पर्याप्त विचार के बाद भी इन शब्दों का ठीक ठीक अर्थ मेरी समझ में नहीं आया।

भागुरायण—कुमार इसका अर्थ समझने में तो कुछ अधिक कठिनता नहीं है। विजयेच्छु, सदादि गुणों से विभूषित, आश्रय ग्रहण करने योग्य व्यक्ति का आश्रय प्रिय और हितकारी व्यक्ति के माध्यम से करना चाहिए—यह अर्थ तो उचित ही है।

English—*Malayaketu*—Noble Sir you too retire with your attendants. Let Bhagurayan alone follow me.

मलयकेतु —सखे भागुरायण, नन्वमात्यराक्षसोऽस्माकप्रियतमो हिततमश्च।

भागुरायण —एवमेतत्। किन्त्वमात्यराक्षसश्चाणक्ये बद्धवैरो न चन्द्रगुप्ते। तद्यदि कदाचिच्चाणक्यमतिजितकाशिनमसहमान स साचिव्यादवरोपयेत्ततो नन्दकुलभक्त्या नन्दान्वय एवायमिति सुहृज्जनापेक्षया चामात्यराक्षसश्चन्द्रगुप्तेन सह सदधीत। चन्द्रगुप्तोऽपि पितृपर्यायागत एवायमिति सधिमनुमन्येत। एव सत्यस्मासु कुमारो न विश्वसेदित्ययमेपा वाक्यार्थ ।

Chamberlain—As your commands Sir (Exit with his attendants)

Malayaketu—Friend Bhagurayan, I am told by Bhadrabhatta and others who came to me, that they were not supporting to supportable prince by minister Rakshasa, but are supporting, through the *general Shikharsen, being alienated from Chandragupta who was* guided by a vile minister Chanakya But I could not grasp their statement, thinking till a long time

Bhagurayah—Prince, the meaning of this sentence is not so hard to understand This is indeed the proper course of conduct, since one should resort to a master who is ambitious and endowed with personal qualities through the medium of one who is beloved and friendly

विमला

व्याख्या—मलयकेतु —सखे भागुरायण (Friend Bhagurayan), अमात्यराक्षस (minister Rakshasa), ननु=निश्चयेन (indeed), अस्माकम् (ourselves) प्रियतम (the most beloved), च=पुन (and), हिततमश्च (the greatest well-wisher)

भागुरायण —एवमेतत्=(So it is), किन्तु=किञ्च (but), अमात्यराक्षस (minister Rakshasa), चाणक्ये=कौटिल्ये (with Chanakya) बद्धवैर= घृतविद्वेष (has rooted enmity), न चन्द्रगुप्ते (not with Chandra gupta), तत्=तस्मात् (so) यदि (if), कदाचित्=जातु (at some time), चन्द्रगुप्त =मौर्य (Chandragupta), अविजितकाशिनम्=अनल्पमदशालिनम् (the extreme haughtiness) चाणक्यम्=कौटिल्यम् (Chanakya), असहमान =अमृष्यमाण (intolerant), साचिव्यात्=मन्त्रिस्थानात् (from the post of minister), अवरोपयत्=च्यावयेत् (should ever displace), तत =तदा (then) नन्दकुलभक्त्या=नन्दान्वयप्रेम्णा (through devotion to the race of Nanda) अय=चन्द्रगुप्त (this), नन्दान्वय =नन्दवश्य एव (after all Nanda's son), सुहृज्जनापेक्षया=मित्रजनानुराधन (for the sake of his friends), अमात्यराक्षस =मन्त्रिराक्षस (minister Rakshasa), चन्द्रगुप्तेन=मौर्येण सह (with Chandragupta), सन्दधीत=सन्धि कुर्यात् (might

make treaty), चन्द्रगुप्तोऽपि=मौर्योऽपि (Chandragupta too), पितृपर्यायागत =पितृक्रमगत (connected with him by ancestral succession), एवायन=राक्षस (Rakshasa), इति सन्धिम्=सम्मेलनम् (alliance), अनुमन्येत=स्वीकुर्वीत (would agree), एवसति=सम्मेलने सति (in that case), कुमार=मलयकेतु (Prince) अस्मासु (in them), न विश्वसेत=न श्रद्दधीत (would not trust), इति एषाम्=भद्रभटादीनाम्=(Bhadrabhatta and others), वाक्यार्थ=तात्पर्य (this is the sense of their speech)

हिन्दी—मलयकेतु—मित्र भागुरायण राक्षस हमारा प्रियतम मित्र है और सर्वाधिक हितैषी भी है।

भागुरायण—यह सत्य ठीक है किन्तु, अमात्य राक्षस चाणक्य से वैर है चन्द्रगुप्त से नहीं। तो यदि कभी वह चन्द्रगुप्त विजय से अत्यन्त गर्वित चाणक्य को सहन न करता हुआ उसे मन्त्रिपद से हटा दे, उसके पश्चात् नन्दवंश में अनुरक्ति के कारण—चन्द्रगुप्त नन्दवंश का ही है ऐसा सोचकर, अपने मित्रों की अपेक्षा से अमात्य राक्षस चन्द्रगुप्त के साथ सन्धि कर ले। चन्द्रगुप्त पितृपरम्परा से प्राप्त राक्षस को जानकर इस सन्धि का अनुमोदन कर दे। ऐसा होने पर हमारे ऊपर कुमार विश्वास न करें—यही इनके वाक्य का अर्थ है।

English—*Malayaketu*—But friend Bhagurayana, minister Rakshasa is certainly the most beloved and the greatest wellwisher unto ourselves.

Bhagurayana—So it is But minister Rakshasa has fixed enmity with Chanakya and not with Chandragupta. So if, intolerant of Chanakya, who is too much elated by success, he ever displaces him from the post of minister, then on account of his devotion to the race of Nanda he might make treaty with Chandragupta, as well for the sake of his friends, because he is after all Nanda's son. Chandragupta too might approve of the treaty, because he is really connected with him by hereditary succession. In that case you yourself would not trust them. This is the sense of their words.

टिप्पणी—(१) विरुद्ध—वि+रुध्+क्त प्रत्यय से विरुद्ध।

(२) [illegible]—[illegible] से [illegible] हुआ है। '[illegible]' शब्द [illegible] है जिसका अर्थ 'स्वीकार करना' होता है।

(३) [illegible]—[illegible] इस विग्रह में अभि+रम्+क्त+[illegible] [illegible] ने 'अभिरामिन्' बना। 'तच्छीलमस्य इति' इस विग्रह में 'अभिराम' शब्द से [illegible] करके 'अभिरामिकम्' बना। [illegible] [illegible] हुआ। मलयकेतु के साथ इस विरोध का प्रभाव केवल चन्द्रगुप्त को दूषित करने के लिए किया गया है।

(४) [illegible]—अव+[illegible]+क्त प्रत्यय से इस रूप की सिद्धि हुई है। राक्षस

मलयकेतुः—युज्यते । अमात्यस्य गृहमादेशय ।

भागुरायणः—इत इतः कुमारः ।

(उभौ परिक्रामतः ।)

भागुरायणः—इदममात्यगृहम् । प्रविशतु कुमारः ।

राक्षसः—(आत्मगतम् ।) अये, स्मृतम् । (प्रकाशम् ।) भद्र, अपि दृष्टस्त्वया कुसुमपुरे स्तनकलशः ।

पुरुषः—अमच्च, अह इ । (अमात्य, अथ किम् ।)

मलयकेतुः—(आकर्ण्य ।) भागुरायण, कुसुमपुरवृत्तान्तः प्रस्तूयते । न तत्र तावदुपसर्पामः श्रृणुमस्तावत् । कुतः—

को छोडकर शिखरक को माध्यम भद्रभटादि ने क्यों बनाया । उनके कहने का आशय क्या है ? इसी सन्दर्भ में इसका प्रयोग किया गया है ।

विमला

व्याख्या—मलयकेतु —युज्यते=समुचितमेव (that is reasonable), अमात्यस्य=सचिवराक्षसस्य (minister's), गृहम्=सदनम् (to the house), आदेशय=दर्शय (guid me)

भागुरायण —इत इतः कुमारः (This way prince, this way), [उभौ=द्वौ (both), परिक्रामतः=भ्रमतः (go round the stage)], कुमार (Prince), इदम्=एतत् (this is), अमात्यराक्षसस्य (minister Rakshasa's), गृहम् (the house), प्रविशतु (let enter), कुमार (Prince).

मलयकेतु —एष (here), प्रविशामि (I enter),

राक्षस —[आत्मगतम् (to himself)], अये (Ah), स्मृतम्=ज्ञातम् (recollect it), [प्रकाशम्=(Aloud)], भद्र=कल्याणिन् (gentleman), अपि दृष्टस्त्वया (did you see), कुसुमपुरे (in Kusumpura), स्तनकलशः (Stanakalasha)

पुरुष —अमात्य=मन्त्रिन् (minister), अथ किम् (I did).

मलयकेतु —[आकर्ण्य (listening), भागुरायण (Bhagurayan), कुसुमपुरवृत्तान्तः=कुसुमपुरोदन्तः (Kusumpur affairs), प्रस्तूयते=विधीयते (are being discussed), तत्=तस्मात् (so), न=नहि (not), तत्र (there), उपसर्पामः=सन्निधिम् गच्छाव (approach in the midst of it), श्रृणुमस्तावत् (but will listen).

हिन्दी—मलयकेतु—ठीक है । सचिव का गृह बतलाओ ।

भागुरायण—इधर कुमार इधर आइये ।

(दोनों घूमते हैं)

यह अमात्य राक्षस का घर है । कुमार प्रवेश कीजिए ।

मलयकेतु—यह प्रवेश करता हूँ ।

सत्त्वभङ्गभयाद्राज्ञां कथयन्त्यन्यथा पुरः।
अन्यथा विवृतार्थेषु स्वैरालापेषु मन्त्रिणः ॥ ८ ॥

राक्षस—(अपने आप) अरे, स्मरण आ गया। (स्पष्ट) भद्र, कुसुमपुर में क्या तुम स्तनकलश से मिले थे।

पुरुष—अमात्य और क्या ?

मलयकेतु—(सुनकर) भागुरायण, कुसुमपुर का वृत्तान्त चल रहा है। अतः वहाँ जाना नहीं है। केवल सुनो।

English—*Malayaketu*—That is reasonable, guide me to the house of the minister.

Bhagurayana—This way prince this way (Both go round the stage)

Bhagurayana—This is the house of minister. Let prince enter.

Malayaketu—Here I enter,

Rakshasa—(To himself) Ah, I recollect it ! (Aloud) Friend, did you see Stankalasa in Kusumpura ?

Man—Minister, I did.

Malayaketu—(Listening), Bhagurayan, Kusumpura affairs are being discussed we must not approrch in the midst of it, but will listen

विमला

अन्वयः—मन्त्रिणः राज्ञां, पुरः सत्वभङ्गभयात्, अन्यथा कथयन्ति, विवृतार्थेषु, स्वैरालापेषु अन्यथा ॥ ८ ॥

व्याख्या—मन्त्रिणः = सचिवाः (ministers), राज्ञाम् = नृपानाम् (of kings), पुरः = समक्षम् (in presence), सत्त्वभङ्गभयात् = मनोभङ्गभीत्या (fearing loss of prestige), अन्यथा = प्रकारान्तरेण (otherwise), कथयन्ति = भाषन्ते (speak), विवृतार्थेषु = प्रकटीकृतार्थेषु (facts are disclosed), स्वैरालापेषु = स्वच्छन्दभाषणेषु (in free talk), अन्यथा = प्रकारन्तरेण (in other way). ॥ ८ ॥

हिन्दी—मन्त्री लोग राजाओं के सम्मुख मान या प्रभाव के नष्ट हो जाने के भय से किसी बात को अन्य प्रकार से कहते हैं और परस्पर स्पष्ट विषयों वाली स्वच्छन्द बातचीत में कुछ भिन्न प्रकार से कहते हैं ॥ ८ ॥

English—Ministers speak in one way in presence of kings, fearing loss of prestige, but otherwise in confidential talks where matters are freely and openly stated. 8.

टिप्पणी—(१) स्वैरालापेषु—स्वै + आलापेषु—अपने जनों के साथ स्वतन्त्र बात चात में।

(२) अन्यथा अन्यथा—इस श्लोक में 'अन्यथा' शब्द की आवृत्ति इस बात की सूचना है कि एक ही बात दो तरह से प्रकट की जाती है।

भागुरायण —यदाज्ञापयति कुमारः ।

राक्षस —भद्र, अपि तत्कार्यं सिद्धम् ।

पुरुष —अमच्चप्पसादेण सिद्धम् । (अमात्यप्रसादेन सिद्धम् ।

मलयकेतु —सखे भागुरायण, किं तत्कार्यम् ।

भागुरायण —कुमार, गहन' सचिववृत्तान्त । नैतावता परिच्छेतु शक्यते । अवहितस्तावच्छृणु ।

राक्षस —भद्र, विस्तरेण श्रोतुमिच्छामि ।

पुरुष —सुणादु अमच्चो । अत्थि दाव अह अमच्चेणाणत्तो जह—'करभअ, कुसुमपुर गच्छ । मह वअणेण भण वेआलिअ थणकलस जह चाणक्कहदएण तेसु तेसु अण्णाभङ्गेसु अणुचिट्ठीअमाणेसु चन्दउत्तो उत्तेअणसमत्थेहि सिलोएहि

(३) सत्वभङ्गभयात्—मनस्वी मन्त्री राजा के सामने उन्हीं बातों को प्रकट करते हैं जिनमे उन्हें मानभङ्ग का भय नहीं रहता ।

सहृदयों के बीच यथार्थ भाषण में, तथा मानभङ्ग भय के कारण नृपों के सामने अ य रूप से भाषण करने से—सत्वभङ्ग भयरूप पदार्थ का हेतुत्व रहने के कारण इस श्लोक में पदार्थ हेतुक काव्यलिङ्ग अलङ्कार है । तथा अनुष्टुप नामक छन्द है । दोनों के लक्षण पहले लिखे जा चुके हैं ।

विमला

व्याख्या—भागुरायण —यत् (as), आज्ञापयति = आदिशति (commands), कुमार (Prince)

राक्षस —भद्र (Gentleman), तत्कार्यम् (that work), अपि सिद्धम् (is done) ?

पुरुष —अमा यप्रसादेन (through minister s favour), सिद्धम् = सफलम् (done)

मलयकेतु —सखे भागुरायण (Freind Bhagurayan), किम् (what), तत्कार्यम् (is that work)

भागुरायण —कुमार (Prince), सचिववृत्तान्त = अमात्योदन्त (the affairs of the minister), गहन = क्लिष्ट (are mysterious), एतावता = अल्पकालेन (at this stage), न = नहि (not), परिच्छेतुम् = बोद्धु, निर्णेतुम् वा (be known), शक्यते (can), तावत् (so), अवहितम् = सावधानो भू वा (attentively), शृणु = आकर्णय (should hear)

राक्षस —भद्र (gentleman), विस्तरेण (in detail) श्रोतुम् (to hear), इच्छामि (I wish)

पुरुष —शृणोतु (listen), अमात्य' (minister) यथा = यत् , अहम्, (I), अमात्येन (by minister), आज्ञप्त = अस्मि (was ordered), करभक (Karbhaka), कुसुमपुरम् (to Kusumpura), गच्छ (go), मम वचनेन (in my words), वैतालिकम् (to bard) स्तनकलश (Stankalas) भण = कथय (tell) यथा = तत् (that), चाणक्यहतकेन = दुष्टकौटिल्येन (by cursed Chankya), तेषु तेषु = पूर्वोक्तेषु (each and every), आज्ञाभङ्गेषु = अनुशासनापालनेषु (super-

उवसिलोअइदव्वो' त्ति । (शृणोत्वमात्यः । अस्ति तावदहममात्येनाज्ञप्तः यथा—'करभक कुसुमपुरं गच्छ । मम वचनेन भण वैतालिक स्तनकलशं यथा चाणक्यहतकेन तेषु तेषु आज्ञाभङ्गेषु अनुष्ठीयमानेषु चन्द्रगुप्तः उत्तेजन-समर्थैः श्लोकैरुपश्लोकयितव्य' इति ।

राक्षसः—भद्र, ततस्ततः ।

करभकः—तदो मए पाटलिउत्तं गदुअ सुणाविदो अमच्चसंदेसं वेआलिओ

cession of orders), अनुष्ठीयमानेषु = क्रियमाणेषु done), चन्द्रगुप्त० = मौर्य० (Chandragupta), उत्तेजनसमर्थैः = क्रोधोत्पादनशक्तैः (capable of rousing anger), श्लोकैः (with verses), उपश्लोकयितव्य = स्तोतव्य (has to be belauded).

हिन्दी—भागुरायण—कुमार की जैसा आज्ञा ।

राक्षस—भद्र, क्या कुछ सफलता मिली ।

पुरुष—अमात्य की कृपा से सफलता मिली है ।

मलयकेतु—मित्र भागुरायण, वह कौन सा कार्य है ?

भागुरायण—कुमार, अमात्य का वृत्तान्त गूढ होता है । इतने से निश्चित करना असम्भव है । ध्यान देकर सुनिये ।

राक्षस—भद्र, विस्तार से सुनना चाहता हूं ।

पुरुष—अमात्य सुनिये । मुझ आपने आदेश दिया था—'करभक कुसुमपुर जाओ । मेरा ओर से वैतालिक स्तनकलश से कहो कि दुष्ट चाणक्य के द्वारा उन उन आज्ञा भङ्गों के किये जाने पर उत्तेजित करने में समर्थ श्लोकों के द्वारा चन्द्रगुप्त की स्तुति की जानी चाहिए ।'

English—*Bhagurayan*—As the prince commands.

Rakshasa—Good man, is the work done ?

Man—Yes, through the minister's favour.

Malayaketu—Friend Bhagurayan, what the business in done ?

Bhagurayan—Prince, the affairs of the minister are deep, so it can not be known at this stage You should listen attentively.

Rakshasa—Gentleman, I want to hear in detail.

Man—Listen minister. The matter is, I was orderd by minister saying—Karbhaka go to Kusumpura and tell in my words to the barder Stankalash that he should praise Chandragupta at each and every act of disobedience done by vile Chanakya

विमला

व्याख्या—राक्षस—राक्षस (Rakshasa), भद्र=कल्याणिन् (good man), ततस्ततः = तत्पश्चात् (what next).

करभक—करभकः (Karbhaka), तदः=तत्पश्चात् (after that), मया=

थणकलसो। एत्थन्तरे णन्दउलविणासदूणस्स पोरजणस्स परितोसं समुप्पाद-
अन्तेण रण्णा आघोसिदो कौमुदीमहोसवो। सो अ चिरकालपरिवट्टमाणो
जणिदपरिचओ अभिमदवधूजणसमागमो विअ ससिणेहं माणिदो णअरजणेण।
(ततो मया पाटलिपुत्रं गत्वा श्रावितः अमात्यसंदेशं वैतालिकः स्तनकलशः।
अत्रान्तरे नन्दकुलविनाशदूनस्य पौरजनस्य परितोषं समुत्पादयता राज्ञाघोषितः
कौमुदीमहोत्सवः। स च चिरकालपरिवर्तमानो जनितपरिचयोऽभिमतवधू-
जनसमागम इव सस्नेहं मानितो नगरजनेन।)

राक्षसः—(सबाष्पम्।) हा देव नन्द,

करभकेन (by me), पाटलिपुत्रम्=कुसुमपुरम् (to Pataliputra), गत्वा (going), श्रावित=कथितः (was informed), अमात्यसन्देशं=सचिवसन्देशम् (minister's message), वैतालिकः (the bard), स्तनकलशः (Stankalash), अत्रान्तरे=सदेहश्रावणानन्तरे (In the meantime), नन्दकुलविनाशदूनस्य=नन्दान्वयचदुर्हृदयस्य (were depressed by the extinction of the family of Nanda), पौरजनस्य=पुरवासिनः (to the citizens), परितोषम्=सन्तोषम् (the townsfolk), समुत्पादयता=जनयता (disiring to gladden), राज्ञाघोषित. (proclaimed), कौमुदीमहोत्सवः (Kaumudi festival), स च (that festival), चिरकालपरिवर्त्तमानो=बहुकालव्याप्यजायमानः (returning after a long time), जनितपरिचयो=समुत्पादितानन्दः (familiar), अभिमतवधूजनसमागम इव=ईप्सितवधुजनसमागम इव (like the company of beloved wife), सस्नेहं=सानुरागम् (delightfully), मानित.=अतिसत्कृतः (welcomed), नगरजनेन=पुरवासिना (by the citizens).

राक्षस.—[सबाष्पम्= (Tearfully)], हा देवनन्द (Alas, O king Nanda).

हिन्दी—राक्षस—भद्र उसके बाद, उसके बाद?

करभक—उसके बाद पाटलिपुत्र जाकर मैंने अमात्य का सन्देश वैतालिक स्तनकलश को सुना दिया। इसी बीच नन्दकुलविनाश से दुःखी नगरनिवासियों को प्रसन्नता को उत्पन्न करते हुए राजा के द्वारा कौमुदीमहोत्सव मनाये जाने की घोषणा कर दी गयी। बहुत दिनों के बाद आया हुआ पूर्वपरिचित भी यह उत्सव पुरवासियों के द्वारा अभीष्ट वधू के साथ मिलने के समान सस्नेह अभिनन्दित किया गया।

राक्षस—(आँखों में आँसू भरकर) हा देवनन्द!

English—*Rakshasa*—Good man what next?

Karbhaka—Then the bard Stankalasa was informed of minister's command by me going to Pataliputra. In the meantime the king desiring to gladden the citizens who were depressed by the destruction of the Nandas, proclaimed the great Kaumudi festival. That festival, so familiar as it had become by recurring for a long time, it was like the company of a beloved wife gladly welcomed by the townsmen.

कौमुदी　कुमुदानन्दे　जगदानन्दहेतुना ।
कीदृशी सति चन्द्रेऽपि नृपचन्द्र त्वया विना ॥ ९ ॥

Rakshasa—(In tears), Alas, Sire Nanda.

विमला

अन्वयः—हे नृपचन्द्र, कुमुदानन्दे, चन्द्रे, सति, अपि, जगदानन्दहेतुना, त्वया, विना, कौमुदी, कीदृशी ? ॥ ९ ॥

व्याख्या—हे नृपचन्द्र=हे क्षितीशवर्य (O you the moon among the kings), कुमुदानन्दे=कुमुदानाम्, कुवलयानाम्, आनन्दे=प्रीतिजनके (the gladdener of night lotuses), अथवा—कौ, पृथिव्याम् कोः=पृथिव्या वा मुदम् हर्षम् आनन्दयति, वर्द्धयतीति तस्मिन्, जगन्निहर्षवर्द्धके (the source of joy to the world), अथवा—कुत्सिता मुद्येषाम् ते कुमुदास्तानानन्दयति रञ्जयति—इति कुमुदानन्द तस्मिन् कुमुदानन्दे=अपशस्तहर्षशालिजनरञ्जके (gratifier of people delighting in bad things such as Chanakya and people of his type), चन्द्रे सति=चन्द्रमसि सत्यपि (in presence of the moon), अथवा=चन्द्रगुप्ते सत्यपि (in presence of Chandragupta), जगदानन्दहेतुना=जगत समग्रायाः धरायाः आनन्दस्य, हर्षस्य यो हेतुः निदानं तथाविधेन, पृथिवीहर्षोत्पादकेन (the cause of delight to the whole world), त्वया विना=भवता विना (without you), कौमुदी=ज्योत्स्ना (moonlight), अथवा कौमुदीमहोत्सवप्रवस्या (the Kaumudi festival), कीदृशी=किम्प्रकारा=निरर्थक इति भाव (what can be) इस श्लोक में श्लेष तथा व्यतिरेक अलङ्कार तथा अनुष्टुप छन्द है।

हिन्दी—यह श्लोक 'श्लिष्ट' है। अतः इसके दो अर्थ हैं :—

(१)—हे चन्द्रतुल्य राजन् नन्द ! कुमुदों को आनन्दित करने वाले चन्द्रमा के रहने पर भी समग्र संसार के आनन्द के हेतुस्वरूप तुम्हारे बिना इस शरद पूर्णिमा का कौमुदी-महोत्सव कैसा ?

(२)—हे चन्द्रतुल्य महाराज नन्द ! पृथिवी के आनन्द को बढ़ाने वाले चन्द्रगुप्त के रहने पर भी समग्र संसार के आनन्द के कारण तुम्हारे बिना यह कौमुदीमहोत्सव कैसा ?

English—(1) Alas king Nanda !—moon among king what 'Kaumudi festival of this Sharad purnima' without you—the delighter of the whole world, inspite of the presence of the full moon—the delighter of lotuses. 9.

(2) Alas king Nanda !—moon among kings—what is Kaumudi festival without you—the delighter of the whole world, in spite of presence of Chandragupta—the delighter of some whole ordinary men. 9.

करभकः—तदो सो लोअलोअणाणन्दभूदो अणिच्छन्तस्स एव तस्स णिवारिदो चाणक्कहदएण। एत्थन्तरे थणकलसेण चन्दउत्तसमुत्तेजिआ सिलोअपरिपाटी पवट्टिदा। (ततः स लोकलोचनानन्दभूतोऽनिच्छत एव तस्य निवारितश्चाणक्यहतकेन। अत्रान्तरे स्तनकलशेन चन्द्रगुप्तसमुत्तेजिका श्लोकपरिपाटी प्रवर्तिता।)

राक्षसः—कीदृशी सा।

(पुरुषः 'सत्त्वोद्रेकस्य' इत्यादि पूर्वोक्त पठति।)

राक्षसः—(सहर्षम्।) साधु स्तनकलश, साधु। काले भेदबीजमुप्तमवश्यं फलमुपदर्शयति। कुतः—

विमला

करभक—ततः तदनन्तरम् (then), सः=असौ (this), लोकलोचनानन्दभूतः= लोकानाम् लोचनानि लोकलोचनानि तेषामानन्दभूतौ मनुजनयनसुखप्रदः (the joy of the eyes of the people), अनिच्छतः=अनभिलषितः (the unwilling), एव तस्य=चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), निवारितः=प्रतिषिद्धः (was forbidden), चाणक्यहतकेन=दुष्टकौटिल्येन (by the cursed Chanakya), अत्रान्तरे=एतन्मध्ये (meanwhile), स्तनकलशेन=तन्नाम्ना राक्षसदूतेन (by Stankalash), चन्द्रगुप्तसमुत्तेजिका=मौर्योद्दीपनकरी (exasperated), श्लोकपरिपाटी=पद्यरचनापद्धतिः (a series of stanzas), प्रवर्तिता=कृता (sang).

राक्षस.—कीदृशी सा (How was it like)?

[पुरुषः कारभकः (men) 'सत्त्वोद्रेकस्य' etc, पूर्वोक्तम् (previousby said), पठति (repeats)].

राक्षस.—[सहर्षम् (with joy)], साधु (Bravo), स्तनकलश (Stankalasa) साधु (Bravo), काले=उपयुक्ते अवसरे (it time), भेदबीजम् (the seed of discord), उप्तम्=वपितम् (sown), अवश्यम् (assuredly), फलम्= परिणामम् (fruit), उपदर्शयति (bear), कुतः (For):—

हिन्दी—करभक—उसके बाद मनुष्यों के नेत्रों के लिए आनन्दस्वरूप उस कौमुदी महोत्सव पर दुष्ट चाणक्य ने चन्द्रगुप्त की इच्छा के विरुद्ध रोक लगा दी। इसी बीच स्तनकलश ने चन्द्रगुप्त को उत्तेजित करने वाली स्तुति परम्परा प्रारम्भ कर दी।

राक्षस—वह कैसी थी?

(पुरुष "सत्वोद्रेकस्य" इत्यादि पूर्वोक्त श्लोक को पढ़ता है)

राक्षस—(हर्ष के साथ) बहुत अच्छा स्तनकलश बहुत अच्छा। समय पर बोया हुआ भेदरूपी बीज अवश्य ही फल दिखाता है। क्योंकि:—

English—*Karbhaka*—This joy to the eyes of the people was forbidden by the cursed Chanakya in spite of the unwilling King. At this stage a series of stanzas that was to rouse Chandragupta, was launched out by Stankalasa.

सद्यः क्रीडारसच्छेदं प्राकृतोऽपि न मर्षयेत्।
किं तु लोकाधिकं तेजो बिभ्राणः पृथिवीपतिः ॥ १० ॥

मलयकेतु:—एवमेतत्।

राक्षसः—ततस्ततः।

Rakshasa—How was it like ?

(Repeats the verse 'सर्वोत्कर्षस्य' etc as previously said).

Rakshasa—(with joy) Barvo Stankalas bravo ! The seed of discord sown in time assurdly bears the good fruit.

For :—

निमला

अन्वयः—प्राकृत, अपि, सद्य, क्रीडारसच्छेदम्, न, मर्षयेत्, लोकाधिकम् तेजः, बिभ्राणः, पृथिवीपतिः, किं तु ? ॥ १० ॥

व्याख्या—प्राकृत = अतिसाधारण (an ordinary person), अपि (even), सद्य = हेतुमन्तरा क्रीडायाम् रस=क्रीडारसः तस्य छेदो भङ्गस्तम् क्रीडारसच्छेदम् क्रीडास्वादभङ्गम् the instant stoppage of the pleasurs of sports), न मर्षयेत् = न सहेत् (will not brook), लोकाधिकम् = लोकोत्तरम् (transcends the world), तेजः = धाम (power), बिभ्राणः = धारयन् (bearing), पृथिवीपतिः = क्षितीश (the lord of the world), किं तु = नैवमर्षयेदिति (do so) ॥ १० ॥

मलयकेतु—एवमेतत् (it is just so).

राक्षस—ततस्ततः (what next)

हिन्दी—साधारण व्यक्ति भी क्षणभर के लिए क्रीडा के आनन्द के व्याघात को सहन नहीं कर सकता है, तो फिर लोकोत्तर तेज को धारण करने वाले राजा का तो कहना ही क्या ? ॥ १० ॥

मलयकेतु—यह ऐसा ही है

राक्षस—उसके बाद, उसके बाद ?

English—Even an ordinary person will not stand the instant stoppaze of the pleasures of sports, would the lord of the world, possessed of lustre transcending that of all men do so. 10.

Malayaketu—So it is

Rakshasa—What next.

टिप्पणी—(१) अनिच्छन्—अनिच्छन्तमनादृत्येत्यर्थः। 'षष्ठी चानादरे' इति षष्ठी।

(२) मधुघातिका—मधु+हन्+णिच्+ण्वुल्, कर्तरि, स्त्रियाम्।

(३) कीदृशी—किम्+दृश्+क्स—कर्तरि स्त्रियाम्।

(४) फलम्—चाणक्य चन्द्रगुप्त में भेदरूपी फल।

(५) लोकाधिकम्—लोकादधिकम्।

करभक —तदो चन्दउत्तेण अण्णाभङ्गकलुसिदेण पसङ्गसूचिद अमच्चगुण पससिअ अपव्भसिदो अहिआरादो चाणक्कहदओ। (ततश्चन्द्रगुप्तेनाज्ञाभङ्गकलुपितेन प्रसङ्गसूचितममात्यगुण प्रशस्यापभ्रंशितोऽधिकाराच्चाणक्यहतक'।)

मलयकेतु —सखे भागुरायण, गुणप्रशसया दर्शितश्चन्द्रगुप्तेन राक्षसे भक्तिपक्षपात ।

भागुरायण —न तथा गुणप्रशसया यथा चाणक्यवटोर्निराकरणेन।

राक्षस —किमयमेवैक कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधश्चन्द्रगुप्तस्य चाणक्य प्रति कोपकारणमुतान्यदप्यस्ति।

मलयकेतु —सखे, चन्द्रगुप्तस्यापरकोपकारणान्वेषणेन कि फलमेष पश्यति।

---

(६) विभ्राण —भृ+शानच्—उभयपदी धातु से निर्मित।
इस श्लोक में अर्थापत्ति अलङ्कार एव अनुष्टुप् छन्द है॥

विमला

व्याख्या—करभक —तत =तत्पश्चात् (then), चन्द्रगुप्तेन=वृषलेन (by Chandragupta), आज्ञाभङ्गकलुषितेन=आज्ञाया भङ्गस्तेन कलुषितस्तेन आज्ञाभङ्गकलुषितेन=आदेशोच्छेदा प्रसन्नचित्तन (by the supercession of orders), प्रसङ्ग सूचितस्तम् प्रसङ्गसूचितम् (by the drift of conversation), अमात्यगुणम्=अमात्यस्य गुणम् अमात्यगुणम्=राक्षसस्य सौशील्यादिकम् (the vertues of minister), प्रशस्य=सस्तुत्य (praised), अपभ्रंशित=च्यावित (dismissed), अधिकारात्=साचिव्यपदात् (from the office), चाणक्यहतक=दुष्टचाणक्य (the vile Chanakya)

मलयकेतु —सखे भागुरायण (Friend Bhagurayan), गुणप्रशसया=गुणाना सौशील्यादीना प्रशसा सस्तुति गुणप्रशसा तया गुणप्रशसया सौशील्यादिसस्तुत्या (by this praise of his qualities), दर्शित=प्रकटित (has shown), चन्द्रगुप्तेन=वृषलेण (by Chandragupta), राक्षसे=नन्दामात्ये (towards Raksasa), भक्तिपक्षपात =भक्ति- अनुराग एव पक्ष आश्रय स्वस्मिन् पात आसक्ति भक्तिपक्षपात' (leaning through affection)

भागुरायण —न तथा (Not so), गुणप्रशसया=गुणवर्णनेन (by the praise of his qualities), यथा=मौर्येण राक्षसे अनुरागोदर्शित (as), चाणक्यवटो=अल्पबुद्धे कौटिल्यस्य (of the cursed Chanakya), निराकरणेन=तिरस्कारेण (the removal from office)

राक्षस -किमयम् (is this), एवैक (only), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेध (probibition of the Kaumudi festival), चन्द्रगुप्तस्य=वृषलस्य (Chandragupta's), चाणक्य प्रति (on Chanakya), कोपकारणम्=क्रोधहेतु (reason for anger), उत (or), अन्यदपि=अपरोऽपि (any thing also), अस्ति (is)

मलयकेतु —सखे=मित्र (friend), चन्द्रगुप्तस्य=वृषलस्य (Chandragupta's),

भागुरायणः—कुमार, मतिमांश्चाणक्यो न निष्प्रयोजनमेव चन्द्रगुप्तं कोपयिष्यति, न च कृतवेदी चन्द्रगुप्त एतावता गौरवमुल्लङ्घयिष्यति । सर्वथा चाणक्यचन्द्रगुप्तयोः पुष्कलात् कारणाद्यो विश्लेष उपपद्येत स आत्यन्तिको भविष्यतीति ।

अपरकोपकारणान्वेषणेन (*looking for other cause of anger*), एष (he), किम्फलम् (what good), पश्यति (does see).

भागुरायणः—कुमार (Prince), मतिमांश्चाणक्य=प्रशस्तधीशाली कौटिल्य (wise Chanakya), न निष्प्रयोजनमेव=न निर्हेतुकमेव (not for nothing), चन्द्रगुप्तम्=वृषलम् (to Chandragupta), कोपयिष्यति (will rouse anger), न च (nor), कृतवेदी=कृत वेत्ति जानाति, कृतवेदी=कृतज्ञ (grateful), चन्द्रगुप्त=वृषलः (Chandragupta), एतावता=अल्पेन कारणेन (for this trifle), गौरवम्=महत्त्वम् (the respect), उल्लङ्घयिष्यति=अतिक्रमिष्यति (will overstep), सर्वथा=सर्वत (in every way), चाणक्यचन्द्रगुप्तयोः (between Chanakya and Chandragupta), पुष्कलात्=महतः (of sufficient), कारणात् (reasons), यः (which), विश्लेषः=भेदः (estrangement), उपपद्येत=जायेत (will be), स=असौ (that), आत्यन्तिक=प्रतीकारायोग्यः (permanent).

हिन्दी—करभक—इसके बाद आदेश की अवहेलना के कारण चन्द्रगुप्त का मन खिन्न हो गया और प्रसङ्गतः आपकी प्रशंसा करते हुए, उसने दुरात्मा चाणक्य को उसी क्षण अधिकार से च्युत कर दिया ।

मलयकेतु—मित्र भागुरायण, गुणगान करते हुए चन्द्रगुप्त ने राक्षस में अपनी भक्ति प्रदर्शित कर दी है ।

भागुरायण—गुणों की प्रशंसा के द्वारा उतना नहीं, जितना चाणक्य के अपमान के द्वारा ।

राक्षस—क्या यही एकमात्र कारण है—कौमुदी महोत्सव पर रोक लगा देना—अथवा कोई अन्य कारण भी है ।

मलयकेतु—मित्र ! चन्द्रगुप्त के क्रोध के दूसरे कारणों को ढूँढकर इसे क्या मिलेगा ?

भागुरायण—कुमार ! बुद्धिमान चाणक्य निष्प्रयोजन चन्द्रगुप्त को क्रुद्ध नहीं करेगा, और न चन्द्रगुप्त हो मात्र इतने लघु कारण मात्र से चाणक्य के गौरव का ही उल्लङ्घन करेगा । निश्चय ही चन्द्रगुप्त और चाणक्य के बीच जो यह भेद उत्पन्न हुआ होगा, उसका कोई स्थायी कारण होगा ।

English—*Karabhka*—Then the vile Chanakya was removed from office by Chandragupta, who was enraged at the supercession of orders and praised the virtues of minister suggested by the drift of conversation.

Malayaketu—Friend, Bhagurayan by this praise of his qualities Chandragupta has disclosed his leaning through affection towards Rakshasa.

करभकः—अत्थि अण्ण वि चन्दउत्तस्स कोयकालणम्। उवेक्खिदो णेण अवक्कमन्तो मलअकेदू अमच्चरक्खसो त्ति। (अस्त्यन्यदपि चन्द्रगुप्तस्य कोपकारणम्। उपेक्षितोऽनेनापक्रामन्मलयकेतुः अमात्यराक्षस इति।)

राक्षसः—शकटदास, हस्ततलगतो मे चन्द्रगुप्तो भविष्यति। इदानीं चन्दनदासस्य बन्धनान्मोक्षस्तव च पुत्रदारैः सह समागमः।

मलयकेतुः—सखे भागुरायण, हस्ततलगत इति व्याहरतः कोऽस्याभिप्रायः।

Bhagurayan—Not so much by the praise of his virtues, as by the removal of the vile Chanakya from his office.

Rakshasa—Is this prohibition of the Kaumudi festival the sole reason for Chandragupta's anger on Chanakya or is there anything else also?

Malayaketu—Friend, what good does he see in looking for other cause of Chandragupta's displeasure?

Bhagurayan—Prince, wise Chanakya will neither rouse Chandragupta's anger without any motive, nor will grateful Chandragupta overstep the respect for this trifle. That estrangement between Chanakya and Chandragupta will be permanent in every way which results due to a number of causes.

विमला

व्याख्या—करभक —अन्यदपि = अपरमपि (another too), चन्द्रगुप्तस्य = नृपलस्य (Chandragupta's), कोपकारणम् = क्रोधस्य रहस्यम् (cause of anger), अस्ति (is), अपक्रामन् मलयकेतुः (at the escape of Malayaketu), अमात्यराक्षसः (and minister Rakshasa), अनेन (by him), उपेक्षितः (were overlooked).

राक्षस—शकटदास (Sakatadas), मे = मम, (my) हस्ततलगतः = करतलप्राप्तः (placed on the palm of hand), चन्द्रगुप्त (Chandragupta), भविष्यति (will be), इदानीं = अधुना (in this time), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), बन्धनात् = कारागृहात् (from the prison), मोक्षः = बहिर्निष्कासनम् (release), तव = भवतः (your), पुत्रदारैः सह = सुतकलत्रादिभिः सह (with son and wife), समागम = सम्मेलनम् (union).

मलयकेतु —सखे भागुरायण (Friend Bhagurayan) हस्ततलगतः = करतलप्राप्तः (into my power), इति व्याहरतः = एवं कथयतः (by saying so), कः = किम् (what), अस्य = एतस्य (his), अभिप्रायः = तात्पर्यम् (mean).

हिन्दी—करभक—चन्द्रगुप्त के कोध का दूसरा भी कारण है। मलयकेतु और अमात्य-राक्षस भाग निकले और चाणक्य ने इसकी उपेक्षा कर दी।

राक्षस—शकटदास, अब चन्द्रगुप्त को मेरी मुट्ठी में ही आया समझो। इसका तात्पर्य यह हुआ कि चन्दनदास को कारा से मुक्ति और तुमको तुम्हारे परिवार से मिलन।

भागुरायणः—किमन्यत्। चाणक्यादपकृष्टस्य किञ्चित्कार्यमवश्य पश्यति।

राक्षसः—भद्र, हृताधिकार क्व साम्प्रतमसौ बटु।

करभकः—तर्हि एत्थ पाडलिउत्ते अहिवसदि। (तस्मिन्नेव पाटलिपुत्रे अधिवसति।)

राक्षसः—(सावेगम्।) भद्र, तत्रैव प्रतिवसति। तपोवन न गतः प्रतिज्ञा वा पुनर्न समारूढवान्!

मलयकेतु—भागुरायण, 'मुट्ठी में आ गया' इस शब्द का अभिप्राय क्या हुआ?

English—*Rakshasa*—Sakatdas, Chandragupta will be placed on the palm of my hand. Now Chandandas will be released from prison and you will be united with your wife and sons.

Karbhaka—Yes, there are other causes of Chandragupta's anger that he connived the escape of Malayaketu and of the minister Rakshasa.

Malayaketu—Friend, Bhagurayam, what is his meaning in saying on the palm of the hand

टिप्पणी—(१) निराकरण = निर्+आ+कृ+ल्युट् विभक्ति कार्यं।
(२) कृतवेदी = कृत्+विद्+णिनि+कर्तरि विभक्त्यादि कार्यं।
(३) आत्यन्तिक- = अत्यन्त+ठञ्+विभक्त्यादि कार्यं।
(४) हस्ततलगतो भविष्यति—इसका तात्पर्य यह है कि चन्द्रगुप्त सचिवायत्त राजा है। अतः चाणक्य से विरोध होने पर वह शीघ्र मेरे अधीन होगा ही।

विमला

व्याख्या—भागुरायण—किमन्यत् (what else ?), चाणक्यात्=कौटिल्यात् (from Chanakya), अपकृष्टस्य=पृथग्भूतस्य (withdrawn), चन्द्रगुप्तस्य=वृषलस्य (of Chandragupta), उद्धरणात्=उन्मूलनात् (by uprooting), न किञ्चित्कार्यम् (does not any benefit), अवश्य पश्यति=नास्माभिरस्याभीष्टसिद्धिः (see).

राक्षस—भद्र=कल्याणिन् (Goodman), हृताधिकार=दूरीकृतनियोगः (deprived of his office), साम्प्रतम्=अधुना (now), क्व=कुत्र (where), असौ=सः (that), बटुः=चाणक्यः (fellow).

करभक—तस्मिन्नेव=तत्रैव (itself), पाटलिपुत्रे (in Pataliputra), अधिवसति=निवसति (staying).

राक्षस—[सावेगम्=सत्रास (in uneasiness)], भद्र=कल्याणिन् (good man), तत्रैव प्रतिवसति=पाटलिपुत्र एव अधिवसति (lives in that very Pataliputra.

करभक—अमच्च, तपोवण गच्छदित्ति सुणीअदि। (अमात्य, तपोवन गच्छतीति श्रूयते।)

राक्षस—शकटदास, नेदमुपपद्यते। पश्य—

देवस्य येन पृथिवीतलवासवस्य
स्वाग्रासनापनयनान्निकृतिर्न सोढा।

करभक—अमात्य=सचिव (ministsr), तपोवन (to a penance forest), गच्छति=याति (to retire), श्रूयते (I hear)

राक्षस—शकटदास (Shakatdas), नेदम् (this is not), उपपद्यते (consistent), पश्य (see)

हिन्दी—भागुरायण—इसके अतिरिक्त अन्य हो ही क्या सकता है कि सचिव की दृष्टि में चाणक्य से पृथक चन्द्रगुप्त को उखाड फेंकने में बहुत बडा लाभ नहीं है।

राक्षस—अन्ततः पदच्युत होकर अब वह कहाँ रह रहा है ?

करभक—इसी पाटलिपुत्र में और कहाँ ?

राक्षस—(निराश होकर) यहीं पाटलिपुत्र में—क्या तपोवन नहीं गया, अथवा पुन प्रतिज्ञा नहीं कर ली।

करभक—मन्त्री जी सुनने में तो यही आया है कि तपोवन जायेगा।

राक्षस—शकटदास, यह ठीक प्रतीत नहीं होता।

English—*Bhagurayan*—What else ? Surely he sees no good by uprooting Chandragupta, when he is withdrawn from Chanakya

Rakshasa—My good man deprived of his office, where is that brat now ?

Karbhaka—Staying in Pataliputra itself

Rakshasa—(In uneasiness) what, he stays there ? Did he not go to a hermitage or enter upon a second vow ?

Karbhaka—Minister it is rumoured that he is going to a hermitage

Rakshasa—Shakatdasa, This is not consistent Just think.

विमला

अन्वय—येन, पृथिवीतलवासवस्य, देवस्य, स्वाग्रासनापनयनात् निकृतिः, न, सोढा, स, अथ, मनस्वी, स्वयकृतनराधिपते, मौर्यात्, इमाम्, परिभूतिम्, कथ, नु सहेत ॥ ११ ॥

व्याख्या—येन=कौटिल्येन (by Chankya), पृथिवीतलवासवस्य=क्षितीन्द्रस्य (a veritable Indra on the surface of the earth), देवस्य=नन्दस्य (sire s), स्वाग्रासनापनयनात्=स्वस्याऽग्रासन स्वाग्रासन श्रेष्ठासनमित्यर्थ, तस्मात् अपनयनात्=दूरीकरणात् (removal from his front seat) निकृति=अनादरः

सोऽयं स्वयंकृतनराधिपतेर्मनस्वी
मौर्यात् कथं नु परिभूतिमिमां सहेत ॥ ११ ॥

मलयकेतुः—सखे, चाणक्यस्य वनगमने पुनः प्रतिज्ञारोहणे वा अस्य स्वार्थसिद्धिः।

(the dishonour), न सोढा=न क्षान्ता (was not tolerated), सः=असौ (he), अयम् (who), मनस्वी=प्रशस्तमनाः मानशीलो वा (proud fellow), स्वयंकृतनराधिपतेः=स्वयं कृतश्चासौ नराधिपतिः स्वयंकृतनराधिपतिस्तस्मात् स्वयंकृत नराधिपतेः=आत्मसम्पादितनृपतेः (a king of his own creation), मौर्यात्=चन्द्रगुप्तात् (from maurya), इमाम्, परिभूतिम्=पराभवम् (this disgrace), कथं नु सहेत=न कथमपि सहेत (how can tolerate). ॥ ११ ॥

हिन्दी—जो मनस्वी चाणक्य धरती पर इन्द्र तुल्य महाराज नन्द के द्वारा अपने प्रधान आसन से उठाये जाने के कारण अपमान को सह नहीं कर सका— वही चाणक्य अपने ही हाथों से निर्मित इस राजा चन्द्रगुप्त के द्वारा अधिकार के अपहरण रूप अपमान को किस तरह सह लेगा?

English—How can that proud fellow, tolerate this disgrace from Maurya—a king of his own creation—he by whom the insult of removal from his foremost seat by sire, a veritable Indra on the surface of the earth, was not tolerated 11.

टिप्पणी—(१) पृथिवीतलवासवस्य देवस्य—'कर्तृकर्मणोः कृति' इस सूत्र से कर्ता के अर्थ में षष्ठी विभक्ति हुई है।

(२) प्रशस्तं मनः अस्य अस्ति इति मनस्+विनि=मनस्वी अर्थात् मानशील चाणक्य स्व अपने अपमान को सह कर सकता है।

(३ परिभूतिम्-परि+भू+क्तिन्, द्वितीया एकवचन में विभक्ति कार्य।

(४ मौर्यात्—यहाँ चन्द्रगुप्त के लिए मौर्य शब्द का प्रयोग उसको निम्न जाति से उत्पत्ति कह कर राक्षस ने जहाँ एक ओर लघुता सूचित की है, वहीं दूसरी ओर नन्द के लिये धरती का इन्द्र विशेषण देकर सम्मान भाव से उनकी उच्चता सूचित की है।

(५) इमाम्—शब्द से अपमान की प्रत्यक्षता सूचित करता है।

(५) चाणक्य की निकृति के सम्बन्ध में भी असम्बन्ध के योजन से सम्बन्ध में असम्बन्धरूप अतिशयोक्ति अलङ्कार के द्वारा कुछ लोग '[illegible]' अलङ्कार मानते हैं। कैसे सह करेगा? अर्थात् किसी भी प्रकार सह नहीं करेगा—इस अर्थान्तर के भवन से यहाँ अर्थापत्ति अलङ्कार है। 'वसन्ततिलका' छन्द है। 'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' ॥ ११ ॥

विमला

व्याख्या—मलयकेतुः—सखे=मित्र (Friend), चाणक्यस्य=कौटिल्यस्य (Chanakya's), वनगमने=अरण्यानुसरणे (returing to a forst), वा=अथवा (or), पुनः प्रतिज्ञारोहणे=मौर्योन्मूलनाय पुनः प्रतिज्ञाङ्गीकरणे (undertaking a new vow again), अस्य=राक्षसस्य (Rakshasa's), का स्वार्थसिद्धिः=का आत्मनिमित्त-निष्पत्तिः (what object can be accomplished).

भागुरायणः—नात्यन्तदुर्बोधोऽयमर्थः । यावद्यावच्चाणक्यहतकश्चन्द्रगुप्ताद्-दूरीभवति तावत्तावदस्य स्वार्थसिद्धिः ।

शकटदासः—अलमन्यथा विकल्प्य । उपपद्यत एवैतत् । पश्यत्वमात्य ।

राज्ञां चूडामणीन्दुद्युतिखचितशिखे मूर्ध्नि विन्यस्तपादः
स्वैरेवोत्पाद्यमानं किमिति विपहते मौर्य आज्ञाविघातम् ।

भागुरायण—अयम् अर्थ =इदम् वस्तु (this matter), नात्यन्तदुर्बोध.= नातिदुरवगम (is not very difficult to understand), यावत् यावत्कालम् (till), चाणक्यहतक =दुष्टचाणक्य (a vile Chanakya), चन्द्रगुप्तात्= मौर्यात् (from Chandragupta), दूरीभवति=असान्निध्ये वर्तते (is alienated), तावत्=तावत्कालम् (till), अस्य=राक्षसस्य (Rakshasa's), स्वार्थसिद्धिः= अभीष्टलाभ (accomplishment of his object)

शकटदास —अलम्=व्यर्थम् (no use) अन्यथा विकल्प्य=सन्दिह्य (to take the matter otherwise), उपपद्यते=युज्यते एवैतत्=चन्द्रगुप्तकर्तृकानादरासहनं चाणक्ये (it is capable of being explained), पश्यतु अमात्य. (the minister should just consider).

हिन्दी—मलयकेतु—मित्र, चाणक्य जङ्गल जाय अथवा कोई दूसरी प्रतिज्ञा कर ले, इससे भला राक्षस को कैसी अर्थसिद्धि है ?

भागुरायण—यह अर्थ कुछ कठिन तो नहीं है। दुष्ट चाणक्य जितना ही अधिक इससे दूर हटता जाय, उतना ही अधिक राक्षस का स्वार्थ सिद्ध होता जायेगा।

शकटदास—अमात्य, दूसरे प्रकार से सकल्प विकल्प करना व्यर्थ है। यह अमात्य ही देखें —

English—Malayaketu—Friend, what purpose of Rakshasa is served by Chanakya's retirement to a forest or adoption of fresh vow ?

Bhagurayan—The matter is not very hard to undersand. The more Chanakya is withdrawn from Chandragupta, just to that extent is his own object served

Shakatdas—Do not take the matter otherwise, it is capable of being explained Your Honour should just see :—

टिप्पणी—(१) यावत् यावत्—इस बात की ओर सकेत करता है कि चन्द्रगुप्त को राक्षस चाहता है किन्तु, उसके मिलने में चाणक्य बाधक है। अत यह उसकी दूरी की कामना करता है।

(२) अलमन्यथा विकल्प्य —"अलंखल्वो प्रतिषेधयो. प्राचा क्त्वा" से क्त्वा प्रत्यय किया गया है। अत कुसुमपुर से प्राप्त सवाद में मिथ्या की शका निरर्थक है।

विमला

अन्वयः—चूडामणीन्दुद्युतिखचितशिखे, राज्ञां, मूर्ध्नि, विन्यस्तपाद, मौर्यः स्वैः, एव, उत्पाद्यमानम्, आज्ञाविघातम्, किमिति विपहते, स्वयं, अभिचरणज्ञात-

कौटिल्यः कोपनोऽपि स्वयमभिचरणज्ञातदुःखप्रतिज्ञां
दैवात्तीर्णप्रतिज्ञः पुनरपि न करोत्यायतिग्लानिभीतः ॥ १२ ॥

दुःखं दैवात् तीर्णप्रतिज्ञः, कोपनः, अपि, कौटिल्यः, आयतिग्लानिभीतः, पुनः अपि, प्रतिज्ञां न करोति ॥ १२ ॥

व्याख्या—चूडामणीन्दुद्युतिखचितशिखे = चूडायां स्थिता मणयः चूडामणयस्त एव इन्दव इवेति चूडामणीन्दवः तेषां द्युतिभिः कान्तिभिः खचिता संश्लिष्टा शिखा यस्य यस्मिन् वा स तथोक्तः तस्मिन् चूडामणीन्दुद्युतिखचितशिखे (crests adorned with the lustre of their moon like crest jewels), राज्ञाम् = नृपतीनाम् (of the kings), मूर्ध्नि = शिरसि (on their heads), विन्यस्तपादः = विन्यस्तौ पादौ येन स विन्यस्तपादः = स्थापितचरणः (has palced his foot), मौर्यः = वृषलः (Chandragupta), स्वैः = आत्मीयैः (by his own), एव उत्पाद्यमानम् = क्रियमाणम् (committed), आज्ञाविघातम् = आदेशभङ्गम् (the breach of command), किमिति = कथम् (how), विषहते = नैव सहते इत्यर्थः (cannot tolerate), स्वयमभिचरणे ज्ञातं दुःखं येन स स्वयमभिचरणज्ञातदुःखः = आत्माभिचारावगतक्लेशः प्रतिज्ञा प्रतिश्रुतिम (knowing personally from his incantations the hardships of a solemn vow), दैवात् तीर्णप्रतिज्ञः = दैवात् भाग्यात् तीर्णा प्रतिज्ञा यस्य स तीर्णप्रतिज्ञः भाग्यात् सफलप्रतिश्रुतिरपि (and having fulfilled one by good luck), कोपनः अपि = क्रुद्धोऽपि (wrathful too), कौटिल्यः = चाणक्यः (Chanakya), आयतिग्लानिभीतः = आयतेर्ग्लानिस्तस्मात् भीतः आयतिग्लानिभीतः = उत्तरकालिकफलहानिशङ्कः सन् (apprehensive of failure in future), पुनः अपि प्रतिज्ञां न करोति = पुनः प्रतिश्रुतिं न करोति (do not make another vow) ॥ १२ ॥

हिन्दी—यह चन्द्रगुप्त, जो विशिष्ट कोटि के राजाओं के चन्द्रमा की तरह चमकते मुकुटमणियों की कान्ति से सुशोभित सिरों पर आदरपूर्वक अपना पदन्यास करता था—वही अपने ही जनों से अपनी ही आज्ञा का उल्लंघन कैसे सह लेगा? और चाणक्य भी अधिक क्रोधी होने पर भी, भाग्य से पूर्णप्रतिज्ञावाला तथा स्वयं इत्यादि विधान द्वारा प्रतिज्ञा पूर्ति के दुःख को जानने वाला—भविष्य में होनेवाली असफलता की आशंका से पुनः नई प्रतिज्ञा कैसे कर सकेगा? ॥ १२ ॥

English—How will Maurya put up with the disobedience of his orders perpetrated by his own people, who has kept his foot on the head of kings with their moon like shining crown due to the crest jewels, Kautilya, being full of fury, too has known the difficulties to fulfil the vow from his own indications for the destruction of his enemies, His last vow was fulfilled by good luck, now he will never take further such step which may make his down fall 12.

राक्षसः—शकटदास, एवमेतत् । गच्छ विश्रामय करभकम् ।

शकटदासः—तथा । (इति पुरुषेण सह निष्क्रान्तः ।)

राक्षसः—अहमपि कुमारं द्रष्टुमिच्छामि ।

मलयकेतुः—अहमेवार्यं द्रष्टुमागतः ।

राक्षसः—(नाट्येनावलोक्य ।) अये कुमारः । (आसनादुत्थाय ।) इदमासनम् । उपवेष्टुमर्हति कुमारः ।

मलयकेतुः—अयमुपविशामि । उपविशत्वार्यः । (यथार्हमुपविष्टः ।) आर्य, अपि सह्या शिरोवेदना ।

टिप्पणी—(१) विषहते—इसमें परिनिविभ्यः सेवसितेत्यादि वा० सू० से षत्व विधान है तथा अतीतार्थक 'वर्तमान सामीप्ये लट्' से वर्तमान काल का विधान है ।

(१) अभिचरण—अर्थात् अभिचारक्रिया का अनुष्ठान=हिंसाकर्म ।

इस श्लोक में चाणक्य के पुनः प्रतिज्ञाकरण में कारणान्तर के रहने पर भी निःशंक चाणक्य का सशंक की तरह मिथ्या आशंका के कारण, वहाँ उत्प्रेक्षण से 'इव' शब्द के अप्रयोग द्वारा प्रतीयमान उत्प्रेक्षा अलंकार है । कुछ लोग इसमें आयतिफल की अप्राप्तिभय से प्रतिज्ञा नहीं करने के योग में भी उसके योग के कथन के कारण, अतिशयोक्ति अलंकार मानते हैं । इसमें स्रग्धरावृत्त है जिसका लक्षण पहले लिखा जा चुका है ॥ १२ ॥

विमला

व्याख्या—राक्षस —शकटदास (Shakatdas), एवमेतत् (so it is), गच्छ (go), विश्रामय (let rest), करभकम् (Karbhaka).

शकटदास.—तथा (so be it), [इति पुरुषेण सह (with a man), निष्क्रान्त= exit)]

राक्षस —अहमपि (I too), कुमारम् (prince), द्रष्टुमिच्छामि = अवलोकितुं वाञ्छामि (wish to see).

मलयकेतु —अहमेव (I myself), आर्यम् = भवन्तम् (noble sir), द्रष्टुम् = अवलोकितु (to see), आगत. प्राप्त. (have come).

राक्षस —[नाट्येन = अभिनयेन (acting), अवलोक्य = दृष्ट्वा (observation), अये कुमार. (O, the prince), [आसनात् = पृष्ठात् (from seat) उत्थाय = (rising),], इदमासनम् here is a seat), उपवेष्टुम् = आसनं ग्रहीतुम् (to seat down), अर्हति कुमार. (it behoves prince)

मलयकेतु —अयम् (here), उपविशामि (I sit down), उपविशतु=आसनग्रहणम् करोतु आर्य=मान्य (let noble sir sit down), [यथार्हमुपविष्ट =according to rank they sit down)], आर्य = मान्यो भवान् (sir), अपि सह्या शिरोवेदना (is the headache bearable).

हिन्दी—राक्षस—मित्र शकटदास, बात तो सत्य ही है । जाओ, करभक को विश्राम कराओ ।

राक्षसः—कुमार, कुमारस्याधिराजशब्देनातिरस्कृते कुमारशब्दे कुतो मे शिरोवेदनायाः सह्यता।

मलयकेतुः—ऊरीकृतमेतदार्येण न दुष्प्रापं भविष्यति। तत्कियन्तं कालमस्माभिरेवं सम्भृतबलैरपि शत्रुव्यसनमुदीक्षमाणैरुदासितव्यम्।

राक्षसः—कुतोऽद्यापि कालहरणस्यावकाशः। प्रतिष्ठस्व विजयाय।

शकटदास—बहुत अच्छा (उस पुरुष के साथ निकल गया)

राक्षस—मैं भी कुमार को देखना चाहता हूं।

मलयकेतु—मैं ही आपके दर्शन के लिए आया हूं।

राक्षस—(अभिनयपूर्वक देखकर) अरे, कुमार (आसन से उठकर) यह आसन है। कुमार इस पर बैठें।

मलयकेतु—यह मैं बैठ रहा हूं। आप भी बैठें आर्य। (यथास्थान दोनों बैठ गये) आर्य, सिर की पीड़ा सहन करने लायक है।

English—*Rakshasa*—So it is Shakatdas. Go and Let Karbhaka rest

Shakatdas—Very well. (exit with a man).

Rakshasa—I also want to see the prince.

Malayaketu—I have myself come to see the minister.

Rakshasa—(acting observation), O, the prince (Rising from the seat) Here is a seat, it behoves prince to sit down.

Malayaketu—Here I sit down, Let noble sir sit down (according to rank they seat down) Sir, is your headache bearable ?

विमला

व्याख्या—राक्षस—कुमार (the prince), कुमारस्य=शिरोभवतः (your), अधिको राजाऽधिराज स चासौ शब्दोऽधिराजशब्दस्तेनाऽधिराजशब्देन (by the title of Emperor), अतिरस्कृते=अपरिभूते (is not supplanted), कुमारशब्दे (in the word of the prince), कुतः=कथ (how), मे=मम (my), शिरोवेदनाया=शार्यव्यथाया (headache), सह्यता (subside).

मलयकेतु—एतत् (this), आर्येण=भवता (by you sir), ऊरीकृतम्=स्वीकृतम् (has been undertaken), न=नहि (not), दुष्प्रापं=दुर्लभम् (be difficult), भविष्यति (will to attain), तत्कियन्तं कालम् (how long are), अस्माभिः (we to), एवम् (like this), सम्भृतबलैरपि=सम्भृतानि सञ्चितानि बलानि सैन्यानि येषां ते सम्भृतबलास्तैः सम्भृतबलैः एकत्रीकृतसैन्यैरपि (with our forces gathered), शत्रुव्यसनमुदीक्षमाणैः=शत्रुव्यसनम्=रिपुविपत्कालम् (enemy's disaster), उदीक्षमाणैः=प्रतीक्षमाणैः (in expectation of), उदासितव्यम्, ओप वर्तितव्यम् (thus to lie).

राक्षस—कुतः=कस्मात् (whence), अद्यापि=इदानीमपि (even now) कालहरणस्य=समययापनस्य (occasion for), अवकाशः=अवसरः (time), विजयाय=रिपु जेतुम् (for victory), प्रतिष्ठस्व=याहि (start).

मलयकेतुः—आर्य, शत्रुव्यसनमुपलब्धम् ।
राक्षसः—उपलब्धम् ।
मलयकेतुः—कीदृश तत् ।
राक्षसः—सचिवव्यसनं किमन्यत् । अपकृष्टश्चाणक्याच्चन्द्रगुप्तः ।

मलयकेतु—आर्य=मान्य भवता (noble sir), शत्रुव्यसनम्=रिपुकष्टम् (any weak point of enemy) उपलब्धम्=प्राप्तम् (have found)

राक्षस —उपलब्धम्=प्राप्तम् (have found).

मलयकेतु —कीदृशम् तत् (of what nature is it)

राक्षस —सचिवव्यसनम् = मन्त्रिकष्टम् (a ministerial one), अन्यत् किम् (what else), चाणक्यात् (from Chanakya), चन्द्रगुप्तः=मौर्यः (Chandragupta), अपकृष्टः (has fallen off).

हिन्दी—राक्षस—कुमार, जबतक 'अधिराज' शब्द के द्वारा आप के 'कुमार' शब्द की उपाधि को समाप्त नहीं कर दिया जायगा तब तक मेरी शिरोव्यथा कम कैसे होगी ?

मलयकेतु—जब आर्य ने इसे स्वीकृत कर लिया है तब यह दुष्प्राप्य नहीं होगा। तो कब तक हमलोग अपनी इन सजी सेनाओं के साथ शत्रु की विपत्ति की प्रतीक्षा में समय काटते रहेंगे।

राक्षस—कुमार, अब विलम्ब की क्या आवश्यकता ? विजय के लिए प्रस्थान कीजिए।

मलयकेतु—आर्य, शत्रु की विपत्ति का कोई समाचार मिला है क्या ?

राक्षस—हाँ मिला है।

मलयकेतु—वह कैसा है ?

राक्षस—और क्या ? मन्त्रिसंकट। चन्द्रगुप्त चाणक्य से भिन्न हो गया।

English—*Rakshasa*—Prince, how can my headache disappear, as long as your title of 'prince' is not uprooted by that of 'emperor.'

Malayaketu—Undertaken by Your Honour, this will not be difficult to attain. How long then are we to remain inactive, with our forces gathered, in expectation of enemy's disaster ?

Rakshasa—Whence is the time even now for delay ? March for victory.

Malayaketu—Noble sir, have you found out any disaster to the enemy ?

Rakshasa—Yes, I have found out.

Malayaketu—Of what sort is it ?

Rakshasa—What else ? A ministerial one. Chandragupta is alienated from Chanakya.

मलयकेतुः—आर्य. सचिवव्यसनमेव ।

राक्षसः—अन्येषां नृपतीनां कदाचिदमात्यव्यसनमव्यसनं स्यात् । न पुनश्चन्द्रगुप्तस्य ।

मलयकेतुः—आर्य. नैतदेवं चन्द्रगुप्तप्रकृतीनां चाणक्यदोषा एवापरागहेतवस्तस्मिंश्च निराकृते प्रथममपि चन्द्रगुप्तेऽनुरक्ताः सम्प्रति सुतरामेव तत्रानुरागं दर्शयिष्यन्ति ।

राक्षसः—मा मैवम् । ता खलु द्विप्रकाराः प्रकृतयश्चन्द्रगुप्तसहोत्थायिन्यो नन्दानुरक्ताश्च । तत्र चन्द्रगुप्तसहोत्थायिनीनां चाणक्यदोषा एव विरागहेतवो न नन्दकुलानुगतानाम् । तास्तु खलु नन्दकुलमनेन पितृभूतं घातितमन्य

विमला

व्याख्या—मलयकेतु—आर्य=मान्य (noble sir), सचिवव्यसनमेव=मन्त्रिकष्टमेव (only a loss of minister)

राक्षस—अन्येषाम्=इतरेषाम् भूपतीनाम्=नृपतीनाम् (of other kings) कदाचित् (may be), अमात्यव्यसनम्=सचिवकष्टम् (loss of minister), अव्यसनम् स्यात्=अदुःखम् भवेत् (no difficulty) न पुनः (not again) चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's)

मलयकेतु—आर्य (sir), एतत्=भवदुक्तम् (it is), नव=न युक्तम् (not so), चन्द्रगुप्तस्य प्रकृतयश्चन्द्रगुप्तप्रकृतयस्तासाम् चन्द्रगुप्तप्रकृतीनाम्=मौर्यप्रजानाम् (Chandragupta's subjects), चाणक्यस्य दोषा. चाणक्यदोषाः=कौटिल्यौद्धत्यादय. एव (the fault of Charakya), अपरागस्य हेतवः अपरागहेतवः= विरागकारणानि सन्ति (are the cause of disaffection), तस्मिन्= चाणक्य निराकृते=दूरीकृते (since he is removed), प्रथममपि=प्रागपि (from before), चन्द्रगुप्तेऽनुरक्ताः=चन्द्रगुप्तानुरक्ताः (attached to Chandragupta), सम्प्रति= अधुना (row), सुतरामेव=सर्वथैव (already), तत्र=चन्द्रगुप्ते (there), अनुरागम्=स्नेहम् (devotion), दर्शयिष्यन्ति (will see).

राक्षस—एतत् (this), मैवम्=न युक्तम् (not so), ता.=खलु (they in deed), प्रकृतयः=प्रजाः (subjects), द्विप्रकाराः=द्विविधाः (two classes), चन्द्रगुप्तसहोत्थायिन्यः=मौर्यानुरक्तानाम् (the adherents of Chandragupta), च (and), नन्दानुरक्ताः=नन्दान्वयानुरागिण्य. (the followers of Nandas), तत्र (there), चन्द्रगुप्तसहोत्थायिनीनाम्=मौर्यानुरक्तानाम् (the adherents of Chandragupta), चाणक्यदोषा=कौटिल्यदूषणान्येव (the misdeeds of Chanakya), विरागहेतवः (are the cause of disaffection), न=नहि (not), नन्दकुलानुगतानाम् (of those attached to the house of Nanda), तास्तु=(there), खलु शब्दा वाक्यालंकारे, अनेन=चाणक्येन चन्द्रगुप्तेन वा (by Chanakya or Chandragupta), पितृकुलेन भूतम् पितृकुल्यभूतम्=पितृवंशसमम्

परागामर्षाभ्यां विप्रकृता सत्य स्वाश्रयमलभमानाश्चन्द्रगुप्तमेवानुवर्तन्ते । त्वादृशं पुन: प्रतिपक्षोद्धरणे संभाव्यशक्तिमभियोक्तारमासाद्य क्षिप्रमेनं परित्यज्य त्वामेवाश्रयिष्यन्त इत्यत्र निदर्शनं वयमेव ।

(like his parental family), नन्दकुलम् = नन्दान्वयम् (family of Nandas), घातितम् = विनाशितम् (destroyed). इति=अस्माद्धेतो: (for this), अपरागामर्षाभ्याम् = विरागक्रोधाभ्याम् (by anger and disaffection), विप्रकृता = विरक्तीकृता (goaded), सत्य स्वाश्रय = स्वाधिपम् अलभमाना अप्राप्ता (not finding an able leader), चन्द्रगुप्तमेवानुवर्तन्ते = मौर्यमेवानुवर्तन्ते (they follow Chandragupta), पुन = भूय (again), त्वादृशम् = भवसदृशम् (like you), प्रतिपक्षोद्धरणे = शत्रुनिराकरणे (removing the enemy), संभाव्यशक्तिम् = निश्चितसामर्थ्यम् (to possess the power), अभियोक्तारम् = शत्रुपराभवकारिणम् (to extirpate enemies), आसाद्य = प्राप्य (found), क्षिप्रम् = शीघ्रम् (quickly), एन परित्यज्य = चन्द्रगुप्त विहाय (leave him), त्वामेव = भवन्तमेव (*to your side*), आश्रयिष्यन्ते = सेविष्यन्ते (*come over*), इत्यत्र (here), वयमेव (we are ourselves), निदर्शनम् = प्रमाणम् (an instance)

हिन्दी—मलयकेतु—आर्य, मन्त्रिसकट तो राजा का कोई सकट नहीं है ।

राक्षस—*अन्य राजाओं के लिए मन्त्रिसकट कुछ भी हो, पर, चन्द्रगुप्त के लिए* ऐसी बात नहीं है ।

मलयकेतु—आर्य, यह ऐसा नहीं है । चाणक्य के दोष ही चन्द्रगुप्त की प्रजा की विरक्ति के कारण हैं । चाणक्य के हट जाने पर चन्द्रगुप्त के प्रति पहिले से ही अनुरक्त प्रजा इस समय अधिक ही उसमें अनुराग प्रदर्शित करेगी ।

राक्षस—बात ऐसी नहीं है । वे प्रजाएँ दो तरह की हैं—एक चन्द्रगुप्त के साथ उठनेवाली और दूसरी नन्द में अनुराग रखनेवाली । विरक्ति के कारणस्वरूप चाणक्य के दोष केवल चन्द्रगुप्त के प्रति अनुराग रखनेवाली प्रजा के लिये ही हैं न कि नन्दकुल में अनुराग करने वाली प्रजा के लिए । पितृकुल के समान नन्द को इसने विनष्ट किया है— यह जानकर वह तो विरक्ति और क्रोध से आहत आश्रयहीन होकर ही चन्द्रगुप्त का अनुसरण कर रही है । फिर, शत्रु को उखाड फेंकने में पर्याप्त शक्तिशाली तुम्हारे जैसे आक्रमण करनेवाले को पाकर वह तो शीघ्र ही चन्द्रगुप्त को छोड़कर तुम्हारा ही आश्रय ग्रहण करेगी । इसमें हम लोग ही उदाहरण हैं ।

English—*Malayaketu*—Noble sir, loss of a minister is no weak point

Rakshasa—In the case of other kings a loss of minister may be no difficulty, but with Chandragupta it is not so

Malayaketu—Sir, it is not so The faults of Chanakya are the cause for the disaffection of the subjects of Chandragupta He being dismissed, they devoted to Chandragupta from before, will certainly show even greater devotion to him now

मलयकेतुः—आर्य, किमेतदेकमेव सचिवव्यसनमभियोगकारणं चन्द्रगुप्तस्याहोस्विदन्यदप्यस्ति ।

राक्षसः—किमन्यैर्बहुभिरपि । एतद्धि प्रधानतमम् ।

मलयकेतुः—आर्य, कथमिव प्रधानतमम् । किमिदानीं चन्द्रगुप्तः स्वकार्यधुरामन्यत्र मन्त्रिण्यात्मनि वा समासज्य स्वयं प्रतिविधातुमसमर्थः ।

राक्षसः—बाढमसमर्थः । कुतः स्वायत्तसिद्धिषु तत्सम्भवति । चन्द्रगुप्तस्तु

Rakshasa—Not so at all The subjects are divided in to two classes—those who made common cause with Chandragupta and those who are attached to Nanda. The misdeeds of Chanakya are the cause of disaffection of the adherents of Chandragupta and not of those attached to Nanda These are indeed affected by anger and disaffection for the reason that Nanda's family, which was like their parental family, was destroyed by this man, but not finding an able and worthy master they follow Chandragupta. On the other hand having found a champion like you, acknowledged to possess the power to extirpate enemies, they will soon quit this man and will cling to your side. I am myself an instance in this matter.

विमला

व्याख्या—मलयकेतु—आर्य (sir), किम् (what), एतदेकम् (only this), सचिवव्यसनं = मन्त्रिविरोधः (ministerial loss). एव = हि (indeed), चन्द्रगुप्तस्य= मौर्यस्य (Chandragupta's), अभियोगकारणम् = पराभवहेतुः (reason for warring), आहोस्वित्=अथवा (or), अन्यदपि = हेत्वन्तरमपि (any other reason also).

राक्षस—किमन्यैर्बहुभिरपि (what with a host of others), ? एतद्धि (this indeed), प्रधानतमम् (the most prominent).

मलयकेतु—आर्य = मान्य (noble sir), कथमिव (how indeed), प्रधानतमम् (the most prominent) ? किम् (what), इदानीम्=अधुना (now), चन्द्रगुप्तः = मौर्यः (Chandragupta), स्वकार्यधुराम् = निजकार्यभारम् (affairs of his kingdom), अन्यत्र = अन्यस्मिन् (to another), मन्त्रिणि = सचिवे (minister), आत्मनि = आत्मीये (his own), वा = अथवा (or), समासज्य = विन्यस्य (by entrusting), स्वयं (himself), प्रतिविधातुम् = प्रतिकर्तुम् (resist our attack), असमर्थः = अक्षमः (unable).

राक्षस—बाढम् (oh), असमर्थः (unable), कुतः (for this reason), स्वायत्तसिद्धिषु = स्वेषु आत्मसु आयत्ता अधीना सिद्धिर्येषाम् ते तथोक्तास्तेषु स्वायत्तसिद्धिषु = आत्माधीनराज्यकार्यसम्पादनेषु (the accomplishment of whose object depends upon themselves), तत्सम्भवति (it is possible), चन्द्रगुप्तस्तु=

दुरात्मा नित्य सचिवायत्तसिद्धावेव स्थितश्चक्षुर्विकल इवाप्रत्यक्षलोकव्यवहारः कथमिव स्वय प्रतिविधातु समर्थः स्यात् ।

मौर्यस्तु (but Chandragupta), दुरात्मा = दुष्टहृदय (the vile), नित्यं = प्रतिक्षणम् (habitually), सचिवायत्तसिद्धौ = मन्त्रिस्थितकार्यचिन्तने (dependent on his minister for success in an undertaking), एव स्थित. = वर्त्तमानः (is), चक्षुर्विकल इव = नेत्ररहित इव (like a blind man), अप्रत्यक्षलोकव्यवहार. = अप्रत्यक्षः = अगोचरः लोकानाम् व्यवहारो यस्य सोऽप्रत्यक्षलोकव्यवहार = लोकव्यवहारानभिज्ञ (inconversant with the affairs of the world), कथमिव (how), स्वय (himself), प्रतिविधातुम् = प्रतिकर्त्तुम् (to resist), समर्थ स्यात् = क्षम भवेत् (will be able)

हिन्दी—मलयकेतु—आर्य, अमात्य व्यसनमात्र ही चन्द्रगुप्त पर आक्रमण का कारण है अथवा कोई और कारण भी है ?

राक्षस—अन्य कारणों के अन्वेषण से क्या लाभ ? यही सर्वाधिक प्रधान है।

मलयकेतु—आर्य, सर्वाधिक प्रधान यही कैसे है ? क्या मौर्य अपना कार्यभार किसी अन्य मन्त्री पर अथवा अपने पर स्वय रखकर आगत विपत्तियों का प्रतिकार करने में असमर्थ है ।

राक्षस—हाँ, असमर्थ है। क्योंकि, जो राजा सारा अधिकार अपने हाथों में रखता है अथवा मन्त्री के सहयोग से जो अधिकार का स्वय उपभोग करना जानता है—वही आगत विपत्तियों का प्रतिकार करने में समर्थ हो सकता है। किन्तु, यह दुष्ट चन्द्रगुप्त जिसने अपने सारे अधिकारों को मन्त्री के हाथों में ही समर्पित कर दिया है तथा जो सासारिक कार्यों में अनुभव शून्य होने के कारण बिल्कुल अन्धे की तरह है—भला स्वय प्रतिकार करने में कैसे समर्थ होगा ?

English—*Malayaketu*—Noble sir, is this ministerial loss only the reason for warring upon Chandragupta, or is there any other reason also

Rakshasa—What with a number of others ? This indeed is the most prominent

Malayaketu—How indeed most prominent ? Is Chandragupta unable to resist our attack after having placed the burden of his affairs to another minister or on himself ?

Rakshasa—Oh, no For this reason, that it is possible only in the case of those kings, whose success is at their own command or controlled by the king and the minister. But vile Chandragupta always depending upon such success as is under the command of the minister alone, therefore like a blind man, inconversant with the affairs of the world. How would he be able to counteract this himself (Do you ask) why ?

अत्युच्छ्रिते मन्त्रिणि पार्थिवे च विष्टभ्य पादावुपतिष्ठते श्री. ।
सा स्त्रीस्वभावादसहा भरस्य तयोर्द्वयोरेकतरं जहाति ॥ १३ ॥

विमला

अन्वय—श्री, अत्युच्छ्रिते, मन्त्रिणि, पार्थिवे, च, पादौ, विष्टभ्य, उपतिष्ठते, स्त्रीस्वभावात्, भरस्य, असहा, सा, तयोर्द्वयो', एकतरम्, जहाति ॥ १३ ॥

व्याख्या—श्री = राज्यलक्ष्मी (The Gooddess of royalty), अत्युच्छ्रिते= अत्युन्नते (grown too high), मन्त्रिणि = सचिवे (on the minister), पार्थिव = नृपे (on the king), च (and), पादौ=चरणौ (feet), विष्टभ्य=संस्थाप्य (having placed) उपतिष्ठते=मङ्गता भवति (stands), स्त्रीस्वभावात् = नारीजनसुलभत्वात् (through feminine nature), भरस्य = मन्त्रिपार्थिवयोरुभयत्र स्थितिरूपक्लेशस्य (her weight), असहा = सोढुमसमर्था (unable to poise), सा = लक्ष्मी (the Goddess of royalty), तयोर्द्वयो' = मन्त्रिपार्थिवयोर्मध्ये (one of the two , एकतरम्=मन्त्रिणम्, पार्थिव वा (one of them), जहाति=परित्यजति (quits) ॥ १३ ॥

हिन्दी—जब मन्त्री का शक्ति अत्यधिक बढ़ जाती है—तब राजलक्ष्मी मन्त्री और राजा दोनों पर अपना पैर जमाकर रखती है। किन्तु स्त्रीस्वभाव के कारण—उन दोनों के परस्पर भिन्न हो जाने पर भार सहने में असमर्थ होकर, दो में से किसी एक को छोड़ देती है ॥ १३ ॥

English—The Goddess of royalty stands with her feet rigidly placed on the king and on the minister when grown too high But through feminine nature unable to sustain her weight, she quits one of the two 13

टिप्पणी—(१) सह्या—सोढुम् शक्या इति—सह + यत् + यत् = कर्मणि विधान् ।

(२) सचिवव्यसनम्—व्यसत्येनम् श्रेयसे । सचिवोऽयितम् व्यसनम् सचिवव्यसनम् ।

(३) प्रवितम्—इन् + च्वि + क्त कर्मणि ।

(४) अरागानर्थम्यान्- अन + रञ्ज + घञ् + भावे अरागः विरक्ति । वृष + घञ् भावे नर्थ —न नर्थ अनर्थ अरागाश्च अनर्थश्च तान्वान् अरागानर्थान्यान् ।

(५) विप्रकृता--वि + प्र + कृ + क्त कर्मणि ।

(६) स्वाश्रयम्—सु + आश्रयम् अथवा स्व + आश्रयम् । आ + श्रि + अच् कर्मणि आश्रय शोभन आश्रय स्वाश्रय ।

(७) निदर्शनम्—निदर्श्यते अनेन इति नि + दृश + णिच् + करण ।

(८) दुरात्मा—दुष्टो मन्द आत्मा यस्य मन्दबुद्धि ।

(९) अत्युच्छ्रिते—अति + उद् + श्रि + क्त कर्तरि उच्छ्रित = उन्नत ।

(१०) मन्त्रिणि—मन्त्रशक्तौ ।

(११) पार्थिवे—प्रभुशक्तौ ।

(१२) विष्टभ्य—वि + स्तम्भ + ल्यप्—'स्तम्भे' पा० के सूत्र से षत्व विधान ।

नृपोऽपकृष्टः सचिवात्तदर्पणः स्तनंधयोऽत्यन्तशिशुः स्तनादिव ।
अदृष्टलोकव्यवहारमन्दधीर्मुहूर्तमप्युत्सहते न वर्तितुम् ॥ १४ ॥

(१३) 'पादौ' से तात्पर्य मन्त्रशक्ति और प्रभुशक्ति रूप दोनों चरण ।

(१४) उपतिष्ठते –'अकर्मकाश्च' से यहाँ आत्मनेपद हुआ है ।

(१५) असहा भरस्य –राजा और मन्त्री के बीच 'मतिभिन्नता' हो जाने के कारण राजलक्ष्मी अपने को भारवहन करने में असमर्थ पाती है ।

प्रस्तुत राजलक्ष्मी में नायिकाजन्य व्यवहार के समारोपण से इस श्लोक में समासोक्ति अलङ्कार है । इसका लक्षण साहित्यदर्पण में लिखा है :–

समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिङ्गविशेषणैः ।
व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः ।

वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण तथा उपजातिवृत्त है ।

विमला

अन्वय—सचिवात्, अपकृष्टः, तदर्पणः, अदृष्टलोकव्यवहारमन्दधीः, नृपः, स्तनात्, स्तनन्धयः, अत्यन्तशिशुः इव, मुहूर्तम्, अपि, वर्तितुम्, न, उत्सहते ॥ १४ ॥

व्याख्या—सचिवात्=अमात्यात् (from the minister), अपकृष्टः=पृथग्भूतः (down away), तस्मिन्नेव सचिवेऽर्पणं तदर्पणं=सचिवाधीनसिद्धिः (entrusts every thing to his minister), अदृष्टलोकव्यवहारमन्दधीः—न दृष्टो लोकानां व्यवहारो येन सोऽदृष्टलोकव्यवहारः अतएव मन्दा धीर्यस्य स मन्दधीः अदृष्टलोकव्यवहारश्चासौमन्दधीः=अप्रत्यक्षजनाचाराल्पबुद्धिः (intellect not being unfolded on account of his inexperience of the affairs of the world), नृपः=राजा (The king), स्तनात्=पयोधरात् (from the breast), स्तनन्धयः=स्तनन्धयतीति स्तनन्धयः=स्तनपायी (drawing suck), अतएव अत्यन्तशिशुरिव=अति-(very young suckling) मुहूर्तम्=क्षणम् (even for a short time) अपि (also) वर्तितुम्=स्थातुम् (to live) न उत्सहते=न क्षमते (not be able). ॥१४॥

हिन्दी—एक अत्यन्त छोटा शिशु जिस प्रकार माता की छाती से क्षणभर के लिए पार्थक्य सहन नहीं कर सकता—अपना सर्वस्व सचिव के हाथों में सौंपकर, उससे सचिव भिन्न होकर कोई भी राजा अपना कार्यभार क्षणभर के लिए भी सँभालने में अपने को असमर्थ पाता है। क्योंकि, उसे लोकव्यवहार के अनुभव से शून्य रहने के कारण वह मन्द बुद्धि का होता है ॥ १४ ॥

English—Like a very young suckling who will not be able to live even for a moment, if weand from his mother's breast, so a king who entrusts everything to his minister, if withdrawn from a minister cannot be able to survive even for a short time, his judgment will be dull due to inexperiance of the affairs of the world. 14.

टिप्पणी—इस श्लोक ४ में उपमा अलकार तथा वंश वृत्त है। छन्द का लक्षण—ज तौ तु वंशस्थ मुदित जौ ।

मलयकेतुः—(आत्मगतम् ।) दिष्ट्या न सचिवायत्ततन्त्रोऽस्मि । (प्रकाशम् ।) यद्यप्येवं तथापि बहुष्वभियोगकारणेषु सत्सु व्यसनमभियुञ्जानस्य शत्रुमभियोक्तुरैकान्तिकी कार्यसिद्धिर्भवति ।

राक्षसः—ऐकान्तिकीमेव कार्यसिद्धिमवगन्तुमर्हति कुमारः । कुतः ।

त्वय्युत्कृष्टबलेऽभियोक्तरि नृपे नन्दानुरक्ते पुरे

चाणक्ये चलिताधिकारविमुखे मौर्ये नवे राजनि ।

मलयकेतु—[आत्मगतम्=अप्रकाशम्=(Aside)], दिष्ट्या=भाग्येन (by luck), सचिवस्य मन्त्रिण आयत्तम् तन्त्रम् यस्य स सचिवायत्ततन्त्रः=अमात्याधीनराष्ट्रः (the management of affairs entrusted to the minister), नास्मि (I do not depend), [प्रकाशम्=(Aloud)], यद्यप्येवम् (Although it is so), तथापि (still), बहुषु अभियोगकारणेषु=अपकारवाञ्छयाऽऽक्रमणहेतुषु (several other reasons for an offensive), सत्सु=विद्यमानेषु (are present), व्यसनमभियुञ्जानस्य=व्यसनम् मन्त्रिविपदम् अभियुञ्जानस्य अनुसन्दधानस्य (trying to find out the difficulty arising from the minister), शत्रुम्=रिपुम् (to enemy), अभियोक्तुः=आक्रमितुमुद्युक्तस्य (then assailing), ऐकान्तिकी=अवश्यम्भाविनी (certain), सिद्धिः (success), भवति (is obtained).

राक्षसः—ऐकान्तिकीमेव=अवश्यम्भाविनी एव (certain indeed), सिद्धिम् (success), अवगन्तुम्=ज्ञातुम् (to consider), अर्हति कुमारः (behoves the prince).

हिन्दी—मलयकेतु—(मन ही मन) सौभाग्य से मैं सचिव के अधीन राज्य वाला नहीं हूँ (स्पष्ट रूप से) ऐसी बात होने पर भी अनेक आक्रमण के कारणों के होने पर व्यसन का अनुसन्धान करके दुश्मन पर आक्रमण करनेवालों को कार्य सिद्धि अवश्य ही होती है।

राक्षस—कुमार कार्यसिद्धि को निश्चित ही समझा जाय । क्योंकि—

English—*Malayaketu*—(Aside), I am glad that I do not depend on a minisiter for my affairs (Aloud) Although it is so, still lasting success in the undertaking results unto the invader that attacks the enemy when visited by the loss of minister only if there are many other reasons for commencing hostilities.

Rakshasa—It behoves the prince to consider the success in the undertaking as indeed lasting For :—

टिप्पणी—(१) व्यसनम्—वि+अस्+णिच्+ल्युट् भावे अर्थे । (२) तन्त्रम्—तन्यते अनेन इति तन्+ष्ट्रन्+टाप्+स्त्रियाम् 'तन्त्र' विभक्तिकार्यं ।

विमला

अन्वयः—विभो, सम्प्रति, उत्कृष्टबले, नृपे, त्वयि, अभियोक्तरि, पुरे, नन्दानुरक्ते, चाणक्ये चलिताधिकारविमुखे, राजनि, मौर्ये, नवे, स्वाधीने, मयि, मार्गमात्रकथनव्यापारयोगोद्यमे, न, साध्यानि, त्वदाम्भोऽन्तरितानि, तिष्ठन्ति ॥ १५ ॥

स्वाधीने मयि—

(इत्यर्धोक्ते लज्जां नाटयन् ।) आर्य

मार्गमात्रकथनव्यापारयोगोद्यमे

त्वद्वाञ्छान्तरितानि संप्रति विभो तिष्ठन्ति साध्यानि नः ॥१५॥

व्याख्या—विभो = राजन् (O king), सम्प्रति=अधुना (now), उत्कृष्टबले= उत्कृष्टानि बलानि यस्य स उत्कृष्टबलस्तस्मिन् उत्कृष्टबले = उत्तमसैन्ये (possessed of an excellent(army) नृपे=राजनि सति (king) त्वयि=भवति (you) अभियोक्तरि= योद्धुमुद्यते सति (the) attacking), पुरे = कुसुमपुरे (at Kusumpur), नन्दानुरक्ते= नन्दस्नेहिनि सति (attached to the Nanda), चाणक्ये=कौटिल्ये (Chanakya), चलिताधिकारविमुखे=चलितश्चासावधिकारश्चलिताधिकारस्तस्माद्विमुखस्तस्मिन् चलिता-धिकारविमुखे = मन्त्रिपदच्युते सति (adversely disposed owing to his removal from office), राजनि मौर्ये = नृपे-चन्द्रगुप्ते (the king Maurya), नवे = नूतने (new), स्वाधीने=स्वतन्त्रे मयि=राक्षसे (I am at your disposal), मयि इति आत्मन स्वातन्त्र्ये कथनप्रकारेण आत्मन गर्वं स्यात—इति मनसि चिन्त यित्वा सकोचम् (प्रदर्शित)' (acting modesty when half uttered), मार्ग-मात्रकथनमेव व्यापार तस्य योगस्तत्रोद्यमो यस्य स तथोक्त तस्मिन् मार्गमात्रकथन-व्यापारयोगोद्यमे=रणपथमात्रोपदेशात्मकव्यापारोपायपत्ने (endeavours to suggest the means will be limited to the mere pointing out the way), न =अस्माकम् (our), साध्यानि = कार्याणि (desired objects), त्वद्वा-ञ्छान्तरितानि = त्वदिच्छामात्रान्तर्हितानि (simply by your will), तिष्ठन्ति = वर्तन्ते (are) ॥ १५ ॥

हिन्दी—ओ शक्तिशाली राजकुमार, आक्रमण के लिए आपकी तरह उत्कृष्ट, सेनाओं से युक्त, नायक उपस्थित है, सारा कुसुमपुर आज भी नन्द का अनुरक्त है—अधिकारच्युत होने के कारण चाणक्य भी अब चन्द्रगुप्त से विमुख हो चुका है, चन्द्रगुप्त स्वय अनुभवहीन है, और मैं भी किसी का दास नहीं हू (इतना आधा कहने पर स्वय जैसे लज्जित होते हुए) और केवल मार्ग निर्देशन ही जिसकी उपयोगिता रह गयी है—हमारे अभीप्सित कार्य की सिद्धि मात्र केवल आपकी इच्छा से ही रुकी है।

English—The invader being yourself, a king with an excellent army the town being devoted to Nanda, Chanakya being adverse due to his removal from office Maurya being a new king, I being at your disposal (acting modesty when half uttered) whose endeavours to suggest the means will be limited to the mere pointing out the way our objects now stand, O puissant Prince, simply by your will 15.

टिप्पणी—१ स्वाधीने मयि—इस श्लोक में इस शब्द का प्रयोग श्लिष्ट है। मुख्यत इसके तीन अर्थ हैं—(१) स्वतन्त्र, (२) आपके अधीन (३) सचिवपदेन सेवा। अन्तिम

मलयकेतुः—यद्येवमभियोगकालमार्यः पश्यति ततः किमास्यते ।

उत्तुङ्गास्तुङ्गकूलं स्रुतमदसलिलाः प्रस्यन्दिसलिलं
श्यामाः श्यामोपकण्ठद्रुममलिमुखराः कल्लोलमुखरम् ।
स्रोतःखातावसीदत्तटमुरुदशनैरुत्सादिततटाः
शोणं सिन्दूरशोणा मम गजपतयः पास्यन्ति शतशः ॥१६॥

अर्थ ही उपयुक्त है। क्योंकि मूल अर्थ से चाणक्य की तुलनात्मक योग्यता की ध्वनि निकलती है। २. लज्जानाट्यम्—अपने ही मुख से अपनी प्रशंसा के कारण ही राक्षस जैसे कुछ लजा-सा जाता है। ३ साध्यानि—साध+ण्यत्+विभक्तिकार्य।

'इस श्लोक में एक अभिमत कार्य के लिए अनेक कारणों के उल्लेख होने से यहाँ समुच्चयालङ्कार है। प्रसाद गुण, पाञ्चाली रीति एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

विमला

मलयकेतु—आर्यः=भवान् (your Honour), यदि (स्यात्) (if), एवम्= इत्थम् (like this), अभियोगकालम्=शत्रोराक्रमणसमयम् (the fit time for attack), पश्यति (thinks), ततः तस्मात् (then), किम्=कथम् (why), आस्यते=विलम्ब्यते (should sit idle).

अन्वयः—मम, उत्तुङ्गाः उत्सादितमदसलिलाः, श्यामाः, अलिमुखराः, उरुदशनैः, उत्सादिततटाः, सिन्दूरशोणाः, शतशः गजपतयः, तुङ्गकूलम्, प्रस्यन्दिसलिलम्, श्यामोपकण्ठद्रुमम् कल्लोलमुखरम्, स्रोतःखातावसीदत्तटम्, शोणम्, पास्यन्ति ॥ १६ ॥

व्याख्या—मम=मलयकेतोः (My), उत्तुङ्गाः=अत्युन्नताः (lordly), स्रुतमदसलिलाः=स्रुतम् मदसलिलम् येषां ते स्रुतमदसलिलाः=गजदानवारयः (tuskers), श्यामाः=कृष्णवर्णाः (darkish), अलिमुखराः =अलिभिः भ्रमरैः मुखराः शब्दायमानाः= भ्रमरझङ्कारवन्तो वा (noisy with the hum of bees), उरुदशनैः=विशालदन्तैः (huge tusk), उत्सादितं विनाशितम् तटम् कूलम् यैस्ते उत्सादितकूलाः=विनाशिततटाः (demolishing the banks), सिन्दूरशोणाः=सिन्दूरस्तद्वत् रक्तबिन्दुभिः शोणाः रक्तवर्णाः (vermilion), शतशः=अनेकशः (hundred ways), गजपतयः= (tuskers), तुङ्गम्=उन्नतम् कूलम् तटम् यस्य स तथोक्तस्तं तुङ्गकूलम्=उन्नततटम् (lofty banks), प्रस्यन्दिसलिलम्=प्रवहमानजलम् (dripping waters), श्यामोपकण्ठद्रुमम् श्यामाः श्यामवर्णाः, उपकण्ठे=तटप्रदेशे द्रुमा यस्य स तथोक्तस्तं श्यामोपकण्ठद्रुमम्=उपतटश्यामवृक्षम् (dark trees on the banks), कल्लोलैः मुखरम् कल्लोलमुखरम्=तरङ्गशब्दयुतम् (noisy waves), स्रोतसा खातम् एवाव- सीदत्तटम् यस्य स तथोक्तस्तं स्रोतःखातावसीदत्तटम्=प्रवाहखातभ्रश्यत्तीरम् (under mined by the current), शोणम्=शोणनामनदविशेषम् (the river Shona), पास्यन्ति=पानेन शोषयिष्यन्ति (drink). 16.

हिन्दी—मलयकेतु—आर्य, इस प्रकार यदि आप आक्रमण का उपयुक्त काल मानते हैं तो फिर इस प्रकार मौन होकर बैठने का क्या कारण है ?

अपि च ।

गम्भीरगर्जितरवाः स्वमदाम्बुमिश्र-
मासारवर्षमिव शीकरमुद्गिरन्त्यः ।
विन्ध्यं विकीर्णसलिला इव मेघमाला
रुन्धन्तु वारणघटा नगरं मदीयाः ॥ १७ ॥
(इति भागुरायणेन सह निष्क्रान्तो मलयकेतुः ।)

मेरे अत्यन्त विशालकाय, मदजलस्रावी, काले कजरारे भौंरों से गुंजित अपने विशाल दाँतों से किनारे को ढहाने वाले, सिन्दूरी रंगवाले सैकड़ों गजराज, ऊँचे ऊँचे तटोंवाली, पानी से भरपूर, हरित वृक्षों से भरे किनारोंवाली, लहरों की लीला से मुखर, और अपनी ही धाराओं के वेग द्वारा जिसकी तटभूमि काटी जा रही है, ऐसी शोण नदी को पी क्यों न जायें ? ॥ १६ ॥

English—*Malayaketu*—If Noble sir thinks this to be such a time for attack then why should we sit idle ?

Let my lordly tuskers red with vermilion, scatter in a hundred way the river Shona, my tuskers, running the fluid of ichor, dark in colour, noisy with the hum of bees and demolishing the bank with their huge tusks, the river with its high banks, with its dripping water, dark trees, its noisy waves and its banks under mined by the current. 16.

टिप्पणी—इस श्लोक में जैसे शोण है वसी प्रकार गजपति–इस अर्थ की प्रतीति से शोणगजपति की गम्यौपम्य से शोण शब्द की श्लिष्टता से श्लेषानुप्राणित उपमा अलङ्कार है। एवं शोण और गजपति दोनों के विशेषणों का यथासंख्य रूप अन्वय होने के कारण यथासंख्य अलङ्कार है। ओजगुण, गौडी रीति एवं सुवदना वृत्त है। अश्वैरश्वैश्च षड्भिर्मरभनयमलागः स्यात्सुवदना ।

विमला

अपि च = अन्यदपि (Moreover).

अन्वयः—गम्भीरगर्जितरवाः, स्वमदाम्बुमिश्रम्, शीकरम्, आसारवर्षम्, इव, उद्गिरन्त्यः, मदीयाः, वारणघटाः, विकीर्णसलिलाः, मेघमालाः, विन्ध्यम्, इव, नगरम्, रुन्धन्तु ॥ १७ ॥

व्याख्या—गम्भीरञ्च तद् गर्जितम् गम्भीरगर्जितम् तद्वत् रवो येषां ते गम्भीरगर्जितरवाः = सान्द्रगर्जनध्वनयः (a deep thunderous roar), स्वस्य मदाम्बु स्वमदाम्बु तेन मिश्रं स्वमदाम्बुमिश्रं = निजदानजलमिश्रितम् (mixed with the water of their rut), शीकरम् = अम्बुकणम् (spray), आसारवर्षम् = धारासम्पातवर्षणम् (pouring down a rain), इव = यथा (like), उद्गिरन्त्यः = उद्वमन्त्यः (emitting), मदीयाः = मामकीनाः (my), वारणघटाः = गजघटाः (rows of elephants), विकीर्णं विक्षिप्तं सलिलं याभिस्ता विकीर्णसलिलाः = विक्षिप्तजलाः (pouring), मेघमालाः = घनपंक्तयः (an abundance of rain), विन्ध्यम्

राक्षसः—कः कोऽत्र भोः ।

(प्रविश्य ।)

पुरुष—आणवेदु अमच्चो । (आज्ञापयतु अमात्यः ।)

राक्षसः—प्रियंवदक, सांवत्सरिकाणां द्वारि कस्तिष्ठति ।

पुरुष —खवणओ । (क्षपणकः ।)

राक्षसः—(आत्मगतम् । अनिमित्तं सूचयित्वा ।) कथं प्रथममेव क्षपणकः ।

इव=विन्ध्यपर्वतमिव (like the Vindhya mountain), नगरम्=पुरम् रुन्धन्तु= निरुद्धं कुर्वन्तु (invest ॥ १७ ॥

(इति भागुरायणेन सह निष्क्रान्तो मलयकेतुः =Exit Malayaketu with Bhagurayan)

हिन्दी—गम्भीर गर्जन करनेवाली अपने मदजलमिश्रित जलकणों की मूसलाधार वर्षा करती हुई मेरी गजसेना कुसुमपुर को उसी प्रकार घेर ले जैसे बादलों के समूह विन्ध्य पर्वत को घेर लेते हैं ॥ १७ ॥

(और भागुरायण के साथ निकल जाता है)

English—The array of my elephants, the note of whose roar is deep, will invest the city, emitting, like pouring down a rain of spray mixed with the water of their rut, as a row of clouds that is pouring and whose cry is its deep roar, does encircle the Vindhya mountain 17

(Exit Malayaketu with Bhagurayan)

टिप्पणी—शीकरमुत्सिन्च—इससे तात्पर्य यह है कि हाथी जब पर्याप्त पानी पी लेता है तो उसे वह अपनी श्वासवायु के साथ बाहर निकालता है। यह उसकी एक स्वाभाविक क्रिया है। मलयकेतु की गजसेनाएँ पिछले श्लोक में शोण नदी को सुखा चुकी हैं, अतः उसका उद्वमन भी स्वाभाविक ही है। इस श्लोक में हाथी और घन में उपमानोपमेयभाव स्पष्ट है औपम्यवाचक 'इव' शब्द भी है तथा गम्भीरगर्जित घनवत्त्वादि सामान्य धर्म के उपादान से यहाँ पूर्णोपमा अलंकार है। ओजगुण, पाञ्चाली रीति तथा वसन्ततिलका वृत्त है।

विमला

व्याख्या—राक्षस—कः (Who), कोऽत्र भोः (waits there)

(प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा=(Entering).

पुरुष—अमात्य=सचिव (The minister), आज्ञापयतु=आदेशं करोतु (let command)

राक्षस—प्रियंवदक (Priyabamdaka), सांवत्सरिकाणाम्=दैवज्ञानां मध्ये (of astrologers), द्वारि=प्रतिहारभूमौ (at the door), कः=किन्नामधेयः (which), तिष्ठति=वर्तते (is)

पुरुष—क्षपणकः (Kshapanaka)

राक्षस—[आत्मगत=स्वगत (to himself), अनिमित्त=अशुभलक्षण (a bad

पुरुषः—जीवसिद्धी। (जीवसिद्धिः)
राक्षसः—(प्रकाशम् ।) अबीभत्सदर्शनं कृत्वा प्रवेशय।
पुरुषः—तह। (इति निष्क्रान्तः ।) (तथा।)
(प्रविश्य।)

---

omen), सूचयित्वा=अभिनीय (gesticulating)], कथ=कुतः (what), प्रथममेव=पूर्वमेव (at the first sight), क्षपणकः (Kshapanaka).

पुरुष—जीवसिद्धिः (Jivasidhi).

राक्षस—[प्रकाशम् (Aloud)], अबीभत्सदर्शनम्=न बीभत्सं दर्शनं यस्य सोऽबीभत्सदर्शनस्तमबीभत्सदर्शनम् = अनिन्दितवेषं (put on a dress not loathsome to look at), कृत्वा = विधाय (making), प्रवेशय = आनय (enter).

पुरुष—तथा = (as your command).

[प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (Entering)],

हिन्दी—राक्षस—कौन, यहाँ कौन है ?

(प्रवेश करके)

पुरुष—आमात्य आज्ञा दें।
राक्षस—प्रियवदक, देखो दरवाजे पर ज्योतिषियों में कौन है ?
पुरुष—क्षपणक,
राक्षस—(अपने आप, अपशकुन सूचित करके) क्या पहल क्षपणक हा।
पुरुष—जीवसिद्धिः।
राक्षस—(प्रकट रूप में) सौम्य वेश बनाकर भीतर लाओ।
पुरुष—जैसी आज्ञा (यह कहकर निकल गया)

English—*Rakshasa*—Who is here ! who ?

(Entering)

Man—Let minister Command.

Rakshasa—Priyambadaka, which of the astrologers is at the door ?

Man—Kshapanaka

Rakshasa—(gesticulating that he percived a bad omen, to himself) what Kshapanaka at the first sight !

Man—Jivasidhi.

Rakshasa—(Aloud), Ask him to enter making him put on a dress not loathsome to look at.

Man—As minister command.

(Exit)

क्षपणकः—

सासणमलिहन्ताणं पडिवज्जह मोहवाहिवेज्जाणं।
जे मुत्तमात्तकडुअं पच्छा पत्थं उवदिसन्ति ॥ १८ ॥
(शासनमर्हतां प्रतिपद्यध्वं मोहव्याधिवैद्यानाम्।
ये मुहूर्तमात्रकटुकं पश्चात्पथ्यमुपदिशन्ति ॥ १८ ॥)

(उपसृत्य ।) धम्मसिद्धी होदु सावगाणम्। (धर्मसिद्धिर्भवतु श्रावकानाम्।)

राक्षसः—भदन्त, निरूप्यता तावदस्मत्प्रस्थानदिवसः।

क्षपणकः—(नाट्येन चिन्तयित्वा।) सावगा, णिरूविदा मए आमज्झण्णादो णिवुत्तसव्वकल्लाणा तिही सपुण्णचन्दा पुण्णमासी। तुम्हाणं उत्तलाए दिसाए दक्खिणा दिसं पत्थिदाण अदक्खिणं णक्खत्तं। अवि अ। (श्रावक, निरूपिता मयाऽऽमध्याह्नान्निवृत्तसर्वकल्याणा तिथिः संपूर्णचन्द्रा पौर्णमासी। युष्माकमुत्तरस्या दिशो दक्षिणां दिशं प्रस्थितानामदक्षिणं नक्षत्रम्। अपि च।)

विमला

क्षपणकः—

अन्वयः—मोहव्याधिवैद्यानाम्, अर्हताम्, शासनम्, प्रतिपद्यध्वम्, ये, मुहूर्तमात्रकटुकम्, पश्चात्, पथ्यम् उपदिशन्ति ॥ १८ ॥

व्याख्या—मोह एव व्याधिस्तस्य वैद्यास्तेषाम् मोहव्याधिवैद्यानाम्=अज्ञानरोगचिकित्सकानाम् (the physicians of the ill of delusion), अर्हताम्=बौद्धविशेषाणाम् (the worthy Saints), शासनम्=उपदेशम् (the tenets), प्रतिपद्यध्वम्=प्रतिपालयत (adopt), ये=बौद्धसन्यासिविशेषाः (who), मुहूर्तमात्रकटुकम्=क्षणमात्रविरसम् (is bitter for the moment), पश्चात् (*afterwards*), पथ्यम्=हितम्, उपदिशन्ति=शिक्षयन्ति (wholesome in the end) ॥ १८ ॥

(उपसृत्य=समीपम् गत्वा=advancing), श्रावकानाम्=श्रोतॄणाम् बुद्धभक्तानाम् (believer), धर्मसिद्धिः (attainment), भवतु (may come).

राक्षस—भदन्त=बौद्धसन्यासिनाम् सम्बोधनम् (Bhadanta), तावत्=प्रथमम् (at first), अस्माकम् प्रस्थानम् अस्मत्-प्रस्थानम् तस्य योग्यो दिवसोऽस्मत्प्रस्थानयोग्यदिवसः=अस्मद्दूरगयात्रानुरूपकालः (an auspscious day for our expedition), निरूप्यताम्=निश्चीयताम् (*ascertain*)

क्षपणक—[नाट्येन चिन्तयित्वा (meditating)], श्रावक (Pupil), निरूपिता=निश्चिता (have ascertained), मया (by me), आमध्याह्नात्=मध्याह्नकालमारभ्य निवृत्त प्रशस्तम् सर्वम् अखिलम् कल्याणम् मङ्गलम् यस्याः सा तिथिः=आमध्याह्नान्निवृत्तसर्वकल्याणा तिथिः (afternoon quite auspicious), सम्पूर्णश्चन्द्रो यस्याम् सा सम्पूर्णचन्द्रा पौर्णमासी (fullmoon day on which the moon is), युष्माकम् (you), उत्तरस्या दिशः दक्षिणाम् दिशम् (from north to south),

अत्थाहिमुहे सूरे उदिए संपुण्णमण्डले चन्दे ।
गमणं बुधस्स लग्गे उदिदत्थमिदे अ केदुम्मि ॥ १९ ॥
(अस्ताभिमुखे सूर्ये उदिते सपूर्णमण्डल चन्द्रे ।
गमन बुधस्य लग्ने उदितास्तमिते च केतौ ॥ १६ ॥)

प्रस्थितानाम् (who are to march), अदक्षिणम् नक्षत्रम् (the mansion too is favourable)

हिन्दी—क्षपणक—(प्रवेश करके) अज्ञानरूपी रोगों के वैद्य बौद्ध सन्यासियों के उपदेश को ग्रहण करो, जो क्षणभर कटु किन्तु अन्त में हितकर उपदेश करते हैं ॥ १८ ॥

(पास जाकर) बुद्धभक्तों की धर्मसिद्धि हो ।

राक्षस—भदन्त, हमारे प्रस्थान के लिए दिन निश्चित कर बतलाओ ।

क्षपणक—(अभिनयपूर्वक सोचकर) भक्त दोपहर से सम्पूर्ण चन्द्रमावाली सभी शुभ गुणों से युक्त पूर्णमासी तिथि विचार कर निश्चित कर चुका हूं, उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान करने वाले आप के लिए यह समय सब तरह से अनुकूल पड़ता है ।

Egnilsh—*Mendicant*—(entering)

Adopt the tenets of the worthy the physicians of the ill of delusion, they teach what is bitter only for a moment, wholesome in the end (Advancing) May attainment of piety come unto the believer 18

Rakshasa—Bhadant, ascertain an auspicious day for our expedition

Mendicant—(Meditating), Pupil, I have determined that the full moon day on which the moon is full is aftermoon quite prosperous The mansion too is favourable to you proceeding from North to South

टिप्पणी—इस श्लोक में अप्रस्तुतप्रशंसा, रूपक अलकार तथा आर्या छन्द है ।

विमला

अन्वयः—सूर्ये, अस्ताभिमुख सम्पूर्णमण्डले, चन्द्रे, उदिते, केतौ, च, उदयास्तमिते, बुधस्य, लग्ने, गमनम् ॥ १९ ॥

व्याख्या—प्रथमपक्ष—सूर्ये, रवौ (the Sun), अस्ताभिमुखे=अस्ताचलशिखराभिमुखे सति (is about to set), सम्पूर्णं मण्डलं यस्य स सम्पूर्णमण्डलस्तस्मिन् सम्पूर्णमण्डले=परिपूर्णबिम्बे (the full orbed), चन्द्रे=सोमे (the Moon), उदिते=आविर्भूते (has risen), केतौ=केतुग्रहे (Ketu), च (and), उदयास्तमिते=उदितात्लग्नादस्तमिते अर्थात् दृष्टनष्टे (has risen and set), बुधस्य (with planet mercury), लग्ने=राशौ (in conjunction), गमनम्=यात्रा (should go) ॥ १९ ॥

द्वितीयपक्ष—सूर्ये वा सूरे=वीरे राक्षसे (the brave Rakshasa), अस्ताभिमुख=

राक्षसः—भदन्त, तिथिरेव न शुध्यति ।

क्षपणकः—सावगा,

एक्कगुणा तिथी चउग्गुणे णक्खत्ते ।
चउसट्ठिगुणे लग्गे एसे जोइसतन्तसिद्धन्ते ॥ २० ॥
(श्रावक,
एकगुणा तिथिश्चतुर्गुणं नक्षत्रम् ।
चतुःषष्टिगुणं लग्नम् एष ज्योतिषतन्त्रसिद्धान्तः ॥ २० ॥)

विनाशोन्मुखे (is about to end), सम्पूर्णमण्डले=सम्पूर्णमण्डलेन युक्ते (with his full subjects), चन्द्रे=मौर्ये (Chandragupta), उदिते (firmly established) केतौ=मलयकेतौ (Malayaketu), च (and), उत्पातमिते (Malayaketu is captured and his army overthrown), बुधस्य=चाणक्यस्य (Chanakya) लग्ने=राज्ये (sovereignty will be complete) ॥ १९ ॥

भदन्त—भदन्त (Bhadant), तिथिरेव (the day itself), न शुद्ध्यति (is not propitious).

श्रावक—श्रावक=श्रावक (Pupil)

अन्वयः—तिथिः, एकगुणा, भवति, नक्षत्रम् चतुर्गुणम् भवति, लग्नम्, चतुःषष्टिगुणम्, एषः, ज्योतिषतन्त्रसिद्धान्तः ॥ २० ॥

व्याख्या—तिथिः (the day), एकगुणा एको गुणो यस्याः सा एकगुणा (is one), नक्षत्रम्=तारा (the constellation), चतुर्गुणम् भवति=चत्वारो गुणा यस्य तच्चतुर्गुणम्, तिथ्यपेक्षया नक्षत्रस्य चतुर्गुणफलदायित्वेन चतुर्गुणत्वमेवेति वत् (fourfold), लग्नम् (the conjunction), चतुःषष्टिगुणम्—चतुःषष्टिर्गुणा यस्य तत् चतुःषष्टिगुणम् (sixty-fourfold), एषः (this), ज्योतिषतन्त्रसिद्धान्तः=ज्योतिषशास्त्रसिद्धान्तः (the conclusion of the science of astrology) ॥ २० ॥

तस्मात्=(so).

हिन्दी—क्षपणक—

प्रथम अर्थ—सूर्य के अस्तोन्मुख होने पर और [illegible] ॥ १९ ॥

द्वितीय अर्थ—[illegible] ॥ १९ ॥

राक्षस—भदन्त, तिथि ही अशुद्ध है।

क्षपणक—श्रावक,

ज्योतिषशास्त्र का यह सिद्धान्त है कि तिथि एकगुना होती है, नक्षत्र चतुर्गुना होता है और लग्न चौंसठ गुना होता है। २०।

ता। लग्गे होइ सुलग्गे सोमम्मि गहम्मि जइ वि दुल्लग्गे।
वहेसि दीहं सिद्धिं चन्दस्स वलेण गच्छन्ते॥ २१॥
(तस्मात्। लग्नं भवति सुलग्नं सौम्ये ग्रहे यद्यपि दुर्लग्नम्।
वहसि दीर्घां सिद्धिं चन्द्रस्य बलेन गच्छन्॥ २१॥)

राक्षसः—भदन्त, अपरैः सांवत्सरिकैः सह संवाद्यताम्।

क्षपणकः—सवादेदु सावगो। अहं उण गमिस्सं। (सवादयतु श्रावकः। अहं पुनर्गमिष्यामि।)

English—*Moreover*—There is double meaning of this 'Sloka'

First entendre—You should go when the constellation presided over by Budha is rising, the Sun is about to set, the Moon has come up with the whole of her orb, and Ketu has appeared and disappeared. 19

Second meaning—The start is to be when Rakshas is about to end, Chandragupta has risen with his full subjects, under the direction of wise Chanakya and when Malayaketu is captured and his army overthrown. 19.

Rakshas—Well, Bhadant the very day is inauspicious.

Mendicant—Well believer, the virtue of a day is single, of the constellation fourfold and of the conjunction sixty fourfold, this is the conclusion of the science of astrology. 20

टिप्पणी—१९ वॉं श्लोक में श्लेष अलंकार तथा आर्या छन्द है एवं २० वॉं श्लोक सामान्य है।

विमला

अन्वयः—लग्नम्, यद्यपि, दुर्लग्नम्, सौम्ये, ग्रहे, सुलग्नम्, भवति। चन्द्रस्य, बलेन, गच्छन्, दीर्घाम्, सिद्धिम्, वहसि॥ २१॥

व्याख्या—लग्नम् (A conjunction), यद्यपि (स्यात्) (although), दुर्लग्नम्=अशुभम् (unfavourable itself), सौम्ये=शुभकरे (favourable), ग्रहे=नक्षत्रे सुलग्नम् भवति=शुभफलप्रद भवति (becomes), चन्द्रस्य=सोमस्य वा चन्द्रगुप्तस्य (the moon or Chandragupta), बलेन=सामर्थ्येन (by the power), गच्छन्=चलन्, (going), दीर्घाम्=चिरकालव्यापिनीम् (everlasting), सिद्धिम्=लाभम् (benefit), वहसि=वक्ष्यसि (will secure)॥ २१॥

राक्षस—भदन्त (Mendicant), अपरैः=अन्यैः (of other), सांवत्सरिकैः सह=ज्योतिश्शास्त्रविद्भिः सह (with astrologers), संवाद्यताम्=विचार्यताम् (compare your decision),

क्षपणक—श्रावक=साधक (believer), संवादयतु=विचारयतु (compare it), अहम् (I), पुनः (again), गमिष्यामि (will go)

राक्षस —न खलु कुपितो भदन्तः ।

क्षपणक —कुविदे ण तुम्हाण भदन्ते । (कुपितो न युष्माकं भदन्त ।)

राक्षस —कस्तर्हि ।

क्षपणक —भअव, कअन्तो । जेण अत्तणो पक्खं ण्झिअ परपक्खो पमाणीकरीअदि । (भगवान् कृतान्तः । येनात्मनः पक्षमुज्झित्वा परपक्ष प्रमाणीक्रियते ।)
यमराज

(इति निष्क्रान्तः क्षपणकः ।)

राक्षस —प्रियंवदक, ज्ञायतां का वेला वर्तत इति ।

प्रियंवदकः—अत्थाहिलासी भअवं सूरो । (अस्ताभिलाषी भगवान्सूर्यः ।)

राक्षस —न खलु (is not) कुपित =क्रोधित (angry), भदन्त (Bhadanta)

हिन्दी—लग्न चाहे कुलग्न हो क्यों न हो शुभग्रह (बुद्धिमान् चाणक्य) के योग से सुलग्न हो जाता है और यह विजययात्रा चन्द्र चन्द्रगुप्त) के बल पर हो तो उसका लाभ भी स्थायी हो होता है ??

राक्षस—भदन्त अन्य ज्योतिषियों के साथ भी परामर्श कर लीजिए।

क्षपणक—श्रावक स्वयं परामर्श कर लें, मैं फिर चला जाऊँगा।

राक्षस—भदन्त, क्रुद्ध तो न हो गये

English—Cojunction though unfavourable itself becomes favourable when presided over by an auspicious planet, going by the power of Chandra you will secure everlasting benefit (21)

Rakshasa—Mendicant seek agreement with other astrologers

Mendicant—Compare it yourself, I go

Rakshasa—Is Bhadanta not angry surely ?

टिप्पणी—इस श्लोक में भी श्लेष अलंकार है।

विमला

व्याख्या—क्षपणक—कुपित =क्रोधित (angry), न=नहि (not), युष्माकम् (with you), भदन्त (Bhadanta),

राक्षस —तर्हि =तदा (then) कः (who)

क्षपणकः—भगवान् कृतान्त =देव यमराज (Death the worshipful), येन= त्वया (you), आत्मन स्वस्य पक्ष स्वपक्ष त स्वपक्ष ज्योतिःशास्त्रविचार माम् (your own side), उज्झित्वा=परित्यज्य (left), परपक्ष =परस्य पक्ष परपक्षं = शत्रुपक्ष (of others), प्रमाणीक्रियते=प्रमाणत्वनाङ्गीक्रियते (gone over),

(इति निष्क्रान्तः क्षपणकः Exit mendicant),

राक्षस —प्रियंवदक (Priyambadaka), ज्ञायताम् (see), का वेला=कियान् कालः (what time) वर्तते=अस्ति (it is)

प्रियंवदक —भगवान् सूर =सूर्य (God the Sun), अस्ताभिलाषी=अस्ताचल-गमनोत्सुक (is about to set)

राक्षसः—(उत्थाय विलोक्य ।) अये, अस्ताभिलापी भगवान्भास्करः। संप्रति हि ।

आविर्भूतानुरागाः क्षणमुदयगिरेरुज्जिहानस्य भानोः
पर्णच्छायैः पुरस्तादुपवनतरवो दूरमाश्वेव गत्वा ।

राक्षस.—[उत्थाय (Rising), विलोक्य=दृष्ट्वा (looking)], अये (O), भगवान् भास्करः (Divine sun) अस्ताभिलापी (is going to set), सम्प्रति हि (for now).

हिन्दी—क्षपणक—आप पर भदन्त क्रोधित नहीं हुए हैं ।

राक्षस—तब कौन ?

क्षपणक—भगवान यमराज, अपना पक्ष त्यागकर जिसके द्वारा दूसरों का पक्ष प्रमाणित किया जा रहा है ।

(यह कहने के बाद क्षपणक बाहर चला गया)

राक्षस—प्रियंवदक, पता लगाओ समय क्या है ?

प्रियंवदक—भगवान् सूर्य अस्त होने वाले हैं ।

राक्षस—(उठकर देखकर) ओह, भगवान् भास्कर अस्तोन्मुख हैं । क्योंकि इस समय—

English—*Mandicant*—Bhadant is not angry with you.

Rakshasa—Who then ?

Mandicant—Death the worshipful, because other people are accepted as guide and your own side avoided.

(Exit Mendicant)

Rakshasa—Priyambadaka, see what time it is ?

Priyambadaka—O, worshipful Sun desires setting.

Rakshasa—(Rising and looking) O, the Divine Sun is going to set, for how—

विमला

अन्वयः—क्षणम्, आविर्भूतानुरागाः, एते, उपवनतरवः, उदयगिरेः, उज्जिहानस्य, भानोः, पुरस्तात्, पर्णच्छायैः आशु, एव, दूरम् गत्वा, पुनस्तस्मिन्, अपरगिरिप्रान्तपर्यस्तबिम्बे, निवृत्ताः, प्रायः, सेवमानाः, भृत्याः, प्रचलितविभवम्, स्वामिनम् त्यजन्ति ॥ २२ ॥

व्याख्या—क्षणम्=मुहूर्तमात्रम् (in a moment), आविर्भूतोऽनुरागो येषां ते आविर्भूतानुरागाः=सञ्जातप्रीतयः (having manifested their affection), एते=इमे (these), उपवनतरवः=आरामवृक्षाः (garden trees), उदयगिरेः=उदयपर्वतात् (from the orient mountain), उज्जिहानस्य=उद्गच्छतः (have gone), भानोः=सूर्यस्य (of the sun), पुरस्तात्=समक्षम् (in front of) पर्णच्छायैः=पत्रच्छायारूपेण (the shadows of their leaves), आशु एव=शीघ्रमेव

एते तस्मिन्निवृत्ताः पुनरपरगिरिप्रान्तपर्यस्तबिम्बे
प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः ॥२२॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

चतुर्थोऽङ्कः ।

(quickly), दूरम् गत्वा=विप्रकृष्ट व्रजित्वा (having gone to a distance) पुनः (again), तस्मिन् = भानौ (that), अपरश्चासौ गिरिः अपरगिरिस्तस्य प्रान्ते पर्यस्तम् अवलम्बितम् बिम्बम् = मण्डलम् यस्य स तथोक्तस्तस्मिन् अपरगिरिप्रान्तपर्यस्तबिम्बे= इतरगिरिस्थगावलम्बिनि (his disk is pending on the brim of the western mountain), निवृत्ता = परावृत्ताः (have turned back), प्रायः=बाहुल्येन (generally), सेवमानाः=सेवाम् कुर्वन्तः (in attendance), भृत्याः (servants) प्रचलितविभवम्=विनष्टैश्वर्यम् (declines in prosperity), स्वामिनम् = प्रभुम् (their master), त्यजन्ति = विहाय अन्यत्र व्रजन्तीति (leave him). ॥२२॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे=Exeunt all)

End of Act IV)

हिन्दी—जब सूर्य उदयाचल पर आरूढ थे, उस समय उपवनतरुओं ने कितना अधिक अनुराग था, सूर्य के स्वागत में इनके पत्तों की छायाएँ कितनी दूर तक आगे बढ़ गयी थीं। वही सूर्य इस समय जब अस्ताचलोन्मुख हो गए, तो फिर वही उपवन की छायाएँ अब इससे कितनी दूर खिसक गई हैं। बहुधा सेवा करते हुए सेवक गण सम्पत्तिविहीन स्वामी को छोड़ ही देते हैं ॥ २२ ॥

English—These garden trees, having manifested their affection in the form of the red tinge and quickly gone in front of the Sun as he rose from the Rising Hill, having indeed turned back now, he having his disk cast on the edge of the other side, Servants in attendance usually leave the master whose power is shaken २२.

टिप्पणी—सेवमानाः—सेव् + लट् + शप् + शानच् + मुक् । उज्जिहानस्य—उद् + हा + शानच् + कर्तरि + षष्ठ्येकवचने विभक्तिकार्ये ।

इस श्लोक में चतुर्थ पाद में प्रतिपाद्य सामान्य अर्थ के द्वारा अवशिष्ट पादत्रय में प्रतिपाद्य विशेषार्थ के समर्थन से यहाँ सामान्य के द्वारा विशेष समर्थनात्मक अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है। यहीं अर्थान्तरन्यस्त सूर्य के अस्ताचल शिखरावलम्बी होने पर उपवन तरुछाया की प्रति-निवृत्ति 'इव' शब्द के उल्लेख से 'इव' शब्द के अनुक्त स्थिति में भी प्रतीयमान होने के कारण यहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार है। इसमें स्रग्धरा वृत्त है एवं निवृत्ति म्भरी रूप विसर्ग सन्धि हैं।

मुद्राराक्षस चतुर्थ अङ्क की 'विमला' व्याख्या समाप्त।

पञ्चमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति लेखमलङ्करणस्थगिकां मुद्रितामादाय सिद्धार्थकः ।)

सिद्धार्थकः—हीमाणहे हीमाणहे । (आश्चर्यमाश्चर्यम् ।)

बुद्धिजलणिज्झरेहिं सिच्चन्ती देसकालकलसेहिं ।
दंसिस्सदि कज्जफलं गुरुअं चाणक्कणीदिलदा ॥ १ ॥

(बुद्धिजलनिर्झरैः सिच्यमाना देशकालकलशैः ।
दर्शयिष्यति कार्यफलं गुरुकं चाणक्यनीतिलता ॥ १ ॥)

ता गहीदो मए अज्जचाणक्केण पुढमलिहिदो अमच्चरक्खसस्स मुद्दालञ्छिओ अअं लेहो तस्स ज्जेव मुद्दालञ्छिआ इअं आहरणपेडिआ । चलिदोम्हि किल पाडलिउत्तं । जाव गच्छामि । (परिक्रम्यावलोक्य च ।) कहं खवणओ आअच्छदि । जाव से असउणभूदं दंसणं मह समप्पेव्व । ता ण पडिहरामि । (तस्माद्गृहीतो मयार्यचाणक्येन प्रथमलिखितोऽमात्यराक्षसस्य मुद्रालाञ्छि-

---

विमला

[तत =तदन तरम् (then) प्रविशति=प्रवेशं करोति (enter), सिद्धार्थक = मलयकेतुमित्रवेशी चाणक्यप्रणिधि (Siddharthaka), लेखम्=पत्रम् (a letter), मुद्रा सजाता अस्या इति मुद्रिता ताम् मुद्रिताम्=मुद्राङ्किताम् (a sealed), अलङ्करण स्थगिकाम्=भूषणपेटिकाम् (a packet of jewellery), आदाय=गृहीत्वा (carrying)]

सिद्धार्थक —आश्चर्यमाश्चर्यम्=वीप्साया द्विरुक्ति (wonedr ! oh Wonder !)

अन्वय —देशकालकलशै, बुद्धिजलनिर्झरै, सिच्यमाना, चाणक्यनीतिलता, गुरुकम् कार्यफलम् दर्शयिष्यति ॥ १ ॥

व्याख्या—देशश्च कालश्च देशकालौ तावेव कलशास्तैर्देशकालकलशै स्थानसमय कुम्भै (by the pitcher of time and place), बुद्धय एव जलानि बुद्धिजलानि तेषां निर्झरा ते तथोक्तास्तै बुद्धिजलनिर्झरै =धीपय प्रवाहै (with a liberal flow of the water of wisdom) सिच्यमाना=आर्द्रीक्रियमाणा (watered), चाणक्यनीतिलता-चाणक्यस्य नीति चाणक्यनीति सैव लता=कौटिल्यनयप्रतति (the creeper of Chanakya s policy), गुरुकम्=अधिकम् (the weighty), कार्यफलम्=ईप्सितनिष्पत्यात्मकम् (fruit of undertaking), दर्शयिष्यति= प्रकटयिष्यति (showing) ॥ १ ॥

तस्मात् (so), गृहीत =आदत्त (is taken), मया (by me), आर्यचाणक्येन= पूज्यकौटिल्येन (by noble Chanakya), प्रथमलेखित =प्रथमाक्षं शकटदासेन लेखित (previously caused to be written), अमात्यराक्षसस्य (of minister

सोऽयं लेखस्तस्यैव मुद्रालाञ्छितेयमाभरणपेटिका। चलितोऽस्मि किल पाटलिपुत्रम्। यावद्गच्छामि। कथं क्षपणक आगच्छति। यावदस्याशकुनभूतं दर्शनं मम संमतमेव। तन्नास्य परिहरामि।)

(प्रविश्य।)

Rakshasa), मुद्रालाञ्छितः = राक्षसनामाङ्कितः (with the seal), अयम् (this), लेखः = पत्रम् (letter), तस्यैव = अमात्यराक्षसस्यैव (with his own), मुद्रालाञ्छिता = अङ्गुलिमुद्राचिह्निता (is stamped), इयमाभरणपेटिका = इयमलङ्कारमञ्जूषा (this packet of jewellery), चलितोऽस्मि = प्रस्थितो भवामि (I pretend to go), किल (indeed), पाटलिपुत्रम् (to patali putra), यावत् = प्रथमम् (first), गच्छामि (I go), कथम् (why), क्षपणकः = बौद्धसंन्यासी (mendicant), आगच्छति (coming), यावत् = प्रथमम् (first), अस्य = क्षपणकस्य (mendicant's), अशकुनभूतम् = अमङ्गलसूचकम् (inauspicious), दर्शनम् (sight), मम (my), संमतमेव (is desired), तस्मात् (so), न परिहरामि (do not avoid him).

हिन्दी—(पत्र [illegible] मुहर [illegible] आभूषणों की [illegible] लेकर सिद्धार्थक प्रवेश करता है)।

सिद्धार्थक—आश्चर्य है आश्चर्य है।

[illegible] बुद्धि [illegible] चाणक्य [illegible] महान कार्य [illegible]

[illegible] आर्य चाणक्य के द्वारा [illegible] राक्षस की मुहर [illegible] की मुहर [illegible] अब मैं पाटलिपुत्र के लिए चला हूँ। (घूम कर देखकर) [illegible] हूँ। क्या क्षपणक आ रहा है? इसका अशुभदर्शन भी मेरे लिए अभीष्ट ही है अतः इसका परिहार नहीं करता हूँ।

English—(Enter siddharthaka with a letter and sealed box containing ornaments).

Siddharthaka—wonderful, wonderful!

Sprinkled with the water of wisdom from the pitcher of time and place, the creeper of Chanakya's policy is about to bear the weighty fruit of the undertaking. 1

So, this letter previously caused to be written by noble Chanakya and stamped with the seal of the minister Rakshasa and the box of jewellery too is stamped with his own seal. Now I am ostensibly going to pataliputra. (going round and looking on) how so, A mendicant is approaching. As his inauspicious sight is desired by me, so I do not avoid him.

टिप्पणी—इस श्लोक में रूपक अलङ्कार तथा आर्या छन्द है।

क्षपणक —

> अलहन्ताण पणमामि जेदे गंभीलदाए बुद्धीए।
> लोउत्तलेहिं लोए सिद्धिं मग्गेहिं गच्छन्दि ॥ २ ॥
> (आर्हताना प्रणमामि ये ते गम्भीरतया बुद्धे ।
> लाकोत्तरैर्लोके सिद्धिं मार्गैर्गच्छन्ति ॥ २ ॥)

सिद्धार्थक —भदन्त, वन्दामि । (भदन्त, वन्दे ।)

क्षपणक —सावगा, धम्मसिद्धी होदु । (निर्वर्ण्य ।) सावगा, पत्थाण समुव्वहणे कअव्ववसाअ विअ तुम पेक्खामि । (श्रावक, धर्मसिद्धिर्भवतु । श्रावक प्रस्थानसमुद्वहने कृतव्यवसायमिव त्वा पश्यामि ।)

सिद्धार्थक —कह भदन्ता जाणादि । (कथ भदन्तो जानाति ।)

क्षपणक —सावगा, किं एत्थ जाणिदव्व । एसो दे मग्गादेसकुसलो सउणो करगदो लेहो अ सूअअदि । (श्रावक, किमत्र ज्ञातव्यम् । एष ते मार्गादेश कुशल शकुन करगतो लेखश्च सूचयति ।)

विमला

क्षपणक—

अन्वयः—आर्हतानाम्, प्रणमामि, ये ते, बुद्धे गम्भीरतया, लोके, लोकोत्तरै मार्गै, सिद्धिम्, गच्छन्ति ॥ २ ॥

व्याख्या—आर्हतानाम् = बौद्धसन्यासिनाम् (the follower of Arhata), प्रणमामि=प्रणाम करोमि (I bow), ये ते=बौद्धसन्यासिन (who), बुद्धे = धिय (intellect), गम्भीरतया = दुरूहतया (through the depth), लोके=ससारे (in the world), लोकोत्तरै = लोकातिगै (by uncommon), मार्गै (path), सिद्धिम् = कार्यसाफल्यम् (success), गच्छन्ति = यान्ति (attain) ॥ २ ॥

सिद्धार्थक —भदन्त (Bhadanta), वन्दे = प्रणमामि (I bow)

क्षपणक —श्रावक = उपासक (followers of lord Buddha), धर्मसिद्धि भवतु (Salvation to you), (निर्वर्ण्य (eyeing him), श्रावक (follower), प्रस्थानसमुद्वहने = प्रस्थानस्य समुद्वहन प्रस्थानसमुद्वहनम् तस्मिन् प्रस्थान समुद्वहने=यात्रासम्पादने (in preparing for a journey), कृतव्यवसायमिव= कृतो व्यवसायो येन त कृतव्यवसायम् = कृतोद्योगम् (busy), त्वाम् (to you), पश्यामि=अवलोकयामि (I see)

सिद्धार्थक —भदन्त (Bhadanta) कथम् = केन प्रकारेण (how), जानाति (do you know),

क्षपणक —श्रावक (follower) अत्र = अस्मिन् विषये (in this matter), किम् (what), ज्ञातव्यम् = अवगन्तव्यम् (is to be known), एष (this), ते= तव (your), मार्गादेशकुशल = मार्गस्य आदेशो मार्गादेशस्तस्मिन् कुशलो मार्गादेश- कुशल = अध्वसूचननिपुण (directing your way properly), शकुन =

सिद्धार्थकः—जाणिदं भदन्तेण । देसन्तरं पत्थिदोम्हि । ता कहेदु भदन्तो कीदिसो अज्ज दिवसो त्ति । (ज्ञातं भदन्तेन । देशान्तरं प्रस्थितोऽस्मि । तस्मात्कथयतु भदन्तः कीदृशोऽद्य दिवस इति ।)

क्षपणकः—(विहस्य ।) सावग, मुण्डिअमुण्डो णक्खत्ताइं पुच्छसि । (श्रावक, मुण्डितमुण्डो नक्षत्राणि पृच्छसि ।)

सिद्धार्थकः—भदन्त, सम्पदं वि किं जादं । कहेहि पत्थाणस्स जइ अणुऊलं भविस्सदि तदो गमिस्सं । (भदन्त, साम्प्रतमपि किं जातम् । कथय प्रस्थानस्य यद्यनुकूलं भविष्यति तदा गमिष्यामि ।)

प्रस्थानमाङ्गलिकमुहूर्तविशेष (good omen), च=पुन (and) करगतम्=हस्तस्थितः (in your hand) लेख (the letter), सूचयति=कथयति (tells me)

सिद्धार्थक—ज्ञातम्=बुद्धम् (have guessed), भदन्तेन (by Bhadanta), देशान्तरम्=अन्यदेशम् (other place), प्रस्थितोऽस्मि=गन्तुमुद्यतोऽस्मि (I am going), तस्मात् (so), भदन्त (Bhadanta), कथयतु (tell me) अद्य (today), कीदृश (what Sort of) दिवस इति (day I have), विहस्य (with laugh).

क्षपणक—श्रावक (follower), मुण्डितमुण्डः=दलकदलमस्तकः (Shaved head), नक्षत्राणि (the constellation), पृच्छसि=जिज्ञाससे (inquires about).

सिद्धार्थक—भदन्त (Bhadanta), साम्प्रतमपि=अधुनापि (even now), किं जातम्=किं नूतनम् (what harm is), कथय (tell me), प्रस्थानस्य (of departure), यद्यनुकूलम् भविष्यति (if the constellations be favourable), तदा (then), गमिष्यामि (I will go).

हिन्दी—क्षपणक—मैं निरन्तर अर्हतों को प्रणाम करता हूँ, जो बुद्धि की गम्भीरता से लोकोत्तर मार्गों का अनुसरण करते हुए लोक में सफलता (मोक्ष) प्राप्त करते हैं ॥ २ ॥

सिद्धार्थक—भदन्त प्रणाम कर रहा हूँ।

क्षपणक—श्रावक, धर्म की सिद्धि हो। (देखकर) श्रावक, लगता है जैसे किसी यात्रा के लिए तैयार होकर निकले हो।

सिद्धार्थक—भदन्त आपने यह कैसे जाना?

क्षपणक—श्रावक, इसमें जानने के लिए क्या है? तुम्हारा मार्गदर्शक यह शुभमुहूर्त और हाथ में वर्तमान लेख बतला रहा है।

सिद्धार्थक—भदन्त ठीक पहचान लिया। परदेश जाने के लिए प्रस्तुत हूँ। तो भदन्त बताएँ आज का दिन कैसा है?

क्षपणक—(हँस कर) श्रावक, सिर मुंडा कर नक्षत्रों को पूछ रहे हो?

सिद्धार्थक—भदन्त, अब भी क्या हुआ है? यदि यात्रा के अनुकूल दिन होगा तो जाऊँगा, अन्यथा नहीं जाऊँगा।

English—*Mendicant*—I bow to the followers of Arhata, who

क्षपणकः—सावग, ण संपदं एदस्सि मलअकेदुकडए अणुकूलं भविस्सदि। (श्रावक, न साम्प्रतमेतस्मिन्मलयकेतुकटकेऽनुकूलं भविष्यति।)

सिद्धार्थकः—भदन्त, कहेहि कुदो एदम्। (भदन्त, कथय कुत एतत्।)

क्षपणकः—सावग, णिसामेहि। पुढम दाव एत्थ कडए लोअस्स अणिवारिदो णिग्गमप्पवेसो आसी। दाणीं इदो पच्चासण्णे कुसुमपुले ण को वि

---

through the depth of their intellect accomplish success or salvation in this world by uncommon path. 2.

Siddharthak—Mendicant, I bow to you.

Mendicant—Believer, salvation to you (Eyeing him) Believer, I find that you have come out prepared for a journey.

Siddharthaka—How does the mendicant know it?

Mendicant—Believer, what is to be known in that? This letter in your hand, this good omen directing your way itself, tell me that.

Siddharthaka—Rightly guessed by mendicant. I am proceeding another land, so let mendicant declare how the day is today?

Mendicant—(With a laugh), you inquire about the constellation after getting shaved your head

Siddharthaka—What harm is there even now? Speak, if the constellation is favourable for journey, then I shall go, else I will return

टिप्पणी—आर्हतानाम्—अर्ह+शतृ-अर्हत् अर्हत.=बुद्धस्य इमे अर्हत+अण्+अर्हताः तेषाम्। श्लोक २ में अप्रस्तुत बौद्ध सन्यासी की स्तुति से प्रस्तुत चाणक्य स्तुति के अवगम से—तथा इस श्लोक के कतिपय पदों के श्लिष्ट होने के कारण—अप्रस्तुतप्रशंसा एवं श्लेष के सम्मिश्रण से 'सङ्कर' अलङ्कार है तथा आर्या वृत्त है।

विमला

क्षपणक—श्रावक (Believer), साम्प्रतम्=अधुना (at present), एतस्मिन् (in), मलयकेतुकटके (Malayaketu's camp), अनुकूलम् (favourable), न भविष्यति (nothing will be)

सिद्धार्थक—भदन्त (Mendicant), कथय=वद (tell), कुतः=कस्मात् (whence), एतत् (is this)

क्षपणक—श्रावक=साधक (Believer), निशामय=आकर्णय (listen), प्रथमम् तावत् (at first), अत्र कटके=मलयकेतुशिबिरे (in this army), लोकस्य=जनस्य (People), अनिवारितौ=अप्रतिषिद्धौ (free), निर्गमप्रवेशौ=निर्गमागमौ (ingress and egress), आसीत् (had), इदानीम्=अधुना (now), इतः प्रत्यासन्ने=अस्मात्निकटे (near from this place), कुसुमपुरे=तन्नामनगरे (at

अमुद्दालञ्छिओ णिग्गमिदु पवेटुदुं वा अणुमोदीअदि। ता जदि भाउराअणस्स मुद्दालञ्छिओ तदो गच्छ विस्सद्धो अण्णहा चिट्ठ। मा गुम्माहिआरिएहिं सञ्जमिअकलचलणो राअकुलं पवेसीअसि। (श्रावक, निशामय। प्रथम तावदत्र कटके लोकस्यानिवारितो निर्गमप्रवेश आसीत्। इदानीमितः प्रत्यासन्ने कुसुमपुरे न कोऽप्यमुद्रालाञ्छितो निर्गन्तु प्रवेष्टु वानुमोद्यते। तद्यदि भागुरायणस्य मुद्रालाञ्छितस्तदा गच्छ विश्रब्धोऽन्यथा तिष्ठ। मा गुल्माधिकारिकैः संयमितकरचरणो राजकुलं प्रवेश्यसे।)

Kusumpura) न कोऽपि = पुरुष (no body, अमुद्रालाञ्छितः=अनुद्राङ्कितः (without a seal impression), निर्गन्तुम् = निष्क्रमितुम् (to go out), प्रवेष्टुम् = अन्तर्गन्तुम् (to come in), वा = अथवा (or), अनुमोद्यते = अनुमन्यते (is allowed), तत्=तस्मात् (so), यदि=स्यात् (if) भागुरायणस्य (Bhagurayan's), मुद्रालाञ्छित = मुद्राङ्कित (sealed), तदा (then), विश्रब्ध = निर्भीकः सन् (in good cheer), गच्छ = गम्यताम् (go), अन्यथा (otherwise), तिष्ठ = स्थीयताम् (stay), गुल्माधिकारिकैः=प्रहरिभिः (by the officers at the out post), संयमितकरचरण = सम्बद्धहस्तपाद सन् (with your hands and feet in irons), राजकुलम् = नृपालयम् (to the king's tent), त्वम् (you), मा प्रवेश्यसे = अन्तर्नीयसे (lest might be taken)

हिन्दी—क्षपणक—बुद्धोपासक, मलयकेतु के इस शिविर में इस समय कोई भी वस्तु अनुकूल नहीं है।

सिद्धार्थक—भदन्त यह कैसे?

क्षपणक—बुद्धोपासक! सुनो! पहले इस शिविर में लोगों के आने-जाने पर किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था किन्तु, अब क्योंकि कुसुमपुर निकटवर्ती है—बिना मुद्रापत्र के न कोई इधर से जा सकता है और न आ ही सकता है। तो यदि भागुरायण की मुद्रा से चिह्नित हो तो विश्वासपूर्वक जाओ अन्यथा रुक जाओ। कहीं ऐसा न हो कि वनान्त पर नियुक्त पदाधिकारियों द्वारा हाथ पैर बाँध कर राजकुल में पहुँचा दिये जाओ।

English—*Mendicant*—Believer, at present nothing will be favourable in the camp of Malayaketu.

Siddharthaka—Pray, tell me, whence is this?

Mendicant—Listen, Believer, Formerly in this camp people's ingress and egress were free Now Kusumpura becoming near, so no body is allowed to come in and go out without a passport So if you have a pass from Bhagurayan then go in confidence, otherwise stay Lest you might be taken to the royal camp by the officers at the out post with hands and feet fettered.

टिप्पणी—(१) निशामय—नि + शम् + णिच् + लोट् + हि=रूपसिद्धिः। (२) अमुद्रालाञ्छित —लाञ्छ + णिच् + क्त + कर्मणि लाञ्छित। मुद्र्यत अनया इति मुद् + णिच् + अ करण मुद्रा (३) प्रवेशक—प्र + विश + णिच् + ण्वुल् कर्तरि। (४) मा में यह माङ् से भिन्न है।

(सावेगम्)

सिद्धार्थक —किं ण जाणादि भदन्तो अमच्चरक्खसस्स सण्णिहिदो त्ति। ता अमुद्दालच्छिद जि म णिक्कमन्त कस्स सत्ती णिवारेदु। (किं न जानाति भदन्तोऽमात्यराक्षसस्य सन्निहित इति तदमुद्रालाञ्छितमपि मा निष्कामन्त कस्य शक्तिनिवारयितुम्।)

क्षपणक —सावगा, रक्खसस्स पिसाचस्स वा होहि ण उण अमुद्दालच्छिदस्स इदो णिक्कमणोवाओ। (श्रावक, राक्षसस्य पिशाचस्य वा भव न पुनरमुद्रालाञ्छितस्येतो निष्क्रमणोपाय)।

सिद्धार्थक —भदन्त, ण कुप्य कज्जसिद्धी होदु। (भदन्त, न कुप्य कार्यसिद्धिर्भवतु।)

क्षपणक —सावगा, गच्छ। होदु दे कज्जसिद्धी। अह वि भाउराअणादो मुद्द जाचेमि। (श्रावक, गच्छ। भवतु ते कार्यसिद्धि। अहमपि भागुरायणान्मुद्रा याचे।)

(इति निष्कान्तौ।)

प्रवेशाक।

विमला

(सावेगम्=(with anguish)

सिद्धार्थक—भदन्त (Mendicant), किं न जानाति = किं नावगच्छति (do you not know), अमात्यराक्षसस्य = मन्त्रिराक्षसस्य (the minister Raksbasa), सन्निहित इति (*personal attendant*), तत् (so), अमुद्रालाञ्छितमपि = अलब्धाङ्गुलिमुद्राङ्कनमपि (without a pass), माम्=(me), निष्कामन्तम् = निर्गच्छन्तम् (even though leave), निवारयितुम् = प्रतिषेद्धुम (to stop), कस्य (who s) शक्तिः=सामर्थ्यम् (power)

क्षपणक—श्रावक (Believer), राक्षसस्य = निशाचरस्य (Rakshasa's), वा= अथवा (or), पिशाचस्य = भूतयोने (of the devil), भव=वर्त्तस्व (may be), न पुन=न भूय (there is no way), अमुद्रालाञ्छितस्य = अप्राप्तमुद्राङ्कनस्य (*without a pass*), इतः=अत्र स्थानात् (*from this place*), निष्क्रमणोपाय = निर्गमोद्योग (no way to get out)

सिद्धार्थक—भदन्त (Mendicant) न कुप्य = क्रोधं मा कुरु (be not angry), कार्यसिद्धिर्भवतु (may be success in the accomplishment)

क्षपणक—सावगा (Believer), गच्छ = याहि (go), ते = तव (your), कार्यसिद्धि (success), भवतु (may be), अहमपि (I too), भागुरायणात् (from Bhagurayan), मुद्राम् (pass), याचे (to ask),

[*इति निष्क्रान्तौ = (they go out)*]

(प्रवेशकः = here the end of prelude)

(ततः प्रविशति पुरुषेणानुगम्यमानो भागुरायणः ।)

भागुरायणः—(स्वगतम् ।) अहो वैचित्र्यमार्यचाणक्यनीतेः ।

मुहुर्लक्ष्योद्भेदा मुहुरधिगमाभावगहना
मुहुः संपूर्णाङ्गी मुहुरतिकृशा कार्यवशतः ।
मुहुर्नश्यद्बीजा मुहुरपि बहुप्रापितफले-
त्यहो चित्राकारा नियतिरिव नीतिर्नयविदः ॥ ३ ॥

हिन्दी—सिद्धार्थक—भदन्त, क्या नहीं जानते कि मैं अमात्य राक्षस का अति निकटवर्ती सेवक हूँ। अतः बिना मुद्रित भी बाहर जाते हुए मुझको रोकने की किसकी शक्ति है !

क्षपणक—उपासक, राक्षस के हो अथवा पिशाच के, किन्तु, बिना मुद्राङ्कन के यहाँ से बाहर निकलने का कोई दूसरा उपाय नहीं है।

सिद्धार्थक—भदन्त, क्रुद्ध न हों, मेरे कार्य की सिद्धि हो।

क्षपणक—उपासक, जाओ, तुम्हारे कार्य की सिद्धि हो। मैं भी भागुरायण से मुद्राङ्कन प्राप्त करता हूं।

(इस प्रकार दोनों निकल गये।
प्रवेशक समाप्त)

English—*Siddharthaka*—Mendicant, do you not know that I am a personal attendant of the minister Rakshasa ? Who will have the power to check me even though I leave without a pass ?

Mendicant—You may be a personal attendant of Rakshasa or of the devil, but there is no way for you to get out without a pass.

Siddharthaka—Mendicant, do not be angry, I may succeed in my object.

Mendicant—Go believer. Let success in the undertaking be yours. I too will apply for a seal.

(They go out).

Here ends the prelude.

विमला

[ततः=तत्पश्चात् (after that), प्रविशति (enter), पुरुषेण (by a man), अनुगम्यमानः (followed), भागुरायणः=(Bhagurayan).]

भागुरायण—[स्वगतम् (to himself)]. अहो (Oh), वैचित्र्यम् (the manifold), आर्यः=मान्यः (noble), चाणक्यः=कौटिल्यः (Chanakya), नीतेः (policy).

अन्वयः—मुहुः, लक्ष्योद्भेदा, मुहुः अधिगमाभावगहना, मुहुः कार्यवशतः, अतिकृशा, मुहुः नश्यद्-बीजा, मुहुः सम्पूर्णाङ्गी, मुहुरपि, बहुप्रापितफला, नयविदः, नीतिः, नियतिरिव, चित्राकारा, इत्यहो ॥ ३ ॥

(प्रकाशम् ।) भद्र भासुरक, न मां दूरीभवन्तमिच्छति कुमारः । अतोऽस्मिन्नेवास्थानमण्डपे न्यस्यतामासनम् ।

व्याख्या—मुहुः = वारंवारम् (Sometimes), लक्ष्योऽनुमेय उद्भेदः आविर्भावो यस्याः सा लक्ष्योद्भेदा = अनुमेयाविर्भावा (manifestation can be discerned), मुहुः = कञ्चित् कालम् (sometimes), अधिगमस्याभावोऽधिगमाभावः तेन गहना = अधिगमाभावगहना = ज्ञानाभावदुर्बोधा (deep not being comprehended), मुहुः = कदाचित् (sometimes), कार्यवशात् = कृत्यानुरोधात् (in accordance with the object), अतिकृशा = अतिक्षीणा (very subtle), मुहु = कदाचित् (sometimes), नश्यद्-बीजा = भ्रश्यत्कारणा: (seed appears to be destroyed), मुहुः सम्पूर्णाङ्गी = सम्पूर्णानि अङ्गानि यस्या. सा सम्पूर्णाङ्गी = प्रचितावयवा (full in all its parts), मुहुरपि = कदाचित् (sometimes), बहुप्रापितफला = बहु सविशेषम् यथा स्यात् तथा प्रापितानि फलानि यया सा बहुप्रापितफला = साफल्यमुपगता (laden with an abundance of fruit), नियति = दैवम् (destiny), इव = यथा (like), नयविद: = नीतिज्ञस्य (of the politician), नीति = राजनीतिः (policy), चित्राकारा = विविधरूपाकृतिः (varied in character), इति अहो = आश्चर्यम् (oh) ॥३॥

हिन्दी—(एक सेवक के साथ भागुरायण का प्रवेश)

भागुरायण—(अपने आप) आर्य चाणक्य की नीति की विचक्षणता आश्चर्यजनक है :—

कुछ समय के लिए व्यक्त अकुरवाली (मुखसन्धि में जिसका अल्प स्पष्टीकरण है) फिर मात्र कुछ काल के लिए ज्ञात न होने के कारण अति गम्भीर, पुनः प्रयोजनवश अति क्षीण (प्रतिमुख सन्धि में कभी दृश्य कभी अदृश्य रहने के कारण अति सूक्ष्म) फिर नष्ट उद्योग वाली (गर्भसन्धि में विफल होती हुई सी) फिर सम्पूर्ण अङ्गोंवाली (विमर्श सन्धि में स्पष्टरूप से दृश्यमान) पुनः बहुत सारे फलों को एक साथ प्राप्त करने वाली (अर्थात निर्वहण सन्धि में सभी कार्यों का उपसंहार होने के कारण फलवती) भी नीतिज्ञ की नीति नियति के सदृश विभिन्न रूपों को धारण करने वाली है—यह आश्चर्यजनक है ॥ ३ ॥

English—(Enter Bhagurayana followed by a man)

Bhagurayan—(To himself) Sometimes its manifestation can be clearly discerned, sometimes it is deep, not being comprehended, now full in all its parts and now very subtle on purpose, often with its very basis disappearing, often again leading to ample reward, today its seed appears to be destroyed, tomorrow laden with an abundance of fruit—thus oh of a striking character like fate is the policy of the diplomat. 3.

टिप्पणी—इस श्लोक में काव्यलिङ्गानुप्राणित उपमा एवं अप्रस्तुत की संसृष्टि है। शिखरिणी छन्द है।

विमला

[प्रकाशम् (Aloud)], भद्र = कल्याणिन् (good man), भासुरक (Bhasuraka), कुमारः (the prince), माम् (from him), दूरीभवन्तम् = अनिकटवर्तिनम्

पुरुषः—एदं आसणं । उपविसदु अज्जो । (एतदासनम् । उपविशत्वार्यः ।)

भागुरायणः—(उपविश्य ।) भद्र, य: कश्चिन्मुद्रार्थी मां द्रष्टुमिच्छति स त्वया प्रवेशयितव्यः ।

पुरुषः—जं अज्जो आणवेदि त्ति । (निष्क्रान्तः ।) (यदार्य आज्ञापयति ।)

भागुरायणः—(स्वगतम् ।) कष्टमेवमप्यस्मासु स्नेहवान् कुमारो मलयकेतुरतिसंधातव्य इत्यहो दुष्करम् । अथवा—

कुले लज्जायां च स्वयशसि च माने च विमुखः
शरीरं विक्रीय क्षणिकमपि लोभाद्धनवति ।
तदाज्ञां कुर्वाणो हितमहितमित्येतदधुना
विचारातिक्रान्तः किमिति परतन्त्रो विमृशति ॥ ४ ॥

(should be far off) नेच्छन्ति = नाभिलषन्ति (does not wish), अतः (so), अस्मिन्नेव (in this very), आतिष्ठन्ति जना अत्रेत्यास्थानम् तदेव मण्डपम् आस्थानमण्डपम् तस्मिन्नास्थानमण्डपे = सदोरूपजनाश्रय (council pavilion), आसनम् (seat), न्यस्यताम = संस्थाप्यताम् (place)

पुरुष—एतद् (Here), आसनम् (is the seat), आर्यः (noble sir), उपविशतु (may sit down)

भागुराय —[उपविश्य (Sits down)], भद्र (good man), यः कश्चित् (who ever), मुद्रार्थी (wish to get pass), माम् (me), द्रष्टुमिच्छति (wants to see), सः=असौ (him), त्वया (by you), प्रवेशयितव्यः (bring to me).

पुरुष—आर्य (Noble sir), यदाज्ञापयति (as commands), [इति निष्क्रान्तः (Exit)]

भागुराय—[स्वगतम् = (to himself)], कष्टम् = खेदः (alas), एवमपि = क्षणमात्रमपि (to such an extent), अस्मासु = (to me), स्नेहवान् = दयालुः (is kind), कुमारः = (the prince), मलयकेतु (Malayaketu), अतिसन्धातव्यः = प्रतारणीय इति (has to be deceived), अहो (oh), दुष्करम् = दुःखेन कर्तुम् योग्यम् कठिनम् (how hard), अथवा = तदेव कष्ट निवारयति (rather) :—

अन्वयः—क्षणिकधनलोभात् , कुले, लज्जायाम, च स्वयशसि, च, माने, च विमुखः धनवति, शरीरम्, विक्रीय, तदा, कुर्वाणः, विचारातिक्रान्तः, परतन्त्रः, अधुना, एतत् , हितम्, अहितम्, इति, किमिति, विमृशति ॥ ४ ॥

व्याख्याः—क्षणिकधनलोभात् = अल्पकालिकवित्तप्राप्त्याशया (The lust of momentary wealth), कुले = वंशे (on his pedigree), लज्जायाम् = त्रपायाम् (on the sense of same) च = पुनः (and) स्वयशसि = आत्मकीर्त्तौ (on self esteem), च (and), माने = प्रतिष्ठायाम् च (on personal reputation), विमुखः = विरक्तः सन् (turned back), धनवति = वित्तशालिनि (to a rich man), शरीरम् = कायम् (body), विक्रीय = तदायत्त कृत्वा (sold himself), तदाज्ञाम् कुर्वाणः = तन्नियोगम् सम्पादयन्

(ततः प्रविशति प्रतिहार्यनुगम्यमानो मलयकेतुः ।)

(executing his command), विचारातिक्रान्त = परित्यक्तसदसद्विवेक (leave the idea of whether a thing is good or bad), परतन्त्र = अन्यायत्त (in a dependent position), अधुना = इदानीम् (now), एतत् (this), हितम् (good), अहितम् (bad), इति किम् (what), विमृशति=विचारयति (passed the stage of reflection)

हिन्दी—(प्रकट रूप में) भद्र भासुरक, कुमार नहीं चाहते कि मैं उनसे दूर रहा करूं। अतः इसी सभामण्डप में आसन लगा दो।

पुरुष—आर्य, यह आसन है आप बैठें।

भागुरायण—(बैठकर) भद्र, अनुमतिपत्र चाहने वाला जो कोई भी मुझसे मिलना चाहे—उसे यहां हीं ले आना।

पुरुष—आर्य की जैसी आज्ञा (ऐसा कहकर निकल गया)

भागुरायण—(अपने आप) बड़ दुःख की बात है कि अपने ऊपर इतना स्नेहशील मलय केतु को ही हमलोग धोखा देने की बात सोच रह हैं। अथवा—

नश्वर धन के लोभ से कुलीनता, लज्जा, कीर्त्ति, अपकीर्त्ति मान और अपमान के प्रश्न से एकबार विमुख होकर, किसी धनी के हाथ अपने आप को बचकर—और उसी का आदेश पालन करते हुए, एक परतन्त्र व्यक्ति के पास भला और बुरा का विचार करने के लिए अवकाश ही कहाँ रह जाता है ? ॥ ४ ॥

English—(Aloud) Gentle Bhasuraka, the prince does not wish me to go far So, let my seat be placed in this very Council pavilion

Attendant—Here is the seat, let Noble sir sit down

Bhagurayan—(Sitting down) Goodman, whoever wanting pass wishes to see me should be admitt^d by you

Attendant—As noble sir commands (Exit)

Bhagurayan—(To himself) Alas ! Even prince Malayaketu, who is kind to me to such an extent, has to be deceived ! Oh how hard it is ! or rather —

Why should a man who is in a dependent position, having first turned his back on his pedigree, sense of shame, personal reputation and self esteem and sold his body through the lust of momentary wealth to a rich man, still consider when executing his command whe ther a thing is good or bad, when he has passed the stage of reflection

टिप्पणी—इस श्लोक में काव्यलिंग अलंकार एवं शिखरिणी छन्द है।

विमला

[ततः = तत्पश्चात् (after that) प्रविशति (enter), प्रतिहार्यनुगम्यमान (followed by the warder), मलयकेतु (Malayaketu)]

मलयकेतुः—(स्वगतम्) अहो, राक्षसं प्रति विकल्पबाहुल्यादाकुला मे बुद्धिर्न निश्चयमधिगच्छति । कुतः—

भक्त्या नन्दकुलानुरागदृढया नन्दान्वयालम्बिना
किं चाणक्यनिराकृतेन कृतिना मौर्येण संधास्यते ।
स्थैर्यं भक्तिगुणस्य वाधिगणयन्किं सत्यसंधो भवे-
दित्यारूढकुलालचक्रमिव मे चेतश्चिरं भ्राम्यति ॥ ५ ॥

(प्रकाशम् ।) विजये क्व भागुरायणः ।

मलयकेतु —(To himself) अहो =आश्चर्यम् (O), राक्षसंप्रति (regarding Rakshasa), विकल्पबाहुल्यात् = सन्देहाधिक्यात् (by doubts), आकुला=सक्षुब्धा (perplexed), मे = मम (my), बुद्धि = मति (mind), निश्चयम्=निर्णयम् (decision), न गच्छति=न प्राप्नोति (does not come), कुत —for —

अन्वयः—नन्दान्वयालम्बिना, चाणक्यनिराकृतेन, कृतिना, मौर्येण, नन्दकुलानुरागदृढया, भक्त्या, किम्, सन्धास्यते, किंवा, भक्तिगुणस्य, स्थैर्यम्, अधिगणयन्, सत्यसन्धः, भवेत् , इति, आरूढकुलालचक्रम्, इव, मे, चेतः, चिरम्, भ्राम्यति ॥५॥

व्याख्या—नन्दस्यान्वयः नन्दान्वयः तत्र अवलम्बते आश्रयते इति नन्दान्वयालम्बी तेन नन्दवंशसम्बन्धेन (connected with Nanda family), चाणक्यस्य निराकृत चाणक्यनिराकृत तेन चाणक्यनिराकृतेन = कौटिल्यनिराकरणेन (by having discarded Chankaya), कृतिना=कुशलेन (with Success), मौर्येण = चन्द्रगुप्तेन (by Chandragupta), नन्दकुलानुरागदृढया=नन्दस्य कुलं नन्दकुलं तत्रानुरागो नन्दकुलानुरागस्तेन दृढा तया नन्दकुलानुरागदृढया = नन्दान्ववायस्नेहस्थिरया (strengthened by his affection for the house of the Nanda family), भक्त्या (through devotion), किम् सन्धास्यत = किं सधिं करिष्यते (make an alliance), किंवा = अथवा (or), भक्तिरेव गुणो यस्य स भक्तिगुण तस्य भक्तिगुणस्य (the virtue of fidelity), स्थैर्यम् = दार्ढ्यम् (the firmness), अधिगणयन् = विचारयन् (counting foremost), सत्यसन्धः सत्या सन्धा यस्य स सत्यसन्धः = सत्यप्रतिज्ञः (true to his promise), भवेत्=स्यात् (remain), इति आरूढं कुलालचक्रं यत् तदारूढकुलालचक्रम् अधिष्ठितकुम्भकारचक्रमिव=(mounted on a potter's wheel), इव = यथा (like), मे=मम (my), चेतः=हृदयम् (mind) चिरम् = चिरकालम् (long time), भ्राम्यति (whirls)

[प्रकाशम् (aloud)]. विजय क्व भागुरायण (where is Bhagurayana)

हिन्दी—(प्रतिहारी के साथ नन्दकेतु का प्रवेश)

मलयकेतु—(मन ही मन) राक्षस के प्रति सन्देहाधिक्य के कारण मेरी बुद्धि किसी निश्चय पर नहीं पहुँच रही है । क्योंकि—

नन्दवंश के प्रति गाढ़ भक्ति से प्रेरित होकर क्या वह चाणक्य का अपमान करने वाले चन्द्रगुप्त के साथ सन्धि कर लेगा ? यह सोचकर कि अन्ततः वह भी तो नन्द का ही एक वंशज है । अथवा-भक्ति की स्थिरता पर टिकते हुए, गुणने की गई अपनी प्रतिज्ञा के प्रत्येक मूल्य पर

प्रतीहारी—कुमार, एसो क्खु कडआदो णिक्कमिदुकामाण मुद्दासपादण अणुचिट्ठदि । (कुमार, एष खलु कटकान्निष्क्रमितुकामाना मुद्रासप्रदानमनुतिष्ठति) ।

मलयकेतु—विजये, मुहूर्तमसचारा भव यावदस्य पराङ्मुखस्यैव पाणिभ्या नयने पिदधामि ।

प्रतीहारी—ज कुमारो आणवेदि । (यत्कुमार आज्ञापयति ।)

(प्रविश्य ।)

पुरुष—अज्ज, एसो क्खु खवणओ मुद्दाणिमित्त अज्ज पेक्खिदुमिच्छदि । (आर्य, एष खलु क्षपणको मुद्रानिमित्तमार्यं प्रेक्षितुमिच्छति ।)

प्राप्त करेगा । इस प्रकार दो विकल्पों पर चिन्तन करता हुआ मेरा मन-कुम्भकार की चाक पर घूमने हुए की तरह घूम रहा है । (प्रकट रूप में) विजये ! भागुरायण कहाँ है ॥ ५ ॥

English—(Now enter Malayaketu followed by the warder)

Malayaketu—(To himself) Oh, my mind perplexed by a multiplicity of alternatives does not reason certainty regarding Rakshasa for—

Will he, through his devotion strengthened by his affection for the house of the Nanda, make an alliance with Maurya who is firm from attachment to the family of Nanda, and who is now happy by having discarded Chanakya ? So my mind does whirl about continually as if mounted on a potter's wheel 5

(Aloud) Vijaya where is Bhagurayana ?

टिप्पणी—इस श्लोक में परिकर तथा उत्प्रेक्षा अलकार एव शार्दूलविक्रीडित छन्द है ।

विमला

व्याख्या—प्रतीहारी—एष (here he is), कटकात्=शिविरात् (from the camp), निष्क्रमितुम्=निर्गन्तुम् कामो येषा, गमनोत्सुकानाम् (who desires to leave), मुद्राणाम् सम्प्रदानम् मुद्रासम्प्रदानम्=गमनागमनादेशपत्रम् (pass), अनुतिष्ठति engaged in the work of issuing), कुमार (Prince)

मलयकेतु—विजये (Vijaya), मुहूर्त्तम्=क्षणम् (for a moment), असचारा भव=निवृत्तगमना तिष्ठ (remain motionless), यावत्=यत्कालपर्यन्तम् (so that), अस्य=एतस्य (his), पराङ्मुखस्यैव=परावर्त्तमानस्यैव (from behind), नयने=नेत्रे (eyes), पाणिभ्याम्=कराभ्याम् (with my hands), पिदधामि=छादयामि (I may cover)

प्रतीहारी—यत् (as), कुमार (the prince), आज्ञापयति (commands)

[प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा (entering)]

पुरुष—आर्य (Noble sir), एष खलु (here is), क्षपणक (mendicant), मुद्रानिमित्तम् for a pass), आर्यम्=भवन्तम् (to you), प्रेक्षितुम्=द्रष्टुम् (see), इच्छति=वाञ्छति (wishing)

भागुरायण—प्रवेशय ।

पुरुष—तथा । (इति निष्क्रान्तः ।)

(प्रविश्य ।)

क्षपणक—धम्मसिद्धी सावगाण होदु । (धर्मसिद्धिः श्रावकाणा भवतु)।

भागुरायण—(अवलोक्य, स्वगतम् ।) अये, राक्षसस्य मित्र जीवसिद्धिः (प्रकाशम् ।) न खलु राक्षसस्य प्रयोजनमेव किंचिदुद्दिश्य गम्यते।

भागुरायण—प्रवेशय=प्रवशार्थमादिशय (Let him come in).

पुरुष—तथा (As you order), [इति निष्क्रान्त (Exit)].

[प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा (entering)]

क्षपणक—श्रावकाणाम्=साधकानाम (of Believers), धर्मसिद्धिर्भवतु (may salvation to)

हिन्दी—प्रतीहारी—कुमार ये शिविर से बाहर जाने वालों को अनुमतिपत्र बाँट रहे हैं ।

मलयकेतु—विजये मात्र एक क्षण के लिए निश्चल हो जाओ । मैं इसकी पीठ पीछे से जाकर आँख बन्द करूँगा

प्रतीहारी—कुमार का जैसा आदेश ।

(प्रवेश करके)

पुरुष—आर्य, यह क्षपणक आदेशपत्र के लिए श्रीमान से मिलना चाहता है ।

भागुरायण—आने दो

पुरुष—जैसी आज्ञा (ऐसा कहकर निकल गया)

क्षपणक—श्रावकों को धर्मसिद्धि हो ।

English—*Warder*—Prince he here attending to the issue of pass to those who desire to go out of the camp.

Malayaketu—Vijaya, keep motionless only for a moment till I cover his eyes with my hands while he has his face turned away

Warder—As the prince commands.

(Entering)

Man—Noble sir, here is a mendicant, wishing to see you for a pass

Bhagurayan—Let him come in

Man—As your order

(Entering)

Mendicant—Salvation to the believers.

विमला

व्याख्या—[अवलोक्य = दृष्ट्वा (Seeing), स्वगतम् = मनस्येव (to himself)], अये = अहो (Oh), राक्षसस्य (Rakshasa's), मित्रम् = सुहृद् (friend), जीव-

क्षपणकः—सन्तं पावं सन्तं पावं। सावगा, तहिं गमिस्सं जहिं रक्खसस्स पिसाचस्स वा णामं वि ण सुणीअदि। (शान्तं पापम् शान्तं पापम्। श्रावक, तत्र गमिष्यामि यत्र राक्षसस्य पिशाचस्य वा नामापि न श्रूयते)।

भागुरायणः—बलवान्सुहृदि प्रणयकोपः। तत्किमपराद्धं राक्षसेन भदन्तस्य।

क्षपणकः—सावगा, ण मम किं वि रक्खसेण अवरद्धं। सअं जेव्व हदासो मन्दभाओ अत्तणो कम्मेसु लज्जे। (श्रावक, न मे किमपि राक्षसेनापराद्धम्। स्वयमेव हताशो मन्दभाग्य आत्मनः कर्मसु लज्जे)।

सिद्धि. (Jivasidhi), [प्रकाशम् (aloud)], राक्षसस्य = नन्दसचिवस्य (Rakshasa's), किंचित् = किमपि (some), प्रयोजनम् = कार्यम् (business), उद्दिश्य = निमित्तीकृत्यैव (to be done for), न खलु गम्यते = नैव व्रज्यते (are going ?).

क्षपणक—शान्तम् पापम्, शान्तम् पापम् (God forbid !), श्रावक (believer), तत्र = तस्मिन् स्थाने (there), गमिष्यामि (I will go), यत्र = यस्मिन् स्थाने (where), राक्षसस्य (Rakshasa), वा = अथवा (or), पिशाचस्य (of the devil), नामापि (the name of), न श्रूयते (may not hear),

भागुरायण—सुहृदि = मित्रे (with your friend), बलवान् (great), प्रणयकोपः = स्नेहेन क्रोधः (love quarrel), तत् (so), किमपराद्धम् = कोऽपराधः कृतः (what wrong has done), राक्षसेन = नन्दसचिवेन (by Rakshasa), भदन्तस्य = ज्यौतिषिकस्य (mendicant's).

क्षपणक—श्रावक (*believer*), मे = मम (*to me*), न किमपि = न किञ्चिदपि (not a single too), राक्षसेन (by Rakshasa), अपराद्धम् (wrong), स्वयमेव (myself), हताशः (wretch), मन्दभाग्यः = भाग्यहीनः (unfortunate), आत्मनः कर्मसु = स्वस्य कृत्येषु (I do wrong myself), लज्जे।

हिन्दी—भागुरायण—(देखकर अपने आप) अरे यह तो राक्षस का मित्र जीवसिद्धि है (प्रकट रूप में) भदन्त, राक्षस के किसी कार्य के उद्देश्य से तो कहीं नहीं जा रहे हो ?

क्षपणक—पाप शान्त हो, पाप शान्त हो। उपासक मैं वहाँ जाऊँगा जहाँ राक्षस अथवा पिशाच का नाम भी नहीं सुनाई पड़ेगा।

भागुरायण—मित्र पर तो प्रबल प्रणयकोप है। तो क्या भदन्त का राक्षस के द्वारा कुछ अनिष्ट हुआ है ?

क्षपणक—नहीं, उपासक ! राक्षस ने मेरा कुछ भी अपराध नहीं किया है। मैं अभागा स्वय ही अपना अपराध कर रहा हूं।

English—*Bhagurayana*—(Seeing him to himself) Oh, Rakshasa's friend Jivasidhi (Aloud). Are you not going with a view to do some business for Rakshasa ?

Mendicant—Begone sir, Begone sir, Believer, I will go to a place where even the name is not heard of either Rakshasa or of the devil

भागुरायणः—भदन्त, वर्धयसि मे कुतूहलम् । श्रोतुमिच्छामि ।

मलयकेतुः—(स्वगतम् ।) अहमपि श्रोतुमिच्छामि ।

क्षपणकः—सावगा, किं अणेण असुणिदव्वेण सुदेण । (श्रावक, किमनेनाश्रोतव्येन श्रुतेन) ।

भागुरायणः—यदि रहस्य तत्तिष्ठतु ।

क्षपणकः—ण रहस्य किंदु अदिणिसस । (श्रावक, न रहस्य किंत्वतिनृशंसम् ।)

भागुरायणः—यदि न रहस्य तत्कथ्यताम् ।

क्षपणकः—सावगा, ण रहस्य एद । तहवि ण कहिस्सं । (श्रावक, न रहस्यमेतत् । तथापि न कथयिष्यामि) ।

भागुरायणः—अहमपि मुद्रां न दास्यामि ।

क्षपणकः—(स्वगतम् ।) युक्तमिदानीमर्थिने कथयितुम् । (प्रकाशम् ।)

Bhagurayana—Great is your love-quarrel towards your friend. What wrong has Rakshasa done to you ?

Mendicant—Believer, no wrong has been done to me by Rakshasa, but an unfortunate wretch that I am, I am myself doing wrong to me.

विमला

व्याख्या—भागुरायण—भदन्त (mendicant), मे=मम (my), कुतूहलम्=औत्सुक्यम् (curios ty), वर्धयसि (rouses), श्रोतुम्=ज्ञातुम् इच्छामि=वाञ्छामि (I wish to hear)

मलयकेतु—[to himself=(स्वगतम्)], अहमपि (I too), श्रोतुमिच्छामि=(wish to hear it)

क्षपणक—श्रावक=साधक (Believer), किम् (what), अनेन (by this), अश्रोतव्येन (not worthy of hear), श्रुतेन (hear)

भागुरायण—यदि=स्यात् (if), रहस्यम् (secret), तत्तिष्ठतु (let it go).

क्षपणक—श्रावक (Believer), न रहस्यम् (not secret), किन्तु (but), अतिनृशंसम्=अतिशयक्रूरम् (extremely cruel)

भागुरायण—यदि=स्यात् (if), न रहस्यम् (not secret), तत्=तदा (then), कथ्यताम्=उच्यताम् (tell it)

क्षपणक—श्रावक (Believer), एतत्=इदम् (this), न रहस्यम् (not secret), तथापि (still), न कथयिष्यामि (I will not tell).

भागुरायण—अहमपि (I too), मुद्राम् (seal), न दास्यामि (will not give).

क्षपणक—[स्वगतम्=(to himself)], युक्तम् (it is right), इदानीम्=साम्प्रतम् (now), अर्थिने=अत्यन्ताभिलाषिणे (much pressing for it), कथयितुम्=

का गई। सुणादु सावगो। अत्थि दाव अअं मन्दभग्गो पुढमं पाडलिउत्ते अहिणिवसमाणो लक्खसेण मित्तत्तणं उवगदे। तहिं अवसले लक्खसेण गूढं विसकण्णआपओअं उप्पादिअ घादिदे पव्वदीसले।' (का गतिः। शृणोतु श्रावकः। अस्ति तावदयं मन्दभाग्यः प्रथमं पाटलिपुत्रे अधिनिवसन् राक्षसेन मित्रत्वमुपगतः। तस्मिन्नवसरे राक्षसेन गूढं विषकन्यकाप्रयोगमुत्पाद्य घातितः पर्वतेश्वरः।)

अभिधातुम् (should tell), [प्रकाशम्=(aloud)], का गतिः=कः उपायः (what help is), शृणोतु=आकर्णय (listen), श्रावक. (Believer), प्रथमम्=प्राक् (first), मन्दभाग्यः=भाग्यहीनः (an unlucky), पाटलिपुत्रे=तदाख्यनगरे (in Patliputra), अधिवसन्=निवसन् (residing), राक्षसेन (with Rakshasa), तावत् (while), अयम् (this), मित्रत्वम्=सख्यम् (friendship), उपगत.=प्राप्तोऽस्मि (formed), तस्मिन्नवसरे=तत्क्षणे (At that time), राक्षसेन (Rakshasa), गूढम्=गुप्तम् यथा स्यात् तथा विषकन्याप्रयोगम्=विषकन्याभिचारोपायम् (by the mysterious means of a poison maid, समुत्पाद्य=कृत्वा (having done), पर्वतेश्वरः=मलयकेतुतातः (Parvateswar), घातितः=विनाशितः (killed).

हिन्दी—भागुरायण—भदन्त मेरी जिज्ञासा बढ़ती जा रही है। अतः सुनना चाहता हूं।

मलयकेतु—(अपने आप) मैं भी सुनना चाहता हूँ।

क्षपणक—उपासक, जो अश्राव्य है—उसे सुनने से लाभ क्या?

भागुरायण—यदि अत्यधिक गोपनीय है तो रहने दिया जाय।

क्षपणक—श्रावक, रहस्य की बात तो नहीं है, किन्तु अत्यन्त क्रूरतापूर्ण है।

भागुरायण—यदि अत्यन्त गुप्त नहीं है तो कहा जाय।

क्षपणक—श्रावक, यद्यपि यह गोपनीय नहीं है—फिर भी नहीं कहूगा।

भागुरायण—मैं भी अनुमतिपत्र नहीं दूँगा।

क्षपणक—(अपने आप) जो सुनना चाहता है, उसे अब बतला देना चाहिए। (प्रकट रूप में) अब उपाय ही क्या है? सुनो बात यह है—यह अभागा जब पाटलिपुत्र में रहता था—राक्षस से इसने मित्रता की थी। तभी की बात है कि इस राक्षस ने एक विषकन्या के प्रयोग से महाराज पर्वतेश्वर को मार डाला।

English—*Bhagurayan*—Mendicant, you rouse my curiosity. I wish to hear

Malayaketu—(To himslf) I too, want to hear.

Mendicant—Believer, why hear a matter which is not worthy of your ear?

Bhagurayan—If it is secret, let it go.

Mendicant—Not a secret, but very cruel.

Bhagurayan—Let it be told if not a secret.

नन्दकेतु—(सबाष्पमात्मगतम् ।) कथं राक्षसेन घातितस्तातो न चाणक्येन ।

भागुरायण—भदन्त, ततस्ततः ।

क्षपणक—तदो हगे लक्खसस्स मित्त त्ति कदुअ चाणक्कहदएण सणिआरं णअरादो णिव्वासिदो । दाणीं वि रक्खसेण अणेअराअकज्जकुसलेण किंपि वालित्त आलहीअदि जेण हगे जीअलोआदो णिक्कासिज्जेमि । (ततोऽहं राक्षसस्य मित्रमिति कृत्वा चाणक्यहतकेन सनिकारं नगरान्निर्वासित । इदानीमपि राक्षसेनानेकराजकार्यकुशलेन किमपि तादृशमारभ्यते येनाहं जीवलोकान्निष्कासिष्ये ।)

भागुरायण—भदन्त प्रतिश्रुतराज्यार्धमप्रयच्छता चाणक्यहतकेनेदमकार्यमनुष्ठितं न राक्षसेनेति श्रुतमस्माभिः ।

Mendicant—Sir it is not a secret, yet I will not tell it.

Bhagurayan—I too will not grant you a pass.

Mendicant—(To himself) It is right that I should tell it as he is much pressing me for it (Aloud) what help is there for me ? Listen, I am ill starred, first formed friendship with Rakshasa while residing in Pataliputra. At that time Rakshasa killed Parvateswara by the mysterious means of a poison-maid

विमला

व्याख्या—नन्दकेतु—[सबाष्पम् = in tears, आत्मगतम् to himself)], कथम् (what) राक्षसेन (Rakshasa), घातित = मारित (killed), तात = मम पिता (my father), न चाणक्येन = न कौटिल्येन (not Chanakya)

भागुरायण—भदन्त (Mendicant), ततस्तत = तदनन्तरम् (what next)

क्षपणक—तत = तत्पश्चात् (then), अहम् (I), राक्षसस्य मित्रम् = नन्दसचिवस्य सुहृद्‌म् (a friend of Rakshasa), कृत्वा = विधाय (to be), चाणक्यहतकेन = दुष्टचाणक्येन (vile Chanakya), सनिकारम् = सापमानं यथा स्यात्तथा (disgracefully), नगरात् = पुरात् (from the city), निर्वासित = निष्कासित (expelled), इदानीमपि = अधुनापि (even now), राक्षसेन (by Rakshasa), अनेकानि च राजकार्यानि अनेकराजकार्याणि तेषु कुशलस्तेन अनेकराजकार्यकुशलेन (skilled in doing many royal work), किमपि = किञ्चिदपि (something), तादृशमारभ्यते = पर्वतेश्वरघातनसदृशम् क्रियते (has planned similar), येन = यत्कार्यानुष्ठानेन (by which), अहम् (I), जीवलोकात् = संसारात् (from the world), निष्कासिष्ये = निर्वासिष्ये (shall be turned out)

भागुरायण—भदन्त (Mendicant), प्रतिश्रुत च तद्राज्यार्द्धं प्रतिश्रुतराज्यार्द्धं = अङ्गीकृतराज्यार्द्धभागम् (promised to give the half of the kingdom), अप्रयच्छता = अददता (not intending to give), चाणक्यहतकेन = दुष्टकौटिल्येन

क्षपणकः—(कर्णौ पिधाय ।) सन्तं पावं । चाणक्केण विसकण्णाए णामं पि ण सुदम् । (शान्तं पापम् । चाणक्येन विषकन्याया नामापि न श्रुतम् ।)

भागुरायणः—मुद्रा दीयते । एहि कुमार श्रावय ।

मलयकेतुः—(उपसृत्य ।)

(the cursed Chanakya), इदम् कार्यम् (this work), अनुष्ठितम्=कृतम् (has done), न राक्षसेन (not by Rakshasa), इति अस्माभिः श्रुतम्=आकर्णितम् (we had heard).

क्षपणक—[कर्णौ पिधाय = (stopping his ears)], शान्तं पापम् (Heaven forbid), चाणक्येन = कौटिल्येन (by Chanakya), विषकन्यायाः (of the poison maid), नामापि (even the name of), न श्रुतम् = न ज्ञातम् (did not know).

भागुरायण—मुद्रा (the pass), दीयते (I give you), एहि = आगच्छ (come), कुमारम् (the prince), श्रावय = कथय (tell this)

मलयकेतु—[उपसृत्य=समीपम् गत्वा (approaching)].

हिन्दी—मलयकेतु—(आँखें भरकर अपने आप) तो क्या पिताजी को राक्षस ने मरवाया था, चाणक्य ने नहीं ।

भागुरायण—भदन्त, उसके बाद, उसके बाद ।

क्षपणक—तदनन्तर—क्योंकि मैं राक्षस का मित्र था, अतः चाणक्य ने अपमानित कर मुझे नगर से बाहर कर दिया । इस समय भी अनेक राजकार्यों में कुशल राक्षस के द्वारा कुछ उसी प्रकार के कार्य किये जा रहे हैं जिससे मैं अब इस संसार से ही विदा कर दिया जाऊँगा ।

भागुरायण—भदन्त, हमने तो सुना था कि चाणक्य ने जो आधा राज्य देने की प्रतिज्ञा की थी, उससे मुकर जाने के लिए ही उसने ऐसा किया था । इस सम्बन्ध में राक्षस का तो नाम भी नहीं आया ।

क्षपणक—(कानों पर हाथ रखते हुए) पाप शान्त हो । चाणक्य ने तो विषकन्या का नाम भी नहीं सुना था ।

भागुरायण—भदन्त, अनुमतिपत्र दिया जा रहा है । आओ, कुमार को भी यह बात सुना दो ।

मलयकेतु—(समीप आकर) :—

English—*Malayaketu*—(In tears to himself) How so father was killed by Rakshasa not by Chanakya.

Bhagurayan—Next, Mendicant, what next ?

Mendicant—Then I was expelled from the city disgracefully by cursed Chanakya, as he was thinking me to be a friend of Rakshasa. And even now, again is begun by Rakshasa, who is skilled in doing many such things, has planned something similar to it by which I will be cut off from the land of living.

श्रुतं सखे श्रवणविदारणं वचः
सुहृन्मुखाद्रिपुमधिकृत्य भाषितम् ।
पितुर्वधव्यसनमिदं हि येन मे
चिरादपि द्विगुणमिवाद्य वर्धते ॥ ६ ॥

क्षपणकः—(स्वगतम् ।) अये. श्रुत मलयकेतुहतकेन । हन्त कृतार्थोऽस्मि । (इति निष्क्रान्तः ।)

मलयकेतुः—(प्रत्यक्षवदाकाशे लक्ष्य बद्ध्वा ।) राक्षस राक्षस, युक्तं युक्तम् ।

Bhagurayana—Mendi ant, this indeed was done by Chanakya, not intending to give the promised half of the kingdom, this is what has been heard by us.

Mendicant—(Blocking his ears) Begone sin ! Not the name even of the poison maid was heard by Chanakya

Bhaguravan—The pass is being issued Come tell this to the prince

Malayaketu—(Approaching)—

विमला

अन्वयः—सखे, सुहृन्मुखात्, रिपुम्, अधिकृत्य, भाषितम्, श्रवणविदारणम्, वचः, श्रुतम्, येन, हि, इदम्, मे, पितुः, वधव्यसनम्, चिरात्, अपि, अद्य, द्विगुणम्, इव, वर्धते ॥ ६ ॥

व्याख्या—सखे=मित्र (friend), सुहृन्मुखात्=क्षपणकाननात् (from the mouth of his friend), रिपुम्=शत्रुम् (to the enemy), अधिकृत्य=उद्दिश्य (with reference), भाषितम्=कथितम् (spoken), श्रवणविदारणम्=श्रोत्रपीडाजनकम् (the ear splitting), वचः=वाक्यम् (words), श्रुतम्=आकर्णितम् (have heard), येन=येन हेतुना (by which), हि=यतः, इदम् (this), मे=मम (my), पितुः वधव्यसनम्=तातविनाशजन्यदुःखम् (grief for my father's murder), चिरात्=बहुकालात् (though a long time), अपि (also), अद्य=साम्प्रतम् (today), द्विगुणमिव=अधिकमिव (two fold), इव=यथा (like), वर्धते=वृद्धते (increases) ॥ ६ ॥

क्षपणकः—[स्वगतम् (to himself)], अये (Ah), श्रुतम्=आकर्णितम् (has heard), मलयकेतुहतकेन=दुष्टमलयकेतुना (by the wretch Malayaketu), हन्त=हर्षेऽव्ययम् (Hurrah), कृतार्थोऽस्मि=कृतकार्योऽस्मि (I have my purpose served), [इति निष्क्रान्तः (Exit)].

मलयकेतुः—[प्रत्यक्षवद् (as on something visible), आकाशे=in the sky, लक्ष्यं बद्ध्वा=fixing his gaze)], राक्षस राक्षस (Rakshasa-Rakshasa), युक्तम्-युक्तम् (this is fitting fitting indeed)

मित्रं ममेदमिति निर्वृतचित्तवृत्ति
विश्रम्भतस्त्वयि निवेशितसर्वकार्यम्।
तातं निपात्य सह बन्धुजनाश्रुतोयै-
रन्वर्थतोऽपि ननु राक्षस राक्षसोऽसि ॥ ७ ॥

हिन्दी—मित्र आज मैंने तुम्हारे ही मित्र के मुख से अपने शत्रु (राक्षस) को लक्ष्य कर कहा गया कान को विदीर्ण कर देनेवाला वचन सुन लिया, जिससे आज मेरे पितृवध का दुःख अधिक दिनों के बीत जाने पर भी—ताजा होकर दुगुना हो आया है ॥ ६ ॥

क्षपणक—(अपने आप) अहा, दुष्ट मलयकेतु ने भी सुन लिया। खुशी है कि मैं अब कृतकार्य हो गया।

(ऐसा सोचकर निकल गया)

मलयकेतु—(प्रत्यक्ष की तरह आकाश की ओर आंख लगाकर) राक्षस, राक्षस, ठीक है, ठीक है।

English—I have heard, friend, the words ear splitting spoken with reference to the enemy from your friend's mouth words by which my grief for my father s murder, even after such a long time grows unto me as if indeed twofold today 6

Mendicant—(To himself) Ha, the cursed Malayaketu has heard it Hurrah ! I have my purpose served (Exit)

Malayaketu—(Fixing his gaze in the sky as on something visible) Raksasa, Raksasa, This is fitting, very proper indeed

टिप्पणी—श्रवण विदारणम—श्रवणयो विदारणम्—वि + दारि + ल्युट् कर्त्तरि। इस श्लोक में उत्प्रेक्षा अलङ्कार तथा रुचिरा छन्द है। छन्द का लक्षण है —जभौ सजौ गिति रुचिरा चतुर्ग्रहै।

विमला

अन्वय—इदम्, मम, मित्रम्, इति, विश्रम्भत, त्वयि, निवेशितसर्वकार्यम् निर्वृतचित्तवृत्तिम्, तातम्, बन्धुजनाश्रुतोयै, सह, निपात्य, राक्षस, ननु, अन्वर्थत, अपि, राक्षस, असि ॥ ७ ॥

व्याख्या—इदम् = एष (this), मम = मदीयम् (my), मित्रम् = सुहृदम् (friend) इति (like this), विश्रम्भत = विश्वासात् (on faith), त्वयि = राक्षसे (on you), निवेशितसर्वकार्यम् = स्थापितनिखिलकृत्यम (entrusted all his affairs), निर्वृतचित्तवृत्तिम् = निश्चिन्तमनोवृत्तिम् (his mind perfectly at ease), तातम् = जनक (father), बन्धुजनाश्रुतोयै = आत्मीयजनाश्रुसलिलै (along with the tears of his relations), सह = सार्द्धम् (with), निपात्य = पातयित्वा (to fall), राक्षस (Rakshasa), न तु = न केवलम् (not only), अन्वर्थतोऽपि = योगार्थादपि (in the full sense of the word), राक्षस = निशाचर (the devil), असि = भवसि (is) ॥ ७ ॥

भागुरायणः—(स्वगतम् ।) रक्षणीया राक्षसस्य प्राणा इत्यार्यादेशः । भवत्वेवं तावत् । (प्रकाशम् ।) कुमार, अलमावेगेन । आसनस्थं कुमारं किंचिद्विज्ञापयितुमिच्छामि ।

मलयकेतुः—(उपविश्य ।) सखे, किमसि वक्तुकामः ।

भागुरायणः—कुमार, इह मन्वर्थशास्त्रव्यवहारिणामर्थवशादरिमित्रोदासी-

भागुरायण—[स्वगतम्=(to himself)], राक्षसस्य=नन्दसचिवस्य (Rakshasa's), प्राणा=जीवनम् (life), रक्षणीया =पालनीया (should be saved), इति=इत्थम् (like this), आर्यादेश=चाणक्याज्ञा (the order of noble Chanakya), भवतु एवम् तावत् (well then), [प्रकाशम् =(Aloud)], कुमार (the prince), आवेगेन = क्रोधेन (excitation), अलम्=व्यर्थम् (do not be), आसनस्थम्= आसने समुपविष्टम् (when you are seated), कुमारम् (the prince), किञ्चित्= किमपि (something), विज्ञापयितुम् = निवेदयितुम् (to say), इच्छामि= वाञ्छामि (I wish)

मलयकेतु—[उपविश्य (sitting)], सखे = मित्र (friend), किमपि = किञ्चित् (something), वक्तुकाम (about to say)

हिन्दी—'यह मेरा मित्र है'—इस विश्वास के साथ तुम पर सारा कार्यभार सौंपने वाले तथा निश्चिन्त चित्तवृत्तिवाले—मेरे पिता को, बन्धु-बान्धवों के आँसुओं के साथ ही राक्षस, तुमने मार गिराया । यथार्थ में तुम नाम और अर्थ दोनों दृष्टियों से 'राक्षस' ही हो ॥ ७ ॥

भागुरायण—(अपने आप) आर्य, चाणक्य का आदेश है कि राक्षस के प्राणों की रक्षा करनी चाहिए । (प्रकट रूप में) दुःख से क्या लाभ कुमार ? कुमार आसन ग्रहण करें—मैं कुछ निवेदन करना चाहता हूँ ।

मलयकेतु—(बैठते हुए) क्या कहना चाहते हो मित्र ?

English—O, Rakshasa ! literally too you have become a 'Rakshasa' (demon) indeed, having, along with the tears of his relations, since you caused my father to be killed, when he, with his mind perfectly at ease at the thought you were his friend, and had trustingly entrusted all his affairs to you 7.

Bhagurayan—(To himself) "Rakshasa's life should be saved." It is order of Noble Chanakya (Aloud) Prince, away with excitement, pray sit down. I wish to say something.

Malayaketu—(Sitting down) Friend what are you about to say ?

टिप्पणी—इस श्लोक में श्लेषोक्ति अलङ्कार एवं वसन्ततिलका छन्द है । अलङ्कार का लक्षण है-श्लेषार्थस्य बलादेवन् यत्र स्याद्वाचक द्वयो । सा श्लेषोक्तिर्निरूपैर्नपूर्वोक्तैरेवोच्यते तदा भवेत् ॥ —साहित्यदर्पण । छन्द लक्षण पहले लिखा जा चुका है ।

विमला

भागुरायण—कुमार (the prince), इह=अस्मिन् लोके (in this world),

नव्यवस्था न लौकिकानामिव स्वेच्छावशात्। यतस्तस्मिन्काले सर्वार्थसिद्धि राजानमिच्छतो राक्षसस्य चन्द्रगुप्तादपि बलीयस्तया सुगृहीतनामा देवः पर्वतेश्वर एवार्थपरिपन्थी महानरातिरासीत्। तस्मिंश्च राक्षसेनेदमनुष्ठितमिति नास्ति दोष एवात्रेति पश्यामि। पश्यतु कुमारः।

मित्राणि शत्रुत्वमुपानयन्ती मित्रत्वमर्थस्य वशाच्च शत्रून्।
नीतिर्नयत्यस्मृतपूर्ववृत्तं जन्मान्तरं जीवत एव पुंसः ॥ ८ ॥

खलु=निश्चये (indeed), अर्थशास्त्रेण व्यवहर्तुं शील येषामित्यर्थशास्त्रव्यवहारिणःस्तेषां अर्थशास्त्रव्यवहारिणाम् = नीतितन्त्रानुसरणशीलानाम् (in the case of politicians), अर्थवशात् = प्रयोजनानुरोधात् (is dependent on interest), अरिश्च मित्रञ्च उदासीनश्चारिमित्रोदासीनास्तेषु व्यवस्था व्यवस्थितिर्भवतीति शेष । (consideration of friend or foe, is neutral), लौकिकानाम् = लोकानुसरणशीलानाम् (with ordinary men), इव = यथा (like), स्वेच्छावशात्= निजमनोरथानुरोधेन (on personal inclination), न तेषु व्यवस्था (not on then), यत् =यस्मात् (as at), तस्मिन्काले (on that occasion), सर्वार्थसिद्धिम् (Sarvarthsidhi), राजानम् नृपतिम् इच्छत कामयमानस्य (wished to be king), राक्षसस्य (Rakshasa's), चन्द्रगुप्तादपि = मौर्यादपि (then even Chandragupta), बलीयः (stronger), सुगृहीतनामा=प्रातःस्मरणीयाभिधेय. (of blessed name), देव = नृपः (sire), पर्वतेश्वर एव (Parvateswar), अर्थपरिपन्थी=कार्यप्रतिद्वन्द्वी (crossing his purpose), महान् = प्रबल. (great), अरातिः = शत्रु. (enemy), आसीत् (was), तस्मिंश्च = देवे पर्वतेश्वरे (unto him), राक्षसेन (by Rakshasa), इदम्=एतद् (this), अनुष्ठितम् = कृतम् (has done), अत्र (here), नास्ति दोष. = नापराधः (no blame), पश्यामि= प्रेक्षे (see), कुमारः (the prince), पश्यतु=अवलोकयतु (should just consider)—

अन्वयः—नीति, अर्थस्य, वशात्, मित्राणि, शत्रुत्वम्, च, शत्रून्, मित्रत्वम्, उपनयन्ती, जीवत., एव, पुंस', अस्मृतपूर्ववृत्तम्, जन्मान्तरम्, नयति ॥ ८ ॥

व्याख्या—नीतिः = नयः (Policy), अर्थस्य = प्रयोजनस्य (of interest), वशात्=अनुरोधात् (from consideration), मित्राणि = सुहृद. (friends), शत्रुत्वम्=रिपुत्वम् (into foes), च = पुनः (and), शत्रून्=विपक्षान् (foes), मित्रत्वम्=बन्धुत्वम् (into friends), उपनयन्तीम्=प्रापयन्तीम् (turning), जीवतः = मृत्युमनधिगतान् (still living), एव (while), पुंस =जनान् (to men), पूर्वञ्च तद्वृत्तम् पूर्ववृत्तम् अस्मृतम् पूर्ववृत्तम् यस्मिन् तदस्मृतपूर्ववृत्तम् = अचिन्तितपूर्ववृत्तान्तम् (past conduct is all forgotten), जन्मान्तरम्=अन्यजन्म (another kind of existence), नयति=प्रापयति (leads) ॥८॥

हिन्दी—भागुरायण—कुमार, इस ससार की बात ही कुछ ऐसी है—विशेषत राजनीतिज्ञों के शत्रु, मित्र और उदासीन प्राय. स्वार्थवश ही निर्धारित हुआ करते हैं। जनसामान्य

तदत्र वस्तुनि नोपालम्भनीयो राक्षसः। आनन्दराज्यलाभादुपग्राह्यश्च। परतश्च परिग्रहे वा परित्यागे वा कुमारः प्रमाणम्।

की तरह व्यक्तिगत प्रवृत्तियों के कारण नहीं। उस समय की कुछ परिस्थिति ही ऐसी थी—उस समय राक्षस सर्वार्थसिद्धि को राजा बनाना चाहता था, इधर प्रातःस्मरणीय महाराज पर्वतेश्वर चन्द्रगुप्त से भी अधिक प्रबल होने के कारण—प्रयोजन के विघातक महान् शत्रु थे। अतः राक्षस ने उनसे यदि यह अनुचित व्यवहार कर ही दिया हो, इसमें मुझे उनका कोई बड़ा अपराध दृष्टिगोचर नहीं होता। कुमार ही देखें—

यह स्वार्थ है जो राजनीतिज्ञ में मित्रों के प्रति शत्रुता का और शत्रुओं के प्रति मित्रता का व्यवहार कराता है। जीवितावस्था में ही व्यक्ति, अपने अतीत को बिल्कुल भुलाकर एक और ही जीवन—एक जन्मान्तर का तरह व्यतीत करने लग जाता है॥ ८॥

English—*Bhaguravana*—Prince, in this world, with those who practice the science of diplomacy, the classification of friend, or foe, or neutral, is dependent on interest, and not on personal inclination as with ordinary people. On that occasion Rakshasa wished Sarvarthsidhi to be the king, it was sire Parvateswar of blessed name, who, on account of being more powerful than even Chandragupta ,had become the great enemy crossing his purpose. Therefore Rakshasa acted against him. So there is nothing deserving great blame in this. The prince should himself just consider .—

Turning from considerations of interest friends turn into foes and foes into friends, diplomacy leads a person, while still living into other type of existence in which past relation is all forgotten. 8.

टिप्पणी—इस श्लोक के पूर्वार्द्ध में नीति के द्वारा मित्रों में शत्रुता और शत्रुओं में मित्रता का प्रतिपादन असम्भाव्यता एवं उत्तरार्द्ध में भी जीवितावस्था में ही जन्मान्तरत्व की प्रतिपादन से विषमालङ्कार है। मित्रत्व एवं शत्रुत्व के अन्योन्य विरोध से जीवित पुरुष के जन्मान्तर के विरोध से विरोधालङ्कार की सम्भावना है। अतः सन्देहोदय के कारण इसे कुछ लोग सन्देह सङ्कराल‌ङ्कार मानते हैं। कुछ लोग—'मित्राणि शत्रुत्वमिवानयन्ती' पाठ के आधार पर उत्प्रेक्षा अतिशयोक्ति की संसृष्टि मानते हैं तथा इसमें इन्द्रवज्रा छन्द है।

विमला

तद्=तस्मात् कारणात् (So), अत्र वस्तुनि=अस्मिन् विषये (in this matter), राक्षस (Rakshasa), नोपालम्भनीयः=न तिरस्कार्यः (is not to be blamed), आ नन्दराज्यलाभात्=नन्दराज्यप्राप्तिम् यावत् (until the aquisition of Nanda's), उपग्राह्यश्च=आराध्य इति यावत् (has to be humoured), परतश्च (Afterward), परिग्रहे (to retain), वा (or), परित्यागे (to dismiss), कुमारः प्रमाणम् (free).

मलयकेतुः—एवं सखे, सम्यग्दृष्टवानसि। यतोऽमात्यवधे प्रकृतिक्षोभः स्यादेव च सदिग्धो विजयः।

(प्रविश्य।)

पुरुषः—जेदु कुमारो। अज्ज, गुम्मट्ठाणाधिकिदो दीहरक्खो विण्णवेदि—'एसो क्खु अम्हेहिं कडआदो णिक्कमन्तो अगहीदमुद्दो सलेहो पुरिसो गहीदो। ता पच्चक्खीकरेदु ण अज्जो'त्ति। (जयतु कुमार। आर्य, गुल्मस्थानाधिकृतो दीर्घरक्षो विज्ञापयति—'एष खल्वस्माभि कटकान्निष्क्रामन्नगृहीतमुद्र॰ सलेखः पुरुषो गृहीतः। तत्प्रत्यक्षीकरोत्वेनमार्यः' इति।

भागुरायण—भद्र, प्रवेशय।

पुरुषः—तह। (इति निष्क्रान्तः।) (तथा।)

व्याख्या—मलयकेतु—एवम् सखे=मित्र (so it is friend), सम्यग्=साधु (rightly), दृष्टवानसि = विचारितवानसि (have viewed), यत॰ = यस्मात्, कारणात् (for), अमात्यवधे=अमात्यस्य वध अमात्यवधस्तस्मिन् अमात्यवधे = मन्त्रिहिंसने (at the execution of the minister), प्रकृतीनाम् क्षोभ प्रकृतिक्षोभ =प्रजाविराग (irritation of subjects), स्यात्=भवेत् (will be), एव च (thus), विजय (victory), सदिग्ध स्यात्=सदेहयुक्त स्यात (would be jeopardised)

[प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा=(Entering)]

पुरुष—जयतु=सर्वोत्कर्षेण वर्त्तताम् (let porsper), कुमार॰ (the prince), आर्य=मान्यो भवान् (noble sir), गुल्मस्थानाधिकृत =शिविरप्रधानद्वारपालक (superintendent at the out post), दीर्घरक्ष (Dirgharakshaka), विज्ञापयति=निवेदयति (to inform you), एष =अयम् (this), पुरुष =मानव॰ (man), खलु (indeed), अस्माभिः (by us), कटकात्=शिबिरात् (from the camp), निष्क्रामन्=निस्सरन् (was going out), अगृहीतमुद्र =अगृहीता मुद्रा येन सोऽगृहीतमुद्र =अप्राप्तप्रवेशनिर्गमानुमतिपत्र (without a pass), सलेख =लेखेन सहित =पत्रिकायुक्त (with letter), पुरुष =जन॰ (man), गृहीत = धृत॰ (was arrested), तत् (so) एनम्=पुरुषम् (this man), आर्य (noble sir), प्रत्यक्षीकरोतु = स्वय पश्यतु (inspect him personally)

भागुरायण—भद्र=कल्याणिन् (good man), प्रवेशय (introduce him)

पुरुष—तथा (as your command), [इति निष्क्रान्त (Exit)]

हिन्दी—अत इस विषय में राक्षस को उत्साहना नहीं देना चाहिए और नन्द राज्य की प्राप्ति तक इसी रूप में रखना चाहिए और उसके बाद स्वीकार करने अथवा छोड़ने में कुमार ही प्रमाण हैं।

मलयकेतु—ठीक ही कहते हो मित्र, क्योंकि अमात्य राक्षस के वध के बाद प्रजाओं में विद्रोह हो जायेगा और इस प्रकार विजय सदिग्ध हो जायेगी।

(ततः प्रविशति पुरुषेणानुगम्यमानः संयतः सिद्धार्थकः ।)

सिद्धार्थकः—(स्वगतम् ।)

आणंतीए गुणेसु दोसेसु परंमुहं कुणन्तीए ।
अम्हारिसजणणीए पणमामो सामिभत्तीए ॥ ९ ॥
(आनयन्त्यै गुणेषु दोषेषु पराङ्मुखं कुर्वत्यै ।
अस्मादृशजनन्यै प्रणमामः स्वामिभक्त्यै ॥ ९ ॥)

(प्रवेश करके)

पुरुष—कुमार की विजय हो। आर्य! गुल्मस्थान पर नियुक्त दीर्घरक्षक निवेदन करता है—हमने शिविर से बाहर बिना अनुमतिपत्र के निकलते हुए यह पुरुष पकड़ा है। तो आर्य इसको स्वयं देखें

भागुरायण—भद्र, भीतर ले आओ।

पुरुष—जो आज्ञा। (कहकर बाहर निकल गया।)

English—So in this matter Rakshasa is not to be blamed, but should be retained in service till the acquisition of Nanda's Kingdom. There after the prince will decide if to retain or to dismiss him

Malayaketu—Friend, so it is, rightly have you viewed it. For at the execution of the minister there will be discontent among the subjects Thus victory will be jeopardised.

(Entering)

Attendant—Let the prince prosper, Noble Sir, Dirghrarakshaka the superintendent at the out post reports you. This man with a letter and without a pass slipping out from the camp was arrested by us. So let noble sir, see him personally

Bhagurayan—Good man introduce him.

Attendant—As you command. (Exit)

विमला

[ततः=तत्पश्चात् (then), प्रविशति (enter), पुरुषेण (by a man), अनुगम्यमानः (followed), संयतः (fettered), सिद्धार्थकः (Siddharthaka).]

सिद्धार्थक—[स्वगतम्=(To himself)]

अन्वयः—दोषेषु, पराङ्मुखम्, कुर्वन्त्यै गुणेषु, आनयन्त्यै, अस्मादृशजनन्यै, स्वामिभक्त्यै, प्रणमामः ॥ ९ ॥

व्याख्या—दोषेषु=अपराधेषु सत्सु (fault), पराङ्मुखं कुर्वत्यै=विमुखं विदधत्यै (makes blind), गुणेषु=उत्कर्षेषु (in the matter of virtues), आनयन्त्यै=सम्मुखं कुर्वत्यै (drawing towards), अस्मादृशजनन्यै=अस्मादृशानां जननी तस्यै अस्मादृशजनन्यै मादृशानाम् भृत्यानाम् पालनकर्तृत्वेन जननीतुल्यायै (mother

पुरुषः—अज्ज, अअ सो पुरिसो। (आर्य, अयं स पुरुषः)

भागुरायणः—(नाट्येनावलोक्य।) भद्र, किमयमागन्तुक आहोस्विदिहैव कस्यचित्परिग्रहः।

सिद्धार्थकः—अज्ज, अहं क्खु अमच्चरक्खसस्स सेवओ। (आर्य, अहं खलु अमात्यराक्षसस्य सेवकः।)

भागुरायणः—भद्र, तत्किमगृहीतमुद्रः कटकान्निष्क्रामसि।

---

to those of your type), स्वामिभक्त्यै=प्रभुसेवायै (devotion to the employer), प्रणमाम (we bow) 9

पुरुष—आर्य=मान्यो भवान् (Noble sir), अयम् (here is), स पुरुष= असौ जन (the man)

भागुरायण—[नाट्येन=अभिनयेन (acting), अवलोक्य=दृष्ट्वा (looking at)], भद्र=कल्याणिन् (good man), अयम्=स पुरुष (he is), किम् (what), आगन्तुक=अन्यस्थानात् साम्प्रतमिहागत (a stranger), आहोस्वित्=अथवा (or), इहैव=अत्र स्थाने (here), कश्चित् (some one), परिग्रह = अनुचर. (attendant)

सिद्धार्थक—आर्य =मान्यो भवान् (Noble sir), अहम् (I), खलु=निश्चयार्थे प्रयुक्त. (indeed), अमात्यराक्षसस्य (the minister Rakshasa's), सेवक= अनुचर. (an attendant)

हिन्दी—(इसके बाद पुरुष से अनुगम्यमान हाथ पावों से जकडा सिद्धार्थक का प्रवेश)

सिद्धार्थक—(अपने आप)—

दोषों से हमारी दृष्टि को मोडनेवाली, गुणों को सम्मुख करने वाली, हमारे जैसों को माँ की तरह स्वामिभक्ति को हम प्रणाम करते हैं॥ ९ ॥

पुरुष—आर्य, यह रहा वह पुरुष।

भागुरायण—(अभिनय के साथ देखकर) भद्र यह कोई परदेशी है अथवा यहाँ के किसी का सेवक है?

सिद्धार्थक—आर्य, मैं अमात्य राक्षस का सेवक हूं।

English—(Now enter Siddharthaka fettered and followed by the attendant)

Siddharthaka—(To himself) We bow to loyalty, which is a mother to those of our type drawing us toward her virtues and makes us blind to faults 9

Attendant—Noble Sir, here is the man

Bhagurayan—(Acting and looking at him) Is he a stranger or servant of some one here ?

Siddharthaka—Noble Sir I am a servant of the minister Rakshasa.

टिप्पणी

व्याख्या—भागुरायण—भद्र (good man), तत् (then), किम् (why),

सिद्धार्थकः—अज्ज, कज्जगोरवेण तुवराविदोम्हि। (आर्य, कार्यगौरवेण त्वरायितोऽस्मि।)

भागुरायणः—कीदृशं तत्कार्यगौरवं यद्राजशासनमुल्लङ्घयति।

मलयकेतुः—सखे भागुरायण, लेखमपनय।

भागुरायणः—(सिद्धार्थकहस्ताद् गृहीत्वा पत्रमुद्रां दृष्ट्वा।) कुमार, अयं लेखः। राक्षसनामाङ्कितेयं मुद्रा।

मलयकेतुः—मुद्रां परिपालयन्नुद्घाट्य दर्शय।

(भागुरायणस्तथा कृत्वा दर्शयति।)

मलयकेतुः—(वाचयति।) स्वस्ति यथास्थानं कुतोऽपि कोऽपि कमपि पुरुषविशेषमवगमयति। अस्मत्प्रतिपक्षं निराकृत्य दर्शिता कापि सत्यता

अगृहीतमुद्र = अप्राप्तगमननिर्गमानुमतिः (without a pass), कटकात्=शिबिरात् (from the camp), निष्क्रामसि = निर्गच्छसि (do you leave).

सिद्धार्थक—आर्य (Sir), कार्यस्य गौरवं कार्यगौरवं तेन कार्यगौरवेण = प्रयोजन-प्राचुर्येण (by the gravity of my mission), त्वरायितोऽस्मि=शीघ्रयुक्तोऽस्मि (I am being hastened).

भागुरायण—तत् = भवदुक्तम् (that), कार्यगौरवम्=प्रयोजनप्राचुर्यम् (important business), कीदृशम् = किम्भूतम् (what kind of), येन = कार्यगौरवेण (by which), राजशासनम् = नृपादेशम् (royal order), उल्लङ्घयसि=अतिक्रामसि (transgress).

मलयकेतु—सखे भागुरायण (friend Bhagurayan), लेखम् = पत्रम् (letter), अपनय = गृहाण (take),

भागुरायण—[सिद्धार्थकहस्तात् (from Sidharthaka's hand , पत्रम् (letter), गृहीत्वा (taking), मुद्राम् (seal), दृष्ट्वा (seeing)], कुमार (the prince), अयम् लेखः (here is the letter), राक्षसनामाङ्किता (bears the name of Rakshasa), इयम् (this), मुद्रा (the seal).

मलयकेतु—मुद्राम् (the seal), परिपालयन् = मरक्षन् (preserving), उद्घाट्य (open the letter), दर्शय (show it),

भागुरायण—[Bhagurayan, तथा कृत्वा (does so), दर्शयति=show him)].

मलयकेतु—[वाचयति (Reads)], स्वस्ति = कल्याणार्थकमव्ययम् (May good result , स्थानमनतिक्रम्य यथास्थानम् (in the right place), कुतोऽपि = कस्माद-पि स्थानात् (from somewhere), कोऽपि कश्चिदपि जन (some body), कमपि पुरुषविशेषम् जनम् (some important person), अवगमयति = विज्ञापयति (informs), अस्माकम् विरुद्धोऽस्मद्विपक्षस्तमस्मद्विपक्षम्=मम विद्वेषिणम् (our enemy), निराकृत्य=निष्कास्य (in dismissing , सत्यवादिना=तथ्यवचनेन (by your truthfulness), कापि = लोकोत्तरा (an indescribable), सत्यता=सत्यपालन-

सत्यवादिना। साम्प्रतमेतेषामपि प्रथममुपन्यस्तसधीनामस्मत्सुहृदां पूर्वप्रतिज्ञातसंधिपरिपणनप्रोत्साहनेन सत्यसंध प्रीतिमुत्पादयितुमर्हति। एतेऽप्येवमनुगृहीता सन्त स्वाश्रयविनाशेनोपकारिणमाश्रयिष्यन्ति। अविस्मृतमेतत्सत्यवत स्मारयाम। एतेषां मध्ये केचिदरेः कोषदण्डाभ्यामर्थिनः केचिद्विषयेणेति। अलंकारत्रयं च सत्यवता यदनुप्रेषितं तदुपगतम्। मयापि लेखस्याशून्यार्थं किंचिदनुप्रेषितं तदुपगमनीयम्। वाचिकं चाप्ततमादस्माच्छ्रोतव्यमिति।

कर्तृता (truthfulness), दर्शिता = प्रकटिता (has shown), साम्प्रतम् = इदानीम् (now), प्रथमम् = प्राक् (before), उपन्यस्त =कृत सन्धिर्भवता सह सम्मेलनम् यैस्ते उपन्यस्तसन्धयस्तेषामुपन्यस्तसन्धीनाम् भवता सह कृतसम्मेलनानाम् (with whom an alliance has already been proposed), एतेषाम् (to these), अस्म सुहृदाम् = अस्मन्मित्राणाम् (our friends), पूर्वम् प्रतिज्ञात पूर्वप्रतिज्ञात स चासौसन्धि पूर्वप्रतिज्ञातसन्धिस्तस्य परिपण प्रतिदानभूतम् यद् वस्तु तस्य प्रतिपादनम् तेन प्रोत्साहनम् तेन पूर्वप्रतिज्ञातसन्धिपरिपणवस्तुप्रतिपादनप्रोत्साहनेन= प्राक् प्रतिश्रुतसम्मेलनप्रतिदानभूतवस्तुप्रदानाश्वासनेन (with the gift of the already stipulated exchange for the alliance), सत्या सन्धा यस्य स सत्यसन्ध = सत्यप्रतिज्ञ (true to your promise), प्रीतिम् = हर्षम् (pleasure), उत्पादयितुम्=जनयितुम् (to give), अर्हति=योग्यो भवति (will be pleased), एते = कौतूहलप्रभृतय (these), एवम् = युक्तयुक्त्या (like this), अनुगृहीता = अनुकम्पिता सन्त (favoured), स्वाश्रयविनाशेन=निजावलम्बविघातेन (after destroying their present master), उपकारिणम् = भवन्तम् (benefactor), आश्रयिष्यन्ति = आराधयिष्यन्ति (will come over), अविस्मृतम् (has not been forgotten), एतत्सत्यवत (this truthful), स्मारयाम = स्मृतिपथ प्रापयामो वयम् (we remind) एतेषाम् मध्ये (of these), केचिदरे =कियन्त शत्रो (some of the enemies), कोषदण्डाभ्यामर्थिन =धनसमूहदन्तिभ्याम् धनवन्त (desire the treasure and elephants), केचिद्विषयेण (and others his territory), अलङ्कारत्रयम् = त्रीणि भूषणानि (the three ornaments), सत्यवता सत्यवादिना (by the truthful one), यदनुप्रेषितम् = मदन्तिके प्रहितम् (that were sent), तदुपगतम् = प्राप्तम् (were recieved), मयापि (I also), लेखस्य = पत्रिकाया (to the letter), अशून्यार्थम् = अतिरिक्तार्थम् (as in accompaniment), किंचिदनुप्रेषितम् = किमपि वस्तु अनुप्रहितम् (have sent something) तदुपगमनीयम् = तत् प्रापणीयम् (should be accepted), वाचिकम् च = मदुक्तसन्देशवचनञ्च (the verbal message), अस्मात्=सिद्धार्थकात् (from this), आप्ततमात् = अतिविश्वासभाजनात् (most trustworthy person), श्रोतव्यम् = आकर्णितव्यम् (should be heard)

हिन्दी—भागुरायण—भद्र, तो फिर, बिना अनुमतिपत्र प्राप्त किए ही शिविर से क्यों निकल रहे थे?

सिद्धार्थक—आर्य, कार्य की गुरुता के कारण ही मैंने शीघ्रता की है।

भागुरायण—कार्य की वह कैसी गुरुता है जिसने राजा की आज्ञा का भी उल्लंघन करवा दी।

मलयकेतु—मित्र भागुरायण! यह पत्र लेलो।

भागुरायण—(सिद्धार्थक के हाथ से पत्र लेकर तथा उस पर लगी मुहर को देखकर) कुमार, यह लेख है, इस पर लगी मुहर राक्षस के नाम से अंकित है।

मलयकेतु—मुहर बचाते हुए पत्र खोलकर दिखलाओ।

(भागुरायण वैसा करके दिखलाता है)

मलयकेतु— पढ़ता है। "कल्याण हो, किसी स्थान से कोई भी किसी भी पुरुषविशेष को यथास्थान सूचित कर रहा है—हमारे प्रतिपक्षी को पदच्युत करते हुए आपने विलक्षण सत्यता प्रमाणित कर दी है अब पूर्वप्रस्तावित सन्धि वाले हमारे मित्रों को, पूर्व प्रतिज्ञात सन्धि की शर्तों के प्रोत्साहन से सत्यप्रतिज्ञ आप प्रेम बढ़ावें। इस प्रकार शर्तों की पूर्ति से अनुगृहीत होते हुए ये हमारे मित्र अपने वर्तमान आश्रय के विनष्ट हो जाने पर, उपकार करने वाले आपका आश्रय ग्रहण करेंगे। आप सत्यवादी हैं—आपको सब कुछ याद होगा ही, फिर भी हम स्मरण दिला रहे हैं। इनमें से कुछ शत्रु के कोश और हाथियों के इच्छुक हैं और कुछ उनका राज्य चाहेंगे। आपने जो तीन अलंकार भेजे थे—मुझे मिल चुके हैं। इस पत्र के साथ मैं भी कुछ उपहारस्वरूप भेज रहा हूं, जिसे आप स्वीकृत कर लेंगे। कुछ मौखिक सन्देश भी है जिसे आप मेरे इस विश्वस्त पुरुष से सुन लेंगे"।

English—*Bhagurayan*—Good man, why then do you go out of the camp without pass ?

Siddharthaka—Noble Sir, I am being hastened by the gravity of my work.

Bhagurayan—What sort of gravity of work is that makes you transgress the royal order ?

Malayaketu—Friend Bhagurayan take the letter from him.

Bhagurayan—(Taking the letter from Siddharthaka's hand and noticing the seal) Prince, here is the letter. The seal is marked by the name of Rakshasa.

Malayaketu—Show me having opened this letter preserving the seal.

Bhagurayan—(Does accordingly and shows the letter to the prince).

Malayaketu—(Reads) "May good result. After compliments some body from somewhere informs a certain personage in the proper place. Great integrity is shown by your indescribable truthfulness by dismissing our enemy. Now the truthfulone will be pleased to give pleasure to these our friends by encouragement regarding the

मलयकेतुः—भागुरायण, कीदृशो लेख' ।

भागुरायणः—भद्र सिद्धार्थक, कस्याय लेखः ।

सिद्धार्थकः—अज्ज, ण आणामि । (आर्य, न जानामि ।)

भागुरायण—हे धूत, लेखो नीयते न ज्ञायते कस्यायमिति । सर्वं तावत्तिष्ठतु । वाचिक त्वत्त' केन श्रोतव्यम् ।

सिद्धार्थक—(भयं नाटयन् ।) तुम्हेहिं—(युष्माभि.–)

भागुरायणः—किमस्माभिः ।

सिद्धार्थकः—मिस्सेहि गिहीदो ण आणामि कि भणामि त्ति । (मिश्रैर्गृहीतो न जानामि किं भणामीति ।)

---

already promised price for the peace and also to whom peace was previously suggested These on their part, when thus favoured, will come over to their benefactor by the ruin of their present master. Though not forgotten by the truthful you, we remind that among these, some are tempted by the treasure and elephants of the enemy and some desire his territory The three ornaments that were sent by the truthful one were received I have also sent something as in accompaniment to the letter is forwarded, it deserves to be accepted The verbal message should be heard from this most trusted person"

विमला

व्याख्या—मलयकेतु—भागुरायण (Bhagurayan), कीदृश = किंविषयक (what sort), लेख = पत्रम् (letter),

भागुरायण—भद्र=कल्याणिन् (Good man), सिद्धार्थक (Siddharthaka), कस्य = पुरुषस्य (whose), अय लेख. = पत्रम् (is the lettter)

सिद्धार्थक—आर्य (Noble sir), न जानामि = नावगच्छामि (I do not know)

भागुरायण—हे धूर्त = हे शठ (O knave), लेखो नीयते = पत्र स्थानान्तर प्राप्यते (carry the letter), न ज्ञायते = नावगम्यते (and do not know), कस्यायमिति=केन लिखितमिति (whose it is), सर्वम् = उत्तरप्रत्युत्तरवचनम् (all), तावत्तिष्ठतु = मास्तु (let other things), त्वत्त = भवत (your), वाचिकम् = मौखिकम् (oral message), केन (by whom), श्रोतव्यम् = आकर्णितव्यम् (is to be heard)

सिद्धार्थक—[भय नाटयन् = साध्वस अभिनयन् (showing fear)], युष्माभि (By you)

भागुरायण—किमस्माभि (What by us)

सिद्धार्थक—मिश्रै = पूज्यै (By noble sir), गृहीत = संयत (arrested), न जानामि (I do not know), किं भणामि (what I should say),

भागुरायणः—(सरोषम् ।) एष जानाति । भासुरक, बहिर्नीत्वा तावत्ताड्यतां यावत्कथयति ।

पुरुषः—जं अमच्चो आणवेदि त्ति । (तेन सह निष्क्रम्य ।) (यदमात्य आज्ञापयतीति ।)

भागुरायण—[सरोषम्=सकोपम् (angrily)], एष जानाति=अयम् वेत्ति (shall know presently) भासुरक (Bhasuraka), बहिर्नीत्वा=बाह्यप्रदेश प्रापय्य (taking him outside), तावत्ताड्यताम्=तावत्कालपर्यन्तमाहन्यताम् (beat him till), यावत्कथयति=यावत्कालपर्यन्त वृत्तं निवेदितम् भवेत् (till he confesses)

पुरुष—यदमात्य=सचिव (as the miniser), आज्ञापयति=आदिशति (commands), निष्क्रान्तः (Exit).

हिन्दी—**मलयकेतु**—भागुरायण, यह कैसा लेख है ?

भागुरायण—भद्र सिद्धार्थक यह किसका लेख है ?

सिद्धार्थक—आर्य, मैं नहीं जानता ।

भागुरायण—धूर्त, पत्र लिए फिरता है, पर पता नहीं जानता कि यह किसका है ? छोड़ो, मौखिक सन्देश किसे सुनाना था ?

सिद्धार्थक—(भय का अभिनय करते हुए) आपको ।

भागुरायण—हमें सुनाना था ?

सिद्धार्थक—श्रीमान् के द्वारा मैं पकड़ा गया हूँ—क्या कह रहा हूँ—यह नहीं जानता हूँ !

भागुरायण—(क्रोध के साथ) अभी जानोगे । भासुरक, इसे बाहर ले जाकर तब तक पीटो जबतक सब कुछ बतला न दे ।

पुरुष—अमात्य की जैसी आज्ञा । (उसके साथ बाहर निकल कर)

English—*Malayaketu*—What sort of a letter is this ?

Bhagurayan—Gentle Siddharthaka, whose letter is this ?

Siddharthaka—Sir, I do not know.

Bhagurayan—You knave, the letter is being carried, but do not know whose it is ? Let it go, by whom is to be heard your oral message ?

Siddharthaka—(acting fright) By you.

Bhagurayan—By us what ?

Siddharthaka—I am arrested by noble sir, I do not know, what I should say ?

Bhagurayan—(Angrily) you will know it soon. Bhasuraka, take him out and beat him till he confesses.

Man—As the minister commands (going out with him).

(पुनः प्रविश्य ।) अज्ज, इअं मुद्दालञ्छिदा पेडिआ तस्स कक्खादो णिवडिदा । (आर्य, इयं मुद्रालाञ्छिता पेटिका तस्य कक्षातो निपतिता ।)

भागुरायणः—(विलोक्य ।) कुमार, इयमपि राक्षसमुद्राङ्कितैव ।

मलयकेतुः—सखे, अयं लेखस्याशून्यार्थो भविष्यति । इमामपि मुद्रां परिपालयन्नुद्घाट्य दर्शय ।

(भागुरायणस्तथा कृत्वा दर्शयति ।)

मलयकेतुः—(विलोक्य ।) अये, तदिदमाभरणं मया स्वशरीरादवतार्य राक्षसाय प्रेषितम् । व्यक्तं चन्द्रगुप्तस्य लेखः ।

भागुरायणः—कुमार, एष निर्णीयत एव संशयः । भद्र, पुनरपि ताड्यताम् ।

पुरुषः—तथा । (इति निष्क्रम्य सिद्धार्थकेन सह पुनः प्रविश्य ।) एसो

विमला

[पुनः प्रविश्य (coming back again)], आर्य (Noble sir), इयम् = एषा (this), मुद्रालाञ्छिता = मुद्राचिह्निता (marked with seal), पेटिका = मञ्जूषा (box), तस्य = ताड्यमानपुरुषस्य (his), कक्षतः = भुजमूलात् (from armpit), निपतिता = स्खलिता (dropped)

व्याख्या—भागुरायणः—[विलोक्य = अवलोक्य (observing)], कुमार (The prince), इयमपि = एषाऽपि (this too), राक्षसमुद्राङ्कितैव = राक्षसाङ्गुलिमुद्राचिह्नितैव (stamped with Rakshasa's seal).

मलयकेतुः—सखे = मित्र (friend), अयम् लेखः = एतत् पत्रम् (this letter), अशून्यार्थः = अरिक्तार्थः (the present accompanying), भविष्यति (must be), इमामपि = एतामपि (this too), मुद्राम् = राक्षसाङ्गुलिमुद्राम् (Rakshasa's seal), परिपालयन् = यथा व्याघातो न स्यात्तथा सरक्षन् (preserving), उद्घाट्य = उन्मुच्य (open), दर्शय = अवलोकय (show it),

[भागुरायणः (Bhagurayana तथा कृत्वा = does accordingly), दर्शयति (shows)].

मलयकेतुः—[विलोक्य=दृष्ट्वा (observing)], अये=कामलापे सम्बोधनमिदम् (ah !, तदिदम् (this), आभरणम्=आभूषणम् (ornaments), यन्मया (which I), स्वशरीरात्=निजगात्रात् (from my body), अवतार्य=पृथक्कृत्य (was taken off), राक्षसाय (for Rakshasa), प्रेषितम्=प्रहितम् (has sent), व्यक्तम्=स्पष्टम् (clearly), चन्द्रगुप्तस्य=मौर्यस्य (Chandragupta's), लेखः= पत्रम् (letter is)

भागुरायणः—कुमारः (The prince), एषः=असौ (this), निर्णीयत एव = निश्चीयत एव (is being confirmed), संशयः (doubt), भद्र = कल्याणिन् (good man), पुनरपि (again), ताड्यताम् (beat him)

पुरुषः—तथा (as your order), [इति निष्क्रम्य=बहिर्गत्वा (come out), सिद्धार्थकेन सह (with Siddharthaka), पुनः=(again), प्रविश्य (entering), एषः=असौ

क्खु ताडिअमाणो कुमारस्स एव्व णिवेदेमि त्ति भणादि । (एष खलु ताड्यमानः कुमारस्यैव निवेदयामीति भणति ।)

मलयकेतुः—तथा भवतु ।

सिद्धार्थकः—(पादयोर्निपत्य ।) अभएण मे पसादं करेदु अज्जो । (अभयेन मे प्रसादं करोत्वार्य ।)

(this) ताड्यमान=हन्यमान (being punished), कुमारस्यैव (to the prince alone) निवेदयामि (I will say), भणति=कथयति (speaks).

हिन्दी— (फिर उसके साथ लौटकर) आर्य, मुद्राङ्कित यह पेटी भी पिटते हुए इसके बगल से गिरी है ।

भागुरायण—(देखकर) कुमार इस पर भी राक्षस की मुहर लगी है ।

मलयकेतु—पत्र का तात्पर्य अब स्पष्ट हो जावेगा । मुहर की रक्षा करते हुए इसे खोल कर दिखाओ ।

(उसी प्रकार सावधानी से खोलकर दिखाते हुए)

मलयकेतु—(देखकर) ओह, यह तो वही आभूषण है, जिन्हें मैंने अपनी देह से उतार कर राक्षस को भेजा था । तो निश्चय है कि यह पत्र चन्द्रगुप्त को लिखा है ।

भागुरायण—कुमार, इस सन्देह का तो अभी निर्णय हो जाता है । भद्र और भी पीटो ।

पुरुष—जो आज्ञा (जाकर फिर सिद्धार्थक के साथ लौटकर) मार खाने पर कहता है कि कुमार को ही बतला दूँगा ।

English—(re-entering with him) Sir, this box marked with a seal has dropped from his arm-pit, as he was being beaten.

Bhagurayana—(Observing) Prince, this too is stamped with Rakshasa's seal

Malayaketu—Friend, this must be the present accompanying the letter Open it also preserving the seal and show it.

(Does according and shows it)

Malayaketu—(Seeing it) Ah, these are the jewelleries which I took off from my own body and sent to Rakshasa. Clearly the letter is Chandragupta's.

Bhagurayan—Prince, doubt is being confirmed, gentleman let him be punished again.

Man—So be it (going out and coming back with him) Being beaten he says—he will confess the all to the prince alone.

टिप्पणी

व्याख्या—मलयकेतु—तथा भवतु (let him do so).

सिद्धार्थक—[पादयोर्निपत्य=(falling on his feet)], आर्य=श्रीमन् (Noble sir), अभयेन=अभयदानेन (by granting amnesty), मे=मम (me), प्रसादं करोतु (may favour)

मलयकेतुः—भद्र, अभयमेव परवतो जनस्य। निवेद्यता यथावस्थितम्।

सिद्धार्थकः—णिसामेदु कुमारो। अह क्खु अमच्चरक्खसेण इम लेह देइअ चन्दउत्तसआस पेसिदो। (निशामयतु कुमार। अह खल्वमात्यराक्षसेनेम लेख दत्त्वा चन्द्रगुप्तसकाश प्रेषित।)

मलयकेतुः—वाचिकमिदानीं श्रोतुमिच्छामि।

सिद्धार्थकः—कुमाल, आदिट्ठोम्हि अमच्चेण जहा एदे मह वअस्सा पञ्च

मलयकेतु—भद्र=कल्याणिन् (Gentleman) परवत जनस्य=अन्याधीनलोकस्य (A dependent person), अभयमेव नास्ति साध्वस किञ्चित् (is always exempt from punishment), यथावस्थितम्=याथार्थ्येन सर्ववृत्तम् (every thing as it happend), निवेद्यताम्=अभिधीयताम् (tell),

सिद्धार्थक—कुमार (The prince), निशामयतु=शृणोतु (let listen), अहम् (I) खलु वाक्यालङ्कारे प्रयुक्त अमात्यराक्षसेन=राक्षसनाम्ना मन्त्रिणा (the minister Rakshasa), इमम् लेखम्=पत्रम् (this letter), दत्त्वा=समर्प्य (was given), चन्द्रगुप्तसकाशम्=मौर्यसन्निधिम् (to verbal message), श्रोतुम्=आकर्णितुम् (to hear), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish)

हिन्दी—मलयकेतु—वैसा ही हो।

सिद्धार्थक—(चरणों में गिरकर) आर्य, पहले मुझे अभयदान दे दें।

मलयकेतु—भद्र, विवश व्यक्ति को सदैव अभयदान ही दिया जाता है। ठीक ठीक बतलाओ।

सिद्धार्थक—सुनिये कुमार, अमात्य राक्षस ने यह पत्र देकर मुझे चन्द्रगुप्त के यहाँ भेजा था।

मलयकेतु—अब मैं मौखिक संदेश सुनना चाहता हूँ।

English—*Malayaketu*—Be it so

Siddharthaka—(falling at his feet) Noble Sir, May favour me by granting me impunity

Malayaketu—Gentleman ! a dependent has always impunity Tell every thing as it happened

Siddharthaka—Let the prince listen I was really given this letter by the minister Rakshasa and sent to Chandragupta

Malayaketu—Now, I want to hear the verbal message

टिप्पणी—(१) भयस्य अभाव अभयम् तन अभयेन—अव्ययीभाव। स शय्यते असौ इति मशय —सम्+शीङ्+कर्म में अच्।

विमला

व्याख्या—सिद्धार्थक—कुमार (the prince), अमात्येन=मन्त्रिणा (by the minister), आदिष्टोऽस्मि=सन्देशवचनं अभिहितोऽस्मि (I was instructed), यथा=यत् (that) एते=इमे (these), मम वयस्याः=मम मित्राणि (my friends),

राआणो तुए सह समुप्पण्णसिणेहा। ते जहा कुलूदाहिवो चित्तवम्मो मलअणराहिवो सिंहणादो कम्हीरदेसणाहो पुक्खरक्खो सिन्धुराओ सिन्धुसेणो पारसीओ मेहणादो त्ति। एदेसु पुढमगिहीदा तिण्णि राआणो मलअकेदुणो विसअं इच्छन्ति अवरे हत्थिबलं कोसं अ। ता जह चाणक्कं णिराकरिअ महाभाएण मह पीदी समुप्पादिदा तहा एदाण पि पुढमभणिदो अत्थो सम्पादइदव्वो त्ति एत्तिओ वाआसन्देसो। (कुमार, आदिष्टोऽस्म्यमात्येन यथैते मम वयस्याः पञ्च राजानस्त्वया सह समुत्पन्नस्नेहाः। ते यथा कुलूताधिपश्चित्रवर्मा, मलयनगराधिपः सिंहनादः, काश्मीरदेशनाथः पुष्कराक्षः, सिन्धुराजः सिन्धुसेनः, पारसीको मेघनादः इति। एतेषु प्रथमगृहीतास्त्रयो राजानो मलयकेतोर्विषयमिच्छन्त्यपरौ हस्तिबलं कोषं च। तद्यथा चाणक्यं निराकृत्य महाभागेन मम प्रीतिः समुत्पादिता तथैतेषामपि प्रथमभणितोऽर्थः सम्पादयितव्य इत्येतावान् वाक्सन्देशः।)

पञ्चराजान = पञ्चसंख्यकाः नृपतयः (five princes), त्वया सह = भवता सार्द्धम् (with you), समुत्पन्नस्नेहाः=सञ्जातसौहार्दाः (feel affection for you), ते यथा (they are), कुलूताधिपश्चित्रवर्मा (Chitraverman, the Chief of the Kulutacountry), मलयनगराधिपः सिंहनादः (Sinhanada, lord of the city of Malaya), काश्मीरदेशनाथः पुष्कराक्षः (Pushkaraksha, king of Kashmir), सिन्धुराजः सिन्धुसेनः (Sindhusena, sovereign of Sindh), पारसीको मेघनाद इति (and Meghnada of Persia), एतेषु = परिगणितेषु (of these), प्रथमगृहीताः=प्राक् भणिताः (the first mentioned), त्रयो राजानः=नृपतयः (three kings), मलयकेतोर्विषयम्=पर्वतकसुतस्य राज्यम् (the dominion of Malayaketu), इच्छन्ति=वाञ्छन्ति (desire), अपरौ=अन्यौ द्वौ (other two), हस्तिबलम्=गजसैन्यम् (force of elephants), च=पुनः (and), कोषम्=द्रव्यगृहम् (treasure), तत्=तस्मात् (so), यथा=येन प्रकारेण (just as), चाणक्यम्=कौटिल्यम् (Chanakya), निराकृत्य=निष्कास्य (by discarding), महाभागेन=महाराजेन (the magnanimous one), मम प्रीतिः=प्रणयः (my pleasure), समुत्पादिता (has been caused), तथा (so), एतेषामपि=राज्ञाम् (these also the object named above), प्रथमभणितोऽर्थः=प्रागुक्तकार्यम् (the first mentioned work), सम्पादयितव्यः=संघटितव्यः (should granting them), इत्येतावान् वाक्सन्देशः (this much is oral message)

हिन्दी—सिद्धार्थक—कुमार, अमात्य राक्षस ने मेरे द्वारा सन्देश भेजा है कि मेरे ये पाँच राजा तुम्हारे साथ स्नेह करने वाले हैं। इनके नाम हैं—कुलूत का अधिपति चित्रवर्मा, मलय का सिंहनाद, कश्मीर का पुष्कराक्ष, सिन्ध देश का नरपति सिन्धुसेन और फारस देश का राजा मेघनाद। इनमें प्रथम गिनाये गये तीन राजा मलयकेतु का राज्य चाहते हैं। शेष दो मलयकेतु के हस्तिबल एवं कोश चाहते हैं। तो जिस प्रकार चाणक्य को पदच्युत

मलयकेतु—(स्वगतम् ।) कथ चित्रवर्मादयोऽपि मह्यमभिद्रुह्यन्ति । अथवाऽत एव राक्षसे निरतिशया प्रीति । (प्रकाशम् ।) विजये, राक्षस द्रष्टुमिच्छामि ।

प्रतीहारी—ज कुमारो आणवेदि त्ति । (निष्क्रान्ता ।)

(तत प्रविशत्यासनस्थ स्वभवनगत पुरुषेण सह सचिन्तो राक्षस ।)

राक्षस —(आत्मगतम् ।) पूर्णमस्मद्बल चन्द्रगुप्तबलैरिति यत्सत्य न मे मनस परिशुद्धिरस्ति । कुत —

कर महाभाग ने मेरी प्रीति बढाई है—उसी प्रकार इनका भी कहा गया प्रयोजन पूरा करना चाहिए—बस मात्र इतना ही है मौखिक सदेश ।

English—*Sidharthaka*—Prince, I was instructed by the minister Rakshasa—"My five friends, these princes have friendliness grown towards you They are Chitravarma, the chief of the Kuluta country, Sinhanada, lord of the city of Malaya, Puskaraksha, King of Kas mirı, Sindhusena, sovereign of Sindh and Meghnada of Persia. Of these the first stated three kings wish the dominion of Malayaketu and the last two his force of elephants and treasure So just as the magnanimous one delighted me by discarding Chanakya, in the same way the odject of these also named above should be pleased by granting them the aforesaid things, this much is the verbal message

विमला

व्याख्या—मलयकेतु —[स्वगतम्=आत्मगतम् (To him s*lf)] कथम्=केन प्रकारेण (how so), चित्रवर्मादयोऽपि (Chitraverma and others), मामभिद्रुह्यन्ति = जिघांसन्ति (conspire against m*), अथवा=किंवा (or), अतएव (for this reason), राक्षस (for Rakshasa), निरतिशया=निर्गतोऽतिशयो यस्या सा निरतिशया=अधिका (excessive), प्रीति =प्रणय (love), [प्रकाशम्= (Aloud)], विजये (Vijaya), अमात्यराक्षसम् (to the minister Rakshasa), द्रष्टुम्=अवलोकितुम् (to see), इच्छामि=वाञ्छामि (wish)

प्रतीहारी—यत् (As) कुमार (the prince), आज्ञापयति=आदिशति (commands), [तत =(then) प्रविशति=enter, आसनस्थ =seated स्वभवनगत = निजगृहवर्ती (in his mansion), पुरुषेण सह (with an attendant) सचिन्त = सखेद (full of anxious thoughts)]

राक्षस —[आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself)] अस्मद्बलम् (our army), चन्द्रगुप्तबले =मौर्यसैन्यैः (with Chandragupta's warriors), पूर्णम् (is filled), यत्सत्यम्=याथार्थ्येन (since really), मे=मम (my), मनस= हृदयस्य (mind), शुद्धि =असंदिग्धत्वम् नास्ति (is not at ease), कुत=for —

साध्ये निश्चितमन्वयेन घटितं बिभ्रत्सपक्षे स्थितिं
व्यावृत्तं च विपक्षतो भवति यत्तत्साधनं सिद्धये।
यत्साध्यं स्वयमेव तुल्यमुभयोः पक्षे विरुद्धं च यत्
तस्याङ्गीकरणेन वादिन इव स्यात्स्वामिनो निग्रहः ॥ १० ॥

हिन्दी—मलयकेतु—(अपने आप) क्या चित्रवर्मा प्रभृति भी मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रचते हैं। अथवा—इसीलिए राक्षस के प्रति उनका इतना गहरा प्रेम है। (प्रकट) विजये, मैं राक्षस को देखना चाहता हूँ।

प्रतीहारी—कुमार की जैसी आज्ञा (बाहर निकल गया)

(इसके बाद अपने भवन में स्थित एक पुरुष के साथ आसन पर बैठा हुआ चिन्तित मुद्रा में राक्षस का प्रवेश)

राक्षस—(अपने आप) हमारी सेना चन्द्रगुप्त के सैनिकों से भरी है। अतः सचमुच मेरे मन को शान्ति नहीं है। क्योंकि—

English—*Malayaketu*—(To himself) How so, Chitraverma and others also conspire against me : or why ? This is the reason of their excessive love for Rakshasa (Aloud) Vijaya, I wish to see Rakshasa.

Warder—As the prince commands (Exit).

(Then enter Raksnasa in his mansion with an attendant seated, full of anxious thoughts).

Rakshasa—(To himself) My mind is not really at ease since our army is filled with Chandragupta's warriors) for.

निमला

अन्वयः—यत्, साधनम्, साध्ये, निश्चितम्, सपक्षे, स्थितिम्, बिभ्रत्, अन्वयेन, घटितम्, विपक्षतः, च, व्यावृत्तम्, तत्, सिद्धये, भवति। यत्, स्वयम्, एव, साध्यम्, उभयोः, तुल्यम्, यत्, च, पक्षे, विरुद्धम्, तस्य, अङ्गीकरणेन, स्वामिनः, इव, वादिनः, निग्रहः, स्यात् ॥ १० ॥

वादिनः पक्षे—

व्याख्या—यत् = धूमादिरूपम् अव्ययम् (meaning really), साधनम् = धूमादिरूपम् (middle term smoke), साध्ये = निर्दिविषयत्मुते वह्न्यादौ (the predicate in the conclusion), निश्चितम् = असंदिग्धम् (undoubtedly present), सपक्षे = सन्दिग्धसाध्यके पर्वतादौ (a corroborative instance on the same side), स्थितिम् = सत्ताम् (appearing), बिभ्रत् = धारयत् (possesses), अन्वयेन = अन्वयव्याप्त्या (through succession), घटितम् = युक्तम् (attended), च = पुनः (and), विपक्षतः = साध्याभावाधिकरणात् जलह्रदादेः (by the absence of the smokiness साध्यधर्मः), व्यावृत्तम् = तत्राप्रवृत्तोऽर्थः (excluded from विपक्षः), तत् साधनम् धूमादि रूपहेतुः (that smoke), सिद्धये = वह्न्यनुमानाय

भवति (eastablishment of the proposition), यत्=साधनम् हेतु (such a thing), स्वयमेव (itself), साध्यम्=हेत्वन्तरेणानुमेयम् (can not be used as a reason in a proof), उभयो =सपक्षपरपक्षयोः पर्वतजलह्रदाद्योरित्यर्थः, (both sides), उभय=refers to सपक्ष and विपक्ष), तुल्यम् =समम् (equally), (A reason equally true of both sides leads to no reference), यत्= अनुमानम् (inference), च=पुन (and), पक्षे=निश्चितसाध्यवति पर्वतादौ (in the minor term), विरुद्धम् =साध्यासमानाधिकरण्यविशिष्टम् (incompatible), तस्य=तादृशस्य त्रिविधस्य (like so), अङ्गीकरणेन=अभ्युपगमेन (with assumption), स्वामिन =प्रभो. (of the king), इव=यथा (like), वादिन.= असदर्थकरणेन विजयमाकाङ्क्षतो जनस्य (disputant), निग्रहः=पराजयः, स्यात्= भवेत् (in case of वादिनः however निग्रहः is the technical name for a contradiction of what is to be proved (विप्रतिपत्ति) and also for inclusion (अप्रतिपत्ति) leading to no reference.) ॥ १० ॥

स्वामिपक्षे—

व्याख्या—यत्=सत्यम् (really), साधनम्=सैन्यरूपम् (army), साध्ये= शत्रुविनाशनात्मके कार्ये (the work undertaken), निश्चितम्=निश्चितशक्तिकम् (selected), सपक्षे=सहाये (on the same side with the army), स्थितम्= अवस्थानमानुकूल्यम् बिभ्रत्=धारयत् (siding with the king), अन्वयेन= वंशेन (family), घटितम्=लब्धम् (attained), विपक्षत.=रिपुपक्षात् (from enemy's side), च=पुन. (and), व्यावृत्तम्=विरक्तम् (averse to the enemy), तत्=तादृशम् साधनम् सैन्यादिरूपम् (that army), सिद्धये=कार्य- सम्पादनाय शत्रुविघाताय भवतीति शेष. (for success), यत्=सैन्यम् (an army), स्वयमेव साध्यम्=भीत्यादिप्रदर्शनद्वारा आत्मसात्करणीयम् न तु वशपरम्परया (an army seeks its own interest), उभयो =स्वामितत्प्रतिपक्षयोः तुल्यम्= समानम् (an army is equally with a leaning to both sides), यत्= सैन्यम् (an army), च=पुन. (and), पक्षे=स्वामिवर्गे (in the side of the king), विरुद्धम्=विपरीतम् (inimical), तस्य=तादृशस्य सैन्यस्य (like such army), अङ्गीकरणेन=स्वीकारेण (incorporation with one's standing army), स्वामिन =राज्ञ (of the king), इव=यथा (like), वादिन =तार्किकस्य (the disputant), निग्रह.=पराभवः (capture), स्यात्=भवेत् ॥ १० ॥

वादी पक्ष में—

हिन्दी—विवाद में वही साधन (धूमादिरूप हेतु) सिद्धि के लिए असंदिग्ध रूप से समर्थ होता है जिसका साध्य (वह्निरूपपक्ष) अन्वय व्याप्ति से विशिष्ट हो, जिसे सपक्ष (महानसादि) का समर्थन प्राप्त हो और विपक्षवृत्ति से (जलह्रदादि से) सर्वथा मुक्त हो। किन्तु वही साधन (धूमरूप) यदि साध्य से एक रूप हो—अथवा सपक्ष और विपक्ष में उभयथा प्रयोज्य हो (अर्थात् अग्न्यादि अनुमेय पदार्थ की स्थिति में संदिग्ध हो) फलतः

पक्ष में विरुद्ध रहता हो तो ऐसे हेतु के स्वीकार करने से स्वामी की तरह वादी की भी हार निश्चित होती है ॥ १० ॥

स्वामी के पक्ष में :—

युद्ध में शत्रुओं को जीतने में सेना नेता अवश्य समर्थ होती है, जो परम्परा से [illegible] हो, जिनका अन्वय निश्चित है, जो अनन्यमति से [illegible] अर्थात् आन्तरिक प्रकार से सम्बद्ध हो, जिसे विपक्षों के [illegible] हों, जो अपने [illegible] के विरोध हो। अन्यथा जो पक्ष एवं विपक्ष में समान भेद है ऐसी सेना का स्वीकार करने से [illegible] की तरह राजा की भी पराजय निश्चित है ॥ १० ॥

English—In the side of disputans :—

Which (Smoke = middle term) is undoubtedly present in the fire (proof of conclusion) which is joined with drift, which is certain in the kitchen with its presence, it is for the real sense of fire (by the middle term of smoke) separate from the ponds etc., which has not really any major term (sadhya). But where (middle term) is in itself inferable or, uncertain in the side), present equally to both sides (is different to the result)—can be joined in an affirmative proposition with both ('Sapaksha' and Vipaksha) con cedee upon it is dangerous to the King as it is to the disputant. 10.

In the side of the King :—

That middle term of army is for victory, which is undoubtedly strong to win the enemies (middle term army), which is capable of being joined in an affirmative proposition, which is totaly indifferent to the enemy and faithful to its side (king). But which (middle term army) seeks its own interest—equal to both sides—to the enemy and to the king, which is quite indifferent to its king, that king is defeated (it is dangerous for king) as a disputant. 10.

टिप्पणी—(१) अन्वयेन = अनु + इ + अच् = अन्वयस्तेन अन्वयेन अर्थात् वादीपक्ष में अन्वय व्याप्ति से, स्वामीपक्ष में—कुलपरम्परा से प्राप्त। (२) पक्षः = पक्ष्यते इति पक्षः—(१) न्यायशास्त्र में (२) मित्रपक्ष में। (३) विपक्षात्—[illegible] विपक्ष से। (४) व्यावृत्तम्—वि + आ + वृत् + क्त + [illegible]। व्यावृत्तम् अर्थात् भिन्न। (५) साधने—साध्यते अनेन इति साध + ल्युट् —(६) साधनम्—हेतु, सेना। (७) निग्रहः—नि + ग्रह + अप् भावे निग्रहः। न्यायदर्शन में इसके २२ स्थान हैं। पकड़। (८) इस श्लोक में प्रयुक्त न्यायदर्शन के [illegible] पारिभाषिक शब्द निम्नलिखित से प्रयुक्त हैं :—

साध्य, साधन, अन्वय, व्याप्ति, पक्ष एवं विपक्ष।

इस श्लोक में श्लेष से अनुप्राणित समासोक्ति अलङ्कार एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

अथवा विज्ञातापरागहेतुभिः प्राक्परिगृहीतोपजापैरापूर्णमिति न विकल्पयितुमर्हामि। (प्रकाशम् ।) भद्र प्रियंवदक, उच्यन्तामस्मद्वचनात्कुमारानुयायिनो राजानः। सम्प्रति दिने दिने प्रत्यासीदति कुसुमपुरम्। तत्परिकल्पितविभागैर्भवद्भिः प्रयाणे प्रयातव्यम्। कथमिति।

विमला

व्याख्या—अथवा = वा (or rather) विज्ञाता = अस्माभिस्तात्पर्यसूचिकेङ्गितादिभिरनुमिता (were fully ascertained) अपरागहेतवः चन्द्रगुप्तविरागकारणानि येषां ते तथोक्तास्तैः विज्ञाता अपरागहेतुभि. = अनुमितविरागकारणैः (the causes of disaffection) प्राक् = अस्मत् पक्षावलम्बनात्पूर्वम् परिगृहीतो ज्ञातोऽस्माकमुपजापो यैस्ते तथोक्तास्तैः प्राक्परिगृहीतोपजापै. = पूर्वज्ञातमस्मद्भेदं (had previously accepted our overtures), आपूर्णम् = व्याप्तम् (full of persons) विकल्पयितुम् = विकल्पम् कर्तुम् नार्हामि = न योग्योभवामि (I ought not to have any misgivings) [प्रकाशम् = सुस्पष्टम् (aloud)], भद्र = कल्याणिन् (gentle), प्रियंवदक (Priyambadaka), अस्मद्वचनात् = मदुक्त्या (in my name) कुमारानुयायिनः = कुमारानुसरणशीला. (the allies of the prince), राजान. = नृपतयः (the kings), उच्यन्ताम् = अभिधीयन्ताम् (let be told), सम्प्रति = इदानीम् (now), दिने दिने = क्षणे क्षणे (every day), कुसुमपुरम् = तन्नामनगरम् (Kusumpura), प्रत्यासीदति = निकटवर्त्ति भवतीति (is nearing), तत् = तस्मात् कारणात् (so), परिकल्पितः विभागो यैस्ते तथोक्तास्तैः परिकल्पितविभागै. = कृतसैन्यविभागैः (with divisions formed), भवद्भि. = युष्माभिः (you), प्रयाणे = रणयात्रायाम् (during march), प्रयातव्यम् = गन्तव्यम् (should proceed), कथमिति = (Do you ask) how ?

हिन्दी—अथवा-चन्द्रगुप्त के प्रति इनकी विरक्ति का कारण पहले से ही जान लिया गया है, इतना ही नहीं हमारी भेद नीति को भी इन्होंने पहले से स्वीकृत कर लिया है, इनसे हमारा सैन्यदल व्याप्त है। अत. इनपर सन्देह करना नहीं है। (सुनाकर) भद्रप्रियंवदक, हमारी ओर से कुमार के अनुयायी राजाओं से जाकर कहो कि कुसुमपुर अब दिनानुदिन समीप आता जा रहा है। अत. व्यूहरचना कर आप लोगों को विजययात्रा के लिए प्रस्थान करना चाहिए। कैसे :—

English—Or, I should not have any doubt, since our army is full of persons (Bhadrabhata etc.) who have already accepted our disclosures being fully determined after disaffection (of Chandragupta) (aloud) Gentle Priyambadaka, inform the kings, following the prince (Malayaketu), in my name that Kusumpura is being nearer and nearer day by day, they should proceed during their (victor) march in (good) divisions (Do you ask) How :—

प्रस्थातव्यं पुरस्तात्खशमगधगणैर्मामनु व्यूह्य सैन्यै-
गान्धारैर्मध्ययाने सयवनपतिभिः संविधेयः प्रयत्नः ।
पश्चात्तिष्ठन्तु वीराः शकनरपतयः संभृताश्चीनहूणैः
कौलूताद्यश्च शिष्टः पथि पथि वृणुयाद्राजलोकः कुमारम् ॥११॥

विमला

अन्वयः—पुरस्तात्, व्यूह्य, माम्, अनु, खशमगधगणैः सैन्यैः, प्रस्थातव्यम्, मध्ययाने सयवनपतिभिः, गान्धारैः, प्रयत्नः, संविधेयः, पश्चात्, चीनहूणैः, सम्भृताः, वीराः, शकनरपतयः, तिष्ठन्तु, शिष्टश्च, कौलूताद्य, राजलोकः, पथि पथि कुमारम्। वृणुयात् ॥ ११ ॥

व्याख्या—पुरस्तात् = अग्रभागे (in the van), व्यूह्य=विभागम् कृत्वा (drawing up troops in battle array), मामनु=मम पश्चात् (behind me), खशमगधगणैः= खशाश्च मगधाश्च खशमगधास्तेषां गणो येषु तानि खशमगधगणानितैः खशमगधगणैः=तेषु सैन्येषु मगधदेशीयान्तर्वर्त्ति पर्वतीया मगधदेशवासिनश्च राजानः सन्ति तादृशैः सैन्यरिति (consisting of the Khasha and Magadha), सैन्यैः=सैनिकैः (warriors), प्रस्थातव्यम्=गन्तव्यम् (should march), मध्ययाने=सैन्यमध्यगमने (the march of the central division), यवनानाम् पतयः यवनपतयस्तैः सहिताः सयवनपतयस्तैः स यवनपतिभिः=यवनपतिमहितैः (with the Yavan chief), गान्धारैः=गान्धारदेशवासिभिः सैन्यैः (*Gandhar army*), प्रयत्नः=उद्योगः, विधेयःकर्त्तव्यः (*should take care of*), पश्चात्=तद्नु (after them), चीनहूणैः=म्लेच्छविशेषैः (by the Chinese and the Hunas), सम्भृताः=सबलिताः (reinforced), वीराः=पराक्रमशालिनः (the valiant), शकनरपतयः=शकदेशीयराजानः (Saka kings), तिष्ठन्तु=प्रयान्तु (should march), शिष्टश्च=अवशिष्टश्च (and the rest of kings), कौलूताद्यः= चित्रवर्मप्रभृतिः (the king of Kuluta and others), राजलोकः=भूपवर्गः (the kings), पथि पथि=मार्ग मार्गे (at the stage of the march), कुमारम्=मलयकेतुम् (to the prince), वृणुयात्=शरीररक्षणार्थम् परितो वेष्टयेत् (should guard) 11.

हिन्दी—मेरे नेतृत्व में आगे-आगे खश तथा मगध सेनाओं के व्यूह प्रस्थान करेंगे। सेना के केन्द्र में गान्धारों तथा यवनों के राजगण जागरूक रहेंगे। पृष्ठभाग में शक, चीन तथा हूण जातियों के अधिपतिगण वीरता के साथ अग्रसर होते रहेंगे। अवशिष्ट कुलूत आदि की सेनाएँ मार्ग में कुमार की रक्षा करती चलेंगी ॥ ११ ॥

English—The warriors of Khasha and Magadha *should* march behind me in a van. The Gandhars should take care of the Yavan chiefs in the central division. The brave Saka kings with Chinese and Hunas should proceed rear. The rest of the kings—the king of Kuluta and others—should march guarding the prince in the way. (11)

टिप्पणी—इस श्लोक में स्वभावोक्ति अलङ्कार तथा स्रग्धरा छन्द है।

प्रियंवद —तह इति। (निष्क्रान्त ।) (तथेति ।)

(प्रविश्य ।)

प्रतीहारी—जेदु अमच्चो। अमच्च, इच्छदि तुम कुमारो पेक्खिदु । (जयत्वमात्य । अमात्य, इच्छति त्वा कुमार प्रेक्षितुम् ।)

राक्षस —भद्रे, मुहूर्तं तिष्ठ। क कोऽत्र भो.।

(प्रविश्य ।)

पुरुष —आणवेदु अमच्चो। (आज्ञापयत्वमात्य ।)

राक्षस —उच्यता शकटदास । यथा परिधापिता कुमारेणाभरणानि वयम्। तन्न युक्तमनलङ्कृतै कुमारदर्शनमनुभवितुम्। अतो यत्तदलंकरणत्रय क्रीत तन्मध्यादेक दीयतामिति।

पुरुष —तथा। (इति निष्क्रम्य पुन प्रविश्य।) अमच्च, इद आहरण। (अमात्य, इदमाभरणम्।)

विमला

व्याख्या—प्रियंवदक —तथा (As you command) [इति निष्क्रम्य=(Exit)], प्रविश्य (re-entering)

प्रतीहारी—अमात्य =सचिव (The minister) जयतु=विजयलभस्व (let victory) अमात्य (the minister), त्वाम् (to you), कुमार (the prince), प्रेक्षितुम् (to see), इच्छति=वाञ्छति (wishes)

राक्षस —भद्रे (Gantle woman), मुहूर्तम्=क्षणम् (a moment) तिष्ठ=स्थीयताम् (wait) क (who) कोऽत्र (here is), भो (who ho), [प्रविश्य=(entering)]

पुरुष —अमात्य (The minister) आज्ञापयतु=आज्ञा ददातु (order please)

राक्षस —उच्यताम्=कथ्यताम् (Say to), शकटदास(Shakatdas), यथा=यत् (that), वयम् (we), कुमारेण=मलयकेतुना (by the prince), आभरणम्=अलङ्करणम् (ornaments), परिधापिता =परिधारिता (has given), तत्=तस्मात् (so), न युक्तम्=असाम्प्रतम् (it is not good) इदानीं साम्प्रतम् (now), अनलङ्कृतै =अनभरण (without decoration), कुमारदर्शनम्=कुमारावलोकनम् (to see the prince), अनुभवितुम्=कर्तुम् (should enjoy) अत –अस्माद्धेतो (therefore) यत् अलङ्करणत्रयम्=त्राण्यलङ्करणानि (one of three ornaments), क्रीतम्=मूल्यदानपूर्वकमात्मसात्कृतम् (have been purchased), तन्मध्यात्=अलङ्करणत्रयमध्यात् एकम् (one of them), दीयताम्=समर्प्यताम् (let be handed over)

पुरुष —तथा (As you command), [इति निष्क्रम्य (Exit), and पुन प्रविश्य (re entering)] अमात्य (the minister), इदम्=एतत् (here is), आभरणम् (the decoration)

राक्षसः—(नाट्येनात्मानमलङ्कृत्योत्थाय च ।) भद्रे, राजोपगामिनं मार्गमादेशय ।

प्रतीहारी—एदु अमच्चो । (एत्वमात्यः ।)

राक्षसः—(आत्मगतम् ।) अधिकारपदं नाम निर्दोषस्यापि पुरुषस्य महदाशङ्कास्थानम् । कुतः—

राक्षसः—[नाट्येन = नाट्यचित्रव्यापारेण, अवलोक्य = दृष्ट्वा (gesticulating), आत्मनम् (his), अलंकृत्य = भूषयित्वा (putting on the decoration) च = and. उत्थाय (rising)], भद्रे (Gentlewoman), राजोपगामिनम् = नृपसमीपप्रापकम् (leading to the king), मार्गम् = पन्थानम् (way), आदेशय = दर्शय (show me).

प्रतीहारी—अमात्यः = सचिवः (The minister). एतु (come).

राक्षसः—[आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)], कार्ये नियोजनम् अधिकारः स पदम् स्थानम् अधिकारपदम् दासत्वम् (A post of authority). निर्दोषस्यापि = निरागसोऽपि (even to an innocent), पुरुषस्य = जनस्य (of the man), महदाशङ्कास्थानम्=परमभयकारणम् (is a source of great), (apprehension), कुतः=For—

हिन्दी—प्रियंवदक—जैसी आज्ञा (निकल गया) (प्रवेश करके) ।

प्रतीहारी—अमात्य की जय हो । अमात्य कुमार आपको देखना चाहते हैं ।

राक्षस—शकटदास ने कहा कि स्वयं कुमार ने इन्हें आभूषण पहनाने थे । अतः आभूषणरहित कुमार के दर्शन उचित नहीं है । अतः वे जो तीन आभूषण खरीदे गये थे, उनमें से एक मुझ दो ।

पुरुष—जो आज्ञा (निकलकर पुनः प्रवेश कर) अमात्य यह आभूषण है ।

राक्षस—(*अभिनयपूर्वक अपने आपको अलङ्कृत कर और उठकर*) भद्रे, राजा के पास जाने वाले रास्ते को बतलाओ ।

प्रतीहारी—अमात्य इधर से आइए ।

राक्षस—(अपने आप) अधिकार युक्त पद निर्दोष पुरुष के हृदय में भी आशङ्का उत्पन्न कर देता है । क्योंकि :—

Egnilsh—*Priyambadaka*—As you command. (Exit)

(Entering)

Warder—Let victory to the minister. Minister the prince wants to see you.

Rakshasa—Gentle woman, Wait a moment, Holla, who is here, who is ?

(Entering)

Man—Let your command, minister.

भयं तावत्सेव्यादभिनिविशते सेवकजनं
ततः प्रत्यासन्नाद्भवति हृदये चैव निहितम् ।
ततोऽध्यारूढानां पदमसुजनद्वेषजननं
गतिः सोच्छ्रायाणां पतनमनुकूलं कलयति ॥ १२ ॥

Rakshasa—Let Shakatdas be known—As the prince has given me ornaments, therefore, handover me one of the bought three jewelleries.

Man—As your command. (Exiting and re-entering) Minister it is the ornaments.

Rakshasa—(Decorating himself with gesticulating and rising) Gentle woman, lead the way to the prince.

Warder—Minisrer, come this way.

Rakshasa—A post of authority is indeed, a source of great fear even an innocent man. Because of—

विमला

अन्वयः—सेवकजनम्, तावत्, भयम्, सेव्यात्, अभिनिविशते, ततः, च, प्रत्यासन्नात् हृदये, निहितम्, एव, भवति, ततः, अध्यारूढानाम्, पदम्, असुजनद्वेषजननम्, सोच्छ्रायाणाम्, गतिः, अनुकूलम्, पतनम्, कलयति ॥ १२ ॥

व्याख्या—सेवकजनम्=अनुचरम् (the servant), तावत्=प्रथमम् (in the first), भयम्=साध्वसम् (the fear), सेव्यात्=स्वामिनः (from the master), अभिनिविशते=सर्वतः प्राप्नोति (takes entire possession), ततः=तदनन्तरम् (after that), च=पुनः (and), प्रत्यासन्नात्=राजनिकटवर्तिनोजनात् (from his intimates), हृदये=चित्ते (in his heart), निहितम्=स्थिरम् एव भवति (gets planted), ततः=तदनन्तरम् (then), अध्यारूढानाम्=उच्चपदप्राप्तानाम् भृत्यानाम् (those are highly placed), पदम्=स्थानम् (position), असुजनद्वेषजननम्=दुर्जनक्रोधवर्द्धकम् भवति (provokes the jealousy of the wicked), सोच्छ्रायाणाम्=अत्युन्नतानाम् पुरुषाणाम् (the rise of the exalted entails), गतिः=स्थितिः (condition), अनुकूलम्=उचितम्, पतनम्=अधोगमनम् (fall), कलयति=अवगच्छति (considers), ॥ १२ ॥

हिन्दी—सर्वप्रथम सेवक को अपने स्वामी से भय लगा रहता है, फिर निकट सम्बन्धियों से, पुनः उच्चपदस्थ व्यक्तियों का पद-दुष्ट व्यक्तियों के द्वेष को उत्पन्न करता है। यही कारण है कि समुन्नत व्यक्तियों की अवस्था सदैव अपने पतन को ही सोचती रहती है ॥ १२ ॥

English—In the first apprehension comes to the servant from his master, then it becomes planted at his heart indeed from his intimates and after that the position of those who have risen very high provokes jealousy in bad people. The condition of those risen to a high station considers a fall to be close at hand. (12).

(परिक्रम्य ।)

प्रतीहारी—अमच्च, अअं कुमारो । उपसप्पदु णं अमच्चो । (अमात्य, अयं कुमारः । उपसर्पत्वेनममात्यः ।)

राक्षसः—(विलोक्य ।) अयं कुमारस्तिष्ठति । य एषः

पादाग्रे दृशमवधार्य निश्चलाङ्गीं
शून्यत्वादपरिगृहीततद्विशेषाम् ।
वक्त्रेन्दुं वहति करेण दुर्वहाणां
कार्याणां कृतमिव गौरवेण नम्रम् ॥ १२ ॥

टिप्पणी—(१) [illegible] —यहाँ 'निर्विद' से [illegible] हुआ है (२) [illegible] —यहाँ [illegible] हुआ है

इस श्लोक में [illegible] है [illegible] छन्द है ।

विमला

व्याख्या—[परिक्रम्य = (walk forth)].

प्रतीहारी—अमात्य (Minister) अयम् = एष (here is) कुमारः = मलयकेतु (the prince) अमात्यः (the minister), एनम् (him), उपसर्पतु = गच्छतु (may approach)

राक्षसः—विलोक्य = दृष्ट्वा (seeing) अयम् (here), कुमारः (the prince) तिष्ठति (is), य एषः (who) —

अन्वयः—शून्यत्वात्, अपरिगृहीततद्विशेषाम्, निश्चलाङ्गीम्, दृशम्, पादाग्रे अवधार्य, दुर्वहाणाम्, कार्याणाम्, गौरवेण, नम्रम् कृतमिव, वक्त्रेन्दुम्, करेण, वहति ॥ १२ ॥

व्याख्या—शून्यत्वात् = चित्तव्यापाररहितत्वात् (through their vacant staring), न परिगृहीताः ज्ञाताः तद्विशेषाः पादाग्ररूपाधारकविशेषा यया सा तथोक्ता ताम् अपरिगृहीततद्विशेषाम् = अज्ञातपादाग्ररूपाधारकविशेषाम् (not perceiving their particular objects) निश्चलाङ्गीम् = विषयान्तरानासक्ताम् (motionless), दृशम् = दृष्टिम् (eyes), अवधार्य = सम्यक्रूपेण संस्थाप्य (fixing), दुर्वहाणाम् = महताम् (arduous), कार्याणाम् = कृत्यानाम् (undertaking), गौरवेण = गुरुत्वेन (by the weight of), नम्रम् = आनतम् (bent down), कृतमिव = विहितमिव (as it were) वक्त्रेन्दुम् = मुखचन्द्रम् (moon like face) करेण = हस्तेन (by his hand), वहति = धारयति (supporting).

हिन्दी— (घूमकर)

प्रतीहारी—सचिव, ये कुमार हैं । आप इनके पास चलें ।

राक्षस—(देखकर) ये कुमार बैठे हैं । जो यह —

शून्य ध्यान के कारण, अपने विषय [illegible] का ग्रहण करने में असमर्थ अतएव निश्चल अङ्गोंवाली अपनी दृष्टि को अपने ही पैरों के अग्र भाग पर टिकाकर दुर्वह कार्यों के भारों से मानो झुके हुए मुखचन्द्र को हाथ से धारण कर रहे हैं ॥ १२ ॥

(उपसृत्य ।) विजयतां कुमारः ।

मलयकेतुः—आर्य, अभिवादये । इदमासनमास्यताम् ।

(राक्षसस्तथा करोति ।)

मलयकेतु—आर्य—चिरदर्शनेनार्यस्य वयमुद्विग्नाः ।

राक्षस—कुमार, प्रयाणे प्रतिविधानमनुतिष्ठता मया कुमारादयमुपालम्भोऽधिगतः ।

मलयकेतु—आर्य, प्रयाणे कथं प्रतिविहितमिति श्रोतुमिच्छामि ।

English—(They walk forth)

Warder—Minister here is the prince. Let minister approach him.

Rakshasa—(Observing) Here is the prince, who :—

Fixing his motionless eyes on the forepart of his feet with its different parts unperceived through their vacant staring and supports in his hand his moonlike face, which is as if bowed down under the weight of his arduous undertaking (13),

टिप्पणी—(१) निश्चलाङ्गी—निश्चल अङ्गों वाली । (२) शून्यत्वात्—नेत्र खुले रहने पर भी दर्शनव्यापार से शून्य है क्योंकि मन कहीं और लगा है । (३) वक्त्रेन्दुम—वक्त्रमिन्दुमिव । 'उपमितं व्याघ्रादिभिः' से समास हुआ ।

इस श्लोक में रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलङ्कार है और प्रहर्षिणी छन्द है ॥ १३ ॥

विमला

व्याख्या—[उपसृत्य = समीपम् गत्वा (approaching)], विजयताम् (Victory), कुमार (to the prince)

मलयकेतु—आर्य = श्रीमान् (Noble sir), अभिवादये = प्रणमामि (I bow to you), इदम् = एतत् (this), आसनम् = आस्तरणम् (seat), आस्यताम्=उपविश्यताम् (please take)

[राक्षसस्तथा करोति = (does so)]

मलयकेतु—आर्य (Noble sir), आर्यस्य = पूज्यस्य भवतः (noble sir's) चिरदर्शनेन=बहुकालान्तरावलोकनेन (through delayed appearance), वयम् (we), उद्विग्नाः = उत्कण्ठिताः (felt uneasy)

राक्षस कुमार (the prince), प्रयाणे=युद्धयात्रायाम (in the matter of the march), प्रतिविधानम्=प्रयत्नम् (precaution), अनुतिष्ठता=विदधता (adopting), मया (I), कुमारात् (from the prince), अयम्=एष (this), उपालम्भ = अनादर (taunt) अधिगत = प्राप्त (have come)

मलयकेतु—आर्य (Noble sir), प्रयाणे=युद्धयात्रायाम् (with regard to the march), कथम् = केन प्रकारेण (what), प्रतिविहितम् = उपयुक्तम् व्यवस्था कृतेति (arrangements have made), श्रोतुम् = आकर्णितुम् (to know), इच्छामि = वाञ्छामि (I want),

राक्षसः—कुमार, एवमादिष्टा अनुयायिनो राजानः। ('प्रस्थातव्यम्—' (५।११) इति पूर्वोक्तं पठति।)

मलयकेतुः—(स्वगतम्।) कथं य एव मद्विनाशेन चन्द्रगुप्तमाराधयितुमुद्यतास्त एव मां परिवृण्वन्ति। (प्रकाशम्।) आर्य, अस्ति कश्चिद्यः कुसुमपुरं प्रति गच्छति तत आगच्छति वा।

राक्षसः—अवसितमिदानीं गतागतप्रयोजनम्। अल्पैरहोभिर्वयमेव तत्र गन्तारः।

राक्षस—कुमार (The prince), अनुयायिनः=अनुगमनशीलाः (following us), राजानः (the kings), एवम्=इत्थम् (like this), आदिष्टाः=आज्ञप्ताः (have been instructed), [प्रस्थातव्यम् इति पूर्वोक्तम्=(as said before,) पठति=repeats the verse "Let the troop"]

मलयकेतु—[स्वगतम्=आत्मगतम्=(to himself)], कथम्=कुतः (what), ये=एव (who), मद्विनाशेन=मां निहन्तुमिच्छया (by ruining me), चन्द्रगुप्तम्=मौर्यम् (Chandragupta), आराधयितुम्=प्रसादयितुम् (to please), उद्यताः=तत्पराः (are trying), त एव=ते राजानः (the very kings), माम् परिवृण्वन्ति=मत्सुरक्षणार्थं परितो वेष्टयित्वा गमिष्यन्ति (are surrounding me), [प्रकाशम्=(Aloud)], आर्य (sir), अस्ति कश्चित् (is there any one), यः=पुरुषः (who), कुसुमपुरम् प्रति (towards Kusumpura), गच्छति=याति (goes to), वा=अथवा (or), तत आगच्छति=ततोऽत्रागच्छति (comes from)

राक्षस—इदानीम्=अधुना (Now), गतागतप्रयोजनम्=गमनागमनप्रयोजनम् (the purpose of going there and coming back), अवसितम्=समाप्तम् (is at an end), वयमेव (we ourselves), अल्पैरहोभिः दिवसैः (In a few days), तत्र=कुसुमपुरे (there), गन्तारः (shall go).

हिन्दी—(समीप जाकर) कुमार की जय हो।
मलयकेतु—आर्य, प्रणाम करता हूँ। यह आसन है, इसपर बैठें।

(राक्षस वैसा ही करता है)

मलयकेतु—आपके दर्शन चिरकाल से न होने के कारण हम व्यग्र हैं।

राक्षस—कुमार, प्रस्थान के प्रबन्ध में व्यस्त रहने के कारण ही मैं आपके इस उपालम्भ का पात्र बना हूँ।

मलयकेतु—आर्य, प्रयाण के लिए कैसी व्यवस्था की गयी है—सुनना चाहता हूँ।

राक्षस—कुमार, आपके अनुयायी राजाओं को यह आदेश दिया गया है। ('प्रस्थातव्यम्' पूर्वोक्त श्लोक पढ़ता है)

मलयकेतु—(अपने आप) क्या जो राजा मेरा विनाश कर चन्द्रगुप्त की आराधना के लिए तत्पर हैं, वही मेरी रक्षा में नियुक्त हैं। (प्रकट) आर्य, क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो कुसुमपुर से आता जाता रहता है?

मलयकेतुः—(स्वगतम् ।) विज्ञायते । (प्रकाशम् ।) यद्येव ततः किमार्येणाय सलेख पुरुष. प्रेषितः ।

राक्षस—(विलोक्य ।) अये, सिद्धार्थकः । भद्र, किमिदम् ।

सिद्धार्थकः—(सबाष्प लज्जा नाटयन् ।) पसीददु अमच्चो । ताडीअन्तेण मए ण पारिद रहस्स धारिदु । (प्रसीदत्वमात्यः । ताड्यमानेन मया न पारितं रहस्य धारयितुम् ।)

राक्षस—अब वहां आने जाने का प्रयोजन समाप्त हो गया । कुछ ही दिनों में हम स्वय वहाँ चलेंगे ।

English—(Advancing) Let prince prosper,

Malayaketu-Noble sir, I bow to you. Here is a seat, you be seated

(Rakshasa does so)

Malayaketu-Sir, we felt uneasy through Noble sir's delayed sight.

Rakshasa—Prince, adopting precaution in the matter of the march, I come to have this taunt from the prince

Malayaketu—Noble sir, I want to know, what precautions you have adopted in regard to the march

Rakshasa—Prince, the kings following us have been instructed (Repeats the verse. "Let the troop etc" as befere said)

Malayaketu—(To himself) How so, the very kings who are trying to please Chandragupta by ruining me, (Aloud) Noble sir, is there any one who is going to Kusumpur or coming from there ?

Rakshasa—The purpose of going there and coming back is at an end We ourselves will go there in a few days

विमला

व्याख्या—मलयकेतु —[स्वगतम् = अप्रकाशम् = (to himself)] विज्ञायते (I understand it), [प्रकाशम् = (Aloud)], यद्येवम्=कुसुमपुरगमने सति (if so), ततः=तस्मात् (then), किम् (why), आर्येण = पूज्येनभवता (by you), अयम् पुरुष =अनुचर. (this man), सलेख. = पत्रिकायुक्त (with a letter), प्रेषित.= प्रस्थापित (was sent)

राक्षस —[विलोक्य=दृष्ट्वा = (observing)], अये (ah), सिद्धार्थकः (Siddharthaka), भद्र (gentleman), इदम्=एतत् (this), किम् (what is).

सिद्धार्थक —[सबाष्पम् (with tears), लज्जाम् = त्रपाम् (shame), नाटयन् = अभिनयन् (gesticulating)], प्रसीदतु = प्रसन्नो भवतु (Excuse), अमात्य = मन्त्रिन् (minister), ताड्यमानेन = पीड्यमानेन (being beaten), मया (by me), रहस्यम् = गोप्यम् (the secret), धारयितुम्=गोप्तुम् (keep), न पारितम्=न शक्तम् (I could not).

राक्षसः—भद्र, कीदृशं रहस्यमिति न खल्ववगच्छामि ।

सिद्धार्थकः—णं विण्णवेमि ताडीअन्तेण मए- (इत्यर्धोक्ते सभयमधोमुखस्तिष्ठति ।) (ननु विज्ञापयामि ताड्यमानेन मया—)

मलयकेतुः—भागुरायण, स्वामिनः पुरस्ताद्भीतो लज्जितो वा नैष कथयिष्यति । स्वयमेवार्यस्य कथय ।

भागुरायणः—यदाज्ञापयति कुमारः । अमात्य, एष कथयति यथाहममात्येन लेखं दत्त्वा वाचिकं सन्दिश्य चन्द्रगुप्तसकाशं प्रेषित इति ।

राक्षस—भद्र=कल्याणिन् (Good man), कीदृशम्=किं विषयकम् (what), रहस्यम्=गोपनीयम् (secret), इति न खलु=नैव (I do not), अवगच्छामि=जानामि (understand)

सिद्धार्थकः—ननु ताड्यमानेन=पीड्यमानेन (being beaten), मया विज्ञापयामि (I say), [इत्यर्धोक्ते (at this half utterance), सभयम्=सभीतम् (with fear), अधोमुख=नताननः (with face castdown), तिष्ठति (stands)].

मलयकेतु—भागुरायण (Bhagurayan), स्वामिनः पुरस्तात्=राक्षसस्याग्रे (before his master), भीतः=त्रस्तः (through fear), वा=अथवा (either), लज्जितः=त्रपायुक्त (with shame), नैषः (he not), कथयिष्यति (will tell), स्वयमेव=साक्षादेव (you yourself), आर्यस्य=राक्षसस्य (to the minister), कथय=ब्रूहि (tell)

भागुरायणः—यदाज्ञापयति कुमारः (As the prince commands), अमात्य (minister), एषः (this man), कथयति (says), यथा (that), अहम् (I), अमात्येन=सचिवेन (by the minister), लेखम्=पत्रम् (letter), दत्त्वा (giving), वाचिकम्=मौखिकम् (oral message), सन्दिश्य=कथयित्वा (speaking), चन्द्रगुप्तसकाशम्=मौर्यसन्निधिम् (to Chandragupta), प्रेषित इति (has sent).

हिन्दी—मलयकेतु—(अपने आप) ज्ञात है । (प्रकट रूप में) यदि बात ऐसी है तो फिर आर्य ने पत्र के साथ इस व्यक्ति को किस उद्देश्य से उधर भेजा था ?

राक्षस—(देखकर) अरे सिद्धार्थक ! भद्र यह क्या है ?

सिद्धार्थक—(लज्जा का अभिनय करता हुआ आँखों में आँसू भर कर) अमात्य प्रसन्न हों, पीटा जाने पर मैं रहस्य को छिपाने में असमर्थ हो गया ।

राक्षस—भद्र, कैसा रहस्य—बात मेरी समझ में नहीं आ रही है ।

सिद्धार्थक—मैंने कहा न—जब मार पड़ने लगी तब . (इतना आधा कहकर भयभीत-सा मुँह नीचे किए खड़ा रहता है)

मलयकेतु—भागुरायण, भय और लज्जा के मारे अपने स्वामी से यह कुछ नहीं कह सकेगा, तुम्हीं आर्य को स्वयं बतलाओ ।

भागुरायण—कुमार की जैसी आज्ञा । अमात्य, यह कहता है कि आपने एक पत्र देकर तथा कुछ मौखिक संदेश के साथ इसे चन्द्रगुप्त के पास भेजा है ।

राक्षस.—भद्र सिद्धार्थक, अपि सत्यम् ।

सिद्धार्थक'—(लज्जा नाटयन् ।) एव अतिताडीअन्तेन मए णिवेदिद ! (एवमतिताड्यमानेन मया निवेदितम् ।)

राक्षस —अनृतमेतत् । ताड्यमानः पुरुष किमिव न ब्रूयात् ।

मलयकेतु—सखे भागुरायण, दर्शय लेखम् । वाचिकमेष भृत्यः कथयिष्यति।

भागुरायण'—अमात्य, अय लेख ।

English—*Malayaketu*—(To himself) I understand (aloud) if so, then why was this man with a letter sent to Kusumpur by you sir ?

Rakshasa—(Looking) Ah Siddharthaka ! Gentleman what is this ?

Shiddharthaka—(Acting shame with tears) Excuse minister, being beaten I could not keep the secret

Rakshasa—Gentleman, I do not understand what secret you mean to say.

Siddharthaka—Do not I say that being beaten (at this half utterance stands with face castdown with fear)

Malayaketu—Bhagurayan, either frightened or shamed he will not tell before his master, you yourself tell it to noble sir

Bhagurayana—As the prince commands Minister, he says 'Minister sent me to Chandragupta giving me a letter and speaking an oral message',

विमला

व्याख्या—राक्षस —भद्र (gentleman), सिद्धार्थक (siddharthaka), अपि-सत्यम् =(is it true) ?

सिद्धार्थक —(लज्जां=त्रपाम् (shame), नाटयन् = अभिनयन् (gesticulating), एवम् = इत्थम् (so), अतिताड्यमानेन = अधिकपीड्यमानेन (Being severely thrashed), मया (by me), निवेदितम्=कथितम् (said)

राक्षस —अनृतम्=असत्यम् (untrue), एतत्=इदम् (it is) ताड्यमानः=पीड्यमान (on being beaten), पुरुष=जन (man), किमिव न ब्रूयात्=अलीकमपि-ब्रूयादिति (what will not say a man)

मलयकेतु —सखे = मित्र (friend), भागुरायण (Bhagurayan) दर्शय (show him), लेखम्=पत्रम् (letter), वाचिकम्=मौखिकम् (the oral message), एष भृत्य (this servant), कथयिष्यति (will say).

भागुरायण —अमात्य (minister), अयम्=एष (here is), लेख=पत्रम् (the letter)

राक्षसः—(वाचयित्वा ।) कुमार, शत्रोः प्रयोग एषः ।

मलयकेतुः—लेखस्य साङ्गुल्यार्थमार्येणेदमप्याभरणमनुप्रेषितम् । तत्कथं शत्रोः प्रयोग एषः ।

राक्षसः—(आभरणं निर्वर्ण्य ।) कुमारेणैतन्मह्यमनुप्रेषितम् । मयाप्येतत्-कस्मिंश्चित्परितोषस्थाने सिद्धार्थकाय दत्तम् ।

राक्षस —[वाचयित्वा=पठित्वा=(having read)], कुमार (Prince), एष=एतत् (this), शत्रोः =अरेः (enemy's), प्रयोगः=कार्यं (the work)

मलयकेतु —लेखस्य = पत्रस्य (Letter's), अङ्गुल्यार्थम्=पूर्त्यर्थम् =(accompanying), आर्येण = पूज्येन भवता (by you), इदमपि = एतदपि (even this), आभरणम् = अलङ्करणम् (ornaments), अनुप्रेषितम् = अनुप्रहितम् (was sent), तत्कथम् = तस्मात्कुतः (how can), एषः = अयम् (this), शत्रोः = रिपोः (enemy's), प्रयोग = कार्यं (the work)

राक्षस —[आभरणम् = आभूषणम् (ornaments) निर्वर्ण्य (closely looking at)], कुमारेण (by the prince) एतत् (this), मह्यम् (to me), अनुप्रेषितम् (was sent), मयापि (I too) एतत् (this), कस्मिंश्चित् (some), परितोषस्थाने = पारितोषिकरूपेण (made a present of it), सिद्धार्थकाय (to Siddharthaka), दत्तम्= समर्पितम् (made present)

हिन्दी—राक्षस—भद्र सिद्धार्थक, क्या यह सच है ?

सिद्धार्थक—(लज्जा का अभिनय करते हुए) अत्यन्त पीटे जाने पर मैंने ऐसा कहा है।

राक्षस—यह असत्य है। पीटा जाता हुआ व्यक्ति क्या नहीं कह सकता है !

मलयकेतु—मित्र भागुरायण, इन्हें पत्र दिखलाओ। मौखिक सन्देश यह सेवक बतलायेगा।

भागुरायण—अमात्य, यह पत्र है।

राक्षस—(पढ़कर) कुमार यह शत्रु की चाल है।

मलयकेतु—पत्र शून्य नहीं भेजने के लिए, आपके द्वारा ये आभूषण भी इसके साथ भेजे गये हैं। क्या यह भी कोई शत्रु की चाल ही थी ?

राक्षस—(ध्यानपूर्वक आभूषण देख कर) यह आभूषण कुमार ने मेरे लिए भेजा था और मैंने किसी अवसर पर सन्तुष्ट होकर सिद्धार्थक को उपहार में दिया था।

English—*Rakshasa*—Good Siddharthaka, is it true ?

Siddharthaka—(acting shame) Being severly thrashed, I said so.

Rakshasa—It is false. What indeed would not a man say on being beaten.

Malayaketu—Friend Bhagurayana, show him the letter. This searvant will tell the oral message.

Bhagurayan—Minister, this is the letter.

Rakshasa—(Having read) Prince, this is the work of the enemy.

भागुरायण —ईदृशस्य विशेपत कुमारेणात्मगात्रादवतार्य प्रसादीकृतस्येय परित्यागभूमि ।

मलयकेतु —वाचिकमप्यार्येणास्माच्छ्रोतव्यमिति लिखितम् ।

राक्षस —कुतो वाचिक कस्य वाचिकम् । लेख एवास्मदीयो न भवति ।

मलयकेतु —इय तर्हि कस्य मुद्रा ।

राक्षस —कपटमुद्रामुत्पादयितु शक्नुवन्ति धूर्ता ।

भागुरायण —कुमार, सम्यगमात्या विज्ञापयति । भद्र सिद्धार्थक, केनाय लिखितो लेख ।

Malayaketu—This ornament too is sent by you in accompaniment to the letter How can it then be the work of the enemy ?

Rakshasa—(Scrutinising the ornaments) This was sent to me by the prince, and I made a present of it to the Siddharthaka on some occasion of joy

निमला

भागुरायण —कुमारेण=मलयकेतुना (by the prince), आत्मगात्रात्=निजशरीरात् (from his body), अवतार्य=पृथक्कृत्य (taking off), विशेपत = विशेषरूपेण (especially), प्रसादीकृतस्य=दत्तस्य (has been gifted as favour), ईदृशस्य=महार्घस्याभरणस्य (such an ornament) इयम् परित्यागभूमि =एपादानपात्रम् (is this the fit person for the gift)

मलयकेतु —वाचिकमपि=मौखिकमपि (the verbal message too), आर्येण = भवता (by you), श्रोतव्यम्=आकर्णितव्यम् (has to be heard), अस्मात् (from him), लिखितम् (is also written)

राक्षस —वाचिकम्=वागसंदेश (oral message), कुत=कस्मात् (from whom), कस्य=पुरुषविशेषस्य (to whom), वाचिकम्=मौखिकम् (the verbal message), लेख एव=पत्र एव (the letter itself), अस्मदीयो न भवति= मामकीनो न भवति (is not mine)

मलयकेतु —इयम्=एषा (this), तर्हि=तदा (then), कस्य मुद्रा=पुरुषविशेषस्येति (whose seal)

राक्षस —कपटमुद्राम्=कृत्रिममुद्रामपि (forged seals too), उत्पादयितुम्= निर्मातुम् (*make*), धूर्ता =वञ्चका (*wily*), शक्नुवन्ति (*can*)

भागुरायण —कुमार (Prince), अमात्य =सचिव (The minister), सम्यक् विज्ञापयति=याथातथ्येनाभिदधाति (speaks truly), भद्र (gentle), सिद्धार्थक (Siddharthaka), अयम् लेख =इदम् पत्रम् (this letter), केन लिखितम् (is written by whom)

(सिद्धार्थको राक्षसमुखमवलोक्य तूष्णीमधोमुखस्तिष्ठति ।)

भागुरायणः—भद्र, अलं पुनरात्मानं ताडयितुम् । कथय ।

सिद्धार्थकः—अज्ज, सअडदासेण । (आर्य, शकटदासेन ।)

सिद्धार्थकः [(Siddharthaka), राक्षसमुखम् (Rakshasa's face), अवलोक्य (having looked), तूष्णीम् (silently), अधोमुखः (with head downcast), तिष्ठति (stands)].

भागुरायणः—भद्र (Gentle), अलम्=व्यर्थम्, पुनः (again), आत्मनः ताडयितुम् (provoke for beating), कथय=उच्यताम् (tell).

हिन्दी—भागुरायण—ऐसे मूल्यवान और विशेषरूप से उन आभूषणों को जिन्हें स्वयं कुमार ने अपने शरीर से उतार कर के दिया हो—उसे देने का यही अनुग्रह पात्र है क्या ?

मलयकेतु—आर्य ने यह भी लिखा है कि इस व्यक्ति से मौखिक सन्देश भी सुन लेना चाहिए।

राक्षस—कहाँ से मौखिक सन्देश और किसके लिए सन्देश ! मेरा तो यह पत्र ही नहीं है।

मलयकेतु—तो यह मुद्रा किसकी है ?

भागुरायण—कुमार, अमात्य ठीक निवेदन कर रहे हैं। भद्र सिद्धार्थक, यह पत्र किसका लिखा हुआ है ?

(सिद्धार्थक चुपचाप राक्षस की ओर देखकर मुँह लटकाये खड़ा रहता है)

भागुरायण—भद्र, अपने को पुनः पिटवाने से क्या लाभ ? कह दो।

English—*Bhagurayana*—Is this the person to be favoured with such ornaments, especially one sent as a favour by the prince after taking it off from his own person ?

Malayaketu—It is also written by noble sir, that an oral message has to be heard from Siddharthaka.

Rakshasa—From whom is the oral message ? To whom is the verbal message ? The letter itself is not mine.

Malayaketu—Then whose is this seal ?

Rakshasa—Rogues can make forged seal too.

Bhagurayana—Prince, the minister speaks truly, Gentle Siddharthaka by whom is this letter written ?

(Siddharthaka keeps silent with head downcast after having looked Rakshasa's face).

Bhagurayan—Good man, do not provoke for beating. Say it.

विमला

सिद्धार्थकः—आर्य (Sir), शकटदासेन=तन्नाम्ना कायस्थजातीयेन (by Shakatdasa).

राक्षसः—कुमार, यदि शकटदासेन लिखितस्ततो मयैव ।
मलयकेतुः—विजये, शकटदासं द्रष्टुमिच्छामि ।
प्रतीहारी—जं कुमारो आणवेदि । (यत् कुमार आज्ञापयति ।)
भागुरायणः—(स्वगतम् ।) न खल्वनिश्चितार्थमार्यचाणक्यप्रणिधयोऽभिधास्यन्ति । (प्रकाशम् ।) कुमार, न कदाचिदपि शकटदासोऽमात्यस्याग्रतो मया लिखितमिति प्रतिपत्स्यते । अतः प्रतिलिखितमस्यानीयतां वर्णसंवाद एवैतं विभावयिष्यति ।

राक्षस—कुमार (Prince), यदि (if), शकटदासेन (by Shakatdasa), लिखितम् (was written), ततः (then), ममैव (by me).

मलयकेतु—विजये (Vijaya), शकटदासम् (to Shakatdas), द्रष्टुम्=अवलोकितुम् (to see), इच्छामि = वाञ्छामि (I wish)

प्रतीहारी—कुमारो भवान् (As your), यत् कार्यम् कर्तुम् आज्ञापयति = आदिशति (command).

भागुरायणः—[स्वगतम् = (To himself)], आर्यश्चासौ चाणक्यः आर्यचाणक्यस्तस्य प्रणिधयः आर्यचाणक्यप्रणिधयः = कौटिल्यदूताः (the emissaries of noble chanakya), न खलु (will not), अभिधास्यन्ति=कथयिष्यन्ति (say anything), [प्रकाशम् = (aloud)], कुमार (Prince), न कदाचिदपि = न कथमपि (not perhaps), शकटदासः (Shakatdasa), अमात्यस्याग्रतः = राक्षसस्य पुरतः (in the presence of Rakshasa), मया लिखितम् = (is waitten by me), इति प्रतिपत्स्यते = स्वीकरिष्यति (will admit), अतः (so), अस्य = एतस्य (his), प्रतिलिखितम्=अन्यलिखितम् (another writing of), आनीयताम् = आनाय्यताम् (get), वर्णसंवादे एव = अक्षरसादृश्यसम्मेलने सत्येवेत्यर्थः (the similarity of letters), एतम् (the matter), विभावयिष्यति = निर्णेष्यति (will decide at once).

हिन्दी—सिद्धार्थक—आर्य शकटदास का ।
राक्षस—कुमार यदि शकटदास का लिखा है, तब तो मेरा ही लिखा हुआ है ।
मलयकेतु—विजये ! शकटदास को देखना चाहता हूँ ।
प्रतीहारी—कुमार की जैसी आज्ञा ।
भागुरायण—(अपने आप) आर्य चाणक्य के प्रणिधि तो बिना सोचे समझे कुछ कहेंगे नहीं । (प्रकट रूप में) कुमार, सम्भवतः अमात्य राक्षस के आगे शकटदास यह न कहे कि 'यह मेरा लिखा है ।' उसके लेख की दूसरी प्रतिलिपि मंगा ली जाय—दोनों की वर्णसाम्यता ही सब कुछ कह देगी ।

English—*Siddharthaka*—Sir, by Shakatdasa.
Rakshasa—Prince, if it is written by Shakatadas then it is written by me.
Malayaketu—Vijaya, I wish to see Shakatdas.
Warder—As prince commands.

मलयकेतुः—विजये, एवं क्रियताम् ।

प्रतीहारी—कुमार, मुद्दा वि । (कुमार, मुद्रापि ।)

मलयकेतुः—उभयमप्यानीयताम् ।

प्रतीहारी—जं कुमारो आणवेदि त्ति । (निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य ।) कुमार, इदं तं सअडदासेण सहत्थलिहिदं पत्तअं मुद्दावि । (यत्कुमार आज्ञापयति । कुमार, इदं तच्छकटदासेन स्वहस्तलिखितं पत्रं मुद्रापि ।)

मलयकेतुः—(उभयमपि नाट्येन विलोक्य ।) आर्य, संवदन्त्यक्षराणि ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) संवदन्त्यक्षराणि । शकटदासस्तु मित्रमिति च विसंवदन्त्यक्षराणि । किंतु शकटदासेन ।

Bhagurayan—(To himself) The emissaries of Noble Chanakya will not tell any thing that has not been well ascertained. (Aloud) Prince, perhaps Shakatdas will never own in presence of minister Rakshasa that this was written by him. So let some other of his writings be produced. The similarity of letters will at once decide the matter.

विमला

मलयकेतुः—विजये (Vijaya), एवम् (so), क्रियताम् (do).

प्रतीहारी—कुमार (Prince), मुद्रापि (sealing also).

मलयकेतु—उभयम् (Both), अपि (also), आनीयताम् (get).

प्रतीहारी—यत् (As), कुमारः (Prince), आज्ञापयति (commands), [निष्क्रम्य = (Exit), and, पुनः प्रविश्य (re-entering)], कुमार (Prince), इदम् = एतत् (this), तत् (that), शकटदासेन (by Shakatdasa), स्वहस्तलिखितम् = निजकरेण विलिखितम् (is written by his own hand), पत्रम् (letter), and = (एव), मुद्रा (seal), अपि (also).

मलयकेतु—[उभयमपि = both too). नाट्येन = अभिनयेन (gesticulating), विलोक्य = दृष्ट्वा (looking at)], आर्य (noble sir), अक्षराणि = वर्णाः (the characters), संवदन्ति = सादृश्यम् गमयन्ति (agree).

राक्षसः—[स्वगतम् = (to himself)], अक्षराणि = वर्णाः (the characters), संवदन्ति (agree), शकटदासस्तु (but Shakatdas is), मित्रमिति=सुहृदमिति (my friend), इति = पूर्वं (so), विसंवदन्ति = विरुद्धार्थमवगमयन्ति (cannot agree), अक्षराणि (letters), किन्तु शकटदासेन (may it be that Shakatdasa) :—

हिन्दी—मलयकेतु—विजये, ऐसा ही करो ।

प्रतीहारी—कुमार, मुद्रा भी ।

मलयकेतु—दोनों लाओ ।

स्मृतं स्यात् पुत्रदारस्य विस्मृतस्वामिभक्तिना ।
चलेष्वर्थेषु लुब्धेन न यशःस्वनपायिषु ॥ १४ ॥

प्रतिहारी—कुमार की जैसी आज्ञा (बाहर निकलकर और पुनः प्रवेश कर) कुमार, यह शकटदास के हाथ का लेख और यह मुद्रा है।

मलयकेतु—(दोनों को अभिनयपूर्वक देखकर) आर्य, अक्षर की रचना तो मिलती है।

राक्षस—(अपने आप) अक्षर की रचना मिलती है। शकटदास तो मेरा मित्र है। और अक्षर कभी भी नहीं मिल सकते। या फिर हो भी सकता है कि शकटदास ने :—

English—*Malayaketu*—Vijaya, Let this be done

Warder—Prince, the seal too.

Malayaketu—Yes, bring both

Warder—As the prince commands (going out and re-entering), prince, this is indeed a letter written by Shakatdas with his own hand. It is seal also.

Malayaketu—(Acting the inspection both), Noble sir, the Characters agree

Rakshasa—(To himself) The charaetrs agree with each other, but the letter do not agree with the fact that Shakatdas is my friend May it be that Shakatdasa :—

विमला

अन्वयः—विस्मृतस्वामिभक्तिना, लुब्धेन, चलेषु, अर्थेषु, पुत्रदारस्य, स्मृतम्, स्यात्, अनपायिषु, यशःसु, न ॥ १३ ॥

व्याख्या—स्वामिनि भक्तय स्वामिभक्त्य = प्रभुविषयकानुरागः (his loyalty), विस्मृताः = मनसा परिहृता (forgetting), लुब्धेन=इच्छुकेन (greedy), शकटदासेन (by Shakatdasa), चलेषु = विनाशशालिषु (transitory), अर्थेषु = धनेषु (wealth), पुत्रदारस्य = पुत्राणाम् स्त्रियश्च (of his wife and children), स्मृतम् = स्मरणम् कृतम् (shoud have thought), स्यात्, भवेत्, अनपायिषु = अविनश्वरेषु (imperishable), यशःसु = कीर्त्तिषु (fame), न = नहि (not) ॥ १४ ॥

हिन्दी—स्वामिभक्ति को भुला देने वाला लोभी शकटदास ने नश्वर धन के साथ पुत्र पत्नी का स्मरण किया होगा—अविनाशी यश का नहीं ॥ १४ ॥

English—Forgetting his loyalty, and coveting fleeting wealth, Shakatdas only thought of his wife and children and not of unfading fame. 14.

टिप्पणी—इस श्लोक में परिसंख्या अलंकार एवं अनुष्टुप् छन्द है।

अथवा कः सन्देहः।

> मुद्रा तस्य कराङ्गुलिप्रणयिनी सिद्धार्थकस्तत्सुहृ-
> त्तस्यैवापरलेख्यसूचितमिदं लेख्यं प्रयोगाश्रयम्।
> सुव्यक्तं शकटेन भेदपटुभिः संधाय सार्धं परै-
> र्भर्तृस्नेहपराङ्मुखेन कृपणं प्राणार्थिना चेष्टितम्॥ १५॥

विमला

अथवा = वा (or), कः सन्देहः (what doubt),

अन्वयः—मुद्रा, तस्य, कराङ्गुलिप्रणयिनी, सिद्धार्थकः, तत्सुहृत्, तस्य, एव, अपर लेख्यसूचितम्, प्रयोगाश्रयम्, इदम्, लेख्यम्, सुव्यक्तम्, भर्तृस्नेहपराङ्मुखेन, प्राणार्थिना, शकटेन, भेदपटुभिः, परैः, सार्धम्, सन्धाय, कृपणम्, चेष्टितम्॥ १५॥

व्याख्या—मुद्रा = अङ्गुलिमुद्रा (the ring), तस्य=शकटदासस्य (his), कराङ्गुलिप्रणयिनी=करशाखावर्त्तिनी (is a companion of fingers of his hand), सिद्धार्थकः (Siddharthaka), तत्सुहृत् = शकटदासमित्रम् (his friend), तस्य = शकटदासस्य (his), एव इति निश्चयार्थकः, अपरलेख्यसूचितम् = अन्यपत्रेण प्रमाणितम् (is proved by the other writing), प्रयोगाश्रयम् = कूटनीत्या धारभूतम् (basis of the plot), इदम् = एतत् (this), लेख्यम् = पत्रम् (letter), सुव्यक्तम् = निश्चितम्, भर्तृस्नेहपराङ्मुखेन = स्वामिभक्तिविमुखेन (face averted from his master's kindness), प्राणार्थिना = पुत्रदारादिर्जीवनाभिलाषिणा (wishing to save his life), शकटेन (by Shakatdasa), भेदपटुभिः = उपजापनिपुणैः (skilled in causing dissension), परैः = शत्रुभिः (with enemies), सार्धम् = साकम् (with), सन्धाय = लिखितम् (having entered into an alliance), कृपणम् = दीनम् (this mean), चेष्टितम् = व्यवसितम् (act) ॥ १५॥

हिन्दी—किन्तु अब सन्देह ही क्या है?

मुद्रा उसी की अङ्गुलि के साथ की है, सिद्धार्थक उसीका मित्र है और अन्य लेख से प्रमाणित प्रयोग का आधारस्तम्भ यह लेख भी तो उसी के हाथ का है—यह पारस्परिक तुलना से सिद्ध हो चुका है। स्पष्ट है भेदनीति में चतुर शत्रुओं के हाथ में पड़कर शकटदास ने यह कुत्सित कार्य अपने प्राणों के लोभ से अवश्य किया है। किन्तु उसने अपने स्वामी की भक्ति एक क्षण में भुला दी है॥ १५॥

English—The ring is companion of the fingers of his hand, Siddharthaka is also his friend, and the writing, basis of the plot is surly his, proved by the other writing, evidently Shakatadas wishing to save his life has averted his face from his master's kindness and stooped to this mean act, having entered into an alliance with the enemies who are skilled in a rupture. 15

टिप्पणी—इस श्लोक में काव्यलिङ्ग तथा समुच्चय अलङ्कार है और शार्दूलविक्रीडित छन्द है। लक्षण पहले ही लिखा जा चुका है।

मलयकेतुः—(विलोक्य ।) आर्य, अलंकारत्रयं श्रीमता यदनुप्रेषितं तदुपगतमिति यल्लिखितं तन्मध्यात् किमिदमेकम् । (निर्वर्ण्यात्मगतम् ।) कथं तातेन धृतपूर्वमिदमाभरणम् । (प्रकाशम् ।) आर्य, कुतोऽयमलंकारः ।

राक्षसः—वणिग्भ्यः क्रयादधिगतः ।

मलयकेतुः—विजये, अपि प्रत्यभिजानासि भूषणमिदम् ।

प्रतीहारी—(निर्वर्ण्य सबाष्पम् ।) कुमार, कहं ण पच्चभिजाणामि । इदं सुगिहीदणामधेएण पव्वदीसरेण धारिदपुव्वं । (कथं न प्रत्यभिजानामि । इदं सुगृहीतनामधेयेन पर्वतेश्वरेण धारितपूर्वम् ।

मलयकेतुः—(सबाष्पम् ।) हा तात,

विमला

मलयकेतु—[विलोक्य = दृष्ट्वा (noticing)], आर्य (Noble sir) श्रीमता = कल्याणभाजनेन (by the blessed one), यत् अलङ्कारत्रयम्=त्रीण्यलङ्करणानि (*three ornaments*), अनुप्रेषितम् = अनुप्रहितम् (have been forwarded), तदुपगतम् = प्राप्तम् (are received), इति यल्लिखितम् = (as written), तन्मध्यात्, इदमेकम् किम् अस्तीति (is this one of the three), [निर्वर्ण्य = दृष्ट्वा (eyeing closely), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)], तातेन = पित्रा (by father), धृतपूर्वम् = पूर्वम् धृतम् (was previously worn) इदमाभरणम् = एतदलङ्करणम् (this piece of ornament), कथम् प्राप्तमनेनेति (how so), [प्रकाशम् (aloud)], आर्य = मान्य (noble sir) अयमलङ्कारः=इदमाभरणम् (this ornament), कुतः = कस्मादधिगतः (where did you get from).

राक्षस—वणिग्भ्यः = (From merchants), क्रयात् मूल्यप्रदानात् (by purchase), अधिगत = प्राप्तः (got).

मलयकेतु—विजये (Vijaya), इदम् भूषणम् = एतदलङ्करणम् (this ornaments), प्रत्यभिजानासि परिचितोसि किम् (do you recognise).

प्रतीहारी—[निर्वर्ण्य = Eyeing closely सबाष्पम् (with tears)], कुमार (Prince), कथम् न प्रत्यभिज्ञास्यामि = कुतो नावगमिष्यामि (how could not I recognise it), इदम् = एतत् (this), सुगृहीतनामधेयेन = प्रातः स्मरणीयनाम्ना (of auspicious name), पर्वतेश्वरेण=भवतस्तातेन (by Parvateswar), धारितपूर्वम् = धृतपूर्वाणि (was worn previously).

मलयकेतु—[सबाष्पम् = (with tears)], हा तात = हा पितः (Alas ! father !)

हिन्दी—मलयकेतु—(देखकर) आर्य, 'आपके द्वारा जो तीन आभूषण भेजे गये हैं, वे मिले,' ऐसा जो आपने लिखा है, क्या उनमें से यह एक है ? (खूब देखभाल करके अपने आप) यह आभूषण तो पहले पिताजी पहना करते थे ? (प्रकट रूप से) आर्य, यह आभूषण आपको कहाँ से मिला ?

राक्षस—वणिकों से खरीदा था ।

एतानि तानि तव भूषणवल्लभस्य
गात्रोचितानि कुलभूषण भूषणानि ।
यैः शोभितोऽसि मुखचन्द्रकृतावभासो
नक्षत्रवानिव शरत्समयप्रदोषः ॥ १६ ॥

मलयकेतु—विजये ! तुमने इस आभूषण को पहचाना ?

प्रतीहारी—(पहचानती हुई आँखें भरकर) कुमार, पहचानती क्यों नहीं ? प्रातःस्मरणीय महाराज पर्वतेश्वर इसे कभी पहना करते थे ।

मलयकेतु—(आँखों में आँसू भरकर) हाय ! पिताजी !

English—*Malayaketu*—(Noticing) Noble sir, "the pieces of ornament which have been Sent by His Majesty are received" as written, is this one of the three ? (Looking at it more carefully to himself) this piece of jewellery was previously worn by my father, (Aloud) Noble sir, where did you get these ornaments from ?

Rakshasa—Got by purchase from merchants.

Malayaketu—Vijaya, do you recognise this ornament ?

Warder—(Marking closely with tears) Prince, how could I not recognise it ? this was previously worn by parvateswar of blessed name.

Malayaketu—(tearfully) Alas ! father !—

विमला

अन्वयः—हे कुलभूषण, भूषणवल्लभस्य, तव, गात्रोचितानि, एतानि, तानि, भूषणानि, यैः, मुखचन्द्रकृतावभासः, नक्षत्रवान्, शरत्समयप्रदोष, इव, शोभित, असि ॥ १६ ॥

व्याख्या—हे कुलभूषण = वंशालङ्करण (the ornament of the race), भूषणवल्लभस्य = वल्लभानि भूषणानि यस्य स भूषणवल्लभस्तस्य भूषणवल्लभस्य = प्रियालङ्करणस्य (who love ornaments), तव = भवतः (your), गात्रोचितानि=त्वदीयशरीरयोग्यानि (worthy of your person), एतानि (these), तानि भूषणानि = अलङ्करणानि (are the ornaments) यैः (by which), मुखचन्द्रकृतावभासः= मुखम् चन्द्र इव मुखचन्द्रस्तेन कृतो विहितोऽवभासो दीप्तिर्येन स मुखचन्द्रकृतावभासः= आस्येन्दुविहितदीप्तिः (illumined with your moon like face), नक्षत्रवान् = सतारकः (with stars), शरत्समयप्रदोषः = शरत्कालीनसन्ध्यासमयः (an autumnal evening), इव = यथा (like), शोभितोऽसि = भूषितोऽसि (were graced), ॥१६॥

हिन्दी—हे वंश को सुशोभित करने वाले, अलङ्कारप्रिय, ये आभूषण भी आपके ही उपयुक्त थे, जिन्हें पहनकर आपकी शोभा एक शरद सन्ध्या की-सी बन जाती थी मानो, मुखचन्द्र के साथ चमकते तारे हों ॥ १६ ॥

English—The ornament of the race, fond of jewellery, there are those ornaments, worthy of your person, decorated with which you

राक्षसः—(स्वगतम् ।) कथं पर्वतेश्वरेण धृतपूर्वाणीत्याह । व्यक्तमेवास्य भूषणानि । (प्रकाशम् ।) एतान्यपि चाणक्यप्रयुक्तेन वणिग्जनेनास्मासु विक्रीतानि ।

मलयकेतुः—आर्य, तातेन धृतपूर्वाणां विशेषतश्चन्द्रगुप्तहस्तगतानां वणिग्विक्रय इति न युज्यते । अथवा युज्यत एवैतत् । कुतः

चन्द्रगुप्तस्य विक्रेतुरधिकं लाभमिच्छतः ।
कल्पिता मूल्यमेतेषां क्रूरेण भवता वयम् ॥ १७ ॥

---

appeared with light furnished by your moon like face, like an autumnal evening with the moon and the stars. (16)

टिप्पणी—इस श्लोक में रूपक तथा उपमा अलङ्कार है और वसन्ततिलका छन्द है ।

विमला

राक्षस.—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself)], पूर्वधृतानि धृतपूर्वाणि पर्वतेश्वरेण धृतपूर्वाणि=मलयकेतुतातेन पूर्वं स्वदेहे परिहितानि (these were worn previously by Parvateswara), इति कथम् = कुतः (how so), आह = ब्रवीति (he says), व्यक्तमेव (evidently), अस्य भूषणानि (ornaments must be his), [प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud)], एतान्यपि (these too), चाणक्यप्रयुक्तेन = कौटिल्यप्रेरितेन (set on by Chanakya), वणिग्जनेन= (by some merchants), अस्मासु, विक्रीतानि = मूल्यमादाय समर्पितानि (sold to us).

मलयकेतुः—आर्य (noble sir), तातेन = पित्रा (by father), धृतपूर्वाणाम् = पूर्वम् स्वदेहे धृतानाम् (which were previouly worn), विशेषतः=विशेषरूपेण (especially), चन्द्रगुप्तहस्तगतानाम् = मौर्यकरप्राप्तानाम् (which were in the possession of Chandragupta), वणिग्विक्रयः = वणिग्भ्यः व्यापारिभ्यः विक्रयः (got by purchase), न युज्यते=इत्यसम्भवः (could not be possible), अथवा = वा (or), युज्यत एव = उचित एव (is quite possible), एवैतत् (this), कुतः (for) .—

अन्वयः—क्रूरेण, भवता, अधिकम्, लाभम्, इच्छतः, विक्रेतुः, चन्द्रगुप्तस्य, वयम्, एतेषाम्, कल्पिताः ॥ १७ ॥

व्याख्या—क्रूरेण = कठिनहृदयेन (by a cruel), भवता = त्वया (your), अधिकम् = विशेषम् (more), लाभम् = प्राप्तिम (profit), इच्छतः = वाञ्छतः (wishing), विक्रेतुः = विनिमयं कर्तुः (sells), चन्द्रगुप्तस्य = कौटिल्यस्य (Chandragupta's), वयम् (we), एतेषाम् = दृश्यमानानाम् (for these), मूल्यम् = अर्थः (the price), कल्पिताः = निर्णीताः (have been offered) ॥१६॥

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) पहले पर्वतेश्वर ने उसे धारण किया था—क्या यह कहा है ? स्पष्ट ही इसी के आभूषण हैं (सुनाकर) ये आभूषण भी चाणक्य के द्वारा भेजे गये किसी व्यापारी ने मेरे हाथों बेच दिया ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) अहो सुश्लिष्टोऽभूच्छत्रुप्रयोगः । कुतः-

लेखोऽयं न ममेति नोत्तरमिदं मुद्रा मदीया यतः
सौहार्दं शकटेन खण्डितमिति श्रद्धेयमेतत्कथम् ।
मौर्ये भूषणविक्रयं नरपतौ को नाम संभावये-
त्तस्मात्संप्रतिपत्तिरेव हि वरं न ग्राम्यमत्रोत्तरम् ॥ १८ ॥

मलयकेतु—आर्य, ये आभूषण कभी पहले मेरे पिता के शरीर पर शोभा करते थे, और विशेषकर चन्द्रगुप्त के अधिकार में गये हुए—खरीद कर प्राप्त करना कैसे युक्तिसंगत है। अथवा—युक्तियुक्त ही है। क्योंकि—

क्रूर आपके द्वारा अधिक लाभ की इच्छा से, चन्द्रगुप्त के लिए हम इन आभूषणों के मूल्य बनाये गये हैं ॥ १७ ॥

English—*Rakshasa*—(*To himself*), *How so, he says these* were worn by Parvateswer, evidently they must be his. Again these were sold to me by merchants set on by Chanakya

Malayaketu—Noble sir, 'got by purchase from merchants' does not seem possible, because it had been previously worn by father, especially what fell in to the hands of Chandragupta, or perhaps it is quite possible. For :—

By you a cruel man, ourselves are the price offered for these to Chandragupta, who sells them wishing to make a more valuable profit. 17.

टिप्पणी—इस श्लोक में परिवृत्ति अलङ्कार तथा अनुष्टुप् छन्द है।

विमला

राक्षसः—[स्वगतम् = अव्यक्तम् (to himself)], अहो = आश्चर्यम् (Ho), शत्रोः प्रयोगः = चाणक्यकूटनीतिविधिः (the enemy's plot), सुश्लिष्टः = सुश्लिष्टः (well laid), अभूत् = जातः (was), कुतः = कस्मात् For :—

अन्वयः—अयम्, लेखः, मम, न इति, इदम्, न, उत्तरम्, यतः, मुद्रा, मदीया, शकटेन, सौहार्दम्, खण्डितम्, इति, एतत्, कथम्, श्रद्धेयम्, नरपतौ, मौर्ये, भूषणविक्रयम्, कः, नाम, संभावयेत्, तस्मात्, अत्र, सम्प्रतिपत्तिः, एव, हि, वरम्, ग्राम्यम्, उत्तरम्, न ॥ १८ ॥

व्याख्या—अयम् = एषः कूटप्रयोगाश्रयः (This), लेखः = पत्रम् (letter), मम न = नैतत्पत्रम् मया लिखितमिति = (is not my), इति = इत्थम् (like so), इदम् = एतत् (this is), न = अयुक्तम् (not), उत्तरम् = प्रतिवचनम् (answer), यतः = यस्मात् (because), मुद्रा = लेखे प्रदत्ता अङ्गुलिमुद्रा (the seal), मदीया = मामकीना (mine), शकटेन = शकटदासेन (by Shakatadas), सौहार्दम् = मित्रत्वम्

मलयकेतुः—एतदार्यं पृच्छामि ।

राक्षसः—(सबाष्पम् ।) कुमार, य आर्यस्तं पृच्छ । वयमिदानीमनार्याः संवृत्ताः ।

(friendship), खण्डितम्=भग्नम् (has been severed), इति=(only for पादपूर्यर्थम्), एतत्=वच (it), कथम्=केन प्रकारेण (how is), श्रद्धेयम्= विश्वासयोग्यम् (believable), नरपतौ=राज्ञि (the king), मौर्ये=चन्द्रगुप्ते (in maurya), भूषणविक्रयम्=अलङ्कारणमूल्यग्रहणम् (the sale of ornaments), क=को जनः (who), नामेति सम्भावनायाम्–सम्भावयेत्=विश्वसेत् (would think), तस्मात्=अत. (so), अत्र=अस्मिन्विषये (in this matter), सम्प्रतिपत्तिः= स्वीकरणमेव (admission), एव=इति निश्चये (indeed), हि=यत वरम्= श्रेष्ठम् (is preferable), ग्राम्यम्=अयुक्तम् (the ordinary), उत्तरम्=आलापः (reply), न=नवरम् (not) ॥ १८ ॥

हिन्दी—राक्षस—(मन ही मन) अहो ! शत्रु की व्यूह-रचना दृढ है । क्योंकि —

यह लेख मेरा नहीं है, यह उत्तर बन नहीं पाता—क्योंकि इस पर मुद्रा मेरी है । शकट दास ने मित्रता तोड दी है, यह कैसे विश्वास के योग्य हो सकता है ? राजा चन्द्रगुप्त के विषय में आभूषणों का बेचना—कौन सम्भावना कर सकता है ? अत इस विषय में गँवारू उत्तर की अपेक्षा स्वीकार कर लेना ही श्रेष्ठ है ॥ १८ ॥

English—*Rakshasa*—(To himself), Oh, The foe's plot was skilfully laid. For .—

'This is not my document' is not proper answer, because the seal is mine. How it can be believed that friendship has been severed by Shakatdasa ? Again who will possibly expect the sale of ornaments by Maurya the king ? So in this matter admission indeed is better than a churlish reply. 18

टिप्पणी—उत्तरम्—शास्त्रों में उत्तर चार प्रकार के माने गये हैं । (१) मिथ्या उत्तर (२) प्रत्यवस्कन्दन (३) सम्प्रतिपत्ति एवं (४) प्राङ्न्याय । यहाँ राक्षस ने मलयकेतु द्वारा पूछे गये प्रश्नों के विषय में विचिसम्मत विचार कर 'सम्प्रतिपत्ति' उत्तर का ही सहारा लिया है । सम्प्रतिपत्ति का लक्षण है —श्रुत्वाभियोगं प्रत्यर्थी यदि तं प्रतिपद्यते । सा तु सम्प्रतिपत्तिः स्यात् शास्त्रवद्भिरुदाहृता ॥ इस श्लोक में काव्यलिङ्ग अलङ्कार तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है । प्रसाद गुण एवं वैदर्भी रीति है ।

विमला

मलयकेतु—आर्यम्=(Noble sir), एतत् (this), पृच्छामि (I ask)

राक्षस—[(सबाष्पम्=नेत्राश्रुणा सह=with tears)] कुमार (Prince), यः=पुरुषः (who is), आर्यः=मान्य (noble), तम्=पुरुषविशेषम् (to whom), पृच्छ= जिज्ञासस्व (ask), वयम् (we), इदानीम्=साम्प्रतम् (now), अनार्या.=आर्यत्व रहिता (not a man of honour), संवृत्ता.=जाता. (have turned).

मलयकेतु —

मौर्योऽसौ स्वामिपुत्रः परिचरणपरो मित्रपुत्रस्तवाहं
दाता सोऽर्थस्य तुभ्यं स्वमतमनुगतस्त्वं तु मह्यं ददासि ।
दास्यं सत्कारपूर्वं ननु सचिवपदं तत्र ते स्वाम्यमत्र
स्वार्थे कस्मिन् समीहा पुनरधिकतरे त्वामनार्यं करोति ॥ १९ ॥

अन्वयः—असौ, मौर्यं, स्वामिपुत्र, परिचरणपर, अहम, तव, मित्रपुत्र, स, स्वमतम, तुभ्यम्, अर्थस्य, दाता, तु, अनुगत, त्वम्, मह्यम्, ददासि, तत्र, सत्कारपूर्वम्, सचिवपदम्, दास्यम्, ननु, अत्र, ते, स्वाम्यम्, पुन, अधिकतरे, कस्मिन्, स्वार्थे, समीहा, त्वाम, अनार्यम, करोति ॥ १९ ॥

व्याख्या—असौ = एष (this), मौर्यं = चन्द्रगुप्त (Chandragupta), स्वामिपुत्रः=प्रभुतनय (master's son), परिचरणपर=सवासक्त (in constant attendance), अहम = मलयकेतु (I), तव = भवत (your) मित्रपुत्र = सुहृत्तनय (friend s son) स = असौ (he), स्वमतम् = स्वाभिप्रायानुरूपम् (your own humour), तुभ्यम् = भवते (for you), अर्थस्य = धनस्य (of wealth), दाता= वितरणकर्ता (giver), तु = किन्तु (but), अनुगत = अनुसृत सन् (following), त्वम् (you), मह्यम् (for me), ददासि = वितरसि (give), तत्र = मौर्ये (there), सत्कारपूर्वम् = सम्मानपुरस्सरम् (by honour) सचिवपदम् = मन्त्रिपदम् (the post of minister), दास्यम् = भृत्यत्वम् (slavery), ननु = भो (oh), अत्र = अस्मिन् स्थाने (here), ते = तव (your), स्वाम्यम् = प्रभुत्वम् (mastery), पुन (again) अधिकतर = इतोऽपि विशेष (weightier), कस्मिन् स्वार्थे = स्वाभिलषित (for which self interest), समीहा = वाञ्छा (wishing) त्वाम् = भवन्तम् (to you), अनार्यम् = असदाचारम् (ignoble), करोति = विदधाति (does make) ॥ १९ ॥

हिन्दी—मलयकेतु—आर्य से यह पूछना चाहता हूं ।

राक्षस—(अश्रुपूर्ण होकर) कुमार, अब जो आप हो उनसे पूछिए । मैं अब अनार्य हो चुका हूं ।

मलयकेतु—वह मौर्यपुत्र चन्द्रगुप्त तुम्हारे मालिक का बेटा है और मैं तुम्हारी सेवा में तत्पर तुम्हारे मित्र का पुत्र हूं । वहाँ स्वेच्छापूर्वक चन्द्रगुप्त तुम्हें धन देने वाला है, किन्तु, यहाँ अनुसरण किए जाने पर तुम मुझ धन देते हो । वहाँ सम्मान दिये ये सचिव पद को दासता है और यहां तुम्हारी प्रभुता है । फिर इससे अधिक वह कौन सी स्वार्थपरक इच्छा तुम्हें अनार्य बना रही है ? ॥ १९ ॥

English—*Malayaketu*—I ask Noble sir this

Rakshasa—(With tears) Prince ask him who is noble man I have now turned ignoble

Malayaketu—That Maurya is your master s son, while I am the son of your friend in constant attendance He, well served, is the giver of wealth to you, but unto me you give following your own humour There you will have, indeed, the post of minister which

राक्षस—कुमार, एवमयुक्तव्याहारिणा निर्णयो दत्तः । भवतु तव को दोष. । (मौर्योऽसौ स्वामिपुत्रः (५।१९) इति युष्मदस्मदोर्व्यत्ययेन पठति ।)

मलयकेतु—(लेखमलङ्करणस्थगिका च निर्दिश्य ।) इदमिदानीं किम् ।

राक्षस—(सबाष्पम् ।) विधिविलसितम् । कुतः

भृत्यत्वे परिभावधामनि सति स्नेहात् प्रभूणां सता
पुनेभ्य· कृतवेदिनां कृतधिया येषां न भिन्ना वयम् ।
ते लोकस्य परीक्षका· क्षितिभृत· पापेन येन क्षता·
स्तस्येदं विपुलं विधेर्विलसितं पुंसा प्रयत्नच्छिद ॥ २० ॥

---

is but slavery preceded by honour, while here mastery Regard for which weightier self interest than does make you dishonour ? 19

टिप्पणी—इस श्लोक में यथासख्य अलंकार तथा स्रग्धरा वृत्त है ।

विमला

राक्षस—कुमार (Prince) एवम् = इत्थम् (like this) अयुक्त व्याहरति तच्छीलोऽयुक्तव्याहारी तेन अयुक्त व्याहारिणा = अनुचितवादिना (in uttering these wnworthy things) निर्णय = निर्णायकमुत्तरम् (the decisive answer) दत्त = दातुमुपदिष्ट (have given) भवतु = यातु (well) तव = भवत· (your) को दोष (is it not fault) (मौर्योऽसौ स्वामिपुत्र ५।१९) "That Maurya etc 5 19" इति युष्मदो व्यत्ययेन = युष्मत्पदस्थानेऽस्मत्पदस्याऽस्मत्पदस्थाने युष्मत्पदस्य च परिवर्त्तनम् कृत्वा (substituting the second personal pronoun for the first, and vice versa) पठति = वाचयति (he repeats the verse)

मलयकेतु—(लेखम् = पत्रम्=letter) अलङ्करणस्थगिकाम्=आभरणपेटिकाम् (the box containing the ornaments), च=पुन (and), निर्दिश्य = दर्शयित्वा वा उद्दिश्य पठति (pointing), इदम्=एतत् (this), इदानीम् = अधुना (now), किम् (what)

राक्षस—[सबाष्पम्=साश्रुनयनम्=(with tears)], विधेर्विलसितम् विधिविलसितम् = दैवकृतम् (fate's play), इदम्=एतत् (this), कुत =For—

अन्वयः—कृतधियाम्, कृतवेदिनाम्, सताम्, येषाम्, प्रभूणाम्, परिभावधामनि, भृत्यत्वे सति, स्नेहात्, वयम्, पुत्रेभ्य , भिन्ना , न लोकस्य, परीक्षका , ते, क्षितिभृत , येन, पापेन, क्षता , पुसाम्, प्रयत्नच्छिद तस्य, विधे , इदम्, विपुलम्, विलसितम् ॥२०॥

व्याख्या—कृता = परिनिष्ठिता धीर्येषाम् ते कृतधियस्तेषाम् कृतधियाम् = परिनिष्ठितबुद्धीनाम् (of refined intellect), कृत विदन्ति तच्छील कृतवेदिनस्तेषां कृतवेदिनाम्= उपकारज्ञानाम् (being grateful), सताम् = साधुशीलानाम् (good man s), येषां = नन्दादीनाम् प्रभूणाम् = स्वामिनाम् (masters), परिभावस्य धाम परिभावधाम तस्मिन् परिभावधामनि = तिरस्कारास्पदे (the abode of insult), भृत्यत्वे सति = दास्यत्वे जाते (was the relation of servitude), स्नेहात्=प्रेम्णः (out of

नलयकेतुः—(सरोषम् ।) किमद्यापि निह्नूयते एव । विधेः क्लिलैतद्व्यवसितम् ; न लोभस्य । अनार्य,

affection), वयम् (we), पुत्रेभ्य=सुतेभ्यः (from sons), भिन्ना =अन्याः (different), न=नहि (not), लोकस्य=जनस्य (of man), परीक्षकाः=चरित्रवेदिन (proper Judges), ते (they), क्षितिभृतः=राजानः (the kings), येन विधिना (as), पापेन=पापविशिष्टेन (through the accursed), हताः=विनाशिताः (destroyed), पुसाम्=पुरुषाणाम् (men's), प्रयत्नच्छिद्=उद्योगनाशिनः (frustrator of exertions), तस्य (that), विधेः=दैवस्य (Fat's), इदम्=एतत् (this), विपुलम्=महत् (vast), (play) ॥ २० ॥

हिन्दी—राक्षस—ऐसी अनुचित बातें कहते हुए कुमार ने अपना निर्णय पहले ही दे दिया है—अन्तु इसमें तुम्हारा भी दोष क्या ? (मौर्योऽसौ स्वामिपुत्र ५।१९, इस श्लोक को युष्मद् और अस्मद् शब्दों को अदल-बदल कर पढ़ता है ।)

मलयकेतु—(लेख और आभूषण पेटिका की ओर सकेत करके) अच्छा, यह क्या है ?

राक्षस—(आँसू भर कर) भाग्य की विडम्बना है । क्योंकि :—

जो प्रचण्ड बुद्धिमान, कृतज्ञ, एव सज्जन थ, जिन राजाओं के—अनादर के स्थान दासता के रहने पर भी स्नेह के कारण हम लोग पुत्र से भिन्न नहीं थे—वे लोकाचार के सच्चे पारखी थे, किन्तु, जिस पापी ने उन्हें भी समाप्त कर दिया । पुरुषों के प्रयत्न को विनष्ट कर देनेवाली उसी क्रूर नियति की यह विडम्बना है ॥ २० ॥

English—*Rakshasa*—Prince, in speaking these unworthy reply, you have yourself given the decisive answer. Well, it is not your fault. (Repeats 'मौर्योऽसौ 5/19' with interchange of the second personal pronoun for the first, and vice versa)

Malayaketu—(Pointing at the letter and the box containing the ornaments) And what is this here ?

Rakshasa—(with tears) Fate's play For :—

It is the vast work of fate, that cuts short human which the villain destroyed those kings who were the proper judges of men, and who, masters as they were, being grateful and of refiend intellect, and to whom out of affection, we were not different from sons, although there was the relation of servitude, which is the abode of insults, not withstanding. (20).

टिप्पणी—इस श्लोक में अतिशयोक्ति और परिसख्या के समिश्रण से ससृष्टि अलङ्कार है । इसमें वृत्त शार्दूलविक्रीडित है ।

विमला

मलयकेतु.—[सरोषम्=सकोपम् (angrily), किम्=कथम् (what), अद्यापि=सम्प्रत्यपि (even now), निह्नूयते=गोप्यते (being concealed), एव विधेः=

कन्यां तीव्रविषप्रयोगविषमां कृत्वा कृतघ्न त्वया
विश्रम्भप्रवणः पुरा मम पिता नीतः कथाशेषताम्।
संप्रत्याहितगौरवेण भवता मन्त्राधिकारे रिपौ
प्रारब्धा प्रलयाय मांसवदहो विक्रेतुमेते वयम् ॥ २१ ॥

दैवस्य (fate's), किल निश्चयार्थे एतत्=इदम् (this), व्यवसितम्=कृत्यम् (the work), न लोभस्य (not of greed), अनार्य (Ignoble man),

अन्वय—हे कृतघ्न, पुरा, त्वया, तीव्रविषप्रयोगविषमाम्, कन्याम्, कृत्वा, विश्रम्भप्रवण, मम, पिता, कथाशेषताम्, नीत, अहो, सम्प्रति, मन्त्राधिकारे, आहित गौरवेण, भवता, एते वयम्, प्रलयाय, रिपौ, मांसवत्, विक्रेतुम्, प्रारब्धा ॥ २१ ॥

व्याख्या—कृतं हन्तीति कृतघ्न तत्सम्बुद्धौ हे कृतघ्न=अविश्वासिन् (O, ungrateful one), पुरा=प्राक् (formerly), त्वया=भवता (by you), विषस्य प्रयोग विषप्रयोग तीव्रो विषवियोगो यस्यां सा तीव्रविषप्रयोगा सा चासौ विषमाताम् तीव्र विषप्रयोगविषमाम्=तीव्रहलाहलप्रयोगघोराम् (dangerous by the use of virulent poison), कन्याम्=तनयाम् (the maid), कृत्वा=विधाय (having employed), विश्रम्भप्रवण=अतिविश्वस्त (prone to be trusting), मम= मलयकेतो (my), पिता (father), कथाशेषताम्=क्षयम (to the domain of history), नीत=गमित (got), अहो=आश्चर्यम् (Alas), सम्प्रति=अधुना (now), मन्त्राधिकारे=सचिवपदे (coveting the office of minister) आहितगौरवेण=आहितम् प्राप्तम् गौरवम् येन स तयोक्तस्तेनाहितगौरवेण=प्राप्त महत्त्वेन (attached with a great), भवता=त्वया (by you), एते=त्वयि कृत विश्रम्भा (these), वयम् (we), प्रलयाय=विनाशाय (for destruction), रिपौ-शत्रौ (to the enemy), मांसवत्=क्रव्यमिव (like meat), विक्रेतुम्=पणायितुम् (*to be sold*), प्रारब्धा=प्रक्रान्ताधिरीकृता (*going to be*) ॥ २१ ॥

हिन्दी—मलयकेतु—(क्रोध के साथ) क्या अब भी छिपाया जा रहा है? यह नियति की विडम्बना है, लोभ का नहीं? अनार्य!

हे कृतघ्न! प्रथम अत्यन्त ही तीक्ष्ण विष के प्रयोग से घातक बनी बालिका का उपयोग कर, आपने अपने ऊपर अत्यन्त विश्वस्त मेरे पिता का विनाश कर दिया। हा कष्ट, अब मन्त्रिपद के अभिलाषी आपके द्वारा हम विनाश के लिए शत्रु के पास मांस की तरह बेचे जा रहे हैं ॥ २१ ॥

English—*Malayaketu*—(angrily) What! even now being concealed it is indeed the work of fate not of greed! ignoble man!

O, you ungrateful person, previously, having a virulent poison, consigned my father, trustingly following you, to the domain of history And now esteem having been placed in you in the department of counsel, Alas! we are going to be sold by you like meat to the enemy for utter extinction 21)

राक्षसः—(स्वगतम् ।) अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः। (प्रकाशम् । कर्णौ पिधाय।) शान्तं पापं शान्तं पापम्। नाहं पर्वतेश्वरे विषकन्यां प्रयुक्तवान्।

मलयकेतुः—केन तर्हि व्यापादितस्तातः।

राक्षसः—दैवमत्र प्रष्टव्यम्।

मलयकेतुः—(सक्रोधम् ।) दैवमत्र प्रष्टव्यम्। न क्षपणको जीवसिद्धिः।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) कथं जीवसिद्धिरपि चाणक्यप्रणिधिः। हन्त, रिपुभिर्मे हृदयमपि स्वीकृतम्।

टिप्पणी—'मन्ववत्' में सादृश्यार्थक 'वत्' शब्द के प्रयोग के कारण इस श्लोक में श्रौती पूर्णोपमा अलंकार है वृत्त है शार्दूल विक्रीडित।

विमला

राक्षस—[स्वगतम्=आत्मगतम्=(To himself)], गण्डस्य=व्रणविशेषस्य (the carbuncle), उपरि (on), अयम्=एष (this), अपरः=अन्यः (a fresh), स्फोटः=व्रणः (boil), [प्रकाशम्=(aloud), कर्णौ पिधाय=(blocking the ears)], शान्तम् पापम्, शान्तम् पापम्=दीप्त्याया द्विरुक्तिः (Begone Sin ! Begone Sin !), अहम्=राक्षस (I), पर्वतेश्वरे (on Parvateswara), विषकन्याम्=विषरचिततनयाम् (poision maid), न=नहि (not), प्रयुक्तवान्=आरोपितवान् (set).

मलयकेतु—तर्हि=तदा (then), केन=क्रूरकर्मकारिणा (by whom), तातः=पिता (father) व्यापादितः=विनाशितः (killed)

राक्षस—अत्र=अस्मिन् विषये (in this matter), दैवम्=भाग्यम् (to fate), प्रष्टव्यम्=(should be questioned)

मलयकेतु—[सक्रोधम्=सकोपम्=(angrily)], दैवमत्र प्रष्टव्यम् (fate should be questioned about it), न=नहि (not), क्षपणक=बौद्धसन्यासिवेषः (the mendicant), जीवसिद्धिः (Jivasidhi)

राक्षस—[स्वगतम्=(to himself),] कथम्=किम् (how so), जीवसिद्धिरपि (Jivasidhi also), चाणक्यप्रणिधिः=कौटिल्यगूढचरः (an emissary of Chanakya) हन्त=खेदे (alas), मे=मम (my), हृदयमपि=चित्तमपि (heart too), रिपुभिः=शत्रुभिः (by enemies), स्वीकृतम्=गृहीतम् (is owned)

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) यह फोड़े पर फुन्सी है। (प्रकट रूप में) पाप शान्त हो, पाप शान्त हो ! मैंने महाराज पर्वतेश्वर के लिए विषकन्या का प्रयोग नहीं किया था।

मलयकेतु—तो किसने पिता जी की हत्या की ?

राक्षस—इस विषय में भाग्य से ही पूछना चाहिए।

मलयकेतु—(क्रोध के साथ) इस विषय में भाग्य से पूछना चाहिए, क्षपणक जीवसिद्धि से नहीं।

राक्षस—(अपने आप) क्या जीवसिद्धि भी चाणक्य का गुप्तचर है ? हा कष्ट ! शत्रुओं ने मेरा हृदय भी अपने अधिकार में कर लिया है।

मलयकेतुः—(सक्रोधम् ।) भासुरक, आज्ञाप्यतां शेखरसेनः—'य एते राक्षसेन सह सुहृत्तामुत्पाद्यास्मच्छरीरद्रोहेण चन्द्रगुप्तमाराधयितुकामाः पञ्च राजानः कौलूतश्चित्रवर्मा मलयनृपतिः सिंहनादः काश्मीरः पुष्कराक्षः सिन्धुराजः सुषेणः पारसीकाधिपो मेघनाद इति, एतेषु त्रयः प्रथमे मदीयां भूमिं कामयन्ते ते गम्भीरश्वभ्रमभिनीय पांशुभिः पूर्यन्ताम्। इतरौ हस्तिबलकामुकौ हस्तिनैव घात्येताम्' इति ।

English—*Rakshasa*—(To himself) This is fresh boil on the carbuncle. (Alould blocking the ears) Begone Sin, Begone Sin ! I never set the poision maid agaist Parvatesever.

Malayaketu--Who then killed my father.

Rakshasa—Ask Destiny.

Malayaketu--(Angrily) I should question Destiny and not mendicant Jivasidhi.

Rakshasa--(Aside) Jivasidhi too, a Spy of Chanakya. My heart is also owend by the enemies.

विमला

मलयकेतुः—[सक्रोधम् (In wrath)], भासुरक (Bhasurak), आज्ञाप्यताम्=आदिश्यताम् (let be orderd), शेखरसेन=एतदाख्यः सेनापतिः (Shekharsen the Commander-in-chief), ये=चित्रवर्मप्रभृतयः (of these), पञ्च-राजान=नृपतय. (five kings), एतेन=अनेन (by this), राक्षसेन सह=तदाख्येन मन्त्रिणा सार्द्धम् (with Rakshasa), सौहार्दम्=मित्रत्वम् (friendship), उत्पाद्य=सम्पाद्य (having contracted), अस्माकं शरीरम् अस्मच्छरीरम् तस्य द्रोहस्तेन अस्मच्छरीरद्रोहेण=मत्कायविनाशेन (by injuring our person), चन्द्रगुप्तम्=मौर्यम् (to Chandragupta), आराधयितुम् कामो येषां ते आराधयितुकामाः=सेवितुमनसः (wish to gain Chandragupta's favour), एतेषु=पञ्चसु राजसु (among the five kings), त्रयः प्रथमे (first three), कौलूतश्चित्रवर्मा (Chitraverma of Kuluta), मलयनृपतिः सिंहनादः (Singhnada the king of Malaya), काश्मीरः पुष्कराक्षः (Puskaraksha of Kashmir), मदीयाम् (my), भूमिम्=राज्यम् (lands), कामयन्ते=वाञ्छन्ति (covet), ते=त्रयः (them), गम्भीरश्वभ्रम्=गभीरगर्त्तम् (deep pit), अभिनीय=उपनीय (should be taken). पांशुभिः=रजोभि. (with sand), पूर्यन्ताम्=आच्छाद्यन्ताम् (covered over), इतरौ=अन्यौ the other) सिन्धुराज. सुषेणः (Sukhen the king of Sindhu), and पारसीकाधिपो मेघनादः (Meghnada the lord of Persia), हस्तिबलकामुकौ=गजसैन्याभिलाषुकौ (wish to have elephants), हस्तिनैव=गजेनैव (by means of an elephant), घात्येताम्=विनाश्येतामिति (should be killed).

पुरुषः—तथा। (इति निष्क्रान्तः।)

मलयकेतुः—(सक्रोधम्।) राक्षस राक्षस, नाहं विश्रम्भघाती राक्षसः। मलयकेतुः खल्वहम्। तद्गच्छ। समाश्रीयतां सर्वात्मना चन्द्रगुप्तः। पश्य—

विष्णुगुप्तं च मौर्यं च सममप्यागतौ त्वया।
उन्मूलयितुमीशोऽहं त्रिवर्गमिव दुर्नयः ॥ २२ ॥

पुरुषः—तथा (As your Highness commands), [इति निष्क्रान्तः=Exit)].

मलयकेतु—[सक्रोधम् (Angrily)], राक्षस, राक्षस=द्विरुक्तिरतिशयक्रोधावेशात् Rakshasa, Rakshasa ! अहम् (I), न=नहि (not), विश्रम्भघाती=विश्वासघातकः (the murderer of the confiding), राक्षसः (Rakshasa), अहम् (I), खलु=निश्चयेन (Indeed), मलयकेतुः (Malayaketu), तद्=तस्मात् (so), गच्छ=स्थानान्तरम् याहि (go), सर्वात्मना=सर्वप्रकारेण (with all your heart), चन्द्रगुप्तः (to Chandragupta), समाश्रीयताम्=समेव्यताम् (serve), पश्य (see)

हिन्दी—मलयकेतु— क्रोध के साथ) भागुरक शिखरसेन को आज्ञा दो 'जो ये पाँच राजे राक्षस के साथ मैत्री करके चन्द्रगुप्त की सेवा करने की इच्छा वाले मेरे प्राणघात की योजना बना रहे थे—कुलूत देश का अधिपति चित्रवर्मा, मलय देश का राजा सिंहनाद, कश्मीर का शासक पुष्कराक्ष, सिन्धुराज सुषेण और पारसीक देश का अधिपति मेघनाद है—इनमें प्रथम तीन मेरी भूमि चाहते हैं। इन्हें गहरे गड्ढे में गाड़कर मिट्टी से ढक दिया जाय। अन्य दो जो हमारी हस्तिसेना के इच्छुक हैं, उन्हें हाथियों के पैरों तले रौंदवा दिया जाय।

पुरुष—जैसी आज्ञा। (कहकर निकल गया)

मलयकेतु— क्रोध के साथ) राक्षस, राक्षस ! मैं विश्वासघात करने वाला राक्षस नहीं हूँ, मैं मलयकेतु हूँ। जाओ ! सर्वात्मना चन्द्रगुप्त की सेवा करो। देखो :—

English—*Malayaketu*—(In wrath) Bhasuraka ! Let Shikharsena the *Commander-in-chief be ordered thus-of these five kings-Chitraverma* of Kuluta, singhnad king of Malaya, Puskaraksa the king of Kashmira, Sukhen king of Sindhu and Meghnad of Persia having contracted friendship with Rakshasa wish to gain *Chandragupta's* favour by injuring our person, the first there covet my territory; they should be taken to a deep pit and covered over with sand, let the other two, who wish to have elephants be killed with elephant.

Man—As the Prince commands. (Exit)

Malayaketu—(In a wrath) Rakshasa ! Rakshasa ! I am not a Rakshasa the murderer of the confiding. I am indeed Malayaketu, go, and serve Chandragupta with all your heart. See :—

विमला

अन्वयः—अहम्, त्वया, समम्, आगतौ, विष्णुगुप्तम्, च, मौर्यम्, अपि, दुर्नयः, त्रिवर्गम्, इव, उन्मूलयितुम्, ईशः ॥ २२ ॥

भागुरायणः—कुमार, कृत कालहरणेन। साम्प्रत कुसुमपुरोपरोधायाज्ञाप्यन्तामस्मद्बलानि।

गौडीनां लोध्रधूलीपरिमलबहुलान्धूमयन्तः कपोलान्
क्लिश्नन्तः कृष्णिमानं भ्रमरकुलरुचः कुञ्चितस्यालकस्य।
पांशुस्तम्बा बलानां तुरगखुरपुटक्षोभलब्धात्मलाभाः
शत्रूणामुत्तमाङ्गे गजमदसलिलच्छिन्नमूलाः पतन्तु ॥ २३ ॥

व्याख्या—अहम् = मलयकेतु (I), त्वया = भवता (with you), समम् = सार्द्धम् (with), आगतौ = समायातौ (advanced), विष्णुगुप्तम् = कौटिल्यम् (Chanakya), च = पुन (and), मौर्यम् = चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta), अपि (also), दुर्नय = दुष्टानीति (bad policy), त्रिवर्गम् = धर्मार्थकामसमूहम् (the group of three), (piety, prosperity and propensity), इव = यथा (like), उन्मूलयितुम् = विनाशयितुम् (to uproot), ईश = समर्थ (able), ॥ २२ ॥

हिन्दी—मैं तुम्हारे साथ आये हुए चाणक्य एव चन्द्रगुप्त को भी उखाड फेंकने में अकेला उसी प्रकार समर्थ हू जैसे एक ही आचारदोष मनुष्य के त्रिवर्ग—धर्मार्थकाममोक्ष को विनष्ट कर देता है ॥ २२ ॥

English—I am able to uproot Chanakya and Chandragupta also though advanced with you, as bad policy does the three objects of life 22

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा अलङ्कार एव अनुष्टुप छन्द है।

विमला

भागुरायण—कुमार (Prince), कालहरणेन=समययापनेन (longer delay), कृतम = अलम् (must no), साम्प्रतम् = अधुना (now), कुसुमपुर = (Kusum pura), उपरोधाय = रोधम् (to lay siege), अस्मद्बलानि = अस्मत्सैन्यानि (our forces), आज्ञाप्यन्ताम् = प्रेष्यन्ताम् (be ordered)

अन्वयः—गौडीनाम्, लोध्रधूलिपरिमलबहुलान्, कपोलान्, धूमयन्त, भ्रमरकुलरुच, कुञ्चितस्य, अलकस्य, कृष्णिमानम्, किरन्त, बलानाम्, तुरगखुरपुटक्षोभलब्धात्मलाभा, गजमदसलिलच्छिन्नमूला, पांशुस्तम्बा, शत्रूणाम्, उत्तमाङ्गे, पतन्तु ॥२३॥

व्याख्या—गौडीनाम् = गौडदेशवासिस्त्रीणाम् (the women of Gauda), लोध्राणाम् पुष्पविशेषाणाम् या धूल्य परागा तेषा परिमलेन आमोदेन बहुलान् व्याप्तान् लोध्रधूलिपरिमलबहुलान् = लोध्रपुष्पविशेषपरागामोदव्याप्तान् (rich in the fragrance of the pollen of 'Lodhra' flowers), कपोलान् = गण्डप्रदेशान् (to the cheeks), धूमयन्त = मलिनयन्तः (a smoky hue), भ्रमराणाम् कुलं = भ्रमरकुलतस्य या रुक् ता इव या रुक् यस्य तादृशस्य भ्रमरकुलरुच = मधुपवृन्दकान्ते (resembling a swarm of black bees), कुञ्चितस्य = कुटिलस्य (curly), अलकस्य = चूर्णकुन्तलस्य (hair), कृष्णिमानम् = कार्ष्ण्यम् (the black colour), किरन्त = अपनयन्त (obscuring), बलानाम् = अस्मत्सैन्यानाम् (our forces), तुरगाणां खुरपुटा तुरगखुरपुटा तुरगखुरपुटै क्षोभस्तुरगखुरपुटक्षोभस्तेन लब्ध

(सपरिजनो निष्क्रान्तो मलयकेतुः ।)

राक्षसः—(सावेगम् ।) हा धिक्कष्टम् । तेऽपि घातिताश्चित्रवर्मादयस्तपस्विनः । तत्कथं सुहृद्विनाशाय राक्षसश्चेष्टते न रिपुविनाशाय । तत्किमिदानीं मन्दभाग्यः करवाणि ।

आत्मलाभो येस्ते तुरगखुरपुटक्षोभलब्धात्मलाभाः = अश्वशफाग्रचूर्णनप्राप्तजन्मानः (risen from the tread of the hoofs of horses), गजानाम् मदाः गजमदास्त एव सलिलानि तैश्छिन्नम् मूलम् येषाम् ते गजमदसलिलच्छिन्नमूलाः = करिमदवारि विनाशितजन्माः (having their roots severed by the rut-water of the elephants), पांशुस्तम्भाः = रजोराशयः (the columns of dust), शत्रूणाम् = रिपूणाम् (of the enemies), उत्तमाङ्गे = शिरसि (on the head), पतन्तु = गिरन्तु (let descend), ॥ २३ ॥

हिन्दी—भागुरायण—कुमार, समय व्यर्थ न नष्ट किया जाय । कुसुमपुर पर घेरा डालने की आज्ञा अब हमारे सैनिकों को दी जाय ।

गौडदेशीय युवतियों के लोध्र-धूलि से सुवासित कपोलों को धूमिल करते हुए, भ्रमरपंक्ति की तरह काले लहराते घुंघराले उनके बालों की नालिमा को विनष्ट करते हुए, सेनाओं के घोड़ों के खुरों के अग्रभाग की चोटों से उत्पन्न होने वाले, गजों के मदजल से नष्ट मूल वाले, धूलियों के उठने हुए बादल शत्रुओं के मस्तक पर पड़े । २३ ॥

English—*Bhagurayan*—Prince, away with wasting of time. Let our forces be now ordered to lay siege to Kusumpura.

Let the columns of dust, the attainment of whose self is derived from the pounding with the hoofs of the cavalry and whose bases *are detached by the rut water of the elephants, descend on the heads* of enemies, imparting a smoky hue to the cheeks of the women of Gauda that are rich in the fragrance of the pollens of Lodhra flowers and obscuring the darkness of their curly hair resembling a swarm of black bee. 23.

टिप्पणी—धूमयन्तः—धूम + मतुप् + णिच् + शतृ + विभक्तिकार्य । कृष्णमानम्—कृष्ण + इन णिच् + कृष्णिमा तम् । इस श्लोक में :—

(१) कपोल और अलक के निजरागपूर्वक पांशुगुणग्रहण करने के कारण तद्गुण अलङ्कार है । (२) भ्रमरकुलरुच में 'इव' शब्द के अभाव के कारण—लुप्तोपमा अलङ्कार है । (३) 'गजमदसलिल' में रूपक अलङ्कार है । (४) पांशु-वृद के कपोल, अलक और शत्रु के मस्तिष्क के साथ सम्बन्ध से पर्याय अलङ्कार है । (५) रिपुजय के लिए सैन्यसमारोह के स्वाभाविक वर्णन से स्वभावोक्ति का संकर है । स्रग्धरा वृत्त है ।

विमला

(सपरिजन=परिजनसहितः, निष्क्रान्तः = बहिर्गतः, मलयकेतुः)

राक्षसः—[सावेगम्=सचिन्तम् (With agitation)] हा धिक्=हा इति खेदे, धिगिति निन्दनीयम् (oh, fie), कष्टम्=दुःखम् (what a misfortune !), तेऽपि (they

किं गच्छामि तपोवनं न तपसा शाम्येत् सवैरं मनः
किं भर्तृ नुयामि जीवति रिपौ स्त्रीणामियं योग्यता।
किं वा खड्गसखः पताम्यरिबले नैतच्च युक्तं भवे-
च्चेतश्चन्दनदासमोक्षरभसं रुन्ध्यात् कृतघ्नं न चेत् ॥ २४ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

पञ्चमोऽङ्कः ।

---

too), तपस्विनः=तपश्चरणशीलाः (poor Chitraverma and others), घातिताः=विनाशिता. (are slain), तत्=तस्मात् (so), राक्षसः (Rakshasa), सुहृद्विनाशाय=मित्रविघाताय (for the destruction of his frineds), कथम्=कुतः (how), चेष्टते=उद्युङ्क्ते (is working), न रिपुविनाशाय=न शत्रूच्छेदाय (not of his enemies), तत्=तस्मात् (so), इदानीम्=अधुना (now), मन्दभाग्यः=भाग्यहीनः (an unlucky man), किं करवाणि=किं विदधानि (what can I do).

अन्वयः—किम्, तपोवनम्, गच्छामि, तपसा, सवैरम्, मनः, न, शाम्येत, रिपौ, जीवति, किम्, भर्तृन्, अनुयामि, इयम्, स्त्रीणाम्, योग्यता, वा, खड्गसखः, अरिबले, पतामि, किम्, एतत्, च, न युक्तम्, चन्दनदासमोक्षरभसम्, चेतः, रुन्ध्यात्, चेत्, न, कृतघ्नम् भवेत् ॥ २४ ॥

व्याख्या—किं तपोवनम् गच्छामि=तपश्चरणार्थमरण्यम् यामि (shall I go to a penance-grove), तपसा=तपश्चरणेन (by penance), सवैरम्=सामर्षम् (revengeful), मनः=चित्तम् (mind). न शाम्येत्=न प्रशाम्येत् (will feel no relief), रिपौ=शत्रौ (foe), जीवति=विद्यमाने (alive), भर्तृन्=स्वामिनः (my master), किं अनुयामि=अनुगच्छामि (shall I follow), इयम् (this), स्त्रीणाम्=नारीणाम् (of women), योग्यता=कर्म (is a course), वा=अथवा (or), खड्गसखः=असिधारीसन् (having the sword for my companion), अरिबले=शत्रुसैन्ये (on the forces of the enemies), पतामि (fall), किम् (what), एतत् (this), च=पुनः (and), न युक्तम्=न समुचितम् (is not proper), चन्दनदासमोक्षरभसम्=चन्दनदासपरित्राणव्यग्रम् (is anxious to bring about the release of Chandandasa), चेतः=मनः (my heart), रुन्ध्यात्=मां निवारयति (not allowed me), चेत्=स्यात् (if), न=नहि (not), कृतघ्नम्=अकृतज्ञम् (ungrateful), भवेत्=स्यात् (would be). ॥ २४ ॥

हिन्दी—(परिजनों के साथ मलयकेतु निकल गया)

राक्षस—(खिन्नता के साथ) हा ! धिक्कार है ! कष्ट है। वे बेचारे चित्रवर्मा प्रभृति भी मार डाले गये। तो क्या राक्षस की हर चेष्टा मित्रविनाश के लिए ही है न कि शत्रुविनाश के लिए ! कितना अभागा हूँ, अब क्या करूँ !

क्या तपोवन चला जाऊँ ? प्रतिशोध की भावना से पूर्ण यह मन क्या तपस्या से शान्त होगा ? प्रभु के पीछे क्या मैं महानन्दों का अनुसरण करूँ ? नहीं, यह अधिकार तो केवल स्त्रियों को ही हुआ करता है। अथवा, तलवार लेकर शत्रु की सेना पर टूट पड़ूँ क्या ? यह भी उचित नहीं जँचता। क्योंकि चन्दनदास की मुक्ति के लिए मेरा मन मुझे रोक रहा है, अगर न रोके तो कृतघ्न होगा ॥ २४ ॥

(इस प्रकार सभी निकल जाते हैं)

(*Exit Malayaketu with attendants*)

English—*Rakshasa*—(With agitation) Oh, fie ! what a misfortune ! Poor Chitraverma and others too are killed. How then ! Is it that Rakshasa is exerting for the destruction of his friends and not for the destruction of his enemies ? What can I do now as an illstarred ?

Shall I go to a penance-grove ? But my revengeful mind would not ease off by penance The enemins still living, should I follow my master ? This step is only for woman. Or, should I fall upon the enemy forces with the sword for a companian ? No, this is not proper step. My heart which is anxious to bring about the release of Chandandasa would not allow me to do so else it would be ungrateful. 24.

(Exeunt omnes)

टिप्पणी—इस श्लोक में दीपक और काव्यलिङ्ग अलङ्कार है। शार्दूल विक्रीडित छन्द है।

मुद्राराक्षस पञ्चम अङ्क की 'विमला' व्याख्या समाप्त।



षष्ठोऽङ्कः

(तत प्रविशत्यलङ्कृत सहर्ष सिद्धार्थक ।)

सिद्धार्थक —

जअदि जलदणीलो केसवो केसिघादी
जअदि अ जणदिट्ठी चन्दमा चन्दउत्तो ।
जअदि जअणकज्ज जाव काऊण सव्व
पडिहदपरपक्खा अज्जचाणक्कणीदी ॥ १ ॥

(जयति जलदनील केशव केशिघाती
जयति च जनदृष्टिश्चन्द्रमाश्चन्द्रगुप्त ।
जयति जयनकार्यं यावत् कृत्वा च सर्वं
प्रतिहतपरपक्षा आर्यचाणक्यनीति ॥ १ ॥)

विमला

[तत = तदन्तर (now) प्रविशति = रङ्गशालान्तर्गतो भवति (Enter) अलङ्कृत = भूषित (decorated), सहर्षं = सानन्द (with joy), सिद्धार्थक = (Siddharthaka)]

अन्वय — जलदनील, केशिघाती, कशव, जयति, च, जनदृष्टिश्चन्द्रमा, चन्द्रगुप्त, जयति, च जयनकार्यं, यावत् सर्वंकृत्वा, प्रतिहतपरपक्षा, आर्यचाणक्यनीति जयति ॥१॥

व्याख्या—जल ददातीति जलदस्तद्वन्नील जलदनील = मेघश्याम (the cloud coloured), केशिघाती=केशिनम् हन्तु शीलोऽस्येति केशिघाती=केशिनाम दैत्यविनाशक (the slayer of Kesi) केशव=कृष्ण (lord Keshava), जयति सर्वोत्कर्षेण वर्त्तताम् (glory to) च=पुन (and) जनानाम् दृष्टिस्तस्या चन्द्रमा = जनदृष्टिश्चन्द्रमा = सकलपुरुषनेत्राह्लादजनकचन्द्र (the moon to the eyes of people), चन्द्रगुप्त = मौर्य (Chandragupta), जयति=सर्वोत्कर्षेण विजयताम् (may victory), च=पुन (and), जयति अनेन इति जयनम् (सैन्यम्), जयनेन जयकारणेन सेनादिना यत्कार्यम् तत् च यावत्=समग्रमयन-कार्यम् (may be gained by means of an army) कृत्वा=सर्वात्मना विधाय (having accomplished all), प्रतिहतपरपक्षा-प्रतिहत परपक्षो यया सा (has destroyed the party of the enemy) आर्यचाणक्यनीति = आर्य कौटिल्यनय (diplomacy of Noble Chanakya), जयति = सर्वोत्कर्षेणवर्त्तताम् (glory to) ॥ १ ॥

हिन्दी—(आभूषणों से सुशोभित प्रसन्न वदन सिद्धार्थक का प्रवेश)
केशी नामक राक्षस को मारनेवाले घनश्याम श्री कृष्ण की जय हो, और लोकनयनानन्दकर

दाव चिरस्स कालस्स पिअवअस्सं समिद्धत्थअं पेक्खामि । (परिक्रम्यावलोक्य च ।) एसो मे पिअवअस्सओ समिद्धत्थओ इदो एव्व उपसप्पदि । जाव ण उपसप्पामि । (तावच्चिरस्य कालस्य प्रियवयस्य समिद्धार्थकं पश्यामि । एष मे प्रियवयस्यः समिद्धार्थक इत एवोपसर्पति । यावदेनमुपसर्पामि ।)

(प्रविश्य समिद्धार्थकः ।)

समिद्धार्थकः—

संदावे तारेसाणं गेहूसवे सुहाअन्ताणं ।
हिअअट्ठिदाणं विहवा विरहे मित्ताणं दूणन्दि ॥ २ ॥
(संतापे तारेशाना गेहोत्सवे सुखायमानानाम् ।
हृदयस्थितानां विभवा विरहे मित्राणां दूनयन्ति ॥ २ ॥)

चन्द्र की तरह चन्द्रगुप्त की विजय हो, और प्रतिपक्ष को सर्वथा अवरुद्ध कर, सैन्य कार्य को भी सम्पादित कर विजय पथ को प्रशस्त करने वाला आर्य चाणक्य की नीति का जय हो ॥ १ ॥

English—(Now enter with joy decorated Siddharthaka)

Glory to the cloud blue Keshava, the slayer of Keshin, glory to Chandragupta also, the moon to the eyes of the people, the diplomacy of Noble Chanakya prospers after having done all the work of conquest with the hostile party suppressed (1)

टिप्पणी—(१) केशवः—कन् = ब्राह्मणम्, ईश रुद्रश्च वर्त्तन्तीति केशवः। (२) केशिघाता—केशिनम् हतवान् इति केशिघाता—कर्मणि हन्' से णिनि प्रत्यय। (३) जलदनीलः—जल ददातीति जलदः। जल उपपद है। दा धातु से—आतोऽनुपसर्गे च' से क प्रत्यय होकर रूप बना है। सिद्धार्थक ने इस प्रथम श्लोक में केशिहन्ता भगवान विष्णु, राजा चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य की विजयिनी नीति की जय घोषणा की है। इस श्लोक के प्रथम चरण में लुप्तोपमा, द्वितीय चरण में रूपक एवं उत्तरार्ध में विभावना अलङ्कार है। इन सबों के अन्योन्य सम्मिश्रण के कारण मुख्यतः इसमें सङ्कर अलङ्कार है। मालिनी छन्द है।

विमला

तावच्चिरस्य कालस्यन्वहोः कालात्परमिति (after a long time), प्रियवयस्यम्= अतिसुन्दरसुहृदम् (my dear friend), समिद्धार्थकम्=एतदाख्यम् (Samiddharthaka), पश्यामि = प्रेक्षे (I will see), [परिक्रम्य = क्रियन्ति पदानि सचर्य (walking round), च = पुन• and, अवलोक्य = सम्प्रक्ष्य = (looking forward)], एषः = अयम् (here), मे = मम (my), वयसा तुल्यो वयस्यः प्रियश्चासौ वयस्यः प्रियवयस्यः=प्रियसुहृद् (dear friend), समिद्धार्थकः (Samiddharthaka), इत एव= इहैव (here), आगच्छति = आयाति (comes), यावत् = तस्मात् (in the mean-while), एनम् = (to him), उपसर्पामि = समीपम् गच्छामि (I will approach). [प्रविश्य = (enter, समिद्धार्थकः = (Samiddharthaka)]

अन्वयः—सन्तापे, तारेशानाम, गेहोत्सवे, सुखायमानानाम, हृदयस्थितानाम, मित्राणाम, विरहे, विभवा, दूनयन्ति ॥ २ ॥

सुद च मए मलअकेदुकडआदो पिअवअस्सओ सिद्धत्थओ आअदो त्ति। ण अण्णेसामि। (इति परिक्रामति। विलोक्य।) एसो सिद्धत्थओ। (श्रुत च मया मलयकेतुकटकात् प्रियवयस्य सिद्धार्थक आगत इति। एनमन्वेषयामि। एष सिद्धार्थक।)

सिद्धार्थक —(उपसृत्य।) कह समिद्धत्थओ। अवि सुह पिअवअस्सस्स। (कथ समिद्धार्थक। अपि सुख प्रियवयस्यस्य।)

व्याख्या—सन्तापे = क्लेशे (In pain), तारेशानाम् = चन्द्रवत्सतापहारिणाम् (like the moon in time of affliction), गेहोत्सवे = गृहोत्सव (on occasions of house festivals), सुखायमानानाम् = सुखमनुभवताम् = (feel delight), हृदयस्थितानाम् = चिन्त्यमानानाम् (present in the heart), मित्राणाम = सुहृदाम् (of friends), विरहे = वियोगे (in separation), विभवा = ऐश्वर्याणि (the riches), दूनयन्ति = क्लेशयन्ति (give pain) ॥ २ ॥

हिन्दी—बहुत दिनों के बाद आज कहीं प्रिय मित्र समिद्धार्थक से भेट होनी है। (घूमते हुए चलकर, सामने देखते हुए) ओह, मेरा प्रियमित्र समिद्धार्थक तो इधर ही आ रहा है। अच्छा चलू, मैं ही चलकर इससे मिलू।

(समिद्धार्थक का प्रवेश)

समिद्धार्थक—दुःख में शीतल शशि की तरह सतापहारक, घर के उत्सवों में सुख का अनुभव करानेवाला, हृदय में सदैव विद्यमान मित्रों के विरह में ऐश्वर्य भी पीडित करते हैं ॥ २ ॥

English—After a long time I will see my dear friend Samiddharthaka (Going round and observing forward) Here, my dear friend Samiddharthaka is coming this very way Let me approach him

(Now enter Samiddharthaka)

Samiddharthaka —Riches pain in the absence of dear friends that are present in the heart, who are like the moon at times of trouble and who feel delight on occasions of family festivals (2)

टिप्पणी— दूनयन्ति दू + क्त कर्त्तरि दून। दून कुर्वन्ति इति दून + णिच्, लट् अन्ति इस श्लोक में दीपक तथा काव्यलिङ्ग अलङ्कार है और छन्द आर्या है।

विमला

श्रुतञ्च मया = आकर्णितम् (I hear), मलयकेतुकटकात् = मलयकेतुशिविरात् (from Malayaketu's camp), प्रियवयस्य = प्रियसुहृत् (dear friend), सिद्धार्थक (Siddharthaka), आगत = समायात (has arrived), एनम् (him), अन्वेषयामि = मृगयिष्यामि (I will find out), इति [परिक्रामति = कियन्ति पदानि चलति (he walks forth), विलोक्य = दृष्ट्वा (looks)] एष (here is), सिद्धार्थक (Siddharthaka)

सिद्धार्थक —[उपसृत्य = समीपमेत्य = (Approaching)], कथम् = किमिति (Ha),

(इत्यन्योन्यमालिङ्गतः ।)

समिद्धार्थक—कुदो सुह जेण तुम चिरप्पवासपच्चागदो वि अज्ज ण मे गेहं आअच्छसि । (कुत सुख येन त्वं चिरप्रवासप्रत्यागतोऽप्यद्य न मे गेहमागच्छसि ।)

सिद्धार्थक—पसीदद् वअस्सो । दिट्ठमेत्तो एव्व अज्जचाणक्केण आणत्तोम्हि जह—'सिद्धत्थअ, गच्छ । एद पिओदन्त देवस्स चन्दसिरिणो णिवेदेहि' त्ति । तदो एदस्स णिवेदिअ एव्व अणुभूदपत्थिवप्पसादो अह पिअवअस्स पेक्खिदुं तुह एव्व गेह चलिदोम्हि । (प्रसीदतु वयस्य । दृष्टमात्र एव आर्यचाणक्येनाज्ञप्तोऽस्मि यथा—'सिद्धार्थक गच्छ । इम प्रियोदन्त देवस्य चन्द्रश्रियो निवेदय'

समिद्धार्थक =(*Samiddharthaka*), अपि सुखम्=सुखमस्तीति (*how do you* do), प्रियवयस्यस्य = स्निग्धमित्रस्य (dear friend)

[इति-एवम्, अन्योन्यम् = परस्परम्=(Each other), आलिङ्गितः=(embrace)]

समिद्धार्थक—कुत सुखम् = कस्मादानन्द (How can I be happy), येन त्वम् (when you), चिरप्रवासप्रत्यागतः=बहुकाल यापयित्वा विदेशात् प्रतिनिवृत्त (you returned from your long journey), अपि अद्य (even today), न गेहम् = न मम सदनम् (did not my house), आगच्छसि (you come).

हिन्दी—और मैंने सुना कि मेरा प्रियमित्र सिद्धार्थक मलयकेतु के शिविर से लौट आया है। उसे ही खोजता हू। (कुछ कदम चक्कर और सामने देखकर) अरे, यही तो सिद्धार्थक है ?

सिद्धार्थक—(निकट पहुँच कर) ओ, समिद्धार्थक कुशल तो है, मेरे प्रियमित्र !

(एक दूसर से लिपटकर)

समिद्धार्थक—क्या कुशल पूछते हो ? इतने दिनों के बाद बाहर से लौटा और मेरे घर नहीं आया ? सुख किस बात का होगा ?

Egnilsh—I have heard that my dear friend Siddharthaka has returned from Malayketu s camp I will search him (going round and observing) Here is Siddhartharka

Sidd'iarthaka—(Approaching) Ha, Samiddharthaka how do you *do dear friend (They embrace each other).*

Samiddharthaka —Dear friend, how I can be happy, when you are not coming my house today, though you returned from your long journey ?

टिप्पणी

सिद्धार्थक—प्रसीदतु=प्रसन्नो भवतु (let be appeased), वयस्य = स्निग्धमित्रम् भवान् (dear friend), दृष्टमात्र एव=अवलोकित एव (as soon as seen), अचार्यचाणक्येन=आचार्यकौटिल्येन (by noble Chanakya), आज्ञप्तोऽस्मि= आदिष्ट आसम् (I am ordered), यथा—सिद्धार्थक (Siddhartharka), गच्छ=

इति । तत एतस्य निवेद्यैवमनुभूतपार्थिवप्रसादोऽहं प्रियवयस्य प्रेक्षितुं तवैव गेहं चलितोऽस्मि ।)

समिद्धार्थकः—वअस्स, जदि मे सुणिदव्वं तदो कहेहि किं तं पिअं जं पिअदसणस्स चन्दसिरिणो णिवेदिदं। (वयस्य, यदि मे श्रोतव्यं ततः कथय किं तत्प्रियं यत्प्रियदर्शनस्य चन्द्रश्रियो निवेदितम् ।)

सिद्धार्थकः—वअस्स, किं तुहवि अकहिदव्वं अत्थि ता णिसामेहि। अत्थि

याहि (go), इमम् (this), प्रियोदन्तम् = आनन्दप्रदवृत्तम् (the happy news), देवस्य = राज्ञः (to the king), चन्द्रश्रियः = चन्द्रगुप्तस्य लक्ष्म्या (Chandragupta), निवेदय = कथय (to communicate), ततः = तदुत्तरम् (then), एतस्य = चन्द्रगुप्तस्य (to him), निवेद्य = विज्ञाप्य (having communicated the news), एवम् = इत्थम् (this), अनुभूतपार्थिवप्रसादः = प्राप्तनृपानुग्रहः (received this royal favour), अहम् (I) प्रियवयस्यम् = निजसुहृदम् (to dear friend), प्रेक्षितुम् = अवलोकितुम् (to see), तवैव = भवतः एव (your), गेहम् = सदनम् (house) चलितोऽस्मि = प्रस्थितो भवामि (just on my way),

समिद्धार्थकः—वयस्य = प्रियमित्र (dear friend), यदि (if), मे = मम (my), श्रोतव्यम् = आकर्णितव्यम् (I may hear), ततः = तदा (then), कथय = श्रावय (tell), किं तत्प्रियम् = तद् वृत्तम् (what the agreeable news), यत् (that), प्रियदर्शनस्य = स्निग्धनिरीक्षणस्य (of lovely apppearance) चन्द्रश्रियः = चन्द्रगुप्त (the worthy Chandragupta), निवेदितम् = कथितम् (is communicated)

हिन्दी—सिद्धार्थक—मित्र प्रसन्न हो आचार्य चाणक्य ने देखते ही आदेश दे दिया—'सिद्धार्थक जाओ और यह प्रियसंवाद महाराज चन्द्रगुप्त को निवेदन करो। ता इनसे निवेदन करके—राजकीय कृपा का अनुभव कर सीधे तुमसे मिलने तुम्हारे घर की ओर ही आ रहा था।

समिद्धार्थक—मित्र, यदि मेरे भी सुनने योग्य हो तो बतलाओ, वह क्या प्रियसंवाद है जो प्रियदर्शन महाराज चन्द्रगुप्त से निवेदित किया गया है।

English—*Siddharthaka*—Let my friend be app-ased As soon as seen I am ordered by noble Chanakya thus — Go Siddhartharka communicate this happy termination to the king moon like Chandragupta Then reported to him and enjoyed the king s favour, I am just on my way to your house to see you my dear friend

Samiddharthaka—Dear friend if I may hear it, then tell me what the happy news is that was reported to the worthy Chandragupta of lovely appearance

विमला

सिद्धार्थकः—वयस्य = मित्र (Friend), किं तवापि = भवतोऽपि (is any thing from you), अकथितव्यम् = अनाकर्णितव्यम् (unmentionable), अस्ति = वर्त्तते

दाव चाणक्कणीदिमोहिदमदिणा मलअकेदुहदएण णिक्कासिअ रक्खस हदा चित्तवम्मप्पमुहा पहाणा पञ्च पत्थिवा। तदो असमिक्खआरी एसो दुराआरो त्ति उज्झिअ मलअकेदुहदअभूमि कुसलदाए भअविलोलसेससेणिकपरिवारेसु सभअ पत्थिदेसु पात्थिवेसु सक विसअ णिव्विण्णहिअएसु सअलसामन्तेसु भद्दभटपुरिसदत्तडिङ्गुरादबलउत्तराअसेणभागुराअणरोहिदक्खविजअवम्मप्पमुहेहिं संजमिअ गिहीदो मलअकेदु। (वयस्य, किं तत्राप्यकथितमस्ति तन्निशामय। अस्ति तावच्चाणक्यनीतिमोहितमतिना मलयकेतुहतकेन निष्कास्य राक्षसं हताश्चित्रवर्मप्रमुखाः प्रधानाः पञ्च पार्थिवाः। ततोऽसमीक्ष्यकार्येष दुराचार इत्युज्झित्वा मलयकेतुहतकभूमिं कुशलतया भयविलोलशेषसैनिकपरिवारेषु सभयं प्रस्थितेषु पार्थिवेषु स्वकं विषयं निर्विण्णहृदयेषु सकलसामन्तेषु भद्रभटपुरुषदत्तडिङ्गरातबलगुप्तराजसेनभागुरायणरोहिताक्षविजयवर्मप्रमुखैः संयम्य गृहीतो मलयकेतुः।)

---

(15), तद = तस्मात् (so), निशामय = शृणु (hear), चाणक्यस्य नीतिर्नयस्तया मोहिता नष्टविवेकस्य मतिर्यस्य स चाणक्यनीतिमोहितमतिस्तेन चाणक्यनीतिमोहितमतिना (whose mind's eye was bedimmed by the policy of Chanakya), मलयकेतुहतकेन = मलयकेतुश्चासौ हतकः मलयकेतुहतकस्तेन मलयकेतुहतकेन = निन्दितेन मलयकेतुना (the cursed Malayaketu), राक्षसम् = नन्दसचिवम् (Rakshasa), निष्कास्य = निष्कास्य (dis arded), चित्रवर्मप्रमुखाः = चित्रवर्मप्रभृतयः पञ्चराजानः (Chitraverma and other), हताः = विनाशिताः (killed), प्रधानाः = श्रेष्ठाः (leading), पञ्चपार्थिवाः = पञ्चनृपतयः (five kings), ततः = तदनन्तरम् (then), एषः = असौ (Malayaketu), न सम्यक् विचार्य कर्तुम् शीलमस्येत्य समीक्ष्यकारी = अविचारशीलः (rash), दुराचारः = दुष्टव्यवहारः (wicked), इति उज्झित्वा = अस्मात् कारणात् परित्यज्य (left), मलयकेतुहतकभूमिम् = मलयकेतुशिबिरस्थानम् (the camp of Malayaketu), कुशलतया (for safety), भय विलोल सैनिकाः तथा परिवाराः शेषाः ते तथोक्तास्तेषु—भयविलोलशेषसैनिकपरिवारेषु साध्वसचपलसेनावशिष्टानुयायिवर्गेषु (their remaining soldiers and attendants trembling with fear), सभयम् = भयसहितम् (with fear), प्रस्थितेषु = चलितेषु (set out), पार्थिवेषु = राजसु (the kings), स्वकम् विषयम् = आत्मीयजनपदम् (for their dominions), निर्विण्णहृदयेषु = (sick at heart), सकल सामन्तेषु (all his vassals), भद्रभटपुरुषदत्तडिङ्गरातबलगुप्तराजसेनभागुरायणरोहिताक्षविजयवर्मप्रमुखैः = भद्रभटादिविजयवर्मान्तप्रभृतिभिः (whereupon Bhadrabhata, Purusdatta, Dingrata, Balgupta, Rajsena, Bhagurayana, Rohitaksha, Vijayaverman and others), संयम्य = सर्वतः परिवृत्य (seized), मलयकेतु (Malayaketu), गृहीतः = धृतः (made captive).

समिद्धार्थकः—वअस्स, भद्दभटप्पमुहा किल देवस्स चन्दउत्तस्स अवरत्ता मलअकेदुं समस्सिदे त्ति लोए मन्तीअदि। ता किं निमित्तं कुकविकिदणाडअस्स विअ अण्णं मुहे अण्ण णिव्वहणे। (वयस्य, भद्रभटप्रमुखाः किल देवस्य चन्द्रगुप्तस्य अपरक्ता मलयकेतु समाश्रिता इति लोके मन्त्र्यते। तत्किंनिमित्तं कुकविकृतनाटकस्येवान्यन्मुखेऽन्यन्निर्वहणे।)

हिन्दी—**सिद्धार्थक**—मित्र, क्या ऐसी भी कोई बात हो सकती है जो तुम्हें न सुनाऊँ, तो सुनो, आर्य चाणक्य की नीति से मोहित बुद्धिवाले दुष्ट मलयकेतु ने एक ओर तो राक्षस को निकाला और दूसरी ओर चित्रवर्मा प्रभृति पाँचो राजाओं को मरवा डाला। इसके बाद मलयकेतु को विचारहीन और अत्याचारी समझ कर अनेक अन्य राजगण मलयकेतु के सैन्य शिविर से चलने लगे, अपनी सेनाओं के भयभीत होकर भाग खड़े होने के कारण वे अल्पसख्यक दिखाई पड़ने लगे, वे सभी अपने-अपने राज्य की ओर इसलिए चल पड़े कि वहाँ पहुँचे बिना उसका कल्याण नहीं था। तब भद्रभट, पुरुदत्त डिङ्गरात, बलगुप्त, राजसेन, भागुरायण, रोहिताक्ष और विजयवर्मा इत्यादि ने मलयकेतु को घेर कर पकड़ लिया।

English—*Siddharthaka*—Friend, is there anything unmentionable even to you? So listen. First of all the five leading kings with Chitraverman at their head were killed by cursed Malayaketu, whose mind's eyes were bedimmed by the policy of Chanakya, having dismissed Rakshasa. Then thinking him rash and wicked, the allied king left the camp of Malayaketu for safety and proceeded to their own kingdom in fear followed by their remaining soldiers and attendants trembling with fear, while all his vassals became sick at heart. Where upon Bhadrabhata Purusdatta, Dingarata, Balgupta, Rajsena, Bhagurayan, Rohitaksha, Vijayaverman and others seized Malayaketu and made him captive.

विमला

समिद्धार्थक—वयस्य = मित्र (Friend), भद्दभटप्पमुहा = भद्रभटप्रभृतयः (Bhadrabhata and others), किल = निश्चयेन (indeed), देवस्य = राज्ञः (king), चन्द्रगुप्तस्य = मौर्यस्य (Chandragupta), अपरक्ताः = विरक्ताः (being discontnted), मलयकेतुम् (to Malayaketu), समाश्रिता = ससेविताः (had joined the side), इति = इत्थ (like this), लोके = जने (people), मन्त्र्यते = कथ्यते (was talked), तत् किं निमित्तमेतद् = कुतः कारणादिदम् कथ्यते (why then), कुकविकृतनाटकस्य = कुत्सितकविप्रणीताभिनयस्य (in a drama written by a bad poet), इव = यथा (as), अन्यन्मुखेऽन्यन्निर्वहणे = मुखे मुखसन्धौ प्रारम्भे अन्यत् निर्वहणे उपसंहारे अन्यत् नाटके आरम्भोपसंहारयोरवयवस्यैव प्रसिद्धत्वादिह तद्विरुद्धं कुतः ये भद्रभटप्रभृतयश्चन्द्रगुप्ते अनुरक्ताः सन्तो मलयकेतुमाश्रितास्तैरेव कथं मलयकेतुसंयमित इति प्रश्नाभिप्रायः (why is there then one thing in the laying out, and another in the consummation of the plot).

सिद्धार्थकः—वअस्स, देव्वगदीए विअ अस्सुणिदगदीए णमो चाणक्कणीदीए। (वयस्य, दैवगत्या इव अश्रुतगत्यै नमश्चाणक्यनीत्यै।)

समिद्धार्थकः—तदो तदो। (ततस्ततः।)

सिद्धार्थकः—तदोप्पहुदि सारसाहणसमेदेण इदो णिक्कमिअ अज्जचाणक्केण पडिवण्णं सअलराअलोअसहिअं असेसं म्लेच्छबलं। (ततःप्रभृति सारसाधनसमेतेन इतो निष्क्रम्यार्यचाणक्येन प्रतिपन्नं सकलराजलोकसहितमशेषं म्लेच्छबलम्।)

सिद्धार्थक—वयस्य = मित्र (friend), दैवगत्या इव = भाग्यकृत्यैरिव (like that of destiny), अश्रुतगत्यै = अश्रुता गतिर्यस्यास्तस्यै = अनाकर्णितकृत्यै (the course of which is unheard), नमश्चाणक्यनीत्यै = पूज्यकौटिल्यनीत्यै नमोऽस्तु (salutation be unto the state craft of Chanakya)

समिद्धार्थक —ततस्ततः = तत्पश्चात्किमिति (Next what next)

सिद्धार्थक—ततः प्रभृति = तत्पश्चात् (Then), सारसाधनसमेतेन = अत्युत्कृष्टरणोपकरणसहितेन (by an immense body of the flower of his army), इतः निष्क्रम्य = अस्मान्नगराद्विर्गत्य (marched out from here), आर्यचाणक्येन = आर्यकौटिल्येन (by noble chanakya), प्रतिपन्नम् = अधिकृतम् (was captured), सकलराजलोकसहितम् = नृपजनसहितम् (with the whole host of kings), अशेषम् = निःशेषम् (entire), म्लेच्छबलम् = म्लेच्छसैन्यम् (Mlechcha forces)

हिन्दी—समिद्धार्थक—मित्र, लोगों में तो यह प्रसिद्धि है कि महाराज चन्द्रगुप्त से विरक्त होकर भद्रभट प्रभृति ने मलयकेतु का आश्रय ग्रहण किया था। तो फिर क्यों नव एक अकुशल नाटककार की तरह आरम्भ (मुखसन्धि) में कुछ और प्रतीत होता है और अन्तरनिर्वहण में कुछ और ?

सिद्धार्थक—मित्र दैव की गति की तरह अज्ञातगतिवाली आर्य चाणक्य की नीति को नमस्कार है।

समिद्धार्थक—उसके बाद, उसके बाद।

सिद्धार्थक—उसके बाद आर्य चाणक्य ने पाटलिपुत्र से चुनी हुई सेना लेकर सम्पूर्ण म्लेच्छ बल पर धावा बोल दिया। उनके सेनापति तो उन्हें पहले ही छोड़ चुके थे।

English—*Samiddhar thaka*—Friend, it was talked of among the people that Bhadrabhata and others, disgusted with Chandragupta and attached with malayaketu. Why then as in a drama written by a bad poet, one thing is in the opening and another in the consummation in the plot.

Siddharthaka—Friend, bow to the state craft of the noble Chanakya, the course of which is unheard of like that of fate.

Samiddharthaka—Next what Next.

Siddharthaka—Thereupon Noble Chanakya marched out from here

समिद्धार्थक —वअस्स, कहिं त। (वयस्य, कुत्र तत्।)
सिद्धार्थक —नहिं एदे। (यत्रैत।)

अदिसअगुरुएण दाणदप्पेण दन्ती
सजलनलदणीला उव्भमन्तो णदन्दि
कसपहरभएण जाअकम्पोत्तरगा
गिहिदजअणसद्दा सपअन्ते तुरङ्गा ॥ ३ ॥

(अतिशयगुरुणेण दानदर्पेण दन्तिन
सजलजलदनीला उद्भ्रमन्तो नदन्ति।
कशाप्रहारभयेन जातकम्पोत्तरगा
गृहीतजयशब्दा सपतन्ति तुरङ्गा ॥ ३ ॥)

---

with a large p cked forces and then the entire Mlechcha force together with the whole host of kings was captured

विमला

सानद्धार्थक —वयस्य = मित्र (friend) कुत्र = कस्मिन् स्थाने (where), तत् (that happen)

सिद्धार्थक —यत्रैत (there)

अन्वय.—अतिशयगुरुकेण, दानदर्पेण, सजलजलदलीलाम्, उद्वहन्त, दन्तिन, नदन्ति, कशाप्रहारभयेन जातकम्पोत्तरङ्गा, गृहीतजयनशब्दा, तुरङ्गा, सम्पतन्ति ॥३॥

व्याख्या—गुरुव गुरुकअतिशयश्चासौगुरुकश्चतिशयगुरुकस्तेन अतिशयगुरुकेण = अतिप्रवृद्धेन (excessive) दानदर्पेण = दानम् दर्प इव दानदर्पस्तेन = दानदर्पेण = मदसलिलाभिमानेन (pride of rut) सजलश्चासौ जलद सजलजलदस्तस्य लीला सजलजलदलीला ताम् सजलजलदलीलाम् = ससलिलघनविलासम् (the action of clouds charged with water) उद्वहन्त = धारयन्त (resembling), दन्तिन = हस्तिन (elephants), नदन्ति = गर्जन्ति (are roaring) कशाया प्रहार कशाप्रहारस्तस्माद्भयम् कशाप्रहारभयम् तेन कशाप्रहारभयेन = ताडनीप्रहार जन्यसाध्वसेन (from fear of the stroke of the whip), जातकम्पोत्तरङ्गा = उत्पन्नकम्पनचचला (through shaking the body appears as if waves are playing on it), गृहीतजयनशब्दा = गृहीत', अङ्गीकृत जयनशब्द विजयनाद येस्त तथाभूता (catching the sound of victory) तुरङ्गा = अश्वा (the horses) सम्पतन्ति = सन्नद्धा भवन्ति (rush forth) ॥ ३ ॥

हिन्दी—समिद्धार्थक—मित्र वह कहाँ ?

सिद्धार्थक—जहाँ वे —

मदजल से उत्पन्न गर्व के कारण अत्यन्त प्रबल हाथी जो जल से भर बादलों की लीला धारण करनेवाले गजसमूह चिंघाड़ रहे हैं और चाबुक की मार के भय से अत्यन्त काँपते हुए अत एव अति चचल बने जय शब्द को ग्रहण करनेवाले घोड़े जोश के साथ भाग बढ़ रहे हैं ॥ ३ ॥

समिद्धार्थकः—वअस्स, एदं दाव चिट्ठदु। तदा सव्वलोअपच्चक्खं उज्झिआहिआरो चिट्ठिअ अज्जचाणक्को किं उणो वि तं एव्व मन्तिपदं आरूढो। (वयस्य, एतत्तावत्तिष्ठतु। तदा सर्वलोकप्रत्यक्षमुज्झिताधिकारः स्थित्वार्यचाणक्यः किं पुनरपि तदेव मन्त्रिपदमारूढः।)

सिद्धार्थकः—अदिमुद्धोसि दाणीं तुमं जो अमच्चरक्खसेण वि अणवगाहिअपुव्वं अज्जचाणक्कचरिदं अवगाहिदुमिच्छसि। (अतिमुग्धोऽसीदानीं त्वं यतोऽमात्यराक्षसेनाप्यनवगाहितपूर्वमार्यचाणक्यस्य चरितमवगाहितुमिच्छसि।)

English—*Samiddharthaka*—Friend, where is that ?

Siddharthaka—There—

Where the tuskers, resembling the action of clouds carries the idea of pouring water, are roaring in their excessive pride of ichor, and where the horses—through shaking the bodies appear as its waves are playing on it, from fear of the stroke of the whip and catching the sounds of victory, rush forth together 3.

टिप्पणी—इस श्लोक के पूर्वार्द्ध में 'दानदर्प' में श्लेष से बनना और श्लेष का सन्देह सङ्कर अलङ्कार है। वस्तुतः हाथियों का मदजल बहने की लीला या धारण करना—असम्भव होने के कारण, मदजल लीलाधारण की प्रतीति से उपमावाचकों की तरह लीलाधारण करने रूप निदर्शना अलङ्कार वाचन से निदर्शना अलङ्कार है। इन दोनों के अङ्गाङ्गिभाव से सङ्कर है। उत्तरार्द्ध में प्रस्तुत घोड़ों में वैसे ही तरङ्गों के उछाल का आरोप के कारण समासोक्ति अलङ्कार है। चाबुक की त्वरा में कशाघात रूप हेतु का पदार्थरूपेण कथन से पदार्थहेतुक काव्यलिङ्ग से समन्वित उपर्युक्त चार अलङ्कारों का सन्निवेश है। इसमें मालिनी वृत्त है।

विमला

समिद्धार्थक—वयस्य=मित्र (Friend), एतत्तावत्तिष्ठतु=एतत्सर्वं तदैवास्ताम् (let this go), तदा=तादृशक्षणे (into the very same), सर्वलोकप्रत्यक्षम्=सर्वजनसमक्षम् (presence of all people), उज्झितः परित्यक्तोऽधिकारो मन्त्रिपदम् येन स उज्झिताधिकारः=परित्यक्तसचिवपदम् (resigned his post of minister), स्थित्वा=भूत्वा (being), आर्यचाणक्यः=आचार्यविष्णुगुप्तः (Noble Chanakya), पुनरपि=भूयोऽपि (again), तदेव मन्त्रिपदम्=तदेव सचिवपदम् (the very post of minister), किमारूढः=कथं प्राप्तः (why accepted).

सिद्धार्थक—अतिमुग्धोऽसि=अतिशयदुर्बोधोऽसि (extremely simpleminded), इदानीम् त्वम्=अधुना त्वम् (now you are), यतः (since), अमात्यराक्षसेनापि=नन्दसचिवयोद्धापि (by the minister Rakshasa), अनवगाहितपूर्वम्=पूर्वमज्ञातम् (uncomprehended before), आर्यचाणक्यस्य=आर्यकौटिल्यस्य (Noble Chanakya's), चरितम्=वृत्तम् (the deeds), अवगाहितुम्=बोद्धुम् (to gauge), इच्छसि=वाञ्छसि (you wish).

समिद्धार्थक—वअस्स, अमच्चरक्खसो सपद कहिं। (वयस्य, अमात्यराक्षसः साम्प्रत कुत्र।)

सिद्धार्थक—तस्सिं भअविलोले वट्टमाणे मलअकेदुकडआदो णिक्कमिअ उदुम्बरणामहेएण चरेण अनुसन्धिज्जमाणो इद पाडलिउत्त आअदो त्ति अज्जचाणक्कस्स णिवेदिद्। (तस्मिन् भयविलोले वर्तमाने मलकेतुकटकान्निष्क्रम्योदुम्बरनामधेयेन चरेणानुसन्धीयमान इद पाटलिपुत्रमागत इत्यार्यचाणक्यस्य निवेदितम्।)

समिद्धार्थक —वयस्य=प्रियबन्धो (Friend), साम्प्रतम्=अधुना (now), अमात्य राक्षस =नन्दसचिव (Minister Rakshasa), कुत्र (where is)?

सिद्धार्थक —तस्मिन्=मलयकेतुशिविरे (in that camp), भयविलोले वर्तमाने (standing convulsed in terror), मलयकेतुकटकात्=मलयकेतुशिविरात् (from the camp of Malayaketu), निष्क्रम्य=बहिर्गत्य (having slipped out), उदुम्बरनामधेयेन (by named Udumber), चरेण=दूतेन (a Spy), अनुसधीयमान =अनुगम्यमान (watched by), इदम्=एतत् (this), पाटलिपुत्रम् (Pataliputra), आगत =समायात (has come), इति=इत्थम् (like that), आर्यचाणक्यस्य=आर्यकौटिलस्य (to Noble Chanakya), निवेदितम्=कथितम् (*is reported*)

समिद्धार्थक—मित्र, इस सारी बातों को छोडो, पहले यह बतलाओ कि जब आर्य चाणक्य ने सबों के सामने अपने पद का त्याग कर दिया तो फिर क्यों उन्होंने इस पद को पुन स्वीकृत किया ?

सिद्धार्थक—तू बडा भोला भाला है। अरे, जिस आर्य चाणक्य के चरित्र का पार अबतक अमात्य राक्षस न पा सका, उसका तुम पार पाना चाहते हो।

समिद्धार्थक—अच्छा मित्र, आजकल अमात्य राक्षस कहाँ है ?

सिद्धार्थक—वहाँ जब भय का साम्राज्य था, तो मलयकेतु के शिविर से निकलकर अमात्य राक्षस ने इधर पाटलिपुत्र में प्रवेश किया है। ऐसी सूचना, उनका पीछा कर रहे उदुम्बर नामक गुप्तचर ने आर्य चाणक्य को दी है।

English—*Samidharthaka*—Friend, let it go Why has noble Chanakya again stepped into the very same post of minister after having resigned his office of minister in presence of all people ?

Siddharthaka—*You are very simple minded man since you wish* to gauge the d eds of noble Chanakya uncomprehended before even by minister Rakshasa

Samidharthaka—Friend, where is the minister Rakshasa now ?

Siddharthaka—It is reported to noble Chanakya by a Spy named Udumbera, who watched him as the frightful tumult thickened, Minister Rakshasa having slipped out of Malayaketu's camp and came here to Pataliputra

समिद्धार्थकः—वअस्स तहा णाम अमच्चरक्खसो णन्दरज्जपच्चाणअणे किदव्ववसाओ णिक्कमिअ सपदं अकिदत्थो पुणोवि इमं पाडलिउत्तं आअदो एव्व। (वयस्य, तथा नामामात्यराक्षसो नन्दराज्यप्रत्यानयने कृतव्यवसायो निष्क्रम्य साम्प्रतमकृतार्थः पुनरपीदं पाटलिपुत्रमागत एव।)

सिद्धार्थकः—वअस्स, तक्केमि चन्दणदाससिणेहेण त्ति। (वयस्य, तर्कयामि चन्दनदासस्नेहेनेति।)

समिद्धार्थकः—वअस्स, चन्दणदासस्स मोक्खं विअ पेक्खामि। (वयस्य, चन्दनदासस्य मोक्षमिव प्रेक्षे।)

सिद्धार्थकः—कुदो से अधण्णस्स मोक्खो। सो क्खु सपदं अज्जचाणक्कस्स आणत्तीए दुवेहिं अम्हेहिं वज्झट्ठाणं पवेसिअ वावादइदव्वो। (कुतोऽस्याधन्यस्य मोक्षः। स खलु साम्प्रतमार्यचाणक्यस्याज्ञया द्वाभ्यामावाभ्यां वध्यस्थानं प्रवेश्य व्यापादयितव्यः।)

समिद्धार्थकः—(सक्रोधम्।) किं अज्जचाणक्कस्स घादअजणो अण्णो

विमला

समिद्धार्थक—वयस्य=मित्र (Friend), अमात्यराक्षसः=नन्दसचिव (minister Rakshasa), तथानाम=सर्वजनसमक्षम (after all), नन्दराज्यप्रत्यानयने=नन्दराष्ट्रपुनर्ग्रहणे (restore the sovereignty of Nanda), कृतव्यवसाय=विहितोद्योग (having made in such manner an attempt), निष्क्रम्य=निर्गत्य (having gone out), साम्प्रतम्=अधुना (now), अकृतार्थ=विफलप्रयास (with his object unaccomplished), पुनरपि (again), इदम्=एतत् (this) पाटलिपुत्रम् (Pataliputra), आगत एव=समागत एव (came back)।

सिद्धार्थक—वयस्य=प्रियबन्धो (Friend), चन्दनदासस्नेहेन=निज सुहृदश्चन्दनदासस्य परमानुरागेण (out of his affection for Chandandasa), तर्कयामि=सम्भावयामि (I think)

समिद्धार्थक—वयस्य=मित्र (Friend), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), मोक्षमिव=कारागृहस्मान्मुक्तिमिव (like release), प्रेक्षे=सम्भावयामि (I fancy)

सिद्धार्थक—अस्य=एतस्य (that) अधन्यस्य=न धन्य अधन्यस्तस्य अधन्यस्य=हतभाग्यस्य (unlucky chap), मोक्ष=मुक्तिः (release), स=असौ (he), खलु=निश्चये (indeed), साम्प्रतम्=अधुना (now), आर्यचाणक्यस्य=आर्यकौटिल्यस्य (Noble Chanakya's), आज्ञया=निदेशेन (at the command of), द्वाभ्याम्=उभाभ्याम् (both), आवाभ्याम्=त्वया मया च (of us), वध्यस्थानम् हिंसाभूमिम् (the place of execution), प्रवेश्य=समानीय (being led), व्यापादयितव्य=हन्तव्य (to be killed)

समिद्धार्थक—[सक्रोधम्=सकोपम् =(angrily)] आर्यचाणक्यस्य=कौटिल्यस्य (Noble Chanakya's), घातकजन=हिंसकः (hangmen), अन्य=अपर

णत्थि जेण अम्हे ईरिसेसु णिओजिआ अदिणिसस्सेसु णिओएसु। (किमार्यचाणक्यस्य धातकजनोऽन्यो नास्ति येन वयमीदृशेषु नियोजिता अतिनृशंसेषु नियोगेषु।)

सिद्धार्थक—वअस्स, को जीवलोए जीविदुकामो अज्जचाणक्कस्य आणत्ति पडिऊलेदि। ता एहि। चण्डालवेसधारिणा भविअ चन्दणदास वज्झट्ठाण णएम। (वयस्य, को जीवलोके जीवितुकाम आर्यचाणक्ययस्याज्ञप्तिं प्रतिकूलयति। तदेहि। चण्डालवेषधारिणौ भूत्वा चन्दनदास वध्यस्थान नयाव।)

(other), नास्ति किम् (does find no ?), येन=कारणेन (that), ईदृशेषु=जीवहिंसानात्मकेषु (to such), अतिनृशंसेषु=अतिक्रूरकर्मसु (exceedingly cruel) नियोगेषु=कार्येषु (tasks), वयम् (we), नियोजिता =संयोजिता (appoints us),

हिन्दी—समिद्धार्थक—मित्र, नन्दसाम्राज्य को पुन प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयत्नशील सचिव राक्षस ने मलयकेतु के शिविर से निकल कर, असफल प्रयत्न होकर, पुन इसी पाटलिपुत्र में प्रवेश किया है।

सिद्धार्थक—मित्र, मैं सोचता हू कि चन्दनदास का स्नेह ही उसे यहाँ फिर वापस लाया है।

समिद्धार्थक—और, मैं चन्दनदास का बन्धन मोक्ष सा देख रहा हू मित्र।

सिद्धार्थक—उस अभागे को अभी मुक्ति कहाँ? आर्य चाणक्य ने पहले ही हम दोनों के नाम आदेश दिया है कि वध्यगृह ले जाकर चन्दनदास को मार दिया जाय।

समिद्धार्थक—(क्रोध के साथ) क्या आर्य चाणक्य को कोई अन्य वधिक नहीं मिला जो ऐसे नृशंस कर्म में हम दोनों को लगाया है?

English—*Samidharthaka*—Friend, Minister Rakshasa has now really come back to this Pataliputra, with his object unaccomplished, having left it in that way, and having made in such manner an attempt to restore the sovereignty of Nanda

Siddharthaka—Friend, I think, out of his affection for Cnandan dasa he came back

Samidharthaka—Friend, I guess Chandandasa will be set free

Siddharthaka—Whence is the freedom of that unlucky chap By the order of Noble Chanakya, he is even now to be killed after being led by both of us to the place of execution

Samidharthaka—(Angrily) Has Noble Chanakya got no other hangmen that he appointed us to such supremely murderous work ?

विमला

सिद्धार्थक —वयस्य=मित्र (Friend), जीवलोके = ससारे (in this world), क.= पुरुषविशेष (who), जीवितुकाम =जीवनाभिलाषी (desires to live), आर्यचाणक्यस्य=आर्यविष्णुगुप्तस्य (Noble Chanakya's), आज्ञप्तिम्=आज्ञाम्

(इत्युभौ निष्क्रान्तौ ।)

प्रवेशकः ।

(ततः प्रविशति रज्जुहस्तः पुरुषः ।)

पुरुषः—

छग्गुणसंजोअदिढा उवाअपरिवाडिघडिअपासमुही ।
चाणक्कणीतिरज्जू रिपुसंजमणुज्जआ जअदि ॥ ४ ॥
(षड्गुणसंयोगदृढा उपायपरिपाटीघटितपाशमुखी ।
चाणक्यनीतिरज्जू रिपुसंयमनोद्यता जयति ॥ ४ ॥)

(order), प्रतिकूलयति = अस्वीकरोति (can oppose), तदेहि-तस्मादागच्छ (so, come), चाण्डालवेषधारिणौ (clad in the garb of Chandal), भूत्वा (becoming), चन्दनदासम् (to Chandandasa), वध्यस्थानम् (to the place of execution), नयाव=प्रापयावः (shall take).

[उभौ निष्क्रान्तौ = (Exeunt both)]

[प्रवेशकः (Praveshaka)]

[ततः=तत्पश्चात् (after that), प्रविशति = (enter), रज्जुहस्तः = बन्धनग्रामकरः (rope in hand), पुरुषः=जनः (man)]

अन्वयः—षड्गुणसंयोगदृढा, उपायपरिपाटीघटितपाशमुखी, रिपुसंयमनोद्यता, चाणक्यनीतिरज्जुः, जयति ॥ ४ ॥

व्याख्या—रज्जुपक्षे—षट् च ते गुणाः षड्गुणाः षड्गुणैः षड्गुणानां वा संयोगो यस्यां सा षडगुणसंयोगा अनएव दृढा स चासौ=षड्गुणसंयोगदृढा=षट् तन्तु संयोगेन परिपुष्टा (by the union of the six thread), उपायानाम् परिपाटी उपायपरिपाटी तया घटितं पाशमेव मुखं यस्याः सा उपायपरिपाटीघटितपाशमुखी=बहुविधनैपुण्यरचितपाशाग्रभागाः (the noose of which is formed with a series of efforts), रिपुसंयमनोद्यता=शत्रुबन्धनानुकूलाः (ready to capture the enemy), चाणक्यनीतिरिव रज्जुः चाणक्यनीतिरज्जुः=कौटिल्यनीतिसदृशबन्धनदाम (the rope like Chanakya's policy), जयति = सर्वोत्कर्षेण जयतु (glory to) ॥ ४ ॥

नीतिपक्षे— षड्गुणसंयोगदृढा = षण्णाम् सन्धिविग्रहयानासनद्वैधीभावाश्रयाख्यानाम् (the six gunas), गुणानाम् संयोगेन सम्पर्केण अतिदृढा दुर्भेद्येत्यर्थः (strings-expedient), उपायानाम् = साम-दान-भेद-दण्डादीनाम् परिपाटी क्रमरचना तया घटितः = सम्पादितः यः पाशः = वागुरः तद्रूपम् मुखम् यस्याः तादृशी=उपायपरिपाटीघटितपाशमुखी (a series of political tactics), रिपुसंयमनोद्यता = शत्रुनियन्त्रणतत्पराः (straight when the enemy is entrapped), चाणक्यस्य नीतिः एव रज्जुः चाणक्यनीतिरज्जुः = कौटिल्यनीतिदाम (the rope of Chanakya's policy), जयति (glory to) ॥ ४ ॥

(परिक्रम्यावलोक्य च ।) ऐसो सो पदेसो अज्जचाणक्कस्स पुरदो उदुम्बरएण कहिदो जहिं मए अज्जचाणक्काणत्तीए अमच्चरक्खसो पेक्खिदव्वो। (विलोक्य ।) कह एसो क्खु अमच्चरक्खसो विदसीसावगुण्ठणो इदो एव्व

हिन्दी—सिद्धार्थक—मित्र, इस संसार में कोई भी व्यक्ति जिसमें जाने की इच्छा अवशेष है, आर्य चाणक्य की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता है। चलो, शीघ्र ही चाण्डालों का वेश बनाकर चन्दनदास को वध्यभूमि ले चलें।

(दोनों निकल गये)

(प्रवेशक)

(रस्सी हाथ में लिए पुरुष का प्रवेश)

रज्जुपक्ष में—छ सूत्रों के संयोग से निर्मित होने के कारण अत्यन्त दृढ़, नानाविध निर्मित पाशाग्रवाली, शत्रु को नियन्त्रण करने के लिए उद्यत चाणक्यनीति की तरह इस रस्सी की जय हो ॥ ४ ॥

नीतिपक्ष में—छ (सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव और आश्रय) गुणों के कारण (समागत शत्रुओं के लिए) अत्यन्त दुर्भेद्य उपायों (साम, दाम, दण्ड, भेद) की परम्परा से निर्मित, पाशरूपी मुखवाली, शत्रु को वशवर्ती बनाने के लिए तत्पर चाणक्य का नीतिरूपी रस्सी की जय हो ॥ ४ ॥

English—*Siddharthaka*—Friend! Who, in this world that desires to live, will oppose the command of Noble Chanakya? So, come, let us dress ourselves as Chandalas and shall lead Chandandasa to the place of execution

(Exeunt both)

(Pravesaka-Introduction)

(Now enter a man with a rope in hand)

In the side of rope—Glory to the rope like Chanakya's policy being strong by the union of six thread, the noose of which is formed with a series of struggle and which is ready to hold the eremy 4.

In the side of policy—The rope of Chanakya's policy triumphs, which is strong by the combination of the six expedient strategy, the noose of which is formed with a series of political stratagems, and straight when the enemy is entrapped 4

टिप्पणी—इस श्लोक में, रूपक, उपमा तथा श्लेष एवं कार्यलिङ्ग अलङ्कारों की संसृष्टि है। छन्द का नाम आर्या है।

विमला

[परिक्रम्य (Walking forth), अवलोक्य=दृष्ट्वा (looking about)] एष= अयम् (this), स प्रदेश =प्राणदण्डभूमि (is the region mentioned), आर्यचाणक्यस्य=आर्यविष्णुगुप्तस्य (Noble Chanakya's), पुरत =समक्षे (to),

आअच्छइ। ता जाव इमेहिं उज्जाणपादवेहिं अन्तरिदसरीरो पेक्खामि कहिं आसनपरिग्गहं करेदि त्ति। (परिक्रम्य स्थितः।) एष स प्रदेश आर्यचाणक्यस्य पुरत उदुम्बरकेन कथितो यत्र मया आर्यचाणक्याज्ञप्त्या अमात्यराक्षसः प्रेक्षितव्यः। कथमेष खल्वमात्यराक्षसः कृतशीर्षावगुण्ठन इत एवागच्छति। तद्यावदेभिरुद्यानपादपैरन्तरितशरीरः प्रेक्षे कुत्रासनपरिग्रहं करोतीति।

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टः सशस्त्रो राक्षसः।)

राक्षसः—(सास्रम्।) कष्टं भोः, कष्टम्।

उदुम्बरकेण=तन्नाम्ना चरेण (by Udumberka), कथित०=निवेदितः (has reported), यत्र=यस्मिन् स्थाने where), मया=आत्मना (I myself), आर्यचाणक्याज्ञतया=कौटिल्यादेशेन (to the command of Noble Chanakya), अमात्यराक्षसः=नन्दमन्त्रि (Minister Rakshasa), प्रेक्षितव्य=अवलोकितो भविष्यति (I have to see), [विलोक्य=अवलोक्य (looking about)], कृतम् शीर्षस्यावगुण्ठनम् येन कृतशीर्षावगुण्ठनः=कृतमस्तकावरणः (with his head veiled) कथम्=किम् (why), इत एवागच्छति=इहैवायाति (coming in this very direction), तद्=तस्मात् (so), यावत्=यावत्कालपर्यन्तम् (till), एभिः=उद्यानपादपैः=उपवनवृक्षैः (by the trees of garden), अन्तरितशरीरः= तिरोहितकायः (hidden), प्रेक्षे=पश्यामि (I see), कुत्र=कस्मिन् स्थाने (where), आसनपरिग्रहम् करोति=उपविशति (takes his seat), [परिक्रम्य स्थितः (walks forth and waits)]

हिन्दी—(कुछ कदम चलकर और सामने देखते हुए) यह वही स्थान है, जहाँ उदुम्बर के द्वारा मान्य चाणक्य को दी गयी सूचना के अनुसार, मुझे अमात्य राक्षस के दर्शन करने हैं। (देखकर) क्या यही अमात्य राक्षस है? सिर पर पर्दा डाले ये तो इधर ही आ रहे हैं। तो जब तक वे आसन नहीं ग्रहण कर लेते—इस उद्यान के पेड़ की आड़ से मैं छिपकर इन्हें देखता हूँ। (घूमकर खड़ा हो जाता है)

English—(Walking forth and looking about)

This is the place reported to Noble Chanakya by Udumbera, where I have to see Rakshasa by the commerd of His Honour Chanakya. (Espying) Ah the minister Rakshasa is coming in this very way, with his head veiled. Well, with my person screened by these garden trees, I will just see where he takes seat. (Stands after going round).

विमला

[ततः=तत्पश्चात् (then), प्रविशति (enter), यथानिर्दिष्टः=वस्त्रेण आवृतशिरः इत्यर्थः (as described), सशस्त्र०=सायुधः (with Sword), राक्षसः (Rakshasa).]

(Alas ! Alas !). सास्रम्=सबाष्पम् (with tears)], कष्टम् भोः कष्टम्

उच्छिन्नाश्रयकातरेव कुलटा गोत्रान्तरे श्रीर्गता
तामेवानुगता गतानुगतिकास्त्यक्तानुरागाः प्रजाः ।
आप्तैरप्यनवाप्तपौरुषफलैः कार्यस्य धूरुज्झिता
किं कुर्वन्त्वथवोत्तमाङ्गरहितैरङ्गैरिव स्थीयते ॥ ५ ॥

अन्वय:—श्री, उच्छिन्नाश्रयकातरा कुलटा, इव गोत्रान्तरे, गता, गतानुगतिका:, त्यक्तानुरागा, प्रजा:, तामेव, अनुगता, अनवाप्तपौरुषफलै, आप्तै, अपि, कार्यस्य, धू उज्झिता, अथवा—किम्, कुर्वन्तु, उत्तमाङ्गरहितै, अङ्गै, इव, स्थीयते ॥ ५ ॥

व्याख्या—श्री = राजलक्ष्मी (The goddess of sovereignty), उच्छिन्न विनष्ट आश्रयोऽवलम्बनम् यस्या सा उच्छिन्नाश्रया सा चासौ कातरा उच्छिन्नाश्रय कातरा = विनष्टावलम्बन व्याकुला (upset by the death of her supporter), कुलटाइव = पुंश्चलीव (like a harlot), गोत्रान्तरे = अन्य कुले (to another race), गता = समाश्रिता (has gone), गतानामनुगतिर्यासाम् ता गतानुगतिका = पूर्वप्रस्थितानुसरणशीला (following those that have gone before), त्यक्तोऽनुरागो याभिस्तास्त्यक्ताऽनुरागा = परिहृत स्वामिस्नेहा (leaving their love), प्रजा = प्रकृतय (subjects), तामेवानुगता = गोत्रान्तराश्रिता श्रियमेवानुगता (have gone just after her), अनवाप्त पौरुषफलै = अनवाप्तम् पौरुषफलम् यस्तै तथाकारतरनाप्त पौरुषफले (not having obtained the reward for their manly efforts), आप्तैरपि = विश्वस्तैरपि (even our trusty friends), कार्यस्य = अभीप्सितकृत्यस्य (the work), धू = भार (burden), उज्झिता = त्यक्ता (have given up), अथवा = वा (or) किम् कुर्वन्तु (what should they do), उत्तमाङ्गरहितै = शीर्षविरहितै (without the head), अङ्गैरिव = शरीरैरिव (like limbs), स्थीयते = वर्तते (are lying) ॥ ५ ॥

हिन्दी—(तत्पश्चात् पूर्वकथित स्थितिवाला सशस्त्र राक्षस का प्रवेश)
राक्षस—(साश्रुनयन) हा कष्ट ! हा कष्ट !

राज्यश्री आश्रयविहीन होकर, दुखी वेश्या की तरह, अन्य कुल में चली गयी, अन्धानुकरण करनेवाली प्रजाएँ भी अनुराग शिथिल हो जाने के कारण उसी के पीछे पीछे चली गयीं। और, जो हमारे विश्वस्त व्यक्ति थे—उन्हें भी जब अपने पौरुष का पुरस्कार मिलता दृष्टिगत नहीं हुआ—वे भी कार्यभार छोड बैठे। अथवा—वे भी क्या करते ? शरीर से शीर्ष यदि पृथक् हो जाय तो शेष शरीर क्या कर सकता है ?

English—(Now enter armed Rakshasa as described)
Rakshasa—(With tears) Alas ! Alas !

Like a harlot upset by the death of her supporter, Royalty has gone to another race, the subjects forsaking their loyalty have gone just after that very woman, being blind followers, even our trusty friends, unseen the reward for their manly efforts, have given up the

अपि च—

पतिं त्यक्त्वा देवं भुवनपतिमुच्चैरभिजनं
गता छिद्रेण श्रीर्वृषलमविनीतेव वृषली ।
स्थिरीभूता चास्मिन् किमिह करवाम स्थिरमपि
प्रयत्नं नो येषां विफलयति दैवं द्विषदिव ॥ ६ ॥

---

burden of work. Or what would they do? They are lying like limbs without the head. 5

टिप्पणी—प्रथम चरण में 'कुल्या इव' में उपस्थित 'इव' के कारण पूर्णोपमा अलङ्कार है। द्वितीय-तृतीय चरण में स्थित [illegible] क्रिया का [illegible] एवं [illegible] का [illegible] रहने से काव्यलिङ्ग अलङ्कार है। इसी प्रकार चतुर्थ चरण में श्लेष के द्वारा कुछ [illegible] अलङ्कार है। इस श्लोक के छन्द का नाम है शार्दूलविक्रीडित।

विमला

अपि च = (Moreover) —

अन्वय—श्रीः, उच्चैः, अभिजनम्, भुवनपतिम्, पतिम्, देवम्, त्यक्त्वा, अविनीता, वृषली, इव, छिद्रेण, वृषलम्, गता, अस्मिन्, च, स्थिरीभूता, इह किं करवाम, येषाम्, नः, स्थिरमपि, प्रयत्नं, द्विषदिव, दैवम्, विफलयति ॥ ६ ॥

व्याख्या—श्रीः=राज्यलक्ष्मीः (The Goddess of sovereignty) उच्चैः=उन्नतः (of high) अभिजनम्=वंशम् (family), भुवनपतिम्=भुवनस्य पतिः भुवनपतिस्तम् भुवनपतिम् विशेषम् (the lord of the world), पतिम्=स्वामिनम् (her husband), त्यक्त्वा=परित्यज्य (deserting), देवम्=नन्दम् (the king), अविनीता=दुश्चरित्रा (immodest or an ill trained), वृषली=शूद्री (wench), इव=यथा (like), छिद्रेण=छलेन (by taking advantage of a weak point), वृषलम्=शूद्रम् (Vrishalam) गता=समाश्रिता (has gone), च=पुनः (and), अस्मिन्=वृषले (in him), स्थिरीभूता=अचञ्चलं वृत्ता (has settled firmly), इह=अस्मिन् विषये (in this matter), किं करवाम=विद्धाम वदन्तिति (what can we do), येषाम्=अस्माकम् (our), स्थिरमपि=दृढमपि (persistent), प्रयत्नम्=उद्योगम् (efforts), दैवम्=भाग्यम् (fate), द्विषदिव=शत्रुरिव (like enemy), विफलयति=विनाशयति (baffles) ॥ ६ ॥

हिन्दी—और भी—

राज्यलक्ष्मी, अभिजात वंश में उत्पन्न भुवनपति राजा नन्द—अपने पति को छल से छोड़कर कुलटा की तरह शूद्र (वृषल) के पास पहुँच कर स्थिर हो गया। इस विषय में हम लोग क्या करें! हमारे दृढ़ प्रयत्न को भी भाग्य शत्रु की तरह विफल कर देता है ॥ ६ ॥

English—Moreover :—

The Goddess of sovereignty, deserting her husband, the king of high family, that was the lord of the world, has, by taking advantage

मया हि—

> देवे गते दिवमतद्विधमृत्युयोग्ये
> शैलेश्वरं तमधिकृत्य कृत प्रयत्नः।
> तस्मिन् हते तनयमस्य तथाप्यसिद्धि-
> र्दैवं हि नन्दकुलशत्रुरसौ न विप्र.॥ ७॥

---

of a weak point, gone over to Vrishala like an ill trained wench and has settled firmly with him In this matter what can be do ? Since, fate like an enemy baffles our persistent efforts 6

टिप्पणी—यहाँ राक्षस की पराजित बुद्धि का आक्रोश अद्भुत है। आरम्भ की दो पंक्तियों का कटु उपालम्भ क्रमश घुलता हुआ उत्तरार्द्ध में द्रवित आक्रोश बन गया है। लक्ष्मी के व्याज से सम्पूर्ण नारी जाति की प्रशंसा की समीक्षा में करुण विनोदवृत्ति अत्यन्त मार्मिक है। लगता है—राक्षस के हृदय की वेदना फूट कर निर्वेद बन गयी है। (१) इस श्लोक में—एक ही राज्य लक्ष्मीरूप कर्त्ता के आश्रित त्याग एवं स्थिरीभवन प्रभृति अनेक क्रियाओं के होने से दीपक अलङ्कार है। (२) अविनीता इव, में 'इव' शब्द के प्रयोग से पूर्णोपमा अलङ्कार है। (३) राज्य लक्ष्मी की चञ्चलता में भी स्थिरता का वर्णन रहने के कारण अतिशयोक्ति अलङ्कार है। इस प्रकार तथाकथित अलङ्कार चतुष्टय के साकर्य के कारण संसृष्टि अलङ्कार है तथा वृत्त का नाम शिखरिणी है।

विमला

मयाहि = For I,

अन्वय—अतद्विधमृत्युयोग्ये, देवे, दिवम्, गते, तम्, शैलेश्वरम्, अधिकृत्य प्रयत्न, कृत, तस्मिन्, हते, अस्य, तनयम्, तथापि, असिद्धि, दैवम्, हि, नन्दकुलशत्रु, असौ, विप्र, न ॥ ७॥

व्याख्या—न तद्विधमृत्युयोग्योऽतद्विधमृत्युयोग्यस्तस्मिन्नतद्विधमृत्युयोग्ये = अनार्यकौटिल्यकृतप्राणहरणानर्हे (who suffered a death that did not befit him), देवे=राज्ञि नन्दे (Sire), दिवम्=स्वर्गम् (to heaven), गते=प्राप्ते (had gone), तम्=प्रसिद्धम् (that) शैलश्वरम्=पर्वतेश्वरम् (Pervateswar), अधिकृत्य=आश्रित्य (regarding) प्रयत्न = प्रयास (efforts), कृत = विहित (made), तस्मिन् = पर्वतश्वरे (Parvateswar), हते = मृते (after death), अस्य = नृपस्य (his), तनयम् = पुत्रम् मलयकेतुम् (the son), तथापि (again), असिद्धि = प्रयत्नविफलताजाता (attained no success), दैवम्=भाग्यम् (fate), हि = यत (indeed), नन्दकुलशत्रु = नदवशातिद्वेषी (in the enemy of the house of Nandas), असौ = स (that) विप्रः = चाणक्य (Brahaman Vishnugupta), न = नहि (not) 7

हिन्दी—मैंने तो—

उस प्रकार नृशस मृत्यु के अयोग्य महाराज नन्द के स्वर्ग चले जाने पर महाराज पर्वतक को आश्रय बनाकर उन्हें अधिकार भूमि में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र को आश्रय बनाया। फिर भी, असफलता साथ रही। भाग्य ही नन्दकुल का शत्रु है न कि वह ब्राह्मण चाणक्य। ॥ ७॥

अहो विवेकशून्यता म्लेच्छस्य। कुतः—

यो नष्टानपि बीजनाशमधुना शुश्रूषते स्वामिन-
स्तेषां वैरिभिरक्षतः कथमसौ संधास्यते राक्षसः।
एतावद्धि विवेकशून्यमनसा म्लेच्छेन नालोचितं
दैवेनोपहतस्य बुद्धिरथवा सर्वा विपर्यस्यति॥ ८॥

English—For I,

When the king Nanda had gone to heaven, not at all deserving that kind of death, effort was indeed made by me winning over the king Parvateswar and after he was killed, his son, still, there was no success. *It is fate, who is enemy of the family of Nanda and not that Brahman Chanakya.* "

टिप्पणी—इस श्लोक में अर्थान्तरन्यास का स्पष्ट प्रयोग है। [illegible] अतः यहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है। [illegible] 'शार्दूलविक्रीडित' वृत्त है।

विमर्श

अहो = आश्चर्यम् (Oh), म्लेच्छस्य=म्लेच्छकर्मणः (of the barbarian), विवेकेन शून्यः विवेकशून्यस्तस्य भावः विवेकशून्यता=सदसद्विचारशून्यता (the thoughtlessness).

अन्वयः—यः, अधुना, अपि, बीजनाशम्, नष्टान्, स्वामिनः, शुश्रूषते, असौ, राक्षसः, अक्षतः, तेषाम्, वैरिभिः, कथम्, संधास्यते, एतावत्, हि, विवेकशून्यमनसा, म्लेच्छेन, न, आलोचितम्, अथवा, दैवेन उपहतस्य, सर्वा, बुद्धिः, विपर्यस्यति ॥ ८ ॥

व्याख्या—यः=राक्षसः (Who), अधुना=सम्प्रति (now), अपि (also), बीजनाशम्=समूलनष्टम् (disappeared like seeds), नष्टान्=मृतान् (are destroyed), स्वामिनः=नन्दान् (his masters), शुश्रूषते=सेवते (still serves), असौ=एषः (that), राक्षसः (Rakshasa), अक्षतः=अनिबद्धगात्रः सन् (as he is bound in body), तेषाम्=स्वामिनाम् (them), वैरिभिः=शत्रुभिः (with the foes), कथम्=(how), संधास्यते=सन्धिं करिष्यति (into an alliance), एतावत्=इयत् (of this much), हि=निश्चयं (indeed), विवेकशून्यमनसा=सदसद्विचारशून्यबुद्धिना (by being mind devoid of discrimination), न=नहि आलोचितम्=विचारितम् (could not think), अथवा=वा, (or), दैवेन=भाग्येन (by fate), उपहतस्य=हतभाग्यस्य (of doomed), सर्वा=(all), बुद्धिः=मतिः (the intellect), विपर्यस्यति=विपरीता भवति (becomes perverse). ॥ ८ ॥

तदिदानीमपि तावदरातिहस्तगतो विनश्येन्नतु राक्षसश्चन्द्रगुप्तेन सह संदधीत। अथवा मम काममसत्यसंध इति वरमयशो न तु शत्रुवञ्चनपराभूत इति। (समन्तादवलोक्य सास्रम्।) एतास्ता देवपादक्रमणपरिचयपवित्रीकृततलाः कुसुमपुरोपकण्ठभूमयः। इह हि—

हिन्दी—हा म्लेच्छ की मूर्खता आश्चर्यजनक है!

आजतक समूल नष्ट अपने स्वामियों की जो सेवा करता आ रहा है, वही राक्षस स्वस्थ रहते हुए किसी भी स्थिति में उनके शत्रुओं के साथ क्या समझौता कर सकता है? विमूढ़ म्लेच्छ ने इतना तक भी न विचारा। संभवतः, जब भाग्य साथ छोड़ देता है—व्यक्ति की बुद्धि भी साथ छोड़ देती है॥ ८॥

English—Oh the thoughtlessness of the barbarian!

How can that Rakshasa, who even now serves his masters that disappeared like seeds-unscratched, enter as long as he is sound in body, into an alliance with the enemies. Of this much was not indeed considered by the barbarian, his mind being devoid of discrimination, did not think Or, of one struck by fate, the intellect in its entirety becomes perverse. 8.

टिप्पणी—इस श्लोक में राक्षस के आसू हँसते हैं—वेदना निर्वेद बन गयी है। दुःख की कठोरता पिघल कर मुस्कुरा उठी है। राक्षस की यह मुस्कान होठों से हलाहल का प्याला लगाये, नियति की ज्वाला से जलते जीवन की मुस्कान है। भाग्य की समाधि पर प्रज्वलित दीप की बुझती हुई लौ सा रिसता हुआ निर्वेद। इसमें अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है और छन्द का नाम है 'शार्दूलविक्रीडित'।

विमला

तत्=तस्मात् (even), इदानीम्=अधुना (now), अपि (also), तावत्=आरातिहस्तगत.=अरातीनाम् हस्तोऽरातिहस्तस्तमरातिहस्तम् गतः अरातिहस्तगतः=शत्रुकरग्रस्त. (falling into the hands of enemies), विनश्येत्=म्रियेत (rather will die), राक्षसः (Rakshasa), चन्द्रगुप्तेन=मौर्येण (Chandragupta), सह=सार्द्धम् (with), न=किन्तु (but), न=नहि (not), संदधीत=सन्धिम् विदध्यात् (than treat), अथवा=वा (or), मम (my), कामं=यथेच्छम् (enough), असत्यसन्धः=असत्या सन्धा यस्य सोऽसत्यासन्धः=असत्यप्रतिज्ञः (being false to my word), इति=इत्थम् (such), अयशः=अपकीर्तिः (the infamy), वरम=श्रेष्ठम् (good), नतु (that of), शत्रुवञ्चनपराभूत=रिपुप्रतारणतिरस्कार. (being duped by my adversary), [सास्रम्=अस्रसहितम् (with tear), समन्तात्=चतुर्दिक्षु अवलोक्य=दृष्ट्वा (looking about)], एतास्ता=पूर्वकालविलोकित—(there are), देवस्य=नन्दस्य (Sire), पादक्रमणपरिचयपवित्रीकृततला=पादक्रमणस्य=चरणविक्षेपस्य य परिचयः=अभ्यासः तेन पवित्रीकृतम्=दूतम् तलम् पृष्ठभागे यासाम् तादृश्य.=चरणसञ्चाराभ्यासपूतप्रतोलयः (surface

शार्ङ्गाकर्षानुबन्धप्रशिथिलकविकाप्रग्रहेणात्र देशे
देवेनाकारि चित्रं प्रजवितुरगं बाणमोक्षश्चलेषु ।
अस्यामुद्यानराजौ स्थितमिह कथितं राजभिस्तैर्विनेत्थं
संप्रत्यालोक्यमानाः कुसुमपुरभुवो भूयसा दुःखयन्ति ॥ ९ ॥

---

is sanctified through experience of the footsteps), कुसुमपुरोपकण्ठभूमय = कुसुमपुरसमीपप्रदेशाः (the border grounds of Kusumpura) —इह = अत्र (in this place), हि = यत (for) —

अन्वयः—देवेन, अत्र, देशे, शार्ङ्गाकर्षानुबन्धप्रशिथिलकविकाप्रग्रहेण, प्रजवित-तुरगम् चलेषु, चित्रम्, बाणमोक्षः, अकारि, अस्याम्, उद्यानराजौ, स्थितम्, इह, राजभिः कथितम्, सम्प्रति, तैः, विना, इत्थम्, आलोक्यमानाः, कुसुमपुरभुवः, भूयसा दुःखयन्ति ॥ ९ ॥

व्याख्या—देवेन = राज्ञा (With the king), अत्र देशे = अस्मिन् प्रदेशे (in this place), शार्ङ्गस्य = धनुषः, आकर्षे = आकर्षणे, अनुबन्धेन = नितान्तं अत एव प्रशिथिलः = अतिशिथिलः, कविकायाः = खलीनस्य, प्रग्रहः = रश्मिः तेन = शार्ङ्गाकर्षानुबन्धप्रशिथिल कविका प्रग्रहेण = धनुराकर्षणव्यापारात् शिथिलवल्गाग्रहणेन (loosening his grasp of the bridle cast down when drawing his bow), प्रजवितस्तुरगो यत्र तत् प्रजवित तुरगम् = वेगवदश्वम् (horse galloped at full speed), चलेषु = अस्थिरेषु (at moving), चित्रम् = आश्चर्यम् (in a wonderful), बाणमोक्षः = शरत्यागः अकारि = कृतः (discharged in arrows), अस्याम् = अमुष्याम् (in this), उद्यानराजौ = उपवनपङ्क्तौ (grove of trees), स्थितम् (the king sat), इह = अस्मिन् स्थाने (here), राजभिः (to princes), कथितम् = आलपितम् (talked), सम्प्रति अधुना (now), तैः विना = राजभिर्विना (without them), इत्थम् एव (such), आलोक्यमानाः = सदृश्यमानाः (being seen), कुसुमपुरभुवः (the precincts of Kusumpura), भूयसा = बाहुल्येन (greatly), दुःखयन्ति = क्लेशयन्ति (pain me)

हिन्दी—आज भी शत्रुओं के हाथ में पड़ा राक्षस भले ही नष्ट हो जाय, पर चन्द्रगुप्त से सन्धि नहीं करेगा अथवा—लोक में झूठा 'असत्यसन्धि' की अपकीर्ति मुझे स्वीकार है, किन्तु, शत्रुओं की चाल से पराजित हो गया यह कलङ्क सह्य नहीं है। (मेरी आँखों से चारों ओर देखकर) महाराज के चरणस्पर्श से पवित्र बनी, कुसुमपुर की यह सीमान्त भूमि है।

यह वही भूमि है जहाँ महाराज ने—धनुष खींचने के कारण जिनके घोड़े की लगाम ढीली पड़ गई थी—फिर भी घोड़े के वेग से दौड़ने पर—चञ्चल लक्ष्यों पर आश्चर्यजनक ढंग से बाण छोड़ा था। इस उद्यान की कतार में बैठे थे। यहाँ पर सामन्तों से बातचीत की थी। अब उनके बिना कुसुमपुर की ये इतस्ततः सीमान्त भूमि अत्यन्त पीड़ित कर रहा है ॥ ९ ॥

English—Thus even Rakshasa would indeed die fallen into the hands of his enemies, but would not side with Chandragupta. Or, I would rather have the infamy of being false to my word than that

तत् क्व नु गच्छामि मन्दभाग्यः (विलोक्य) भवतु। दृष्टमेतज्जीर्णोद्यानम्। अत्र प्रविश्य कुतश्चिच्चन्दनदासप्रवृत्तिमुपलप्स्ये अलक्षितनिपाताः पुरुषाणां समविषमदशापरिणतयो भवन्ति। कुतः

पौरैरङ्गुलिभिर्नवेन्दुवदहं निर्दिश्यमानः शनै-
र्यो राजेव पुरा पुरान्निरगमं राज्ञां सहस्रैर्वृतः।
भूयः संप्रति सोऽहमेव नगरे तत्रैव वन्ध्यश्रमो
जीर्णोद्यानकमेष तस्कर इव आसाद्विशामि द्रुतम्॥ १०॥

---

of being beaten by the enemy's strategy. (Looking round with tears) These are those subarban grounds of Knsumpura whose surface is sanctified through expereance of the foot step of Sire.

His Majesty Nanda discharged his arrows in this place at moving goal in a wonderful way even the horse was in full speed due to intied rain at the time of drawing his bow. He sat in this time of gardens Here he wade a gossip with princes. Now, those land of Kusumpura is very much painful (to me) without him. 9.

टिप्पणी—इस श्लोक में स्वभावोक्ति तथा दीपक अलङ्कार है। छन्द का नाम स्रग्धरा है।

विमला

तत्=तस्मात् (So), मन्दभाग्यः=अदृष्टहीनः (ill-starred), क्वनुगच्छामि=कुत्र स्थाने यामि (where should I retire), विलोक्य=दृष्ट्वा (obserlng), भवतु=अस्तु (well), दृष्टम्=अवलोकितम् (I notice), एतत्=इदम् (this), जीर्णोद्यानम् (ruin garden), अत्र=अस्मिन् जीर्णोद्याने (in this old garden), प्रविश्य=अन्तरेत्य (entering), कुतश्चित्=कस्मादपि स्थानात् (from some where), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), प्रवृत्तिम्=वृत्तान्तम् (information), उपलप्स्ये=ज्ञास्यामि (gather), अलक्षितनिपाताः=अलक्षितः उपनिपातो यासाम् ता अलक्षितोपनिपाता=अतर्कितागमा (unexpected advent), पुरुषाणाम्=जनानाम् (of men), समाश्च विषमाश्चेति (इतरेतरद्वन्द्वः) समविषमास्ताश्च ताः दशाः समविषमदशा तासाम् परिणतयः=समविषमदशापरिणतयः=तुल्यातुल्यावस्थापरिणामाः (the changes into the smooth and the rough stages), भवन्ति=जायन्ते (are), कुतः—for '—

अन्वयः—पुरा, यः, अहम्, राज्ञाम्, सहस्रैः, वृतः, राजा, इव, पौरैः, अङ्गुलिभिः, नवेन्दुवत्, निर्दिश्यमानः, पुरात्, शनैः, निरगमम्, सः, एव, वन्ध्यश्रम, एषः, अहम्, सम्प्रति, भूयः, तत्र, एव, नगरे, तस्करः, इव, आसाद्, द्रुतम्, जीर्णोद्यानकम्, विशामि॥ १०॥

व्याख्या—पुरा=पूर्वम् (formerly), यः (who), अहम् (I), राज्ञाम् सहस्रैः=नृपसमूहैः (by thousands of princes), वृतः=परिवेष्टितः सन् (sorrunded), राजा=नृपः (the king), इव=यथा (like), पौरैः=पुरजनैः (by the citizens),

-अङ्गुलिभिः=करशाखाभिः केतैन (with their fingers), नवेन्दुवत्=नवोदितचन्द्र इव (like the new moon), निर्दिश्यमानः=प्रदर्श्यमानः (pointed out), पुरात्=कुसुमपुरात् (from the city), शनैः=क्रमशः (with gentle steps), निर्गतवान्=निर्गतवान् (walked forth), स=असौ एव अहम् (I that very person), वन्ध्यश्रम=वन्ध्य विफलः श्रम=प्रयासो यस्यासौवन्ध्य श्रमः=विफलतन्द्रोद्भवप्रयासः सन् (with all efforts turned fruitless), एष=असौ (that), सम्प्रति=अधुना (now) भूयः पुनः (again), तत्र एव नगरे=तस्मिन्नेव पुरे (in that very city), तस्कर=दस्यु (a thief), इव=यथा (like), भयात्=भयात् (out of fear), द्रुतम्=शीघ्रम् (hastily), जीर्णोद्यानकम्=पुरातनावशेषोपवनम् (espicable garden of ruins), विशामि=प्रविशामि (enters) ॥ १० ॥

हिन्दी—इतभाग्य मैं अब कहाँ जाऊँ ? (देखकर) अस्तु—यह जीर्णोद्यान पूर्व से देखा है। इसी में प्रवेश कर यहीं से चन्दनदास का किञ्चित् का पता लगाऊँगा। ओह पुरुषों के अनुकूल किंवा प्रतिकूल स्थितियों का परिणाम अज्ञातरूप से ही आता है। क्योंकि,—

पहले यहीं हजारों सामन्तों से घिरा हुआ एक राजा की तरह न, दूज के चन्द्र की तरह पुरवासियों के द्वारा अङ्गुलि से दिखाया जाता—धीरे धीरे नगर से निकलता था। निष्फल प्रयास बनकर, वहीं आज—वही मैं—चोर की तरह भयाक्रान्त शीघ्रता से जीर्णोद्यान में प्रवेश कर रहा हूँ ॥ १० ॥

English—Where now, can I an unfortunate fellow, go ? (Observing) Well, this old garden is known to me. I shall try to know something of Chandandas entering inside it. Ah, the favourable or unfavourable turns of man's life are of unexpected advent. Because of —

I who previously moved out of this town with gentle step, being attended like a king by thousands of princes and being pointed out by the fingers of citizens like the new moon. Now, enter into the old garden of that very city fastly like a thief, with all deeds turned fruitless. 10

टिप्पणी—यह श्लोक या राक्षस को पराजित बुद्धि का अद्भुत आक्रोश ही है। इसमें राक्षस के हृदय की पीडा बनकर आँखों को बाढ बन कर उमड पड़ा है। उसके विगत जीवन के वैभव का वर्णन सुनकर व्याकुलता भी व्याकुल हो उठती है।

संस्कृत के रसवादी कवियों ने नव शैली के वर्णनों का अपेक्षा नहीं की जा सकती है। उन्हें अमर्ष, असूया आदि सञ्चारियों में 'काकाक्षित' नाम के उद्भूत व्यक्त में, काकु के वैशिष्ट्य से वाच्य की व्यञ्जकता में, अविवक्षित वाच्य ध्वनि के अत्यन्त तिरस्कृत वाच्य नामक भेद में ढूँढा जा सकता है। मुद्राराक्षस के प्रस्तुत प्रसंग इस प्रकार के उदाहरणों से ओतप्रोत हैं। विशाखदत्त के ये वर्णन गुदगुदाते हैं, रुलाते भी हैं—पर भरतक कडवापन कहीं नहीं आने देते ॥

इस श्लोक में उपमा तथा पर्याय अलङ्कार है। छन्द का नाम—शार्दूलविक्रीडित है।

अथवा येषां प्रसादादिदमासीत्त एव न सन्ति। (नाट्येन प्रविश्यावलोक्य च।) अहो जीर्णोद्यानस्यारमणीयता। अत्र हि—

विपर्यस्तं सौधं कुलमिव महारम्भरचनं
सरः शुष्कं साधोर्हृदयमिव नाशेन सुहृदाम्।
फलैर्हीना वृक्षा विगुणनृपयोगादिव नया-
स्तृणैश्छन्ना भूमिर्मतिरिव कुनीतैरविदुषः॥ ११॥

विमला

अथवा=किं वा (But why), येषाम्=नन्दानाम् (they themselve), प्रसादात्=अनुग्रहात् (to whose favour), इदम्=अनुभूयमानम् (this), आसीत्=अभूत् (was), एव न सन्ति=न विद्यते (due), [नाट्येन=अभिनयेन (acting), प्रविश्य=अन्तरेत्य (entry), अवलोक्य=निरीक्ष्य (looking about)], अहो=आश्चर्यम् (wonderful), जीर्णोद्यानस्य=पुरातनोपवनस्य (of the old garden), अरमणीयता=अचारुत्वम् (the sad appearance), अत्र हि= अस्मिन्विषये यत (For here) —

अन्वयः—महारम्भरचनम्, सौधम्, कुलम् इव, विपर्यस्तम्, सरः, सुहृदाम्, नाशेन, साधोः, हृदयम्, इव, शुष्कम्, वृक्षाः, विगुणनृपयोगात्, नयाः, इव, फलैः, हीनाः, भूमिः, कुनीतैः, अविदुषः, मतिः, इव, तृणैः छन्ना॥ ११॥

व्याख्या—महाश्चासावारम्भो महारम्भस्तेन रचना यस्य तन्महारम्भरचनम् यद्वा महानारम्भो यस्याः सा महारम्भा महारम्भा रचना यस्य तन्माहारम्भरचनम्=प्रचुरोद्योगरचितम् (once performed mighty deeds), सौधम्=हर्म्यम् (the mansion), कुलम्=वंशम् (family), इव=यथा (like), विपर्यस्तम्=नष्टम् (dilapidated), सरः=ह्रदः (tank), सुहृदाम्=मित्राणाम् (of his friend), नाशेन= विनष्टेन (by the destruction), साधोः=महात्मनः (of good man), हृदयम्= चित्तम् (the heart), इव=यथा (like), शुष्कम्=नीरसम् जातम् (is dried up), वृक्षाः=तरवः (the trees), विगुणश्चासौ नृपः विगुणनृपस्तस्य योगस्तस्मात् विगुणनृपयोगात्=प्रतिकूलनृपवशात् (under adverse king), नयाः=नीतयः (political schemes) इव=यथा (like), फलैः=शस्यैर्लाभैश्च (fruits), हीनाः= रहिताः (bears no), भूमिः=कुसुमपुरप्रदेशः (the ground), कुनीतैः=दुर्नयेन (with bad Counsels), अविदुषः=अज्ञस्य (of foolish), मतिः=बुद्धिः (mind), इव=यथा (like), तृणैः=तृणैः (with grass), छन्ना=आवृत्ता दृश्यते (is covered)॥ ११॥

हिन्दी—अथवा—जिनकी कृपा से ये सारी वस्तुएँ थीं—वे ही नहीं हैं। (अभिनयपूर्वक प्रवेश करके और देखकर) जीर्णोद्यान की असुन्दरता अत्यन्त दुःखदायी बन गयी है। क्योंकि —

पर्याप्त प्रयत्न से निर्मित यह राजमहल—वंश की तरह ही अस्तव्यस्त हो गया है। मित्रों के विनाश से साधु पुरुष के हृदय की तरह ही यह सरोवर भी सूख गया है। गुणहीन राजा के

अपि च ।

क्षताङ्गानां तीक्ष्णैः परशुभिरुदग्रैः क्षितिरुहां
रुजा कूजन्तीनामविरतकपोतोपरुदितैः ।
स्वनिर्मोकच्छेदैः परिचितपरिक्लेशकृपया
श्वसन्तः शाखानां व्रणमिव निबध्नन्ति फणिनः ॥ १२ ॥

सम्पत्ति से फलहीन नीति की तरह यहाँ वृक्ष भी फलहीन हो गये हैं। कुत्सित नीति से अज्ञ की बुद्धि की तरह यहाँ की भूमि भी तृणों से आच्छन्न हो गयी है ॥ ११ ॥

English—Or, they themselves are now no longer to whose grace all these were due (Acting his entrance and observing) the repulsiveness of the old garden is painful. Because :—

The mansion, made with good masonry, is in dilapidated condition like the family The pond has dried up like the heart of an honest man by the destruction of friends. Trees have become fruitless like political schemes by the touch of a worthless king The ground is full of grasses like the mind of a fool with bad counsels. 11.

टिप्पणी—इस श्लोक में मालोपमा अलङ्कार है तथा शिखरिणी छन्द है।

विमला

अन्वयः—तीक्ष्णैः, उदग्रैः, परशुभिः, क्षताङ्गानाम्, क्षितिरुहाम्, रुजा, अविरतकपोतोपरुदितैः, कूजन्तीनाम्, शाखानाम्, व्रणम्, फणिनः, परिचितपरिक्लेशकृपया, श्वसन्तः, स्वनिर्मोकच्छेदैः, निबध्नन्ति, इव ॥ १२ ॥

व्याख्या—अपि च=अन्यदपि (Moreover), तीक्ष्णैः=निशितैः (with sharp), उदग्रैः=उन्नताग्रभागैः (edged), परशुभिः=कुठारैः (axes), क्षताङ्गानाम्=छिन्नावयवानाम् (bough with their body), क्षितिरुहाम्=तरूणाम् (of the tree), रुजा=पीडया (of pain), अविरतानि अविच्छिन्नानि कपोतानामुपरुदितानि तैरविरतकपोतोपरुदितैः अविच्छिन्नारावकूजितैः=कपोतोपकूजितव्याजेनेत्यर्थः (with the ceaseless cooing of Pigeons), कूजन्तीनाम्=शब्दम् कुर्वन्तीनाम् (are uttering cries), शाखानाम्=विटपानाम् (of the branches of the trees), व्रणम्=क्षतम् (the wounds), फणिनः=सर्पाः (the Serpents), परिचितानाम्=सहवासिनाम् (of their acquaintances), परिक्लेशः=परिचितपरिक्लेशः (fatigue), तेन तद्दर्शनेन (through), या कृपा=दया (pity), तया परिचितपरिक्लेशकृपया=सहवासिदुःखदर्शनजन्यानुकम्पया, श्वसन्तः=दीर्घनिःश्वासम् त्यजन्तः (having sigh), स्वनिर्मोकच्छेदैः=स्वेषां निर्मोकाः स्वनिर्मोकाः तेषां छेदाः तैः स्वनिर्मोकच्छेदैः (with the pieces of their sloughs), निबध्नन्ति=वेष्टयन्ति (bandaging), इव=यथा (like) ॥ १२ ॥

एते च तपस्विन —

> अन्त शरीरपरिशोषमुदग्रयन्त
> कीटक्षतिस्रुतिभिरस्रमिवोद्वमन्त ।
> छायावियोगमलिना व्यसने निमग्ना
> वृक्षा श्मशानमुपगन्तुमिव प्रवृत्ता ॥ १३ ॥

हिन्दी—और भी—तीक्ष्ण धारवाले कठोर कुठारों से क्षत विक्षत बने शरीरवाले पेड़ों की पीड़ा से—अनवरत कबूतरों के करुण कूजन के माध्यम से कराहती हुई शाखाओं के घाव को—इनके कोटराश्रित सर्प मानों पुराने परिचय के कारण इनकी यह व्यथा सह्य न करते हुए—फूँक मारकर, अपनी केंचुलों के टुकड़ों से मरहम पट्टी कर रहे हैं ॥ १२ ॥

English—The Serpents as if through pity excited by the sufferings of their acquaintances, are hissing and bandaging with the pieces of their sloughs, the wounds of the branches of the trees which are crying in pain with the ceaseless cooing of Pigeons, being hacked with large and sharp edged axes 12

टिप्पणी—इस श्लोक में उत्प्रेक्षा अलंकार एवं शिखरिणी छन्द है।

निमला

अन्वय—अन्त शरीरपरिशोषम्, उदग्रयन्त , कीटक्षतिस्रुतिभि , अस्रम्, उद्वमन्त , इव, छायावियोगमलिना , व्यसने निमग्ना , वृक्षा , श्मशानम्, उपगन्तुम् प्रवृत्ता , इव ॥ १३ ॥

व्याख्या—एते (These), च=पुन (again), तपस्विन (unfortunate) — अन्त शरीरस्य परिशोषाऽन्त शरीरपरिशोषम्=शरीराभ्यन्तरशोषणम् (the drying up within), उदग्रयन्त=प्राप्नुवन्त (aggravating), कीटानाम् क्षतय कीटक्षतयस्ताभ्य स्रुतय कीटक्षतिस्रुतयस्ताभि कीटक्षतिस्रुतिभि =कीट त्वक्छिद्रस्रवणै (through holes bored by insects), अस्रम्=नेत्रजलम् (tears), उद्वमन्त =मुञ्चन्त (dropping), इव=यथा (like), छायाया = अनातपस्य वियोग =अभाव , तेन मलिना =छायावियोगमलिना =पत्राभावात् छायाविरहेणाशोभमाना (gloomy looking from want of shade), व्यसने = दु खे (into misery), निमग्ना =पतिता (plunged) वृक्षा =तरव (the trees), श्मशानम्=पितृवनम् (the cemetery), उपगन्तुम्=आश्रयितुम् प्रवृत्ता= उद्युक्ता (preparing to go), इव=यथा (like) ॥ १३ ॥

हिन्दी—और ये बेचारे—

अपने शरीर की आन्तरिक शुष्कता को बढ़ाते हुए कीटों के छेद कर देने से निकलते हुए प्रवाहरूपी अश्रुपात से—सहचरी छाया के विरह से मलिन दुःख में डूबे हुए की तरह ये वृक्ष मानो श्मशानभूमि की ओर अग्रसर होते हुए दिखलाई पड़ रहे हैं ॥ १३ ॥

English—Again these poor trees —

यावदस्मिन् विषमदशापरिणामसुलभे भिन्नशिलातले मुहूर्तमुपविशामि। (उपविश्याकर्ण्य च।) अये किन्नु खल्वस्मिन् काले पटुपटहशङ्खमिश्रो नान्दीनादः। य एष—

प्रमृद्नन् श्रोतॄणां श्रुतिपथमसारं गुरुतया
बहुत्वात् प्रासादैः सपदि परिपीतोऽज्झित इव।
असौ नान्दीनादः पटुपटहशङ्खध्वनियुतो
दिशां द्रष्टुं दैर्घ्यं प्रसरति सकौतूहल इव ॥ १४ ॥

Trees, plunged into misery, withered through loss of shade, and the drying of interior of their trunk, bearing the holes bored in them by worms like very heavy grief, were as if preparing to go to the burning ground. 13.

टिप्पणी—इस श्लोक में उत्प्रेक्षा अलङ्कार एवं वसन्ततिलका छन्द है।

विमला

यावत् = यावत्कालपर्यन्तम् (till), अस्मिन् = पुरोदृश्यमाने (on this), विषमा चासौ दशा विषमदशा तस्याः परिणामः स एव सुलभः तस्मिन् विषमदशापरिणामसुलभे=कठिनदुरवस्थावशिष्टभागसुकरे (easily available in the fullness of the rough time), भिन्नशिलातले = भग्नप्रस्तरखण्डे (broken slab of stone), मुहूर्तम् = क्षणम् (for a moment), उपविशामि=आसनग्रहणम् करोमि (I will sit), [उपविश्य = आसनग्रहणं विधाय=(sitting), च=पुनः=and, आकर्ण्य = श्रुत्वा = (listening),] अये = आश्चर्ये (Ha), किम्=किमर्थम्-कुतो वा (why), इदम् = एतद् (this), अस्मिन् काले = अधुना (at this time), पटुपटहशङ्खमिश्रः=कम्बुगम्भीरपटहवाद्यशब्दमिलितः (with deep notes of drums and conches intermingled), नान्दीनादः = स्तुतिपाठध्वनिः (sound of festive music), य एषः—

अन्वयः—श्रोतॄणाम्, असारम्, श्रुतिपथम्, गुरुतया, प्रमृद्नन्, बहुत्वात्, प्रासादैः, सपदि, परिपीतोऽज्झितः, इव, पटुपटहशङ्खध्वनियुतः, असौ, नान्दीनादः, सकौतूहलः, इव, दिशाम्, दैर्घ्यम्, द्रष्टुम्, प्रसरति ॥ १४ ॥

व्याख्या—श्रोतॄणाम्=आकर्णयितॄणाम् (of the hearers), असारम्=नास्ति सारो यस्यासौ असारः तम् = असारम् = संकुचितम् (the narrow), श्रुतिपथम्=श्रोत्रम् (of the ear), गुरुतया = गुरोर्भावः गुरुता तया गुरुतया = महत्तया (so long), प्रमृद्नन् = पीडयन् (blended), बहुत्वात् = आधिक्यात् (heavy), प्रासादैः=राजभवनैः (by the mansions), सपदि=शीघ्रम् (quick), परिपीतोऽज्झितः इव= पूर्वम् परिपीतः पश्चादुज्झित इव = उद्वान्त इव (drunk in and then vomited forth), पटहश्च शंखश्च पटहशंखौ तयोर्ध्वनयः पटहशंखध्वनयः पटवश्च ते पटहशंखध्वनयः पटुपटहशंखध्वनयस्तैर्युतः = पटुपटहशंखध्वनियुतः = ढक्काशंखनादसम्बद्धः (with the sound of deep sounding drums and conches), असौ = एषः (this),

(विचिन्त्य ।) आः, ज्ञातम् । एप हि मलयकेतुसयमनसजातो राजकुलस्य–(इत्यर्धोक्ते सासूयम् ।) मौर्यकुलस्याधिकपरितोप पिशुनयति । (सबाष्पम् ।) कष्टं भोः, कष्टम् ।

श्रावितोऽस्मि श्रियं शत्रोरभिनीय च दर्शितः ।
अनुभावयितुं मन्ये यत्नः संप्रति मां विधे. ॥ १५ ॥

नान्दीनाद =मगलतूर्यध्वनिः (sound of festive music), सकौतूहल =कौतुकवानिव (curious), दिशाम् = आशानाम् (of the quarters), दैर्घ्यम् = विस्तारम् (length), द्रष्टुम् = अवलोकितुम् (to measure), प्रसरति = सर्वतो गच्छति (spreads) ॥ १४ ॥

हिन्दी—जब तक इस विपन्न स्थिति में अनायास उपलब्ध इस शिलाखण्ड पर ही बैठता हूं । (बैठकर और सुनकर), अरे, यह अकारण शङ्ख और दुन्दुभियों की मिश्रित मांगलिक ध्वनि क्यों सुनाई पड़ती है ?

जो यह—ध्वनि इतनी गभीर और प्रबल है कि सुननेवालों के सकुचित कान के छिद्रों को महान् होने के कारण पीडित करती हुई—ऊँचे ऊँचे प्रासाद जो उसे मानो पीकर उगल रहे हैं—सुन्दर नगाड़े और शङ्खों की ध्वनि से युक्त—माङ्गलिक गीतमय उत्कण्ठित सी दिशाओं के विस्तार को नाप रही है ॥ १४ ॥

English—I will sit down for a moment on this broken slab of stone, easily available in the fullness of the time of miseries. (Sitting down and hearing) Ha what is this sound of festive music at this hour with sound of drums and conches ?

This tumult of rejoicing blended with the sound of deep sounding drums and conches, which is drunk and through its magnitude instantly thrown up by the big mansions, spreads as if curious to measure the expanse of the quarters. 14.

टिप्पणी—इस श्लोक में उत्प्रेक्षा अलकार तथा शिखरिणी छन्द है ।

विमला

[विचिन्त्य=विचार्य (Musing)], आ = इति स्मरणार्थकमव्ययम् (Ah), ज्ञातम्= अवगतम् (I see), एप हि = अय हि (this indeed), मलयकेतोः संयमनम् मलयकेतुसयमनम्, तस्मात् संजातो मलयकेतुसयमनसंजातः = पर्वतकपुत्रबन्धनोत्पन्नः (arising from the capture of Malayaketu), राजकुलस्य = नृपवासस्य (in the royal palace), इत्यर्धोक्ते = इति वाक्यार्धमभिधाय (At this half-utterance), सासूयम् = सद्वेषम् (through jealousy), मौर्यकुलस्य = चन्द्रगुप्तवंशस्य (in the place of Maurya), अधिकपरितोषम् = प्रभूतानन्दम् (the increased joy), पिशुनयति = सूचयति (indicates), [सबाष्पम् = साश्रुनयनम् (with tears)], कष्ट भोः कष्टम् (Alas ! Alas !).

अन्वयः—शत्रोः, श्रियम्, श्रावित , अस्मि, अभिनीय, दर्शित , च, अस्मि, मन्ये, सम्प्रति, विधे , माम्, अनुभावितुम्, यत्नः ॥ १५ ॥

पुरुषः—आसीणो अज्ज। जाव अज्जचाणक्कादेसं संपादेमि। (आसीनोऽयम्। यावदार्यचाणक्यादेशं सम्पादयामि।)

(राक्षसमपश्यन्निव तस्याग्रतो रज्जुपाशेन कण्ठमुद्बध्नाति।)

राक्षसः—(विलोक्य।) अये, कथमात्मानमुद्बध्नात्ययमहमिव दुःखितस्तपस्वी। भवतु। पृच्छाम्येनम्। भद्र, किमिदमनुष्ठीयते।

व्याख्या—शत्रोः = अरेः (Of enemy), श्रियम् = सम्पत्तिम् (of the prosperity), श्रावितः = आकर्णितः अस्मि = भवामि (I was informed), अभिनीय = सन्नीयमानोऽपि (after being brought here), दर्शितः = साक्षात्कारितः (have been made to see), च = पुनः (and), अस्मि = भवामि (I am), मन्ये = संभावयामि (I think), सम्प्रति = अधुना (now), विधेः = दैवस्य (of fate), माम् = (me), अनुभावयितुम् = ज्ञापयितुम् (to make feel it), यत्नः = प्रयासः (efforts). ॥१५॥

हिन्दी—(कुछ सोचकर) अच्छा, समझ गया। मलयकेतु के बन्दी बन जाने पर निश्चय ही यह राजकुल (इतना कहने पर ईर्ष्यापूर्वक) मौर्यकुल की अत्यधिक प्रसन्नता सूचित कर रहा है। (आँखों में आँसू भर कर) हा कष्ट! यह विधि का क्रम!

शत्रु की समृद्धि का मैं श्रोता मात्र हो लिया और यथावसर यहाँ लाकर उसका प्रत्यक्षद्रष्टा भी हो लिया। अब इस समय भाग्य का मुझे केवल अनुभव कराने का प्रयास है॥ १५॥

English—(Thinking) O, I see, This actually indicates the over-joy of royal family (at this half statement with jealousy) in the place of Maurya at the arrest of Malayaketu (with tears) painful! O painful!

I have been made to hear the prosperity of my enemy (by fate) and to see it. I think—Fate's effort now is to make me feel it. 15.

विमला

पुरुषः—अयम् = एषः (He), आसीनः = उपविष्टः (has sat down), यावत् = यावत्कालपर्यन्तम् (till), आर्यचाणक्यादेशम् = पूज्यकौटिल्याज्ञाम् (Noble Chanakya's commands), सम्पादयामि = करोमि (I shall execute).

[राक्षसमपश्यन्निव = नन्दसचिवमनवलोकयन्निव = (though without seeing Rakshasa), तस्य राक्षसस्य (him), अग्रतः = पुरतः (before), रज्जुपाशेन = बन्धनदाम्ना (with the noose of the rope), कण्ठम् = गलम् (neck), उद्बध्नाति = बध्नाति (ties up)].

राक्षसः—[विलोक्य = दृष्ट्वा = (Observing)], अये = कारुण्याविष्कारे सम्बोधनम् (Ah), अयम् = एष पुरुषः (this man), कथम् = कस्मात् कारणात् (how), आत्मानम् = स्वम् (he himself), उद्बध्नाति = संबध्नाति (ties up), अहमिव (like me), तपस्वी (the poor), दुःखितः = आर्तः (must be miserable), भवतु = अस्तु (well), एनम् = (to him), पृच्छामि (I ask), भद्र = कल्याणिन् (gentle), इदानीम् = अधुना (now), किम् (what), अनुष्ठीयते = विधीयते (are doing).

पुरुषः—(सवाष्पम् ।) अज्ज, जं पिअवअस्सविणासदुःखिदो अम्हारिसो मन्दभग्गो अणुचिट्ठदि । (आर्य, यत्प्रियवयस्यविनाशदुःखितोऽस्मादृशो मन्दभाग्योऽनुतिष्ठति ।)

राक्षसः—(आत्मगतम् ।) प्रथममेव मया ज्ञातं नूनमहमिवार्तस्तपस्वीति । (प्रकाशम् ।) हे व्यसनसब्रह्मचारिन्, यदि न गुह्यं नातिभारिकं वा ततः श्रोतुमिच्छामि ।

पुरुषः—[सवाष्पम्=साश्रुनयनम् =(With teare)], आर्य = पूज्य (noble), प्रियवयस्यविनाशदुःखितः=अतिरिनग्धमित्रविरहार्त्तः (grieved at the loss of his dear friend), अस्मादृशः = मत्सदृशः (like myself), मन्दभाग्यः = भाग्यहीनः जनः (unfortunate fellow), अनुतिष्ठति = करोति (does).

राक्षसः—[आत्मगतम् = अनतिस्पष्टम् = (To himself)], प्रथममेव = प्रागेव (At the very outset), मया ज्ञातम्=अवगतम् (it was guessed by me), नूनम् = निश्चयम् (surely) अहमिव (like me), आर्त्तः=दुःखितः (distressed), तपस्वी= दीनः (poor fellow), [प्रकाशम्=स्पष्टम् = (aloud)], हे व्यसनसब्रह्मचारी = ब्रह्म वेदस्तदध्ययनार्थम् व्रतमपि ब्रह्म तच्चरतीति ब्रह्मचारी समानः ब्रह्मचारी सहाध्यायी व्यसनेन सब्रह्मचारी व्यसनब्रह्मचारी तत्सम्बुद्धौ हे व्यसनसब्रह्मचारिन् , समानव्यसनम् (O fellow-student in the school of misfortune), यदि न गुह्यम् = यदि न गोपनीयम् (if not secret), वा = अथवा (or), नातिभारिकम्=अगुरुकम् (not very painful), ततः (then), श्रोतुमिच्छामि=आकर्णितुमभिलषामि (I wish to hear it).

हिन्दी—पुरुष—यह लो, बैठ गया। अब मैं भी आर्य चाणक्य की आज्ञा को कार्यान्वित करूँ।

(जैसे राक्षस को न देखता हुआ सा, उसीके सामने गले में फंदा डालने लगता है)

राक्षस—(देखकर) अरे, यह क्या ? यह तो अपने आप को ही बाँध रहा है। बेचारा मेरे जैसा ही कोई दुखी है। अस्तु, चलकर पूछता हूँ। (समीप जाकर) भद्र-क्या कर रहे हो ?

पुरुष—(साश्रुनयन) आर्य, प्रियमित्र के विनाश से दुखी मेरे जैसा हतभाग्य जो करता है।

राक्षस—(अपने आप) मैंने तो पहले ही जान लिया था—निश्चय ही गरीब मेरी तरह पीड़ित है। (प्रकट) मेरे विपत्ति के सहचर, यदि कोई बड़ा रहस्य न हो अथवा हृदय विदारक न हो तो सुनना चाहता हूँ।

English—*Man*—He sat down, Now I perform the order of Noble Chanakya.

(*He ties up the noose of the rope round his neck pretending* without seeing Rakshasa)

Rakshasa—(Obeserving) An, this man is hanging himself up. The poor man must be as distressed as I am ! Well, I ask him (Advancing near him) Gentle man ! what is being done ?

पुरुषः—अज्ज, ण रहस्सं णादिगुरुअं किंदु ण सक्कुणोमि पिअवअस्सविणासदुक्खिदहिअओ एत्तिअमेत्तं वि मरणस्स कालहरणं कादुं। (आर्य न रहस्यं नातिगुरुकम्। किंतु न शक्नोमि प्रियवयस्यविनाशदुःखितहृदय एतावन्मात्रमपि मरणस्य कालहरणं कर्तुम्।)

राक्षसः—(निःश्वस्य, आत्मगतम्।) कष्टमेतत् सुहृद्व्यसनेषु परमुदासीनाः प्रत्यादिश्यामहे वयमनेन। (प्रकाशम्।) भद्र, यदि न रहस्यं नातिगुरु तच्छ्रोतुमिच्छामि।

पुरुषः—अहो णिब्बन्धो अज्जस्स। का गई। णिवेदेमि। अत्थि दाव एत्थ णअरे मणिआरसेट्ठी विष्णुदासो णाम। (अहो निर्बन्ध आर्यस्य। का गतिः। निवेदयामि। अस्ति तावदत्र नगरे मणिकारश्रेष्ठी विष्णुदासो नाम।)

Man—(With tears) Noble Sir, I am performing nothing more than a man can do at the destruction of his friend

Rakshasa—(To himself) I knew before that this poor fellow was surely distressed like myself. (Aloud) O my friend of misfortune! if it is neither secret nor painful, I wish to know it.

विमला

पुरुष—आर्य=मान्य (Noble), न रहस्यम्=न गोप्यम् (is no secret), नातिगुरुकम्=नातिमारिकम् (nor very painful), किन्तु (but), प्रियश्चासौ वयस्यश्चेति प्रियवयस्यः तस्य विनाशस्तेन दुःखितं हृदयं यस्य सः प्रियवयस्यविनाशदुःखितहृदयः=स्निग्धमित्रवियोगार्तमानसः (with my heart stricken at the loss of my dear friend), एतावन्मात्रमपि=अत्यल्पमपि (even this much), मरणस्य=प्राणत्यागस्य (of death), कालहरणम् कर्तुम्=समययापनम् विधातुम् (loss of time), न शक्नोमि=न समर्थः (I can not brook)

राक्षस—[निःश्वस्य=(Sighing), आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself)], कष्टम् (Hard), एतत्, सुहृद्व्यसनेषु=चन्दनदासविपत्सु (in his friend's straits), परमुदासीना=अकर्मण्योऽहम् (I am apathetic), वयम् (we), अनेन=अमुना (by this man), प्रत्यादिश्यामहे=तिरस्क्रियामहे (is being ashamed), [प्रकाशम्=स्पष्टम्=(Aloud)], भद्र=कल्याणिन् (Gentle), यदि (if), न रहस्यम्=न गोप्यम् (is not secret), नातिगुरु=नातिविस्तृतम् (neither very painful), तत्=तस्मात् (so), श्रोतुमिच्छामि=आकर्णयितुमिच्छामि (I wish to hear)

पुरुष—अहो=आश्चर्यम् (Wonder), आर्यस्य=मान्यस्य (of noble sir), निर्बन्धः=आग्रहातिशयः (the insistence), का गतिः=कः उपायः (what help), निवेदयामि=कथयामि (I will tell you), अत्र=नगरे (in this city), मणिकारश्रेष्ठी=वैश्यजातीय (Jewel merchant), विष्णुदासो नाम (Vishnudas by name), अस्ति (is).

राक्षसः—(आत्मगतम् ।) अस्ति विष्णुदासश्चन्दनदासस्य सुहृत् । (प्रकाशम् ।) किं तस्य ।

पुरुषः—सो मम पिअवअस्सो । (स मम प्रियवयस्यः ।)

राक्षसः—(सहर्षमात्मगतम् ।) अये प्रियवयस्य इत्याह । अत्यन्तसन्निकृष्टः सम्बन्धः । हन्त, ज्ञास्यति चन्दनदासस्य वृत्तान्तम् । (प्रकाशम् ।) भद्र, किं तस्य ।

हिन्दी—पुरुष—आर्य, न कोई रहस्य की बात है और न कोई हृदय विदारक बात ही है, लेकिन, मित्र के विनाश से विदीर्ण हृदय-अपने प्राणत्याग में अब इतना भी विलम्ब सह्य नहीं कर सकता ।

राक्षस—(लम्बी सास लेकर अपने आप) हा कष्ट, इस व्यक्ति ने अपने (चरित्र से) मित्र की विपत्ति में उदासीन (मुझे) अत्यन्त तिरस्कृत कर दिया । (प्रकट) मित्र, यदि गुप्त या हृदय-विदारक नहीं है तो सुनना चाहता हू ।

पुरुष—आर्य का आग्रह आश्चर्यजनक है । क्या उपाय है ? बतलाता हू । इस नगर में एक स्वर्णकार रहता है—सेठ विष्णुदास ।

English—*Man*—Sir, it is neither secret nor painful. But with my heart afflicted with the loss of my dear friend, I can not lose even a little time in dying.

Rakshasa—(Sighing to himself) Hard ! Here I am (put to shame) by this man to tell I am supremely indifferent in my friend's (of Chandandas) straits.

Man—Oh, Noble Sir, is very pressing. What help ? I will tell you. There is a Jewel merchant in this city, Vishnudasa by name.

विमला

राक्षस —[आत्मगतम्=स्वगतम् = (To himself)], चन्दनदासस्य (Chandandasa's), सुहृत् = मित्र (friend), विष्णुदास. = एतद्नामकः (Vishnudasa by name), अस्ति (is), [प्रकाशम् = स्पष्टम् (Aloud)], तस्य किम् (what of him), ?

पुरुष —सः = असौ (He), मम (my), प्रियवयस्य = स्निग्धमित्रम् (dear friend).

राक्षस —[सहर्षम्=हर्षेण सहितम्=(With joy), आत्मगतम् (to himself)], अये=आश्चर्यम् (Wonder), प्रियवयस्य=स्निग्धमित्रम् (dear friend), इत्याह = एव कथितम् (he says), अत्यन्तसन्निकृष्टः सम्बन्ध = अनतिदूरवर्त्तिन्यपेक्षा (the relationship is very close), हन्त=हर्षे (oh joy), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), वृत्तान्तम् = उदन्तम् (news), ज्ञास्यति=अवगमिष्यति (must know), [प्रकाशम्=स्पष्टम् (Aloud)] भद्र=कल्याणिन् (Gentle), किं तस्य (what of him).

पुरुषः—सो सपद दिण्णाभरणादिविहवो जलणं पवेसिदुकामो णअरादो णिक्कन्तो। अहं वि जाव तस्स असुणिदव्वं ण सुणेमि ताव अत्ताणं उब्बन्धिअ वावादइदुं इमं जिण्णुज्जाणं आअदो। (स सम्प्रति दत्ताभरणादिविभवो ज्वलन प्रवेष्टुकामो नगरान्निष्क्रान्तः। अहमपि यावत्तस्याऽश्रोतव्यं न शृणोमि तावदात्मानमुद्बध्य व्यापादयितुमिदं जीर्णोद्यानमागतः।)

राक्षसः—भद्र, अग्निप्रवेशे सुहृदस्ते को हेतुः।

किमौषधपथातिगैरुपहतो महाव्याधिभिः

पुरुषः—णहि णहि। (नहि नहि।)

हिन्दी—राक्षस-(अपने आप) विष्णुदास चन्दनदास का घनिष्ठ मित्र है। (प्रकट रूप से) उसका क्या हुआ ?

पुरुष—वह मेरा एक इष्ट मित्र है।

राक्षस—(प्रसन्नता के साथ, अपने आप) अरे, प्रिय मित्र कहा है। अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। अब चन्दनदास का समाचार अवश्य जानता होगा। (प्रकट) भद्र, इसे क्या हुआ ?

English—*Rakshasa*—(To himself) There is Vishnudasa, Chandandasa's friend. (Aloud) What of him ?

Man—He is my dear friend.

Rakshasa—(With joy to himself) Ha, he tells his dear friend. That is a very close connection. Oh, joy, he must know the news of Chandandasa (Aloud) What of him.

टिप्पणी

पुरुषः—सः=असौ (He), सम्प्रति=अधुना (now), दत्ताभरणादिविभवः= दत्त आभरणादिविभवो येनासौ=अर्पितैश्वर्यः (having given away the ornaments and all other properties), ज्वलन प्रवेष्टुकामः=अग्निप्रवेशाभिलाषी (with the desire of throwing himself into the fire), नगरात्=पुरात् (from the city), निष्क्रान्तः=निर्गतः (gone out), अहमपि (I too), यावत्तस्य (his), अश्रोतव्यम्=मृत्युम् (death), न शृणोमि=श्रवणगतं करोमि (I should hear), तावत्=तत्पर्यन्तमेव (before that time), आत्मानम्=स्वम् (himself) उद्बध्य=बध्वा (to hang up), व्यापादयितुम्=विनाशयितुम् (for destroying), इदम्=एतत् (this), जीर्णोद्यानम् (old garden), प्रविशामि (entering)

राक्षस—भद्र=कल्याणिन् (Good man), ते=तव (your), सुहृदः=मित्रस्य (friend's), अग्निप्रवेशे (entering fire), को हेतुः=किं कारणम् (what is the cause)—

किमौषधपथातिगैरुपहतो महाव्याधिभिः। (व्याख्या पृ० ४२१ में)

पुरुष—नहि नहि=स्वरायाम् द्विरुक्तिः, उत्कृष्टरोगो न सुहृद् विनाशहेतुरित्यर्थः।

राक्षस —

किमग्निविषकल्पया नरपतेर्निरस्त क्रुधा ।

पुरुष —अज्ज, सन्त पाव सन्त पाव । चन्दउत्तस्स जणवदे ण णिससा पडिवत्ती । (आर्य, शान्त पाप शान्त पापम् । चन्द्रगुप्तस्य जनपदे न नृशासा प्रतिपत्ति ।)

राक्षस —

अलभ्यमनुरक्तवान् कथय किंनु नारीजनं

पुरुष —(कर्णौ पिधाय ।) सन्त पाव । अभूमी क्खु एसो अविणअस्य । (शान्त पापम् । अभूमि खल्वेपोऽविनयस्य ।)

राक्षस —

किमस्य भवतो यथा सुहृद एव नाशोऽवश ॥ १६ ॥

राक्षस —किमग्निविषकल्पना नरपते निरस्त क्रुधा ।

पुरुष —आर्य=श्रीमन् (Noble sir), शान्तम् पापम्, शान्तम् पापम् (Begone sin ! Begone sin), चन्द्रगुप्तस्य=मौर्यस्य (Chandragupta's), जनपदे=नगरे (in the kingdom), न=नहि (not), नृशसा प्रतिपत्ति =अघातुका प्रवृत्ति (cruel deeds are committed)

राक्षस —अलभ्यमनुरक्तवान् कथय किंनु नारीजनम् ।

पुरुष —कर्णौ पिधाय=(Stopping his ears), शान्तम् पापम् (Begone Sin !) एष = परनारीजनानुरागरूपो दोष (this), अविनयस्य=अविनीतस्य (of immodesty), खलु (such), अभूमि =अविषय (no subject for)

राक्षस —किमस्य भवतो यथा सुहृद एव नाशोऽवश ॥ १६ ॥

अन्वय —किम् औषधपथातिगै महाव्याधिभि , उपहत , किम्, अग्निविषकल्पया, नरपते , क्रुधा, निरस्त , कथय, किंनु, अलभ्यम्, नारीजनम्, अनुरक्तवान्, किम् अस्य, भवत , यथा, सुहृद , एव, अवश , नाश ॥ १६ ॥

व्याख्या—किम् (What) औषधपथातिगै =औषधस्य पन्था औषधपथ तमति गच्छन्तीति औषधपथाति गा, तै =अतिक्रान्तप्रतीकार्यतारूपभेषजगुणै (baffle the power of medicine), महाव्याधिभि=प्रवृद्धरोगै (by serious diseases), उपहत= पीडित (is attacked), किम् (what) अग्निश्च विषञ्चाग्निविषे ताभ्यामीषदूना अग्नि विषकल्पा तया अग्निविषकल्पया=वह्निविषतुल्या (like fire and poison), नरपते नृपस्य (the king s), क्रुधा=कोपेन (by wrath), निरस्त =तिरस्कृत (cast off), कथय=कथ्यताम् (tell) किंनु=अथवा (or), अलभ्यम्=सर्वदुर्लभ्यम् (unapproachable), नारीजनम्=स्त्रियम् (female), अनुरक्तवान्=आसक्तवान् (feel interested), किम् (w at), अस्य=एतस्य (his), भवत =तव (your), यथा, सुहृद=मित्रस्य (of friend), एव (indeed), अवश (has unavoidable), नाश=विनाश (loss)

पुरुषः—अज्ज, अह इं। (आर्य, अथ किम् ।)

हिन्दी—पुरुष—वह अभी ही दरिद्रों के बीच अपनी सारी सम्पत्तियों को बाँटकर—अग्नि-प्रवेश के लिए शहर से बाहर निकला है। इसके पूर्व क्या मैं उसके अमङ्गल का सवाद सुनूँ—स्वयं आत्महत्या कर मर जाना चाहता हूँ।

राक्षस—भद्र, तुम्हारे मित्र के आग में प्रविष्ट होने का क्या कारण है? क्या औषधि से भी असाध्य रोगों से पीड़ित है?

पुरुष—नहीं, नहीं।

राक्षस—क्या अग्नि और विष के तुल्य राजक्रोध कोप का भाजन है?

पुरुष—आर्य, पाप शान्त हो ' पाप शान्त हो! चन्द्रगुप्त के राज्य में यह क्रूरता असम्भव है।

राक्षस—तो फिर किसी दुष्प्राप्य नारी के प्रति आसक्त था?

पुरुष—(कानों पर हाथ रख कर) पाप शान्त हो। ऐसी उद्दण्डता का वह आश्रय नहीं है।

राक्षस—तो फिर क्या तुम्हारा तरह उसके किसी मित्र पर विपत्ति आई और वह कुछ कर न सका।

English—*Man*—Has come out of the city with a desire to enter into the fire, having distributed his all ornaments and wealth to poors. I too have come to this old garden in order to hang up myself before hearing the unbearable end of him.

Rakshasa—Noble man, what causes the entrance of your friend into the fire?

Is he suffering from the serious diseases beyond the power of medicines?

Man—No, No.

Rakshasa—Is he persecuted by the royal fury which is all little short of fire and poison?

Man—Hence sin! Hence sin!! Sir, there is no use of cruelty in the rule of Chandragupta

Rakshasa—Say, was he attracted towards an unapproachable woman?

Man—(Blocking his ears) Hence Sin! He was not a man of such immodesty.

Rakshasa—Did he suffer from an unavoidable loss of friend like you?

टिप्पणी—इस श्लोक में रूपक अलङ्कार उपनोत्थापित है तथा वृत्त का नाम है पृथ्वी॥

विमला

पुरुषः—आर्य=मान्य (Noble sir), अथ किम्=मम प्रियसुहृदः विष्णुदासस्य सुहृदन्तरविनाश एव विनाशहेतुरित्यर्थः (so, it is).

राक्षसः—(सावेगमात्मगतम् ।) चन्दनदासस्य प्रियसुहृदिति तद्विनाशो हुतभुजि प्रवेशहेतुरिति यत्सत्यं चलितमेवास्ते युक्तस्नेहपक्षपाताद्धृदयम् । (प्रकाशम् ।) तद्विनाशं च प्रियसुहृद्वत्सलतया मर्तव्ये व्यवसितस्य सुचरितं च विस्तरेण श्रोतुमिच्छामि ।

पुरुषः—अदो अवरं ण सक्कुणोमि मन्दभग्गो मरणस्स विग्घमुप्पादेदु। (अतोऽपरं न शक्नोमि मन्दभाग्यो मरणस्य विघ्नमुत्पादयितुम् ।)

राक्षसः—भद्र, श्रवणीयां कथां कथय ।

पुरुषः—का गई । किं कादव्वम् । एसो क्खु णिवेदेमि । सुणोदु अज्जो । (का गतिः । किं कर्तव्यम् । एष खलु निवेदयामि । शृणोत्वार्य ।)

राक्षसः—भद्र, अवहितोऽस्मि ।

पुरुषः—अत्थि एत्थ णअरे मणिआरसेट्ठी चन्दनदासो णाम । (अस्ति इह नगरे मणिकारश्रेष्ठी चन्दनदासो नाम ।)

राक्षसः—[सावेगम् = सरभसम् आत्मगतम् (With anguish, to himself)], चन्दनदासस्य (Chandandasa's), प्रियसुहृत् इति = प्रियमित्रम् (dear friend), तद्विनाशः एव = चन्दनदासमरणमेव (the ruin of Chandandasa), हुतभुजि = वह्नौ (in the fire), प्रवेशहेतुरिति = पतनकारणमिति (causes of his entering fire), यत्सत्यम् = यस्मात् तथ्यम् (really), युक्तस्नेहपक्षपातात् = मित्रानुरागासक्तात् (through the just feeling of affection), हृदयम् = चित्तम् (the heart), चलितमेवास्ते = पीडितमेवास्ति (stands trembling), [प्रकाशम् = स्पष्टम् Aloud)], च = पुनः (again), तद्विनाशम् (his destruction), प्रियसुहृद्वत्सलतया = प्रियमित्रस्नेहेन (by the affection for his dear friend), मर्तव्ये व्यवसितस्य (is prepared to die), सुचरितम् = साधुशीलम् (the noble life), विस्तरेण (in detail), श्रोतुमिच्छामि = आकर्णितुम् वाञ्छामि (wish to hear).

पुरुष —अतोऽपरम् = इतोऽधिकम् (Further), मरणस्य (to my death) विघ्नमुत्पादयितुम् (cause obstacle), मन्दभाग्यः (unlucky), न शक्नोमि (I cannot bear).

राक्षस —भद्र, कल्याणिन् (Good man), श्रवणीयां कथाम् = श्रवणयोग्य वृत्तम् (tell that is so worth hearing), कथय (tell me)

पुरुष —का गतिः = कः उपायः (What course), किं कर्तव्यम् – किं करणीयम् (what can I do), एष खलु (indeed), निवेदयामि = निवेदनम् करोमि (I will tell you), आर्यः = मान्यः (Noble Sir), शृणोतु (listen)

राक्षस —भद्र = कल्याणिन् (Good man), अविहितोऽस्मि (I am all attention).

पुरुषः—इह नगरे = अस्मिन् पुरे (In this town), मणिकारश्रेष्ठी (Jewel merchant), चन्दनदासनामा (by name Chandandasa), अस्ति (is).

राक्षसः—(सविषादमात्मगतम् ।) एतदपावृतमस्मच्छोकदीक्षाद्वारं दैवेन । हृदय, स्थिरीभव । किमपि ते कष्टतरमाकर्णनीयमस्ति । (प्रकाशम् ।) भद्र, श्रूयते मित्रवत्सलः साधुः । किं तस्य ।

राक्षसः—[सविषादम्=सचिन्तम् (In alarm), आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself)], अस्मच्छोकदीक्षाद्वारम्=अस्मद्विनाशोपदेशमार्गम् (the door for initiating me), दैवेन=भाग्येन (by fate , अपावृतम् (has opened), हृदय=हे चित्त (heart), स्थिरीभव=स्थैर्यम् अवलम्बस्व (be firm), ते=तव (your) किमपि= किञ्चित् (something), कष्टतरम्=दुःखजनकम् (very painful), आकर्णनीयम् (to listen to), अस्ति (is), [प्रकाशम्=स्पष्टम् (Aloud)], भद्र=कल्याणिन् (gentle man), श्रूयते=आकर्ण्यते (is known), मित्रवत्सलः=सुहृदनुरागी (to be loving to his friend), साधु=सच्चरित्र (good man), किं तस्य=(what of him) ?

हिन्दी—पुरुष—आर्य और क्या ?

राक्षस—(आवेग में अपने आप) वह चन्दनदास का प्रिय मित्र है। उसके अग्निप्रवेश का कारण चन्दनदास का विनाश ही है। मेरा तो सच यही है कि उचित स्नेह की अनुभूति होने के कारण हृदय व्याकुल हो रहा है। (प्रकट रूप में) और, उसके विनाश को और मित्रमित्र के प्रति अत्यधिक प्रेम के कारण मरने के लिए तत्पर व्यक्ति के साधुचरित को सुनना चाहता हूँ।

पुरुष—आर्य, मृत्यु की प्रतीक्षा के लिए—इससे अधिक, इस अभागे के पास समय कहाँ है !

राक्षस—भद्र, सुनने योग्य चरित्र को कहो न ?

पुरुष—क्या उपाय है ? क्या करना चाहिए ? अच्छा तो सुनिये।

राक्षस—भद्र, सुन रहा हूँ।

पुरुष—इस नगर में चन्दनदास नाम का एक जौहरी है।

राक्षस—(खेद के साथ अपने आप) शोक में दीक्षित करने के लिए भाग्य ने हमारा द्वार खोल दिया है। हृदय, धैर्य धारण करो, अभी और भी दुःखद कुछ सुनना तुम्हारे लिये अवशिष्ट है। (प्रकट) हाँ, भद्र, मित्रवत्सल उस साधु चरित को सुन रहा हूँ। उसका क्या हुआ ?—

English—*Man*—What else, Sir !

Rakshasa—(With excitement to himself) He is the friend of Chandandasa. The ruin of Chandandasa is the cause of his entering in to the fire. So, my heart is really trembling due to the effect of partiality through affection. (Aloud) I want to listen to in detail the story of the death of his friend and of his good works who is about to die due to the love for his affectinate friend.

Man—Sir, I am, an unlucky man, not in a position to obstruct further my death.

Rakshasa—Gentleman, tell only the worth-listening story.

Man—What assistance ? What should I do ? I shall relate, Sir, listen to.

पुरुष —सो एदस्स विह्णुदासस्स पिअवअस्सो होदि। (स एतस्य विष्णुदासस्य प्रियवयस्यो भवति ।)

राक्षस —(स्वगतम् ।) सोऽयमभ्यर्ण शोकवज्रपातो हृदयस्य ।

पुरुष —तदो विह्णुदासेण वअस्ससिणेहसरिसं अज्ज विण्णविदो चन्दउत्तो । (ततो विष्णुदासेन वयस्यस्नेहसदृशमद्य विज्ञप्तश्चन्द्रगुप्त ।)

राक्षस—कथय किमिति ।

पुरुष —देव, मह गेहे कुडुम्बभरणपज्जत्ता अत्थवत्ता अत्थि। ता एदिणा विणिमएण मुञ्चिज्जदु पिअवअस्सो चन्दणदासो त्ति । (देव, मम गेहे कुटुम्बभरणपर्याप्तार्थवत्तास्ति। तदेतेन विनिमयेन मुच्यतां प्रियवयस्यश्चन्दनदास इति ।)

राक्षस —(स्वगतम् ।) साधु भो विष्णुदास, साधु। अहो, दर्शितो मित्रस्नेह । कुत —

Rakshasa—Gentleman, I am all ready

Man—There is a Jeweller in this city, Chandandasa by name

Rakshasa—(B-ing hopeless, to himself) Here the door of initiation of grief is opend to me by fate O my heart, be firm, you have to here something more painful (Aloud) Gentleman, I am listening to the story of that man—affa tionate of his friend What of him ?

विमला

पुरुष —स =असौ (He), एतस्य (this), विष्णुदासस्य=एतदारयस्य (to Vishnudasa), प्रियवयस्य =स्निग्धमित्र (dear friend), भवति=अस्ति (is)

राक्षस —[स्वगतम्=अनतिरपष्टम् (To himself)], स =असौ (That), अयम् (here), अभ्यर्ण=अचिरम्भावि (is imminent), हृदयस्य=चित्तस्य (of the heart), शोकवज्रपात =चिन्ताकुलितायाम (the strok of the thunderbolt of grief to my heart)

पुरुष —तत (Then), विष्णुदासेन=तन्नाम्ना (by Vishnudasa), वयस्यस्नेह सदृशम्=मित्रप्रीतितुल्यम् (befitting the love for his friend), अद्य (today), चन्द्रगुप्त =मौर्य (Chandragupta), विज्ञप्त =प्रार्थित (was informed)

राक्षस—कथय=कथ्यताम् (Tell), किमिति (what it was)

पुरुष—देव=राजन् (Sire), मम गेहे=मत्सदने (in my house), कुटुम्बभरणपर्याप्तार्थवत्ता=बन्धुपूरणविभवपर्याप्ता (money is enough to support dependants), अस्ति (is), तद्=तस्मात् (so), एतेन=धनेन (by this), विनिमयेन=परिवर्तनेन (in exchange) प्रियवयस्य=स्निग्धमित्र (dear friend), चन्दनदास (Chandandasa), मुच्यताम्=त्यज्यताम् (be released)

राक्षस —[स्वगतम्=अनतिरपष्टम् (To himself)], साधु भो विष्णुदास (Bravo, O, Vishnudasa), साधु (bravo), अहो=आश्चर्यम् (wonder), दर्शित (is shown by you), मित्रस्नेह (love for friend), कुत (for) —

पितॄन् पुत्राः पुत्रान् परवदभिहिंसन्ति पितरो
यदर्थे सौहार्दं सुहृदि च विमुञ्चन्ति सुहृदः ।
प्रियं मोक्तुं तद्यो व्यसनमिव सद्यो व्यवसितः
कृतार्थोऽयं सोऽर्थस्तव सति वणिक्त्वेऽपि वणिजः ॥ १७ ॥

(प्रकाशम् ।) भद्र, ततस्तथाभिहितेन किं प्रतिपन्नं मौर्येण ।

हिन्दी—पुरुष—वह इस विष्णुदास का हार्दिक मित्र है।

राक्षस—(अपने आप) मेरे हृदय के लिए शोकरूपी वज्र का आघात अब समीप आ रहा है।

पुरुष—इसके बाद उस विष्णुदास ने आज ही अपने मित्र के स्नेहानुरोध से चन्द्रगुप्त से निवेदन किया।

राक्षस—वह क्या ? बताओ।

पुरुष—यह कि—भगवन् मेरे घर में एक परिवार के पालन-पोषण करने लायक पर्याप्त सम्पत्ति है। इसको, वह आप मुझसे ले लें और मेरे मित्र चन्दनदास को मुक्त कर दें।

राक्षस—साधु, विष्णुदास साधु—आश्चर्यजनक रूप से तुमने अपना मित्रस्नेह प्रदर्शित किया।

English—*Man*—He is a dear friend of this Vishnudasa.

Rakshasa —(To himself) Now thunder bolt of grief is about to fall on my heart.

Man—Then, today, Vishnudasa requested Chandragupta according to the love for his friend.

Rakshasa—Say, what was the result ?

Man—My Lord, there is an enough wealth to support my family. So, let my dear friend Chandandasa be released in exchange for it. For .—

विमला

अन्वयः—यदर्थम्, पुत्राः, पितॄन्, पितरः, पुत्रान्, परवत्, अभिहिंसन्ति, सुहृदः, सौहार्दम्, च, विमुञ्चन्ति, तत्, प्रियम्, यः, व्यसनमिव, सद्यः, मोक्तुम्, व्यवसितः, सः, अयम्, अर्थः, वणिजः, तव, वणिक्त्वे, सति, अपि, कृतार्थः ॥ १७ ॥

व्याख्या—यदर्थम्=यस्मै अर्थाय (For which), पुत्राः=सुताः (sons), पितॄन्=जनकान् (fathers), पितरः=जनकाः (fathers), पुत्रान्=सुतान् (to sons), परवत्=शत्रुवत् (like enemy), अभिहिंसन्ति=घ्नन्ति (kill), सुहृदः=मित्राणि (friend), सुहृदि=मित्रे (in their friends), सौहार्दम्=अनुरागम् (friendship), च=पुनः (and), विमुञ्चन्ति=त्यजन्ति (relinquish), तत् (that), प्रियम्=प्राणादपीष्टम् (dear thing), यः=विष्णुदासः (who), व्यसनमिव=दुःखमिव (as an evil), सद्यः=तत्क्षणम् (at once), मोक्तुम्=त्यक्तुम् (to cast off), व्यवसितः=समुद्युक्तः (resolved), सोऽयमर्थः=तदेतद्धनम् (that wealth), वणिजः=वणिग्जातीयस्य (being a merchant), तव=भवतः (your), वणिक्त्वे=वणिग्जातीयनैसर्गिककार्पण्यपराहित्ये (of you, being a merchant

पुरुष —अज्ज, तदो एव्व भणिदेण चन्दउत्तेण पडिभणिदो सेट्ठी विह्णुदासो—'ण मए अत्थअस्स कारणेण चन्दणदासो सजमिदो, किंदु पच्छादिदो अणेण अमच्चरक्खसस्स घरअणो त्ति बहुसो जाणिद। तेण वि बहुसो जाचिदेण ण समप्पिदो। ता जदि त समप्पेदि तदो अत्थि से मोक्खो। अण्णहा पाणहरो से दण्डो' त्ति भणिअ उज्झट्ठाण आणिदो चन्दणदासो। तदो जाव वअस्सचन्दणदासस्स असुणिदव्व ण सुणोमि ताव जलण पविसामि त्ति सेट्ठी विह्णुदासो णअराहो णिक्कन्दो। अह वि विह्णुदासस्स असुणिदव्व जाव ण सुणोमि ताव उव्वन्धिअ अत्ताण वावादेमि त्ति इद जिण्णुज्जाण आअदो। (आय, तत एव भणितेन चन्द्रगुप्तेन प्रतिभणित श्रेष्ठी विष्णुदास 'न मयार्थस्य कारणेन चन्दनदास सयमित', किंतु प्रच्छादितोऽनेनामात्यराक्षसस्य गृहजन इति बहुशो ज्ञातम्। तेनापि बहुशो याचितेनापि न समर्पित। तद्यदि त समर्पयति

---

for merchants naturally love money more than others), सत्यपि कृतार्थं = सफला जात इति शेष (has accomplished its end) ॥ १७ ॥

[प्रकाशम् = स्पष्टम् (Aloud)], भद्र = कल्याणिन् (Gentleman), तत = पश्चात् (then), तथाभिहितेन = तादृशकथितेन (such informed), मौर्येण = चन्द्रगुप्तेन (by Maurya), किं प्रतिपन्नम् = किम्प्रत्युक्तम् (what was done)

हिन्दी—जिस धन के लिए—पुत्र पिता के और पिता पुत्र के शत्रु की तरह प्राण हर लेते हैं और जिसके लिए मित्र अपनी मित्रता तक त्याग देते हैं। उसी सम्पत्ति को तुमने आज अपने एक मित्र को बचाने के लिए पाप की तरह फेंक दिया। वही यह धन तुम्हारी आज वैश्य वृत्ति का उद्धार कर तुम्हें सफल बना दिया ॥ १७ ॥ (प्रकाश रूप में) भद्र, विष्णुदास की इस प्रार्थना पर चन्द्रगुप्त की प्रतिक्रिया क्या हुई ॥

English—You have at once resolved to reject an evil, inspite of being a merchant, that property for which sons kill parents and parents to sons like enemies, and for which friends renounce friendship, that very wealth has finished its end of you a marchant. 17 (Aloud) Noble man what did Maurya do after this information ?

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा एव काव्यलिङ्ग अलङ्कार तथा शिखरिणी छन्द है॥

विमला

पुरुष—आर्य = मान्य (Sir), तत = तदुत्तरम् (then), एव भणितेन = इत्थमभिहितेन (thus addressed), चन्द्रगुप्तेन = मौर्येण (by Maurya), प्रतिभणित = प्रत्युक्त (replied), श्रेष्ठी विष्णुदास (merchant Visnudasa), अर्थस्य कारणेन = धनस्य हेतुना (for the sake of money), चन्दनदास (Chandandasa), मया न सयमित = मया न कारागारे निक्षिप्त (is not imprisoned), किन्तु (but), अनेन = चन्दनदासेन (by him), अमात्यराक्षसस्य = नन्दसचिवस्य (Minister Rakshasa's) गृहजन = कलत्रादि (family), प्रच्छादित = संगोपित (had concealed), इति, बहुश = असकृत् (from many), ज्ञातम् (has transpired),

तदस्ति अस्य मोक्षः। अन्यथा प्राणहरोऽस्य दण्डः' इति भणित्वा वध्यस्थान-मानायितश्चन्दनदासः। ततो यावदस्य चन्दनदासस्याश्रोतव्यं न शृणोमि तावदग्निं प्रविशामीति श्रेष्ठी विष्णुदासो नगरान्निष्क्रान्तः। अहमपि विष्णुदासस्याश्रोतव्यं यावन्न शृणोमि तावदुद्बध्यात्मानं व्यापादयामीतीदं जीर्णोद्यानमागतः।)

तेनापि (by him), बहुशः याच्यमानोऽपि = असकृत् अर्थितोऽपि (though repeatedly ask), न समर्पितः = न दत्तः (has not delivered), तदि = तस्मात्चेत् (if), तत् (wife of), समर्पयति = ददाति (he delivers), तत् (then), अस्य = चन्दनदासस्य (his), मोक्षः अस्ति = मुक्तिः भविता (he will obtain his release), अन्यथा राक्षसगृहजनासमर्पणे (otherwise), अस्य = चन्दनदासस्य (his), प्राणहरः = वधनाशः (sentence) दण्डः = दण्डः (punishment), इति भणित्वा = एवमभिधाय (saying so), वध्यस्थानम् = मारणभूमिम् (place of execution), आनीतः = नीतः (to be taken), चन्दनदासः (Chandanadas), ततः = तस्मात् (so), यावदस्य = चन्दनदासस्य प्रियसुहृदः मरणं [illegible] (before his friend), अश्रोतव्यम् = अश्राव्यम् (the unhearable), न शृणोमि = न आकर्णयामि (do not hear) तावत् = तत्कालपर्यन्तम् (till), अग्निम् प्रविशामि = अग्नौ प्रवेष्टुकामः सन् (intending to enter fire) श्रेष्ठी विष्णुदासः (the merchant Vishnudasa), नगरात् (from the town), निष्क्रान्तः = बहिर्गतः (left the town), अहमपि (I too), विष्णुदासस्य चन्दनदासमित्रस्य (Vishnudasa's), अश्रोतव्यम् = अनाकर्णनीयम् (unhearable), यावत् तावत् कालपर्यन्तम्, न शृणोमि (do not hear), तावत् तावत् कालपर्यन्तम् (till), आत्मानम् = स्वम् (himself), उद्बध्य = उद्बन्धनम् कृत्वा (by hanging), व्यापादयामि = मारयामि I will kill) इदम् = (this), जीर्णोद्यानम् = पुरातनोपवनम् (old garden), आगतः = समायातः (come to).

हिन्दी—आर्य, चन्द्रगुप्त ने यह जानकर के उत्तर में कहा—'मैंने धन के लिए चन्दनदास को नहीं पकड़ा है। किन्तु, इसने अमात्य राक्षस के परिवार को छिपा कर रक्खा है। अनेकों बार माँगने पर भी इसने अमात्य राक्षस के परिवार को नहीं सौंपा। अब यदि यह अर्पित करे, तब मुक्त हो जायगा, अन्यथा—इसे प्राणदण्ड दिया जायगा।" यह कहकर चन्दनदास को वध्यस्थल पर भेज दिया गया। यह सुनकर कि चन्दनदास को मृत्यु का हुक्म हो गया, विष्णुदास ने अग्नि में जल मरने के लिए नगर छोड़ दिया और यहाँ रहता मेरा मित्र है—मैं भी उसके अशुभ मरण को सुनने के पूर्व ही फाँसी लगा कर मरना चाहता हूँ। यही कारण है कि मैंने इस जीर्णोद्यान में प्रवेश किया है।

English—*Man*—Sir, then Chandragupta replied after knowing it, 'I have not arrested him for wealth, but the family of minister

राक्षसः—भद्र, न खलु व्यापादितश्चन्दनदासः ।

पुरुषः—अज्ज दाव वावादीअदि । सो क्खु संपदं पुणो पुणो अमच्चरक्खसस्स घरअण जाचीअदि । ण सो क्खु मित्तवच्छलदाए समप्पेदि ता एदिणा कालणेण ण करेमि मरणस्स कालहरणं । (अद्य तावद्व्यापाद्यते । स खलु साम्प्रतं पुनः पुनरमात्यराक्षसस्य गृहजन याच्यते । न स खलु मित्रवत्सलतया समर्पयति । तदेतेन कारणेन न करोमि मरणस्य कालहरणम् ।)

राक्षसः—(सहर्षमात्मगतम् ।) साधु वयस्य चन्दनदास, साधु ।

शिबेरिव समुद्भूतं शरणागतरक्षया ।
निचीयते त्वया साधो यशोऽपि सुहृदा विना ॥ १८ ॥

(प्रकाशम् ।) भद्र, गच्छ गच्छेदानीम् । शीघ्र विष्णुदासं ज्वलनप्रवेशान्निवारय । अहमपि चन्दनदासं मरणान्मोचयामि ।

Rakshasa is consealed by him. He did not deliver them though repeatedly asked to do. So, So, if he will handover them to me, he will be released, unless he will be sentenced—being told such Chandandasa is brought to the place of execution. So, merchant Vishnudasa left the town to enter into the fire before hearing the bad news of his friend Chandandasa. I, too, have come to this old garden to hang myself before hearing the sad end of Vishnudas

विमला

राक्षस-—भद्र = कल्याणिन् (Good man), खलु = (I hope yet), चन्दनदासः (Chandandas), न व्यापादित = न मारितः (is not killed).

पुरुषः—(आर्य = मान्य Noble sir) अद्य (today), तावत् = तावत्काल-पर्यन्तम्, व्यापाद्यते = म्रियते (will be killed), स = असौ (he), खलु = वाक्या-लङ्कारे, साम्प्रतम् = अधुना (now), पुनः पुनः = भूयो भूयः (being repeatedly), अमात्यराक्षसस्य ; गृहजनम् = नन्दसचिवस्य कलत्रम् (Minister Rakshasa's family), याच्यते = प्रार्थ्यते (demanded), सः = असौ (he), खलु = निश्चये, मित्रवत्सलतया = सुहृत्स्नेहेन (through his love for his friend), न समर्पयति = न ददाति (does not deliver), तत् = तस्मात्कारणात् (so), एतेन कारणेन = अनेन हेतुना (for this reason), मरणस्य = विनाशस्य (of death), कालहरणम् = समयहरणम् (loss of time), न करोमि (I will no).

राक्षसः—[सहर्षं = सानन्दम् (Joyfully), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)], साधु (Bravo), चन्दनदास (Chandandas), साधु (Bravo).

अन्वयः—साधो, शरणागतरक्षया, समुद्भूतम्, शिबेः, इव, त्वया, सुहृदा विना, अपि, यशः, निचीयते ॥ १८ ॥

व्याख्या—साधो=परोपकारिन् (Bravo), शरणागतस्य रक्षा, तया=शरणागतरक्षया, रक्षणे आगतत्राणेन (from the protection of one come for protection), समुद्भूतम्=समुत्पन्नम् (arising), शिवे=उशीनरदेशाधिपस्य नृपतेः (of the king Shivi), इव=यथा (like), त्वया=भवता (by you), सुहृदा विना=शरणागतेन मित्रेण विनाऽपि (even in the absence of your friend), यशः=कीर्तिः (the fame), निचीयते=सम्पाद्यते (is being earned) ॥ १८ ॥

[प्रकाशम्=स्पष्टम्=(Aloud)], भद्र=कल्याणिन् (Good man), इदानीम्=अधुना (now), गच्छ, गच्छ=प्रयाहि, त्वरायाम् द्विरुक्तिः (go, go), शीघ्रम्=द्रुतम् (quickly), विष्णुदासम् (to Vishnudas), ज्वलनप्रवेशात्=वह्निपतनात् (from entering fire), निवारय=निषेधय (prevent him), अहमपि (I too), चन्दनदासम् (to Chandandas), मरणात्=विनाशात् (from death), मोचयामि=पृथक्करोमि (will save)

हिन्दी—राक्षस—भद्र, मार तो नहीं डाला गया चन्दनदास ?

पुरुष—आज मारा जाएगा। अभी भी उससे अमात्य राक्षस का परिवार माँगा जा रहा है और वह मित्रस्नेह के कारण उसे नहीं दे रहा है। इसी कारण मैं मरने के लिए जाने में विलम्ब नहीं चाहता हूँ।

राक्षस—(प्रसन्नतापूर्वक अपने आप) साधु मित्र चन्दनदास साधु !

हे साधुशील, शरणागत की रक्षा करने के कारण, राजा शिवि की भाँति;—अपने मित्र की अनुपस्थिति में भी—यश संचित कर रहे हो ॥ १८ ॥

(प्रकट रूप में) भद्र, शीघ्रता करो जाओ। अपने मित्र विष्णुदास को आग में जल मरने से रोको। मैं भी चन्दनदास को मरने से बचाता हूँ।

English—*Rakshasa*—Gentleman, I hope Chandandas is not yet killed

Man—Today he will be killed, still he is asked again and again to deliver the family of minister Rakshasa. He is not handing over due to friend's affection So, due to it, now I shall not delay my death.

Rakshasa—(With joy to himself) Bravo, Chandandas friend, Bravo.

Good man, you are earning a fame like that of the king Shivi arising from the protection of a refugee, even in the absence of your friend 18.

(Aloud) Goodman, go quickly go and save Vishnudasa from entering into fire. I too, will rescue Chandandasa from death.

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा तथा व्यतिरेक अलङ्कार की संसृष्टि तथा अनुष्टुप छन्द है।

पुरुष —अह उण केण उवाएण तुम चन्दणदासं मरणादो मोचेसि। (अथ पुनः केनोपायेन त्वं चन्दनदासं मरणान्मोचयसि।)

राक्षसः—(खड्गमाकृष्य।) नन्वनेन व्यवसायसुहृदा निस्त्रिंशेन। पश्य—

निस्त्रिंशोऽयं सजलजलदव्योमसंकाशमूर्ति-
युद्धश्रद्धापुलकित इव प्राप्तसख्यः करेण।
सत्त्वोत्कर्षात् समरनिकषे दृष्टसारः परैर्मे
मित्रस्नेहाद्विवशमधुना साहसे मां नियुङ्क्ते ॥ १९ ॥

विमला

पुरुष —अथ=इति वितर्के, पुन (again), केनोपायेन (by what means), त्वम् (you), चन्दनदासम् (Chandandasa), मरणात् (from death), मोचयसि=पृथक्करोसि (will save),

राक्षस—[खड्गमाकृष्य (Drawing his sword)], ननु=इति वितर्के, अनेन=एतेन (by means of this), निस्त्रिंशेन=खड्गेन (sword), व्यवसाये पौरुषे सुहृत् तेन व्यवसायसुहृदा=पौरुषैकसहायेन (through this companion in any undertaking), पश्य=अवलोकय (see)

अन्वयः—सजलजलदव्योमसंकाशमूर्त्तिः, करेण, प्राप्तसख्यः, युद्धश्रद्धापुलकितः, इव, सत्त्वोत्कर्षात्, परैः समरनिकषे, दृष्टसारः, अयम्, मे, निस्त्रिंशः, अधुना, मित्रस्नेहात्, विवशम्, माम्, साहसे, नियुङ्क्ते ॥ १९ ॥

व्याख्या—जलेन सहितः सजलः, सश्चासौ जलदः अर्थात् सजलः जलदो यस्मात् तत् सजलजलदम् तच्च तद् व्योम सजलजलदव्योम तेन सङ्काशा, मूर्तिर्यस्य स सजलजलदव्योमसंकाशमूर्त्तिः =शरत्कालिकाकाशसदृशकृष्णवर्णः (dark blue in appearance like a water charged cloud and the sky), करेण=हस्तेन (in the hand), प्राप्तसख्य =प्राप्तम् सख्यम् येन=सञ्जातानुरागः (through love), युद्धे श्रद्धा युद्धश्रद्धा तया पुलकितः युद्धश्रद्धापुलकितः =रणविषयकादरसञ्जातरोमाञ्चः (appears to be thrilling with eagerness for fight), इव=यथा (like), सत्त्वोत्कर्षात्=सत्त्वस्य उत्कर्षः सत्त्वोत्कर्षस्तस्मात् सत्त्वोत्कर्षात्=बलाधिक्यात् (overpowered), परैः=शत्रुभिः (by enemies), समरनिकषे=समर एव निकषस्तस्मिन् समरनिकषे=सङ्ग्रामपरीक्षणोपले (on the touch-stone of battle), दृष्टसारः =दृष्टः सारो यस्य स दृष्टसारः =दृष्टशक्तिः (high temper has been seen), अयम्=एषः (this), मे=मम (my), निस्त्रिंशः=खड्गः (the sword), अधुना=सम्प्रति (now), मित्रस्नेहात्=सुहृदनुरागात् (affection for my friend), विवशम्=अवशम् (uncontrolled) माम् (me), साहसे=पौरुषे (to an act of daring), नियुङ्क्ते=प्रेरयति (drives) ॥ १९ ॥

हिन्दी—पुरुष—अच्छा तो, किस प्रकार आप चन्दनदास को बचायेंगे ?

पुरुषः—अज्ज, एवं सेट्ठिचन्दणदासजीविदप्पदाणपिसुणिदं विसमदसाविपाकणिपदिदं साधु ण सक्कोमि तुमं णिण्णीअ पडिवत्तुं किं सुगिहीदणामहेआ अमच्चरक्खसपादा तुम्हे दिट्ठिआ दिट्ठा। (इति पादयोः पतति।) (आर्य, एवं श्रेष्ठिचन्दनदासजीवितप्रदानपिशुनित विषमदशाविपाकनिपतित साधु न शक्नोमि त्वां निर्णीय प्रतिपत्तुं किं सुगृहीतनामधेया अमात्यराक्षसपादा यूयं दिष्ट्या दृष्टाः।

राक्षस—(तलवार खींचकर) अपने पुरुषार्थ की सहचरी इस तलवार की सहायता से।

सजल जलद और शुभ्र आकाश की तरह आकृति वाली, मेरे हाथों में सदैव अनुरक्त, युद्धजन्य उत्सुकता के कारण रोमाञ्चित सी, बल की अधिकता के कारण शत्रुओं के बीच युद्ध की कसौटी पर खरी उतरने वाली, सम्प्रति यह मेरी तलवार, मित्र-स्नेह के कारण विवश मुझे इस साहसिक कार्य के लिए प्रेरित कर रही है॥ १९॥

English—*Man*—By what means will Noble Sir now release Chandandas from death ?

Rakshasa—(Drawing his sword) By means of this sword the friend at darings. Look :—

This sword now drives me to an act of daring, overpowered as I am through love of friend—The sword dark blue in appearance, like a water-charged-cloud and the sky, appears to be thrilling with its fondness for fight and with union secured with my hand, and the strength of which is consequence of its high temper has been seen by my enemies tested on the touch-stone of battle. 19.

टिप्पणी—इस श्लोक के प्रथम चरण में सादृश्यार्थक 'सङ्काश' शब्द की उपस्थिति के कारण स्पष्ट उपमा अलङ्कार है। दूसरे चरण में उत्प्रेक्षा है। तृतीय चरण में परीक्षात्व साधर्म्य के द्वारा 'निकषत्व' के आरोप के कारण रूपक है। इन तीनों के सम्मिश्रण के कारण 'संसृष्टि' अलङ्कार है। छन्द का नाम मन्दाक्रान्ता है।

विमला

पुरुष—आर्य=मान्य भवन् (Noble sir), एवम्=त्वयि युद्धे प्रवृत्ते (thus), श्रेष्ठिनः=वणिजः (merchant), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), जीवितस्य=जीवनस्य (life), प्रदानेन=दानेन (by offering), पिशुनितम्=सूचितम् (disclosed), विषमदशाविपाकनिपतितम्=विषमा=अभद्रा (adverse), या दशा=अवस्था (condition), तस्या विपाकः=परिणामः (result), तत्र निपतितम्=निमग्नम् (fallen), साधु (well), त्वाम् (you), निर्णीय=निश्चित्य (definitely), प्रतिपत्तुम्=ज्ञातुम् (to know), न शक्नोमि=न समर्थः (I am not able), किम् (what), सुगृहीतनामधेयाः (of blessed name), अमात्यराक्षसपादाः (you minister Rakshasa), दिष्ट्या=भाग्येन (by luck), दृष्टाः=अवलोकिताः (I have seen), [इति पादयोः=चरणयोः=(at his feet), पतति=(he falls)]

देशान्तरं नीतः। ततश्चन्द्रगुप्तहतकेन कस्मादेष प्रमादः कृत इति आर्यशकटदासे समुज्ज्वलितः कोपवह्निर्घातकजननिधनेन निर्वापितः। ततः प्रभृति घातका यं कमपि गृहीतशस्त्रमपूर्वं पुरुषं पृष्ठतो वाग्रतो वा प्रेक्षन्ते तदात्मनो जीवितं परिरक्षन्तोऽप्रमत्ता वध्यस्थाने वध्यं व्यापादयन्ति। एवं च गृहीतशस्त्रेऽमात्यपादैर्गच्छद्भिः श्रेष्ठिचन्दनदासस्य वधस्त्वरायितो भवति।)

एवं (like this), आर्यशकटदासे (on Noble Shakatadasa), समुज्ज्वलित = प्रदीप्त (the blazing), कोपवह्नि = क्रोधाग्नि (fire of wrath), घातकजननिधनेन = रक्षकजनमरणेन (by killing the executioners), निर्वापित = शमित (quenched), ततः प्रभृति = तद्दिनात् (from that very day), घातका = हिंसका (executioners), यं कमपि, गृहीतशस्त्रम् = आयुधविशिष्टम् (armed with a weapon), अपूर्वम् पुरुषम् (stranger), पृष्ठत (either behind them), वा = अथवा (or) अग्रत (in the front), प्रेक्षन्ते = दृश्यन्ते (see), तदा (then), आत्मन = स्वकीयम् (self), जीवितम् = प्राणम् (life), परिरक्षन्त = परित्रायमानाः (saving), अप्रमत्ता = सावधानासन्त (being careful), वध्यस्थाने (in the place of execution), वध्यम् = मारणार्हम् (the victim), व्यापादयन्ति = मारयन्ति (kill), एवं च (like so), गृहीतशस्त्रे (armed), अमात्यपादे गच्छद्भि = (if noble minister goes), श्रेष्ठिचन्दनदासस्य (Merchant Chandandasa's), वध = मरणम् (death), त्वरायित भवति = शीघ्रकृत (becomes hastended), [निष्क्रान्त = (exit)]

हिन्दी--पुरुष--(आनन्द के साथ पुन चरणों पर गिरकर) अहो, भाग्य से आपके दर्शन हुए। आदरणीय अमात्य प्रसन्न हों। अभी कुछ दिन ही पूर्व इस दुष्ट चाणक्य ने आर्य शकटदास के वध की आज्ञा प्रसारित की थी। पता नहीं किसी ने वध्यभूमि से उसे हटाकर कहीं अन्यत्र पहुँचा दिया। इसके फलस्वरूप हत्यारे चन्द्रगुप्त ने--'यह असावधानी किस कारण हुई।' ऐसा कहकर आर्य शकटदास पर प्रज्वलित कोपानल हत्यारों की ही हत्या से शान्त किया। तभी से हत्यारे किसी अपरिचित सशस्त्र व्यक्ति को पीछे अथवा आगे चलते देखते हैं तो अपने प्राणों की रक्षा करते हुए वध्यभूमि में सावधानी के साथ वध्य को मार डालते हैं। अतः अमात्य यदि इस प्रकार शस्त्र धारण किये चलते फिरते दीख गये तब तो सेठ चन्दनदास का वध जो कभी बाद में हो--अभी होता दिखाई देगा। (बाहर चला जाता है)

English--*Man*--(Joyfully falling again at his feet) Oh wonder! Luckily I have seen you Be pleased, revered minister. Here Noble Shakatdasa was first ordered by the cursed Chandragupta to be taken to the place of execution, and he was ramoved by some one from the place of execution and carried to another country Then the fire of wrath blazing against Noble Shakatdasa was quenched by cursed Chandragupta with the execution of the executioners

राक्षसः—(स्वगतम् ।) अहो दुर्बोधश्चाणक्यवटोर्नीतिमार्गः । कुतः—

यदि च शकटो नीतः शत्रोर्मतेन ममान्तिकं
निरिमिति निहतः क्रोधावेशाद्वधाधिकृतो जनः ।
अथ न कृतकं तादृक्कष्टं कथं नु विभावये-
दिति मम मतिस्तर्कारूढा न पश्यति निश्चयम् ॥ २० ॥

---

saying "Why was such carelessness shown". Since that time whenever the executioners see a stranger armed with weapon either behind them or in the front, they are wishing to save their own lives, kill the victim on the spot of execution. Thus really the execution of merchant Chandandas becomes hastended by revered minister's going there with arms.

विमला

राक्षसः—[स्वगतम्=आत्मगतम् = (to himself)], अहो = आश्चर्यम् (Wonder), चाणक्यवटोः = अल्पधियो विष्णुगुप्तस्य (of the brat Chanakya), नीतिमार्गः= नयपद्धतिः (*the course of the policy*), दुर्बोधः=अज्ञातुमशक्यः (inscrutable) :-

अन्वयः—यदि, शत्रोः, मतेन, शकटः, मम, अन्तिकम्, नीतः, तेन, क्रोधावेशात्, वधाधिकृतः, जनः, किमिति निहितः, अथ, कृतकम्, न तादृक्, कष्टम्, कथं, नु, विभावयेत्, इति, तर्कारूढा, मम, मतिः, निश्चयम्, न, पश्यति ॥ २० ॥

व्याख्या—यदि = चेत् (If), शत्रोः = चाणक्यस्य (of enemy), मतेन=बुद्ध्या (with the consent), शकटः (Shakatdasa), मम (me), अन्तिकम् = समीपम् (near), नीतः = आनीतः (was brought), तेन = चाणक्येण, मौर्येण वा (by), क्रोधावेशात् = कोपात् (in anger), वधाधिकृतः जनः=हिंसननियुक्तः व्यक्तिः (executioners), किमिति (why), निहितः=व्यापादितः (put to death), अथ=अनन्तरम् (then), कृतकम् न = कपटरूपम् न, भवति (not a hoax), तादृक् (like so), कष्टम् = कुत्सितम्, स्वहस्तलेखमुद्राङ्कनादिरूपम् स्वामिद्रोहम् (sinful farbrication), कथम् (why), नु = इति वितर्के, विभावयेत् = कर्त्तव्यत्वेन चिन्तयेत् (even think), इति = एवम् तर्कारूढा = सन्देहपरिहारार्थम् विचारमनुसरन्तीसती (being mounted on conjuctures), मम मतिः = मदीया बुद्धिः (my mind), निश्चयम् = सिद्धान्तम् (definite conclusion), न पश्यति (does no see). ॥२०॥

हिन्दी—राक्षस—(मनमें आप) हा कष्ट, दुष्ट चाणक्य की नीति का पार पाना असम्भव है। यदि वह शत्रु का ही चाल रही कि शकटदास मेरे पास पहुँचा दिया जाय, तो भला वधिक लोगों को क्रोधावेश में क्यों मार डाला गया और यदि शकटदास सचमुच ये सारी बातें बनावटी नहीं तब ही रहीं तो फिर शकटदास ऐसी कृतघ्नता एवं नीचता[1] पर क्यों उतारू हो गया। इस प्रकार तर्क में आरूढ मेरी बुद्धि किसी निर्णय को नहीं पा रही है ॥ २० ॥

(विचिन्त्य ।)

नायं निस्त्रिंशकाल: प्रथममिह कृते घातकानां विघाते
नीति: कालान्तरेण प्रकटयति फलं किं तया कार्यमत्र ।
औदासीन्यं न युक्तं प्रियसुहृदि गते मत्कृतामेव घोरां
व्यापत्तिं ज्ञातमस्य स्वतनुमहमिमां निष्क्रयं कल्पयामि ॥ २१ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

षष्ठोऽङ्कः ।

English—*Rakshasa*—(To himself) Ha inscrutable is the course of cursed Chanakya's Policy ! For —

If Shakatdasa was brought to me with the consent of the enemy why then were the men employed for his execution killed by them If on the other hand, all this is not a hoax how could Shakatdasa even think of such a sinful fabrication ? Thus embarking on guesses my mind sees no definite conclusion 20

टिप्पणी—इस श्लोक में काव्यलिङ्ग अलङ्कार तथा शिखरिणी छन्द है।

विमला

[विचिन्त्य = चिन्तयित्वा = Reflecting)].

अन्वयः = इह, प्रथमम्, घातकानाम्, विघाते, कृते, अयम्, निस्त्रिंशकाल:, न, नीति:, कालान्तरेण, फलं, प्रकटयति, तया अत्र, किम्, कार्यम्, प्रियसुहृदि, मत्कृताम्, एव, घोराम्, व्यापत्तिं, गते, औदासीन्यम्, न युक्तम्, ज्ञातम्, अहम्, इमाम्, स्वतनुम्, अस्य, निष्क्रयम्, कल्पयामि ॥ २१ ॥

व्याख्या—इह = अस्मिन् विषये (In this matter), प्रथमम् = पूर्वम् (previously), घातकानाम् (since the hangmen), विघाते = विनाशे (death), कृते = विधत्ते (put to), अयम् = एष (this), निस्त्रिंशकाल: = खड्गधारणसमय: (the time for the sword), न = नहि (no), नीति = राजनीति (policy), कालान्तरेण = समयान्तरेण (after an interval of time), फलम् = सिद्धम् (fruit) प्रकटयति = दर्शयति (bears), तया = नीत्या (by that policy), अत्र = अस्मिन् विषये (in this matter), किम् (what), कार्यम् = प्रयोजनम् (the use), प्रियसुहृदि = स्निग्धमित्रे (dear friend), मत्कृताम् (my account), एव, घोराम् = दारुणाम् (of dreadful), व्यापत्तिम् = विपदम् (calamity), गते = प्राप्ते (met with), औदासीन्यम् = निरपेक्षतयाऽवस्थानम् (indifference), न युक्तम् = नोचितम् (is not proper), ज्ञातम् = निश्चितम्(I know), अहम् (I), इमाम् स्वतनुम् =

निजशरीरम् (this my body), अस्य=चन्दनदासस्य (his), निष्क्रयम्=मोचनमूल्यम् (as a ransom for him), कल्पयामि=सम्पादयामि (I will offer). ॥ २१ ॥

हिन्दी—(कुछ सोचकर)—

इस विषय में पहले मारनेवालों के द्वारा उसका वध कर दिये जाने पर यह तलवार का समय नहीं है। क्योंकि राजनीति कालान्तर से फल प्रकट करती है, तब फिर इससे भी क्या प्रयोजन ? किन्तु, जब मेरे लिए ही मेरे मित्र की इतनी भयङ्कर दुर्दशा हो रही है तो मेरी निरपेक्षता भी तो सर्वथा अनुचित ही है। अतः अब एक ही उपाय शेष रह गया है—आत्मसमर्पण कर चन्दनदास की मुक्ति का मूल्य चुका दूँ।

(सभी पात्र रङ्गमञ्च से चले जाते हैं।)

English—(Reflecting)

This is no time for sword, the execution of the executoners having been carried out previously in a similar matter. Policy bears fruit after an interval of time, what is the use of it in this case? Indifference is not proper, when my dear friend has met with an extremely dread calamity on my account. I have it—I will offer this my own person as his ransom.

(Exeunt all)

End of the sixth act.

टिप्पणी—इस श्लोक में परिवृत्ति तथा काव्यलिङ्ग अलङ्कार है। छन्द का नाम स्रग्धरा है।

छठा अङ्क समाप्त।



सप्तमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति चण्डालः ।)

चण्डालः—ओसलेह ओसलेह । अवेह अवेह । (अपसरत अपसरत ! अपेत अपेत ।)

जइ इच्छह लक्खिदव्वे प्पाणे विहवे कुले कलत्ते अ ।
ता पलिहलह विसमं लाआपत्थं सुदूलेण ॥ १ ॥
(यदि इच्छत रक्षितव्याः प्राणा विभवः कुलं कलत्रं च ।
तत् परिहरत विषमं राजापथ्यं सुदूरेण) ॥ १ ॥

विमला

[ततः =तदनन्तरम् (Then), प्रविशति=प्रवेशं करोति (enters), चाण्डालः = वधिकः (executioner)]

चाण्डाल — अपसरत, अपसरत = स्थानान्तरम् गच्छेत्यर्थं (Move away, move away), अपेत, अपेत = (be off, be off).

अन्वय.—यदि, रक्षितव्याः, प्राणाः, विभवः, कुलम्, कलत्रम्, च, इच्छत, तत्, विषमं, राजापथ्यम्, सुदूरेण, परिहरत ॥ १ ॥

व्याख्या—यदि = चेत् (if), रक्षितव्याः = स्थापयितव्याः (are worth preserving), प्राणाः = जीवनम् (life), च=पुनः (and), विभवः=सम्पत्तिः (wealth), कुलम् = वंशम् (race), कलत्रम् = भार्याम् (wife), च = पुनः (and), इच्छत = वाञ्छत (wish), तत् = तदा (then), विषमम् = घोरम् (dreadful thing), राजापथ्यम् = राजविरोधम् (injurios to the king), सुदूरेण = अतिदूरात् (very fr off)परिहरत = परित्यजत (keep away) ॥ १ ॥

हिन्दी— (इसके बाद चाण्डाल का प्रवेश)

चाण्डाल—हटो, हटो । दूर होओ । दूर होओ ।

यदि अपने प्राणों को, सम्पत्ति को, कुल और स्त्री को सुरक्षित रखना चाहते हो तो—कष्टकारी राजद्रोह से बचकर रहो ॥ १ ॥

English— (Now enters a Chandala)

Chandala—Move away, move away, be off, be off.

If you wish to save your life, race, wealth and wife, then keep very far off from that dreadful thing injury to the king. 1.

टिप्पणी—इस श्लोक में व्यतिरेक अलङ्कार तथा आर्या छन्द है। सिद्धार्थक ही यहाँ चाणक्य के आदेश से चाण्डाल के वेश में लोगों का अपसरण कर रहा है।

अवि अ। (अपि च।)

होदि पुलिसस्स वाही मलणं वा सेविदे अपत्थम्मि।
लाआपत्थे उण सेविदे सअलं वि कुलं मलदि॥ २॥
(भवति पुरुषस्य व्याधिर्मरणं वा सेविते अपथ्ये।
राजापथ्ये पुनः सेविते सकलमपि कुलं म्रियते॥ २॥)

ता जदि ण पत्तिअह ता एह पेक्खह एअं लाआपथ्यकालिणं सेट्ठिचन्दणदासं सउत्तकलत्तं वज्झट्ठाणं णीअमाणम्। (आकाशे श्रुत्वा।) अज्जा, किं भणह—'अत्थि से को वि मोक्खावाओ' त्ति। अज्जा, अत्थि अमच्चरक्खसस्स घरअण जइ समप्पेदि। (पुनराकाशे।) किं भणह—'एसे सलणागदवच्छले अत्तणो जीविदमेत्तस्स कालणे ईदिस अकज्जं ण कलिस्सदि'त्ति। अज्जा, तेण हि अवधालेह से सुहं गदिम्। किं दाणि तुम्हाण एत्थ पडिआरचिन्ताए। (तद्यदि न प्रतीथ तदत्र प्रेक्षध्वमेनं राजापथ्यकारिणं श्रेष्ठिचन्दनदासं सपुत्रकलत्रं वध्यस्थानं

विमला

अपि च = अन्यदपि (Moreover)—

अन्वयः—अपथ्ये, सेविते, पुरुषस्य, व्याधिः वा मरणम् भवति, पुनः, राजापथ्ये, सेविते, सकलम्, अपि, कुलम्, म्रियते॥ २॥

व्याख्या—अपथ्ये=अहितकरे वस्तुनि (Some thing unwholesome), सेविते = भुक्ते सति (takes), पुरुषस्य = जनस्य (man's), व्याधिः = मानसीव्यथा (disease), वा = अथवा (or), मरणम् = प्राणवियोगः (death), भवति=याति (suffers), पुनः (again), राजापथ्ये = नृपाहितकरे (against a king), सेविते = कृते सति (takes to), सकलम् = सम्पूर्णम् (the whole), अपि (also), कुलम् = वंशम् (the race), म्रियते = विनश्यते (perishes)॥ २॥

साधारणापथ्यसेवनात् एकस्यैव विनाशो भवति, किन्तु, राजापथ्यसेवनात्सर्वनाशः समुपस्थितो भवति। अत्रापि सामान्यापथ्यात् राजापथ्यस्याधिक्योक्त्या व्यतिरेकालङ्कारः पूर्वार्द्धेऽपथ्योत्कर्षमभिधायोत्तरार्द्धे तदुपमानत्वप्रकल्पनात् द्वितीय प्रतीपालङ्कारोऽप्यन्यत्ते—इति।

तद् = तस्मात् (So), यदि=स्यात् (if), न प्रतीथ = न प्रत्ययध्वम् (do not believe), तद् (then), अत्र=अस्मिन् विषये (in this matter), एनम् = अमुम् (this), राजापथ्यकारिणम् = नृपाहितविधायिनम् (evil-doer to the king), श्रेष्ठिचन्दनदासम् (to the merchant Chandandas), सपुत्रकलत्रम् = पत्नीपुत्रसहितम् (with son and wife), वध्यस्थानम् = मरणस्थानाम् (the place of the execution), नीयमानम्=प्राप्यमानम् (being led to), प्रेक्षध्वम् = अवलोकयध्वम् (see), [आकाशे श्रुत्वा = (in the air)], आर्याः = मान्याः (noble sir), किं भणथ= किं वचनम् ब्रूथ (do you ask), अस्य = चन्दनदासस्य (his), कोऽपि (any

नीयमानम् । आर्याः, किं भणथ—'अस्त्यस्य कोऽपि मोक्षोपाय' इति । आर्याः, अस्त्यमात्यराक्षस्य गृहजनं यदि समर्पयति ! किं भणथ । एष शरणागतवत्सल आत्मनो जीवितमात्रस्य कारणे ईदृशमकार्यं न करिष्यतीति । आर्या, तेन हि अवधारयतास्य सुखा गतिम् । किमिदानीं युष्माकमत्र प्रतीकारविचारेण ।)

---

means of), मोक्षोपाय = मुक्तिप्रकारा (release), अस्ति (is), आर्या=मान्या (you respectable), अस्ति (yes), यदि=स्यात् (if), अमात्यराक्षसस्य= नन्दसचिवस्य (minister Rakshasa's), गृहजनम् = पारिवारिकसदस्यम् (family), समर्पयति=ददाति (delivers), किं भणथ = किं ब्रूथ (do you say), एष = असौ (he), शरणागतवत्सल =शरणापन्नेषु अनुरागवान् (even kind to refugees), जीवितमात्रस्य = प्राणमात्रस्य, कारणे = हेतुना (only for the sake of mere life), ईदृशम् अकार्यम् = राक्षसकलत्रसमर्पणरूपनिन्दितं कर्म (such foul deeps), न करिष्यति = न विधास्यति (will not do), आर्या = मान्या (noble sirs), तेन हि यस्य = चन्दनदासस्य (then wish him), सुखां गतिम् = शुभगतिम् (pleasant), अवधारयता (passage), अत्र=अस्मिन् विषये (in this matter), इदानीम्=अधुना (now), युष्माकम् (your), प्रतीकार-विचारेण (discussion of the remedy), किम् (what comes of) ?

हिन्दी—और भी सुनो—

शरीर के प्रति यदि कोई अकार्य कर ले तो केवल रोग पकड़े या अधिक से अधिक मृत्यु हो जाय, किन्तु, यह राजद्रोह ! व्यक्ति विशेष को ही नहीं—सारे वंश को ही सर्वनाश में मिला देगा ॥ २ ॥

अगर तुम्हें विश्वास न आता हो तो देख लो—राजद्रोही सेठ चन्दनदास को, पत्नी पुत्र सहित वध्यभूमि पर घसीटे ले जाते हुए को ! (शून्य की ओर देखकर) अरे, क्या तुमने कहा—चन्दनदास की मुक्ति कैसे हो ? अरे, इसकी मुक्ति कहाँ ? बस एक ही उपाय शेष है—यदि अमात्य राक्षस का परिवार किसी प्रकार सौंप दे (पुनः शून्य की ओर देखते हुए) अब क्या पूछते हो ? क्या यह कि भला ऐसा शरणागतवत्सल मात्र अपने प्राणों की रक्षा के लिए ऐसा कुकर्म करे ? आर्यो तब तो इसको सद्गति मनाओ । भला मुक्ति के उपाय पूछने से क्या लाभ ?

English—Moreover .—

If a person takes something unwholesome, he alone suffers from disease or dies, but even the whole race dies what is unwholesome to the king being done 2

If you do not believe, come and see this evil doer to the king, the merchant Chandandas, who is being led to the place of execution with wife and son (in the air) Noble sirs, Do you ask me if there

(ततः प्रविशति द्वितीयचण्डालानुगतो वध्यवेषधारी शूलं स्कन्धेनादाय कुटुम्बिन्या पुत्रेण चानुगम्यमानश्चन्दनदासः ।)

चन्दनदासः—(सबाष्पम् ।) हद्धी हद्धी । अम्हारिसाणं णिच्च चारित्तभङ्ग-भीरूण चोरजणोचिदं मरण होदि त्ति णमो किदन्तस्स । अह वा ण णिसंसाणं उदासीणेसु इदरेसु वा विसेसो त्थि तह हि । (हा धिक् हा धिक् । अस्मादृशानामपि नित्य चारित्रभङ्गभीरूणां चोरजनोचितं मरणं भवतीति नमः कृतान्तस्य । अथवा न नृशंसानामुदासीनेषु इतरेषु वा विशेषोऽस्ति । तथा हि ।)

---

is any means of setting him free? There is you respectable citizens! if he delivers up the family of the minister Rakshasa (again in the air) Do you say—this and ever kind to those who seek his protection, will never do such an ignoble deed for the sake of mere life. Noble sirs! Then be assured of his pleasant passsage what comes of your discussion of the remedy in this matter?

टिप्पणी—इस श्लोक में व्यतिरेक एव प्रतीप अलङ्कार है। छन्द का नाम आर्या है।

विमला

[ततः = पुरुषकर्तृकाकाशभाषणानन्तरम् (Then), प्रविशति = रङ्गशालान्तर्गतो भवति (enter), द्वितीयचण्डालानुगतः = अपरवधिकानुसृतः (followed by a second Chandal) वध्यवेषधारी = रक्तवस्त्रचन्दनादिधारणशीलः (in a criminal's dress), शूलम् = लौहनिर्मिततीक्ष्णसूक्ष्माग्रावयवम् शङ्कुम् (with a pale), स्कन्धेन = अंसेन (on his shoulder), आदाय = नीत्वा (taking), कुटुम्बिन्या = पत्न्या (by his wife), पुत्रेण = सुतेन (son), अनुगम्यमानः = अनुव्रियमाणः (accompanied), चन्दनदासः = वैश्यजातीयः अमात्यराक्षसमित्रम् (Chandandasa).]

चन्दनदासः—[सबाष्पम् = साश्रुनयनम् (with tears)], हा धिक्, हा धिक्! शोकावेगाद् द्विरुक्तिः (Alas, Alas), अस्मादृशानामपि = मद्विधानामपि जनानाम् (even people like us), नित्यम् = प्रतिदिनम् (always), चरित्रभङ्गभीरूणाम् = चरित्रस्खलनभयशालिनाम् (apprehensive of the loss of character), चोरजनोचितम् = दस्युजनयोग्यम् (suiting a thief), मरणं भवतीति = मृत्युः अस्तीति (death comes), कृतान्ताय = यमाय (for the God of death), नमः = अभिवादनम् (salutation), अथवा = वा (or), न = नहि (not), नृशंसानाम् = दुर्जनानाम् (cruel men), उदासीनेषु = असम्बद्धेषु, निरपराधेषु इत्यर्थः (the unconcerned), वा = अथवा (or), इतरेषु = सम्बद्धेषु (the rest). विशेषोऽस्ति = न भेदोऽवर्तते (make no distinction), तथाहि = तदेव दर्शयति (thus) :—

मोत्तूणं आमिसाइं मरणभएणं तिणेहिं जीवन्तम् ।
वाहाण मुद्धहरिणं हन्तुं को णाम णिव्वन्धो ॥ ३ ॥
(मुक्त्वा आमिषाणि मरणभयेन तृणैर्जीवन्तम् ।
व्याधानां मुग्धहरिणं हन्तु को नाम निर्बन्धः ॥ ३ ॥)

अन्वयः—मरणभयेन, आमिषाणि, मुक्त्वा, तृणैर्जीवन्तम्, मुग्धहरिणम्, हन्तुम्, व्याधानाम्, को, नाम, निर्बन्धः ॥ ३ ॥

व्याख्या—मरणभयेन = मरणाद्भयम् मरणभयम् तेन मरणभयेन = मृत्युभीत्या (Through the fear of death), आमिषाणि = मत्स्यादीनि (flesh), मुक्त्वा = परित्यज्य (leaues), तृणै = शष्पै (on grass), जीवन्तम् = प्राणं धारयन्तम् (lives on), मुग्धहरिणम्=सरलप्रकृतिम् मृगम् (an innocent deer), हन्तुम् = व्यापादयितुम् (to kill), व्याधानाम् = किरातानाम् (of hunters), को नाम निर्बन्ध = कः आग्रहातिशयः (what obstinate desire is)

अप्रस्तुत व्याधकर्तृकमृगमारणोक्त्या प्रस्तुतकौटिल्यकर्तृकचन्दनदासव्यापादनावगत्याऽप्रस्तुतप्रशंसाऽलङ्कार । यथा निर्दोषमृगव्यापादके व्याध तथा निर्दोषपुरुषव्यापादकश्चाणक्योपीति बिम्बप्रतिबिम्बभावद्योतनात् दृष्टान्ताऽलङ्कार । मृत्युभीत्या हरिणानाम् आमिषत्यागायोगेपि तद्योगोक्त्याऽतिशयोक्तिः अलङ्कारः । इत्येषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर । आर्यावृत्तम् ॥ ३ ॥

हिन्दी—(तत्पश्चात् दूसरे चाण्डाल से अनुसरण किया हुआ अपराधी वेष में शूल कन्धे पर रखकर, पत्नी और पुत्र से अनुसरण किया जाता हुआ चन्दनदास का प्रवेश)

चन्दनदास—(साश्रुनयन) हा धिक्कार है ! हा धिक्कार है ! है चरित्रभङ्ग होने के भय से सतत सचेष्ट हमारे जैसे व्यक्ति की मृत्यु भी—चोरजनों के लिए उपयुक्त मृत्यु की तरह होती है । अत, नमस्कार है—महाराज यमराज को । अथवा—निर्दय व्यक्तियों के सामने उदासीनों अथवा दूसरों में भेद नहीं हो पाता । फिर भी—

मृत्युभय से मांस छोड़कर, तृणों से जीवनयापन करनेवाले भोले हिरणों को मारने में शिकारियों का कौन सा आग्रह है ।

English—(Then enters Chandandas in a criminal's dress, carrying the stake on his shoulder accompanied by his wife and son with a second Chandal). (With tears) O Fie ! O Fie ! Death for a man like me, who is ever trying to loss of his character, is all equal to the death of a thief So, bow to the God of death, who has no distinction between an indefferent and an otherwise For,

Which interest forces a preyer to prey deers that lives on grasses leaving flesh for fear of death.

टिप्पणी—इस श्लोक में अप्रस्तुतप्रशंसा, दृष्टान्त तथा अतिशयोक्ति अलङ्कारों के अङ्गाङ्गिभाव से सङ्कर अलङ्कार है । आर्यावृत्त है ।

(समन्तादवलोक्य) भो पिअवअस्स विह्नुदास, कहं पडिवअणं वि ण मे पडिवज्जसि। अह वा दुल्लहा ते क्खु माणुसा जे एदस्सि काले दिट्ठिपथे वि चिट्ठन्ति। (सबाष्पम्।) एदे अम्हपिअवअस्सा अंसुपादमेत्तकेण किदणिवावसलिला विअ कह वि पडिणिव्वत्तमाणा सोअदीणवअणा बाहगुरुआए दिट्ठीए म अणुगच्छन्दि। (इति परिक्रामति।) (भो प्रियवयस्य विष्णुदास, कथं प्रतिवचनमपि न मे प्रतिपद्यसे। अथवा दुर्लभास्ते खलु मानुषा य एतस्मिन्काले दृष्टिपथेऽपि तिष्ठन्ति। एतेऽस्मत्प्रियवयस्या अश्रुपातमात्रेण कृतनिवापसलिला इव कथमपि प्रतिनिवर्तमानाः शोकदीनवदना बाष्पगुर्व्या दृष्ट्या मामनुगच्छन्ति।)

चण्डालः—अज्ज चन्दणदास, आअदोसि वज्झट्ठाणं। ता विसज्जेहि परिअणम्। (आर्य चन्दनदास, आगतोऽसि वध्यस्थानम्। तद्विसर्जय परिजनम्।)

टिप्पणी— १) शूल स्कन्धनादाय—उस समय की रीति के अनुसार, जिस अपराधी को प्राणदण्ड दिया जाता था उसे रक्तवस्त्र पहना कर, रक्त चन्दन लगाकर तथा कन्धे पर शूल रख कर वध्यभूमि ले जाया जाता था। २) कुटुम्बिन्या—कुटुम्बिनी उस नारी को कहा जाता था जो सद्गृहस्थ की पत्नी और पुत्रवती होती थी। (३) नम कृतान्तस्य—यद्यपि नम के योग में नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधे'त्यादि पाणिनीय सूत्र से कृतान्त में सम्प्रदान कारक अपाक्षित है, किन्तु, यहाँ तात्पर्य यह है कि बिना विरोध के मृत्युनिर्णय को मैं स्वीकार करने जा रहा हूं। अतः यहाँ 'क्यों' का कोई प्रश्न नहीं उठता। फलतः षष्ठी प्रयोग भी समीचीन ही है।

विमला

[समन्तात्=चतुर्दिक् (Alround), अवलोक्य=दृष्ट्वा (seeing), भो प्रियवयस्य=भो प्रियमित्र (O, dear friend), विष्णुदास (Vishnudasa), मे=मम (my), प्रतिवचनम्=प्रत्युक्तम् (reply), कथम् प्रतिपद्यसे=कुतो न ददासि (why not say), अथवा=वा (or), दुर्लभा=दुष्प्रापा, विरलाः (unavailable), ते मानुषाः=तद जनाः (those people), ये (who), एतस्मिन् काले=अस्मिन् दुःखावसरे (in this time of calamity), दृष्टिपथेऽपि तिष्ठन्ति=चक्षुर्विषयमायान्ति (stand even with in the range of sight), [सबाष्पम्=साश्रुनयनम् (with tears)], एतेऽस्मत्प्रियवयस्याः=इमे मम प्रियबन्धवः (these my dear friends), अश्रुपातमात्रेण=चक्षुर्जलनिपातेनैव (by shedding tears only), कृतनिवापसलिलाः=कृतोपायाः (with oblation of water offered), इव=यथा (like), कथमपि=केनापि प्रकारेण (some how), शोकदीनवदनाः=प्रवृद्धचिन्ताम्लानमुखाः (with face pale through grief), बाष्पगुर्व्या दृष्ट्या=अश्रुपूर्णनेत्रेण (eyes heavy with tear), प्रतिनिवर्तमानाः=प्रतिगच्छन्तः (are returning), माम्=चन्दनदासम् (to me), अनुगच्छन्ति=अनुयान्ति, मा पश्यन्तीत्यर्थः (following me),

चण्डाल—आर्य=मान्य (Noble sir), चन्दनदास (Chandandas), वध्यस्थानम्=श्मशानम् (place of execution), आगतः=समायातः (have

चन्दनदासः—कुडुम्बिणि, णिवत्तेहि सपदं सपुत्ता। ण जुत्त क्खु अदोवरं अणुगच्छिदुम्। (कुटुम्बिनि, निवर्तस्व साम्प्रतं सपुत्रा। न युक्तं खल्वतोऽपरमनुगन्तुम्।)

कुटुम्बिनी—(सबाष्पम्।) परलोअं पत्थिदो अज्जो ण। देसन्तरं। (परलोकं प्रस्थित आर्यो न देशान्तरम्।)

चन्दनदासः—अज्ज, अअं मित्तकज्जेण मे विणासो ण उण पुरिसदोसेण।

---

arrived), तद्=तस्मात् (so), परिजनम्=परिवारम् (your people), विसर्जय= निर्वर्तय (dismiss).

हिन्दी—(चारों ओर देख कर) क्यों प्रियमित्र विष्णुदास, क्या मुझे उत्तर भी नहीं देते हो। अथवा—ऐसे अवसर पर तो विरले ही व्यक्ति आँखों के सामने दिखलाई पड़ते हैं। (आँखों में आँसू भरकर) ये हमारे प्रिय मित्र, आँसू बहा कर हमारी मुक्ति चाहने वाले, उनडते हुए शोक से म्लान मुख किये आँसुओं के कारण शिथिल दृष्टि से अनुसरण करते हुए उल्टे पाँव लौटने वाले हैं। (ऐसा कहकर घूमता है)।

चण्डाल—आर्य चन्दनदास! आप पहुँच गये अब वध्यस्थान पर, लौटाइए अपने जन-परिजनों को।

English—(Looking around) O, dear friend Vishnudasa, How so, you do not even give me reply? Or rather, those men are rare now (at the time of grief) who stand even with in the range of sight. (With tears) There my dear friends who are returning some how with there bodies as if shedding tears only as to keep off with pale face through grief, are following me tears in their eyes. (Moves round the stage).

Chandala—Revered Chandandas! You have come to execution place, so dismiss your family.

विमला

चन्दनदास —कुटुम्बिनि=भार्ये (Dear wife), साम्प्रतम्=अधुना (now), सपुत्रा=पुत्रेन सह (with son), निवर्तस्व (return), अत परम्=इतोऽधिकम् (further), खलु=वाक्यालङ्कारे, अनुगन्तुम्=अनुसर्तुम् (to follow), न युक्तम्= नोचितमिति (is not proper),

कुटुम्बिनी—[सबाष्पम्=अश्रुपूर्णनेत्रम् यथा स्यात् तथा (Weeping)], आर्यः= पूज्यो भवान् (Noble sir), परलोकम्=स्वर्गलोकम् (the next world), प्रस्थितः (is going), न देशान्तरम्=न पुन अन्यजनपदमिति (not for a distant country).

चन्दनदासः—आर्ये (Dear wife), अयम्=एषः (this), मे=मम (my), विनाशः=मृत्यु (death), मित्रकार्येण (for the sake of friend), न पुनः

ता अलं विसादेण। (आर्ये, अयं मित्रकार्येण मे विनाशो न पुनः पुरुषदोषेण। तदलं विषादेन।)

कुटुम्बिनी—अज्ज, जइ एव्व ता दाणि अकालो कुलजणस्स णिवट्टिदुम्। (आर्य, यद्येव तदिदानीमकालः कुलजनस्य निवर्तितुम्।)

चन्दनदासः—अह किं ववसिदं कुटुम्बिणीए। (अथ किं व्यवसितं कुटुम्बिन्या।)

कुटुम्बिनी—भत्तुणो चलणे अणुगच्छन्तीए अप्पाणुग्गहो होदित्ति। (भर्तुश्चरणावनुगच्छन्त्या आत्मानुग्रहो भवतीति।)

(not for), पुरुषदोषेण = असदाचरणेन (human falling), तत् = तस्मात् (so), अलम् = व्यर्थम्, विषादेन = आक्रन्दनेन (away with grief)

कुटुम्बिनी—आर्य=मान्य (Noble sir), यद्येवम् = सुहृत्कार्यसाधनाय विनाशो सति (if so), तत् = तदा (then), इदानीम् = अधुना (now), कुलजनस्य = बन्धुवर्गस्य (for person of family), निवर्तितुम् = परित्यक्तुम् (to return), अकालः = अयुक्तम् (is not proper), विनाशकाले न कुलजनः परित्यज्य गन्तव्यम्॥

चन्दनदास—अथ = अनन्तरम् (Well), कुटुम्बिन्या = भवत्या (by my wife), किं व्यवसितम् = किं निश्चितम् (what is intended), अनुगमननिवर्तनयोर्मध्ये किं स्थिरीकृतम्।

हिन्दी—चन्दनदास—देवी, अब अपने पुत्र के साथ लौट जाओ। इससे आगे चलना उचित नहीं है।

कुटुम्बिनी—(आँखों में आँसू भर कर) आर्य परलोक जा रहे हैं न कि परदेश।

चन्दनदास—आर्ये, मित्र के निमित्त मेरा यह विनाश है नकि अपने चरित्रदोष से। अतः इस सम्बन्ध में शोक करना व्यर्थ है।

कुटुम्बिनी—आर्य, यदि ऐसा है तो, पारिवारिक सदस्यों को लौटने का यह उचित समय नहीं है।

चन्दनदास—अच्छा, तो तुमने क्या निश्चय किया है ?

English—*Chandandasa*—Dear wife, return now, with son, it is not proper to follow me further.

Wife—(Weeping). My lord you are proceeding for next world, not for another country

Chandandasa—Dear, my death has come for the sake of friend, not for the fact of character, so leave weeping

Wife—O my lord, if so, what shall we the remaining members of family do being returned,

Chandandasa—What has my wife now intend to do ?

निमला

कुटुम्बिनी—भर्तुः = स्वामिनः (my husband), चरणौ=पादौ (the feet), अनुगच्छन्त्या = अनुसरन्त्या (following), आत्मानुग्रहः भवति=जायते (let good come to the soul of myself)

चन्दनदासः—अज्जे, दुव्ववसिदु एदं तुए। अअ पुत्तओ असुणिदलोअसववहारो बालो अणुगह्णिदव्वो। (आर्ये, दुर्व्यवसितमिदं त्वया। अय पुत्रकोऽश्रुतलोकसव्यवहारो बालोऽनुगृहीतव्यः।)

कुटुम्बिनी—अणुगिह्णन्दु ण पसण्णाओ देवदाओ। जाद पुत्तअ, पत पच्छिमेसु पिदुणो पादेसु। (अनुगृह्णन्त्वेन प्रसन्ना देवताः। जात पुत्रक, पत पश्चिमयोः पितुः पादयोः।)

पुत्रः—(पादयोर्निपत्य।) ताद, किं दाणिं मए तादविरहिदेण अणुचिट्ठिदव्वम्। (तात, किमिदानीं मया तातविरहितेनानुष्ठातव्यम्।)

चन्दनदास.—आर्ये = (Noble lady), इदम्=एतत् (this), त्वया (by you), दुर्व्यवसितम = अयुक्तम स्थिरीकृतम् (in an unwise reslove), अयम् = असौ (this), पुत्रकः = कुमार. (the son), अश्रुतलोकसव्यवहार. = अश्रुत. अज्ञातः लोकसंव्यवहारो येन असौ अश्रुतलोकसंव्यवहारः अज्ञातलोकाचारः (inexperienced), बालः = शिशु (poor boy), अनुगृहीतव्य. = पालनीयः (you should take care of this son).

कुटुम्बिनी—एनम्=बालम् (To the boy), प्रसन्ना देवता = हृष्टाः सुरा, अनुगृह्णन्तु= रक्षन्तु (let the deities be pleased to help him), जात पुत्रक = (child, my son), पश्चिमयो. पितु (father for the last time) पादयोः = चरणयोः (the feet), पत=प्रणम (fall).

पुत्र —[पादयोनिपत्य = चरणयोः पतित्वा (falling at his feet)], तात = पितः (father), तातविरहितेन = पितृहीनेन (without father), इदानीम्=अधुना (now), मया (by me), किं अनुष्ठातव्यम = किं कर्त्तव्यम् (what to be done).

हिन्दी—कुटुम्बिनी—यही कि पति के चरणों का अनुगमन करती हुई धन्य हो जाऊँ।

चन्दनदास—देवि, तुम्हारा यह निश्चय उचित नहीं है। तुम पर इस अनुभवहीन बालपुत्र का दायित्व है।

कुटुम्बिनी—इसकी रक्षा सतुष्ट देवगण करेंगे। आ बेटा, पिता के चरणों का अन्तिम प्रणाम कर लो।

पुत्र—(चरणों में गिर कर) तात, मुझ पितृहीन को क्या क्या करना होगा?

English—*Wife*—To good come to myself by following my husband's feet

Chandandasa—Dear, it is an unproper idea. You should bring up this poor boy, young and inexperienced in the affairs of the world.

Wife—Let dieties be pleased to save this boy, My son fall at the feet of your father to whom you see for the last time.

Son—(Falling at his feet) Father, what shall I do now after being forsaken by father?

चन्दनदासः—पुत्त, चाणक्कविरहिदे देसे वसिदव्वम्। (पुत्र, चाणक्यविरहिते देशे वस्तव्यम्।)

चाण्डालः—अज्ज चन्दणदास, णिखादे शूले, ता सज्जो होहि। (आर्य चन्दनदास, निखातः शूल। तत्सज्जो भव।)

कुटुम्बिनी—अज्जा, परित्ताअध परित्ताअध। (आर्याः, परित्रायध्व परित्रायध्वम्।)

चन्दनदासः—अज्जे, अह किं एत्थ आक्कन्दसि। सग्गं गदाणं दाव देवा दुक्खिदं परिअणं अणुकम्पन्दि। अण्ण अ मित्तकज्जेण मे विणासो ण अजुत्तकज्जेण। ता किं हरिसट्ठाणे वि रोदीअदि। (आर्ये, अथ किमत्र आक्रन्दसि। स्वर्गंगतानां तावद्देवा दुःखितं परिजनमनुकम्पन्ते। अन्यच्च मित्रकार्येण मे विनाशो नायुक्तकार्येण। तत्किं हर्षस्थानेऽपि रुद्यते।)

विमला

चन्दनदास—पुत्र=वात्स (Son), चाणक्यविरहिते=कौटिल्यरहिते (where Chanakya will not be found), देशे=प्रदेशे (country), वस्तव्यम्=निर्वासितव्यम् (you have to live).

चाण्डालः—आर्य चन्दनदास (Noble Chandandas), शूलः=शङ्कुः (the stake), निखातः=भूमौ निहितः (is driven), तद्=तस्मात् (so), सज्जो भव=आरोढुमुद्यतो भव (get ready).

कुटुम्बिना—आर्याः=मान्याः (Noble citizens), परित्रायध्वम्, परित्रायध्वम्=रक्षत मृत्युमुखात् मम पतिम् (help noble sirs, help).

चन्दनदासः—आर्ये (Noble lady), अत्र=अस्मिन् स्थाने (here), किम्=कथम् (why), आक्रन्दसि=रोदिषि (do you mourn), स्वर्गं गतानाम् (of those who go to heaven), तावद्देवाः (the gods), दुःखितम् परिजनम् (the afflicted families), अनुकम्पन्ते=रक्षन्ति (take compassion on), अन्यच्च (Besides), मे=मम (my), मित्रकार्येण=सुहृदर्थम् (for the sake of my friend). विनाशः=मृत्युः (death), न=नहि (not for), अयुक्तकार्येण=अनुचितकार्येण (doing any thing wrong), तत्किम्=तत्कथम् (so why), हर्षस्थाने=प्रसन्नतायाः स्थाने (in the place of rejoycing), रुद्यते=अश्रु विमुच्यते (you weep).

हिन्दी—चन्दनदास—वत्स, चाणक्य से रहित देश में निवास करना।

चण्डाल—आर्य चन्दनदास, शूल गाड़ दिया गया है। अतः तैयार हो जाओ।

कुटुम्बिनी—आर्यो रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये।

चन्दनदास—आर्ये, इसके लिए क्यों रो रही हो। जो व्यक्ति स्वर्ग जाता है—उसके परिवार की रक्षा स्वयं देवता करते हैं। दूसरी बात यह भी है कि मेरी मृत्यु किसी अपराध से नहीं होने जा रही है। मैं तो मित्रकार्य के लिये ही मर रहा हूं। तो फिर हर्ष की जगह यह रुलाई कैसी?

प्रथमश्चाण्डालः—अले विल्लपत्त, गेह्ण चन्दणदासं। सअं एव्व परिअणो गमिस्सदि। (अरे विल्वपत्र, गृहाण चन्दनदासम्। स्वयमेव परिजनो गमिष्यति।)

द्वितीयश्चाण्डालः—अले वज्जलोमा, एस गेह्णामि। (अरे वज्रलोमन्, एष गृह्णामि।)

चन्दनदासः—भद्द, मुहुत्तं चिट्ठ जाव पुत्तअं सन्तआमि। (पुत्रं मूर्ध्न्याघ्राय।) जाद, अवस्सं भविदव्वे विणासे मित्तकज्जं समुव्वहमाणो विणासमणुभवामि। (भद्र, मुहूर्तं तिष्ठ यावत्पुत्रकं सान्त्वयामि। जात, अवश्यं भवितव्ये विनाशे मित्रकार्यं समुद्वहमानो विनाशमनुभवामि।)

पुत्रः—ताद, किं एद वि भणिदव्वं। कुलधम्मो क्खु एसो अम्हाण। (इति पादयोः पतति।) (तात, किमिदमपि भणितव्यम्। कुलधर्मः खल्वेषोऽस्माकम्।

English—*Chandandasa*—Son, Live in a country free from Chanakya.

Chandal—Revered Chandandasa, the stake has been driven, so be ready.

Wife—Help, Noble citizens help.

Chandandasa—Gentle woman, why do you cry for it? Deities take pity on the family of those men, who go to paradise. Moreover—I am dying for the purpose of a friend, not an unlegal work. Then why do you weep even at the time of joy?

विमला

प्रथमश्चाण्डाल.—अरे विल्वपत्र = दूतद्वय-सम्बोधनम् (O Vilwapatra), चन्दनदासम् (Chandandasa), गृहाण = ग्रहणम् कुरु (seize), परिजनः = परिवारः (the family), स्वयमेव = आत्मनैव (of themselves), गमिष्यति (will go).

द्वितीयश्चाण्डाल.—अरे वज्रलोमन् (O Vajraloman), एष गृह्णामि (here I seize him).

चन्दनदास —भद्र = कल्याणिन् (Good man), मुहूर्तं तिष्ठ = क्षणं विलम्बस्व (wait for a moment), यावत् पुत्रकम् सान्त्वयामि = अस्म-मरणकातर-हृदयमाश्व..म् (till console my boy), [पुत्रम् मूर्ध्न्याघ्राय (smelt his son on the head)], जात = पुत्र (the son), विनाशे अवश्यम्भवितव्येऽपि = विनाशे निश्चितेऽपि (even the death is sure to be fall), मित्रकार्यं = सुहृदुपकारम् (in doing a service to a friend), समुद्वहमानः = कुर्वन् (doing), विनाशमनुभवामि = मृत्युमनुभवामि (I suffer death).

पुत्र —तात = पित. (Father), इदमपि = एतदपि (this too), किं भणितव्यम् = (has to be told), एष. = अयम् (this is), अस्माकम् (our), कुलधर्मः (family vow), खलु = निश्चये (indeed), [इति पादयोः पतति = (falls at the feet)].

चाण्डालः—अले. गेह्न एणं । (अरे, गृहाणैनम् ।)

कुटुम्बिनी—(सोरस्ताडम् ।) अज्ज, परित्ताहि परित्ताहि । (आर्य, परित्रायस्व परित्रायस्व ।)

(प्रविश्य पटाक्षेपेण ।)

राक्षसः—भवति, न भेतव्यम् । भो भोः शूलायतनाः, न खलु व्यापादयितव्यश्चन्दनदासः ।)

हिन्दी—पहला चाण्डाल—अरे बिल्वपत्र, चन्दनदास को पकड़ लो। परिवार वाले आप लौट जाएगा।

दूसरा चाण्डाल—अरे वज्रलोमन्, अभी पकड़ता हूँ।

चन्दनदास—एक क्षण ठहर भद्र! जबतक अपने पुत्र को सान्त्वना द दूँ। (पुत्र के सिर को सूंघता है) बेटा, मृत्यु अवश्यम्भावी है, फिर मैं तो मित्रकार्य से मृत्यु का अनुभव कर रहा हूँ।

पुत्र—पिताजी, यह क्या कुछ कहने की बात है। यह तो हमारा कुलधर्म है (ऐसा कहकर पैरों पर गिरता है।)

English—*First Chandal*—O Vilwapatra, seize Chandandasa so the family will retuern themselves.

Second chandala—O, Vajraloman, soon I seize him.

Chandandasa—Gentleman, wait a moment, till I console my son. (Smelling at his head). Son, as death being sure, I recieve death for the service of a friend.

Son—Father, Is it to be told ? It is our family rule.

(Falls at his feet)

विमला

चाण्डालः—अरे=सम्बोधनम् (Sirrah), एनम्=चन्दनदासम् (him), गृहाण (seize),

कुटुम्बिनी—[सोरस्ताडम्=ताडनम् ताडः उरसस्ताड उरस्ताडस्तेन सहितम् सोरस्ताडम् तद्यथास्यात्तथा ब्रवीति (Beating the breast)], आर्य=मान्य (Noble sir), परित्रायस्व=रक्षस्व, मृत्युमुखादिति (help), परित्रायस्व (help).

[प्रविश्य (Enter), पटाक्षेपेण (with a loss of a curtain)].

राक्षसः—भवति=श्रीमति (Noble womar), न भेतव्यम्=न भयमनुभवितव्यम् (fear not), भो भोः=सम्बोधनमिदम् (Ho, Ho), शूलायतना = शूलमायतनम् जीवनं येषाम् ते शूलायतनाः=शूलजीविनः (you incharge of the Stake), न खलु (not), व्यापादयितव्यः=मारयितव्यः (must be killed), चन्दनदासः (Chandandasa).

येन स्वामिकुलं रिपोरिव कुलं दृष्टं विनश्यत् पुरा
मित्राणां व्यसने महोत्सव इव स्वस्थेन येन स्थितम् ।
आत्मा यस्य वधाय वः परिभवक्षेत्रीकृतोऽपि प्रिय-
स्तस्येयं मम मृत्युलोकपदवी वध्यस्रगावध्यताम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—येन, पुरा, स्वामिकुलम्, रिपोः, कुलम्, इव, विनश्यत्, दृष्टम्, येन, मित्राणाम्, व्यसने, महोत्सवे, इव, स्वस्थेन, स्थितम्, परिभवक्षेत्रीकृतः, अपि, यस्य, आत्मा, वधाय, व, प्रियः, तस्य, मम, मृत्युलोकपदवी, इयम्, वध्यस्रक्, आवध्यताम् ॥ ४ ॥

व्याख्या—येन = मया राक्षसेन (By whom), पुरा = पूर्वम् (formerly), स्वामिकुलम् = नन्दवंशम् (master's race), रिपोः = शत्रोः (enemy's), कुलम् = वंशम् (the race), इव = यथा (like), विनश्यत् = क्षयं गच्छत् (swffering distruction), दृष्टम् = अवलोकितम् (was seen), येन (by whom), मित्राणाम् = सुहृदाम् (of his friends), व्यसने = दुःखे (in calamity), महोत्सवे = आनन्दकाले (festivity), इव = यथा (like), स्वस्थेन = सुस्थिरेण (unmoved), स्थितम् = न तत्र साहाय्यम् कृतम् (stood), परिभवक्षेत्रीकृतः = परिभवस्य क्षेत्रम् परिभवक्षेत्रम् अपरिभवक्षेत्रम् परिभवक्षेत्रम् कृतः परिभवक्षेत्रीकृत = अनादरास्पदीभूतोऽपि (though made the object of ignominy), अपि (also), यस्य = मम (whom), आत्मा = शरीरम् (soul), वधाय = हन्तुम् (for the distruction) वः = युष्माकम् (your), प्रियः = इष्टः (dear), तस्य मम (whose person), मृत्युलोकपदवी = यमनगरगमनपद्धतिः (the road leading to the world of death). इयम् = एषा (this), वध्यस्रक् = रक्तपुष्पमाल्यादियुक्तवन्धनदाम (execution garland), आवध्यताम् = पिनह्यताम् कण्ठे त्वया इति (Let be lahung) ॥ ४ ॥

हिन्दी—चाण्डाल—अरे, इसको पकड़ लो।
कुटुम्बिनी—(छाती पीटती हुई) आर्य, बचाओ, बचाओ।
(पर्दे को हटाकर राक्षस का प्रवेश)
राक्षस—श्रीमती, डरो मत। अरे ओ वधिको, चन्दनदास को नहीं मारना चाहिए।
जिसने अपने स्वामी नन्दवंश को प्रथम शत्रु के वंश के समान नष्ट होते हुए देखा, जो मित्रों का वध होने पर—महोत्सव की तरह उसे चुपचाप देखता रह गया। अपमान पर अपमान होते हुए भी जिसे जान प्यारी थी—उसी राक्षस के गले में मृत्युलोक पहुँचानेवाली यह वध्यमाला बाँध दो ॥ ४ ॥

English—*Chadal*—Sirrah ! seize him.
wife—(Beating the breast) Save him, noble sir, help him)
(Entering with a toss of a cartain)
Rakshasa—Fear not noble lady fear not, O, incharge of stake Chandandasa must not be killed

Let this wreath of the doomed, the road leading to the world of death, be hung upon me, by whom his master's race was formerly

चन्दनदासः—(सबाष्प विलोक्य ।) अमच्च, किं एदं । (अमात्य, किमिदम् ।)

राक्षसः—त्वदीयसुचरितैकदेशस्यानुकरणं किलैतत् ।

चन्दनदासः—अमच्च, सव्वं वि इमं पआसं णिप्फलं करन्तेण तुए किं अणुचिट्ठिदं । (अमात्य, सर्वमपीमं प्रयासं निष्फलं कुर्वता त्वया किमनुष्ठितम् ।)

राक्षसः—सखे, स्वार्थ एवानुष्ठितः । कृतमुपालम्भेन । भद्रमुख, निवेद्यतां दुरात्मने चाणक्याय ।

वज्रलोमा—किं त्ति । (किमिति ।)

---

seen perishing as if it were his enemy's race, who remained at ease when his friends were smitten with calamity as at a great festivity, and to whom though made into a butt of indignities is dear, for your distruction (4)

टिप्पणी—इस श्लोक में श्रौती पूर्णोपमा, विरोध एवं रूपक अलङ्कार की संसृष्टि है। छन्द का नाम शार्दूलविक्रीडित है ॥ ४ ॥

विमला

चन्दनदास—[सबाष्पम् = साश्रुपूर्णनयनम् (With tears), विलोक्य = दृष्ट्वा (looking at)], अमात्य = मन्त्रिन् (minister), इदम् = एतत् (this), किम् (what)

राक्षस—तवेदम् त्वदीयम् तच्च तत्सुचरितम् च त्वदीयसुचरितम् तस्यैकदेशस्त्वदीयसुचरितैकदेशः तस्य त्वदीयसुचरितैकदेशस्य = भवत्साधुचरित्रैकभागस्य (Of a portion of your noble career), अनुकरणम् = अनुकृतम् (an imitation), एतत् (this), किल (merely)

चन्दनदासः—अमात्य=मन्त्रिन् (Minister), सर्वमपि (all), इमम् = एतम् (this), प्रयासम्=प्रयत्नम् (efforts), निष्फलम् = निरर्थकम् (fruitless), कुर्वता = विदधता (rendering), त्वया = राक्षसेन (by you), किम् (what), अनुष्ठितम् = कृतम् (have done).

राक्षस—सखे = मित्र (Friend), स्वार्थ एव (to my own interest), अनुष्ठितः = कृतः (have attended), उपालम्भेन = तिरस्कारेण, कृतम् = व्यर्थम् (away with remonstration), भद्रमुख (goodman), निवेद्यताम् = कथ्यताम् (report to), दुरात्मने = दुष्टात्मने (the vile-hearted), चाणक्याय = कौटिल्याय (for Chanakya).

वज्रलोमा—किमिति (What is it)

हिन्दी—चन्दनदास—(आँसू भरी आँखों से देखकर) अमात्य, आपने यह क्या किया ?

राक्षस—तुम्हारे सुचरित के एक अंश का यह मात्र अनुकरण है।

चन्दनदास—मन्त्रिवर, हमारे सारे प्रयत्नों को इस प्रकार निष्फल बनाते हुए आपने क्या कर डाला ?

राक्षस —

दुष्कालेऽपि कलावसज्जनरुचो प्राणै: परं रक्षता
नीतं येन यशस्विनातिलघुतामौशीनरीयं यश ।
बुद्धानामपि चेष्टितं सुचरितै: क्लिष्टं विशुद्धात्मना
पूजार्हाऽपि स यत्कृते तव गत शत्रुत्वमेषोऽस्मि स: ॥ ५ ॥

राक्षस—मित्र, अपना स्वार्थ ही किया है। उलाहना मत दो। भद्रमुख, उस दुष्ट चाणक्य से जाकर निवेदन करो।

वज्रलोमा—क्या?

English—*Chandandasa*—(Looking with tears) Minister, what is this ?

Rakshasa—Merely an imitation of a part of your noble carrer

Chandandasa—Minister, what is this that you have done by rendering all this attempt fruitless ?

Rakshasa—Friend, I have only attended to our own interest, goodman go and report to the vile hearted Chanakya

Vajra—What is that ?

विमला

अन्वय:—असज्जनरुचौ दुष्काले, कलौ, अपि, प्राणै, परम्, रक्षता, येन, यशस्विना, औशीनरीयम्, यश, अतिलघुताम्, नीतम्, विशुद्धात्मना, सुचरितै, बुद्धानामपि-चेष्टितम् क्लिष्टम् पूजार्ह, अपि, स, य कृते, तव, शत्रुत्वम्, गत, स, एष, अहम्, अस्मि ॥ ५ ॥

व्याख्या—असज्जनानाम् रुचिर्यस्मिन् सोऽसज्जनरुचिस्तस्मिन् असज्जनरुचौ= दुर्जनानुरागे (In which the tastes of the wicked persons), दुष्काले= पापिन्यपि (evil times), कलौ=कलियुगे (the Kali age) अपि (even), प्राणै =असुभि (with life), परम्=अन्यम् (another), रक्षता=पालयता (by saving), येन=चन्दनदासेन (by whom), यशस्विना=कीर्तिशालिना (who the glorious one), औशीनरीयम्=उशीनरस्य देशस्यायम् अधिपति औशीनर तस्येदमौशीनरीयम्=शिविनृपतिगतम् (of the king Sivi), यश =कीर्त्ति (fame), अतिलघुताम्=अत्यन्तानादरास्पदताम् (insignificant '), नीतम्= प्रापितम् (has rendered), विशुद्धात्मना=विशुद्ध आत्मा यस्य स विशुद्धात्मा तेन विशुद्धात्मना=पवित्रहृदयेन (being pure in soul) सुचरितै =साधुचरित्रै पुण्यकर्मभि, वा (by virtuous conduct) बुद्धानामपि=सुगतानामपि (even of the Buddha), चेष्टितम्=व्यापार (the deeds), क्लिष्टम्=तिरस्कृतम् (are shaded), पूजार्ह अपि=अर्च्योऽपि (even adorable one), स =असौ (that), यत्कृते=यस्य मम (for whose sake), तव=भवत (your), शत्रुत्वम्=शत्रोर्भाव शत्रुत्वम्=रिपुत्वम् (enmity), गत =नीत (incurred), स =असौ (that), एष (here), अहमस्मि (I am) ॥ 5 ॥

प्रथमः—अले विल्लपत्तअ, तुमं दाव चन्दनदासं गेह्णिअ इह एदस्स मसाण-पादपस्स छाआए मुहुत्तं चिट्ठ जाव अहं चाणक्कस्स णिवेदेमि गिहीदो अमच्चरक्खसो त्ति। (अरे विल्वपत्रक, त्वं तावच्चन्दनदासं गृहीत्वेहैतस्य श्मशानपादपस्य छायायां मुहूर्तं तिष्ठ यावदहं चाणक्यस्य निवेदयामि गृहीतोऽमात्यराक्षस इति।)

द्वितीयः—अले वज्जलोमा, गच्छ। (अरे वज्रलोमन्, गच्छ।)

जनानां प्रायशः कलौ स्वार्थप्रधानत्वेऽपि शरणागतवात्सल्यात् मत्ययुगे शरणागतवत्सलात् शिविनृपतेरपि, अस्याधिकमहत्त्वम् बुद्धादपि, अतिशयदयाशालित्वम् चेति भावः ॥ ५ ॥

हिन्दी—यह कि मैं वह राक्षस आ गया हूँ—जिसके लिये वे पूजा के योग्य, दुष्टों के मनोनिर्लिप्त परमव इस घोर कलिकाल में भी—अपने प्राणों से दूसरों के प्राण बचानेवाले, अपने शरणागत की रक्षारूप शुचीचि से महात्म्य महाराज शिवि की भी कीर्ति को नीचा दिखा देनेवाले और अपने विशुद्धाचरण के बल पर भगवान बुद्ध के भी सत्कर्मों से बड़े-बड़े सत्कर्म करनेवाले—वे महात्मा चन्दनदास मारे जा रहे थे ॥ ५ ॥

English—*Rakshasa*—Here I am he for whose sake even that adorable one incurred your enmity—the one by whose glorious, saving andher at the cost of his own life in these evil times of the Kali age in which the tastes of the people are wicked has rendered insignificant even the fame of the king Shivi, and by whom, the pure hearted even the deeds of the Buddhas are shaded with his noble deeds. (5)

टिप्पणी—इस श्लोक में एक ही पद शब्दवाच्य का चन्दनदासरूप कर्तृकारक का भी भिन्न-भिन्न धातुवाच्य क्रियाओं में सम्बन्ध रहने के कारण दीपक अलङ्कार है। फिर शिवि और बुद्ध दोनों की अपेक्षा आधिक्यकथन के कारण व्यतिरेक अलङ्कार है। पूजा के योग्य व्यक्ति का वधयोग्य व्यक्तित्व में परिवर्तन से परिवृत्ति अलङ्कार है। इन दोनों के सम्मिश्रण से सङ्कर अलङ्कार है। शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

विमला

प्रथम:—अरे विल्वपत्रक (O Bilvapatraka), त्वम् (you), तावत् (till), चन्दनदासम् (Chandandasa), गृहीत्वा (taking), इह=अत्र (here), एतस्य (this), श्मशानपादपस्य(the tree of the burning ground), छायायाम् (under the shade), मुहूर्तम्=क्षणम् (for a moment), तिष्ठ=स्थीयताम् (wait), यावदहम् (while I), चाणक्यस्य=कौटिल्यस्य (Chanakya), निवेदयामि=कथयामि (report to), अमात्यराक्षसः (Minister Rakshasa), गृहीतः (is taken).

द्वितीयः—अरे वज्रलोमा (O Vajraloman), गच्छ=गम्यताम् (go).

(इति सपुत्रदारेण चन्दनदासेन सह निष्क्रान्तः ।)

प्रथम —एदु अमच्चो । (राक्षसेन सह परिक्रम्य ।) अत्थि एत्थ कोवि णिवेदेद् दाव णन्दकुलणगकुलिसस्स मोरिअकुलपडिट्ठावअस्स अज्जचाणक्कस्स । (एत्वमात्य । अस्त्यत्र कोऽपि निवेदयेत् तावन्नन्दकुलनगकुलिशस्य मौर्यकुलप्रतिष्ठापकस्यार्यचाणक्यस्य ।)

राक्षस —(स्वगतम् ।) एतदपि नाम श्रोतव्यम् ।

चाण्डाल —एसो अज्जणादिसंजमिदबुद्धिपरिसरो गिहीदो अमच्चरक्खसो त्ति (एष आर्यनीतिसंयमितबुद्धिपरिसरो गृहीतोऽमात्यराक्षस इति ।)

(ततः प्रविशति जवनिकावृतशरीरो मुखमात्रदृश्यश्चाणक्यः ।)

चाणक्य —भद्र, कथय कथय ।

[निष्क्रान्त = निर्गत (Exit) सपुत्रदारेण (with wife and son) चन्दनदासेन सह (with Chandandasa)]

प्रथम —अमात्य = मन्त्री (Minister), एतु = आगच्छतु (let come), [राक्षसेन सह = (with Rakshasa), परिक्रम्य (going round)], अत्र = द्वारे (here), कोपि = दौवारिकाणाम् मध्ये कोऽपि (any one), निवेदयेत् = कथयेत् (report), तावन्नन्दकुलनगकुलिशस्य = नन्दानाम् कुलम् तस्य नग तस्मै कुलिशम् तस्य = नन्दकुलनगकुलिशस्य = नन्दवंशपर्वतवज्रस्य (the thunderbolt to the hill of the race of Nandas), मौर्यकुलप्रतिष्ठापकस्य = चन्द्रगुप्तवंशस्थिरीकृतस्य (the founder of the house of Nandas), आर्यचाणक्यस्य = आर्यकौटिल्यस्य (to noble Chanakya)

राक्षस —[स्वगतम् = अप्रकाश्यम् (To himself)], एतदपि (Even this), नाम श्रोतव्यम् (has to be listen to)

चाण्डाल —एष = अयम् (That), आर्यस्य नीति आर्यनीतिस्तया संयमितो बुद्धिपरिसरो यस्य स आर्यनीतिसंयमितबुद्धिपरिसर = चाणक्यनयकुण्ठितमतिविशेष (whose intellect and prowess have been thwarted by noble Chanakya's state-craft) अमात्यराक्षस (minister Rakshasa), गृहीत = संयमित (is taken)

[ततः (then), प्रविशति (Enter), जवनिकावृतशरीरो (body covered by a veil), मुखमात्रदृश्य (face alone visible, चाणक्य Chanakya)]

चाणक्य —भद्र = कल्याणिन् (Gentleman), कथय कथय = उच्यताम्, उच्यताम्, (tell me tell)

हिन्दी—प्रथम—अरे विल्वपत्रक, तुम तबतक इस चन्दनदास को पकड़े हुए इस श्मशान वृक्ष की छाया में ठहर जाओ, जबतक कि मैं आर्य चाणक्य से निवेदन कर दूं कि अमात्य राक्षस पकड़ में आ चुके ।

द्वितीय—अरे वज्रलोमन् ऐसा ही करो ।

(इस प्रकार पुत्र और पत्नी के सहित चन्दनदास के साथ निकल गया)

केनोत्तुङ्गशिखाकलापकपिलो बद्धः पटान्ते शिखी
पाशैः केन सदागतेरगतिता सद्यः समासादिता।
केनानेकपदानवासितसटः सिंहोऽर्पितः पञ्जरे
भीमः केन च नैकनक्रमकरो दोर्भ्यां प्रतीर्णोऽर्णवः ॥ ६ ॥

प्रथम—अमात्य बाहर—(राक्षस के साथ घूमकर) यहाँ कोई है—नन्दकुलरूपी पर्वत के लिए वज्रस्वरूप तथा मौर्यकुल के प्रतिष्ठापक आर्य चाणक्य से निवेदन करें।

राक्षस—(अपने आप) राक्षस को यह सब भी सुनना था।

चाण्डाल—आर्य की नीति से कुण्ठित बुद्धि और पुरुषार्थ वाले अमात्य राक्षस पकड़ लिए गये हैं।

(पर्दे की ओट में, केवल मुँह बाहर किये चाणक्य का प्रवेश)

चाणक्य—भद्र, कहो, कहो!

English—*First*—O, Vilwapatraka, wait here for a moment taking Chandandasa with you, while in the shade of the tree of the burning ground while I report to His Honour Chanakya that minister Rakshasa is taken

Second—O, Vijraloman, go

(Exit with Chandandasa and his wife and son)

First—Come minister (Going round with Rakshasa). Is there any one here ? Inform to noble Chanakya, the thunderbolt to the hill of the race of Nanda and the founder of the house of Mourya—

Rakshasa—(To himself) Even this has to be listen to !

Chandala— That minister Rakshasa whose wit and prowess have been checked by the state-craft of noble Sir, is taken.

(Now enter Chanakya with his person covered by a Veil
and face alone visible)

Chanakya—Gentleman, tell me tell

विमला

अन्वयः—केन, उत्तुङ्गशिखाकलापकपिलः, शिखी, पटान्ते, बद्धः केन, पाशैः, सदा गतेः, अगतिता, सद्यः, समासादिता, केन, अनेकपदानवासितसटः, सिंहः, *पिञ्जरे, अर्पितः, केन, दोर्भ्यां, नैकनक्रमकरः च, भीमः, अर्णवः, प्रतीर्णः ॥ ६ ॥*

व्याख्या—केन=कनेन (By whom), उत्तुङ्गाश्च ताः शिखाः उत्तुङ्गशिखास्तासाम् कलापः उत्तुङ्गशिखाकलापस्तेन कपिलः उत्तुङ्गशिखाकलापकपिलः=उद्‌ध्वायितज्वाला-समूहपिङ्गलः (the fire red with the mass of its mighty flames), शिखी=वह्निः (the fire), पटान्ते=वस्त्रप्रान्ते (in the Skirt of his garment), बद्धः=संयमित इव इत्यर्थः (is tied), केन=कनेन (by whom), पाशैः=रज्जुभिः

चाण्डाल —णीदिणिउणवुद्धिणा अज्जेण। (नीतिनिपुणबुद्धिनार्येण।)
चाणक्य —मा मैवम्। नन्दकुलविद्वेषिणा दैवेनेति ब्रूहि।

(with chains), सदा सततम् गतिर्गमनम् यस्य स तथोक्तस्तस्य सदागते = सतत गमनशीलस्य वायोरिति (ever moving), अविद्यमाना गतिर्यस्य सोऽगतिस्तस्य भावोऽगतिता, गतिनिरोध इत्यर्थ (the motionlessness), सद्य = अकाण्डे (instantly), समासादिता=कृता (brought about), केन महापुरुषण (by whom), अनेकाभ्याम् मुखशुण्डाभ्याम् पिबन्तीत्यनेकपा हस्तिनस्तेषां दानम् मदस्तेन वासिता सुरभीकृता सटा यस्य सोऽनेकपदानवासितसटऽद्विरदमदजलसुरभि कृतसट (with his manes scented by the ichor of elephants), सिंह = राजेन्द्र (the lion), पिञ्जरे=पश्वादिबन्धनागारे (into a cage), अपित = स्थापित, बद्ध इति (put), केन=पराक्रमशालिना पुरुषेण (by whom), दोर्भ्याम्= बाहुभ्याम् (with arms), न एक नैक नक्रा मकराश्च यस्मिन् नैकनक्रमकर = बहुलनक्रमकरजलज तु (with numerous murderous Sharks and alligators) च=पुन (and) भीम = भयकर (dreadful), अर्णव =समुद्र (ocean), प्रतीर्ण =पारङ्गत (crossed) ॥ 6 ॥

हिन्दी—किसने ऊची उठती हुई लपटों में जटिल और कपिल, आग को अपने अचल में बाँधा है। किस महापुरुष ने सतत गतिशील हवा को रस्सियों में बाधकर निश्चलकर दिया है, किस वीर पुरुष ने अनेकों गजों के मदजल से सुगन्धित सटाओं वाले सिंहों को पिंजडे में बन्द कर दिया है ? किसने नक्रों और मगरों से भरा भयकर समुद्र को बाहुओं से तैर कर पार कर लिया है ? । ६ ॥

English—By whom is tied in the skirt of his garment the fire red with the mass of its mighty flames ? By whom is instantly brought about with chains the motionlessness of the ever moving wind By whom put into a cage the lion with his manes scented by the ichor of elephants ? By whom is crossed by means of his arms the dreadful sea, allounding in Crocodiles and and alligators 6

टिप्पणी—इस श्लोक में रूपक तथा अतिशयोक्ति अलङ्कार है। छन्द का नाम शार्दूल विक्रीडित है।

विमला

चाण्डाल —नीतौ राजमतौ निपुणा कुशला बुद्धिर्मतिर्यस्य स नातिनिपुणबुद्धिस्तेन नीतिनिपुणबुद्धिना=राजनीतिकुशलमतिना (with wit skilled in state craft), आर्येण=पूज्येन (by noble sir)

चाणक्य —एवम्=पूर्वोक्तवाक्यम् (So), मा=नैव, वक्तव्यम् (no not), किन्तु, नन्दानां कुलम् नन्दकुलम् तद्विद्वेष्टि इति नन्दकुलविद्वेषि तेन न दकुलविद्वेषिणा= नन्दवंशविनाशकेन (the hater of the race of Nandas), दैवेन=भाग्येन (by fate), ब्रूहि=कथय (say)

राक्षसः—(स्वगतम् ।) अयं दुरात्मा अथवा महात्मा कौटिल्यः ।

आकरः सर्वशास्त्राणां रत्नानामिव सागरः ।
गुणैर्न परितुष्यामो यस्य मत्सरिणो वयम् ॥ ७ ॥

चाणक्यः—(विलोक्य, सहर्षं स्वगतम् ।) अये, अयमसावमात्यराक्षसः । येन महात्मना—

राक्षस—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself)], अयम् = एषः (This), दुरात्मा = दुष्टात्मा (vile-hearted), अथवा = वा (or), महात्मा = महान् आत्मा महात्मा (noble-hearted), कौटिल्यः = चाणक्यः (Kautilya)

अन्वयः—रत्नानाम्, सागर, इव, सर्वशास्त्राणाम्, आकर, यस्य, गुणै, मत्सरिणः, वयम्, न, परितुष्याम ॥ ७ ॥

व्याख्या—रत्नानाम् = पद्मरागादीनाम् मणीनाम् (Of gems), सागरः = अर्णव (the sea), इव = यथा (like), सर्वशास्त्राणाम् = निखिलशास्त्रज्ञानानाम् (the repository of all knowledges), आकर = रत्नाकरः (the mine), यस्य = चाणक्यस्य (whose), गुणैः = चातुर्यादिभि (virtues), मत्सरिणः = अन्यशुभद्वेषिन. (jealous), वयम् (we), न परितुष्यामः = न प्रीतिमाप्नुमः (are not sufficiently pleased). ॥ ७ ॥

हिन्दी—चाण्डाल—नीतिनिपुण बुद्धि वाले आर्य के द्वारा ।
चाणक्य—नहीं, ऐसा नहीं । नन्दवंश के विद्वेषी भाग्य के द्वारा-ऐसा कहो ।
राक्षस—(अपने आप) यह चाणक्य दुर्जन है अथवा महात्मा ?

सभी शास्त्रों के समुद्र की तरह रत्नाकर यह चाणक्य है—जिसकी प्रशंसा करते हमारे जैसे ईर्ष्यालु जन भी नहीं अघाते ॥ ६ ॥

English—*Chandala*—Surely by noble sir with intellect skilled in state-craft ?

Chaankya—No not so, say by fate. The inveterate foe of the race of Nandas.

Rakshasa—(To himself) This is the *mean-minded—or rather* hearted—Kautilya.

The repository of all knowledges as the sea is of gems with whose virtues we are not sufficiently pleased although jealous. 7.

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा तथा रूपक अलङ्कार है । छन्द का नाम अनुष्टुप् है । लक्षण पहले लिखा जा चुका है ।

विमला

चाणक्य—[विलोक्य = दृष्ट्वा (looking at), सहर्षम् = सप्रसन्नम् (with joy), स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself)], अये = आश्चर्यम् (Ah), अयम् = एषः

गुरुभि कल्पनाक्लेशैर्दीर्घजागरहेतुभि ।
चिरमायासिता सेना वृषलस्य मतिश्च मे ॥ ८ ॥

(जवनिका करेणापनीयोपसृत्य च ।) भो अमात्यराक्षस, विष्णुगुप्तोऽहमभिवादये ।

राक्षस —(*स्वगतम्* ।) *अमात्य इति लज्जाकरमिदानीं विशेषणम्* । (प्रकाशम् ।) विष्णुगुप्त न मा चाण्डालस्पर्शदूषित स्प्रष्टुमर्हसि ।

चाणक्य —भो अमात्यराक्षस, नेमौ चाण्डालौ । अय खलु दृष्ट एव भवता सिद्धार्थको नाम राजपुरुष । योऽप्यसौ द्वितीय सोऽपि समिद्धार्थको नाम

(here is) असौ (that), अमात्यराक्षस = नन्दसचिव (the minister Rakshasa), यन (by whom) महात्मना = महापुरुषेण (magnanimous one)—

अन्वय.—दीर्घजागरहेतुभि , गुरुभि , कल्पनाक्लेशै , वृषलस्य, सेना, मे, मति, च, चिरम्, आयासिता ॥ ८ ॥

व्याख्या—दीर्घश्चासौ जागरो दीर्घजागरस्तस्य हेतवस्तैर्दीर्घजागरहेतुभि=यद्वा दीर्घा जागरा हेतवो येषा ते दीर्घजागरहेतवस्तैर्दीर्घजागरहेतुभि =चिरनिद्रोच्छेदकारणै (were the cause of protracted wakefulness) गुरुभि =महद्भि (the heavy), कल्पनाक्लेशै = कर्त्तव्याकर्त्तव्योपायरचनोत्पन्नदु खै (troubles of preparations and *devising of plans*), *वृषलस्य* = *मौर्यस्य* (*Maurya s*), *सेना*=चमू (the army), मे = मम (my), मति = बुद्धि (intellect), च=पुन (and), चिरम् = बहुकालपर्यन्तम् (for a long time), आयासिता = क्लेशिता अस्तीति (were Seriously taxed) ॥ ८ ॥

[जवनिका तिरस्करिणीम् (Veil), करेण=हस्तेन (with hand), अपनीय = अपसार्य (removing), च=पुन (and), उपसृत्य = समीपम् गत्वा (approaching)], भो अमात्यराक्षस=भो नन्दसचिव (O minister Rakshasa), अहम् (I), विष्णुगुप्त = चाणक्य (Vishnugupta), अभिवादये = अभिवादनम् करोमि (salute)

राक्षस —[स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself)], अमात्य इति = सचिव इति ('Minister' is), इदानीम्=अधुना (now), विशेषणम् (the epithet), लज्जाकरम् = सकोचास्पदम् (causes shame), [प्रकाशम्=स्पष्ट यथा स्यात्तथा (Aloud)] विष्णुगुप्त = चाणक्य (O Vishnugupta), न माम् (not to me), चाण्डालस्पर्शदूषितम् (defiled by the touch of Chandal) स्प्रष्टुम्=स्पर्शम् कर्तुम्, अर्हसि=शक्नोषि (it behaves)

चाणक्य —भो अमात्यराक्षस=भो नन्दसचिव (O minister Rakshasa), इमौ = एतौ द्वौ (these two) न = नहि (not), चाण्डालौ (Chandalas), अयम् खलु (this one), भवता=त्वया (by you), दृष्ट एव (has been seen), सिद्धार्थको नाम (Siddharthaka by name), राजपुरुष=राजकीयसेवक (a royal official), योऽपि (who is), असौ = एष (hers), द्वितीय (other), सोऽपि=

राजपुरुष एव। शकटदासोऽपि तपस्वी तं तादृशं लेखमजानन्नेव कपटलेखं मया लेखित इति।

राक्षसः—(स्वगतम्।) दिष्ट्या शकटदासं प्रत्यपनीतो विकल्पः।

असावपि (this too), समिद्धार्थको नाम (Samiddharthaka by name), राजपुरुष एव=राजकीयसेवक एव (servant of king), शकटदासोऽपि (Shakatdass too), तपस्वी (poor), तादृशम् (as such), लेखम्=पत्रम् (letter), अजानन्नेव=अज्ञानेन (without his knowing), तम् कपटलेखम् (that strategic), मया=चाणक्येन (by me), लेखित (was made to write).

हिन्दी—चाणक्य—(देखकर प्रसन्नता की मुद्रा में मन ही मन) अरे, यह वही अमात्य राक्षस है—

जिस महात्मा के द्वारा—निरन्तर जागरण के कारण, महान् योजनाओं के कष्टों से चन्द्रगुप्त की सेना और मेरी बुद्धि एक साथ बहुत दिनों तक चकराती रही है। ८॥

(पर्दा हटाकर पास आकर) ओ अमात्य राक्षस मैं विष्णुगुप्त प्रणाम करता हूँ।

राक्षस—(अपने आप) 'अमात्य' यह विशेषण इस समय सुनकर लज्जा आती है। (प्रकट रूप से) विष्णुगुप्त, मुझे छूना मत। इस समय मैं चाण्डालों के स्पर्श से दूषित हूँ।

चाणक्य—ओ अमात्य राक्षस ! ये दोनों चाण्डाल नहीं हैं। इनमें एक तो आप से पूर्वपरिचित सिद्धार्थक नाम का राजकर्मचारी है। और दूसरा भी समिद्धार्थक नाम का राजकर्मचारी ही है। इन बेचारे शकटदास से उसकी अज्ञानावस्था में ही इस प्रकार कपटलेख लिखवाया था।

English—*Chanakya*—(Seeing to himself with joy). Ah, here is that minister Rakshasa by whose the magnanimous self, my intellect as well as the army of Vrishala, has been trouble for a long time with the heavy task of devising plans,—the cause of portracted wakefulness. (8).

(Removing the veil and approaching) O, minister Rakshasa, I, Vishnugupta salute you.

Rakshasa—(To himself) The epithet 'Minister' is a humiliating now. (Aloud) O Vishnugupta do not touch me as I am defiled by the touch of Chandalas.

Chanakya—O, Minister Rakshasa, these two are not Chanladas. This one is a royal official, Siddharthaka by name, whom you have been seen. This other here too is a king's servant, Samiddharthaka by name. Poor Shakatadas also, was made to write that strategic litter by me, without his knowing about its nature.

टिप्पणी—इस श्लोक में तुल्ययोगिता अलङ्कार तथा अनुष्टुप् छन्द है।

विमला

राक्षसः—[स्वगतम्=आत्मगतम्=(To himself)], दिष्ट्या=भाग्येन (luckily),

चाणक्य —किं बहुना । एष सक्षेपत कथयामि ।

भृत्या भद्रभटादय. स च तथा लेख. स सिद्धार्थक-
स्तच्चालकरणत्रयं स भवतो मित्रं भदन्त. किल ।
जीर्णोद्यानगत. स चापि पुरुष. क्लेश. स च श्रेष्ठिन
सर्वं मे—
(इ यर्धोक्ते लज्जां नाटयति ।)
—वृषलस्य वीर भवता संयोगमिच्छोर्नय. ॥ ९ ॥

तदय वृषलस्त्वा प्रष्टुमिच्छति ।

शकटदासम् (about Shakatadasa), विकल्प =सन्देह (suspicions), प्रत्य पनीत =अपहृत इति (are removed)

चाणक्य —किम्बहुना=किमितोऽधिकम् (Away with details) एष (here), सक्षेपत (briefly), कथयामि (I say)

अन्वय.—भद्रभटादय, भृत्या, तथा, च, स, लेख, स, सिद्धार्थक, तत् च, अलङ्करणत्रयम्, स, भवत, किल मित्रम्, भदन्त, जीर्णोद्यानगत, स च, पुरुष, अपि, स, च, श्रेष्ठिन, क्लेश, सर्वम्, मे (इत्यर्द्धोक्ते लज्जा नाटयति) हे वीर, भवता, वृषलस्य, सयोगम् इच्छो, नय ॥ ९ ॥

व्याख्या—भद्रभट आदियषा ते भद्रभटादय =भद्रभटप्रभृतय (Bhadrabhatas and others), भृत्या =सेवका (servants), तथा च, स =अतिप्रभावकर (like such), लेख =पत्रम् (letter), स सिद्धार्थक =असौ सिद्धार्थक (that Siddharthaka), तच्च अलङ्करणत्रयम्=पर्वतेश्वरधृतपूर्वम् वणिजो भवता क्रीतम् (those three sets of ornaments), स = असौ (that), भवत =तव (your), किल (indeed), मित्रम्=सुहृदम् (friend), भन्दत =जीवसिद्धिर्नामधेयो बौद्ध-सन्यासी (the mendicant) जीर्णोद्यानगत =पुरातनोपवनप्राप्त (that was found in the old garden), स च पुरुष=जन अपि (that man), स च श्रेष्ठिन = वणिजश्चन्दनदासस्य (of the merchant), क्लेश =दु खम् (the trouble), सर्वम् =सकलम् (all) मे =मम (my), [इत्यर्द्धोक्त (when half uttered), लज्जाम् (shame), नाटयति (acting)], हे वीर=पराक्रमशालिन् (O valiant one), भवता =त्वया (with you), वृषलस्य =मौर्यस्य (Chandragupta's) सयोगम् =सन्धिम् (connection), इच्छो =अभिलाषुकस्य (wishing), नय = नीतिरस्तीति शेष (the strategy) ॥ ९ ॥

तदयम्=एष (here is), वृषल =चन्द्रगुप्त (Vrishala), त्वाम्=भवन्तम् (to you), द्रष्टुमिच्छति=अवलोकितुम् वाञ्छति (wish to see)

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) सौभाग्य से शकटदास के प्रति प्राप्त सदेह दूर हो गया । चाणक्य—अधिक कहने से क्या ! यह सक्षेप में कहता हू —

राक्षसः—(स्वगतम् ।) का गतिः एष पश्यामि ।

(ततः प्रविशति राजा विभवतश्च परिवारः ।)

राजा—(स्वगतम् ।) विनैव युद्धादार्येण जितं दुर्जयं परबलमिति लज्जित एवास्मि । मम हि—

फलयोगमवाप्य सायकानां विधियोगेन विपक्षतां गतानाम् ।
न शुचेव भवत्यधोमुखानां निजतूणीशयनव्रतं प्रतुष्टये ॥ १० ॥

भद्र भट प्रभृति को आपका भृत्य बनाना, वह उस प्रकार का कपट लेख, वह आपका विश्वासी सिद्धार्थक, वे तीनों आभूषण, वह आपका स्नेहभाजन बना क्षपणक जीवसिद्धि, जीर्णोद्यान में मिलनेवाला वह दुखी जीव और सबसे बड़ा चन्दनदास का वह क्लेश—हे वीर, यह सब कुछ (इतना आधा कहने पर लज्जा का अभिनय करते हुए)—आपके साथ चन्द्रगुप्त का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए मेरी नीति थी ॥ ९ ॥

अतः यह चन्द्रगुप्त आपको देखना चाहता है ।

English—*Rakshasa*—(To himself) Luckily my suspicions about Shakatadas are removed.

Chanakya—Away with details; here I say you briefly :—

These people Bhadrabhata and others, the letter is written in that style, that man Siddharthaka, these three sets of ornaments, that your friend mendicant, the man too that was found in the old garden and the whole trouble to the merchant—all in my—(acting shame when half uttered) O, valiant one, was due to the strategy of me, desired Vrishala's connection with you. Therefore, here is Vrishala, wishing to see you

टिप्पणी—इस श्लोक में काव्यलिङ्ग अलङ्कार तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है ।

विमला

राक्षसः—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself)], का गतिः = (What help), एषः (here), पश्यामि (I see),

[ततः = तत्पश्चात् (then), प्रविशति = प्रवेशम् करोति (enters), राजा = नृपः (the king), विभवतेनेति विभवतः = ऐश्वर्यानुसारतः (according to rank), परिवार = अनुचरः (with attendants)]

राजा—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself)], आर्येण = पूज्येन (by noble sir), युद्धाद्विना = संग्रामम् अन्तरेण (without a fight indeed), दुर्जयम् = दुःखेन जेतुम् योग्यम् (the unconquerable), परबलम् = शत्रुसैन्यम् (army of the enemy), जितम् = वशीकृतम् (has conquered), लज्जितः = त्रपायुक्तः (ashamed), एव (realy), अस्मि = भवामि (I am), मम हि = For :—

अन्वयः—फलयोगम्, अवाप्य, विधियोगेन, विपक्षताम्, गतानाम्, शुचा, इव, अधोमुखानाम्, सायकानाम्, निजतूणीशयनव्रतं प्रतुष्टये, न, भवति ॥ १० ॥

अथवा—

विगुणीकृतकार्मुकोऽपि जेतुं भुवि जेतव्यमसौ समर्थ एव।
स्वपतोऽपि ममेव यस्य तन्त्रे गुरवो जाग्रति कार्यजागरूकाः ॥ ११ ॥

व्याख्या—फलयोगम् = लौहमयाग्रकीलसम्बन्धम्, अन्यत्र कार्यसिद्धिप्राप्तिम् (the arrows head, and success also, both are intended), अवाप्य=प्राप्य (obtaining), विधियोगेन=सुदैवप्रसादेन वा अप्रेरणया (the *double meanings* are explained here like-(1) by the agency of fate or the ordainment of providence), विपक्षतान्=असलयताम् (1) the party of the enemy (11) birds feathers (Feathers were attached to the hinder parts of arrows in in order to regulate their motion), गतानाम्=प्राप्तानाम् (have to observe), न शुचा इव=दु खेनेव (as if in grief), अधोमुखानाम्= आनताग्रभागानाम् (of lying down), सायकानाम् = बाणानाम् (of arrows), निजतूणीशयनव्रतम् = निजतूणीशयनमेव व्रतम् सर्वदा तत्रैवावस्थाननियमरूपम् प्रतुष्ट्यै = सन्तोषाय न भवति (in their own quiver after having been andowed with tips does not indeed tend much towards my satisfaction) ॥ १० ॥

अथवा—

अन्वय.—स्वपत, अपि, मम, इव, यस्य, तन्त्रे, कार्यजागरूका, गुरव, जाग्रति विगुणीकृतकार्मुक, अपि, असौ, भुवि, जेतव्यम्, समर्थ, एव, ॥ ११ ॥

व्याख्या—स्वपतोऽपि = शयानस्यापि (Though asleep), मम इव (as in mine), यस्य तन्त्रे=राष्ट्रचिन्तने (in whose interest), कार्यजागरूका = कार्ये जागरूका = कर्तव्यकर्मसावधाना (vigilantly attend to all the affairs), गुरुव = मन्त्रिप्रधाना (his preceptors), जाग्रति = सततम् प्रयत्नम् कुर्वन्ति (are awake), विगुणीकृतकार्मुक = विगुणीकृत कार्मुकम् येन यस्य वा स विगुणीकृतकार्मुक मौर्वीहीनशरासनोऽपि सन् (even with bow unstrung), असौ (he), भुवि = पृथिव्याम् (on the earth), जेतव्यम्=जेतु योग्यम् शत्रुम् इत्यर्थ (whatever is fit to be conquered), जेतुम् = पराभवितुम् (to conquer), समर्थ एव = शक्त एव (is quite able) ॥ ११ ॥

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) दूसरा क्या उपाय है? देखता हूं।

(इसके बाद राजा और उसके अनुरूप सेवकवर्ग का प्रवेश)

राजा—(अपने आप) आर्य चाणक्य ने बिना युद्ध के ही अजेय शत्रु की सेना जीत ली है, अत में लज्जित हूं। क्योंकि —

दैवयोग से, पक्ष में—चाणक्यनीति के व्यापार से, शत्रु विजयरूपी कार्यसिद्धि की प्राप्ति को, पक्ष में—शल्य योग को प्राप्त करके—विरोधीभाव को प्राप्त हुए, परिहार—पक्षियों की पखता को प्राप्त किये मानो शोक से नीचे मुख किये बाणों का अपने तूणीर में शयनरूपी व्रत सन्तोष के लिए नहीं होता है ॥ १० ॥

अथवा—मेरी तरह जिस राजा के राज्य में राज्य सचालन में सतत सावधान गुरुजन

(चाणक्यमुपसृत्य ।) आर्य, चन्द्रगुप्तः प्रणमति ।

चाणक्यः—संपन्नास्ते सर्वाशिषः । तदभिवादयस्व तत्रभवन्तममात्यमुख्यम् ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) योजितोऽनेन संबन्धः ।

चाणक्यः—(राजानमुपसृत्य ।) अयममात्यराक्षसः प्राप्तः । प्रणमैनम् ।

निरन्तर जागरूक रहते हैं। वह राजा प्रत्यञ्चा रहित धनुष वाला होता हुआ भी संसार में जीतने योग्य शत्रु को जीतने में समर्थ ही है । ११ ॥

English—*Rakshasa*—(To himself) What help Here I see him.

(Enter the king followed by his attendants according to their rank).

The king—(Aside) I am indeed ashamed that noble sir has conquered, without a fight, the unconquerable army For — Of the arrows rendered as if wingless thorugh the operation of expedients, the vow of lying down in their own quiver, with their heads hung down as if in grief, does not indeed tend much towards my satisfact on 10

Or rather :—Though with his bow unstrung, he is quite able to conquer what has to be conquered in this world, in whose interest as in mine though asleep, his preceptors are awake and vigilantly attend to all the affairs of his kingdome. 11.

टिप्पणी—इस श्लोक में उत्प्रेक्षा अलङ्कार तथा मालभारिणी छन्द है।

इस श्लोक में काव्यलिङ्ग तथा उपमा अलङ्कार तथा मालभारिणी छन्द है। छन्द का लक्षण है :—'विषमे ससजा गुरु समे चेत्सभरा येन तु मालभारिणीयम् ।'

विमला

[चाणक्यम्=कौटिल्यम् (To Chanakya), उपसृत्य=समीपमेत्य (approaching)], आर्य=मान्य (Noble Sir), चन्द्रगुप्तः=वृषलः (Chandragupta), प्रणमति= अभिवादयति (bows to you)].

चाणक्य—ते=तव (Your), सर्वाशिषः=सकलाशीर्वादाः (all desires), सम्पन्नाः=पूर्णाः जाताः (have been accomplished), तत्=तस्मात् (so), तत्रभवन्तम् (His Honour), अमात्यमुख्यम्=सचिवप्रमुखम् (prime minister), अभिवादयस्व (salute).

राक्षस—[स्वगतम्=आत्मगतम् (to himself)] अनेन=चाणक्येन (By this man), सम्बन्धः (connection), योजितः=सम्पादितः (is established)

चाणक्य—[राजानम्=चन्द्रगुप्तम् (To the king), उपसृत्य=समीपम् गत्वा (approaching)], अयम्=एषः (here), अमात्यराक्षसः=राक्षसमन्त्री (minister Rakshasa), प्राप्तः (has seen), एनम् (him), प्रणम=अभिवादय (bow down).

राजा—(राक्षसमुपसृत्य ।) आर्य, चन्द्रगुप्तः प्रणमति ।

राक्षसः—(विलोक्य, स्वगतम् ।) अये, चन्द्रगुप्तः । य एष—

> बाल एव हि लोकेऽस्मिन् संभावितमहोदयः ।
> क्रमेणारूढवान् राज्यं यूथैश्वर्यमिव द्विपः ॥ १२ ॥

(प्रकाशम् ।) राजन्, विजयस्व ।

राजा—[राक्षसम् (To Rakshasa), उपसृत्य (approaching)], आर्य=मान्य (.Noble Sir), चन्द्रगुप्तः=मौर्यः (Chandragupta), प्रणमति=अभिवादयति (bows to you).

राक्षस.—[विलोक्य=दृष्ट्वा (Observing, स्वगतम्=आत्मगतम् (to himself)], अये=आश्चर्यम् (Ah), चन्द्रगुप्त.=वृषलः (chandragupta) य एष = (he it is who)'—

अन्वयः—बाल, एव, हि, अस्मिन्, लोके, सम्भावितमहोदयः, द्विप', इव, यूथैश्वर्यम्, क्रमेण, राज्यम्, आरूढवान् ॥ १२ ॥

व्याख्या—बाल एव=शिशुरेव (Though but a child), हि=इतिनिश्चयः (indeed), अस्मिन्=इह (this), लोके=संसारे (in the world), सम्भावितमहोदयः=अनुमितविशिष्टाभ्युदयः (with a mighty advance guessed), द्विप इव=हस्तीव (like a tusker), यूथैश्वर्यम्=यूथाधिपत्यम् (the leadership of herd), क्रमेण=कालक्रमेण (gradually), राज्यम् (sovereignty), आरूढवान् = आप्तवान् (attained) ॥ १२ ॥

[प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud)], राजन् (O king), विजयस्व (be prsperous).

हिन्दी—(चाणक्य के समीप जाकर) पूज्यवर, चन्द्रगुप्त प्रणाम करता है ।

चाणक्य—तुम्हें सभी आशीर्वाद सफल हो चुके हैं । अत. अत्यन्त आदरणीय मन्त्रिप्रवर इन श्रीमान् को प्रणाम करो ।

राक्षस—(अपने आप) सम्बन्ध जोड़ दिया इसने ?

चाणक्य– (राजा के समीप जाकर) यह अमात्य राक्षस उपस्थित है । इन्हें प्रणाम करो ।

राजा—(राक्षस के पास जाकर) आर्य चन्द्रगुप्त प्रणाम करता है ।

राक्षस—(देखकर अपने आप) अरे चन्द्रगुप्त है । जो यह—

अपने शैशवकाल से ही इस ससार में अपने महान् अभ्युदय की सबको आशा बँधवाता रहा । इसने ठीक उसी प्रकार साम्राज्य को क्रमशः अधिकृत कर लिया—जैसे बचपन से ही कोई भविष्णु गजशावक अपने यूथ का आधिपत्य पा ले ॥ १२ ॥

(सुनाकर) राजन्, विजयी बनो ।

English—(Approaching Chanakya) Noble sir, Chandragupta bows to you

Chanakya—Your all desires have been matured. Therefore salute this *honourable your prime minister.*

Rakshasa—(To himself), He has established the connection.

राजा—आर्य,

जगतः किं न विजितं मयेति प्रविचिन्त्यताम्।
गुरौ षाड्गुण्यचिन्तायामार्ये चार्ये च जाग्रति ॥ १३ ॥

राक्षसः—(स्वगतम् ।) स्पृशति मां भृत्यभावेन कौटिल्यशिष्यः । अथवा विनय एवैष चन्द्रगुप्तस्य । मत्सरस्तु मे विपरीतं कल्पयति । सर्वथा स्थाने यशस्वी चाणक्यः । कुतः—

Chanakya—(Approaching to the king) Here we have the minister Rakshasa. Salute him.

The king—(Approaching Rakshasa) Noble sir, Chandragupta bows to you.

Rakshasa—(Observing, to himself) Ah ! Chandragupta, He,—who is with a mighty advance guessed in the world, fore known even when a child has gradually obtained sovereignty like a tusker attaining mastary over a herd of elephants. 16. (Aloud) O, king be prosperous.

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा अलङ्कार तथा अनुष्टुप् छन्द है।

विमला

राजा—आर्य,

अन्वय—आर्ये, गुरौ, च, आर्ये, षाड्गुण्यचिन्तायाम्, जाग्रति, मया, जगतः, किम्, न, विजितम्, इति, प्रविचिन्त्यताम् ॥ १३ ॥

व्याख्या—राजा—आर्य=मान्य भवन् (Noble sir)

आर्ये=पूज्ये (His Honour), गुरौ=शिक्षके (preceptor), च=पुनः (and), आर्ये=पूज्ये (noble sir), षाड्गुण्यचिन्तायाम्=षड् गुणाः एव षाड्गुण्यम् तस्य चिन्ता भावना तस्याम् षाड्गुण्यचिन्तायाम्=सन्धिविग्रहादिष्षाड्गुण्यविधानाऽविधानभावनायाम् (in the management of the six expedients), जाग्रति=जाग्रते सति (wide-awake), मया=चन्द्रगुप्तेन (by me), जगतः=संसारस्य (of the world), किम् (what), न विजितम्=अपितु सर्वमेव विजितम् (have I not conquered), इति प्रविचिन्त्यताम्=बुध्यताम् (just think). ॥ १३ ॥

राक्षस —[स्वगतम्=आत्मगतम्=(To himself)], कौटिल्यशिष्यः=चाणक्यशिष्य, मौर्य (the disciple of Kautilya), माम्=राक्षसम् (me), भृत्यभावेन=सेवकत्वेन (as a servant), स्पृशति=अवगच्छति (treats), अथवा=वा (or rather), चन्द्रगुप्तस्य=मौर्यस्य (Chandragupta's), एष विनय एव=शिष्टतैव (this is indeed, the humility of Chandragupta), तु=किन्तु (but), मत्सरः=अन्यशुभद्वेषः (jealousy), मे=मम राक्षसस्य (my), विपरीतम्=अन्यथा (otherwise), कल्पयति=अवगमयति (make me think), सर्वथा=

द्रव्यं जिगीषुमधिगम्य जडात्मनोऽपि
नेतुर्यशस्विनि पदे नियतं प्रतिष्ठा।
अद्रव्यमेत्य भुवि शुद्धनयोऽपि मन्त्री
शीर्णाश्रयः पतति कूलजवृक्षवृत्त्या ॥ १४ ॥

सर्वभावेन (by all means), स्थाने = युक्त एव (proper), चाणक्यः = कौटिल्यः (Chanakya), यशस्वी = कीर्तिमान् (famous), कुतः = For :—

हिन्दी—राजा—आर्य, जब आप दोनों ही गुरुजनों का, नीति के पदार्थों में, जागरूकता के साथ चिन्तन परामर्श प्रतिक्षण मुझे उपलब्ध है, तो फिर इस संसार में मेरे लिए रह ही क्या गया है ? ॥ १३ ॥

राक्षस—(अपने आप) कौटिल्य का शिष्य मेरे साथ सेवकभाव से व्यवहार कर रहा है, अथवा—यह चन्द्रगुप्त की स्वाभाविक नम्रता ही हो। किन्तु, मेरी ईर्ष्या मुझे विपरीतभाव का बोध करा रही है। कुछ हो, चाणक्य, सचमुच इस आदर यश का अधिकारी है। क्योंकि :—

English—*The king*—Noble sir.

Just think—What of this world is not attained by me ? When noble sir and your honour as my preceptor, are watching over the management of the six expedients. 13.

Rakshasa—(To himself) Ah the disciple of Kautilya treats me as a servant. Or it is really Chandragupta's humility, but my jealousy makes me think differently, Chanakya is by all means rightly has become victorious. *For* :—

टिप्पणी—इस श्लोक में तुल्ययोगिता और समुच्चय अलङ्कार है तथा छन्द का नाम अनुष्टुप् है।

विमला

अन्वयः—द्रव्यम्, जिगीषुम्, अधिगम्य, जडात्मनः, अपि, नेतु, यशस्विनि, पदे, प्रतिष्ठा, नियतम्, अद्रव्यम्, एत्य, भुवि, शुद्धनयः, अपि, मन्त्री, शीर्णाश्रयः, कूलजवृक्षवृत्त्या, पतति ॥ १४ ॥

व्याख्या—द्रव्यम् = योग्यम् (Proper person), जिगीषुम् = जयोद्यमवन्तम् (ambitious), अधिगम्य = प्राप्य (finds), जडात्मनोऽपि = मन्दप्रियोऽपि (even dull minded), नेतुः = नायकस्य (leader's), यशस्विनि = कीर्तिप्रापके (renown), पदे = स्थाने (in a post), प्रतिष्ठा = कीर्तिप्राप्तिः (position), नियतम् = निश्चितैव (firmly), अद्रव्यम् = अनुद्योगिनम् (an unworthy master), एत्य = प्राप्य (finds), भुवि = पृथिव्याम् (on the earth), शुद्धनयः = शुद्धो नयो नीतिर्यस्य = विविक्तनयः (unimpeachable policy), अपि (also), मन्त्री = सचिवः (the minister), शीर्णाश्रयः = शीर्णः उच्छिन्नः आश्रयोऽवलम्बनम् यस्यासौ = उच्छिन्नावलम्बनः सन् (resort being destroyed), कूलजवृक्षवृत्त्या = तटस्थतरुनियमेन (in the manner of a tree grown on the bank of a river), पतति = कार्यसम्पादको न भवतीति भावः (falls). ॥ १४ ॥

चाणक्यः—अमात्य राक्षस, इष्यते चन्दनदासस्य जीवितम्।

राक्षसः—भो विष्णुगुप्त, कुतः संदेहः।

चाणक्यः—अमात्य राक्षस, अगृहीतशस्त्रेण भवतानुगृह्यते वृषल इत्यतः सन्देहः। तद्यदि सत्यमेव चन्दनदासस्य जीवितमिष्यते ततो गृह्यतामिदं शस्त्रम्।

राक्षसः—भो विष्णुगुप्त, मा मैवम्। अयोग्या वयमस्य विशेषतस्त्वया गृहीतस्य ग्रहणे।

चाणक्यः—राक्षस, योग्योऽहं त्वं योग्य इति किमनेन। पश्य—

चाणक्यः—अमात्य राक्षस (Minister Rakshasa), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), जीवितम् = जीवनम् (life), इष्यते = वाञ्छ्यते (is desired by you) ?

राक्षसः—भो विष्णुगुप्त = भो कौटिल्य (O Vishnugupta), कुतः संदेहः (whence is the doubt ?)

चाणक्यः—अमात्य राक्षस (Minister Rakshasa), अगृहीतशस्त्रेण = अनादृताऽस्त्रेण (the weapon untouched), भवता = त्वया (by you), अनुगृह्यते = अनुकम्प्यते (is being favoured), वृषल इति = मौर्य इति (Vrishala), अतः = अस्माद्धेतोः (for this), सन्देहः = अनिर्णयः (the doubt), तत् = तस्मात् (so), यदि = स्यात् (if), सत्यमेव (really), चन्दनदासस्य जीवितम् (life of Chandandasa), इष्यते = अभिलष्यते (is desired), ततः (then), गृह्यताम् = ग्रहणं क्रियताम् (take up), इदम् = एतत् (this), शस्त्रम् (weapon).

राक्षसः—भो विष्णुगुप्त = भो कौटिल्य (O, Vishnugupta), मा मैवम् (do not say so), वयम् (we), अयोग्याः (unworthy), विशेषतः (especially), त्वया गृहीतस्य (as it was wielded by you), ग्रहणे (to accept).

चाणक्यः—राक्षस (O Rakshasa), अहम् (I) योग्यः (able), त्वम् (you), अयोग्यः (unfit), एतत् कथम् (how does it follow), पश्य (see).

हिन्दी—लेखा चाहे कितना भी मन्दबुद्धि क्यों न हो, यदि राजा में निजदेष्टा या महत्त्वाकांक्षा हो तो उसकी पदप्रतिष्ठा बनी रहती। किन्तु यदि शिष्य में अपनी योग्यता न हो, अभिरुचि न हो तो सुदुर्नीति वाला भी मन्त्री बड़े आधार बिना तट पर उगे वृक्ष की तरह, गिर पड़ता है ॥ १४ ॥

चाणक्य—अमात्य राक्षस ! क्या चन्दनदास का जीवन प्रिय है ?

राक्षस—ओ विष्णुगुप्त ! क्या इसमें भी सन्देह है ?

चाणक्य—अमात्य राक्षस, मन्त्रित्व के चिह्न शस्त्र को बिना ग्रहण किये ही आपने चन्द्रगुप्त को अनुगृहीत किया है। अतः सन्देह है। तो यदि सचमुच चन्दनदास को जीवित देखना चाहते हैं—तो अविलम्ब शस्त्र ग्रहण कीजिए।

राक्षस—हे विष्णुगुप्त ! ऐसा नहीं। इसे मैं अपने को ग्रहण करने में अयोग्य मानता हूं। विशेषकर से तब जब तुमने पहले अपने इसे ग्रहण कर लिया है।

चाणक्य—अमात्य राक्षस, मैं योग्य हूं, आप अयोग्य हैं—यह कैसे ! देखिये :—

English—Emplacement in a renowned position is assured, even to a dull-minded when he finds a proper person, who is ambitious,

अश्वैः सार्धमजस्रदत्तकविकैः क्षामैरशून्यासनैः
स्नानाहारविहार-पानशयनस्वेच्छासुखैर्वर्जितान् ।
माहात्म्यात्तव पौरुषस्य मतिमन् दृप्तारिदर्पच्छिदः
पश्यैतान् परिकल्पनाव्यतिकरप्रोच्छूनवंशान् गजान् ॥१५॥

---

but coming by the unworthy, even a minister of unimpeachable policy falls to the ground, in the manner of a tree grown on the bank of a river, his resort being destroyed 14.

Chanakya—O, Minister, Rakshasa, is the life of Chandandasa desired by you.

Rakshasa—O, Vishnugupta, whence is the doubt ?

Chanakya—Minister Rakshasa, Vrishala is being favoured by you with the weapons untouched, hence the doubt. So if you really want to save the life of Chandandasa, accept this weapon.

Rakshasa—No, Vishnugupta not so. I am unworthy to recieve the weapon, especially as it was wielded by you.

Chanakya—Minister Rakshasa, how does it follow that I am worthy, you are unworthy, look here :—

टिप्पणी—इस श्लोक में निदर्शना अलङ्कार तथा वसन्ततिलका छन्द है।

विमला

अन्वयः—हे मतिमन्, दृप्तारिदर्पच्छिद', तव, पौरुषस्य, माहात्म्यात्, अशून्यासनैः, अजस्रदत्तकविकैः, क्षामैः, अश्वैः, सार्धम्, स्नानाहारविहारपानशयनस्वेच्छासुखैः, वर्जितान्, परिकल्पनाव्यतिकरप्रोच्छूनवंशान्, एतान्, गजान्, पश्य ॥ १५ ॥

व्याख्या—हे मतिमन् = बुद्धिमन् (O talented one), दृप्तारिदर्पच्छिदः = दृप्ताश्चतेऽरयः तेषां दर्पं छिनत्तीति दृप्तारिदर्पच्छिद् तस्य = अभिमानवद्रिपुगर्वविनाशकस्य (subdues the pride of conceited foes), तव = भवतः (your), पौरुषस्य = पराक्रमस्य (prowess), माहात्म्यात् = प्रभावात् (through the greatness), अशून्यासनैः = अनपनीतपर्याणैः (never unoccupied), अजस्रदत्तकविकैः = अनवरतयोजितवल्गैः (being continually bridled and saddled), क्षामैः = कृशैः (lean), अश्वैः = घोटकैः (with these horses), सार्धम् = सह (with), स्नानञ्चाहारश्च विहारश्च पानञ्च शयनञ्च तानि स्नानाहारविहारपानशयनानि तानि च तानि स्वेच्छासुखानि तैः स्नानाहारविहारपानशयनस्वेच्छासुखैः = निमज्जनभोजनभ्रमणतृषापानविश्रामात्मकयथेच्छाव्यापारैः (of the pleasures of bathing, feeding, sporting, drinking and sleeping at will), वर्जितान् = रहितान् (has been deprived), परिकल्पनायाः व्यतिकरः परिकल्पनाव्यतिकरस्तेन प्रोच्छूना वंशा येषाम् ते तथोक्तास्तान् परिकल्पनाव्यतिकरप्रोच्छूनवंशान् = युद्धसज्जाविशेषसंयोगस्फीतमहापृष्ठास्थिभागान् (with their spine swollen through the con-

अथवा किं बहुना। न खलु भवतः शस्त्रग्रहणमन्तरेण चन्दनदासस्य जीवितमस्ति।

राक्षसः—(स्वगतम्।)

नन्दस्नेहगुणाः स्पृशन्ति हृदयं भृत्योऽस्मि तद्विद्विषां
ये सिक्ताः स्वयमेव वृद्धिमगमंश्छिन्नास्त एव द्रुमाः।
शस्त्रं मित्रशरीररक्षणकृते व्यापारणीयं मया
कार्याणां गतयो विधेरपि न यन्त्याज्ञाकरत्वं चिरात्॥ १६॥

---

tact of their pads), एतान् = अमून् (these), हस्तिनः = गजाः (the elephants), पश्य = अवलोकय (look) ॥ १५ ॥

अथवा = वा (or rather), किम्बहुना = किमितोऽधिकम् (away with all this), भवतः = तव (your), शस्त्रग्रहणमन्तरेण = विना शस्त्रग्रहणेन (without *acceptance of the weapons*), चन्दनदासस्य (*Chandandasa's*), जीवितम् = जीवनम् (life), न = नहि (not), खलु = निश्चये (surely)

हिन्दी—हे मन्त्रिन्, अहङ्कारी शत्रुओं के अभिमान को नष्ट कर देनेवाले आपके ही पौरुष के प्रभाव से अनवरत पीठ पर सवार सैनिकों से सुशोभित, लगातार लगामों के चढ़े रहने के कारण दुर्बल घोड़ों के साथ,—जिनका स्नान, भोजन, विहार, पान, शयन और अन्य स्वच्छन्द सब अनिश्चित हो चुका है—गजशय्या के संयोग से सूजी (फूली) हुई पीठ वाले इन हाथियों को देखिए॥ १५॥

अथवा—और अधिक कहने से क्या लाभ! इतना बात निश्चित है कि आपके शस्त्रग्रहण के बिना चन्दनदास के जीवन की रक्षा नहीं होगी।

English—Look at these tuskers with their spine swollen through the contact of their pads, deprived of the pleasures of bathing, feeding, sporting, drinking and sleeping at will and rest along with these horses, lean with being continually bridled and saddled. All through the greatness of your prowess. O talented one, the allayer of the brag of a haughty enemy. 15.

Or, away with all this, Chandandasa cannot live unless you accept the weadon.

टिप्पणी—इस श्लोक में तुल्ययोगिता अलङ्कार तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

विमला

राक्षसः—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself)].

अन्वयः—नन्दस्नेहगुणाः, हृदयम्, स्पृशन्ति, तद्विद्विषाम्, भृत्यः, अस्मि, ये, द्रुमाः, स्वयम्, एव, सिक्ताः, वृद्धिम्, अगमन्, ते, छिन्नाः, एव, मित्रशरीररक्षणकृते, मया, शस्त्रम्, व्यापारणीयम्, कार्याणाम्, गतयः, चिरात्, विधेः, अपि, आज्ञाकरत्वम्, न, यन्ति॥ १६॥

(प्रकाशम् ।) विष्णुगुप्त, नमः सर्वकार्यप्रतिपत्तिहेतवे सुहृत्स्नेहाय । का गतिः । एष प्रह्वोऽस्मि ।

व्याख्या—नन्देषु स्नेहः नन्दस्नेहस्तस्य गुणाः नन्दस्नेहगुणाः =नन्दानुरागगुणाः (The qualities of the kindness of the Nandas) हृदयम्=चित्तम् (the heart), स्पृशन्ति=सम्बध्नन्ति (touch), तद्विद्विषाम्=तेषां विद्विषस्तद्विद्विषस्तेषाम् तद्विद्विषाम्=नन्दशत्रूणाम् (of their bitter foes), भृत्योऽस्मि=सेवकत्वम् प्राप्तोऽस्मि (I am a servant), ये द्रुमाः =तरवः (those trees), स्वयमेव= आत्मनैव (by myself), सिक्ताः =सलिलेन सिक्ताः (being watered), वृद्धिम् (growth), अगमन् (had attained), ते=द्रुमाः (they), छिन्नाः =विनष्टाः (are cut off), मित्रशरीररक्षणकृते=चन्दनदासरक्षणाय (for the sake of the preservation of the person of my friend), मया=राक्षसेन (by me), शस्त्रम्=आयुधम् (weapon), व्यापारणीयम्=ग्राह्यम् (has to be wielded), कार्याणाम्=कृत्यानाम् (courses of events), गतयः =प्रकाराः (deeds), चिरात्=बहुकालात् (after a long time), विधेः=दैवस्य (by fate), अपि (even), आज्ञाकरत्वम्=वशवदवरत्वम् (ordained) न यान्ति=न गच्छन्ति (do not come) ॥ १६ ॥

[प्रकाशम्=सुस्पष्टम्=(aloud)], विष्णुगुप्त=कौटिल्य (Vishnugupta), सर्वाणि च तानि कार्याणि तेषां प्रतिपत्तिः स्वीकारस्तस्याः हेतुः कारणम् तस्मै सर्वकार्यप्रतिपत्तिहेतवे=सकलकृत्यस्वीकारकारणाय (the cause of undertaking all works), सुहृत्स्नेहाय=मित्रानुरागाय (to the love of friend), नमः (I bow), का गतिः= कोऽन्यः उपायः (what help), एषः=अयम् (here), प्रह्वोऽस्मि=सन्नोऽस्मि (willing)

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) उधर नन्दों के स्नेह तथा अनुग्रह हृदय को छू रहे हैं और इधर मैं उसी के परमशत्रु की सेवा में संलग्न हो रहा हूँ । वही वृक्ष जिन्हें स्वयं सींच सींचकर बढ़ाया, आज कट चुके हैं । सम्प्रति मित्र की रक्षा के लिए मेरे द्वारा शस्त्रग्रहण करना है । कर्मों की गति चिरकाल से विधाता को भी आज्ञाकारिता को नहीं प्राप्त होती है ॥ १६ ॥

(प्रकट रूप में) विष्णुगुप्त, सर्वविध कार्यों की स्वीकृति के कारण मित्र स्नेह को प्रणाम है । यह शस्त्र स्वीकार है ।

English—*Rakshasa*—(To himself) The virtues of Nanda's kindness touch my heart and I am going to be the servant of his enemies Those trees which being watered by me had attained growth are cut off The weapon has to be wielded by me for the sake of the person of my fried The courses of events ordained by fate do not come with in the range of the vision of even the creator himself 16 (Aloud), Vishnugupta I bow to the love of friend, the causes of undertaking all work. What course in there I am willing

चाणक्यः—(सहर्षम् ।) वृषल, वृषल, अमात्यराक्षसेनेदानीमनुगृहीतोऽसि । दिष्टया वर्धते भवान् ।

राजा—आर्यप्रसाद एष चन्द्रगुप्तेनानुभूयते ।

पुरुषः—जेदु अज्जो । एसो क्खु भद्दभडभाउराअणप्पमुहेहिं संजमिदकलचलणो मलअकेदू पडिहारभूमिं उवट्ठिदो । एदं सुणिअ अज्जो प्पमाणम् । (जयत्वार्यः । एष खलु भद्रभटभागुरायणप्रमुखैः संयमितकरचरणो मलयकेतुः प्रतिहारभूमिमुपस्थित । इदं श्रुत्वा आर्यः प्रमाणम् ।)

चाणक्यः—भद्र, निवेद्यताममात्यराक्षसाय । सोऽयमिदानीं जानीते ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) दासीकृत्य मामिदानीं विज्ञापनायां मुखरीकरोति कौटिल्यः । का गतिः । (प्रकाशम् ।) राजन् चन्द्रगुप्त विदितमेव ते यथा वयं मलयकेतौ कञ्चित्कालमुषितास्तत्परिरक्ष्यन्तामस्य प्राणाः ।

टिप्पणी—इस श्लोक में विषम, अनुप्रास, काव्यलिङ्ग तथा अर्थान्तरन्यास आदि अलङ्कारों की संसृष्टि है, छन्द का नाम शार्दूलविक्रीडित है

विमला

चाणक्य—[सहर्षम् = सानन्दम् (With joy)], वृषल, वृषल = भृशार्थं द्विरुक्तिः (Vrishala, Vrishala), अमात्यराक्षसेन-नन्दमन्त्रिणेन (by minister Rakshasa), इदानीम्=अधुना (now), अनुगृहीतोऽसि=आप्यायितोऽसि (are favoured), दिष्टया=भाग्येन (by fate), भवान् (you), वर्धते (do you prosper) •

राजा—चन्द्रगुप्तेन=मयेति शेष. (By Chandragupta), एषः=अयम् (this is), आर्यप्रसादः=आर्यस्य=पूज्यस्य (noble), भवतः=तव (preceptor's), प्रसादः= अनुग्रह. (grace), अनुभूयते=प्राप्यते (is being enjoyed).

पुरुष.—आर्य =पूज्य. (Noble sir) जयतु=सर्वोत्कर्षेण वर्तताम् (let prosper), एष here), खलु भद्रभटभागुरायणप्रमुखैः=भद्रभटप्रमुतिप्रधानैः सेनपैरिति (by Bhadrabhata and Bhagurayan and others), संयमितम् करचरणम् यस्य स संयमितकरचरण = बद्धहस्तपादः (fettered with hands and feet), मलयकेतुः = पर्वतकपुत्र. (prince Malayaketu), प्रतिहारभूमिं = द्वारदेशः (to the site of gate), उपस्थित.=आनीतः (has come up).

चाणक्य —भद्र = कल्याणिन् (Gentleman) अमात्यराक्षसाय (to minister Rakshasa), निवेद्यताम् = कथ्यताम् (be reported), सः = असौ (that), अयम् = राक्षसः (he), इदानीम् = साम्प्रतम् (now), जानीते = करिष्यति (knows).

राक्षस—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself)], दासीकृत्य = न दासोऽदासस्तं दास कृत्वेति दासीकृत्य = भृत्य विधाय (having made servant), माम् = राक्षसम् (me), इदानीम् = अधुना (now), कौटिल्यः = चाणक्यः (Kautilya), विज्ञापनायाम् (at prayers), मुखरीकरोति = वाचालम् करोति (makes me garru-

(राजा चाणक्यमुखमवलोकयति ।)

चाणक्य —प्रतिमानयितव्योऽमात्यराक्षस्य प्रथम प्रणय । (पुरुष प्रति ।)

---

lous) का गति = कोऽन्य उपाय (what help), [प्रकाश = स्पष्टम् = (aloud)] राजन् चन्द्रगुप्त = नृप मौर्य (O king Chandragupta), ते = तव (to you), विदितमेव = ज्ञातमेव (is indeed known), यथा (that), वयम् (we), किंचित् कालमुषिता = किञ्चित् कालम् यावत् स्थिता (I stayed for some time), मलय केतौ = पर्वतकपुत्रे (with Malayaketu), तद् = तस्मात् (so), अस्य = एतस्य (his), प्राणा = असव (life), परिरक्ष्यन्ताम् = रक्षणीया इत्यर्थ (let be spared)

हिन्दी—चाणक्य—(प्रसन्नतापूर्वक) वृषल, वृषल ! अमात्य राक्षस ने अब तुम पर कृपा की है। भाग्य से ही तुम्हारी अभिवृद्धि हो रही है।

राजा—आर्य, आप की कृपा का ही अनुभव चन्द्रगुप्त कर रहा है।

पुरुष—आर्य की विजय हो। भद्रभट, भागुरायण आदि प्रमुखों ने हाथ पैर बाँधकर मलयकेतु को द्वार पर उपस्थित किया है। अब आगे आर्य की जैसी आज्ञा।

चाणक्य—भद्र, ये सारी बातें अमात्य राक्षस से निवेदन करो। अब से वे ही ये सब जानते हैं।

राक्षस—(अपने आप) पहले दास बनाकर अब यह चाणक्य बात करने के लिए विवश कर रहा है। दूसरा उपाय ही क्या है? (सुनाकर) महाराज चन्द्रगुप्त ! यह तो आपको विदित ही होगा कि मैं कुछ समय तक मलयकेतु के साथ रह चुका हूँ। अत उसके प्राण की रक्षा की जाय।

English—*Chanakya*—(With joy), Vrishala, Vrishala, you are now favoured by minister Rakshasa Luckily do you prosper

The king—It is noble preceptor's grace that Chandragupta is enjoying

Man—Victory to noble sir Here Malayaketu has been placed at the door with his hands and feet chained by Bhadrabhata, Bhagurayan and others Noble sir will decide on hearing it

Chanakya—Gentleman, let it be reported to Minister Rakshasa He now knows

Rakshasa—(Aside) Kautilya having made me a servant, now makes me give the order what help (Aloud), O king Chandragupta, it is indeed known to you, that I was living with Malayaketu for some time, so let his life be spared

विमला

[राजा = नृप (The king), चाणक्यमुखम् = कौटिल्याननम् (Chanakya s face), अवलोकयति (looks)]

चाणक्य —अमात्यराक्षसस्य (Minister Rakshasa's), प्रथम = आद्यम् (first), प्रणय = विज्ञापनम् (request), प्रतिमानयितव्यः = स्वीकर्त्तव्य (must be grant-

भद्र, अस्मद्वचनादुच्यन्तां भद्रभटप्रमुखा यथा—'अमात्यराक्षसेन विज्ञापितो देवश्चन्द्रगुप्तः प्रयच्छति मलयकेतवे पित्र्यमेव विषयम्। अतो गच्छन्तु भवन्तः सहानेन। प्रतिष्ठिते चास्मिन् पुनरागन्तव्यम्' इति।

पुरुषः—जं अज्जो आणवेदि त्ति। (परिक्रामति।) (यदार्य आज्ञापयतीति।)

चाणक्यः—भद्र, तिष्ठ तिष्ठ अपरं च वक्तव्यो दुर्गपालः—'अमात्यराक्षसलाभेन सुप्रीतश्चन्द्रगुप्तः समाज्ञापयति य एष श्रेष्ठी चन्दनदासः स पृथिव्यां सर्वनगरश्रेष्ठिपदमारोप्यतामिति। अपि च विना वाहनहस्तिभ्यः क्रियतां सर्वमोक्षः' इति। अथवामात्यराक्षसे नेतरि किमस्माकं प्रयोजनमिदानीम्।

---

ed), [पुरुषं प्रति (to the attendant)], भद्र=कल्याणिन् (good man), अस्मद्वचनात् (in my name), उच्यताम्=कथ्यताम् (tell), भद्रभटप्रमुखाः=भद्रभटादयः (Bhadrabhata and others), यथा (that), अमात्यराक्षसेन (by minister Rakshasa), विज्ञापित=समर्थितः (requested), देव=राजा (sire), चन्द्रगुप्तः=मौर्यः (Chandragupta), मलयकेतवे=पर्वतकपुत्राय (for Malayaketu), पित्र्यमेव विषयम्=पितुरागतराज्यम् (paternal kingdome), प्रयच्छति=ददाति (grants), अतः=अस्माद्धेतोः (so), भवन्तः (they), सहानेन=मलयकेतुना सह (with him), गच्छन्तु=यान्तु (go), च=पुनः (and), अस्मिन्प्रतिष्ठिते (when established), पुनः (again), आगन्तव्यम् (will come)]

पुरुषः—आर्य=मान्य भवन् (Noble sir), यदाज्ञापयति=यदादिशति (as commands), [इति परिक्रामति (walks round)]

चाणक्यः—भद्र=कल्याणिन् (Good man), तिष्ठ, तिष्ठ=स्थीयताम्, स्थीयताम् (stay, stay), अपरञ्च=अन्यदपि (another), वक्तव्यः (matter), दुर्गपालः (the master of the forts), अमात्यराक्षसलाभेन (the reconciliation of minister Rakshasa), सुप्रीतः=अतिप्रसन्नः (well pleased), चन्द्रगुप्तः=मौर्यः (Chandragupta), समाज्ञापयति=आदिशति (orders), य एषः (here is), श्रेष्ठी चन्दनदासः (merchant Chandandasa), सः=असौ (he), पृथिव्याम्=धरित्र्याम् (on the earth), सर्वनगरश्रेष्ठिपदम् (the post of the principal merchant in all cities), आरोप्यताम्=स्थाप्यताम् (should be appointed). अपि च=अन्यदपि (other too), विनावाहनहस्तिभ्यः (except the horses and elephants), सर्वमोक्षः, क्रियताम्=विधायताम् (all should be set free), अथवा =वा (or rather), अमात्यराक्षसे (minister Rakshasa) नेतरि (as the adviser), इदानीम्=सम्प्रति (now), अस्माकम् (us), किम् प्रयोजनम् (what use of).

हिन्दी—   (चाणक्य के मुँह को देखता है)

चाणक्य—अमात्य राक्षस का यह प्रथम आदेश है—हमें स्वीकार करना ही पड़ेगा। (पुरुष के प्रति) भद्र, हमारी ओर से भद्रभट प्रभृति अधिकारियों से कहो कि "अमात्य राक्षस के अनुरोध पर महाराज चन्द्रगुप्त ने मलयकेतु को उसका पैतृक राज्य पुनः दे दिया। अतः तुम सब इसके साथ ही जाओ। इसके स्थिर होने पर पुनः लौट आना।"

विना वाहनहस्तिभ्यो मुच्यतां सर्वबन्धनम् ।
पूर्णप्रतिज्ञेन मया केवलं बध्यते शिखा ॥ १७ ॥

पुरुष—ज अज्जो आणवेदि त्ति । (निष्क्रान्तः ।) (यदार्य आज्ञापयति ।)

पुरुष—आर्य की जैसी आज्ञा । (ऐसा कहकर घूमता है)

चाणक्य—भद्र, रुको, रुको । और, दूसरा दुर्गपाल से जाकर कहो कि अमात्य राक्षस की उपलब्धि से अत्यन्त सन्तुष्ट महाराज चन्द्रगुप्त ने यह आज्ञा दी है कि यह सेठ चन्दनदास विश्व के सभी व्यापारिक संघ के प्रधान पद पर नियुक्त किया गया है। और भी—घोड़े और हाथियों को छोड़कर सभी बन्धनमुक्त कर दिये जाय। अथवा—अमात्य राक्षस के मन्त्री हो जाने पर अब हम लोगों का प्रयोजन ही क्या रह गया ?

English—(Stares at Chankya's face)

Chanakya—Minister Rakshasa's first request has to be granted. (to the attendant) Goodman ! tell Bhadrabhata and others in my words that Sire Chandragupta requested by minister Rakshasa, grants Malayaketu his paternal kingdom, So they should go with him and will come back when he is established

Man—As Noble sir commands (walks round)

Chanakya—Goodman, stay here stay, something is another matter. The superintendent of the forts has to be told this—"Sire Chandragupta, highly pleased at the reconciliation of Minister Rakshasa, commands that this merchant should be appointed to the post of the head merchant in all towns on the earth Besides it except all the horses and elephants should be set free Or Minister Rakshasa being now secured as a guide, what is the use of us

विमला

अन्वयः—वाहनहस्तिभ्य, विना, सर्वबन्धनम्, मुच्यताम्, पूर्णप्रतिज्ञेन, मया, केवलम्, शिखा, बध्यते ॥ १७ ॥

व्याख्या—वाहनहस्तिभ्यः = अश्वगजेभ्य (Horses and elephants), विना (except), सर्वबन्धनम् = सर्वेषाम् संयमनम् (every tie), मुच्यताम् = परित्यज्यताम् (be unloosed), पूर्णप्रतिज्ञेन = निस्तीर्णप्रणेन (havig fulfilled the vow), मया = चाणक्येन (by me), केवलम् = एकमात्रम् (only), शिखा = चूडा (tuft of hair), बध्यते = संयम्यते (be tied) ॥ १७ ॥

पुरुष—आर्य = मान्यो भवान् (Noble sir), यदाज्ञापयति = यदादिशति (as commands), [इति निष्क्रान्त (Exit)]

चाणक्यः—भो राजन् चन्द्रगुप्त, भो अमात्य राक्षस, उच्यतां किं वां भूयः प्रियमुपकरोमि।

राजा—किमतः परमपि प्रियमस्ति।

> राक्षसेन समं मैत्री राज्ये चारोपिता वयम्।
> नन्दाश्चोन्मूलिताः सर्वे किं कर्तव्यमतः प्रियम् ॥ १८ ॥

चाणक्य—भो राजन् = भो नृप (O king), चन्द्रगुप्त = मौर्य (Chandragupta), भो अमात्य राक्षस (O minister Rakshasa), उच्यताम् = कथ्यताम् (tell me), वाम् (both of you), भूयः=पुनः (again), किं प्रिय करोमि = किमिष्टं सम्पादयामि (what further favour I should confer).

राजा—अतः परमपि = इतोऽधिकमपि (Greater then this). किम् प्रियमस्ति (is there a pleasure).

अन्वयः—राक्षसेन, समम्, मैत्री, वयम्, च, राज्ये, आरोपिता, सर्वे, नन्दाः, च, उन्मूलिताः, अतः, किम्, प्रियम्, कर्तव्यम् ॥ १८ ॥

व्याख्या—राक्षसेन = मन्त्रिराक्षसेन (With Rakshasa), समम्=सार्धम् (with), मैत्री=सुहृद्भावः (friendship), वयम् (we), च = पुनः (and), राज्ये = अधिपत्ये (on the throne), आरोपिताः = स्थिरीकृताः (have been placed), सर्वे नन्दाः= नन्दसंज्ञका राजानः (the Nandas), च=पुनः (and), उन्मूलिताः=उच्छिन्नाः (have been uprooted), अतः परम् = एतदुत्तरम् (beyond this), किं प्रियम् कर्तव्यम् = विधेयम् (what pleasure remains to be done ?).

हिन्दी—हाथी और घोड़े को छोड़कर सभी के बन्धन खोल दिये जाँय। पूर्णप्रतिज्ञ मेरे द्वारा मात्र मेरी शिखा अब बाँधी जा रही है ॥ १७ ॥

पुरुष—जैसी आर्य की आज्ञा (ऐसा कहकर निकल गया)

चाणक्य—ओ राजन् चन्द्रगुप्त, हे अमात्य राक्षस, आपलोगों का अन्य प्रिय क्या उपकार करूँ कहिए ?

राजा—क्या इससे भी कुछ अधिक प्रिय है ?

राक्षस के साथ मित्रता हो गयी, मुझे पुनः राज्य पर प्रतिष्ठित कर दिया गया। सभी नन्दों को समूल नष्ट कर दिया गया, इससे अधिक मेरे लिए अभीप्सित और क्या साध्य हो सकता है ॥१८॥

English—Let every tie be loosened except that of horses and elephants. By me alone with the vow fulfilled the tuft is being tied. 17.

Man—As Noble sir Commands. (Exit)

Chanakya—O king Chandragupta, O Minister Rakshasa, tell me what more pleasure shall I bring unto you.

The king—Is there a pleasure gaeater than this ? All the Nandas were uprooted, I have been placed on the throne, friendship has been secured with Rakshasa. What thing more to be done beyond this remains ?

राक्षस —तथापीदमस्तु भरतवाक्यम् ।

वाराहीमात्मयोनेस्तनुमवनविधावास्थितस्यानुरूपां
यस्य प्राग्दन्तकोटिं प्रलयपरिगता शिश्रिये भूतधात्री ।
म्लेच्छैरुद्विज्यमाना भुजयुगमधुना संश्रिता राजमूर्तेः
स श्रीमद्बन्धुभृत्यश्चिरमवतु महीं पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः ॥ १९ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

(इति सप्तमोऽङ्कः ।)

इति विशाखदत्तविरचितं मुद्राराक्षसं नाटकं समाप्तम् ।

टिप्पणी—श्लोक संख्या १७ का छन्द अनुष्टुप् है तथा इसमें पूर्वकथित बीज का निर्वहण है । १८ वें श्लोक में 'सम' नामक अलङ्कार तथा अनुष्टुप् छन्द है ।

विमला

राक्षस —तथापि (Still), इदमस्तु = एतद् भवतु (let there be this), भरतवाक्यम् (*words of Bharata*)

अन्वयः—प्राक्, प्रलयपरिगता, भूतधात्री, अवनविधौ, अनुरूपाम्, वाराहीम्, तनुम्, आस्थितस्य, यस्य, आत्मयोने, दन्तकोटिम्, शिश्रिये, अधुना, म्लेच्छैः, उद्विज्यमाना, राजमूर्तेः, भुजयुगम्, संश्रिता, सः, श्रीमद्बन्धुभृत्यः, पार्थिवः, चन्द्रगुप्तः, चिरम् महीम्, अवतु ॥ १९ ॥

व्याख्या—प्राक् = कल्पारम्भे (Before), *प्रलयपरिगता* = कल्पक्षयपरिगता (amidst Universal distruction) भूतधात्री = पृथ्वी (the earth), अवनविधौ = जगद्रक्षणविधाने (to grant protection), अनुरूपाम् = योग्याम् (*suitable*), वाराहीम् = शौकरीम् तनुम् = शरीरम् (the from of the Boar), आस्थितस्य = आश्रितस्य (had assumed), यस्य (whose), आत्मयोने = वाराहरूपिणः श्रीविष्णोः (self existant God), दन्तकोटिम् = दन्ताग्रावयवम् (tusk), शिश्रिये = आश्रिता (cling), अधुना = इदानीम् (now), म्लेच्छैः = यवनैः (by the Mlechhas), उद्विज्यमाना = सपीड्यमाना (troubled), राजमूर्तेः = नृपाकृतेः (the form of the king), भुजयुगम् = बाहुयुगलम् (two arms) संश्रिता = समवलम्बिता (clung to), स = असौ (he), श्रीमद्बन्धुभृत्यः = लक्ष्मीयुक्तानुचर (with kins and servants), पार्थिव = नृप (the king), चन्द्रगुप्तः = मौर्य (Chandragupta), चिरम् = बहुकालम् (long time), महीम् = पृथिवीम् (the earth), अवतु = रक्षतु (may guard) ॥ १९ ॥

[इति = इत्थम् प्रस्तुतविषयं समाप्य (here), सर्वे = नटाः (all), निष्क्रान्ताः = रङ्गशालातो बहिर्गताः (exeunt omnes)]

[इति सप्तमोऽङ्कः End of act VII)]

इति विशाखदत्तविरचितम् (Composed by Vishakhadatta), मुद्राराक्षसम् (Mudra Rakshasam), नाटकम्=अभिनयम् (drama), समाप्तम् (the end).

हिन्दी—राक्षस—तथापि यह भरतवाक्य हो।

सम्पन्न बन्धुओं और भृत्यों से युक्त महाराज चन्द्रगुप्त चिरकाल तक पृथ्वी का शासन करें। पहले प्रलय से परिव्याप्त पृथ्वी ने रक्षा करने में समर्थ शूकर के शरीर को धारण किए हुए, जिन स्वयम्भू के दाँत की नोक पर आश्रय ग्रहण किया था, सम्प्रति म्लेच्छों से पीड़ित वसुन्धरा राजा चन्द्रगुप्त के शरीर को धारण करने वाले भगवान् विष्णु की दोनों भुजाओं का आश्रय लिया है। इस श्लोक में अतिशयोक्ति अलङ्कार तथा स्रग्धरा वृत्त है ॥ १९ ॥

(इस प्रकार सभी निकल जाते हैं)

महाकवि विशाखदत्त विरचित मुद्राराक्षस का सातवाँ अङ्क समाप्त

English—*Rakshasa*—Still let there be this words af Bharata (the actor's benedictory speech)

May He, the prince Chandragupta long guard this earth with kins and servants in prosperity—he who is a kingly manifastation of that self existent God to whose tusk, when he had assumed the form of the Boar fitted to grant protection the earth, clung, amidst universal distruction, and He whose two armes in the from of the king, she troubled by the Mlechhas, has now clung to. 19.

(Exeunt all)

(Seventh act)

Here ends the drama Mudra Rakshasa composed by Shri Vishakhadatta. Here ends the commentary Vimala' by Shri Jagdish Chandra Mishra.

इति दैवज्ञश्रीकीर्तिनाथमिश्रात्मज श्रीजगदीशचन्द्रमिश्रमैथिलेन विरचितायां विमलाख्य संस्कृत हिन्दी-अङ्ग्रेजी-व्याख्यायां सप्तमोऽङ्कः समाप्तः।

समाप्तश्चायं ग्रन्थः

विशेष-विवरण

[नोट्स : NOTES]

पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

१. नान्दी

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते ।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता ॥ (साहित्यदर्पण)

अर्थात् देवता, ब्राह्मण, राजा आदि की नान्दी (स्तुति गीत) एक ऐसी है जिसमें रङ्ग सामाजिकों को शुभाशंसा का अभिप्राय गर्भित रहा करता है। नाट्यदर्पण में लिखा है :—

देव-भूप सभा भर्तृमुख्यानां मङ्गलाभिधा ।
नित्याद्रूपमुखेनान्दी-पदैः पड्भिरथाष्टभिः ॥

नान्दी और रङ्गविघ्नशान्ति का अटूट सम्बन्ध है जैसा कि भावप्रकाशन की इन पंक्तियों में सङ्केतित है :—

नन्दी वृषो वृषाङ्कस्य जगदादौ जगत्पतेः ।
नृत्यतः कल्पनायोगाज्जगाम किल रङ्गताम् ॥
तस्य तद्रूपसम्बन्धात् पूजानान्दीति कथ्यते ।
देवतादिनमस्कार मङ्गलारम्भपाठकैः ।
या क्रिया नन्द्यते नाट्यारम्भे नान्दीति स स्मृता ॥ (भावप्रकाशन अधि०३०)

संस्कृत नाटकों का यह एक आवश्यक अङ्ग है। इसके लिए यह अपेक्षित है कि इसके द्वारा शंख, पद्म, चन्द्र, चक्रवाक, कैरव आदि मङ्गलास्पद वस्तुओं की अभिव्यञ्जना हो जाए। यह अष्टपदा भी होता है और द्वादश पदा भी :—

यत्राष्टभिर्द्वादशभिरष्टादशभिरेव च ।
द्वाविंशत्यापदैर्वापि सा नान्दी परिकीर्तिता ॥

यहाँ 'पद' शब्द 'पाद' परक है। इसलिये बहुधा यह 'नान्दी' श्लोकपद ही होती है :—

श्लोकपादपदं केचित् सुप्तिङन्तमथापरे ।
परेऽवान्तरवाक्यैकस्वरूपपदमूचिरे ॥

नान्दी शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गया है :—

"नन्दयति देवादीन् स्तुत्या, आनन्दयति च सभ्यान् स्तुतदेवताप्रसादादिति नान्दी"

यह नान्दी दो प्रकार की होती है (१) नटकल्पित और (२) नाटककार द्वारा प्रयुक्त। इनमें नटकल्पित नान्दी 'पूर्वरङ्ग' कहलाती है और नाटककार द्वारा प्रयुक्त नान्दी 'रङ्गनान्दी' कहलाती है। नाट्यशाला को 'रङ्ग' कहते हैं, क्योंकि इसके द्वारा सामाजिकों का मनोरञ्जन होता है। किसी नाटक के अभिनय प्रारम्भ होने से पूर्व जो सङ्गीत का विधान है, उसे ही पूर्वरंग कहते है। महाराज विश्वनाथ ने लिखा है :—

यन्नाट्यवस्तुनः पूर्वं रङ्गविघ्नोपशान्तये ।
कुशीलवाः प्रकुर्वन्ति पूर्वरङ्गः स उच्यते ॥

जिस नाटक में 'नान्दी' के बाद सूत्रधार आधार है वहाँ 'पत्रावली' नामक नान्दी होती है :—

यस्यां बीजस्य विन्यासो ह्यभिधेयस्य वस्तुनः।
श्लेषेण वा समासोक्त्या नान्दी पत्रावलीतु सा॥ (नाट्यदर्पण)

नान्दी के सम्बन्ध में नाट्यदर्पणकार का यह कथन है :—

"नान्दी च पूर्वरङ्गाङ्गानां द्वादशममङ्गं सकलपूर्वरङ्गाङ्गोपलक्षिका···।
······नान्दी पाठकाश्च सूत्रधार-स्थापकपारिपार्श्विका इति॥"
(नाट्यदर्पण चतुर्थ विवेक)

अर्थात् जब कि सूत्रधार पूर्वरङ्ग विधान के बाद रङ्गमञ्च छोड़ देता है, तब सूत्रधार का ही समकक्ष एक अन्यनट जिसे 'स्थापक' कहा जाता है रङ्गमञ्च पर आकर नाटक प्रयोग की स्थापना करता है। स्थापक के द्वारा नाटक प्रयोग की यह स्थापना अथवा उपक्रमणिका ही 'स्थापना' कही जाती है। इसका काम सामाजिकों के प्रति नाटकीय वस्तु अथवा नाटक के बीज अथवा मुख या पात्र की सूचना रहती है। तात्पर्य यह कि मुख्यकथा को प्रारम्भ करने के पहले जिन कृत्यों का विधान किया जाता है, उन्हें पूर्वरङ्ग कहते हैं। पूर्वरङ्ग में वे सभी कृत्य सम्मिलित हैं, जिन्हें अभिनय करने वाले नाटक आरम्भ करने के पहले रंगशाला (stage) के विघ्नों को दूर करने के लिए करते हैं। भरत मुनि के ही अनुसार सबसे पहले नगाड़ा बजा कर इस बात की सूचना दी जाती है कि अब नाटक प्रारंभ होने वाला है। इसके बाद गाने वाले और बाजा बजाने वाले रंगमंच पर आकर अपने वाद्ययन्त्र को ठीक करते हैं तथा उनके सुर आदि को मिलाकर उन्हें बजाते हैं। तब सूत्रधार रंगमंच पर पुष्प बिखेरता हुआ आता है। उसके साथ एक सेवक पानी का पात्र और दूसरा इन्द्र की ध्वजा लिए रहता है। सूत्रधार पहले उस पात्र से पानी लेकर अपने को पवित्र करता है। फिर ध्वजा को हाथ में लेकर रंगमंच पर टहलता है तथा स्तुति पाठ करता है। इसी स्तुति पाठको मुख्यतया 'नान्दी' कहते हैं। इसमें देवता, ब्राह्मण तथा राजा की आशीर्वादयुक्त स्तुति की जाती है।

२. नृत्तम्

'नृत्तं ताललयाश्रयम्।' (दशरूपक १।९)

नृत्त ताल तथा लय पर अश्रित होता है। नृत्त में केवल अङ्ग का विक्षेप पाया जाता है, अभिनय का यहाँ अभाव रहता है। नृत्त केवल ताल के आधार पर मात्रा का अनुसरण करता है, तथा लय के आधार पर गति का आश्रय लेता है। इसमें किसी भी प्रकार के अभिनय की सत्ता नहीं होती, कोरा गात्रविक्षेप रहता है, जो ताल तथा लय के द्वारा नियमित होता है। इस नाटक के प्रथम अङ्क के द्वितीय श्लोक में भगवान् शंकर के इसी नृत्त की ओर संकेत है। पाठ भेद के कारण किसी किसी संस्करण में 'नृत्त' के स्थान पर 'नृत्य' का प्रयोग है।

३. सूत्रधार

नाट्योपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते।
सूत्रं धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो मतो बुधैः॥
अपरञ्च-नाटकीयकथासूत्रं प्रथमं येन सूच्यते।
रङ्गभूमिं समाक्रम्य सूत्रधारः स उच्यते॥

एवञ्च—चतुरातोद्यनिष्णातोऽनेकभूषासमावृतः।
नानाभाषार्थतत्त्वज्ञो नीतिशास्त्रार्थतत्त्ववित् ॥
वेशोपचारचतुरः　　पौरेषगविचक्षणः।
नानागतिप्रचारज्ञो　　रसभावविशारदः ॥
नाट्यप्रयोगनिपुणो नानाशिल्पकलान्वितः।
छन्दोविधानतत्त्वज्ञः　　सर्वशास्त्रविचक्षणः ॥
तत्तद्गीतानुगलयकलातालावधारणः।
अवधार्य प्रयोक्ता च योक्तॄणामुपदेशकः।
एवं गुणगणोपेतः सूत्रधारोऽभिधीयते ॥ इति।

('अभिज्ञान शाकुन्तलम्' चौखम्बा प्रकाशित पृ० ५)

व्युत्पत्ति :—सूत्रं नाटकीयकथानुबकवाच्यं धारयतीति समुपस्थापयति यः सः सूत्रधारः, प्रधाननटः, इति।

डॉ० पिशेलने भारतीय नाटक के सूत्रधार के सम्बन्ध में अपना अलग मत व्यक्त किया है। उनका कहना है कि पुतलियों को नचाते समय नचाने वाला उनके डोरों (सूत्र) को पीछे से पकड़े रहता है। इसलिए वह 'सूत्रधार' कहलाता है। पीछे चलकर नाटक के प्रयोक्ता को भी यही नाम दे दिया गया। अपने इस मत की पुष्टि में उन्होंने युक्ति प्रस्तुत करते हुए आगे कहा है कि भारत में 'पुतली' के नाचों का प्रचार बहुत पुराना है। 'महाभारत' तथा कथासरित्सागर में भी पुतलियों का बड़ा वर्णन मिलता है। पिशेल के इस मत का खण्डन एक दूसरे पाश्चात्त्य विद्वान् हिलेब्रांट ने हाल कर दिया है। 'सूत्रधार' शब्द की पिशेल वाली व्युत्पत्ति के बारे में कहा जा सकता है कि 'सूत्रधार' नाटक की कथावस्तु, नायक, रस आदि का सूत्र अर्थात् संक्षेप में वर्णन करता है, इसलिए 'सूत्रधार' कहलाता है, डोरे पकड़ने के कारण नहीं। शारदातनय ने अपने 'भावप्रकाशन' में इस शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए लिखा है :—

सूत्रयन् काव्यनिक्षिप्तवस्तुनेतृकथारसान्।
नान्दीश्लोकेन नान्द्यन्ते सूत्रधार इति स्मृतः ॥

४. नटी

नट अथवा सूत्रधार की पत्नी को नटी कहते हैं। अथवा इसके अतिरिक्त नाट्यमण्डली की किसी प्रमुख अभिनेत्री को भी नटी कहते हैं। मुद्राराक्षस में प्रयुक्त नटी सूत्रधार की पत्नी है।

५. नट

रामायण में 'नट' शब्द के सम्बन्ध में लिखा है :—

'नटनर्तकसंघानां गायकानां च गायताम्'।

महाभारत में 'नट' शैलूष, आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। वज्रनाभ नामक दैत्य का वध करने के लिए श्रीकृष्ण तथा यादवों के कपट नटवेष धारण करने की चर्चा भी महाभारत में है। बौद्ध तथा जैन ग्रन्थों एवं वात्स्यायन के कामसूत्र में भी 'नट' शब्द की चर्चा मिलती है। इससे भी पूर्व पाणिनि के अष्टाध्यायी में भी 'नट' शब्द का प्रयोग मिलता है :—

(१) पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः। (४।३।११०)
(२) कर्मन्दकृशाश्वादिनिः। (४।३।१११)

इन दो सूत्रों में पाणिनि ने शिलालि और कृशाश्व के नटसूत्र का उल्लेख किया है। इससे यह सिद्ध होता है कि 'नट' शब्द का प्रयोग भारत में बहुत प्राचीन काल से है। नाटक खेलने वालों को 'नट' कहा जाता है।

नट और स्थापक प्राय समानार्थी शब्द हैं। स्थापक सूत्रधार को कहते हैं। अत सूत्रधार भी नट कहलाता है। नाटक में एक और परम्परित शब्द प्रयुक्त होता है 'पारिपार्श्विक'। नट को 'पारिपार्श्विक' का अनुचर भी कहते हैं। पारिपार्श्विक 'नट' एक स्तर नीचे का सदस्य होता है। इस सम्बन्ध में साहित्यदर्पण में लिखा है —

"सूत्रधारसदृशत्वात् स्थापकोऽपि सूत्रधार उच्यते। तस्यानुचर पारिपार्श्विक तस्मात्किञ्चिदूनो नट।"

६. नाटक

नाटक ख्यातवृत्त स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम्।
विलासर्द्ध्यादिगुणवद्युक्तं नानाविभूतिभि॥
सुखदु खसमुद्भूति नानारस निरन्तरम्।
पञ्चादिकादशपरास्तत्राङ्का परिकीर्तिता॥
प्रख्यातवंशो राजर्षिर्धीरोदात्त प्रतापवान्।
दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नायको मत॥
एक एव भवेदङ्गी शृंगारो वीर एव वा।
अङ्गमन्ये रसा सर्वे कार्यो निर्वहणेऽद्भुत॥
चत्वार पञ्च वा मुख्या कार्यव्यापृतपूरुषा।
गोपुच्छाग्रसमाग्र तु बन्धन तस्य कीर्तितम्॥
(साहित्यदर्पण, चौखम्बा प्रकाशन, पृ० ३६२ ६३)

नाटक दशरूपक का प्रमुख एव प्रथम भेद है। इसकी शरीररचना किसी प्रसिद्ध वृत्त से की जाती है। नाटक के इस इतिवृत्तात्मक शरीर में पाच सन्धियाँ हुआ करती हैं। अपने चरितों के उदात्त गुणों, अभ्युदयों और उपनिब धनों के कारण नाटक श्रीसमृद्ध हुआ करता है। मानव की रागात्मक प्रवृत्तियों से इसकी उत्पत्ति होती है। विभिन्न भावों रसों का इसमें अनुभव रहा करता है। यह कम से कम पाँच और अधिक से अधिक दस अङ्कों में विभाजित रहता है। इसका नायक ख्यातिप्राप्त राजवशीय होता है। इसमें नायकोचित सभी गुणों का समावेश रहना चाहिए। यह नायक दिव्य, आदिव्य और दिव्यादिव्य तीनोंमें से कोई एक महान् व्यक्तित्व का होना चाहिए। नाटक में वीर या शृंगार नामक किसी एक रस की प्रधानता आवश्यक है। इसका अन्त विस्मयोत्पादक होना चाहिए। इसकी रचना गोपुच्छ के अग्रभाग के समान हो तो उत्तम है। इसके सम्बन्ध में मातृगुप्त की परिभाषा है —

प्रख्यातवस्तुविषय धीरोदात्तादिनायकम्।
राजर्षिवंश्यचरित तथा दिव्याश्रयान्वितम्॥

शृंगारवीरान्यतरप्रधानरससंश्रयम्।
प्रकृत्यवस्थासम्यङ्गसन्ध्यन्तरविभूषितम्॥

सुखदुःखोपचितकृतं चरितं तत्त्व भूमृताम्।
इतिवृत्तं कथोद्भूतं किञ्चिदुत्पाद्यवस्तु च॥
नाटकं नाम तज्ज्ञेयं रूपकं नाट्यवेदिभिः॥

अंग्रेजी में जिस अर्थ में ड्रामा (Drama) शब्द का प्रयोग होता है, उसी अर्थ में संस्कृत में 'रूपक' शब्द का प्रयोग होता है। वैसे तो ड्रामा शब्द का अर्थ 'नाटक' किया जाता है, किन्तु नाटक जैसा कि पहले कहा जा चुका है, रूपक का एक भेद मात्र है। वह रूपकों के दस प्रकार में से एक प्रमुख प्रकार है।

'रूपक' की उत्पत्ति के विषय में पाश्चात्य मतानुयायी विद्वान् 'रूपक' का प्रादुर्भाव पहले ग्रीक (यूनान) से हुआ, ऐसा मानते हैं और इसकी पुष्टि भारतीय रूपकों (नाटकों) में प्रयुक्त 'यवनिका' शब्द से करते हैं। परन्तु उनका यह कथन प्रामाणिक नहीं है, क्योंकि 'यवनिका' शब्द ही अशुद्ध है। शुद्ध शब्द 'जवनिका' ('नेपथ्य स्यात् जवनिका') या 'यमनिका' है। इन्हीं के अपभ्रंश 'यवनिका' लोक में कहा जाता है।

संस्कृत नाटकों की एक और निजी विशेषता यह है कि व्यक्तिगत चरित्रचित्रण की अपेक्षा वैयक्तिक अन्तर्द्वन्द्व के बदले ऐसा चरित्रचित्रण होता है जिसे हम सामान्य कहते हैं। संस्कृत नाटक के ये तीन प्रमुख तत्त्व दशरूपककार की दृष्टि में,माने गये हैं–वस्तु, नेता तथा रस। पाश्चात्य दार्शनिक अरस्तू ने त्रासद (Tragedy) के इतिवृत्त, आकार, वर्णनशैली विचार, दृश्य तथा गान ये छः अङ्ग माने हैं। संस्कृत आचार्यों ने नाटक के इन छहों अङ्गों का अन्तर्भाव—कथा, संवाद और रंगनिर्देश में कर लिया है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भारतीय सिद्धान्त के अनुसार नाटक पञ्चसन्धियुक्त, पौराणिक या ऐतिहासिक वस्तु, ५ से १० तक अङ्क, धीरोदात्त नायक, शृङ्गार या वीररस, कैशिकी, भारती या सात्वतीवृत्ति होना अनिवार्य हैं।

७. नेपथ्य

संस्कृत नाटकों में नेपथ्य का प्रयोग स्थानभेद से तीन अर्थों में होता है।

(१) नट की वेषभूषा—(रागादिव्यञ्जको वेषो नट नेपथ्यमुच्यते)

(२) जवनिका या पर्दा—'नेपथ्य स्याज्जवनिका।

(३) रंगभूमि

८. प्रस्तावना

नटी विदूषको वापि पारिपार्श्विक एव वा
सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते।
चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः,
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनाऽपि सा॥

(साहित्यदर्पण ३।३१ ३२)

नाटकों की 'प्रस्तावना' वस्तुतः उनका वह आमुख है, जिसमें नटी अथवा विदूषक या पारिपार्श्विक सूत्रधार के साथ ऐसा आलाप सलाप किया करते हैं जिसमें प्रस्तुत अभिनय का आक्षेप करने वाले स्वस्व विषयक अभिप्राय के सूचक चित्र विचित्र वाक्यों का प्रयोग होता है। प्रस्तावना को नाट्याचार्यों ने भारतीवृत्ति का अंग माना है। भारतीवृत्ति से तात्पर्य है वाग्व्यापार का। प्रस्तावना में जो अभिनय सम्भव है वह मुख्यरूप से वाचिकाभिनय के रूप में ही। अतः प्रस्तावना के सम्बन्ध में दशरूपककार का मत है :—

सूत्रधारो नटीम्ब्रूते मार्षं वाऽथ विदूषकम् ॥
स्वकार्यं प्रस्तुताक्षेपिचित्रोक्त्या यत्तदामुखम् ।
प्रस्तावना वा तत्र स्युः कथोद्घातः प्रवृत्तकः ॥

प्रस्तावना उसे कहते हैं जहाँ सूत्रधार नटी, मार्ष या विदूषक के साथ बात करते हुए विचित्र उक्ति के द्वारा प्रस्तुत का आक्षेप कर अपने कार्य का वर्णन करे। इस प्रस्तावना को आमुख भी कहते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि नाटक प्रारम्भ होने के पहले सूत्रधार (manager of the stage) नटी (actress) विदूषक इत्यादि के बीच प्रस्तुत होनेवाले नाटक के बारे में वार्त्तालाप या बातचीत को 'प्रस्तावना' कहते हैं। इसमें विचित्र उक्तियों द्वारा वार्तालाप होता है और बड़े कौशल से नाटक का आरम्भ होता है। साहित्यदर्पण में प्रस्तावना के पाँच भेद बतलाये गये हैं। (१) उद्घातक, (२) कथोद्घात (३) प्रयोगातिशय (४) प्रवर्तक (५) अवगलित। मुद्राराक्षस में दर्शकों को खले जानेवाले नाटक की सूचना दी जाती है। इसे ही नाटक की भूमिका आमुख आदि कहते हैं।

९. स्वगतभाषण

अश्राव्यं स्वगतं मतम् । (दशरूपक १.६४)

कभी-कभी रंगमंच का पात्र अपने मन की गुप्त बातों को प्रकाश में लाने के लिए दूसरे पात्र की ओर से मुंह फेर कर इस तरह बातें करता है, जिनको दर्शक तो सुन लेते हैं, पर रंगमंच के अन्य पात्र सुन नहीं पाते। यही स्वगत है। 'स्वगत' पात्र की मानसिक भावनाओं का व्यक्तिकरण है। संस्कृत के प्रायः सभी नाटकों में 'आत्मगतम्' या 'स्वगतम्' यह संकेत दिया गया होता है। इस स्वगत भाषण के अनेकों प्रयोजन हैं। नाटक के चरित्रों के हृदय की जो बात है, उसे नाटककार स्वगतम्, या आत्मगतम् से प्रकट करता है। इसीलिए कहा गया है—स्वगतम् स्वहृदि स्थितम्।' तात्पर्य, यह कि जो कथोपकथन सर्वश्राव्य नहीं होता वही स्वगत भाषण कहलाता है।

१०. अङ्क

नाटक की समस्त घटनाओं के विकास को कई हिस्सों में बाँट देने पर प्रत्येक भाग को अङ्क कहते हैं। प्रत्येक अङ्क में नायक आदि के विशेष चरित्र का प्रदर्शन रहता है। अङ्क में विशेष अनर्गल बातों के समावेश से अङ्क दोष आ जाता है। किसी भी रूपक का अङ्कप्रधान अङ्ग माना जाता है। प्रायः प्रत्येक अङ्क में एक ही रस की प्रधानता रहती है।

एकाहाचरितैकार्थमित्थमासन्ननायकम्
पात्रैस्त्रिचतुरैरङ्कं तेषामन्तेऽस्य निर्गमः। (दश० ३।३६)

तात्पर्य यह कि एक अङ्क में वस्तु की योजना इस ढङ्ग की हो कि वह केवल एक ही दिन की घटना हो तथा एक ही प्रयोजन या एक ही अर्थ से सम्बद्ध हो। अङ्क के अन्त में अवश्य सारे पात्रों का निर्गमन करा लिया जाता है। मूलतः अभिव्यक्ति की दृष्टि से अभिनय का आन्तरिक विभाजन ही अङ्क है।

यदा तु सरसं वस्तु मूलादेव प्रवर्तते,
आदावेव तदाङ्कः स्यादामुखाक्षेपसंश्रयः।

प्रत्यङ्के नुचरितो विन्दुव्याप्तिपुरस्कृतः
अङ्को नानाप्रकारार्थं संविधानरसाश्रयः ॥ (दश० ३।२९ ३०)

संस्कृत नाटकों में प्रस्तावना के बाद ही सीधे अङ्क का प्रारम्भ हो जाता है। संस्कृत नाटकों का अन्तर्विभाग दृश्यों में न होकर 'अङ्कों' में ही हुआ करता है। यदि एक-एक अवस्था के लिए एक-एक अङ्क मान लिया जाय तो एक नाटक में कम-से-कम ५ अङ्क होना चाहिये। किन्तु, किसी एक अवस्था में उपक्रम और उपसंहार का भेद कर लेने पर इसकी अधिकतम संख्या १० तक होनी चाहिये।

११. अङ्कावतार

जब किसी बाद वाले अङ्क की घटनाओं की सूचना पूर्व अङ्क के अन्त में दी जाती है तब उस भाग को 'अङ्कावतार' कहते हैं। उसमें पात्रों को बिना बदले ही पूर्व अङ्क की कथा आगे चलाई जाती है। पात्र वे ही रहते हैं। पहले अङ्क के पात्र बाहर जाकर फिर लौट आते हैं बाद के अङ्क की कथा का विस्तार करते हैं।

१२. आकाशोक्ति

आकाशोक्ति भी नाटकीय वृत्त का एक प्रकार है। इसका लक्षण है :—

'आकाशोक्तिः स्वयं प्रश्न प्रत्युत्तरमपात्रकम्।'

नाटक में (आकाशे) यह एक प्रकार का संकेत है। इस संकेत के द्वारा यह सूचित होता है कोई पात्र रंगमंच पर अकेले आकाश की ओर मुँह कर स्वयं प्रश्नोत्तर की शैली में बात करता दिखलाया जाता है। इसे आकाशभाषित भी कहते हैं।

१३. जनान्तिकम्

'त्रिपताकान्तरोऽन्येन जल्पो यस्तज्जनान्तिकम्'

हाथ की एक मुद्राविशेष को ही 'त्रिपताक' कहते हैं।

ऊर्ध्वं सर्वाङ्गुलिर्वक्रानामिकः करस्त्रिपताकः।'

अर्थात् अनामिका अंगुलि को कुछ टेढ़ा रखते हुए—हाथ की अन्य अंगुलियों को ऊपरी ओर उठाये रहना त्रिपताक है।

इस मुद्रा से रंगमंच पर उपस्थित सभी पात्रों को अपनी बात उस स्थिति में सुनायी जाती है जब उपस्थित पात्रों में से कुछ को नहीं भी सुनाने की बात होती है।

१४. परिषद्

अभिनय देखने के लिए उपस्थित दर्शकों के समूह को 'परिषद्' 'सभ्य' सामाजिक दर्शक आदि कहते हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में इसका व्यवहार किया गया है।

१५. गण्ड

जहाँ प्रस्तुत विषय में सम्बद्ध अर्थ से भिन्न वस्तु एकदम उपस्थित हो जाय, वहाँ गण्ड होता है-

'गण्डः प्रस्तुतसम्बन्धिभिन्नार्थसहसोदितम्।'　　(दश० रू० ३।१८)

गण्ड वस्तुतः वह वाक्य है, जहाँ नाटककार भावी घटना का संकेत किसी भिन्न विषय पर दे जाता है। पाश्चात्य नाटकों की 'ड्रेमेटिक आइरनी' से यह कुछ-कुछ मिलता-जुलता है। मुद्राराक्षस में इसका दो बार प्रयोग हुआ है।

१६. प्रवेशक

प्रवेशक भी विष्कम्भक की तरह अतीत और भावी कथाओं का सूचक है। इसमें प्रयुक्त उक्ति उदात्त नहीं होता। इसमें प्राकृत भाषा का प्रयोग होता है तथा यह नीच पात्रों के लिए ही प्रयुक्त होता है। प्रवेशक की योजना सदा दो अङ्कों के बीच की जाती है तथा यह भी शेष अङ्कों का सूचक होता है।

तद्वदेवानुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
प्रवेशोऽङ्कद्वयस्यान्तः शेषार्थस्योपसूचकः॥ (दश० १।६०)

१७. भरतवाक्य

भारतीय नाट्यशास्त्र के आदि गुरु भरतमुनि के नाम पर प्राचीनकाल से यह नियम चला आ रहा है कि नाटक के अन्त में भरत वाक्य का होना स्वाभाविक ही है। भरतवाक्य में नाटककार तत्कालीन राजा, समाज, देश इत्यादि की मंगलकामना प्रकट करता है। इसमें आशीर्वाद या ईश्वर की प्रार्थना होती है। इसी भरतवाक्य का प्रशस्ति भी कहते हैं जो पाँचवी निर्वहण सन्धि का चौदहवाँ अङ्ग है। इसके विपरीत नान्दी को मुखसन्धि का अङ्ग नहीं माना गया है।

मुद्राराक्षस में प्रयुक्त प्राकृत भाषा

संस्कृत नाटकों में प्राकृत भाषा का प्रयोग नाट्यशास्त्र की प्राचीन परम्परा से प्रसिद्ध है। 'मुद्राराक्षस' भी इस नियम का अपवाद नहीं है। इसमें महाराष्ट्री और शौरसेनी दो प्रकार के प्राकृत का व्यवहार हुआ है। उसमें महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग पद्यभाग में तथा शौरसेनी का प्रयोग गद्यभाग में हुआ है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा को जिस प्रकार साधारणतः 'संस्कृत' कह दिया जाता है, उसी प्रकार मध्य भारतीय आर्य भाषा के लिए 'प्राकृत' शब्द का व्यवहार किया जाता है। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रकृत' अर्थात् जनसाधारण से है; अतः प्राकृत का अर्थ हुआ जनसाधारण की भाषा। उत्तरकालीन प्राकृत के वैयाकरण 'पालि' से परिचित नहीं थे और अशोक के अभिलेखों तथा अन्य अभिलेखों की भाषा भी उनके सामने नहीं थी। अतः उन्होंने इस पर विचार ही नहीं किया। संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त तथा कुछ काव्यग्रन्थों एवं जैनों के धार्मिक ग्रन्थों में व्यवहृत प्राकृत पर ही इन वैयाकरणों ने विचार किया। अतः प्राकृत शब्द जैन आगमों की 'आर्षी' अथवा 'अर्धमागधी' तथा अन्य साहित्यिक रचनाओं की 'मागधी' 'शौरसेनी' तथा 'पैशाची' बोलियों के अर्थ में रूढ हो गया।

प्राकृत के वैयाकरणों में सर्वप्रथम आचार्य वररुचि का नाम आता है। वररुचि ने अपने 'प्राकृत प्रकाश' में प्राकृत के चार भेद किये हैं:—महाराष्ट्री, पैशाची, मागधी और शौरसेनी। जैन आचार्य हेमचन्द्र (१२ वीं शती) ने अर्धमागधी एवं चूलिका पैशाचिक पर भी व्याकरण लिखा है। संस्कृत के आदर्श पर चलकर कालान्तर में यह प्राकृत भी साहित्यिक रचनाओं की भाषा रह गयी थी। इस रूप में, प्राकृतों का प्रयोग संस्कृत नाटककार तेरहवीं शताब्दी तक करते रहे।

महाराष्ट्री प्राकृत

साहित्यिक प्राकृत में महाराष्ट्री प्राकृत सर्वाधिक विकसित है। वररुचि ने इसे ही आदर्श प्राकृत माना है। मुद्राराक्षस में प्राकृत पद्यरचना इसी प्राकृत में है। महाराष्ट्री प्राकृत की

सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि इसमें स्वरमध्यग स्पर्श व्यञ्जनों का लोप हो गया है। इस प्रकार स्वर मध्यग क् त् प् ग् द् ब् पूर्णतया लुप्त हो गये हैं और ख् थ् फ् घ् ध् भ् के स्थान पर केवल प्राण ध्वनि ह् बच रही है। अतः प्राकृत पाउअ, प्राभृत का 'पाहुड' तथा कथयति का 'कहेइ' रूप महाराष्ट्री में मिलते हैं।

यह मध्य भारतीय-आर्य भाषा के द्वितीय पर्व के विकास की चरमावस्था है। शौरसेनी और महाराष्ट्री प्राकृत में प्रमुख भिन्नता इसी परिवर्तन में है। अन्यथा महाराष्ट्री प्राकृत शौरसेनी से अधिक साम्य रखती है। कुछ लोगों की दृष्टि में महाराष्ट्री प्राकृत में आधुनिक मराठी का पूर्वरूप विद्यमान है। सम्भव है महाराष्ट्री में शौरसेनी की अपेक्षा परिवर्तन की गति अधिक तीव्र हो। इन समस्याओं का विवेचन करके भी मनमोहन घोष इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वास्तव में महाराष्ट्री प्राकृत शौरसेनी का विकसित रूप है। इन दोनों प्राकृतों में पहले स्थानगतभेद न होकर कालगत भेद था। इसके बाद महाराष्ट्री प्राकृत दक्षिण में पहुँची और काव्य भाषा बन गयी। इनकी अन्य विशेषताएँ निम्नोक्त हैं :—

(१) इसमें कहीं कहीं ऊष्म व्यंजन ध्वनि के स्थान पर 'ह' हो गया है। यथा—पाषाण= पाहाण, अनुदिवस - अनुदिअहं। इस उदाहरण में 'द' का लोप इसलिए नहीं हुआ है कि 'अनु' एवं 'दिवस' शब्द अलग अलग हैं। अतः 'द्' यहाँ स्वर मध्यग नहीं हुआ।

(२) अपादान एकवचन में साधारणतया 'आहि' प्रत्यय लगता है, यथा—दूरात् का दूराहि।

(३) अधिकरण एकवचन के रूप में 'म्मि' अथवा 'ए' के योग से बनते हैं यथा— लोकस्मिन् = लोअम्मि।

(४) कृधातु का रूप वैदिक भाषा के समान निष्पन्न होता है। जैसे—कृणोति = कुणइ।

(५) 'आत्मन्' का प्रतिरूप, महाराष्ट्री में 'अप्प्' होता है

(६) क्रिया के कर्मवाच्य का 'य्' प्रत्यय 'इज्ज' में बदल जाता है। जैसे पृच्छयते का पुच्छिज्जई, गम्यते का गमिज्जइ।

(७) पूर्वकालिक क्रिया का रूप उण् प्रत्यय के योग से बनता है जैसे—पृष्ट्वा का पुच्छिऊण।

शौर सेनी

शौरसेनी प्राकृत मूलतः शूरसेनप्रदेश, आधुनिक मथुरा की भाषा थी। यों तो संस्कृत नाटकों में स्त्रीपात्र और विदूषक इस प्राकृत का प्रयोग करते हैं—मुद्राराक्षस में इसका कम प्रयोग हुआ है। मध्यदेश की भाषा होने के कारण यह संस्कृत के बहुत समीप है। इस पर संस्कृत का निरन्तर प्रभाव पड़ता रहा है। इसकी निजी विशेषताएँ अधोलिखित है :—

(१) स्वरमध्य 'द ध' (मूल तथा 'त थ' के परिवर्तित रूप दोनों प्रकार के) सुरक्षित हैं। यथा—आगतः = आगदो, कथयत् = कधयद्

(२) 'क्ष' का 'क्ख' जैसे कुक्षि = कुक्खि, इक्षु = इक्खु।

(३) संयुक्त व्यञ्जनों में से एक का तिरोभाव कर पूर्ववर्ती-स्वर को दीर्घ करने की प्रवृत्ति शौरसेनी में अधिक नहीं मिलती।

(४) विधि प्रकार (optative), के रूप संस्कृत के समान बनते हैं, महाराष्ट्री एवं अर्द्ध-मागधी के समान इसमें 'एज्ज' का रूप नहीं मिलता। यथा—वर्तेत = वट्टे।

(५) 'य' प्रत्यय का प्रतिरूप शौरसेनी में—'ईअ' हो जाता है। यथा—पृच्छ्यति—पुच्छीअदि, गम्यति—गमीअदि।

वररुचि ने अपने प्राकृत व्याकरण शौरसेनी के प्रकरण में ही इसकी विशेषताएँ बता देने के बाद अन्त में एक सूत्र लिखा है—'शेषं महाराष्ट्रीवत्' अर्थात् बाकी महाराष्ट्री के समान समझना चाहिए। इससे यह अनुमान होता है कि पहले अध्याय में उन्होंने जिस प्राकृत की चर्चा की है तथा उसका नामोल्लेख नहीं किया है, वह महाराष्ट्री है। मागधी मगध और बंगाल की भाषाओं का प्राचीन रूप है। पैशाची कहाँ की भाषा थी, इस बात में नाना प्रकार के अटकल लगाये गये हैं। प्राचीन ग्रन्थों में भी कभी यह दर्दिस्तान (काश्मीर) की, कभी विन्ध्याचल के पहाड़ियों की, कभी सुदूर दक्षिण की भाषा मानी गयी है। जान पड़ता है यह उस समय के आर्येतर जातियों द्वारा बोली जानेवाली भाषा है। वे उसका शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते होंगे और अपने नादाभ्यास के अनुकूल विकृत करके बोलते होंगे। यही कारण है कि संस्कृत नाटकों में विदूषक, निम्न पात्र, या स्त्रियों के लिये नाटककारों ने प्राकृत का प्रयोग किया है।

जहाँतक शौरसेनी का प्रश्न है, यह निश्चित है कि यह पश्चिमी हिन्दी का पूर्वरूप है, किन्तु गलत है 'महाराष्ट्री' नामकरण एक भ्रम है क्योंकि आधुनिक मराठी भाषा या महाराष्ट्र प्रान्त से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इस पर कई पण्डितों ने दोनों को एक ही सिद्ध करने का अथक प्रयास किया है। हॉर्नेल तो एकबार कहा था कि शौरसेनी और महाराष्ट्री दो पृथक् भाषायें नहीं हैं बल्कि एक ही भाषा की दो शैलियाँ हैं। इन्हीं शैलियों के कारण नाटकों में इन दोनों में से एक का प्रयोग पद्य में हुआ है और दूसरी का गद्य में। यह बात मानी हुई है कि गद्य की भाषा कुछ प्राचीनतादिलिष्ट और कोमलीकृत होती है। गद्य में ठीक वैसी ही भाषा व्यवहृत नहीं भी होती है। अतः महाराष्ट्री और शौरसेनी नाम्ना अलग अलग भाषा रहती हुई भी स्वभावतः एक ही है। अतः वररुचि ने प्राकृत व्याकरण में मुख्यतः दो ही भाषाओं की चर्चा की है। जो कुछ भी हो मुद्राराक्षस में प्रयुक्त दोनों ही प्राकृत के परिनिष्ठित रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।



मुद्राराक्षस में प्रयुक्त सुभाषितावली

(१) प्रथम अङ्क :—

१ अत्यादरः शङ्कनीयः।
२ अनुभूयतां चिरं विचित्रो राजप्रसादः।
३ अनुचित उपचारो हृदयस्य परिभवादपि दुःखमुत्पादयति।
४ कायस्थ इति लघ्वी मात्रा।
५ कीदृशस्तृणानामग्निना सह विरोधः।
६ चीयते बालिशस्यापि सत्क्षेत्रपतिता कृषिः।
न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते॥
७ दिष्ट्या मित्रकार्येण मे विनाशो न पुरुषदोषेण।
८ प्रज्ञाविक्रमभक्त्यः समुदिता येषां गुणा भूतये।
ते भृत्या नृपतेः कलत्रमितरे सम्पत्सु चापत्सु च।
९ फलेन सम्पादितमस्य विकत्थनम्।
१० नहि सर्वः सर्वं जानाति।
११ न युक्तं प्राकृतमपि रिपुमवज्ञातुम्।
१२ शिरसि भयमतिदूरे तत्प्रतिकारः।
१३ श्रोत्रियाक्षराणि प्रयत्नलिखितान्यपि नियतमस्फुटानि भवन्ति।

(२) द्वितीय अङ्क —

१ प्रकृत्या वा कामप्रभवकुसुमप्रान्तचपला।
पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी।
२ पृथिव्यां स्वामिभक्तानां प्रमाणे परमे स्थितः।
३ किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्ष्मां न क्षिपत्येष यत्।
किं वा नास्ति परिश्रमो दिनपतेरास्ते न यन्निश्चलः।
किन्त्वङ्गीकृतमुत्सृजन् कृपणवच्छ्लाघ्यो जनो लज्जते।
निर्व्यूढं प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम्।
४ त्वमपि स्वाधिकारमशून्यं कुरु।
५ नन्वयमुच्चतरः सुहृद्द्रोहः।
६ भव्यं रक्षति भवितव्यता।
७ त्वदभिप्रायापरिज्ञानान्तरितोऽयमस्मदनुनयः।
८ सौहार्दात् कृतकृत्यव नियत लब्धान्तरा भेत्स्यति।
९ भगवति कमलालये भृशमगुणज्ञासि।
१० अमन्त्रौषधिकुशलो व्यालग्राही प्रमत्ता मत्तमतङ्गजारोही लब्धाधिकारो
जितकाशी राजसेवक इत्येते त्रयोऽप्यवश्यं विनाशमनुभवन्ति।

(३) तृतीय अङ्क :—

१ राज्यं हि नाम राजधर्मानुवृत्तिपरस्य नृपतेर्महदप्रीतिस्थानम्।
२ परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः।

३ दुराराध्या हि राजलक्ष्मीरात्मवद्भिरपि राजभिः ।
४ श्रीर्लब्धप्रसरेव वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम् ।
५ सेवां लाघवकारिणीं कृतधियः स्थाने श्ववृत्तिं विदुः ।
६ निरीहाणामीशस्तृणमिव तिरस्कारविषयः ।
७ न निष्प्रयोजनमधिकारवन्तः प्रभुभिराहूयन्ते ।
८ दैवमविद्वांसः प्रमाणयन्ति ।
९ विद्वान्सोऽप्यविकत्थना भवन्ति ।

(४) चतुर्थ अङ्क :—

१ अबीभत्सदर्शनं कृत्वा प्रवेशय ।
२ खड्गाक्रान्तरितानि सम्प्रति विभो तिष्ठन्ति साध्यानि नः ।
३ प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः ।
४ येनात्मनः पक्षमुज्झित्वा परपक्षः प्रमाणीक्रियते ।

(५) पञ्चम अङ्क :—

१ मुण्डितमुण्डो नक्षत्राणि पृच्छसि ।
२ तदाज्ञा कुर्वाणो हितमहितमित्येतदधुना ।
विचारातिक्रान्तः किमिति परतन्त्रो विमृशति ।
३ अधिकारपदं नाम निर्दोषस्यापि पुरुषस्य महदाशङ्कास्थानम् ।
४ गतिः सोच्छ्रायाणां पतनमनुकूलं कलयति ।
५ स्वार्थे कस्मिन् समीहा पुनरधिकतरे स्वामनार्यं करोति ।
६ अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः ।
७ वयमिदानीमनार्याः संवृत्ताः ।

(६) षष्ठ अङ्क :—

१ तत्किं निमित्तं कुकविकृतनाटकस्येवान्यन्मुखेऽन्यन्निर्वहणम् ।
२ दैवेनोपहतस्य बुद्धिरथवा सर्वा विपर्यस्यति ।
३ अलक्षितनिपाताः पुरुषाणां समविषमदशापरिणतयो भवन्ति ।
४ अभूमिः खल्वेषोऽविनयस्य ।
५ पुनस्तदपावृतमस्मच्छोकदीर्घां द्वारं दैवेन ।
६ कृतार्थोऽयं सोऽर्थस्तव सति वणिकत्वेऽपि वणिजः ।
७ सोऽयमस्वर्णः शोकवज्रपातो हृदयस्य ।

(७) सप्तम अङ्क :—

१ स्वपतोऽपि ममैव यस्य तन्त्रे गुरवो जाग्रति कार्यजागरूकाः ।
२ सम्पन्नास्ते सर्वाशिषः ।
३ सर्वथा स्थाने यशस्वी चाणक्यः ।
४ कार्याणां गतयो विधेरपि न यान्त्याज्ञाकरत्वं चिरात् ।
५ किं वा भूयः प्रियमुपकरोमि ।
६ किं कर्तव्यमतः परम् ।

श्लोकानुक्रमणिका

विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा मुद्राराक्षस पर पूछे गये महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन

Discusse the date of visakhadatta—

Compare and contrast the characters of Chanakya and Rakshasa as depicted in Mudrarakshasa—

Translate in to English or your own vernacular—

(a) समुत्खाता नन्दा ···सुहृदि च ॥ १।१२

(b) आकाशं काशपुष्प ·· क्लेशमैशी शरद्धः ॥ ३।२०

Explain in sanskrit, with reference to the context—

(a) मुहुर्लक्ष्योद्भे ·····नीतिर्नयविदः ॥ ५।३

Translate into English or your own vernacular—

(a) किं शेषस्य भरव्यथा ·····घृतद्धि गोत्रव्रतम् ॥ २।१८

(b) भक्त्या नन्दकुलानुराग ·· चेतश्चिर भ्राम्यति ॥ ५।५

Explain in sanskrit, with reference to the context—

(a) अम्भोधीनाम्····· ते प्रभुत्वम् ॥ ३।२४

Discuss the date of the author of the Mudrarakshasa,

Discribe and illustrate the historical back-ground of the Mudrarakshasa.

Write a note on the originality of sanskrit drama and on their success as stage-plays

Translate into English of the following—

प्रस्थातव्यं पुरस्ताद्······राजलोकः कुमारम् ॥ ५।११

Explain fully with reference to the context—

इह विचरयन्······वयं हि पराङ्मुखा. ॥ ३।६

Discuss the merits and the defects of Mudrarakshasa as a piece of dramatic art

Compare and contrast the characters of Rakshasa and Chanakya as portrayed by Vishakhadatta—

Translate in to English of the following—

साध्ये निश्चितमन्वयेन ·· स्वामिनो निग्रहः ॥ ५।१०

Explain fully of the following—

सुविश्लब्धैरङ्गै.   दु खं वहति च ॥ ३।३०

Discuss the date or discribe the historical back ground of Mudrarakshasa.

Translate into English of the following—

गौडीनां लोध्रधूली······छिन्नमूला पतन्तु ॥ ५।२३

Explain fully of the following—

कार्योपक्षेपमादौ····· क्लेशमस्मद्विधो वा ॥ ४।३

Give a critical estimate of the Mudrarakshasa as a political drama.

Translate into English, adding notes whereever necessary—

विक्रान्तैर्नयशालिभि॰ ॰व्यवस्यत् पृथक ॥१।२३

साम्य निश्चितमन्वयत ॰स्वामिनो निग्रह॰ ॥५।१०

Discuss if Chanakya of the Mudrarakshasa is the same as the author of the arthasbastra.

Translate into English or your own vernacular—

कणनव विपानैक ॰तद्दृष्यमेवावधीत् ॥२।१५

वाराहमात्मयान॰ पार्थिवोऽवन्तिवर्मा ॥७।१९

Explain in sanskrit of the following—

Give and criticise the character of Rakshasa, Supporting your remarks with quotations, or at least references to passages from the drama

What defects or excellences if any, do you see in the character of Malayaketu ?

Distinguish the fiction from the reality of the Mudrarakshasa giving shortly your authorities or reasons

Translate closely but idiomatically into English

(a) आविर्भूतानुरागा॰ स्वामिनं सेवमाना ॥१।२२

(b) मकथा नन्दकुलानुराग चतथिर भ्राम्यति ॥५।५

(c) भय नाव सव्य॰दृभि पतनमनुकूल कल्पति ॥ ५।१२

(d) वच्छिन्नाश्रय ॰रङ्गैरिव स्थीयत ॥ ६।५

(e) पति त्यक्त्वा दैव द्विपदिव ॥ ६।६

What figures of speech is involved in pada प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति मवमाना (१।२२) ? Who were the Nandas ? Derive the sense of गोत्र (६।५) A Ms reads प्रयत्न प्रयातु (६।६), what reading is preferable and more likely to be the correct one and why ? What is the exact force of तावत् ?

Translate in to English—

अश्वै मार्द्दमजस्रदत्तकविकै॰ प्रोच्चूनवशान्ताशान् ॥ ७।१५

Translate the following passages—

(a) स्वयमाहृत्य सादन्ति दु खिता॰ ॥ १।१६

(b) जानन्ति तन्त्रयुक्ति ॰सर्पनराधिपावुपचरन्ति ॥ २।१

(c) प्रत्यग्रोन्मेष॰ प्रमाणा॰ निद्राच्छेदा राकेरा व ॥ ३।२१

(d) कनोत्तङ्ग ॰प्रतीर्णाऽर्णव ॥४६

Do you suspect any mislection in the following ? If you do state why, suggesting the proper readings. If the sense is clear as the passages stand, give it

(a) कृतकलह कृत्वा स्वतन्त्रेण स्वतत्रा वयम् । कुत ?

(b) स्तुवन्त्यश्रान्तास्या तिरस्कारविषय॰ ॥ ३।१६

(c) आहैरप्यनवाप्तपौरुषफलै रङ्गैरिव स्थीयत ॥ ६।५

(d) श्रावितोऽस्मि प्रिय सम्प्रति मा विधि ॥ ६।१५

Of the two readings in the following which is correct or better and why ?

(a) गुप्तस्योद्दामेऽसौ कार्यमवश्यमवगच्छति'''किञ्चित् कार्यमवश्यं पश्येत् ॥

Act 4. Before pada II, statement of Bhaguravana.

(b) भीमकेन च .....प्रतीर्णोऽर्णवः ॥ ७।६

Name the serveral stages in the developement of the plot of a play mentioned by writers on Dramaturgy and indicate in this sloka. Analyse the plot of the mud and point out *these stages in it. Translate the sloka*—

कार्योपक्षेपमादौ......क्लेशमस्मद्विधो वा ॥ ४।३

What are the logical a lacies alluded to in the following and why ?

साध्ये निश्चितमन्वयेन '' स्यात्स्वामिनो निग्रह. ॥ ५।१०

Translate and discuss the various readings—

(a) राजा-(स्वगतम्) राज्यं हि नाम......स्थानम् कुतः ?

पराथोनुष्ठाने रहयति''' 'वेत्ति पुरुष. ॥ ३।४

(b) फलयोगमवाप्य .....व्रतप्रतिष्ठा । ७।१०

Explain the following with context—

(a) जाणंति तन्तुजुत्ति......ववचरन्ति ॥ २।१

(b) अत्थाहिमुहे .....अडेदुभि ॥ ४।१९

(c) विजिगीषुमात्म .....न्याय एवायमर्थः ॥

(d) तथा नामामात्यराक्षस'''''कुसुमपुरमागतः ।

(e) स्मृतं स्यात् पुत्रदाराणाम् .....यश.स्वनपायिषु ॥ ५।१४

Explain *all the terms in this verse which relate to dramaturgy* and state the portions of the plot which those terms refer to.

कार्योपक्षेपमादौ......क्लेशमस्मद्विधो वा ॥ ४।३

Annotate on and derive . स्तम्बकरिता, उपजाप, यमपद, दक्षिणद्वारिकम् नक्षत्रम्, जीवनाशम् नष्टाः, *अवश्यकारिन्* ॥

What is the date of Chandragupta and how is it determined ? Justify the remarks that the date of Chandragupta is an important link in the *determination of Indian chronology*, and mention the places and persons of Chandragupta's time, alluded to in the Mudrarakshasa.

Contrast the style and sewtiment displayed in the writings of sudraka and Visakhadatta and state what do you know of the lives of each of these poets

Describe and compare the Civil policy of Chanakya and Rakshasa. What *natural* advantage had the *former on* his side ?

State what do you know of the History if Chandragupta from Greek, *Roman*, Budhist *or other Sources*, and give a comparison of the historical account of that king with that given in that Madrarakshasa—

Translate adding a few explanatory *notes where necessary*—

(a) पादस्याविर्भवन्ति .....वो दु खनृत्तम् ॥ १।१

(b) आनन्दहेतुमपि······प्रत्ययं गतासि ॥ २।६
(c) अस्तितावच्छ्रक······स्कन्दम् कुसुमपुरम्। Before shloka 13 act 2
(d) ततः समन्तादुपरुन्ध्य······तपस्विनि पर्वतेश्वरे। Act 2
Explain the following—
(a) सासणमलिह······धम्मलाहो होदु—३।१८
(b) एसो खु स अ ह दा मो पडिहारभूमि······वधिदो। Act 2 before Sloka 21
(c) भअवं कअन्तो······प्पमादी कलोसि Act 4, 22।
To what religio s sect does Jivasiddhi belong ? Is the author right in calling him as Kshapanaka ? If not give reasons.
Who is the auther of the Mudrarakshasa and what materials are there to determine his date ? Examine the play as dramatic work and point out its defects and excellences—
Translate into English or own language—
(a) भर्तुस्तया कलुषिता······प्रमदाम् ॥ ३।९
(b) दुष्काळेऽपि कलावसज्जना······अरिमसः ॥ ३।५
(c) दिवेरिव समुद्भूतम् ······सुहृदा विना ॥ ६।१८
Explain fully the allusion in C
Explain, give the context where necessary—
(a) तदुच्यताम्······लेखयित्वा मामुपतिष्ठस्व।
(b) अस्माभिः······जिगीषिताम्।
(c) अस्ताभिमुखे सूर्ये······केतौ।
(d) प्रनिज्ञानमिव······प्रथमः प्रणयः।
(e) अनुपेक्षणे द्वयो······प्रतिपाद्येत वा।
(f) अयं लेखस्त्वा······दर्शय।
(g) अलङ्कृत्वागमम्······गन्धुम्निद।
(h) अज्ज ण रहस्सं······कालहरणं काडु।
(a) What is meant by षड्गुण, उन्मेष, निदर्शन, बीज, विमर्श and यमपट ?
(b) Sketch briefly the character of Bhagurayana stating the part he is made to play in the drama.
(c) State all the allusions to the Buddhist religion that occur in the play —
Translate in to English or in your verse—
(a) शक्यः स्वस्येप रावसनति ······मन्त्रप्रभावं मिच्छति।
(b) वाराहीमात्मयोनेस्तनु······पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः ॥ ७।१९
What is the technical name for the verse and why is it so called.
State in what connection the following sentences are used and translate them—
(a) अज्जमं पसादो एसो चं······परिग्गहं करेदि। Act 2, 23.
(b) कथ मिश्रपदमेव चाणक्यमिति······चाणक्यमिति। A. 3. 32

(c) शोणं सिन्दूरशोणा ·····शतशः ।

(d) अतोऽन्यलिखितमस्या ·····पर्वतं विभावयिष्यति ।

(e) वअस्स भद्दभडप्पमुहा किल ·· ··अण्णमुणिव्वहणे । ६

Explain clearly the words of (e) and state which portions of the plot in the Mudrarakshsa are covered by them.

What are the different ways in which dramatic writers wind up the ? Which of them is used in the Mudrarakshasa—

Analyse the character of Chanakya give quotation where necessary Do you concure in the remarks that the policy of this Brahamana politician may be regarded as quite Machiavellian ? Give fully your reasons—

Give the substance of the letter which Chanakya made Sakatadas write without any address upon it. What parts does it play in the denouement of Mudrarakhasa ?

What different people are mentioned in the Mudrarakshasa ? Identify them where you can. Criticise the style of Visakhadatta *stating the merits and demerits and illustrating* the latter. To what time does his play refer ? Give the precise meaninge of the following—

What reference is there in the Mudrarakshasa to the Buddhas and what trait of character does it illustrate ?

With what object in view did Chanakya cause Rakshasa's ring to be delivered to the latter and what purpose is served by the feigned quarrel between Chanakya and Chandragupta ?

Translate—

(a) प्रत्यग्रोन्मेषजिह्माक्षणमनभिमुखी······हरेर्हष्टिराकेकरा वः ॥ ३।२१

शार्ङ्गकर्पावमुक्तप्रशिथिलकविकाः·· ··भूयसा दुःखयन्ति ॥ ६।१९

Discuss the marits of the different readings in the following passages—

(a) भक्त्या कार्यधुर वहन्ति बहव ।

(b) अथवा न लिखामि पूर्वमनभिव्यक्तमेवास्ताम् ।

(c) तल्लद्दमा ·· ··वध्यस्रजम् ।

(d) चित्रवर्मादयो मह्यमभिद्रुह्यन्ति ।

(e) अगृहीतशस्त्रेण ·· ··वृषल ह्रायत सन्देह ।

(f) अथवा अमात्यराक्षसे······प्रयोजनमिदानीम् ।

(g) विना वाहन ·····सर्वबन्धनम् ।

Explain—

(a) सत्वभङ्ग-भयात् राज्ञाम् ।

(b) मुण्डितमुण्डो नक्षत्राणि पृच्छसि ।

(c) शकटदासस्तु ·····अक्षराणि ।

(d) सर्वज्ञतामुपाध्यायस्य चोरयितुमिच्छसि ।

Explain the meanig of the following—

पंचवर्षदेशीय, परसवेदन, ह्यग्रव, वाचिक, लोष्टघातम, निर्व्यूंढ, वृषलोप, वपरलोकयितव्यः ।

Tarnslate in to English—

(a) रूपादीन्विषयान्निरूप्य······तृष्णे मुधा ताम्यसि ॥ ३।१

(b) कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि······बद्धेयमस्मद्विधो वा ॥ ४।३

What is a नाटक ? What historical facts do you find embodied in the plot of the Mudrarakshasa ?

What is a पताका and a प्रकरी ? Refer to any in Mudrarakshasa—

Who were the allies of Malaya ? What countries were the serverigns ? With whom do you identify the Mlechhas referred to म्लेच्छेरुद्विज्यमाना in the varatvakhaya ?

Explain fully the following—

(a) पीत्वा निरवशेष··· ·करोति तत्कार्यम् ॥ ३।११

(b) अस्ताभिमुखे सूर्ये ···उदितास्तमिते च केतौ ॥ ४।१९

(c) त्वद्वाग्भ्रान्तरितानि सन्ति विनो निशन्ति साध्यानि नः ॥

(d) मयाऽपि लेखस्याशून्यार्थं किमपि प्रेषितम्। अयं लेखस्याशून्यार्थो भविष्यति।

(e) साध्ये निश्चितमन्वयेन घटित······स्यात्स्वामिनो निग्रहः ॥ ५।१०

What jaina doctrine is indirectly alluded to in अर्हतानां पणमानि ··· ·मग्गेहिं गच्छन्दि (५।२)

What difference in language do you make in पीत्वा निरवशेष···तत्कार्यम् (३।११) and अस्ताभिमुखे सूर्ये ···च केतौ and the verse अर्हन्तानाम्······मग्गेहिं गच्छन्दि (५।२)

Translate—

(a) कैनोत्तुङ्गशिखाकलापकपिलो······दोर्भ्यां प्रणीतोऽर्णवः ॥ ३।८

(b) इह हि रचयन् साध्वीं शिष्य ·····वयं हि पराङ्मुखाः ॥ ३।८

(c) मुख्यैरन्वयशालिषु····· शिखिना विना ॥ १।२३

Who utters the first verse, or what occassion and with what object ? Explain in the last line and give another instance from the play of similar formation. What is the story about to which allusion is made in मुख्यैरन्वयशालिषु······ शिखिना विना। १।२३

Dsolve the following compound—

बिनल्नमुखानमिपरिवेपविर··· विपुलवक्षस्थले।

Explain giving the context—

(a) त्वदीयसुचरितैकदेशस्यानुकरणं क्लिष्टवत्।

(b) अलक्षितनिपाता ·····परिणता भवन्ति।

(c) त्वद्वाग्भ्रा··· ··साध्यानि नः।

(d) फलेन संवादितमस्य विकल्पितम्।

With what characters does the Mudrarakshasa actually commence and how is it introduced or staged ? By what name is this form of introduction knwon to Hindu criticies ? What is your opinion regarding the state of public morality as disclosed by the Mudrarakshasa—

Give the meaning of the following words as used in the Mudrarakshasa—

अभियोग, उपजाप, विकार, स्पश, व्याल, अपवरक, जितकाशिन्, अभिचार, व्यापत्ति, उत्सेध ।

What means did Rakshasa employ to destroy the life of Chandragupta and how was he forestalled by Chanakya in every one of his efforts? Explain the plot planned by chanakya to bring about a repture between Rakshasa and Malayaketu-

Compare the following characters as sketched in the Mudrarakshasa—

(a) Chanakaya and Rakshasa,

(b) Chandragupta and Malayaketu Cite passage to illustrate your remarks

Dissolve the following compounds

(a) अरिमित्रोदासीनव्यवस्था,

(b) सजलजलदव्योमसंकाशमूर्तिः ।

Explain the formation of the following words—

(a) निर्व्यूढ । (b) प्रोत्सून । (c) अमात्य ।

Translate into English—

(a) आ शैलेन्द्राच्छिला······स्यांगुलीरन्ध्रभागाः ॥ ३ । १९

(b) कुले लज्जायां च ·····परतन्त्रो विमृशति ॥ ५ । ४

(c) दुष्कालेऽपि कलावसज्जन ·····मेषोऽस्मि स ॥ ७ । ५

Translate—

(a) देवस्य येन पृथिवीतल ·····मित्रा सहेत ॥ ४ । ११

(b) घृताङ्गीनाम् तीक्ष्णं·····निबध्नन्ति फणिनः ॥ ६ । १२

Briefly sketch the character of Bhagurayan, Citing passages to illustrate your remarks—

Write notes in English to explain the following passage—

कार्योपक्षेप ·····

What allusion do you find in Mudrarakshasa to the Natyasandhis Illustrate these with reference to this play—

Give in Sanskrit the substance of the feigned quarrel between Chandragupta and Chanakya—

Translate and explain fully giving the context—

(a) द्वयोः सारं तुरय ·····सुहृदि च ।

(b) उत्तरोऽयं लेखार्थः पूर्वः कथमस्तु ?

(c) उवक्खित्तं क्खणेण दुद्देग किं वि ।

(d) शिरसि भयमतिदूरे तत्प्रतीकारः ॥

(e) ये याताः किमपि······कामं प्रकामोद्यमाः ।

(f) अमच्चो स हि कुसलो वालग्गाही ·····विणासमणु होन्ति ।

(g) अस्माभिर ·····कृतघ्नैः । नानुगम्यते ।

(h) दुरात्मन् राक्षस······जीवति खलु कौटिल्यः ।